हयातुस्सहाबा

(भाग-1)

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी (रह०)

हयातुस्सहाबा

(भाग-1)
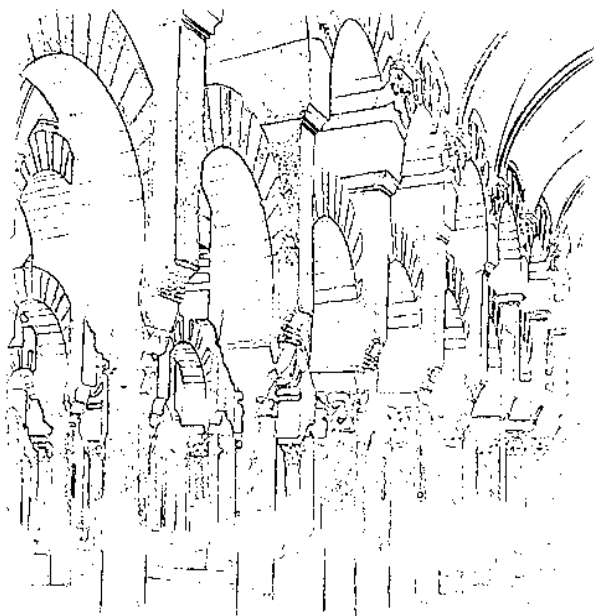
हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी (रह०)

www.idaraimpex.com

हयातुस्सहाबा (भाग—1)

Hayat-us-Sahabah (Vol. 1)

लेखक : हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ कांधलवी (रह0)

अनुवादक : अहमद नदीम नदवी

प्रकाशन: 2015

ISBN 81-7101-211-6

TP-452-15

ISBN: 81-7101-211-6 (Vol. 1)
ISBN: 81-7101-214-0 (Set)

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: **sales@idara.co**
Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**

Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Near Karim Hotel
Hazrat Nizamuddin, New Delhi-110013 (India) Tel.: 085888 44786

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
अपनी बात	18
दो बातें	25
अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत के बारे में क़ुरआनी आयतें	28
नबी करीम सल्ल० की पैरवी और इताअत और आपके ख़लीफ़ों की पैरवी के बारे में हदीसें	34
नबी करीम सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० के बारे में क़ुरआनी आयतें	41
अल्लाह का नबी करीम सल्ल० के सहाबा (रज़ि०) के बारे में फ़रमान	46
क़ुरआन मजीद से पहली किताबों में हुज़ूर सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० का तज़्किरा	50
नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ूबियों के बारे में हदीसें	53
सहाबा किराम रज़ि० की ख़ूबियों के बारे में सहाबा किराम रज़ि० ने क्या कहा	64
दावत का बाब	75-546
दावत से मुहब्बत और शग़फ़	76-98
हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक-एक आदमी को दावत देना	99-206
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना	99
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत उमर बिन ख़त्ताब को दावत देना	101

विषय पृष्ठ

- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना 103
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० को दावत देना 104
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अम्र बिन अबसा रज़ि० को दावत देना 106
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना 108
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत ज़िमाद रज़ि० को दावत देना 111
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत इमरान रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना 115
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ऐसा सहाबी को दावत देना, जिनका नाम नहीं बयान किया गया 117
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत मुआविया बिन हैदा रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना 118
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना 120
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत ज़ुल जौशन ज़िबाबी रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना 124
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत बशीर बिन ख़सासीया रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना 125
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ऐसे सहाबी को दावत देना, जिनका नाम नहीं बयान किया गया 127
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अबू क़हाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना 130

विषय	पृष्ठ
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उन मुश्रिकों को एक-एक करके दावत देना जो मुसलमान नहीं हुए	131
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दो आदमियों को दावत देना	133
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दो से ज़्यादा की जमाअत पर इस्लाम की दावत पेश करना	136
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मज्मा के सामने दावत को पेश करना	142
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज के मौसम में अरब क़बीलों पर दावत पेश फ़रमाना	144
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बाज़ार में जाकर दावत पेश करना	172
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपने क़रीबी रिश्तेदारों पर दावत को पेश करना	174
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सफ़र में दावत पेश फ़रमाना	177
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दावत देने के लिए पैदल सफ़र फ़रमाना	179
• लड़ाई के मैदान में अल्लाह की ओर दावत देना	181
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लोगों को अल्लाह और रसूल की ओर दावत देने के लिए भेजना	186
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अल्लाह की दावत देने के लिए जमाअतों को भेजना	194
• इस्लाम में फ़र्ज़ों की दावत देना	200
हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तमाम मुल्कों के बादशाहों वग़ैरह के पास अपने सहाबा रज़ि० को ख़त देकर भेजना, जिनमें आपने उनको अल्लाह की ओर दाख़िले की ओर दावत दी	**207-243**

विषय	पृष्ठ
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिम व सल्लम का हबशा के बादशाह हज़रत नजाशी के नाम ख़त	209
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शाहे रूम क़ैसर के नाम ख़त	211
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ारस के बादशाह किसरा के नाम ख़त	224
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शाह स्कन्दरिया मुक़ौक़िस के नाम ख़त	232
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नजरान वालों को ख़त	234
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बक्र बिन वाइल के नाम ख़त	243
• हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बनू जुज़ामा के नाम ख़त	243
हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उन अख़्लाक़ और आमाल के क़िस्से जिनकी वजह से लोगों को हिदायत मिलती थी	**244-315**
• हज़रत ज़ैद बिन सुअना रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने का क़िस्सा जोकि यहूदियों के बड़े आलिम थे	244
• सुलह हुदैबिया का क़िस्सा	247
• हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा	262
• हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा	267
• फ़त्हे मक्का ज़ादहल्लाहु तशरीफ़न का क़िस्सा	272
• हज़रत इक्रिमा बिन अबू जह्ल रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा	295
• हज़रत सफ़वान बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने का क़िस्सा	301

विषय पृष्ठ

- हज़रत हुवैतिब बिन अब्दुल उज़्ज़ा रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा 304
- हज़रत हारिस बिन हिशाम रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा 308
- हज़रत नुज़ैर बिन हारिस अब्दरी रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा 309
- तायफ़ के बनू सक़ीफ़ के इस्लाम लाने का क़िस्सा 311

सहाबा किराम रज़ि० का लोगों को अलग-अलग अपने तौर पर दावत देना 316-332

- हज़रत अबूब्र सिद्दीक़ रज़ि० का इंफ़िरादी दावत देना 316
- हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का इंफ़िरादी दावत देना 317
- हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० का इंफ़िरादी दावत देना 318
- हज़रत तुलैब बिन उमैर रज़ि० का इंफ़िरादी दावत देना 324
- हज़रत उमैर बिन वह्ब जुमही रज़ि० का इंफ़िरादी दावत देना और उनके इस्लाम लाने का वाक़िआ 325
- हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का इंफ़िरादी दावत देना 330
- हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हु का इंफ़िरादी दावत देना 332

सहाबा किराम का अलग-अलग क़बीलों और अरब की क़ौमों को दावत देना 333-348

- हज़रत ज़िमाम बिन सालबा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़बीला बनू साद बिन बक्र को दावत देना 333
- हज़रत अम्र बिन मुर्रा जुह्नी रज़ि० का अपनी क़ौम को दावत देना 335
- हज़रत उर्व: बिन मस्ऊद रज़ि० का क़बीला सक़ीफ़ को दावत देना 339

विषय पृष्ठ

- हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी रज़ि० का अपनी क़ौम को दावत देना 342
- हज़रात सहाबा किराम रज़ि० का एक-एक व्यक्ति को और जमाअतों को दावत के लिए भेजना 346

हज़रात सहाबा किराम रज़ि० का अल्लाह की ओर और इस्लाम में दाख़िल होने की ओर दावत देने के लिए ख़तों का लिखना 349-400

- हज़रत ज़ियाद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु का अपनी क़ौम के नाम ख़त 349
- हज़रत बुजैर बिन ज़ुहैर बिन अबी सुलमा रज़ि० का अपने भाई काब के नाम ख़त 351
- हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० का फ़ारस वालों के नाम ख़त 355
- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में सहाबा किराम रज़ि० का लड़ाई के मैदान में दावत देना 358
- सहाबा किराम रज़ि० का हज़रत अबूबक्र रज़ि० के ज़माने में लड़ाई के मैदान में अल्लाह और रसूल की तरफ़ दावत देना और हज़रत अबूबक्र रज़ि० का अपने ज़िम्मेदारों को इसकी ताकीद करना 361
- सहाबा किराम का हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में लड़ाई के मैदान में अल्लाह और रसूल की ओर दावत देना और हज़रत उमर रज़ि० का अपने अमीरों को उसकी ताकीद करना 369
- सहाबा किराम रज़ि० के उन आमाल और अख़्लाक़ के क़िस्से जिनकी वजह से लोगों को हिदायत मिलती थी 390

हज़रत सहाबा किराम रज़ि० किस तरह हुज़ूर सल्ल० से और आपके बाद आपके ख़लीफ़ों से बैअत हुआ करते थे और किन मामलों पर बैअत हुआ करती थी 401-431

विषय	पृष्ठ
• इस्लाम पर बैअत होना	401
• आमाले इस्लाम पर बैअत होना	403
• हिजरत पर बैअत होना	408
• नुसरत पर बैअत होना	410
• जिहाद पर बैअत होना	416
• मौत पर बैअत होना	417
• बात सुनने और ख़ुशी से मानने पर बैअत होना	417
• औरतों का बैअत करना	419
• नाबालिग़ बच्चों का बैअत होना	427
• सहाबा किराम रज़ि० का हुज़ूर सल्ल० के ख़लीफ़ों के हाथों पर बैअत होना	428
नबी करीम सल्ल० और आपके सहाबा किराम रज़ि० दीने हक़ को फैलाने के लिए किस तरह तक्लीफ़ों और सख़्तियों और भूख-प्यास को बरदाश्त किया करते थे और अल्लाह के कलिमा को बुलन्द करने के लिए अल्लाह के वास्ते अपनी जानों को क़ुरबान करना किस तरह उनके लिए आसान हो गया था	**432-459**
• हुज़ूर सल्ल० का अल्लाह की तरफ़ दावत देने की वजह से सख़्तियों और तक्लीफ़ों का बरदाश्त करना	434
सहाबा किराम रज़ि० का अल्लाह की तरफ़ दावत देने की वजह से मशक़्क़तों और तक्लीफ़ों का बरदाश्त करना	**460-504**
• हज़रत अबूबक्र रज़ि० का मशक़्क़तें बरदाश्त करना	460
• हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का मशक़्क़तें बरदाश्त करना	469

विषय पृष्ठ

- हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० का मशक़्क़तें बरदाश्त करना 471
- हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना 472
- हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना 474
- अल्लाह के रसूल के मुअज़्ज़िन हज़रत बिलाल बिन रिबाह रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना 475
- हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० और उनके घरवालों का सख़्तियां बरदाश्त करना 479
- हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना 481
- हज़रत अबूज़र रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना 484
- हज़रत सईद बिन ज़ैद और उनकी बीवी हज़रत उमर की बहन हज़रत फ़ातिमा का सख़्तियां बरदाश्त करना 489
- हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना 495
- हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना 498
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सह्मी रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना 500
- हुज़ूर सल्ल० के आम सहाबा किराम रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना 502

अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ दावत देने की वजह से भूख बरदाश्त करना **505-546**

- हुज़ूर सल्ल० का भूख बरदाश्त करना 505

हुज़ूर सल्ल० और आपके घर वालों और हज़रत

विषय	पृष्ठ
• अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० की भूख	511
• हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० की भूख	516
• हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद और उनके दो साथियों की भूख	517
• हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की भूख	519
• हज़रत अस्मा बिन्त अबी बक्र रज़ि० की भूख	524
• नबी करीम सल्ल० के आम सहाबा किराम रज़ि० की भूख	525
• अल्लाह की ओर बुलाने की वजह से सख़्त प्यास बरदाश्त करना	533
• अल्लाह की ओर दावत देने की वजह से सख़्त सर्दी बरदाश्त करना	535
• अल्लाह की ओर दावत देने की वजह से कपड़ों की कमी बरदाश्त करना	536
• अल्लाह की ओर दावत देने की वजह से बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ बरदाश्त करना	540
• अल्लाह की ओर बुलाने की वजह से घावों और बीमारियों को सहन करना	544
हिजरत का बाब	**547-611**
• नबी करीम सल्ल० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० की हिजरत	548
• हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० और सहाबा किराम की हिजरत	562
• हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० की हिजरत	566
• हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० की हिजरत	567
• हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० और सहाबा किराम रज़ि० का पहले हब्शा, फिर मदीना हिजरत करना	567
• हज़रत अबू सलमा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० की मदीना को हिजरत	587

विषय	पृष्ठ
• हज़रत सुहैब बिन सिनान रज़ि० की हिजरत	589
• हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की हिजरत	592
• हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि० की हिजरत	592
• हज़रत ज़मरा बिन अबुलईस या इब्नुल ईस रज़ि० की हिजरत	597
• हज़रत वासिला बिन असक़अ रज़ि० की हिजरत	598
• क़बीला बनू असलम की हिजरत	599
• हज़रत जुनादा बिन अबी उमैया रज़ि० की हिजरत	600
• हज़रत सफ़वान बिन उमैया और दूसरे सहाबा से हिजरत के बारे में जो कहा गया है, उसका बयान	601
औरतों और बच्चों की हिजरत	**604-611**
• नबी करीम सल्ल० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के घरवालों की हिजरत	604
• हज़रत दुर्रा बिन्त अबू लहब रज़ि० की हिजरत	609
• हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० और दूसरे बच्चों की हिजरत	610
नुसरत का बाब	**612-669**
• हज़रत अंसार रज़ि० की दीन की नुसरत की शुरूआत	613
• हज़रात मुहाजिरीन और अंसार रज़ि० का आपस में भाईचारा	618
• अंसार का मुहाजिरीन के लिए माली ईसार	620
• इस्लाम के ताल्लुक़ात को मज़बूत करने के लिए किस तरह अंसार रज़ि० ने जाहिलियत के ताल्लुक़ात को क़ुरबान कर दिया	623
• अबू राफ़ेअ सल्लाम बिन अबुल हुक़ैक़ का क़त्ल	627
• इब्ने शैबा यहूदी का क़त्ल	632

विषय	पृष्ठ

- ग़ज़्वा बनी क़ैनुक़ाअ और ग़ज़्वा बनू नज़ीर और ग़ज़्वा बनू कुरैज़ा और इन ग़ज़्वों में अंसार सहाबियों के कारनामे — 634
- बनू नज़ीर का वाक़िआ — 636
- बून कुरैज़ा का वाक़िआ — 639
- अंसार सहाबियों रज़ि० का दीनी इज़्ज़त पर फ़ख़ करना — 643
- अंसार सहाबियों का दुनियावी लज़्ज़तों और फ़ानी सामान से सब्र करना और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से राज़ी होना — 644
- अंसार सहाबा रज़ि० की ख़ूबियां — 654
- अंसार सहाबियों का इकराम और ख़िदमत — 655
- अंसार सहाबा रज़ि० के लिए दुआएं — 664
- ख़िलाफ़त के बारे में अंसार का ईसार — 666

जिहाद का बाब 670-958

- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जिहाद में जान लगाना और माल ख़र्च करने के लिए तर्ग़ीब देना — 671
- हुज़ूर सल्ल० का अपने मरज़ुल वफ़ात में हज़रत उसामा रज़ि० (की फ़ौज) को भेजने का एहतिमाम फ़रमाना और फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० का अपनी ख़िलाफ़त के शुरू के ज़माने में उनको भेजने का ज़्यादा एहतिमाम फ़रमाना — 687
- हज़रत अबूबक्र रज़ि० का मुर्तद लोगों से और ज़कात मना करने वालों से लड़ाई का एहतिमाम करना — 702
- हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०का अल्लाह के रास्ते में फ़ौजों के भेजने का एहतिमाम करना और उनको जिहाद के बारे में उभारना और रूम से जिहाद के बारे में उनका सहाबा रज़ि० से मश्विरा फ़रमाना — 709

विषय पृष्ठ

- अल्लाह के रास्ते में जिहाद पर उभारने के लिए हज़रत अबूबक्र रज़ि० का यमन वालों के नाम ख़त 718
- हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का जिहाद पर और अल्लाह के रास्ते में निकलने पर उभारना और इस बारे में उनका सहाबा रज़ि० से मश्विरा फ़रमाना 719
- हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० का जिहाद पर उभारना 723
- हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० का जिहाद पर उभारना 724
- हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० का जिहाद पर उभारना 729
- सहाबा किराम रज़ि० का जिहाद करने का और अल्लाह के रास्ते में निकलने का शौक़ 730
- अल्लाह के रास्ते में निकलने और माल ख़र्च करने की ताक़त न रखने पर सहाबा किराम रज़ि० का ग़मगीन होना 746
- अल्लाह के रास्ते में निकलने में देर करने पर नापसंदीदगी ज़ाहिर 748
- अल्लाह के रास्ते में पीछे रह जाने और उसमें कोताही करने पर सज़ा 750
- जिहाद को छोड़कर घर-बार और कारोबार में लग जानेवालों को धमकी 760
- जिहाद छोड़कर खेती-बाड़ी में लग जानेवालों को धमकी और डरावा 762
- फ़ित्ना ख़त्म करने के लिए अल्लाह के रास्ते में ख़ूब तेज़ी से चलना 763
- अल्लाह के रास्ते में चिल्ला पूरा न करने वालों पर नकीर 767
- अल्लाह के रास्ते में तीन चिल्ले के लिए जाना 768
- सहाबा रज़ि० का अल्लाह के रास्ते की धूल बरदाश्त करने का शौक़ 770

विषय	पृष्ठ
• अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़िदमत करना	771
• अल्लाह के रास्ते में निकलकर रोज़ा रखना	774
• अल्लाह के रास्ते में निकलकर नमाज़ पढ़ना	776
• अल्लाह के रास्ते में निकलकर ज़िक्र करना	781
• अल्लाह के रास्ते में निकलकर दुआओं का एहतमाम करना	784
• बस्ती में दाख़िल होने के वक़्त दुआ करना	785
• लड़ाई शुरू करते वक़्त दुआ करना	785
• लड़ाई के वक़्त दुआ करना	788
• (लड़ाई की) रात में दुआ करना	789
• (लड़ाई से) फ़ारिग़ हो जाने के बाद दुआ करना	789
• अल्लाह के रास्ते में निकलकर तालीम का एहतिमाम करना	790
• अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़र्च करना	792
• अल्लाह के रास्ते में ख़ुलूसे नीयत के साथ निकलना	795
• जिहाद के लिए अल्लाह के रास्ते में निकलकर अमीर का हुक्म मानना	803
• अल्लाह के रास्ते में निकलकर इकट्ठे मिलकर रहना	805
• अल्लाह के रास्ते में निकलकर पहरा देना	805
• जिहाद के लिए अल्लाह के रास्ते में निकलकर बीमारियां बरदाश्त करना	809
• अल्लाह के रास्ते में नेज़े या किसी और चीज़ से घायल होना	810
• शहादत की तमन्ना और उसके लिए दुआ करना	817
• सहाबा किराम रज़ि० का अल्लाह के रास्ते में मरने और जान देने का शौक़	825
• उहुद की लड़ाई का दिन	828

विषय	पृष्ठ
• ग़ज़वा रजीअ का दिन	834
• बेरे मऊना का दिन	845
• ग़ज़वा मूता का दिन	850
• यमामा की लड़ाई का दिन	857
• यर्मूक की लड़ाई का दिन	862
• सहाबा किराम रज़ि० के अल्लाह के रास्ते में शहादत के शौक़ के क़िस्से	863
सहाबा किराम रज़ि० की बहादुरी	**867-958**
• हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की बहादुरी	867
• हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की बहादुरी	867
• हज़रत अली रज़ि० की बहादुरी	868
• हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० की बहादुरी	877
• हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० की बहादुरी	879
• हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० की बहादुरी	883
• हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० की बहादुरी	884
• हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० की बहादुरी	889
• हज़रत मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह और हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा रज़ि० की बहादुरी	880
• हज़रत अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा अंसारी रज़ि० की बहादुरी	892
• हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ि० की बहादुरी	897
• हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० की बहादुरी	898
• हज़रत अबू हदरद या हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद की बहादुरी	904
• हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० की बहादुरी	906
• हज़रत बरा बिन मालिक रज़ि० की बहादुरी	907

विषय	पृष्ठ
• हज़रत अबू मेहजन सक़फ़ी रज़ि० की बहादुरी	909
• हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० की बहादुरी	912
• हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब ज़ुबैदी रज़ि० की बहादुरी	914
• हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० की बहादुरी	916
• अल्लाह के रास्ते से भाग जाने वाले पर नकीर	922
• अल्लाह के रास्ते से भागने पर शर्म और घबराहट	922
• अल्लाह के रास्ते में जाने वाले को तैयार करना और उसकी मदद करना	926
• मुआवज़ा लेकर जिहाद में जाना	928
• दूसरे के माल पर लड़ाई में जाने वाला	930
• अपने बदले में दूसरे को भेजना	930
• अल्लाह के रास्ते में निकलने के लिए मांगने पर नकीर	930
• अल्लाह के रास्ते में जाने के लिए क़र्ज़ लेना	931
• अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले को विदा करने के लिए साथ जाना और उसे अलविदा कहना	932
• जिहाद से वापस आने वाले ग़ाज़ियों का स्वागत करना	934
• रमज़ान में अल्लाह के रास्ते में निकलना	935
• अल्लाह के रास्ते में निकलने वाले का नाम लिखना	936
• जिहाद से वापसी पर नमाज़ पढ़ना और खाना पकाना	936
• औरतों का अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए निकलना	937
• अल्लाह के रास्ते में निकलकर औरतों का ख़िदमत करना	949
• औरतों का अल्लाह के रास्ते में निकलकर लड़ाई करना	951
• औरतों के जिहाद में जाने पर नकीर	955
• बच्चों का अल्लाह के रास्ते में निकलकर लड़ना	957

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अपनी बात

(उर्दू से हिन्दी)

हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली हसनी नदवी (मौलाना अली मियां)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖٓ اَجْمَعِيْنَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ.

अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिना मुहम्मदिन ख़ातमिन्नबीयीन व अला आलिही व सहिबही अजमईन व मन तबिअहुम बिएहसानिन इला यौमिद्दीन०

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की सीरत और तारीख़ उस ईमानी ताक़त और इस्लामी जोश के सबसे ताक़तवर सरचश्मों में से है जिसको उम्मते मुस्लिमा ने दिल की अंगेठियों को सुलगाने और ईमान की दावत के शोलो को भड़काने में इस्तेमाल किया है जो दुनियादारी की तेज़ और ज़ोरदार आंधियों से बार-बार ठंडी हो जाती है और अगर ये अंगेठियां ठंडी हो जाएं तो मुस्लिम मिल्लत के पास ताक़त और तासीर और इम्तियाज़ की पूंजी न रहे और यह बेजान लाश होकर रह जाए जिसको ज़िंदगी अपने कंधे पर उठाए फिर रही हो।

यह ख़ुदा के उन बन्दों की तारीख़ है कि जब उनके पास इस्लाम की दावत पहुंची तो उन्होंने इसको दिल व जान से क़ुबूल किया और उसके तक़ाज़ों के सामने सर झुका दिया।

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ؗ

रब्बना इन्नना समिअना मुनादियंय्युनादी लिल ईमानि अन आमिनू बिरब्बिकुम फ़आ मन्ना०

(ऐ हमारे रब ! हमने एक पुकारने वाले की पुकार सुनी जो ईमान की ओर बुला रहा था कि अपने रब पर ईमान ले आओ, तो हम ईमान ले आए।)

और अपना हाथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ में दे दिया। चुनांचे उनके लिए अल्लाह के रास्ते की मशक़्क़तें मामूली और जान व माल की क़ुर्बानी आसान हो गई, यहां तक कि इस पर उनका मज़बूत यक़ीन और पक्का हो गया और आख़िरकार दिल व दिमाग़ पर छा गया। ग़ैब पर ईमान, अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत, ईमान वालों पर शफ़क़त, कुफ़्फ़ार पर शिद्दत, साथ ही आख़िरत को दुनिया पर, उधार को नक़द पर, ग़ैब को हाज़िर पर और हिदायत को जिहालत पर तर्जीह और सबके लिए हिदायत के बेपनाह शौक़ के अनोखे वाक़िए सामने आने लगे। अल्लाह के बन्दों को बन्दों की ग़ुलामी से निकालकर अल्लाह की बन्दगी में लाने, धर्मों के ज़ुल्म और ज़्यादती की जगह इस्लाम के इंसाफ़ को घरों में पहुंचाने, दुनिया की तंगियों से आख़िरत के फैलावों में ले जाने और दुनिया के माल व दौलत और ज़ेब व ज़ीनत से बेपरवाह हो जाने, अल्लाह से मिलने और जन्नत में दाख़िल होने के शौक़ के हैरत में डाल देनेवाले वाक़िए सामने आने लगे। उन्होंने इस्लाम की नेमत को ठिकाने लगाने, उसकी बरकतों को पूरी दुनिया में आम करने और कोने-कोने की ख़ाक छानने की अथाह भावनाओं के साथ-साथ हिम्मतों को बुलन्द रखा और मशक़्क़तें बरदाश्त कीं। अपने घर-बार को छोड़ा, राहत और आराम को विदा किया और अपनी जान व माल की क़ुरबानी में भी कोई कसर न छोड़ी, यहां तक कि दीन की बुनियादें क़ायम हो गईं, दिलों का झुकाव अल्लाह की ओर हो गया और ईमान के ऐसे मुबारक जान डाल देनेवाले और ताक़तवर झोंके चले, जिससे तौहीद और ईमान और इबादत व तक़्वा का राज्य क़ायम हो गया, जन्नत का बाज़ार गर्म हो गया, दुनिया में हिदायत आम हो गई और लोग झुंड के झुंड इस्लाम में दाख़िल होने लगे।

इतिहास की किताबें अपने भीतर ये वाक़िए और क़िस्से समेटे हुए

हैं, वाक़ियों का मज्मूआ इन सच्चे क़िस्सों को अपने सीनों से लगाए हुए हैं, क्योंकि ये घटनाएं और क़िस्से अपने भीतर मुसलमानों के लिए नवजीवन का सन्देश और ईमान में ताज़गी लाने का सामान रखते हैं। इसीलिए इस्लाम की दावत देनेवाले और मुसलमानों में सुधार लाने वाले बुज़ुर्ग इन घटनाओं पर अपनी हिम्मत व तवज्जोह करते रहे और मुसलमानों के भीतर ईमानी जोश को जगाने, इस्लामी ग़ैरत पैदा करने और उनकी हिम्मतें बढ़ाने का काम करने के लिए इस्तेमाल करते रहे।

लेकिन मुसलमानों पर एक ऐसा वक़्त भी आया जब वे इस इतिहास से अनजाने बनकर इसको भुला बैठे। हमारे वाइज़ों (उपदेशकों) और लेखकों ने अपनी पूरी तवज्जोह बाद के औलिया के वाक़िए और बुज़ुर्गों की कहानियां सुनाने पर लगा दी और लोग भी उस पर ऐसे रीझे कि वाज़ की मज्लिसें, पढ़ने-पढ़ाने की जगहें और उस दौर की सारी किताबें इन्हीं वाक़ियों से भर गईं और ज्ञान की सारी पूंजी सूफ़ियों के हालात और उनकी करामतों की भेंट चढ़ गई।

जहां तक इन लाइनों के लिखने वाले को मालूम है, सहाबा किराम की वाक़ियों और हालात का इस्लामी दावत व तर्बियत में क्या दर्जा है और इस क़ीमती ख़ज़ाने की इस्लाह व तर्बियत के मैदान में अहमियत, तासीर की इफ़ादियत और क़द्र व क़ीमत की तरफ़ पहली बार मशहूर अल्लाह की ओर बुलाने वाले, ज़बरदस्त सुधार करने वाले हज़रत मौलाना इलयास रहमतुल्लाहि अलैहि (1363 हि०) का ध्यान गया जो पूरी हिम्मत और ऊंचे हौसले के साथ उसके पढ़ने में लग गये।

मैंने उनमें सीरते नबी और सहाबा के हालात का बेपनाह शौक़ पाया। वह अपने श्रद्धालुओं और साथियों से इन्हीं की बातें करते, इसी को सुनते-सुनाते। चुनांचे हर रात मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब यह वाक़िए पढ़कर सुनाते। वह पूरे ध्यान और तवज्जोह के साथ पूरे शौक़ से सुनते और चाहते थे कि इन्हें फैलाया जाए।

उनके भतीजे शेख़ुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब ने एक किताब औसत दर्जे की सहाबा किराम के हालात में लिखी, जिससे हजरत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह० बहुत ख़ुश हुए और

तमाम काम करने वालों और दावत के रास्ते में निकलने वालों के लिए इस किताब का पढ़ना-समझना-समझाना ज़रूरी क़रार दिया। चुनांचे यह किताब दावत का काम करने वालों के निसाब (कोर्स) में दाख़िल है और दीनी हल्क़ों में वह इतनी मक़्बूल है कि कम किताबें ही इतनी मक़्बूल होती हैं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह० की वफ़ात के बाद मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब अपने बड़े बाप के जानशीं और वारिस हुए, दावत की ज़िम्मेदारियां भी उनके हिस्से में आईं, सीरते नबी और हालाते सहाबा से दिलचस्पी भी विरासत में मिली और दावत में बहुत ज़्यादा लगे रहने के बावजूद सीरत व तारीख़ और सहाबा के अलग-अलग तबक़ों का पढ़ना-पढ़ाना और उसमें लगा रहना भी जारी रखा।

चुनांचे जिन लोगों को मैं जानता हूं, उनमें मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब जैसा, सहाबा के हालात पर नज़र रखने वाला, उन्हें हर वक़्त याद रखने वाला, उन्हें आइडियल समझने और ज़िंदगी के हर मामले में गवाह बनाने वाला, अपनी तक़रीरों और बातों में उनके वाक़ियों को नगीने की तरह जोड़ने वाला, उन पर अच्छी नज़र रखने वाला, गहराई में उतर कर उन्हें समझने वाला आलिम मैंने नहीं देखा।

क़रीब-क़रीब यही सब वाक़िए और सच्चे क़िस्से उनकी तक़रीरों के सोते थे और उन बातों में असर और जादू जैसा मंजर पेश करने का ज़रिया थे। जमाअतों को बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी देने, बड़े से बड़े ईसार के लिए तैयार करने, कड़ी से कड़ी तक्लीफ़ें झेलने और बड़ी से बड़ी मुसीबत उठाने और दावत के रास्ते में सख़्तियां सहने का बहुत बड़ा हथियार थे।

दावत उनके ज़माने में भारत से निकलकर इस्लामी देशों और यूरोप व अमरीका, जापान और इंडोनेशिया तक पहुंच गई थी और एक ऐसी मोटी किताब की सख़्त ज़रूरत थी कि जिसका पढ़ना-पढ़ाना और समझना-समझाना दावत के काम में लगने वाले और बाहर की दुनिया का सफ़र करने वाले कर सकें, ताकि इससे उनके दिल व दिमाग़ को

ग़िज़ा मिल सके, दीनी जज़्बों में उभार आए, दावत के साथ उनकी पैरवी का जज़्बा और जान व माल लगा देने का शौक़ जागे और वे हिजरत व नुसरत को समझें और इसकी बुनियाद पर अमल व अख़्लाक़ में आगे बढ़ें। जब कभी वे इन वाक़ियों और क़िस्सों को पढ़ें और सुनें, तो उनमें ऐसा खो जाएं जैसे छोटी-मोटी नदियां समुद्र में खो जाती हैं और ऊंचे क़दों वाले इंसान पहाड़ के सामने बौने हो जाते हैं, यहां तक कि उनको अपने यक़ीन पर शक होने लगे, आमाल नज़रों में हक़ीर हो जाएं और ज़िंदगी बे-हैसियत नज़र आने लगे। उनकी हिम्मतें बुलन्द हों, दिलों में शौक़ लहरें लेने लगे और हिम्मतें और इरादे पक्के और मज़बूत हो जाएं।

अल्लाह के चाहने और उसके इरादे से, दावत की इज़्ज़त और बरतरी के अलावा इस ऊंची किताब के तैयार करने का शरफ़ भी हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब को मिला, हालांकि उनकी ज़िंदगी की मसरूफ़ियत, बराबर सफ़र पर रहने, मेहमानों की भीड़, वफ़्दों के आने और पढ़ने-पढ़ाने के काम के साथ लिखने-लिखाने का कोई इम्कान (संभावना) न था, लेकिन उन्होंने अल्लाह की तौफ़ीक़ और मदद, ज़बरदस्त हिम्मत, और अज़्म व इरादे से लिखने-लिखाने का काम भी अंजाम दिया और इस तरह दावत देने के काम और लिखने-लिखाने के काम को एक साथ जमा कर दिया। इसका जमा होना यक़ीनन बहुत मुश्किल काम है, उन्होंने न सिर्फ़ तीन मोटे-मोटे हिस्सों में सहाबा किराम के हालात जमा किए और सीरत व तारीख़ और तबक़ात की किताबों में जो मवाद (सामग्री) बिखरा हुआ था, उसे इकट्ठा कर दिया, बल्कि इमाम तहावी की पुस्तक 'शरह मआनिल आसार' की शरह (टीका) तैयार की जो अल्लाह की तौफ़ीक़ से मोटे-मोटे कई हिस्सों में है।

लेखक ने अल्लाह के रसूल की सीरत की घटनाओं से शुरूआत की है और साथ-साथ सहाबा के हालात भी लिखे हैं और ख़ास तौर पर दावती और तर्बियती पहलू को उजागर किया है। इस तरह यह दावत देनेवालों का ऐसा तज़्किरा है जो काम करने वालों के लिए रास्ते का सामान और मुसलमानों के ईमान व यक़ीन का सरचश्मा है।

उन्होंने इस किताब के अन्दर सहाबा किराम के वे हालात और वाक़िए लिखे हैं, जिनका किसी एक किताब में मिलना मुम्किन नहीं है, क्योंकि ये क़िस्से और कहानियां हदीस की अलग-अलग किताबों या तारीख़ व तबक़ों के मज्मूओं और किताबों से लिए गए हैं, इस तरह यह एक ऐसा इन्साइक्लोपेडिया तैयार हो गया है, जो उस ज़माने की तस्वीर सामने लाकर रख देता है, जिसमें सहाबा किराम की ज़िंदगी, उनके अख़्लाक़ व किरदार के तमाम पहलुओं और बारीकियों के साथ नज़र आती है।

इन तमाम बातों को ख़ास अन्दाज़ से बयान कर देने की वजह से किताब में एक ऐसी तासीर (प्रभाव) पैदा हो गई है जो उन किताबों में नहीं पाई जा सकती जिनमें कम और थोड़ी-सी बातें होती हैं। इसलिए एक पाठक (पढ़ने वाला) इसकी वजह से ईमान और दावत, सरफ़रोशी और जांबाज़ी और बलिदान और इख़्लास और ज़ुह्द के माहौल में वक़्त गुज़ारता है।

अगर यह सही है कि किताब लिखने वाले का आईना और उसके जिगर का टुकड़ा होती है और जिस कैफ़ीयत, जज़्बे व लगन, रूह व तासीर से लिखी जाती है, उससे ज़ाहिर हो जाती है, तो मैं पूरे भरोसे के साथ कह सकता हूं कि यह किताब असरदार, ताक़तवर और कामियाब है। चूंकि सहाबा किराम की मुहब्बत उनकी नस-नस में घुस चुकी थी और दिल व दिमाग़ में रच-बस गई थी, इसलिए लेखक ने उसको अक़ीदत (श्रद्धा) मुहब्बत और ताल्लुक़ की ज़बरदस्त कैफ़ियत के साथ लिखा है।

लेखक के बड़कपन और इख़्लास को देखते हुए इस किताब को किसी 'अपनी बात' के लिखने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह ख़ुद जहां तक मेरी जानकारी में है, ईमान की ताक़त, दावत में डूब जाने और यकसू हो जाने के एतबार से रब की देन और ज़माने की ख़ूबियों में से एक थे और ऐसे लोग सदियों में पैदा होते हैं।

वह एक ऐसी दीनी तहरीक और दावत की क़ियादत (नेतृत्व) कर रहे थे। जो अपने फैलाव, ताक़त, बड़ाई और असर में सबसे बड़ी

तहरीक है, लेकिन इस नाचीज़ को उन्होंने इसके ज़रिए इज़्ज़त बख़्शी और इस बहुत बड़े काम में उसका भी हिस्सा हो गया। ख़ुदा का क़ुर्ब मिले, उसके लिए मैंने ये बातें लिख दीं।

अल्लाह इस किताब को मक़्बूले आम बनाए और ख़ुदा के बन्दों को नफ़ा पहुंचाए।

—अबुल हसन अली नदवी

2 रजब 1378 हि०

दो बातें

(उर्दू/हिन्दी हयातुस्सहाबा के लिए)

● हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली हसनी नदवी

यह किताब असल में अरबी में लिखी गई थी, जो इस्लाम और मुसलमानों की आलमी, हमेशा बाक़ी रहने वाली, मुस्तनद (प्रामाणिक), महबूब, मज़हबी और इल्मी ज़ुबान है और हमेशा रहेगी, इसलिए कि अल्लाह फ़रमा चुका है—

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحٰفِظُونَ ۝

'हमने क़ुरआन मजीद को उतारा और हम उसकी हमेशा हिफ़ाज़त करने वाले हैं।'

किसी किताब की हिफ़ाज़त के वायदे में यह बात अपने आप शामिल हो जाती है कि वह हमेशा पढ़ी और समझी जाएगी और इसके लिए ज़रूरी है कि वह जिस भाषा में है, वह भी ज़िंदा और महफ़ूज़ हो और बोली और समझी जाती हो।

मर्कज़ निज़ामुद्दीन दिल्ली से शुरू होनेवाली तब्लीग़ी दावत व तहरीक, इस किताब के लेखक हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के ज़माने में हिजाज़ और दूसरे अरब देशों में पहुंचने लगी थी और वहां के उलेमा इसका असर लेते जा रहे थे, इसलिए इस किताब का शुरू में अरबी में होना मुनासिब भी था और ज़रूरत के मुताबिक़ था।

चुनांचे यह किताब पहली बार दाइरतुल मआरिफ़ उस्मानिया के अरबी प्रेस में छपी। उसके बाद विद्वानों ने इसे हाथों हाथ लिया और अरब देशों में तो धूम मच गई, फिर दमिश्क़ के दारुल क़लम से बेहतर और सुन्दर छपाई के साथ छपी और मक़्बूल हुई और अभी इसका सिलसिला जारी है। (उम्मीद है इसके अभी बहुत-से एडीशन निकलेंगे)

लेकिन इसके साथ ज़रूरत थी कि भारतीय उपमहाद्वीप (हिन्दुस्तान-पाकिस्तान) और कुछ उन देशों के लिए जहां भारत-पाकिस्तान के लोग भारी संख्या में रहते हैं, और जहां उर्दू/हिन्दी बोली-समझी जाती है,

उसका उर्दू में भरोसेमंद और आसान अनुवाद छापा जाए, ताकि उन देशों में जानेवाली जमाअतें और ख़ुद वहां के दीनी ज़ौक़ और जज़्बा रखने वाले और दावती काम में हिस्सा लेनेवाले, इससे सीधा फ़ायदा उठा सकें, अपनी ईमानी चिंगारियों को जलाए रख सकें और अपनी ज़िंदगी, रहन-सहन, अख़्लाक़, जज़्बों तथा रुझानों को शुरू के मुसलमानों और नबी सल्ल० की गोद में पलने वाले दीन की दावत देनेवालों के नक़्शे क़दम पर चल सकें।

एक समय से इसकी ज़रूरत महसूस की जा रही थी, लेकिन हर काम का समय तै होता है। चुनांचे हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० के पुराने साथी और जानशीं, दावत की शानदार मेहनत के मौजूदा अमीर (और अब उनका भी देहान्त हो गया) हज़रत मौलाना मुहम्मद इनामुल हसन रह० की इजाज़त और इशारे से इस किताब के तर्जुमे (अनुवाद) की शुरूआत हुई और अल्लाह ने यह सआदत मौलवी मुहम्मद एहसानुल हक़ साहब (उस्ताद अरबी मदरसा राए विंड) के हिस्से में डाली थी। वह मज़ाहिरे उलूम सहारनपुर के फ़ाज़िल, हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना ज़करिया साहब के मजाज़ और ख़ुद तब्लीग़ी जमाअत की सोच में ढले हुए और उसी की गोद में पले हुए हैं, इसलिए कि किसी ऐसी किताब के अनुवाद के लिए जो किसी दावत की ओर लोगों को बुला रही हो और जिसकी दावत जज़्बे और तासीर से भरी हुई हो, सिर्फ़ उस भाषा का जानना, जिसमें वह किताब है और उसको अपनी भाषा में अनुवाद कर देने की सलाहियत काफ़ी नहीं, इसके लिए ख़ुद उस जज़्बे में डूबा रहना और उन मक़्सदों की दावत देनेवाला होना भी ज़रूरी है, जिनकी परवरिश और तब्लीग़ के लिए यह किताब लिखी गई।

अलहम्दु लिल्लाह, किताब के अनुवादक में ये सब चीज़ें पाई जाती हैं।

वह निजी, ख़ानदानी, ज़ेहनी और इल्मी और बातिनी और रूहानी, हर तरीक़े पर इस दावत और जमाअत के उसूलों, मक़्सदों से न सिर्फ़ मुत्तफ़िक़ और मुतास्सिर है, बल्कि इनके तर्जुमान और दाई भी हैं।

फिर इस अनुवाद पर बहुत-से विद्वानों ने नज़र डाली है और अपने नेक मश्विरे भी दिए हैं, जिनमें मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन साहब, मौलाना मुहम्मद अहमद साहब अंसारी, मौलाना ज़ाहिर शाह, मौलाना नज़रुर्रहमान साहब, मौलाना जमशेद अली साहब पाकिस्तानी उलेमा से और मर्कज़ निज़ामुद्दीन दिल्ली के बुज़ुर्गों और उलेमा में से हज़रत मौलाना इज़हारुल हसन साहब कांधलवी ख़ास तौर पर ज़िक्र के क़ाबिल हैं।

अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि यह अनुवाद हर तरह से मुफ़ीद और असरदार साबित होगा और अपने अहम और बुलन्द मक़्सद को पूरा करेगा। आख़िर में यह बात ज़ेहन में रहे कि यह अनुवाद दीनी बातों को न जानने वाले आम सादा मुसलमानों की सतह को सामने रखकर किया गया है और वह सादा और सबकी समझ में आनेवाला होने के साथ-साथ असरदार और मनभावक है।

अल्लाह इससे ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा पहुंचाए और इसे क़ुबूलियत से नवाज़े

—अबुल हसन अली नदवी

दारुल उलूम नदवतुल उलेमा, लखनऊ

19 रबीउल अव्वल 1412 हि० 29 सितम्बर 1991 ई०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत के बारे में कुरआनी आयतें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ؗ

1. सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जो पालने वाला सारे जहान का, बेहद मेहरबान, निहायत रहम वाला है, बदले के दिन का मालिक है। (ऐ अल्लाह !) हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तुझी से मदद चाहते हैं। बतला हमको सीधा रास्ता, उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने फ़ज़्ल फ़रमाया, जिन पर न तेरा ग़ुस्सा हुआ और न वे गुमराह हुए।

(अल-फ़ातिहा 1 : 7)

اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ

2. बेशक अल्लाह है रब मेरा और रब तुम्हारा, सो उसकी बन्दगी करो, यही राह सीधी है। (आले इम्रान 51)

قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

3. तू कह दे, मुझको सुझाई मेरे रब ने सीधी राह, सही दीन (धर्म) मिल्लते इब्राहीम का, जो एक ही तरफ़ का था और न था शिर्क वालों में। तू कह, मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह ही के लिए है, जो पालने वाला सारी दुनिया का है, कोई नहीं उसका शरीक और यही मुझको हुक्म हुआ और मैं सबसे पहला फ़रमांबरदार हूं। (अल-अनआम 161-163)

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّى رَسُولُ اللّٰهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِى لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْىِۦ وَيُمِيتُ ۖ فَـَٔامِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ النَّبِىِّ الْأُمِّىِّ الَّذِى يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهِۦ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝

4. तू कह, ऐ लोगो ! मैं रसूल हूं अल्लाह का तुम सबकी तरफ़, जिसकी हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में, किसी की बन्दगी नहीं उसके सिवा, वही जिलाता है और मारता है, सो ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके भेजे हुए नबी उम्मी पर, जो कि यक़ीन रखता है अल्लाह पर और उसके सब कलामों पर और उसकी पैरवी करो ताकि तुम राह पाओ। (अल-आराफ़ 158)

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوٓا أَنفُسَهُمْ جَآءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ۝

5. और हमने कोई रसूल नहीं भेजा मगर इसी वास्ते कि उसका हुक्म मानें अल्लाह के फ़रमाने से, और अगर वे लोग, जिस वक़्त उन्होंने अपना बुरा किया था, आते तेरे पास, फिर अल्लाह से माफ़ी चाहते और रसूल भी उनको बख़्शवाता, तो अलबत्ता अल्लाह को पाते माफ़ करने वाला मेहरबान। (अन-निसा 64)

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوٓا أَطِيعُوا اللّٰهَ وَرَسُولَهُۥ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنتُمْ تَسْمَعُونَ ۝

6. ऐ ईमान वालो, हुक्म मानो अल्लाह का और उसके रसूल का और उससे मत फिरो सुन कर। (अल-अंफ़ाल 20)

وَأَطِيعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

7. और हुक्म मानो अल्लाह का और रसूल का, ताकि तुम पर रहम हो। (आले इम्रान 132)

وَأَطِيعُوا اللّٰهَ وَرَسُولَهُۥ وَلَا تَنَٰزَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَاصْبِرُوٓا ۚ إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصَّٰبِرِينَ ۝

8. और हुक्म मानो अल्लाह का और रसूल का और आपस में न झगड़ो, पस नामुराद हो जाओगे और जाती रहेगी तुम्हारी हवा और सब्र करो। बेशक अल्लाह साथ है सब्र करने वालों के। (अल-अंफ़ाल 46)

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُوا۟ ٱلرَّسُولَ وَأُو۟لِى ٱلْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ فَإِن تَنَٰزَعْتُمْ فِى شَىْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى ٱللَّهِ وَٱلرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝

9. ऐ ईमान वालो ! हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और हाकिमों का जो तुममें से हों, फिर अगर झगड़ पड़ो किसी चीज़ में, तो उसको पलटाओ अल्लाह की तरफ़ और रसूल की तरफ़, अगर यक़ीन रखते हो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर। यह बात अच्छी है और बहुत बेहतर है इसका अंजाम। (अन-निसा 59)

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ ٱلْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا۟ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَيَخْشَ ٱللَّهَ وَيَتَّقْهِ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَآئِزُونَ ۝

10. ईमान वालों की बात यही थी कि जब बुलाइए उनको अल्लाह और रसूल की ओर फ़ैसला करने को उनमें, तो कहें हमने सुन लिया और हुक्म मान लिया और वे लोग कि उन्हीं का भला है और जो कोई हुक्म पर चले अल्लाह के और उसके रसूल के और डरता रहे अल्लाह से और बचकर चले उससे, सो वही लोग हैं मुराद को पहुंचने वाले। (अन-नूर 51-52)

قُلْ أَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُوا۟ ٱلرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُم مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا۟ ۚ وَمَا عَلَى ٱلرَّسُولِ إِلَّا ٱلْبَلَٰغُ ٱلْمُبِينُ ۝ وَعَدَ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنكُمْ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى ٱلْأَرْضِ كَمَا ٱسْتَخْلَفَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ ٱلَّذِى ٱرْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّنۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِى لَا يُشْرِكُونَ بِى شَيْـًٔا ۚ وَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَٰسِقُونَ ۝ وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ وَأَطِيعُوا۟ ٱلرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

11. तू कह, हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का, फिर अगर तुम मुंह फेरोगे, तो उसका ज़िम्मा है जो बोझ उस पर रखा और तुम्हारा ज़िम्मा है जो बोझ तुम पर रखा और अगर उसका कहा मानो तो राह पाओ और पैग़ाम लानेवाले का ज़िम्मा नहीं, मगर पहुंचा

देना खोलकर। वायदा कर लिया अल्लाह ने उन लोगों से जो तुममें ईमान लाए हैं और किए हैं उन्होंने नेक काम, अलबत्ता पीछे हाकिम कर देगा उनको मुल्क में जैसा हाकिम किया था उनसे अगलों को और जमा देगा उनके लिए दीन उनका जो पसन्द कर दिया उनके वास्ते और देगा उनको उनके डर के बदले में अमन। मेरी बन्दगी करेंगे, शरीक न करेंगे मेरा किसी को और जो कोई नाशुक्री करेगा उसके पीछे, सो वही लोग हैं नाफ़रमान और क़ायम रखो नमाज़ और देते रहो ज़कात और हुक्म पर चलो रसूल के, ताकि तुम पर रहम हो। (अन-नूर 54-55)

يَا يُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۚ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝

12. ऐ ईमान वालो! डरते रहो अल्लाह से और कहो बात सीधी कि संवार दे तुम्हारे वास्ते तुम्हारे काम और बख़्श दे तुमको तुम्हारे गुनाह और जो कोई कहने पर चला अल्लाह के और उसके रसूल के, उसने पाई बड़ी मुराद।' (अल-अहज़ाब 70-71)

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝

13. ऐ ईमान वालो! हुक्म मानो अल्लाह का और रसूल का, जिस वक़्त बुलाए तुमको उस काम की तरफ़ जिसमें तुम्हारी ज़िंदगी है और जान लो कि अल्लाह रोक लेता है आदमी से उसके दिल को और यह कि उसी के पास तुम जमा होगे। (अल-अंफ़ाल 24)

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝

14. तू कह, हुक्म मानो अल्लाह का और रसूल का, फिर अगर मुंह मोड़ें, तो अल्लाह को मुहब्बत नहीं है काफ़िरों से। (आले इम्रान 32)

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۝

15. जिसने हुक्म माना रसूल का, उसने हुक्म माना अल्लाह का और जो उलटा फिरा तो हमने तुमको नहीं भेजा उन पर निगहबान।

(अन-निसा 80)

وَمَنْ يُطِعِ اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ۚ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ۚ

16. और जो कोई हुक्म माने अल्लाह का और उसके रसूल का, सो वे उनके साथ हैं जिन पर अल्लाह ने इनाम किया कि वे नबी और सिद्दीक़ और शहीद और नेक बख़्त हैं और अच्छा है उनका साथ। यह मेहरबानी है अल्लाह की ओर से और अल्लाह काफ़ी है जानने वाला।

(अन-निसा 69-70)

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝

17. और जो कोई हुक्म पर अल्लाह के चले और रसूल के उसको दाख़िल करेगा जन्नतों में, जिनके नीचे बहती हैं नहरें, हमेशा रहेंगे उनमें और यही है बड़ी मुराद मिलनी। और जो कोई नाफ़रमानी करे अल्लाह की और उसके रसूल की और निकल जाए उसकी हदों से, डालेगा उसको आग में, हमेशा रहेगा उसमें और उसके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (अन-निसा 13-14)

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۭ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۠ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۭ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝

18. तुझसे पूछते हैं हुक्म ग़नीमत का। तू कह दे कि ग़नीमत का माल अल्लाह का है और रसूल का। सो डरो अल्लाह से और सुलह करो आपस में और हुक्म मानो अल्लाह का और उसके रसूल का अगर

ईमान रखते हो। ईमान वाले वही हैं कि जब नाम आए अल्लाह का तो डर जाएं उनके दिल और जब पढ़ा जाए उन पर उसका कलाम तो ज़्यादा हो जाता है उनका ईमान। और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं, वे लोग कि जो क़ायम रखते हैं नमाज़ को और हमने जो उनको रोज़ी दी है, उसमें से ख़र्च करते हैं। वही हैं सच्चे ईमान वाले। उनके लिए दर्जे हैं रब के पास और माफ़ी और रोज़ी इज़्ज़त की। (अन-अंफ़ाल 1-4)

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

19. और ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें एक दूसरे की मददगार हैं, सिखलाते हैं नेक बात और मना करते हैं बुरी बात से और क़ायम रखते हैं नमाज़ और देते हैं ज़कात और हुक्म पर चलते हैं अल्लाह के और उसके रसूल के, वही लोग हैं जिन पर रहम करेगा अल्लाह ! बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है हिक्मत वाला। (अत-तौबा 71)

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

20. तू कह अगर तुम मुहब्बत रखते हो अल्लाह की, तो मेरी राह चलो ताकि मुहब्बत करे तुमसे अल्लाह और बख़्शे गुनाह तुम्हारे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (आले इम्रान 31)

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ
الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ۝

21. तुम्हारे लिए भली थी सीखनी रसूलुल्लाह की चाल। इसके लिए जो कोई उम्मीद रखता है अल्लाह की और पिछले दिन की और याद करता है अल्लाह को बहुत-सा। (अल-अहज़ाब 21)

وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ

22. और जो दे तुमको रसूल, सो ले लो और जिससे मना करे, सो छोड़ दो। (अल हश्र 7)

नबी करीम सल्ल० की पैरवी और इताअत और आपके ख़लीफ़ों की पैरवी के बारे में हदीसें

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जिसने मेरी इताअत की, उसने अल्लाह की इताअत की, जिसने मेरी नाफ़रमानी की, उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की और जिसने मेरे अमीर की इताअत की, उसने मेरी इताअत की और जिसने मेरे अमीर की नाफ़रमानी की, उसने मेरी नाफ़रमानी की।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मेरी सारी उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी, लेकिन जो इंकार करेगा (वह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।) अर्ज़ किया गया और कौन इंकार करेगा? आपने फ़रमाया, जिसने मेरी इताअत की, वह जन्नत में दाख़िल होगा और जिसने मेरी नाफ़रमानी की, उसने इंकार किया।[2]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु इर्शाद फ़रमाते हैं कि कुछ फ़रिश्ते नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और आप सो रहे थे। उन फ़रिश्तों ने (आपस में) कहा कि तुम्हारे इस साथी के लिए एक मिसाल है, इस मिसाल को बयान करो। कुछ फ़रिश्तों ने कहा, यह सो रहे हैं और कुछ फ़रिश्तों ने कहा, इनकी आंखें सोती हैं और दिल जागता रहता है, तो फ़रिश्तों ने कहा कि इनकी मिसाल उस आदमी जैसी है कि जिसने एक घर बनाया और उस घर में खाने की एक दावत का इन्तिज़ाम किया और एक बुलाने वाले को भेजा, तो जिसने उस बुलाने वाले की बात मानी, वह घर में दाख़िल हुआ और उस दावत में

---

1. बुख़ारी,
2. बुख़ारी, जामेअ, भाग 2, पृ० 233

से खाया और जिसने उस बुलाने वाले की बात न मानी, न वह घर में दाख़िल हुआ और न उस दावत में से कुछ खाया।

फिर फ़रिश्तों ने कहा, इस मिसाल का मतलब उनके सामने बयान करो, ताकि ये समझ जाएं, इस पर कुछ फ़रिश्तों ने कहा कि यह तो सो रहे हैं और कुछ ने कहा कि इनकी आंखें सोती हैं और दिल जागता है।

तब फ़रिश्तों ने यह मतलब बयान किया कि वह घर जन्नत है और बुलाने वाले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, इसलिए जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत की, उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाफ़रमानी की, उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वजह से लोगों की दो क़िस्में हो गईं। (जिसने आपकी मानी, उसने अल्लाह की मानी और जन्नत में जाएगा और जिसने आपकी न मानी उसने अल्लाह की न मानी, और वह जन्नत में नहीं जाएगा।)[1]

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मेरी और इस दीन की मिसाल, जिसको देकर अल्लाह ने मुझे भेजा है, उस आदमी जैसी है जो अपनी क़ौम के पास आया और कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मैंने अपनी आंखों से (दुश्मन की बड़ी) फ़ौज को (तुम्हारी ओर आते हुए) देखा है। मैं तुमको बे-ग़रज होकर डरा रहा हूं, इसलिए (यहां से भागने में) जल्दी करो, जल्दी करो।

चुनांचे उसकी क़ौम में से कुछ लोगों ने उसकी बात मान ली और शाम होते ही चल दिए और आराम से चलते रहे और वे तो बच गए और उस क़ौम में से कुछ लोगों ने उसे झूठा समझा और वहीं ठहरे रहे, तो दुश्मन की फ़ौज ने उन पर सुबह-सुबह हमला करके हलाक कर दिया और उनको बिल्कुल ख़त्म कर दिया।

यह मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने मेरी बात मानी और जो

---

1. बुख़ारी, मिश्कात, पृ० 21

सच्चा दीन मैं लेकर आया, उस पर अमल किया और उन लोगों की जिन्होंने मेरी नाफ़रमानी की और जो सच्चा दीन लेकर मैं आया, उसको झुठलाया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि जो कुछ बनी इस्राईल पर आया, वह सबकुछ मेरी उम्मत पर ज़रूर आएगा (और दोनों बहुत मिलते-जुलते होंगे), जैसे कि दोनों जूते एक दूसरे के बराबर किए जाते हैं, यहां तक कि अगर बनी इसराईल में से किसी ने अपनी मां के साथ खुल्लम-खुल्ला ज़िना किया होगा तो मेरी उम्मत में भी ऐसा आदमी होगा जो इस काम को करेगा और बनी इसराईल बहत्तर फ़िर्क़ों में बंट गए थे, मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िर्क़ों में बंट जाएगी और एक फ़िर्क़े के अलावा बाक़ी तमाम फ़िर्क़े जहन्नम में जाएंगे।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वह एक फ़िर्क़ा कौन-सा होगा?

आपने फ़रमाया, जो उस रास्ते पर चले जिस पर मैं और मेरे सहाबा रज़ि० हैं।[2]

हज़रत इरबाज़ बिन सारिया रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें नमाज़ पढ़ाई और फिर अपने नूरानी चेहरे के साथ हम लोगों की ओर मुतवज्जह हुए और ऐसा असर भरा वाज़ बयान फ़रमाया कि जिससे आंखों से आंसू जारी हो गए और दिल कांप गए।

एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपका यह वाज़ ऐसा मालूम होता है जैसे कि जानेवाले का (आख़िरी) वाज़ हुआ करता है, इसलिए आप हमें किन ख़ास बातों की ताकीद फ़रमाते हैं।

आपने फ़रमाया, मैं तुम्हें इस बात की वसीयत करता हूं कि अल्लाह

1. बुख़ारी व मुस्लिम,
2. तिर्मिज़ी,

से डरो और अमीर की बात सुनो और मानो, अगरचे वह हब्शी गुलाम हो, क्योंकि तुममें से मेरे बाद जो भी ज़िंदा रहेगा, यह बहुत-से मतभेद देखेगा, तो ऐसी सूरत में मेरी और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन की सुन्नत पर अमल करते रहना और उसे थामे रखना और दांतों से मज़बूत पकड़े रहना और नई-नई बातों से बचना, क्योंकि हर नई बात बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि मैंने अपने रब से अपने बाद सहाबा रज़ि० से होनेवाले मतभेदों के बारे में पूछा, तो अल्लाह ने मेरे पास यह वह्य भेजी कि ऐ मुहम्मद! आपके सहाबा मेरे नज़दीक आसमान के सितारों की तरह हैं। हर सितारे में नूर है, लेकिन कुछ सितारे दूसरों से ज़्यादा रोशन हैं। जब सहाबा की किसी राय के बारे में राए अलग-अलग हो जाए, तो जो आदमी उनमें से किसी भी एक की राए पर अमल कर लेगा, वह मेरे नज़दीक हिदायत पर है और आपने फ़रमाया मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं, जिसकी भी पैरवी करोगे, हिदायत पा जाओगे।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि मुझे मालूम नहीं है कि मैं तुम में कितनी मुद्दत तक रहूंगा और हज़रत अबूबक्र रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० की ओर इशारा करते हुए फ़रमाया कि मेरे बाद इन दोनों की इक़्तिदा (पैरवी) करना और अम्मार की सीरत अपनाओ और इब्ने मसऊद तुम्हें जो भी बताएं, उसे सच्चा मानो।[3]

हज़रत बिलाल बिन हारिस मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि जिसने मेरे बाद मेरी किसी मिटी हुई सुन्नत को ज़िंदा किया, तो जितने लोग

---

1. तिर्मिज़ी, अबू दाऊद,
2. रज़ीन, जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 201
3. तिर्मिज़ी,

उस सुन्नत पर अमल करेंगे, उन सब के बराबर उसे बदला मिलेगा और इससे उन लोगों के बदले में कोई कमी न आएगी और जिसने गुमराही का कोई ऐसा तरीक़ा ईजाद किया, जिससे अल्लाह और उसके रसूल कभी राज़ी नहीं हो सकते तो जितने लोग उस तरीक़े पर अमल करेंगे, उन सब के बराबर उसे गुनाह होगा और इससे उन लोगों के गुनाह में कोई कमी नहीं आएगी।[1]

हज़रत अम्र बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि दीन हिजाज़ की ओर ऐसे सिमट आएगा, जैसे कि सांप अपने बिल की ओर सिमट आता है और दीन हिजाज़ में अपनी जगह इस तरह ज़रूर बना लेगा, जिस तरह पहाड़ी बकरी (शेर के डर की वजह से) पहाड़ों की चोटी पर अपनी जगह बनाती है।

दीन शुरू में अजनबी था और बहुत जल्द फिर पहले की तरह अजनबी हो जाएगा, इसलिए उन लोगों के लिए ख़ुशख़बरी है जिनको दीन की वजह से अजनबी समझा जाए, और यह वे लोग हैं जो मेरे बाद मेरी जिस सुन्नत को लोग बिगाड़ दें, ये उस सुन्नत को ठीक कर देते हैं।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे इर्शाद फ़रमाया कि ऐ मेरे बेटे! अगर तुम हर वक़्त अपने दिल की यह कैफ़ियत बना सकते हो कि उसमें किसी के बारे में तनिक भी खोट न हो तो ज़रूर ऐसे करो।

फिर आपने फ़रमाया कि ऐ मेरे बेटे! यह मेरी सुन्नत में से है और जिसने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की, उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की, वह मेरे साथ जन्नत में होगा।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु

1. तिर्मिज़ी, इब्ने माजा,
2. तिर्मिज़ी
3. तिर्मिज़ी,

अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मेरी उम्मत के बिगड़ने के वक़्त जिसने मेरी सुन्नत को मज़बूती से थामे रखा, उसे सौ शहीदों का सवाब मिलेगा।

यह रिवायत बैहक़ी की है और तबरानी में यह रिवायत हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत की गई है और उसमें यह है कि उसे एक शहीद का सवाब मिलेगा।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत के बिगड़ने के वक़्त, मेरी सुन्नत को मज़बूती से थामने वाले को एक शहीद का अज्र मिलेगा।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत के इख़्तिलाफ़ के वक़्त मेरी सुन्नत को मज़बूती से थामने वाला हाथ में चिंगारी लेनेवाले की तरह होगा।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि जो मेरी सुन्नत से मुंह मोड़े, उसका मुझसे कोई ताल्लुक़ नहीं है।

यह रिवायत मुस्लिम की है और इब्ने असाकिर में यह रिवायत हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की गई है और इसके शुरू में ये शब्द भी हैं कि जिसने मेरी सुन्नत पर अमल किया, उसका मुझसे ताल्लुक़ है।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाती हैं कि जिसने सुन्नत को मज़बूती से थामा, वह जन्नत में दाख़िल होगा।[4]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 44
2. तबरानी और अबू नुऐम
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 47
4. दारे क़ुत्नी,

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि जिसने मेरी सुन्नत को ज़िंदा किया, उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की, वह मेरे साथ जन्नत में होगा।[1]

---

1. सजज़ी

नबी करीम सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० के बारे में क़ुरआनी आयतें

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۟

1. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाप नहीं किसी के, तुम्हारे मर्दों में से, लेकिन रसूल हैं अल्लाह के और मुहर सब नबियों पर और है अल्लाह सब चीज़ों को जानने वाला। (अल-अहज़ाब 40)

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۟ۙ وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ۟

2. ऐ नबी ! हमने तुझको भेजा बताने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला और बुलाने वाला अल्लाह की ओर उसके हुक्म से और चमकता हुआ चिराग़। (अल-अहज़ाब 44-45)

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۟ۙ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۟

3. हमने तुझको भेजा अहवाल बताने वाला और ख़ुशी और डर सुनाने वाला, ताकि तुम लोग यक़ीन लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उसकी मदद करो और उसका बड़कपन रखो और उसकी पाकी बोलते रहो, सुबह और शाम। (अल-फ़त्ह 8-9)

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْئَلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ۟

4. बेशक हमने तुझको भेजा है सच्चा दीन, ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला और तुझसे पूछ नहीं दोज़ख़ में रहने वालों की। (अल-बक़रा 119)

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ۟

5. हमने भेजा है तुझको सच्चा दीन देकर ख़ुशी और डर सुनाने वाला और कोई फ़िरक़ा नहीं, जिसमें नहीं हो चुका कोई डर सुनाने

वाला। (फ़ातिर 24)

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ

6. और तुझको जो हमने भेजा, सो सारे लोगों के वास्ते ख़ुशी और डर सुनाने को, लेकिन बहुत लोग नहीं समझते। (सबा 28)

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا

7. और तुझको हमने भेजा यही ख़ुशी और डर सुनाने के लिए।

(अल-फ़ुरक़ान 56)

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ

8. और तुझको जो हमने भेजा सो मेहरबानी कर, कर जहान के लोगों पर। (अल-अंबिया 107)

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ

9. उसी ने भेजा अपने रसूल को हिदायत और सच्चा दीन देकर, ताकि उसको ग़लबा दे हर दीन पर और पड़े बुरा मानें मुश्रिक।

(अत-तौबा 33)

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ
شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ
وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ

10. और जिस दिन खड़ा करेंगे हम हर फ़िरक़े में एक बतलाने वाला उन पर उन्हीं में का और तुझको लाएं बतलाने को उन लोगों पर और उतारी हमने तुझ पर किताब, खुला बयान हर चीज़ का और हिदायत और रहमत और ख़ुशख़बरी हुक्म मानने वालों के लिए।

(अन-नह्ल 89)

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ
عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا

11. और इसी तरह किया हमने तुमको बीच की उम्मत, ताकि हो तुम गवाह लोगों पर और हो रसूल तुम पर गवाही देनेवाला।

(अल-बक़रा 143)

قَدْ أَنْزَلَ اللّٰهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝ رَّسُولًا يَتْلُوا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ ، وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا أَبَدًا ، قَدْ أَحْسَنَ اللّٰهُ لَهُ رِزْقًا ۝

12. बेशक अल्लाह ने उतारी है तुम पर नसीहत, रसूल है जो पढ़कर सुनाता है तुमको अल्लाह की आयतें, खोलकर सुनाने वाली, ताकि निकाले उन लोगों को जो कि यक़ीन लाए और किए भले काम अंधेरों से उजाले में और जो कोई यक़ीन लाए अल्लाह पर और करे कुछ भलाई, उसको दाखिल करे बाग़ों में, नीचे बहती हैं जिनके नहरें, सदा रहें उनमें हमेशा, अलबत्ता ख़ूब दी अल्लाह ने उसको रोज़ी।

(अत-तलाक़ 10-11)

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ، وَإِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

13. अल्लाह ने एहसान किया ईमान वालों पर जो भेजा उनमें रसूल उन्हीं में का, पढ़ता है उन पर आयतें उसकी और पाक करता है उनको यानी शिर्क वग़ैरह से और सिखलाता है उनको किताब और काम की बात और वे तो पहले से खुली गुमराही में थे। (आले इम्रान 164)

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاذْكُرُوْنِيْ أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ۝

14. जैसा कि भेजा हमने तुममें रसूल तुम ही में का, पढ़ता है तुम्हारे आगे आयतें हमारी और पाक करता है तुमको और सिखलाता है तुमको किताब और उसके भेद और सिखाता है तुमको जो तुम न जानते थे। सो तुम याद रखो मुझको, मैं याद रखूं तुमको और एहसान मानो मेरा और नाशुक्री न करो। (अल-बक़रा 151-152)

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

15. आया है तुम्हारे पास रसूल तुम में का, भारी है उस पर जो तुमको तक्लीफ़ पहुंचे, लालची है तुम्हारी भलाई पर, ईमान वालों पर बड़ा शफ़ीक़ और मेहरबान है। (अत्तौबा 128)

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ لِنتَ لَهُمْ ۖ وَلَوْ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ ۖ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ۝

16. सो कुछ अल्लाह ही की रहमत है जो तू नर्म दिल मिल गया उनको और अगर तू होता तेज़ मिज़ाज, सख़्त दिल, तो अलग-अलग हो जाते तेरे पास से, सो तू उनको माफ़ कर और उनके वास्ते बख़्शिश मांग और उनसे मश्विरा ले काम में, फिर जब इरादा कर चुका तू इस काम का, तो फिर भरोसा कर अल्लाह पर, अल्लाह को मुहब्बत है भरोसा करने वालों से। (आले इम्रान 159)

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

17. अगर तुम न मदद करोगे रसूल की, तो उसकी मदद की है अल्लाह ने, जिस वक़्त उसको निकाला था काफ़िरों ने कि वह दूसरा था दो में का, जब वे दोनों थे ग़ार (खोह) में, जब वह कह रहा था अपने साथी से, तू ग़म न खा, बेशक अल्लाह हमारे साथ है। फिर अल्लाह ने उतार दी अपनी ओर से उस पर तस्कीन और इसकी मदद को वे फ़ौजें भेजीं कि तुमने नहीं देखीं और नीचे डाली बात काफ़िरों की और अल्लाह की बात हमेशा ऊपर है और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला। (अत-तौबा 40)

مُّحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ ۖ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۖ سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِم مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

18. मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रसूल अल्लाह का और जो लोग उसके साथ हैं, ज़ोरावर हैं काफ़िरों पर, नर्म दिल हैं आपस

में, तू देखे उनको रुकूअ में और सज्दे में, ढूंढते हैं अल्लाह की मेहरबानी और उसकी ख़ुशी, निशानी उनकी उनके मुंह पर है सज्दे के असर से। यह शान है उनकी तौरात में और मिसाल उनकी इंजील में, जैसे खेती ने निकाला अपना पट्ठा, फिर उसकी कमर मज़बूत की, फिर मोटा हुआ, फिर खड़ा हो गया अपनी नाल पर, ख़ुश लगता है खेती वालों को, ताकि जलाए उनसे जी काफ़िरों का। वायदा किया है अल्लाह ने उनसे जो यक़ीन लाए हैं और किए हैं भले काम माफ़ी का और बड़े सवाब का। (अल-फ़त्ह 29)

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

19. वे लोग जो पैरवी करते हैं उस रसूल की जो नबी उम्मी है कि जिसको पाते हैं लिखा हुआ अपने पास तौरात और इंजील में। वह हुक्म करता है उनको नेक काम का और मना करता है बुरे काम से और हलाल करता है उनके लिए सब पाक चीज़ें और हराम करता है उन पर नापाक चीज़ें और उतारता है उन पर से उनके बोझ और वे क़ैदें, जो उन पर थीं। सो जो लोग उन पर ईमान लाए और उसका साथ दिया और उसकी मदद की और ताबेअ हुए उस नूर के जो उसके साथ उतरा है, वही लोग पहुंचे अपनी मुराद को। (अल-आराफ़ 157)

अल्लाह का नबी करीम सल्ल० के सहाबा (रज़ि०) के बारे में फ़रमान

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۙ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ۗ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ۗ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۠

1. अल्लाह मेहरबान हुआ नबी पर और मुहाजिरों और अंसार पर जो साथ रहे नबी के मुश्किल की घड़ी में बाद इसके कि क़रीब था दिल फिर जाएं कुछों के इनमें से, फिर मेहरबान हुआ उन पर, बेशक वह इन पर मेहरबान है रहम करने वाला और उन तीन आदमियों पर, जिनके पीछे रखा था, यहां तक कि ज़मीन तंग हो गई उन पर बावजूद कुशादा होने के और तंग हो गईं उन पर इनकी जानें और समझ गए कि कहीं पनाह नहीं अल्लाह से, मगर उसी की तरफ़, फिर मेहरबान हुआ उन पर ताकि वे फिर आएं। बेशक अल्लाह ही है मेहरबान रहम वाला।

(अत-तौबा 117-118)

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۙ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝

2. तहक़ीक़ अल्लाह ख़ुश हुआ ईमान वालों से, जब बैअत करने लगे तुझसे उस पेड़ के नीचे, फिर मालूम किया जो इनके जी में था, फिर उतारा उन पर इत्मीनान और इनाम दिया उनको एक फ़त्ह नज़दीक और बहुत ग़नीमतें जिनको वे लेंगे और है अल्लाह ज़बदस्त हिक्मत वाला।

(अल-फ़त्ह 18-19)

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

3. और जो लोग पुराने हैं सबसे पहले हिजरत करने वाले और मदद करने वाले और जो उनकी पैरवी करने वाले हुए नेकी के साथ, अल्लाह राज़ी हुआ उनसे और वे राज़ी हुए उससे और तैयार कर रखे हैं वास्ते उनके बाग़ कि बहती हैं नीचे उनके नहरें, रहा करें उन्हीं में हमेशा, यही है बड़ी सफलता। (अत-तौबा 100)

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ
اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ
الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ
حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُّوْقَ
شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

4. वास्ते उन मुफ़्लिसों वतन छोड़ने वालों के, जो निकाले हुए आए हैं अपने घरों से और अपने मालों से ढूंढते आए हैं अल्लाह की मेहरबानी और उसकी रज़ामंदी और मदद करने को अल्लाह की और उसके रसूल की। वे लोग वही हैं जो सच्चे और जो लोग जगह पकड़ रहे हैं इस घर में और ईमान में, इनसे पहले से वे मुहब्बत करते हैं उससे जो वतन छोड़कर आए उनके पास और नहीं पाते अपने दिल में तंगी उस चीज़ से जो मुहाजिरों को दी जाए और मुक़द्दम रखते हैं उनको अपनी जान से और अगरचे हो अपने ऊपर फ़ाक़ा और जो बचाया गया अपने जी के लालच से, तो वही लोग हैं मुराद पानेवाले।

(अल-हश्र 8-9)

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ
ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ
يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝

5. अल्लाह ने उतारी बेहतर बात किताब आपस में मिलती, दोहराई हुई, बाल खड़े होते हैं इससे खाल पर उन लोगों के जो डरते हैं अपने रब से, फिर नर्म होती हैं उनकी खालें और उनके दिल अल्लाह की याद पर। यह है राह देना अल्लाह का, इस तरह राह देता है, जिसको चाहे और जिसको राह भुलाए अल्लाह, उसको कोई नहीं सुझाने वाला। (अज़-ज़ुमर 23)

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا
يَسْتَكْبِرُونَ ۩ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ
يُنْفِقُونَ ۝ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

6. हमारी बातों को वही मानते हैं जब उनको समझाए इनसे, गिर पड़ें सज्दा कर और पाक ज़ात को याद करें अपने रब की। ख़ूबियों के साथ और वे बड़ाई नहीं करते। जुदा रहती हैं उनकी करवटें अपने सोने की जगह से, पुकारते हैं अपने रब को डर से और लालच से और हमारा दिया हुआ कुछ ख़र्च करते हैं, सो किसी जी को मालूम नहीं जो छुपा धरी है उनके वास्ते आंखों की ठंडक, बदला उसका जो करते थे।

(अस्सज्दा 15-17)

وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ
كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ۝ وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ
هُمْ يَنْتَصِرُونَ ۝

7. और जो कुछ अल्लाह के यहां है, बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है, वास्ते ईमान वालों के, जो अपने रब पर भरोसा रखते हैं और जो लोग कि बचते हैं बड़े गुनाहों से और बेहयाई से और जब गुस्सा आवे तो वे माफ़ कर देते हैं और जिन्होंने कि हुक्म माना अपने रब का और क़ायम किया नमाज़ को और काम करते हैं मश्विरा से आपस के और हमारा दिया कुछ ख़र्च करते हैं और वे लोग कि जब उन पर होवे चढ़ाई, तो वे बदला लेते हैं। (अश-शूरा 36-39)

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ
مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ۝ لِيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ
الْمُنَافِقِينَ إِنْ شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

8. ईमान वालों में कितने मर्द हैं कि सच कर दिखलाया जिस बात का अह्द किया था अल्लाह से, फिर कोई तो उनमें पूरा कर चुका अपना ज़िम्मा और कोई है उनमें राह देख रहा और बदला नहीं एक ज़र्रा, ताकि बदला दे अल्लाह सच्चों को उनके सच का और अज़ाब करे मुनाफ़िक़ों

पर अगर चाहे या तौबा डाले उनके दिल पर। बेशक अल्लाह है बख़्शने वाला मेहरबान। (अल-अहज़ाब 23-24)

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ

9. भला एक जो बन्दगी में लगा हुआ है रात की घड़ियों में सज्दे करता हुआ और खड़ा हुआ। ख़तरा रखता है आख़िरत का और उम्मीद रखता है अपने रब की मेहरबानी की, तू कह कोई बराबर होते हैं समझ वाले और बे-समझ। (अज़-ज़ुमर 9)

क़ुरआन मजीद से पहली किताबों में हुज़ूर सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० का तज़्किरा

अता बिन यसार कहते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मिला तो मैंने उनसे कहा कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वे ख़ूबियां बताएं जो तौरात में आई हैं।

उन्होंने फ़रमाया, बहुत अच्छा, ख़ुदा की क़सम! तौरात में भी आपकी वही ख़ूबियां बयान हुई हैं, जो क़ुरआन मजीद में हैं—

(चुनांचे तौरात में है) ऐ नबी! हमने आपको गवाह और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला और उम्मियों की हिफ़ाज़त करने वाला बनाकर भेजा है। आप मेरे बन्दे और मेरे रसूल हैं। मैंने आपका नाम मुतवक्किल रखा है, न आप सख़्त बात कहने वाले हैं, न सख़्त दिल, न बाज़ारों में शोर करने वाले हैं और न आप बुराई का बदला बुराई से देते हैं, बल्कि आप माफ़ करने वाले और दरगुज़र करने वाले हैं और अल्लाह आपको उस वक़्त दुनिया से उठाएगा, जबकि लोग لا إله إلا الله 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहकर टेढ़े दीन को सीधा कर लेंगे। उनके ज़रिए से अल्लाह अंधी आंखों को और बहरे कानों को और परदा पड़े हुए दिलों को खोल देंगे।[1]

हज़रत वह्ब बिन मुनब्बिह बयान फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने ज़बूर में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को यह वह्य फ़रमाई कि ऐ दाऊद! तुम्हारे बाद बहुत जल्द एक नबी आएगा जिसका नाम अहमद और मुहम्मद होगा। वह सच्चे और सरदार होंगे। मैं उनसे कभी नाराज़ नहीं हूंगा और न ही वह मुझे कभी नाराज़ करेंगे और मैंने उनकी अगली-पिछली तमाम ग़लतियां करने से पहले ही माफ़ कर दी हैं और आपकी उम्मत

1. अहमद, बुख़ारी, बैहक़ी

मेरी उम्मत से नवाज़ी हुई है, मैंने उनको वे नफ़्ल दिए हैं जो नबियों को अता किए और उन पर वे चीज़ें फ़र्ज़ कीं जो नबियों और रसूलों पर फ़र्ज़ कीं, यहां तक कि वह क़ियामत के दिन मेरे पास इस हाल में आएंगे कि उनका नूर नबियों के नूर जैसा होगा। अल्लाह ने यहां तक फ़रमा दिया कि ऐ दाऊद! मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और आपकी उम्मत को तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० ने हज़रत काब रज़ि० से फ़रमाया कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपकी उम्मत की ख़ूबियां बताएं।

उन्होंने फ़रमाया कि मैं अल्लाह की किताब (तौरात) में उनकी यह ख़ूबियां पाता हूं कि अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी उम्मत अल्लाह की ख़ूब तारीफ़ करने वाले हैं, अच्छे-बुरे हर हाल में अल-हम्दु लिल्लाह कहेंगे और चढ़ाई पर चढ़ते हुए अल्लाहु अक्बर कहेंगे और ढाल पर उतरते हुए सुबहानअल्लाह कहेंगे। उनकी अज़ान आसमानी फ़िज़ा में गूंजेगी। वे नमाज़ में ऐसी धीमी आवाज़ से अपने रब से हम-कलाम होंगे जैसे चट्टान पर शहद की मक्खी की भनभनाहट होती है और फ़रिश्तों की सफ़ों की तरह उनकी नमाज़ में सफ़ें होंगी और नमाज़ की सफ़ों की तरह उनकी जंग के मैदान में सफ़ें होंगी और वे जब अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए चलेंगे, तो मज़बूत नेज़े लेकर फ़रिश्ते उनके आगे और पीछे होंगे और जब वे अल्लाह के रास्ते में सफ़ बनाकर खड़े होंगे, तो अल्लाह उन पर ऐसे साया किए होगा (हुज़ूर सल्ल० ने अपने हाथ से इशारा करके बतलाया) जैसे कि गिद्ध अपने घोंसले पर साया करते हैं और लड़ाई के मैदान से ये लोग कभी पीछे नहीं हटेंगे।

हज़रत काब रज़ि० से इसी जैसी एक और रिवायत नक़ल की गई है, जिसका मज़मून यह है कि उनकी उम्मत अल्लाह की ख़ूब तारीफ़ करने वाली होगी। हर हाल में अलहम्दु लिल्लाह कहेंगे और हर चढ़ाई

1. बिदाया, भाग 2, पृष्ठ 326

पर चढ़ते हुए अल्लाहु अक्बर कहेंगे। (अपनी नमाज़ों के वक़्त के लिए) सूरज का ख़्याल रखेंगे और पांचों नमाज़ें अपने वक़्त पर पढ़ेंगे, अगरचे कूड़े-करकट वाली जगह पर हों, कमर के म्यान पर लुंगी बांधेंगे और वुज़ू में अपने अंगों को धोएंगे।[1]

---

1. हलीया, भाग 5, पृष्ठ 386

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ूबियों के बारे में हदीसें

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने अपने मामूं हिन्द बिन अबी हाला से हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक हुलिया मालूम किया। वह हुज़ूर सल्ल० के मुबारक हुलिए को बहुत ज़्यादा और खोलकर बयान करते थे और मेरा दिल चाहता था कि वह उन अच्छी ख़ूबियों को मेरे सामने भी ज़िक्र करें ताकि मैं उन अच्छी ख़ूबियों को ज़ेहन में बिठाकर अपने अन्दर पैदा करने की कोशिश करूं।

(हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात के वक़्त सात साल की थी, इसलिए कमसिनी की वजह से आपकी अच्छी ख़ूबियों को ग़ौर से देखने और उन्हें ज़ेहन में बिठा लेने का उनको मौक़ा नहीं मिला था।)

मामूंजान ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुलिया शरीफ़ के बारे में यह फ़रमाया कि आप ख़ुद अपनी ज़ात व सिफ़ात के एतबार से भी शानदार थे और दूसरों की नज़रों में भी बड़े रुत्बे वाले थे। आपका मुबारक चेहरा चौदहवीं रात के चांद की तरह चमकता था।

आपका मुबारक क़द बिल्कुल दर्मियाने क़द वाले से किसी क़दर लम्बा था, लेकिन लम्बे क़द वाले से छोटा था। मुबारक सर एतदाल के साथ बड़ा था।

मुबारक बाल किसी क़दर बल खाए हुए थे। अगर सर के बालों में इत्तिफ़ाक़ से ख़ुद मांग निकल आती तो मांग रहने देते, वरना आप ख़ुद मांग निकालने का एहतिमाम न फ़रमाते थे। (यानी अगर आसानी से मांग निकल आती तो निकाल लेते थे और अगर किसी वजह से आसानी से न निकलती और कंघी वग़ैरह की ज़रूरत होती तो उस वक़्त न निकालते, किसी दूसरे वक़्त जब कंघी वग़ैरह मौजूद होती तो निकाल लेते।)

जिस ज़माने में आपके मुबारक बाल ज़्यादा होते थे तो कान की लौ से बढ़ जाते थे।

आपका रंग बहुत चमकदार था और माथा चौड़ा।

आपकी भवें ख़मदार, बारीक और घनी थीं। दोनों भवें अलग-अलग थीं। एक दूसरे से मिली हुई नहीं थीं। इन दोनों के बीच में एक नस थी जो गुस्से के वक़्त उभर जाती थी।

आपकी नाक थोड़ी उठी हुई थी और उस पर एक चमक और नूर था। शुरू में देखने वाला आपको बड़ी नाक वाला समझता, लेकिन ध्यान देने से मालूम होता कि हुस्न व चमक की वजह से ऊंची मालूम होती है, वरना सच तो यह है कि ज़्यादा ऊंची नहीं है।

आपकी मुबारक दाढ़ी भरपूर और घनी थी।

आपकी पुतली काफ़ी काली थीं।

मुबारक गाल हमवार और हल्के थे, गोश्त लटके हुए नहीं थे।

आपका देहन एतदाल के साथ फैला हुआ था (यानी तंग मुंह न था)। आपके दांत बारीक और चमकदार थे और उनमें से सामने के दांतों में हल्की-हल्की दरारें भी थीं। सीने से नाफ़ तक बालों की एक पतली-सी लकीर थी।

आपकी मुबारक गरदन ऐसी सुन्दर और पतली थी, जैसे कि मूर्ति की गरदन साफ़ गढ़ी हुई होती है और रंग में चांदी जैसी साफ़ और सुन्दर थी। आपके सब अंग बड़े एतदाल पर और गोश्त से भरे हुए थे और बदन गढ़ा हुआ था।

पेट और सीना मुबारक हमवार था, लेकिन कुशादा और चौड़ा था। आपके दोनों मोंढों के बीच कुछ ज़्यादा फ़ासला था। जोड़ों की हड्डियां ताक़तवर और मज़बूत थीं (जो ताक़त की दलील होती है) आपके जिस्म का वह हिस्सा भी जो कपड़ों से बाहर रहता था, रोशन और चमकदार था, कहां यह कि वह हिस्सा जो कपड़ों में ढका रहता हो, सीना और नाफ़ के दर्मियान एक लकीर की तरह से बालों की बारीक धारी थे। इस लकीर के अलावा दोनों छातियां और पेट बालों से ख़ाली था अलबत्ता

दोनों बाज़ू और कंधों और सीने के ऊपरी हिस्से पर बाल थे।

आपकी कलाइयां लम्बी थीं और हथेलियां चौड़ी। आपकी हड्डियां एतदाल पर और सीधी थीं। हथेलियां और दोनों क़दम नर्म और गोश्त से भरे हुए थे। हाथ-पांव की उंगलियां एक तनासुब के साथ लम्बी थीं। आपके तलवे कुछ गहरे थे। क़दम हमवार थे कि पानी उनके साफ़-सुथरे और चिकने होने की वजह से उन पर ठहरता नहीं था, तुरन्त ढल जाता था।

जब आप चलते तो ताक़त से क़दम उठाते और आगे को झुककर तशरीफ़ ले जाते। क़दम ज़मीन पर धीरे से पड़ता, ज़ोर से नहीं पड़ता था। आप तेज़ रफ़्तार थे और ज़रा बड़े क़दम रखते, छोटे-छोटे क़दम नहीं रखते थे, जब आप चलते तो ऐसा लगता गोया ढलान में उतर रहे हैं।

जब किसी की ओर तवज्जोह फ़रमाते तो पूरे बदन से फिरकर तवज्जोह फ़रमाते। आपकी नज़र नीची रहती थी। आपकी नज़र आसमान के मुक़ाबले में ज़मीन की तरफ़ ज़्यादा रहती थी। आपकी आदत आमतौर से आंख के कोने से देखने की थी। ज़्यादा शर्म व हया की वजह से पूरी आंख भर कर नहीं देखते थे। चलने में सहाबा को अपने आगे कर देते थे और ख़ुद पीछे रह जाते थे। जिससे मिलते सलाम करने में ख़ुद शुरुआत करते।

हज़रत हसन रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने अपने मामूं जान से कहा कि हुज़ूर सल्ल० की बातचीत के बारे में बताएं। उन्होंने फ़रमाया कि—

आप (उम्मत के बारे में) बराबर ग़मगीन और हमेशा चिन्तित रहते थे कि किसी घड़ी आपको चैन नहीं आता था, ज़्यादातर ख़ामोश रहते थे, बे-ज़रूरत बातें न करते थे। आपकी पूरी बातें शुरू से आख़िर तक मुंह भरकर होती थीं। (यह नहीं कि जीभ की नोक से कटते हुए अक्षरों के साथ आधी बात ज़ुबान से कही और आधी बोलने वाले के मन में रही, जैसा कि आज के ज़माने के घमंडियों का दस्तूर है)। जामे लफ़्ज़ों का इस्तेमाल करते ताकि लफ़्ज़ कम हों और मतलब ज़्यादा निकले।

आपका कलाम एक दूसरे से नुमायां होता था, न उसमें बेकार की बातें होतीं, और न ज़रूरत से इतनी कम होतीं कि मतलब पूरी तरह वाज़ेह न हो।

आप नर्म मिज़ाज के थे, आप सख़्त मिज़ाज के न थे और न किसी की बेइज़्ज़ती करते थे। अल्लाह की नेमत चाहे कितनी थोड़ी हो, उसको बहुत बड़ा समझते थे, न उसकी किसी भी तरह की बुराई करते थे और न उसकी ज़्यादा तारीफ़ करते थे। बुराई न करना तो ज़ाहिर है कि अल्लाह की नेमत है, ज़्यादा तारीफ़ न करना इसलिए था कि उससे लालच का पता चलता है।

जब कोई हक़ के आड़े आ जाता, तो फिर कोई भी आपके गुस्से की ताब न ला सकता था और आपका गुस्सा उस वक़्त ठंडा होता, जब आप उसका बदला ले लेते।

और एक रिवायत में यह मज़्मून भी है कि दुनिया और दुनियावी मामलों की वजह से आपको कभी गुस्सा न आता था। (चूंकि आपको उनकी परवाह भी न होती थी, इसलिए दुनिया के नुक़्सान पर आपको गुस्सा न आता था) अलबत्ता अगर किसी दीनी मामले में और हक़ बात में कोई आड़े आता तो उस वक़्त आपके गुस्से की कोई आदमी ताब न ला सकता था और कोई उसको रोक भी न सकता था, यहां तक कि आप उसका बदला ले लें। अपनी ज़ात के लिए न किसी पर नाराज़ होते थे, न उसका बदला लेते थे। जब किसी ओर इशारा फ़रमाते, तो पूरे हाथ से इशारा फ़रमाते (कि उंगलियों से इशारा विनम्रता के ख़िलाफ़ है या आपने उंगली से इशारे को तौहीद के साथ इशारा करने के साथ ख़ास कर रखा था।)

जब किसी बात पर ताज्जुब फ़रमाते, तो हाथ को पलट लेते थे और जब बात करते तो (कभी बातें करते-करते) हाथों को भी हरकत फ़रमाते और कभी दाहिनी हथेली को बाएं अंगूठे के भीतरी भाग पर मारते और जब किसी पर नाराज़ होते, तो उससे मुंह फेर लेते और बे-तवज्जोही फ़रमाते या दरगुज़र फ़रमाते और जब ख़ुश होते तो हया की वजह से आंखें झुका लेते।

आपकी अक्सर हंसी मुस्कराहट होती थी। उस वक़्त आपके दांत ओले की तरह चमकदार और सफ़ेद ज़ाहिर होते थे।

हज़रत हसन रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत हुसैन बिन अली रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० की इन ख़ूबियों का एक ज़माने तक ज़िक्र नहीं किया, लेकिन जब मैंने इन ख़ूबियों का ज़िक्र किया तो मुझे पता चला कि वह तो मामूंजान से ये बातें मुझसे पहले ही पूछ चुके हैं और यह भी मुझे पता चला कि वह अपने वालिद से रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मकान तशरीफ़ ले जाने और बाहर तशरीफ़ लाने और मज्लिस में तशरीफ़ फ़रमाने और हुज़ूर सल्ल० के तौर-तरीक़े को भी मालूम कर चुके थे और उनमें से एक बात भी उन्होंने नहीं छोड़ी थी।

चुनांचे हज़रत हुसैन रज़ि० ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद हज़रत अली रज़ि० से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मकान तशरीफ़ ले जाने के हालात मालूम किए, तो उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मकान जाने की (अल्लाह की ओर से) इजाज़त थी और आप मकान में तशरीफ़ रखने के वक़्त को तीन हिस्सों में बांट देते थे—

एक हिस्सा अल्लाह की इबादत में ख़र्च फ़रमाते यानी नमाज़ वग़ैरह पढ़ते थे।

दूसरा हिस्सा घरवालों के हक़ अदा करने में ख़र्च फ़रमाते (जैसे उनसे हंसना, बोलना, बात करना, उनके हालात मालूम करना)

तीसरा हिस्सा ख़ास अपनी ज़रूरत, राहत व आराम के लिए रखते थे। फिर इस अपने वाले हिस्से को भी दो हिस्सों पर अपने और लोगों के बीच बांट देते, इस तरह कि ख़ास हज़रात सहाबा किराम रज़ि० उस वक़्त में हाज़िर होते। इन ख़ास लोगों के ज़रिए से आपकी बात आम लोगों तक पहुंचती। उन लोगों से किसी चीज़ को उठाकर न रखते थे (यानी न दीन के मामलों में, न दुनिया के मुनाफ़े में। ग़रज़ हर क़िस्म का नफ़ा बेझिझक पहुंचाते थे) और उम्मत के इस हिस्से में आपका यह तरीक़ा था कि इन आने वालों में फ़ज़्ल वालों यानी इल्म व फ़ज़्ल वालों

को हाज़िरी की इजाज़त में तर्जीह देते थे। इस वक़्त को उनकी दीनी फ़ज़ीलत के लिहाज़ से उन पर बांट देते थे। कोई एक ज़रूरत लेकर आता और कोई दो और कोई बहुत सारी ज़रूरतें लेकर हाज़िर होता। आप उनकी ज़रूरतें पूरी करने में लग जाते और उनको ऐसे कामों में लगा देते जो ख़ुद उनके और तमाम उम्मत के सुधार के लिए फ़ायदेमन्द और कारामद हों।

आप इन आने वालों से आम मुसलमानों के दीनी हालात पूछते और जो उनके मुनासिब बात होती, उनको बता देते और उनको यह फ़रमा देते कि जो लोग यहां मौजूद हैं, वे इन फ़ायदेमन्द और ज़रूरी बातों को ग़ायब लोगों तक भी पहुंचा दें और यह भी इर्शाद फ़रमाते थे कि जो लोग (किसी उज्र, परदा, दूरी या शर्म या रौब की वजह से) मुझसे अपनी ज़रूरतें नहीं ज़ाहिर कर सकते, तुम लोग उनकी ज़रूरतें मुझ तक पहुंचा दिया करो। इसलिए कि जो आदमी बादशाह तक किसी ऐसे आदमी की ज़रूरत पहुंचाए, जो ख़ुद नहीं पहुंचा सकता, तो अल्लाह क़ियामत के दिन उस आदमी के क़दमों को जमाए रखेंगे।

हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में ज़रूरी और फ़ायदेमन्द बातों का ज़िक्र होता था और ऐसे ही मामलों को हुज़ूर सल्ल० ख़ामोशी से सुनते थे। इसके अलावा (लायानी और बेकार बातें) सुनना गवारा नहीं करते थे।

सहाबा रज़ि० हुज़ूर की ख़िदमत में दीनी मामलों के तलबगार बनकर हाज़िर होते थे और कुछ न कुछ चखकर ही वापस जाते थे।[1] (चखने से मुराद दीनी बातों का हासिल करना भी हो सकता है और किसी चीज़ का खाना भी मुराद हो सकता है।)

सहाबा रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस से हिदायत और ख़ैर के लिए मशाल और रहनुमा बनकर निकलते थे।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अपने वालिद से हुज़ूर सल्ल० के बाहर तशरीफ़ लाने के बारे में मालूम किया कि आप बाहर तशरीफ़ लाकर क्या किया करते थे?

तो उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० ज़रूरी बातों के अलावा

1. चखने से मुराद दीनी बातों का हासिल करना भी हो सकता है और किसी चीज़ का खाना भी मुराद हो सकता है।

अपनी ज़ुबान को इस्तेमाल नहीं फ़रमाते थे। आने वालों का दिल रखते, उनको अपने से क़रीब करते, उन्हें दूर न करते (यानी तंबीह वग़ैरह में ऐसा तरीक़ा अख़्तियार न फ़रमाते, जिससे उनको हाज़िरी में वहशत होने लगे या ऐसी बातें न करते, जिनकी वजह से दीन से नफ़रत होने लगे)।

और हर क़ौम के बड़े लोगों की इज़्ज़त फ़रमाते और उसको ख़ुद अपनी ओर से भी उसी क़ौम पर मुतवल्ली, सरदार मुक़र्रर फ़रमा देते।

लोगों को अज़ाबे इलाही से डराते (या नुक़्सानदेह बातों से बचने की ताकीद फ़रमाते या लोगों को दूसरों से एहतियात रखने की ताकीद फ़रमाते) और ख़ुद अपनी भी लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाने या नुक़्सान पहुंचाने से हिफ़ाज़त फ़रमाते, लेकिन बावजूद ख़ुद एहतियात रखने और एहतियात की ताकीद के किसी से अपना अच्छा अख़्लाक़ नहीं हटाते और अपने सहाबा की ख़बरगीरी फ़रमाते।

लोगों के हालात, आपस के मामलों की जांच-पड़ताल करके उनको सुधारते। अच्छी बात की तारीफ़ फ़रमा कर उसको ताक़त पहुंचाते और बुरी बात की बुराई बताकर उसे दूर करने की कोशिश करते और रोक देते।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर मामले में बीच का रास्ता अपनाते। बात पक्की और सही फ़रमाते, न इस तरह कि कभी कुछ और कभी कुछ। लोगों को सुधारने में ग़फ़लत न फ़रमाते कि कहीं वे दीन से ग़ाफ़िल हो जाएं या हक़ से हट जाएं। हर काम के लिए आपके यहां एक ख़ास इन्तिज़ाम था। हक़ बात में न कमी कोताही फ़रमाते थे, न हद से आगे बढ़ते थे।

आपकी सेवा में आने वाले इंसानों के बेहतरीन लोग होते थे। आपके नज़दीक अफ़ज़ल वही होता था, जो हर एक का भला चाहने वाला हो और आपके नज़दीक बड़े रुत्बे वाला वही होता था जो इंसानों के दुख में काम आए और उनकी मदद में ज़्यादा हिस्सा ले।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अपने वालिद से

हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस के हालात मालूम किए तो उन्होंने फ़रमाया कि—

आपका उठना-बैठना सब अल्लाह के ज़िक्र के साथ होता था और आप अपने लिए कोई जगह ख़ास नहीं करते थे और दूसरों को भी जगह ख़ास करने से मना फ़रमाते थे और जब किसी जगह आप तशरीफ़ ले जाते तो जहां जगह मिलती, वहीं तशरीफ़ रखते और इसी का लोगों को हुक्म फ़रमाते कि जहां जगह ख़ाली मिल जाया करे, बैठ जाया करो।

आप मज्लिस में हाज़िर लोगों में से हर एक का हक़ अदा फ़रमाते यानी ख़ुशदिली के साथ और बातचीत में जितना उसका हक़ होता, उसको पूरा फ़रमाते। आपके पास का हर बैठने वाला यह समझता था कि हुज़ूर सल्ल० मेरा सबसे ज़्यादा इकराम (इज़्ज़त) फ़रमा रहे हैं।

जो आपके पास किसी काम से बैठता या आपके साथ खड़ा होता तो आप उसके साथ रहते यहां तक कि वह ख़ुद ही चला जाए।

जो आपसे कोई चीज़ मांगता तो आप उसको वह चीज़ दे देते या (अगर न होती तो) नर्मी से जवाब फ़रमाते। आपका अच्छा अख़्लाक़ तमाम लोगों के लिए आम था।

आप तमाम लोगों से शफ़क़त में बाप जैसा मामला फ़रमाते और हक़ बात में तमाम लोग आपके नज़दीक आपके बराबर थे।

आपकी मज्लिस में हिल्म (सहनशीलता) व हया, सब्र व अमानत पाई जाती थी और यही ख़ूबियां उस मज्लिस से सीखी भी जा सकती थीं।

आपकी मज्लिस में न शोर और न हंगामा होता था और न किसी की बेइज़्ज़ती और बेआबरूई की जाती थी।

आपकी मज्लिस में एक तो कोई ग़लत काम करता नहीं था, सब सावधान होकर बैठते और अगर किसी से कोई ग़लती हो जाती थी, तो उसका आगे ज़िक्र नहीं होता था।

आपस में सब बराबर समझे जाते थे (हसब व नसब की बड़ाई न

समझते थे, अलबत्ता) एक दूसरे पर बड़ाई तक़्वा की बुनियाद पर होती थी।

हर आदमी दूसरे के साथ नर्मी के साथ पेश आता था। सभी बड़ों का आदर करते थे और छोटों से मुहब्बत करते थे। ज़रूरमंद को तर्जीह देते थे और अजनबी मुसाफ़िर आदमी की देखभाल करते थे।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अपने वालिद से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी मज्लिस वालों के साथ का व्यवहार पूछा तो उन्होंने फ़रमाया—

आप हमेशा हंसते-मुस्कराते पेश आते थे, यानी चमकते चेहरे पर मुस्कराहट होती और चेहरा खिला रहता। आप बड़े नम्र मिज़ाज थे यानी किसी बात में लोगों को आपका साथ लेने की ज़रूरत होती थी, तो आसानी से उसका साथ दे दिया करते थे। आप न कड़ुवी बात बोलते थे, न आपका दिल कड़ा था और न आप चिल्लाकर बोलते थे, न गन्दी बात करते और न बुरे लफ़्ज़ों का इस्तेमाल करते। न ऐब निकालते, न ज़्यादा मज़ाक़ करते।

आप नापसन्द बातों से ग़फ़लत बरत जाते, गोया कि सुनी ही नहीं। दूसरे की कोई उम्मीद अगर आपको पसन्द न आती तो उसको मायूस भी न करते थे, न उसको महरूम फ़रमाते। (बल्कि कुछ न कुछ दे देते या दिल रखने की बात फ़रमा देते)।

अपने अपने आपको तीन बातों से बिल्कुल अलग कर रखा था—

1. झगड़े से, 2. ज़्यादा बातें करने से, 3. और बेकार और बेमतलब की बातों से। और तीन बातों से लोगों को बचा रखा था—

1. न किसी की निन्दा करते, 2. न किसी को शर्म दिलाते, 3. और न किसी के ऐब निकलते थे।

आप सिर्फ़ वही बातें करते थे जो अज्र व सवाब की वजह बने। जब आप बातें करते तो मज्लिस में हाज़िर लोग इस तरह गरदन झुका कर बैठते, जैसे उनके सरों पर परिंदे बैठे हों (कि ज़रा भी हरकत उनमें न होती थी कि परिन्दा ज़रा-सी हरकत से उड़ जाता है।)

जब आप चुप हो जाते तब वे लोग कलाम करते। (यानी हुज़ूर सल्ल० की बातों के दर्मियान में कोई आदमी न बोलता था। जो कुछ कहना होता हुज़ूर सल्ल० के चुप होने के बाद कहता था) आपके सामने किसी बात में झगड़ते नहीं थे। जिस बात से सब हंसते, आप भी उसी बात पर मुस्कराते और जिससे सब लोग ताज्जुब करते तो आप ताज्जुब में शरीक रहते। यह नहीं कि सबसे अलग चुपचाप बैठे रहें बल्कि मज्लिस में मौजूद लोगों के शरीके हाल रहते।

अनजाने मुसाफ़िर आदमी की कड़ी बातों पर और बदतमीज़ी के सवाल पर सब्र फ़रमाते (चूंकि अनजाने मुसाफ़िर लोग हर क़िस्म के सवाल कर लेते थे, इस वजह से) कुछ सहाबा ऐसे अजनबी मुसाफ़िरों को आपकी मज्लिस में ले जाते थे (ताकि उनके हर क़िस्म के सवालों से ख़ुद भी फ़ायदा उठाएं और ऐसी बातें जिनको अदब की वजह से ये लोग नहीं पूछ सकते थे, वे भी मालूम हो जाएं।)

आप यह भी ताकीद फ़रमाते थे कि जब तुम किसी ज़रूरतमंद को देखो तो उसकी मदद किया करो।

अगर आपकी कोई तारीफ़ करता तो आप उसको गवारा न फ़रमाते, अलबत्ता अगर आपके किसी एहसान के बदले में शुक्रिए के तौर पर कोई आपकी तारीफ़ करता तो आप चुप रहते कि एहसान का शुक्र उस पर ज़रूरी था, इसलिए मानो वह अपनी ज़िम्मेदारी अदा कर रहा है। किसी की बात काटते न थे, अलबत्ता अगर कोई हद से आगे बढ़ने लगता तो उसको रोक देते थे या मज्लिस से खड़े हो जाते थे ताकि वह ख़ुद रुक जाए।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अपने वालिद से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ामोशी की कैफ़ियत के बारे में पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया कि—

आप चार मौक़ों पर ख़ामोशी अपनाते थे—

1. बरदाश्त करना, 2. बेदार मग़्ज़ (जाग्रतावस्था में) होना, 3. अंदाज़ा लगाना और 4. सोच-विचार करना।

आप दो बातों का अन्दाज़ा लगाया करते थे कि किस तरह तमाम लोगों के साथ देखने में और बात सुनने में बराबरी का मामला हो। आप बाक़ी रहने वाली आख़िरत और फ़ना होने वाली दुनिया के बारे में सोच-विचार करते थे।

अल्लाह ने आपको हिल्म (सहनशीलता) और सब्र दोनों ख़ूबियां दी थीं। चुनांचे आपको किसी चीज़ की वजह से इतना ग़ुस्सा नहीं आता था कि आपे से बाहर हो जाएं।[1]

अल्लाह ने आपको चार चीज़ों के बारे में बेदार मग़्ज़ी अता फ़रमाई थी—

एक भली बात को अपनाना,

दूसरे उन बातों का एहतमाम करना जिनसे उम्मत का दुनिया व आख़िरत में फ़ायदा हो। (इस रिवायत में चार चीज़ों में से सिर्फ़ दो का ज़िक्र है) और कंज़ुल उम्माल की रिवायत के आख़िर में यह मज़मून भी है—

अल्लाह ने आपको चार चीज़ों के बारे में बेदारमग़्ज़ी अता फ़रमाई थी। एक, नेक बात को अपनाना, ताकि इस नेक बात में लोग आपकी पैरवी करें। दूसरे बुरी बात को छोड़ना ताकि लोग भी उससे रुक जाएं। तीसरे अपनी उम्मत की भलाई चाहने वाले कामों के बारे में ख़ूब सोच-विचार करना, चौथे उम्मत के लिए उन बातों का एहतिमाम करना जिससे उनकी दुनिया और आख़िरत का फ़ायदा हो।[2]

---

1. तिर्मिज़ी, बैहक़ी, बिदाया, भाग 6, पृ० 33, मुस्तदरक भाग 3, पृ० 640, कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 32, इसाबा, भाग 3, पृ० 611
2. तबरानी भाग 8, पृ० 275

सहाबा किराम रज़ि० की ख़ूबियों के बारे में सहाबा किराम रज़ि० ने क्या कहा

अल्लाह के इर्शाद 'तुम बेहतरीन उम्मत हो जो भेजी गई दुनिया में' की तफ़्सीर के बारे में हज़रत सुद्दी हज़रत उमर रज़ि० का इर्शाद नक़ल करते हैं कि अगर अल्लाह चाहते तो 'अन्तुम' फ़रमाते, (जिसका अनुवाद 'तुम' है) फिर तो हम सब मुराद होते (चाहे हम मारूफ़ का हुक्म देने और मुन्कर से रोकने का काम करें या न करें), लेकिन अल्लाह ने 'कुन्तुम' फ़रमाया जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ि० के बारे में ख़ास है (इसका अनुवाद 'थे तुम' है) वे 'ख़ैरे उम्मत' हैं और जो उन जैसे काम करेगा, वह 'ख़ैरे उम्मत' बनेगा।

हज़रत क़तादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ

'कुन्तुम ख़ै-र उम्मतिन उख़रिजत लिन्नासि' आयत तिलावत फ़रमाई और फिर फ़रमाया कि जो आदमी इस (ख़ैरे) उम्मत में से होना चाहता है, वह इस शर्त को पूरा करे जो अल्लाह ने इस आयत में (ख़ैरे उम्मत होने के लिए) ज़िक्र फ़रमाई है।[1] (और वह शर्त मारूफ़ का हुक्म देना और मुन्कर से रोकना है)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने तमाम बन्दों के दिलों पर पहली बार निगाह डाली, तो उनमें से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पसन्द फ़रमाया और उन्हें अपना रसूल बनाकर भेजा और उनको अपना ख़ास इल्म अता फ़रमाया। फिर दोबारा लोगों के दिलों पर निगाह डाली और आपके लिए सहाबा को चुना और उनको अपने दीन का मददगार और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िम्मेदारी का उठाने वाला बनाया। इसलिए जिस

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 238

चीज़ को मोमिन (यानी सहाबा किराम) अच्छा समझेंगे, वह चीज़ अल्लाह के यहां भी अच्छी होगी और जिस चीज़ को बुरा समझेंगे, वह चीज़ अल्लाह के यहां भी बुरी होगी।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जो आदमी किसी के तरीक़े को अपनाना चाहे, तो उसे चाहिए कि वह उन लोगों का तरीक़ा अपनाए जो दुनिया से जा चुके हैं और ये लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा हैं, जो कि इस उम्मत में सबसे बेहतरीन और सबसे ज़्यादा नेक दिल और सबसे ज़्यादा गहरे इल्म वाले और सबसे कम तकल्लुफ़ बरतने वाले थे। ये ऐसे लोग हैं जिनको अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत के लिए और अपने दीन को दुनिया में फैलाने के लिए चुन लिया है, इसलिए इन जैसे अख़्लाक़ और इन जैसी ज़िंदगी गुज़ारने के तरीक़े अपनाओ। रब्बे काबा अल्लाह की क़सम! नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ये तमाम सहाबा सीधी हिदायत पर थे।[2]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु (अपने ज़माने के लोगों को ख़िताब करते हुए) फ़रमाते हैं कि तुम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा से ज़्यादा रोज़े रखते हो और ज़्यादा नमाज़ें पढ़ते हो और ज़्यादा मेहनत करते हो, हालांकि वे तुमसे ज़्यादा बेहतर थे।

लोगों ने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान![3] (यह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की कुन्नियत है) वे हमसे क्यों बेहतर हैं?

तो उन्होंने फ़रमाया, इसलिए कि वे तुमसे ज़्यादा दुनिया से बे-रग़बत और आख़िरत के तुमसे ज़्यादा मुश्ताक़ थे।[4]

हज़रत अबू वाइल कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने सुना कि एक आदमी यों कह रहा था कि कहां हैं वे लोग जो दुनिया से बे-रग़बत हैं और आख़िरत के मुश्ताक़ हैं, तो हज़रत अब्दुल्लाह

1. अबू नुऐम (भाग 1, पृ० 375), इस्तीआब, भाग 1, पृ० 6, तयालसी, पृ० 33
2. अबू नुऐम (भाग 1, पृ० 305)
3. यह इब्ने मसऊद रज़ि० का उपनाम है।
4. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 136

ने फ़रमाया कि वे तो जाबिया वाले वे लोग हैं, (जाबिया शाम देश की एक बस्ती का नाम है, जो कि हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में इस्लामी फ़ौजों का मर्कज़ था, जिनका क़ैसरे रूम से मुक़ाबला हुआ था) जिनमें से पांच सौ मुसलमानों ने यह अहद किया था कि क़त्ल हो जाएंगे, मगर वापस नहीं जाएंगे, इसलिए इन लोगों ने (उस ज़माने के रिवाज के मुताबिक़ जान देने के लिए) सर मुंडवा दिए और दुश्मन में घुस गए और एक के अलावा बाक़ी सब शहीद हो गए। उसी ने आकर उनके शहीद होने की ख़बर दी।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने एक आदमी से सुना कि वह कह रहा था कि कहां है वे लोग जो दुनिया से बेरग़बत हैं और आख़िरत के मुश्ताक़ हैं, तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उसे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की और हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ि० की क़ब्रें दिखाकर कहा कि इनके बारे में तुम पूछ रहे हो ?[3]

हज़रत अबू अराका फ़रमाते हैं कि मैंने एक दिन हज़रत अली रज़ि० के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए और दाहिनी ओर रुख़ करके बैठ गए, तो ऐसा लग रहा था कि आप बेचैन और ग़मगीन हैं, यहां तक कि जब सूरज मस्जिद की दीवार से एक नेज़ा ऊंचा हुआ, तो उन्होंने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी। फिर अपने हाथ को पलटकर फ़रमाया कि—

'अल्लाह की क़सम! मैंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा को देखा है, आज उन जैसा कोई नज़र नहीं आता है। सुबह के वक़्त उनकी यह हालत होती थी कि रंग पीला और बाल बिखरे हुए और जिस्म धूल से अटा होता था। उनके माथे पर (सज्दे का) इतना बड़ा निशान नुमायां होता था जितना बड़ा निशान बकरी के घुटने पर होता है। सारी रात अल्लाह के सामने सज्दा करते हुए और खड़े होकर क़ुरआन की तिलावत करते हुए गुज़ार देते थे और सज्दा और

---

1. जाबिया शाम देश की एक बस्ती का नाम है जोकि हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में इस्लामी फ़ौजों का मर्कज़ था, जिनका क़ैसर रूम से मुक़ाबला हुआ था।
2. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 136

अबू नुऐम, भाग 1, पृ० [illegible]

क़ियाम ही में राहत हासिल करते थे।

जब सुबह हो जाती और वे अल्लाह का ज़िक्र करते तो ऐसे झूमते जैसे कि तेज़ हवा के दिन (या ठंडी हवा के चलते वक़्त) पेड़ झूमता है और इस तरह रोते कि कपड़े गीले हो जाते। ख़ुदा की क़सम! (उनके रोने से यों नज़र आता था कि) मानो उन्होंने रात ग़फ़लत में गुज़ार दी हो।

फिर हज़रत अली रज़ि० खड़े हो गए और इसके बाद कभी धीरे हंसते हुए भी नज़र न आए, यहां तक कि अल्लाह के दुश्मन इब्ने मुलजिम फ़ासिक़ ने आपको शहीद कर दिया।[1]

हज़रत ज़िरार बिन ज़मरा किनानी हज़रत मुआविया रज़ि० की ख़िदमत में गये, तो हज़रत मुआविया रज़ि० ने उनसे फ़रमाया कि मेरे सामने हज़रत अली रज़ि० की ख़ूबियां बयान कीजिए, तो हज़रत ज़िरार ने कहा—

ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप मुझे माफ़ रखें।

इस पर हज़रत मुआविया ने फ़रमाया, मैं माफ़ नहीं करूंगा, ज़रूर बयान करना होगा।

तो हज़रत ज़िरार ने कहा कि अगर उनकी ख़ूबियों को बयान करना ज़रूरी ही है तो सुनिए कि हज़रत अली रज़ि० ऊंचे मक़्सद वाले (या बड़ी इज़्ज़त वाले) और बड़े ताक़तवर थे, फ़ैसला सुनाने वाली बात कहते और अद्ल व इंसाफ़ वाला फ़ैसला करते थे। आपके हर पहलू से इल्म फूटा पड़ता था (यानी आपके क़ौल व फ़ेल और एक-एक हरकत से लोगों को इल्मी फ़ायदा होता था) और हर ओर से होशियारी ज़ाहिर होती थी।

दुनिया और दुनिया की रौनक़ से उनको वहशत थी। रात और रात के अंधेरे से उनका दिल बहुत लगता था (यानी इबादत में) अल्लाह की क़सम! वह बहुत ज़्यादा रोने वाले और बहुत ज़्याद फ़िक्रमंद रहने वाले

1. बिदाया, भाग 8, पृ० 6, अबू नुऐम, भाग 1, पृष्ठ 76, कंज़, भाग 8, पृ० 219

थे। अपनी हथेलियों को उलटते-पलटते और अपने नफ़्स को ख़िताब फ़रमाते।

(सादा) और थोड़ा कपड़ा पहनते और मोटा-झोटा खाना पसन्द था। अल्लाह की क़सम! वह हमारे साथ एक आम आदमी की तरह रहते। जब हम उनके पास जाते, तो हमें अपने क़रीब बिठा लेते और जब हम उनसे कुछ पूछते, तो जवाब ज़रूर देते।

अगरचे वह हमसे बहुत घुल-मिलकर रहते थे, लेकिन इसके बावजूद उनके रौब की वजह से हम उनसे बात नहीं कर सकते थे।

जब आप मुस्कराते, तो आपके दांत पिरोए हुए मोतियों की तरह नज़र आते। दीनदारों की क़द्र करते, मिस्कीनों से मुहब्बत रखते, कोई ताक़तवर अपने ग़लत दावे में कामियाबी की आपसे उम्मीद न रख सकता और कोई कमज़ोर आपके इंसाफ़ से नाउम्मीद न होता।

मैं अल्लाह को गवाह बनाकर कहता हूं कि मैंने उनको एक बार ऐसे वक़्त में खड़े हुए देखा कि जब रात का अंधेरा छा चुका था और सितारे डूब चुके थे और आप अपनी मेहराब में अपनी दाढ़ी पकड़े हुए झुके हुए थे और उस आदमी की तरह तिलमिला रहे थे जिसे किसी बिच्छू ने काट लिया हो और ग़मगीन आदमी की तरह रो रहे थे और उनकी आवाज़ गोया अब भी मेरे कानों में गूंज रही है कि बार-बार 'या रब्बना या रब्बना' फ़रमाते और अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाते, फिर दुनिया को मुख़ातिब होकर फ़रमाते कि ऐ दुनिया! तू मुझे धोखा देना चाहती है, मेरी ओर झांक रही है, मुझसे दूर हो जा, मुझसे दूर हो जा, किसी और को जाकर धोखा दे। मैंने तुझे तीन तलाक़ें दीं, क्योंकि तेरी उम्र बहुत थोड़ी है और तेरी मज्लिस बहुत घटिया है। तेरी वजह से आदमी आसानी से ख़तरे में पड़ जाता है। (या तेरा दर्जा बहुत मामूली है। हाय! हाय! (क्या करूं?) रास्ते का सामान थोड़ा है और सफ़र लंबा है और रास्ता ख़तरनाक है।'

यह सुनकर हज़रत मुआविया के आंसू आंखों से बहने लगे। उनको रोक न सके। और अपनी आस्तीन से उनको पोंछने लगे और

लोग हिचकियां लेकर इतने रोने लगे कि गले रुंध गए। इस पर हज़रत मुआविया रज़ि० ने फ़रमाया—

'बेशक अबुल हसन (यानी हज़रत अली रज़ि०) ऐसे ही थे। अल्लाह उन पर रहमत नाज़िल फ़रमाए। ऐ ज़रार! तुम्हें उनकी वफ़ात का कैसा रंज है?'

हज़रत ज़रार ने कहा, उस औरत जैसा ग़म है जिसका इकलौता बेटा उसकी गोद में ज़िब्ह कर दिया गया हो कि न उसके आंसू थमते हैं और न उसका ग़म कम होता है।

फिर हज़रत ज़रार उठे और चले गए।[1]

हज़रत क़तादा कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से पूछा गया कि क्या नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम हंसा करते थे? उन्होंने फ़रमाया कि हां, मगर इस हाल में कि ईमान उनके दिलों में पहाड़ों से भी बड़ा था।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार यमन के सफ़र के कुछ साथियों को देखा, जिनके कजावे चमड़े के थे, तो उनको देखकर फ़रमाया कि जो आदमी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा जैसे लोगों को देखना चाहता है, वह उनको देख ले।[3]

हज़रत अबू सईद मक़्बरी बयान करते हैं कि जब हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु प्लेग के शिकार हुए तो उन्होंने फ़रमाया ऐ मुआज़! तुम लोगों को नमाज़ पढ़ाओ। चुनांचे हज़रत मुआज़ ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई।

फिर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह का इन्तिक़ाल हो गया।

इसके बाद हज़रत मुआज़ ने खड़े होकर लोगों में यह बयान फ़रमाया कि ऐ लोगो! अपने गुनाहों से पक्की सच्ची तौबा करो, क्योंकि अल्लाह का जो बन्दा भी अपने गुनाहों से तौबा करके अल्लाह

---

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 84, इस्तीआब, भाग 3, पृ० 44
2. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 311
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 163

के सामने हाज़िर होगा, अल्लाह ज़रूर उसकी मग़फ़िरत फ़रमा देंगे।

फिर आपने फ़रमाया कि ऐ लोगो ! तुम्हें ऐसे आदमी के जाने का रंज व सदमा हुआ है कि ख़ुदा की क़सम ! मैंने कोई ऐसा अल्लाह का बन्दा नहीं देखा, जो उनसे ज़्यादा कीने से पाक हो और उनसे ज़्यादा नेक दिल और उनसे ज़्यादा शर व फ़साद से दूर रहने वाला और उनसे ज़्यादा आख़िरत से मुहब्बत करने वाला और उनसे ज़्यादा तमाम लोगों से भलाई चाहने वाला हो। इसलिए उनके लिए रहमत की दुआ करो और उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के लिए बाहर मैदान में चलो। ख़ुदा की क़सम ! आगे उन जैसा तुम्हारा कोई अमीर नहीं होगा।

फिर लोग मैदान में जमा हो गए और हज़रत उबैदा का जनाज़ा लाया गया और हज़रत मुआज़ ने आगे बढ़कर उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

फिर जब जनाज़ा क़ब्र तक पहुंचा तो उनकी क़ब्र में हज़रत मुआज़ बिन जबल, हज़रत अम्र बिन आस और हज़रत ज़हहाक बिन क़ैस उतरे और उनकी लाश को बग़ली क़ब्र में उतारा और बाहर आकर उनकी क़ब्र पर मिट्टी डाली।

फिर हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० ने (क़ब्र के सिरहाने खड़े कर हज़्रत अबू उबैदा रज़ि० को ख़िताब करते हुए) फ़रमाया—

ऐ अबू उबैदा ! मैं तुम्हारी जरूर तारीफ़ करूंगा और (उस तारीफ़ करने मे) कोई ग़लत बात नहीं कहूंगा, क्योंकि मुझको अल्लाह की नाराज़ी का अंदेशा है। अल्लाह की क़सम ! जहां तक मैं जानता हूं, आप उन लोगों में से थे, जो अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करते हैं और जो ज़मीन पर आजिज़ी के साथ चलते हैं और जो जिहालत की बात का ऐसा जवाब देते हैं, जिससे शर ख़त्म हो जाए और जो माल ख़र्च करने के मौक़े पर ख़र्च करने में न फ़िज़ूलख़र्ची करते हैं और न ही ज़रूरत से कम ख़र्च करते हैं, बल्कि उनका ख़र्च एतदाल पर होता है। अल्लाह की क़सम ! आप उन लोगों में से हैं जो दिल से अल्लाह की ओर झुकने वाले और तवाज़ो करने वाले हैं, जो यतीम और मिस्कीन पर रहम करते

हैं और ख़ियानत करने वालों और घमंडियों की क़िस्म के लोगों से दुश्मनी रखते हैं।[1]

हज़रत रिबई बिन हिराश कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की मज्लिस में आने की इजाज़त चाही और हज़रत मुआविया के पास क़ुरैश के अलग-अलग ख़ानदानों के लोग बैठे हुए थे। हज़रत सईद बिन आस रज़ि० हज़रत मुआविया के दाहिनी ओर बैठे हुए थे।

जब हज़रत मुआविया रज़ि० ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० को आते हुए देखा, तो फ़रमाया, ऐ सईद ! मैं इब्ने अब्बास से ऐसे सवाल करूंगा, जिनका वह जनाब नहीं दे सकेंगे।

हज़रत सईद ने उनसे फ़रमाया कि इब्ने अब्बास जैसे आदमी के लिए तुम्हारे सवालों का जवाब देना कोई कठिन काम नहीं है।

जब हज़रत इब्ने अब्बास आकर बैठ गए तो उनसे हज़रत मुआविया रज़ि० ने फ़रमाया कि आप अबू बक्र रज़ि० के बारे में क्या फ़रमाते हैं? तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह अबूबक्र रज़ि० पर रहम फ़रमाए। वह अल्लाह की क़सम, क़ुरआन की तिलावत फ़रमाने वाले और टेढ़ से दूर और बेहयाई से ग़फ़लत बरतने वाले और बुराई से रोकने वाले और अपने दीन को ख़ूब अच्छी तरह जानने वाले और अल्लाह से डरने वाले और रात को इबादत करने वाले और दिन को रोज़ा रखने वाले और दुनिया से महफ़ूज़ और मख़्लूक़ के साथ अद्ल व इंसाफ़ का इरादा रखने वाले और नेकी का हुक्म करने और अल्लाह का ज़िक्र करने वाले और दीनी ज़रूरतों के लिए अपने नफ़्स को दबा लेने वाले थे और वह परहेज़गारी और क़नाअत में और ज़ोह्द और पाकदामनी में और नेकी और एहतियात में और दुनिया की बे-रग़बती और अच्छे व्यवहार का अच्छा बदला देने में, अपने तमाम साथियों से आगे थे जो उन पर ऐब लगाए, उस पर क़ियामत तक अल्लाह की लानत हो।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने फ़रमाया कि आप हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु के बारे में क्या कहते हैं? तो हज़रत इब्ने अब्बास

1. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 264

रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाअ अबूहफ़्स (यह हज़रत उमर का उपनाम है) पर रहम करे। अल्लाह की क़सम! वे इस्लाम के मददगार साथी और यतीमों का ठिकाना, ईमान का ख़ज़ाना और कमज़ोरों की पनाहगाह और पक्के मुसलमानों के क़रार की जगह और अल्लाह की मख़्लूक़ के लिए क़िला और तमाम लोगों के लिए मददगार थे। वे ख़ूब सोच-समझकर सबके साथ अल्लाह के दीने हक़ को लेकर खड़े हुए। (आख़िरत के सवाब और अल्लाह की रज़ामंदी की उम्मीद में हर तक्लीफ़ पर सब्र किया) यहां तक कि अल्लाह ने इस्लाम दीन को ग़ालिब कर दिया और कई देशों पर अल्लाह ने मुसलमानों को जीत दी, और तमाम क्षेत्रों में चश्मों और टीलों पर दुनिया के तमाम हिस्सों में अल्लाह का ज़िक्र होने लगा।

वे बुरे दिनों में बड़े वक़ार वाले और फैलाव और तंगी हर हाल में अल्लाह कार शुक्र अदा करने वाले और हर घड़ी अल्लाह का ज़िक्र करने वाले थे। जो उनसे बुग़्ज़ रखे क़ियामत तक, उस पर अल्लाह की लानत हो।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने फ़रमाया कि आप हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० के बारे में क्या फ़रमाते हैं?

तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह अबू अम्र (यह हज़रत उस्मान रज़ि० का उपनाम है) पर रहमत नाज़िल फ़रमाए, वह बड़े शरीफ़ ससुराल वाले और नेक लोगों से बहुत जोड़ रखने वाले और मुजाहिदों में सबसे जमकर मुक़ाबला करने वाले और बड़े शब बेदार और अल्लाह के ज़िक्र के वक़्त बहुत ज़्याद रोने वाले, दिन-रात अपने मक़्सद के लिए फ़िक्रमंद रहने वाले, हर भले काम के लिए तैयार और हर नजात देने वाली नेकी के लिए भाग-दौड़ करने वाले और हर हलाक करने वाली बुराई से दूर भागने वाले थे।

उन्होंने तबूक की लड़ाई के मौक़े पर इस्लामी फ़ौज को बहुत सारा सामान दिया था और यहूदी से ख़रीदकर बेरे रूमा (एक कुंआ) मुसलमानों के लिए वक़्फ़ कर दिया था।

आप हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दामाद थे। उनकी दो लड़कियों से शादी की थी, जो उनको बुरा-भला कहे, अल्लाह उसे क़ियामत तक शर्मिंदा करे।

फिर हज़रत मुआविया रज़ि० ने फ़रमाया, आप हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० के बारे में क्या फ़रमाते हैं? तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह अबुल हसन (यह हज़रत अली रज़ि० का उपनाम है) पर रहमत नाज़िल फ़रमाएं, अल्लाह की क़सम! वह हिदायत का झंडा और तक़्वे का ग़ार और अक़्ल का घर और रौनक़ का टीला थे, रात की अंधेरियों में चलने वालों के लिए रोशनी थे और बड़े सीधे रास्ते की दावत देने वाले और पहले आसामनी सहीफ़ों और किताबों को जानने वाले और क़ुरआन की तफ़्सीर बयान करने वाले और वाज़ व नसीहत करने वाले और हिदायत की बातों में। हमेशा लगे रहने वाले और ज़ुल्म करने और पीड़ा पहुंचाने का काम छोड़ने वाले और हलाकत के रास्तों से हटकर चलने वाले थे।

तमाम मोमिनों और मुत्तक़ियों में से बेहतरीन और तमाम कुरते और चादर पहनने वाले इन्सानों के सरदार और हज व सई करने वालों में से अफ़ज़ल और अद्ल और बराबरी करने वालों में सबसे बड़े जवां मर्द थे और अंबिया और नबी मुस्तफ़ा सल्ल० के अलावा तमाम दुनिया के इंसानों से ज़्यादा अच्छे ख़तीब थे, जिन्होंने दोनों क़िब्लों बैतुमक़्दिस और बैतुल्लाह की ओर नमाज़ पढ़ी।

क्या कोई मुसलमान उनकी बराबरी कर सकता है? जबकि वे तमाम औरतों में से बेहतरीन औरत (हज़रत फ़ातमा रज़ि०) के ख़ाविंद थे और हुज़ूर सल्ल० के दो नातियों (नवासों) के वालिद (पिता) थे।

मेरी आंखों ने न उन जैसा कभी देखा और न आगे क़ियामत तक कभी देख सकेंगी। जो उन पर लानत करे, उस पर अल्लाह और उसके बन्दों की क़ियामत तक लानत हो।

फिर हज़रत मुआविया रज़ि० ने फ़रमाया कि आप हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बारे में क्या फ़रमाते हैं?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह उन दोनों पर रहमत नाज़िल फ़रमाए। अल्लाह की क़सम! वे दोनों पाक बाज़, नेक, साफ़-सुथरे मुसलमान, शहीद और आलिम थे। इन दोनों से एक लग़्ज़िश हुई जिसे अल्लाह इनशाअल्लाह इस वजह से ज़रूर माफ़ फ़रमा देंगे कि इन दोनों लोगों ने शुरू से दीन की मदद की और शुरू से हुज़ूर सल्ल० की सोहबत में रहे और बहुत नेक और उम्दा काम किए।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने फ़रमाया कि आप हज़रत अब्बास रज़ि० के बारे में क्या फ़रमाते हैं? तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह हज़रत अबुल फ़ज़्ल (यह हज़रत अब्बास का उपनाम है) पर रहमत नाज़िल फ़रमाएं, वह अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्ल० के वालिद के सगे भाई और अल्लाह के चुने हुए इंसान यानी हुज़ूर सल्ल० की आंख की ठंडक और तमाम लोगों के लिए पनाहगाह और हुज़ूर सल्ल० के तमाम चचों के सरदार थे।

तमाम मामलों में बड़ी सूझ-बूझ रखते थे और हमेशा अंजाम पर नज़र रहती थी। इल्म से लदे-फंदे थे। उनकी फ़ज़ीलत के तज़्किरे के वक़्त दूसरों की फ़ज़ीलतें कम मालूम होतीं। उनके ख़ानदान के फ़ख़्र करने के क़ाबिल कारनामों के सामने दूसरे ख़ानदानों के कारनामे पीछे रह गए और ऐसा क्यों न होता? जबकि उनकी तर्बियत इस अब्दुल मुत्तलिब ने की जो हर नक़्ल व हरकत करने वाले इंसानों में सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग और क़ुरैश के तमाम पैदल और सवारों से ज़्यादा फख़्र के क़ाबिल थे।

यह एक लंबी हदीस का हिस्सा है।[1]

---

1. हैसमी, भाग 9, पृष्ठ 160, तबरानी

दावत का बाब

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन को अल्लाह और रसूल की ओर दावत देना, किस तरह हर चीज़ से बहुत ज़्यादा महबूब था, और उनके दिल में इस बात की कितनी ज़्यादा तड़प थी कि तमाम लोग हिदायत पा जाएं और अल्लाह के दीन में दाख़िल हो जाएं और अल्लाह की रहमत में ग़ोते खाने लगें और दावत के ज़रिए मख़्लूक़ को ख़ालिक़ के साथ जोड़ने के लिए कैसी ज़बरदस्त कोशिश करते थे।

दावत से मुहब्बत और शग़फ़

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के इर्शाद—

فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ ۝

'फ़मिन्हुम शक़ीयुन व सईद'० (सो उनमें कुछ बदबख़्त हैं और कुछ नेकबख़्त)

और इस जैसी क़ुरआनी आयतों के बारे में फ़रमाते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस बात की बहुत ज़्यादा तड़प थी कि तमाम लोग ईमान ले आएं और आपसे हिदायत पर बैअत हो जाएं।

आपकी यह बेक़रारी देखकर अल्लाह ने आपको बताया कि सिर्फ़ वही इंसान ईमान लाएंगे जिनके लिए लौहे महफ़ूज़ में पहले ही से (ईमान लाने की) सआदत लिखी जा चुकी है और सिर्फ़ वही इंसान गुमराह होंगे जिनके लिए लौहे महफ़ूज़ में पहले ही से बदबख़्ती लिखी जा चुकी है। फिर अल्लाह ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इर्शाद फ़रमाया—

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ إِن نَّشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ۝

'शायद तू घोंट मारे अपनी जान, इस बात पर कि ये यक़ीन नहीं करते, अगर हम चाहें तो उतारें उन पर आसामान से एक निशानी, फिर रह जाएं उनकी गरदनें उसके आगे नीची।'[1] (अश-शुअरा 3-4)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब अबू तालिब बीमार हुए, तो क़ुरैश की एक जमाअत उनके पास आई, जिसमें अबू जहल भी था। उन लोगों ने कहा कि आपका भतीजा हमारे माबूदों को बुरा-भला कहता है और यों-यों करता है और यों यों कहता है। इसलिए आप उनके पास किसी आदमी को भेजकर उनको बुला लें और

1. तबरानी, हैसमी, भाग 7, पृ० 85

ऐसा करने से उनको रोक दें।

चुनांचे उन्होंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक आदमी भेजा। आप तशरीफ़ ले आए और घर में दाख़िल हुए, तो उस वक़्त अबू तालिब के क़रीब एक आदमी के बैठने की जगह थी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अबू जह्ल ल-अ-नहुल्लाह (उस पर अल्लाह की लानत) को इस बात का ख़तरा हुआ कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू तालिब के पहलू में बैठ गए, तो (इतने क़रीब बैठने की वजह से) अबू तालिब के दिल में हुज़ूर सल्ल० के लिए ज़्यादा नर्मी पैदा हो जाएगी। चुनांचे वह छलांग लगाकर ख़ुद उस जगह जा बैठा और हुज़ूर सल्ल० को अपने चचा के क़रीब बैठने की कोई जगह न मिली, तो आप दरवाज़े के पास ही बैठ गए।

अबू तालिब ने आपसे कहा कि ऐ मेरे भतीजे! क्या बात है कि तुम्हारी क़ौम के लोग तुमसे शिकायत कर रहे हैं? वे कह रहे हैं कि आप इनके माबूदों को बुरा-भला कहते हैं और यों-यों कहते हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि इस पर सब लोगों ने बोलना शुरू कर दिया।

आपने बात करनी शुरू की और फ़रमाया कि ऐ मेरे चचा! मैं यह चाहता हूं कि लोग सिर्फ़ एक कलिमे का इक़रार कर लें तो अरब के तमाम लोग इनके मातहत और फ़रमांबरदार बन जाएंगे और अजम के तमाम लोग इनको जिज़्या देने लग जाएंगे।

आपकी यह बात सुनकर वे लोग चौकन्ना हो गए और (बेताब होकर) कहा, आपके वालिद की क़सम! (इतनी बड़ी बात के लिए) एक कलिमा तो क्या हम दस कलिमों को मानने के लिए तैयार हैं। आप बताएं, वह कलिमा क्या है?

अबू तालिब भी कहने लगे कि ऐ मेरे भतीजे! वह एक कलिमा क्या है?

आपने फ़रमाया कि—

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' यह सुनकर वे लोग परेशान होकर अपने कपड़े झाड़ते हुए खड़े हो गए और कहने लगे कि इतने माबूदों की जगह एक ही माबूद रहने दिया। वाक़ई यह बड़ी अजीब और अनोखी बात है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि इस मौक़े पर

أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ

'अ-ज-अ-लल आलि-ह-त इलाहंव-वाहिदा इन-न हाज़ा ल-शैउन उजाब' से लेकर

بَل لَّمَّا يَذُوقُوا عَذَابِ

'बल-लम्मा यज़ुक़ू अज़ाब०' तक आयतें उतरीं।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब उत्बा बिन रबीआ और शैबा बिन रबीआ और अबू जह्ल बिन हिशाम और उमैया बिन ख़लफ़ और अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और क़ुरैश के दूसरे सरदार अबू तालिब के पास गए और उनसे (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में) बात करनी चाही तो उन्होंने कहा—

'ऐ अबू तालिब ! आपको हममें जितना बड़ा दर्जा मिला हुआ है, वह आप जानते हैं और आपकी बीमारी की हालत आपके सामने है और हमें आपकी ज़िंदगी का ख़तरा है। हमारे और आपके भतीजे के दर्मियान जो कुछ हो रहा है, उसे भी आप ख़ूब जानते हैं, आप उनको बुलाएं, कुछ हमारी मांगें मानकर और कुछ उनकी मांगें मानकर हमारा और उनका समझौता करा दें, ताकि हम एक दूसरे को कुछ कहने से रुक जाएं और वह हमें हमारे दीन पर रहने दें और हम उनको उनके दीन पर छोड़ दें।'

अबू तालिब ने आपके पास आदमी भेजकर आपको बुलवाया।

आप अबू तालिब के पास तशरीफ़ ले आए, तो अबू तालिब ने कहा—

1. अहमद, नसई, इब्ने अबी हातिम, इब्ने जरीर, तिर्मिज़ी, इब्ने कसीर (भाग 4, पृ० 28), बैहक़ी (भाग 9, पृ० 188), हाकिम (भाग 2, पृ० 432)

'ऐ मेरे भतीजे ! ये तुम्हारी क़ौम के सरदार और बड़े लोग हैं और तुम्हारी वजह से ये इकट्ठे होकर आए हैं, ताकि ये आपकी कुछ मांगें पूरी कर दें और आप इनकी कुछ मांगें पूरी कर दें।'

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बहुत अच्छा, तुम एक कलिमा मान जाओ जिससे तुम पूरे अरब के मालिक बन जाओगे और सारा अजम तुम्हारा मातहत और फ़रमांबरदार हो जाएगा।

अबू जह्ल ने कहा, (इस बात के लिए) एक कलिमा नहीं, तुम्हारे वालिद की क़सम ! दस कलिमे मानने को तैयार हैं।

तो आपने फ़रमाया,

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहो और अल्लाह के अलावा जिन ख़ुदाओं की इबादत करते हो, उनको निकाल फेंको।'

यह सुनकर उन सबने हाथ पर हाथ मारकर कहा, ऐ मुहम्मद ! क्या आप यह चाहते हैं कि तमाम ख़ुदाओं का एक ख़ुदा बना दें? आपकी यह बात बहुत अजीब है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि वे एक दूसरे से कहने लगे कि अल्लाह की क़सम ! यह आदमी तुम्हारी कोई भी मांग मानने वाला नहीं है। चले जाओ और अपने बाप-दादा के दीन पर चलते रहो, यहां तक कि अल्लाह ही हमारे और इसके बीच फ़ैसला करे, फिर वे बिखर गए।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि फिर अबू तालिब ने कहा—

'ऐ मेरे भतीजे ! अल्लाह की क़सम ! मेरा ख़्याल यह है कि तुमने इनसे हद से ज़्यादा किसी बात की मांग नहीं की। (तुम्हारी मांग सही है)'

यह सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अबू तालिब के ईमान लाने की कुछ उम्मीद बंधी, तो आप उनसे फ़रमाने लगे, ऐ मेरे चचा ! आप तो यह कलिमा ज़रूर पढ़ लें, ताकि इसकी वजह से मैं

आपके लिए क़ियामत के दिन शफ़ाअत की इजाज़त ले सकूं।

अबू तालिब ने आपकी यह तड़प देखकर जवाब दिया कि ऐ मेरे भतीजे! अल्लाह की क़सम! अगर मुझे दो बातों का डर न होता तो मैं यह कलिमा ज़रूर पढ़ लेता—

एक तो यह कि मेरे बाद तुम्हें और तुम्हारे ख़ानदान को गालियां पड़ेंगी,

और दूसरे यह कि क़ुरैश यह ताना देंगे कि मैंने मौत से डर कर यह कलिमा पढ़ा है और यह कलिमा पढ़ता भी तो सिर्फ़ आपको ख़ुश करने के लिए।[1]

हज़रत मुसिय्यब रज़ि० से रिवायत है कि जब अबू तालिब की मौत का वक़्त क़रीब आया, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास तशरीफ़ ले गए, तो अबू जह्ल वहां पहले से मौजूद था।

आपने फ़रमाया, ऐ मेरे चचा! ला इला-ह इल्लल्लाहु पढ़ लो, ताकि इस कलिमे की वजह से मैं अल्लाह के सामने आपकी हिमायत कर सकूं।

इस पर अबू जह्ल और अब्दुल्लाह बिन अबी उमैया ने कहा, ऐ अबू तालिब! क्या अब्दुल मुत्तलिब का दीन छोड़ने लगे हो?

और दोनों बार-बार इसी बात को दोहराते रहे, यहां तक कि अबू तालिब के मुंह से आख़िरी बोल यही निकला कि मैं अब्दुल मुत्तलिब ही के दीन पर हूं।

आपने फ़रमाया, जब तक मुझको मना न किया जाएगा, मैं आपके लिए ज़रूर इस्तग़्फ़ार करूंगा। इस पर यह आयत उतरी—

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

'लायक़ नहीं नबी को और मुसलमानों को कि बख़्शिश चाहें मुश्रिकों की और अगरचे वे हों क़राबत वाले, जबकि खुल चुका उन पर

1. बिदाया, भाग 2, पृ० 123

कि वे हैं दोज़ख़ वाले।' (अत-तौबा 113)

और यह आयत उतरी—

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ

'आप जिसको चाहें, हिदायत नहीं कर सकते।'[1] (क़सस 56)

इसी जैसी दूसरी रिवायत में यह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू तालिब पर कलिमा को पेश फ़रमाते रहे और वे दोनों भी अपनी बात दोहराते रहे, यहां तक कि अबू तालिब का आख़िरी बोल था कि मैं अब्दुल मुत्तलिब ही के दीन पर हूं और ला इला-ह इल्लल्लाहु पढ़ने से इन्कार कर दिया।

इस पर आपने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो कि जब तक मुझे मना न किया जाएगा, उस वक़्त तक मैं आपके लिए ज़रूर इस्तग़फ़ार करता रहूंगा।

इस पर अल्लाह ने ये दोनों पिछली आयतें उतारीं।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब अबू तालिब का आख़िरी वक़्त आया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास तशरीफ़ ले गए और आपने फ़रमाया, ऐ चचा जान! 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कह दीजिए, ताकि मैं क़ियामत के दिन आपका गवाह बन जाऊं, तो अबू तालिब ने जवाब दिया कि अगर क़ुरैश के इस कहने की शर्म न होती कि अबू तालिब ने सिर्फ़ मौत के डर से कलिमा पढ़ा है, तो मैं कलिमा पढ़ कर आपकी आंखों को ज़रूर ठंडा कर देता और मैं यह कलिमा सिर्फ़ इसलिए पढ़ता, ताकि आपकी आंखें ठंडी हो जाएं। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

'आप जिसको चाहें हिदायत नहीं कर सकते, बल्कि अल्लाह

1. बुख़ारी व मुस्लिम
2. बुख़ारी व मुस्लिम

जिसको चाहे हिदायत कर देता है और हिदायत पाने वालों का इल्म (भी) उसी को है।"[1]

हज़रत अक़ील बिन अबी तालिब रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़ुरैश अबू तालिब के पास आए। (पूरी हदीस आगे सख़्तियां बरदाश्त करने के बाब में इनशाअल्लाह आएंगी, लेकिन इसका कुछ हिस्सा यह है।)

अबू तालिब ने हुज़ूर सल्ल० से कहा कि ऐ मेरे भतीजे, अल्लाह की क़सम ! जैसे कि तुम्हें ख़ुद भी मालूम है, मैं हमेशा तुम्हारी बात मानता रहा हूं। (इसलिए अब तुम भी मेरी थोड़ी-सी बात मान लो और वह यह है कि) तुम्हारी क़ौम के लोग मेरे पास आकर यह कह रहे हैं कि तुम काबे में और इनकी मज्लिसों में जाकर इनको वे बातें सुनाते हो, जिनसे उनको तक्लीफ़ होती है, इसलिए अगर तुम मुनासिब समझो, तो ऐसा करना छोड़ दो।

आपने अपनी निगाह आसमान की ओर उठाकर फ़रमाया, जिस काम को देकर मुझे भेजा गया है, उसको छोड़ने की मैं बिल्कुल क़ुदरत नहीं रखता हूं, जैसे कि तुममें से कोई सूरज में से आग का शोला लाने की क़ुदरत नहीं रखता है।[2]

बैहक़ी में यह रिवायत इस तरह है कि अबू तालिब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि ऐ मेरे भतीजे ! तुम्हारी क़ौम के लोगों ने मेरे पास आकर यों-यों कहा, अब तुम मेरी जान पर और अपनी जान पर तरस खाओ और मुझ पर वह बोझ न डालो कि जिसको न मैं उठा सकूं और न तुम। इसलिए तुम लोगों को वे बातें कहनी छोड़ दो जो उनको पसन्द नहीं हैं।

यह सुनकर आपको यह गुमान हुआ कि आपके बारे में चचा के ख़्यालों में तब्दीली आ चुकी है और वह आपका साथ छोड़कर आपको क़ौम के हवाले कर देंगे और अब उनमें आपका साथ देने की हिम्मत नहीं रही। इस पर आपने फ़रमाया—

---

1. अहमद, मुस्लिम, नसई, तिर्मिज़ी, बिदाया, भाग 3, पृ० 114
2. तबरानी, बुख़ारी

'ऐ मेरे चचा ! अगर सूरज मेरे दाएं हाथ में और चांद मेरे बाएं हाथ में रख दिया जाए, तो भी मैं इस काम को नहीं छोड़ूंगा (और मैं इस काम में लगा रहूंगा) यहां तक कि अल्लाह इस काम को ग़ालिब कर दें या इस काम की कोशिश में मेरी जान चली जाए।'

इतना कहकर आपकी आंखें डबडबा आईं और आप रो दिए। (पूरी हदीस आगे आएगी।)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन क़ुरैश ने जमा होकर यह कहा कि तुम ऐसे आदमी को खोजो, जो तुममें सबसे बड़ा जादूगर और सबसे बड़ा काहिन और सबसे बड़ा शायर (कवि) हो, ताकि वह उस आदमी के पास जाए, जिसने हममें फूट डाल दी और हमारे जोड़ को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और हमारे दीन में बहुत से ऐब निकाल दिए और जाकर उससे (खुलकर) बात करे और देखे कि वह क्या जवाब देता है।

सबने यही कहा कि हमारे इल्म में इस काम के लिए उत्बा बिन रबीआ से बेहतर कोई आदमी नहीं। चुनांचे उन्होंने उत्बा से कहा—

'ऐ अबुल वलीद![1] तुम उनके पास जाओ।'

चुनांचे उत्बा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और यह कहा कि ऐ मुहम्मद! आप बेहतर हैं या (आपके वालिद) अब्दुल्लाह?

आप चुप रहे।

फिर उसने कहा, (आप बेहतर हैं या आपके दादा) अब्दुल मुत्तलिब?

आप फिर चुप रहे।

फिर उसने कहा, अगर आपका ख़्याल यह है कि ये लोग आपसे बेहतर थे, तो ये उन ख़ुदाओं की इबादत करते थे, जिनमें आप ऐब निकालते हैं और अगर आपका ख़्याल यह है कि आप इनसे बेहतर हैं, तो आप यह बात हमें समझाएं। हम आपकी बात सुनते हैं। अल्लाह की

1. यह उत्बा का उपनाम है।

क़सम ! हमने कोई नवजवान ऐसा नहीं देखा, जो अपनी क़ौम के लिए (नऊज़ुबिल्लाह) आपसे ज़्यादा मनहूस साबित हुआ हो। आपने हम में फूट डाल दी और हमारे जोड़ को बिल्कुल ख़त्म कर दिया और हमारे दीन में बहुत से ऐब निकाल दिए और सारे अरब में हमें रुसवा कर दिया, यहां तक कि सारे अरब में मशहूर हो गया कि क़ुरैश में एक जादूगर है और क़ुरैश में एक नजूमी है। अल्लाह की क़सम ! (हमारे आपस के ताल्लुक़ात इतने ख़राब हो चुके हैं कि) हम बस इस इन्तिज़ार में हैं कि हामिला औरत की तरह एक चीख़ सुनाई दे और हम सब एक-दूसरे पर तलवारें लेकर टूट पड़ें, यहां तक कि हम सब एक-दूसरे को ख़त्म कर दें। ऐ आदमी ! अगर आपको (माल की ज़रूरत है, तो हम आपके लिए इतना माल इकट्ठा कर देंगे कि आप क़ुरैश में सबसे ज़्यादा मालदार हो जाएंगे और अगर आपको औरतों की ख़्वाहिश है, आप अपने लिए क़ुरैश की औरतें पसन्द कर लें, एक क्या दस से शादी करा देंगे।'

आपने फ़रमाया, तुम अपनी बात कह चुके ?

तो उत्बा ने कहा, 'जी हां।'

इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ये आयतें तिलावत फ़रमाई—

حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۚ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ
قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۙ
فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ۗ

'फिर अगर वे टलाएं तो तू कह, मैंने ख़बर सुना दी तुमको एक सख़्त अज़ाब की, जैसे अज़ाब आया आद और समूद पर।'

(हामीम अस्सज्दा 1-13)

यह सुनकर उत्बा ने कहा, बस, बस, आपके पास इसके अलावा और कोई बात नहीं ?

आपने फ़रमाया, नहीं।

फिर उत्बा क़ुरैश के पास वापस आया, तो उन्होंने पूछा, वहां क्या बातचीत हुई ?

तो उसने कहा, मेरे ख़्याल में आप लोग उनसे जितनी बातें करना चाहते थे, वे सब बातें मैंने उनको कह दीं।

तो उन्होंने पूछा कि उन्होंने तुम्हें कुछ जवाब दिया?

तो उत्बा ने कहा, हां। लेकिन फिर कहने लगा, नहीं, क़सम है उस ज़ात की, जिसने काबा को इबादत का घर बनाया, उनमें से मुझे यही एक बात समझ में आई कि वह तुमको आद व समूद जैसे अज़ाब से डरा रहा है।

तो लोगों ने कहा, तेरा नास हो। (अजीब बात है कि) वह आदमी तुमसे अरबी भाषा में बात करता है और तुम्हें समझ में नहीं आता है कि वह क्या कह रहा है?

तो उत्बा ने कहा, (मैं क्या करूं) उसने जितनी बातें कहीं, उनमें से अज़ाब वाली बात के अलावा और कोई बात समझ में नहीं आई।[1]

बैहक़ी वग़ैरह ने हाकिम से इस रिवायत को नक़ल किया है, जिसमें इतना और लिखा हुआ है कि उत्बा ने यह भी कहा कि अगर आप सरदार बनना चाहते हैं, तो हम अपने सारे झंडे आपके सामने गाड़ देंगे। (उस ज़माने का चलन था कि झंडा सरदार के घर गाड़ा जाता था।) और पूरी ज़िंदगी आप हमारे सरदार रहेंगे।

और इस रिवायत में यह भी है कि जब आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई

حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۚ ——— فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۚ

तो उत्बा ने आपके मुंह पर हाथ रख दिया और रिश्तेदारी का वास्ता देकर कहा कि आप (और ज़्यादा क़ुरआन पढ़ना) बन्द कर दें।

इसके बाद उत्बा घर जाकर बैठा रहा और क़ुरैश के पास न गया, तो अबू जह्ल ने कहा—

'अल्लाह की क़सम! ऐ क़ुरैश! हमें तो यही नज़र आ रहा है कि उत्बा मुहम्मद की ओर झुक गया है और उसे मुहम्मद का खाना पसन्द

1. मुस्नद अब्द बिन हुमैद

आ गया है और यह उसने इस वजह से किया है कि वह ग़रीब हो गया है। चलो हम उसके पास चलते हैं।'

चुनांचे सब उत्बा के पास पहुंचे, तो अबू जह्ल ने कहा—

'ओ उत्बा! अल्लाह की क़सम! हम तुम्हारे पास इस वजह से आए हैं कि तुम मुहम्मद की ओर झुक गये हो और तुम्हें उनकी बात पसन्द आ गई है। अगर तुम्हें माल की ज़रूरत है, तो हम तुम्हें इतना माल जमा करके दे देंगे कि तुम्हें मुहम्मद का खाना खाने की ज़रूरत न रहेगी।'

इस पर उत्बा बिगड़ गया और उसने ख़ुदा की क़सम खाकर कहा कि वह कभी मुहम्मद से बात नहीं करेगा और कहा कि तुम लोगों को अच्छी तरह मालूम है कि मैं कुरैश के सबसे ज़्यादा मालदार लोगों में से हूं, लेकिन बात यह है कि मैं मुहम्मद के पास गया था। फिर उत्बा ने पूरी बात तफ़्सील से बताई और कहा—

'अल्लाह की क़सम! मुहम्मद ने मेरी बात का ऐसा जवाब दिया, जो न जादू है, न शायरी (काव्य) है और न कहानत है और मुहम्मद ने ये आयतें पढ़कर सुनाई—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
فَإِنْ أَعْرَضُوْا فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۝

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० हा-मीम० तंज़ीलुम मिनर्रहमानिर्रहीम० से लेकर फ़-इन आरज़ू फ़-क़ुल अन्ज़रतुकुम साअिक़तम मिस-ल साअिक़ति आदिंव-व समूद०' तक, तो मैंने उनके मुंह पर हाथ रख दिया और उनको रिश्तेदारी का वास्ता देकर कहा कि वह बस कर दें और तुम जानते हो कि मुहम्मद जब कोई बात कहते हैं, वह ग़लत नहीं होती, तो मुझे डर हुआ कि तुम पर कहीं अज़ाब न उतर आए।'[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि कुरैश हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में मश्विरा करने के लिए जमा हुए और आप

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 62, दलाइल, पृ० 75, हैसमी, भाग 6, पृ० 20, नसई।

मस्जिद में बैठे हुए थे, तो उत्बा बिन रबीआ ने क़ुरैश से कहा, मुझे इजाज़त दो, मैं मुहम्मद के पास जाकर उनसे बात करूं। मुझे उम्मीद है कि मैं तुम लोगों के मुक़ाबले में उनसे ज़्यादा नर्म बात कर लूंगा।

उत्बा वहां से उठ कर आपके पास आकर बैठ गया और कहने लगा, ऐ मेरे भतीजे! मैं यह समझता हूं कि आप हम सब में सबसे ज़्यादा बेहतरीन घरवाले और सबसे ज़्यादा रुत्बे वाले हैं, लेकिन आपने अपनी क़ौम को ऐसी मुसीबत में डाल दिया है कि किसी ने अपनी क़ौम को वैसी मुसीबत में डाला न होगा। अगर इस काम में आप माल जमा करना चाहते हैं तो आपकी क़ौम इस बात की ज़िम्मेदार है कि वह आपको इतना माल जमा करके दे कि आप हम में सबसे ज़्यादा मालदार हो जाएंगे। अगर आप सरदारी हासिल करना चाहते हैं तो हम आपको अपना सबसे बड़ा सरदार बना लेंगे कि आपकी क़ौम में सबसे बड़ा कोई सरदार न होगा और हम आपके बिना कोई फ़ैसला नहीं किया करेंगे और अगर यह सब कुछ जिन्नात के ऐसे असर की वजह से है जिसे आप अपने से ख़ुद ख़त्म नहीं कर सकते हैं,तो जब तक आप इसको और ज़्यादा इलाज में मजबूर नहीं क़रार देंगे, हम आपका इलाज कराने के लिए अपने ख़ज़ाने ख़र्च करते रहेंगे और अगर आप बादशाह बनना चाहते हैं, तो हम आपको अपना बादशाह बना लेते हैं।

आपने फ़रमाया, ऐ अबुल वलीद! तुम अपनी बात पूरी कर चुके?

उत्बा ने कहा, जी हां।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि आपने सूरः हामीम अस्सज्दा पढ़नी शुरू की, यहां तक कि सज्दा की आयत भी पढ़ ली। फिर आपने तिलावत का सज्दा किया, लेकिन उत्बा अपनी पीठ के पीछे हाथ टेके बैठा रहा। (यानी उसने सज्दा न किया)

इसके बाद आपने बाक़ी सूरः तिलावत फ़रमाई। जब आप तिलावत कर चुके, तो उत्बा वहां से खड़ा हो गया, (लेकिन वह इन आयतों को सुनकर इतने रौब में आ चुका था कि) उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह अपनी क़ौम को जाकर क्या बताए।

जब क़ुरैश ने उसको वापस आते हुए देखा तो आपस में कहने लगे कि जिस हालत के साथ यह तुम्हारे पास से गया था, अब उसका चेहरा बता रहा है कि उसकी अब यह हालत बाक़ी नहीं रही।

उत्बा उनके पास आकर बैठ गया और कहने लगा, ऐ क़ुरैश के लोगो! मैंने उनको वह तमाम बातें कह दीं, जिनका तुमने मुझको हुक्म दिया था यहां तक कि जब मैं अपनी बात पूरी कह चुका तो उसने मुझे ऐसा कलाम सुनाया कि अल्लाह की क़सम! मेरे कानों ने वैसा कलाम कभी नहीं सुना और मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या जवाब दूं। ऐ क़ुरैश! आज तुम मेरी बात मान लो, आगे चाहे न मानना। इस आदमी को अपने हाल पर छोड़ दो और इससे अलग-थलग रहो, क्योंकि अल्लाह की क़सम! वह जिस काम पर लगे हुए हैं, वह उसे छोड़ने वाले नहीं हैं। बाक़ी अरबों में उसे काम करने दो, क्योंकि अगर वह उन अरबों पर ग़ालिब आ गए, तो उनकी बरतरी तुम्हारी बरतरी होगी और उनकी इज़्ज़त तुम्हारी इज़्ज़त होगी और अगर अरब उन पर ग़ालिब आ गए, तो तुम्हारे बीच में आए बग़ैर दूसरों के ज़रिए से तुम्हारा मक़्सद हासिल हो जाएगा।

इस पर क़ुरैश ने कहा कि ऐसा मालूम होता है, ऐ अबुल वलीद! कि तुम भी बेदीन हो गए हो।[1]

हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा और मरवान कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (उमरा के इरादे से) मदीना से हुदैबिया के समझौते के मौक़े पर चले। (इसके बाद बुख़ारी ने पूरी हदीस ज़िक्र की है, जैसे कि लोगों की हिदायत का ज़रिया बनने वाले अख़्लाक़ के बाब में आएगी)

इस इर्शाद में यह मज़्मून भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० हुदैबिया की घाटी में ठहरे हुए थे कि इतने में बुदैल बिन वरक़ा अपनी क़ौम ख़ुज़ाआ की एक जमाअत को

---

1. दला इलुन्नुबूव: (अबू नुऐम) पृ० 76, बिदाया, भाग 2, पृ० 63, बैहक़ी भाग 3, पृ० 64

लेकर आए और ये लोग तहामा वालों में से आपका सबसे ज़्यादा भला चाहने वाले थे।

उन्होंने कहा कि मैं काब बिन लुई और आमिर बिन लुई के पास से आ रहा हूं। उन्होंने हुदैबिया के स्रोतों पर पड़ाव डाला हुआ है और वे (लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार होकर सारा सामान लेकर आए हैं, यहां तक कि) उनके साथ नई ब्याई और पुरानी ब्याई ऊंटनियां भी हैं और वे आपसे लड़ना चाहते हैं और आपको बैतुल्लाह से रोकेंगे।

तो आपने फ़रमाया, हम किसी से लड़ने के लिए नहीं आए हैं, बल्कि हम तो उमरा करने आए हैं। (हम बहुत हैरान हैं कि वे लड़ाई के लिए तैयार होकर आ गए हैं, हालांकि) लड़ाइयों ने क़ुरैश को बहुत थका दिया है और उनको बहुत नुक़्सान पहुंचाया है। अगर वे चाहें तो मैं उनसे एक मुद्दत तक के लिए समझौता करने को तैयार हूं। इस मुद्दत में वे मेरे और लोगों के बीच कोई दख़ल नहीं देंगे। (और मैं इस मुद्दत में दूसरे लोगों को दावत देता रहूंगा।) अगर दावत देकर मैं लोगों पर ग़ालिब आ गया और लोग मेरे दीन में दाख़िल हो गए) तो फिर क़ुरैश की मर्ज़ी है, अगर वे चाहें तो वे भी इस दीन में दाख़िल हो जाएं, जिसमें दूसरे लोग दाख़िल हुए होंगे और अगर मैं ग़ालिब न आया (और दूसरे लोगों ने ग़ालिब आकर मुझे ख़त्म कर दिया) तो फिर ये लोग आराम से रहेंगे और अगर वे (इस दीन में दाख़िल होने से) इंकार कर दें तो उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं उनसे इस दीन के लिए ज़रूर लड़ूंगा, यहां तक कि मेरी गरदन मेरे जिस्म से अलग हो जाए। (यानी मुझे मार दिया जाए) और अल्लाह का दीन ज़रूर चलकर रहेगा।[1]

तबरानी में इन दोनों हज़रात हज़रत मिस्वर और हज़रत मरवान से यही हदीस नक़ल की गई है, जिसके आख़िर में यह मज़्मून है कि आपने फ़रमाया—

'क़ुरैश की हालत पर बड़ा अफ़सोस है कि लड़ाई उनको खा गई है। (यानी लड़ाई ने उनको बड़ा कमज़ोर कर दिया है और वे फिर लड़ने

1. बुख़ारी,

के लिए तैयार हो गए हैं) इस बात में उनका क्या नुक़्सान है कि वे मुझे दूसरे अरबों में दावत का काम करने दें और बीच में दख़ल न दें। अगर दूसरे अरबों ने ग़ालिब आकर मुझे ख़त्म कर दिया, तो क़ुरैश की दिली मंशा पूरी हो जाएगी और अगर अल्लाह ने अरबों पर मुझे ग़ालिब कर दिया, तो वे क़ुरैश भी सारे के सारे इस्लाम में दाख़िल हो जाएं और अगर क़ुरैश इस्लाम में दाख़िला क़ुबूल न करें तो मुझसे लड़ लें और उस वक़्त उनके पास ताक़त भी होगी। क़ुरैश क्या समझते हैं, अल्लाह की क़सम, जिस दीन को लेकर अल्लाह ने मुझे भेजा है, मैं उसकी वजह से उनसे लड़ता रहूंगा, यहां तक कि या तो अल्लाह मुझे ग़ालिब कर देगा या यह गरदन मेरे जिस्म से अलग हो जाएगी।[1]

हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर की लड़ाई के दिन फ़रमाया कि कल मैं यह झंडा ऐसे व्यक्ति को दूंगा, जिसके हाथों अल्लाह ख़ैबर फ़त्ह फ़रमाएंगे और वह अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह और उसके रसूल भी उससे मुहब्बत करते हैं।

हज़रत सहल फ़रमाते हैं कि लोगों ने सारी रात इसी चिन्ता में गुज़ारी कि देखिए सुबह झंडा किसको मिलता है।

सुबह होते ही सब हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हर एक को यह तमन्ना थी कि झंडा उसको मिले, तो आपने फ़रमाया कि अली बिन अबी तालिब कहां हैं?

लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उनकी आंखें दुख रही हैं।

हज़रत सहल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने आदमी भेजकर हज़रत अली रज़ि० को बुलाया। वह आए तो उनकी आंखों पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दम फ़रमाया और उनके लिए दुआ फ़रमाई। वह फ़ौरन ऐसे सेहतमंद हो गए कि जैसे कोई तक्लीफ़ ही न थी और उनको झंडा दिया तो हज़रत अली रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 287, बिदाया, भाग 4, पृ० 165

अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या मैं उनसे इसलिए लड़ूं ताकि वे हमारे जैसे हो जाएं।

आपने फ़रमाया कि तुम इत्मीनान से चलते रहो, यहां तक कि उनके मैदान में पहुंच जाओ, फिर उनको इस्लाम की दावत दो और अल्लाह के जो हक़ उन पर वाजिब हैं, वे उनको बताओ। अल्लाह की क़सम! तुम्हारे ज़रिए से अल्लाह एक आदमी को हिदायत दे दें, यह तुम्हारे लिए इससे ज़्यादा बेहतर है कि तुम्हें लाल ऊंट मिल जाएं।[1]

हज़रत मिक़्दाद बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हकम बिन कैसान को गिरफ़्तार किया तो हमारे अमीर साहब ने उनकी गरदन उड़ाने का इरादा किया, तो मैंने कहा, आप इसे रहने दें, हम इसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लेकर जाएंगे।

चुनांचे हम उन्हें हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लेकर आए।

हुज़ूर सल्ल० उनको इस्लाम की दावत देने लगे और बहुत देर तक दावत देते रहे। जब ज़्यादा देर हो गई, तो हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप इससे किस उम्मीद पर बात कर रहे हैं? अल्लाह की क़सम! यह कभी भी मुसलमान नहीं होगा। आप मुझे इजाज़त दें कि मैं इसकी गरदन उड़ा दूं, ताकि यह जहन्नम रसीद हो जाए।

लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० की बात की ओर कोई तवज्जोह न फ़रमाई और उसे बराबर दावत देते रहे, यहां तक कि हकम मुसलमान हो गए।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि ज्यों ही मैंने उनको मुसलमान होते हुए देखा तो अगले पिछले तमाम ख़्यालों ने मुझे घेर लिया और मैंने अपने दिल में कहा कि जिस बात को हुज़ूर सल्ल० मुझसे ज़्यादा जानते हैं, मैं उस बात में कैसे जुर्रात कर बैठता हूं। फिर मैंने यह सोचा कि मैंने अल्लाह और रसूल सल्ल० की ख़ैरख़्वाही में बात की थी।

1. बुख़ारी व मुस्लिम, भाग 2, पृ० 279

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत हकम मुसलमान हुए और बहुत अच्छे मुसलमान बने और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते रहे, यहां तक कि बेरे मऊना के मौक़े पर शहादत का दर्जा पाया और हुज़ूर सल्ल० उनसे राज़ी थे और वह जन्नत में दाखिल हुए।[1]

हज़रत ज़ोहरी की रिवायत में इस तरह से है कि हज़रत हकम ने पूछा कि इस्लाम क्या है?

आपने फ़रमाया, तुम एक अल्लाह की इबादत करो, जिसका कोई शरीक नहीं है और इस बात की गवाही दो कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

इस पर हज़रत हकम ने कहा कि मैंने इस्लाम को क़ुबूल कर लिया।

इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा की ओर रुख़ करके फ़रमाया कि अगर मैं इसके बारे में अभी तुम्हारी बात मानकर क़त्ल कर देता, तो यह दोज़ख़ में चला जाता।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल वहशी बिन हर्ब के पास इस्लाम की दावत देने के लिए आदमी भेजा। हज़रत वहशी ने जवाब में यह पैग़ाम भेजा कि आप मुझे कैसे इस्लाम की दावत दे रहे हैं, हालांकि आप ख़ुद यह कहते हैं कि क़ातिल और मुश्रिक और ज़ानी दोज़ख़ में जाएंगे और क़ियामत के दिन उन पर अज़ाब दो गुना होगा और हमेशा ज़लील होकर जहन्नम में पड़े रहेंगे और मैंने ये सब काम किए हैं, तो क्या मेरे लिए आपके ख़्याल में इन बुरे कामों की सज़ा से बचने की कोई गुंजाइश है?

तो अल्लाह ने फ़ौरन यह आयत उतारी—

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 137
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 138

'मगर जिसने तौबा की और यक़ीन दिलाया और किया कुछ काम नेक, सो उनको बदला देगा अल्लाह बुराइयों की जगह भलाइयां और है अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान।' (फ़ुर्क़ान 70)

इस आयत को सुनकर हज़रत वहशी ने कहा, 'तौबा और ईमान और भले काम की शर्त बहुत कड़ी है, शायद मैं इसे पूरा न कर सकूं।'

इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ

'बेशक अल्लाह नहीं बख़्शता उसको जो उसका शरीक करे और बख़्शता है उससे नीचे के गुनाह जिसके चाहे।' (अन-निसा 48)

इस पर हज़रत वहशी ने कहा, मग़्फ़िरत तो अल्लाह के चाहने पर टिक गई। पता नहीं अल्लाह मुझे बख़्शेंगे या नहीं। क्या इसके अलावा कुछ और गुंजाइश है?

तो अल्लाह ने यह आयत उतारी—

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۚ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

'ऐ बन्दो मेरे, जिन्होंने कि ज़्यादती की है अपनी जान पर, आस मत तोड़ो अल्लाह की मेहरबानी से, बेशक अल्लाह बख़्शता है सब गुनाह। वह जो है वही है गुनाह माफ़ करने वाला मेहरबान।' (ज़ुमर 53)

इस पर हज़रत वहशी ने फ़रमाया कि हां यह ठीक है और मुसलमान हो गए।

इस पर लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हमने भी वही गुनाह किए हैं जो हज़रत वहशी ने किए थे, तो यह आयत हमारे लिए भी है?

आपने फ़रमाया, हां, यह तमाम मुसलमानों के लिए है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि कुछ मुश्रिक लोगों ने ख़ूब क़त्ल किया था और ख़ूब ज़िना किया था। वे लोग हुज़ूरे अक़्दस

---

1. तबरानी, भाग 7, पृ० 100

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगे, आप जो बात कहते हैं और जिसकी आप दावत देते हैं, वह बहुत अच्छी है। आप हमें बताएं कि हमने जो गुनाह किए हैं, क्या उनका कोई कफ़्फ़ारा हो सकता है?

इस पर ये आयतें उतरीं—

والذين لا يدعون مع الله الها اخر ولا يقتلون النفس التي حرم الله الا بالحق ولا يزنون और قل يعبادي الذين اسرفوا على انفسهم لا تقنطوا من رحمة الله

(पिछली हदीस से यह मालूम हुआ कि ये आयतें हज़रत वहशी के बारे में उतरी थीं, इस हदीस से यह मालूम हो रहा है कि ये आयतें कुछ मुश्रिक लोगों के बारे में उतरी हैं।)[1]

हज़रत अबू सालबा ख़ुशनी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार एक लड़ाई के सफ़र से वापस तशरीफ़ लाए। आपने मस्जिद में जाकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और आपको यह बात पसन्द थी कि सफ़र से वापसी पर पहले मस्जिद में जाएं और उसमें दो रक्अत नमाज़ पढ़ें, फिर हज़रत फ़ातमा रज़ि० के घर जाएं और उसके बाद अपनी बीवियों के घरों में जाएं।

चुनांचे एक बार सफ़र से वापस तशरीफ़ लाए और अपनी बीवियों के घरों से पहले हज़त फ़ातमा के घर तशरीफ़ ले गए, तो हज़रत फ़ातमा ने अपने घर के दरवाज़े पर आपका स्वागत किया और आपके मुबारक चेहरे और आंखों का बोसा लेने लगीं और रोने लगीं, तो उनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्यों रोती हो?

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपकी यह हालत देखकर रो रही हूं कि आपका रंग (सफ़र की मशक़्क़त की वजह से) बदल चुका है और आपके कपड़े पुराने हो गए हैं, तो उनसे आपने फ़रमाया—

1. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 710, मुस्लिम, भाग 1, पृ० 76, अबू दाऊद, भाग 2, पृ० 238, नसई, भाग 9, पृ० 121, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 98

'ऐ फ़ातमा ! मत रोओ, अल्लाह ने तुम्हारे बाप को ऐसा दीन देकर भेजा है, जिसको अल्लाह धरती के हर पक्के घर में और हर कच्चे घर में और हर ऊनी खेमे में ज़रूर दाख़िल करेंगे। जो इस्लाम में दाख़िल होंगे, वे इज़्ज़त पाएंगे, और जो दाख़िल नहीं होंगे, वे ज़लील होंगे और दुनिया के जितने हिस्से में रात पहुंचती है, उतने हिस्सों में यह दीन भी पहुंचेगा, यानी सारी दुनिया में पहुंचकर रहेगा।'[1]

हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जहां तक दिन रात पहुंचते हैं (यानी सारी दुनिया में) यह दीन ज़रूर पहुंचेगा और हर कच्चे और पक्के घर में अल्लाह इस दीन को ज़रूर दाख़िल करेंगे, मानने वाले को इज़्ज़त देकर और न मानने वाले को ज़लील करके, चुनांचे इस्लाम और इस्लाम वालों को अल्लाह इज़्ज़त देंगे और कुफ़्र को ज़लील व रुसवा करेंगे।

हज़रत तमीम दारी फ़रमाया करते थे कि मैंने इस मंज़र को अपने ख़ानदान में अच्छी तरह देखा कि इनमें से जो मुसलमान हुए, ख़ैर व शराफ़त और इज़्ज़त ने उनके क़दम चूमे और जो काफ़िर रहे, वे ज़लील हुए। उनको छोटा बनना पड़ा और जिज़या देना पड़ा।[2]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे तुस्तर की जीत की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेजा। क़बीला बिक्र बिन वाइल के छः आदमी दीन से लौटकर मुश्रिकों से जा मिले थे। उनके बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे पूछा कि बिक्र बिन वाइल के इन आदमियों का क्या हुआ?

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! वे लोग इस्लाम से फिरकर मुश्रिकों से जा मिले थे। उनका इलाज तो यही था कि उनको क़त्ल कर दिया जाता, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया,

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 77, हैसमी, भाग 8, पृ० 263, हाकिम, भाग 3, पृ० 155
2. मजमा, भाग 6, पृ० 14 और भाग 8, पृ० 262, हैसमी, भाग 6, पृ० 114

'वे लोग सही-सालिम मेरे हाथ आ गए होते, तो यह मुझे सारी दुनिया के सोने-चांदी से ज़्यादा पसन्द होता।'

मैंने कहा, अमीरुल मोमिनीन! अगर वे आपके हाथ आ जाते, तो आप उनके साथ क्या बर्ताव करते?

उन्होंने मुझसे फ़रमाया कि वे इस्लाम के जिस दरवाज़े से बाहर गए थे, मैं उन पर उसी दरवाज़े से वापस आ जाने को पेश करता, फिर अगर वे इस्लाम की ओर वापस आ जाते तो मैं उनके इस्लाम को क़ुबूल कर लेता, वरना उन्हें जेलखाने में डाल देता।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान क़ारी कहते हैं, हज़रत मूसा की ओर से एक आदमी अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत उमर रज़ि० ने उससे लोगों के हालात पूछे, जो उसने बताए।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या कोई अजीब व ग़रीब बात तुम्हारे यहां पेश आई है?

उसने कहा, हां, यह अजीब बात पेश आई है कि एक आदमी मुसलमान होकर फिर काफ़िर हो गया।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुमने उसके साथ क्या बर्ताव किया?

उसने कहा, उसे बुलाकर उसकी गरदन उड़ा दी।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुमने उसे तीन दिन क़ैद किया? और हर दिन उसे एक रोटी खिलाई और उससे तौबा कराई? (अगर तुम ऐसा कर लेते तो) शायद वह तौबा कर लेता और अल्लाह के दीन में वापस आ जाता? ऐ अल्लाह! इस मौक़े पर मैं मौजूद नहीं था और न ऐसा करने का मैंने हुक्म दिया था और अब जब मुझे इस वाक़िए का इल्म हुआ, मैं उससे राज़ी भी नहीं हुआ।[2]

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 89, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 207
2. बैहक़ी, पृ० 207

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को एक ख़त लिखा, जिसमें उन्होंने एक आदमी के बारे में पूछा कि वह इस्लाम में दाख़िल हुआ, फिर काफ़िर हो गया, फिर इस्लाम में दाख़िल हुआ, फिर काफ़िर हो गया, यहां तक कि ऐसा उसने कई बार किया, क्या उससे इस्लाम क़ुबूल किया जाएगा?

तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनको यह जवाब लिखा कि जब तक अल्लाह लोगों से इस्लाम क़ुबूल करता रहे, तुम भी उससे इस्लाम क़ुबूल करते रहो। इसलिए अब उस पर इस्लाम पेश करके देखो। अगर वह क़ुबूल कर ले तो उसे छोड़ दो, वरना उसकी गरदन उड़ा दो।[1]

हज़रत अबू इम्रान जौनी कहते हैं कि हजरत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का एक ईसाई सन्यासी (राहिब) के पास से गुज़र हुआ। आप वहां खड़े हो गए।

लोगों ने राहिब को पुकार कर कहा, यह अमीरुल मोमिनीन हैं?

उसने झांक कर देखा तो उस पर तक्लीफ़ें उठाने, मुजाहदा करने और दुनिया से बेताल्लुक़ हो जाने की निशानियां दिखाई दे रही थीं (यानी मुजाहदों की ज़्यादती की वजह से बहुत ख़स्ताहाल और कमज़ोर हो रहा था)

उसे देखकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रो दिए, तो उनसे किसी ने कहा, आप मत रोएं, यह तो ईसाई है, (मुसलमान नहीं)

तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, यह मुझे मालूम है, लेकिन मुझे इस पर तरस आ रहा है और अल्लाह का इर्शाद है—

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝٣ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝٤

'आमिलतुन नासिबः तस्ला नारन हामियः'

(बहुत से लोग) मेहनत करने वाले थके हुए हैं, गिरेंगे धधकती हुई आग में (यानी काफ़िर लोग जो दुनिया में बड़ी-बड़ी रियाज़ करते हैं,

1. कंज़ुल उम्माल भाग 1 पृ० 79

अल्लाह के यहां कुछ कुबूल नहीं होती, इसलिए दुनिया की मशक्कतें उठाने के बावजूद दोज़ख़ में जाएंगे), मुझे इस बात पर तरस आया कि दुनिया में थका देने वाली मेहनत कर रहा है और इतने मुजाहदे बर्दाश्त कर रहा है, लेकिन मरकर भी दोज़ख़ में जाएगा।[1]

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 175

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक-एक आदमी को दावत देना

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जाहिलियत के ज़माने के दोस्त थे। एक दिन हुज़ूर सल्ल० की मुलाक़ात के इरादे से घर से निकले। आपसे मुलाक़ात हुई तो अर्ज़ किया—

'ऐ अबुल क़ासिम! (यह हुज़ूर सल्ल० का उपनाम है) क्या बात है? आप अपनी क़ौम की मज्लिसों में नज़र नहीं आते हैं और लोग यह इलज़ाम लगाते हैं कि आप उनके बाप-दादा वग़ैरह के ऐब बयान करते हैं।'

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूं और तुमको अल्लाह की दावत देता हूं।

ज्यों ही हुज़ूर सल्ल० ने अपनी बात पूरी फ़रमाई, हज़रत अबूबक्र रज़ि० फ़ौरन मुसलमान हो गए।

हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबूबक्र रज़ि० के इस्लाम लाने पर इतने ख़ुश हुए कि उस दिन कोई भी मक्का की इन दोनों पहाड़ियों के दर्मियान, जिनको 'अख़शबैन' कहते हैं, आपसे ज़्यादा ख़ुश न था।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० वहां से हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान, हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास के पास तशरीफ़ ले गए। वे लोग भी मुसलमान हो गए।

दूसरे दिन हज़रत अबूबक्र हुज़ूर सल्ल० के पास हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद, और हज़रत अरक़म बिन अबुल

अरक़म को लेकर हाज़िर हुए और ये सभी मुसलमान हो गए।[1]

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ मुहम्मद सल्ल० ! क़ुरैश जो कुछ कर रहे हैं, क्या वह सही है कि आपने हमारे माबूदों को छोड़ दिया है और आपने हमें बेवक़ूफ़ बताया है और हमारे बाप-दादा पर कुफ़्र का इलज़ाम लगाया है ?

आपने फ़रमाया, हां, यह सब सही है। बेशक मैं अल्लाह का रसूल और नबी हूं। अल्लाह ने मुझे इसलिए नबी बनाकर भेजा है, ताकि मैं उसका पैग़ाम पहुंचाऊं। मैं तुम्हें यक़ीन के साथ अल्लाह की दावत देता हूं। अल्लाह की क़सम ! बेशक हक़ यही है। ऐ अबूबक्र ! मैं तुमको एक अल्लाह की दावत देता हूं, जिसका कोई शरीक नहीं है। उसके सिवा किसी की इबादत न करो और हमेशा उसकी इताअत करते रहो। इसके बाद आपने क़ुरआन पढ़कर सुनाया।

हज़रत अबूबक्र ने न इक़रार किया और न इंकार और इस्लाम ले आए और बुतपरस्ती छोड़ दी और अल्लाह के शरीकों को भी छोड़ दिया और इस्लाम के हक़ होने को मान लिया और ईमान व तस्दीक़ के साथ हज़रत अबूबक्र वापस हुए।[2]

दूसरी रिवायत में यह आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने जिसको भी इस्लाम की दावत दी, वह ज़रूर हिचकिचाया और संकोच में पड़ा और कुछ देर सोचकर इस्लाम को क़ुबूल किया, लेकिन जब मैंने अबूबक्र को दावत दी, वह न हिचकिचाए और न संकोच में पड़े, बल्कि इस्लाम ले आए।[3]

इसलिए पहली रिवायत में जो ये शब्द आए हैं कि अबूबक्र ने न इक़रार किया और न इन्कार किया, यह सही नहीं है, क्योंकि इब्ने इस्हाक़ वग़ैरह बहुत से रिवायत करने वालों ने ज़िक्र किया है कि हज़रत

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 29
2. इब्ने इस्हाक़
3. इब्ने इस्हाक़

अबूबक्र पैग़म्बर बनाए जाने से पहले ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हर वक़्त साथ रहने वाले थे और अच्छी तरह से जानते थे कि हुज़ूर सल्ल० सच्चे और अमानतदार हैं और अच्छे स्वभाव और बेहतरीन अख़्लाक़ के मालिक हैं, कभी मख़्लूक़ के बारे में झूठ नहीं बोल सकते हैं, तो अल्लाह के बारे में कैसे झूठ बोल सकते हैं, इसलिए ज्यों ही हुज़ूर सल्ल० ने उनसे यह बात कही कि अल्लाह ने उनको रसूल बनाकर भेजा है, उन्होंने तुरन्त उसकी तस्दीक़ की और ज़रा भी न हिचकिचाए और न देर की।

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबुद्दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया गया है कि एक बार हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ि० में कुछ झगड़ा हुआ, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

'अल्लाह ने मुझे तुम्हारे पास भेजा था, उस वक़्त तुम सबने कहा था कि मैं ग़लत कहता हूं, लेकिन अबूबक्र ने कहा था कि यह सही कहते हैं और जान व माल से उन्होंने मेरी हमदर्दी की थी, तो क्या तुम लोग मेरी वजह से मेरे इस साथी को छोड़ दोगे?' यह वाक्य हुज़ूर सल्ल० ने दो बार इर्शाद फ़रमाया।

इसके बाद हज़रत अबूबक्र को किसी ने कभी कुछ तक्लीफ़ नहीं दी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद इस बात की खुली दलील है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० सबसे पहले इस्लाम ले आए।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत उमर बिन ख़त्ताब को दावत देना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ मांगी—

'ऐ अल्लाह! इस्लाम को उमर बिन ख़त्ताब या अबू जह्ल बिन

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 26-27

हिशाम के ज़रिए ताक़त पहुंचा।'

चुनांचे अल्लाह ने आपकी दुआ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब के हक़ में क़ुबूल फ़रमाई और अल्लाह ने उनको इस्लाम की बुनियादों के मज़बूत होने का और बुतपरस्ती की इमारत के गिर जाने का ज़रिया बनाया।[1]

हज़रत सौबान की एक हदीस सहाबा किराम से सख़्तियां सहन करने के बाब में आगे आएगी। इसमें हज़रत उमर रज़ि० की बहन फ़ातमा और उनके ख़ाविंद सईद बिन ज़ैद के तक्लीफ़ बरदाश्त करने का उल्लेख है और फिर इस हदीस में यह मज़्मून है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ि० के दोनों बाज़ुओं को पकड़ कर झिंझोड़ा और फ़रमाया, तुम्हारा क्या इरादा है और तुम क्यों आए हो?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप जिस चीज़ की दावत दे रहे हैं, वह मेरे सामने पेश फ़रमाएं।

आपने फ़रमाया कि इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है। उसका कोई शरीक नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सललम उसके बन्दे और रसूल हैं।

हज़रत उमर रज़ि० यह सुनते ही उसी जगह इस्लाम ले आए और हज़रत उमर ने अर्ज़ किया, आप (इस घर को छोड़ें और मस्जिदे हराम) तशरीफ़ ले चलें। (वहां जाकर काफ़िरों के सामने खुल्लम खुल्ला अल्लाह की इबादत करें।)[2]

हज़रत अस्लम कहते हैं कि हमसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या तुम लोग चाहते हो कि मैं अपने शुरू इस्लाम का क़िस्सा बयान करूं?

हमने कहा, जी ज़रूर।

आपने फ़रमाया, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बड़े

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 61
2. तबरानी

दुश्मनों में से था। सफ़ा पहाड़ी के क़रीब एक मकान में हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ रखते थे। मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपके सामने बैठ गया।

आपने मेरा गरेबान पकड़ कर फ़रमाया, ऐ ख़त्ताब के बेटे! मुसलमान हो जा और साथ ही यह दुआ की कि ऐ अल्लाह! इसे हिम्मत अता फ़रमा। मैंने तुरन्त कहा—

أشهد أن لا إله إلا الله وأشهد أنك رسول الله

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न-क रसूलुल्लाह०

फ़रमाते हैं, मेरे इस्लाम लाते ही मुसलमानों ने इतनी ऊंची आवाज़ से तक्बीर कही, कि जो मक्का की तमाम गलियों में सुनाई दी।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना

हज़रत अम्र बिन उस्मान कहते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं अपनी ख़ाला अरवा बिन्त अब्दुल मुत्तलिब के पास उनकी बीमारी के बारे में पूछने गया। कुछ देर बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां तशरीफ़ लाए। मैं आपको ग़ौर से देखने लगा और आपकी नुबूवत का थोड़ा बहुत तज़्किरा उन दिनों हो चुका था।

आपने मेरी ओर मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ उस्मान! तुम्हें क्या हुआ? (मुझे ग़ौर से देख रहे हो?)

मैंने कहा, मैं इस बात पर हैरान हूं कि आपका हमारे में बड़ा मर्तबा है और फिर आपके बारे में ऐसी बातें कही जा रही हैं।

इस पर आपने फ़रमाया, ला इला-ह इल्लल्लाहु० لا إله إلا الله

अल्लाह गवाह है कि मैं यह सुनकर कांप गया।

फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई—

1. बज़्ज़ार, हुलीया, भाग 1, पृ० 41

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ ۝

'और आसमान में है रोज़ी तुम्हारी और जो तुमसे वायदा किया गया, सो क़सम है रब आसमान और ज़मीन की कि यह बात तहक़ीक़ है जैसे कि तुम बोलते हो।' (अज़-ज़ारियात 22-23)

फिर हुज़ूर सल्ल० खड़े हुए और बाहर तशरीफ़ ले गए। मैं भी आपके पीछे चल दिया। और आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हुआ।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० को दावत देना

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, तो हुज़ूर सल्ल० और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों नमाज़ पढ़ रहे थे, तो हज़रत अली ने पूछा—

ऐ मुहम्मद सल्ल० ! यह क्या है ?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह अल्लाह का वह दीन है, जिसे अल्लाह ने अपने लिए पसन्द किया और जिसे देकर अपने रसूलों को भेजा। मैं तुमको अल्लाह की ओर दावत देता हूं जो कि अकेला है, जिसका कोई शरीक नहीं है कि तुम उसकी इबादत करो और लात व उज़्ज़ा दोनों बुतों का इन्कार कर दो।

हज़रत अली ने कहा, यह ऐसी बात है, जो आज से पहले मैंने कभी नहीं सुनी। इसलिए मैं अपने वालिद अबू तालिब से पूछकर ही इसके बारे में कुछ फ़ैसला करूंगा।

आपने इस बात को पसन्द न फ़रमाया कि आपके एलान करने से पहले आपका भेद खुल जाए, तो उनसे फ़रमाया, ऐ अली ! अगर तुम इस्लाम नहीं लाते हो, तो इस बात को छिपाए रखो।

1. इस्तीआब, भाग 4, पृ० 255

हज़रत अली रज़ि० ने इसी हाल में रात गुज़ारी, फिर अल्लाह ने उनके दिल में मुसलमान होने का शौक़ पैदा फ़रमा दिया। अगले दिन सुबह होते ही हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया— कल मेरे सामने आपने क्या बात पेश फ़रमाई थी?

आपने फ़रमाया, इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, जो कि अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और लात व उज़्ज़ा का इंकार कर दो और अल्लाह के तमाम शरीकों से अलग होने का इज़्हार करो।

हज़रत अली रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की बात मान ली और इस्लाम ले आए और अबू तालिब के डर से आपके पास छिप-छिप कर आते रहे और अपने इस्लाम को छिपाए रखा, बिल्कुल ज़ाहिर न होने दिया।[1]

हब्बा उरनी कहते हैं, मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को एक दिन मिंबर पर हंसते हुए देखा और इससे पहले कभी इतना ज़्यादा हंसते हुए नहीं देखा था कि आपके दांत ज़ाहिर हो जाएं, फिर फ़रमाया—

मुझे अबू तालिब की एक बात याद आई कि एक दिन अबू तालिब हमारे पास आए और मैं बत्ने नख़्ला में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ रहा था, तो उन्होंने कहा, ऐ मेरे भतीजे! तुम दोनों क्या कर रहे हो?

हुज़ूर सल्ल० ने उनको इस्लाम की दावत दी तो उन्होंने कहा कि तुम दोनों जो कुछ कर रहे हो, उसमें कोई हरज नहीं है (और सज्दा की ओर इशारा करते हुए कहा), लेकिन यह नहीं हो सकता कि मेरे सुरीन (सज्दे की हालत में) मेरे से ऊपर हो जाएं, यानी मैं सज्दा नहीं कर सकता।

यह कहते हुए हज़रत अली रज़ि० अपने वालिद की इस बात पर ताज्जुब करते हुए हंसे, फिर फ़रमाया, ऐ अल्लाह! मेरे इल्म के मुताबिक़ आपके नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिवा इस उम्मत में से किसी बन्दे ने मेरे से पहले आपकी इबादत नहीं की है।

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 24

यह बात तीन बार कही और फ़रमाया, मैंने तमाम लोगों से सात साल पहले नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी थी।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अम्र बिन अबसा रज़ि० को दावत देना

हज़रत शद्दाद बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि हज़रत अबू उमामा ने हज़रत अम्र बिन अबसा से पूछा कि आप किस बुनियाद पर यह दावा करते हैं कि इस्लाम लाने में आपका चौथा नम्बर है।

उन्होंने फ़रमाया मैं जाहिलियत के ज़माने में लोगों को सरासर गुमराही पर समझता था और बुत मेरे ख़्याल में कोई चीज़ ही न थे। फिर मैंने एक आदमी के बारे में सुना कि वह मक्का में (ग़ैब की ख़बरें) बतलाता है और नई-नई बातें बयान करता है। चुनांचे मैं ऊंटनी पर सवार होकर फ़ौरन मक्का पहुंचा। वहां पहुंचते ही मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छुपकर रहते हैं और आपकी क़ौम आपकी मुख़ालिफ़ और बहुत बेबाक है।

मैं बड़े हीले-बहाने करके आप तक पहुंच गया, मैंने अर्ज़ किया, आप कौन हैं?

आपने फ़रमाया, मैं अल्लाह का नबी हूं।

मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह का नबी किसे कहते हैं?

आपने फ़रमाया, अल्लाह की ओर से पैग़ाम लाने वाले को।

फिर मैंने अर्ज़ किया, क्या वाक़ई अल्लाह ने आपको पैग़ाम देकर भेजा है?

आपने फ़रमाया, हां।

मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह ने क्या पैग़ाम देकर भेजा है?

आपने फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे यह पैग़ाम देकर भेजा है कि अल्लाह को एक माना जाए और उसके साथ किसी भी चीज़ को शरीक

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 102, अहमद, अबू याला, तबरानी

न किया जाए और बुतों को तोड़ दिया जा और रिश्तों को जोड़ा जाए और उनसे अच्छा व्यवहार किया जाए।

मैंने आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया, इस दीन के मामले में आपके साथ कौन है?

आपने फ़रमाया, एक आज़ाद और एक गुलाम।

मैंने देखा तो आपके साथ हज़रत अबूबक्र बिन अबू क़हाफ़ा और हज़रत अबूबक्र के ग़ुलाम हज़रत बिलाल थे।

मैंने अर्ज़ किया, मैं आपकी पैरवी करना चाहता हूं, यानी इस्लाम को ज़ाहिर करके यहां मक्का में आपके साथ रहना चाहता हूं।

आपने फ़रमाया, अभी तो तुम्हारा मेरे साथ रहना तुम्हारी ताक़त से बाहर है, इसलिए अब तुम घर चले जाओ और जब तुम सुनो कि मुझे ग़लबा हो गया है, तो मेरे पास चले आना।

हज़रत अम्र बिन अबसा फ़रमाते हैं कि मुसलमान होकर मैं अपने घर वापस आ गया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत फ़रमा कर मदीना तशरीफ़ ले गए। मैं आपकी ख़बरें और आपके हालात मालूम करता रहता था, यहां तक कि मदीना से एक क़ाफ़िला आया। मैंने उन लोगों से पूछा—

'वह मक्की आदमी जो मक्का से तुम्हारे यहां आया है, उसका क्या हाल है?'

उन लोगों ने कहा कि उनकी क़ौम ने उनको क़त्ल करना चाहा, लेकिन वह क़त्ल न कर सके और ख़ुदा की मदद उनके और क़ौम के बीच रुकावट बन गई और हम लोगों को इस हाल में छोड़कर आए हैं कि सब आपकी ओर लपक रहे हैं।

हज़रत अम्र बिन अबसा कहते हैं कि मैं अपने ऊंट पर सवार होकर मदीना पहुंचा और हाज़िर होकर अर्ज़ किया—

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप मुझको पहचानते हैं?'

आपने फ़रमाया, हां, क्या तुम वही नहीं हो जो मक्का में मेरे पास आए थे?

मैंने अर्ज़ किया, जी हां, मैं वही हूं। इसके बाद मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जो कुछ अल्लाह ने आपको सिखाया है और मैं नहीं जानता हूं, उसमें से आप कुछ मुझे सिखा दें।

इसके बाद हदीस का काफ़ी हिस्सा अभी बाक़ी है।[1]

हज़रत अम्र बिन अबासा की एक हदीस और भी है, जिसमें यह मज़्मून है कि मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह ने आपको क्या पैग़ाम देकर भेजा है?

आपने फ़रमाया, यह पैग़ाम देकर भेजा है कि रिश्ते-नाते जोड़े जाएं और इंसानी जानों की हिफ़ाज़त की जाए और रास्तों को अम्न वाला रखा जाए और बुतों को तोड़ा जाए और एक अल्लाह की इबादत की जाए और उसके साथ किसी को शरीक न किया जाए।

मैंने अर्ज़ किया कि ये हुक्म जो अल्लाह ने आपको देकर भेजे हैं, बहुत अच्छे हैं और मैं आपको इस बात पर गवाह बनाता हूं कि मैं आप पर ईमान ला चुका हूं और मैं आपको सच्चा मानता हूं। क्या मैं आपके साथ ठहर जाऊं? या आप जो मुनासिब समझें?

आपने फ़रमाया, तुम ख़ुद देख रहे हो कि जिस दीन को लेकर मैं आया हूं, लोग उसे कितना बुरा समझ रहे हैं? इसलिए अब तुम अपने घर जाकर रहो और जब तुम मेरे मुताल्लिक़ यह सुन लो कि मैं अपनी हिजरत वाली जगह पर पहुंच गया हूं, तो उस वक़्त मेरे पास आ जाना।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना

हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु शुरू में मुसलमान हुए थे अपने भाइयों में सबसे पहले इस्लाम लाए थे और उनके इस्लाम लाने की शुरूआत इस तरह हुई कि उन्होंने सपना देखा कि वह एक आग के किनारे खड़े हैं।

---

1. अहमद, भाग 4, पृ० 112, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 158
2. अहमद, भाग 4, पृ० 111, मुस्लिम, तबरानी, अबू नुऐम, इसाबा, भाग 3, पृ० 6, इस्तीआब भाग 2, पृ० 500, दलाइलुन्नुबुव: पृ० 86

उन्होंने बताया कि उस आग की लम्बाई-चौड़ाई इतनी ज़्यादा है कि अल्लाह ही जानते हैं और उन्होंने सपने में यह भी देखा कि उनके वालिद उनको आग में धकेल रहे हैं और यह भी देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी कमर को पकड़े हुए हैं, ताकि वे आग में न गिर जाएं।

वह घबराकर नींद से उठे और कहने लगे कि मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं, यह बिल्कुल सच्चा सपना है।

इसके बाद उनकी हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई और उनको अपना सपना सुनाया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारे साथ (अल्लाह की ओर से) भलाई का इरादा किया गया। यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, तुम इनकी पैरवी करो। (तुम्हारे सपने का मतलब यही है कि) तुम उनकी पैरवी ज़रूर करोगे और उनके साथ इस्लाम में दाख़िल हो जाओगे और इस्लाम ही तुमको आग में दाख़िल होने से बचाएगा और तुम्हारा बाप आग में जाएगा।

हुज़ूर सल्ल० अजयाद मुहल्ले में तशरीफ़ रखते थे। हज़रत ख़ालिद ने वहां आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ मुहम्मद! आप किस चीज़ की दावत देते हैं?

आपने फ़रमाया, मैं तुमको एक अल्लाह की दावत देता हूं, जिसका कोई शरीक नहीं है और इस बात की दावत देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं और उन पत्थरों की इबादत छोड़ दो, जो न सुनते हैं और न देखते हैं और न नुक़्सान पहुंचा सकते हैं और न नफ़ा और न यह जानते हैं कि कौन उनकी पूजा करता है और कौन नहीं करता है।

हज़रत ख़ालिद ने तुरन्त कलिमा पढ़ लिया कि मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और इस बात की कि आप अल्लाह के रसूल हैं। इनके इस्लाम लाने से हुज़ूर सल्ल० को बहुत ख़ुशी हुई।

इसके बाद हज़रत ख़ालिद अपने घर से ग़ायब हो गए और उनके

वालिद को उनके मुसलमान होने का पता चल गया। उसने उनकी खोज में आदमी भेजे, जो उनको उनके वालिद के पास लेकर आए।

वालिद ने उनको खूब डांटा और जो कोड़ा उसके हाथ में था, उससे उनकी इतनी पिटाई की कि वह कोड़ा उनके सर पर तोड़ दिया और कहा कि अल्लाह की क़सम ! मैं तुम्हारा खाना-पीना बन्द कर दूंगा।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, अगर तुम बन्द कर दोगे, तो अल्लाह मुझे ज़रूर इतनी रोज़ी दे देंगे, जिससे मैं अपनी ज़िंदगी गुज़ार लूंगा। यह कहकर हुज़ूर सल्ल० के पास चले गए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनका हर तरह का ख़्याल रखते और यह हुज़ूर सल्ल० के साथ रहते।[1]

दूसरी रिवायत में यह मज़्मून है कि उनके वालिद ने उनकी खोज में अपने ग़ुलाम राफ़ेअ और अपने उन बेटों को भेजा, जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे। उन्होंने उनको खोज लिया और उनको उनके वालिद अबू उहैहा के पास ले आए।

उनके वालिद ने उनको ख़ूब डांटा और झिड़का। उसके हाथ में एक कुमची थी, जिससे उनको इतना मारा कि वह कुमची उनके सर पर टूट गई, फिर कहने लगा, 'तुम मुहम्मद के पीछे लग गए हो, हालांकि तुम्हें मालूम है कि वह अपनी क़ौम की मुख़ालफ़त कर रहे हैं और अपनी क़ौम के ख़ुदाओं में और उनके बाप-दादे, जो जा चुके हैं, उनमें ऐब निकाल रहे हैं।'

हज़रत ख़ालिद ने कहा, अल्लाह की क़सम ! वह सच कहते हैं और मैंने उनकी पैरवी कर ली है।

इस पर उनके वालिद अबू उहैहा को बड़ा गुस्सा आया और उनको बहुत बुरा-भला कहा और गालियां दीं और कहा, ओ कमीने ! जहां तेरा दिल चाहता है, चला जा। अल्लाह की क़सम ! मैं तुम्हारा खाना-पीना बन्द कर दूंगा।

1. बैहक़ी, बिदाया, भाग 3, पृ० 32

हज़रत ख़ालिद ने कहा, अगर तुम बन्द कर दोगे तो अल्लाह मुझे इतनी रोज़ी ज़रूर देंगे जिससे मैं गुज़ारा कर लूंगा।

इस पर उनके वालिद ने उनको घर से निकाल दिया और अपने बेटों से कहा, तुममें से कोई इससे बात न करे, वरना मैं उसके साथ वही मामला करूंगा जो मैंने इसके साथ किया है।

चुनांचे हज़रत ख़ालिद हुज़ूर सल्ल० के पास चले आए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनका हर तरह का ख़्याल करते और यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहा करते थे।[1]

और एक और रिवायत में यह है कि हज़रत ख़ालिद मक्का के पास-पड़ोस में जाकर अपने वालिद से छुप गए और जब हुज़ूर सल्ल० के सहाबा हब्शा की ओर दोबारा हिजरत करने लगे, तो उस वक़्त उन्होंने सबसे पहले हिजरत की।[2]

उनका बाप सईद बिन आस बिन उमैया जब बीमार हुआ तो कहने लगा, अगर अल्लाह ने मुझे इस बीमारी से शिफ़ा दी, तो इब्ने अबी कबशा (यानी हुज़ूर सल्ल०) के ख़ुदा की मक्का में कभी इबादत न होने दूंगा।

इस पर हज़रत ख़ालिद ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! इसे बीमारी से शिफ़ा न दे।

चुनांचे वह उसी बीमारी में मर गया।[3]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत ज़िमाद रज़ि० को दावत देना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत ज़िमाद मक्का आए और यह क़बीला अज़्दिशनूआ में से थे और यह पागलपन और जिन्नात के असर वग़ैरह का झाड़-फूंक के ज़रिए इलाज किया करते

1. मुस्तदरक भाग 3, पृ० 248, इब्ने साद भाग 4, पृ० 94
2. इस्तीआब, भाग 1, पृ० 401
3. हाकिम, भाग 2, पृ० 349, इब्ने साद भाग 4, पृ० 95

थे। इन्होंने मक्का के कुछ मूर्खों को यह कहते हुए सुना कि मुहम्मद نعوذ بالله (नऊज़ुबिल्लाह) दीवाने हैं।

हज़रत ज़िमाद ने कहा, यह आदमी कहां है? शायद अल्लाह उसको मेरे हाथों शिफ़ा फ़रमा दे।

हज़रत ज़िमाद कहते हैं, मेरी हुज़ूर सल्ल० से मुलाक़ात हुई। मैंने उनसे अर्ज़ किया, मैं इन ऊपरी असरों का झाड़-फूंक से इलाज करता हूं, और अल्लाह जिसे चाहे, मेरे हाथों शिफ़ा अता फ़रमाते हैं, तो आओ मैं आपका इलाज करूं।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने मस्नून खुत्बे का शुरू का हिस्सा तीन बार पढ़कर सुनाया, जिसका तर्जुमा यह है कि 'बेशक तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। हम उसी की तारीफ़ करते हैं और उसी से मदद मांगते हैं। जिसको अल्लाह हिदायत दे दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे वह गुमराह कर दे, उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता। मैं इसकी गवाही देता हूं कि एक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और उसका कोई शरीक नहीं।

हज़रत ज़िमाद ने खुत्बा सुनकर कहा, अल्लाह की क़सम! मैंने काहिनों और जादूगरों और शायरों के कलाम को बहुत सुना है, लेकिन इन जैसे कलिमात कभी नहीं सुने। लाइए, हाथ बढ़ाइए। मैं आपसे इस्लाम पर बैअत होता हूं।

चुनांचे उनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बैअत फ़रमा लिया और उनसे फ़रमाया कि यह बैअत तुम्हारी क़ौम के लिए भी है।

हज़रत ज़िमाद ने अर्ज़ किया, बहुत अच्छा, मेरी क़ौम के लिए भी है। चुनांचे बाद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक टुकड़ी भेजी, जिनका हज़रत ज़िमाद की क़ौम पर गुज़र हुआ, तो टुकड़ी के अमीर ने साथियों से पूछा, क्या तुमने इस क़ौम की कोई चीज़ ली है?

तो एक आदमी ने कहा, मैंने इनका एक लोटा लिया है।

तो अमीर ने कहा, वह उनको वापस कर दो, क्योंकि यह हज़रत ज़िमाद की क़ौम है।

एक रिवायत में है कि हज़रत ज़िमाद ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि ये कलिमे आप दोबारा सुनाएं, क्योंकि ये कलिमे बलाग़त में समुद्र की गहराई को पहुंचे हुए हैं।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान अदवी कहते हैं कि हज़रत ज़िमाद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया—

मैं उमरा करने के लिए मक्का गया। वहां मैं एक मज्लिस में बैठा, जिसमें अबू जह्ल, उत्बा बिन रबीआ और उमैया बिन ख़लफ़ थे। अबू जह्ल ने कहा कि इस आदमी ने हमारी जमाअत में फूट डाल दी है। हमें बेवक़ूफ़ बनाया और हममें से जो मर चुके हैं उन्हें गुमराह क़रार दिया और हमारे ख़ुदाओं में ऐब निकाले।

उमैया ने कहा, इस आदमी के पागल होने में कोई शक नहीं। نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ ذَالِكَ नऊज़ुबिल्लाह मीनज़ालीक

हज़रत ज़िमाद कहते हैं कि उसकी बात का मेरे दिल पर बड़ा असर हुआ और मैंने अपने जी में कहा, मैं भी तो जिन्नों वग़ैरह का इलाज कर लेता हूं।

चुनांचे मैं उस मज्लिस में खड़ा हुआ और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खोजने लगा, लेकिन मुझे आप सारा दिन कहीं न मिले, यहां तक कि अगला दिन आ गया। अगले दिन फिर ढूंढने निकला, तो मुझे आप मक़ामे इब्राहीम के पीछे नमाज़ पढ़ते हुए मिल गए। मैं बैठ गया। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हो गए, तो मैं आपके क़रीब आ बैठा और मैंने कहा, 'ऐ इब्ने अब्दुल मुत्तलिब !'

आपने मेरी ओर मुतवज्जह होकर फ़रमाया, क्या चाहते हो ?

मैंने कहा, मैं जिन्नों वग़ैरह का इलाज कर लेता हूं। अगर आप पसन्द करें तो आपका भी इलाज कर दूं और आप अपनी बीमारी को बड़ा न समझें, क्योंकि मैंने आपसे भी ज़्यादा सख़्त बीमारों का इलाज किया, तो वे ठीक हो गए। मैं आपकी क़ौम के पास से आ रहा हूं। वे

---

1. मुस्लिम, बैहक़ी, बिदाया, भाग 3, पृ० 36, नसई, बग़वी, इसाबा, भाग 2, पृ० 210

आपके बारे में कुछ बुरी बातों का ज़िक्र कर रहे थे कि आप उनको बेवकूफ़ बताते हैं और आपने उनकी जमाअत में फूट डाल दी है और उनमें जो मर चुके हैं, उनको आप गुमराह क़रार देते हैं और उनके ख़ुदाओं में ऐब निकालते हैं, तो मैंने अपने दिल में सोचा कि ऐसे काम तो पागल (या आसेबज़दा) ही कर सकता है।

मेरी सारी बात सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्नून ख़ुत्बा पढ़ा, जिसका तर्जुमा यह है—

'तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। मैं उसकी तारीफ़ करता हूं और उससे मदद मांगता हूं और उस पर ईमान रखता हूं और उसी पर भरोसा करता हूं। जिसको वह हिदायत दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे वह गुमराह कर दे, उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि एक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, उसका कोई शरीक नहीं है और इस बात की गवाही देता हूं कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं।'

हज़रत जिमाद फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से ऐसा कलाम सुना कि उससे अच्छा कलाम इससे पहले मैंने कभी नहीं सुना था। मैंने आपसे इस ख़ुत्बे को दोबारा पढ़ने की गुज़ारिश की, जिस पर आपने दोबारा ख़ुत्बा पढ़ा।

फिर मैंने कहा, आप किस चीज़ की दावत देते हैं?

आपने फ़रमाया, मैं इस बात की दावत देता हूं कि तुम एक अल्लाह पर ईमान लाओ, जिसका कोई शरीक नहीं और बुतों की गुलामी से अपने आपको आज़ाद कर लो और इस बात की गवाही दो कि मैं अल्लाह का रसूल हूं।

मैंने कहा, अगर मैं ऐसा कर दूं तो मुझे क्या मिलेगा?

आपने फ़रमाया, तुम्हें जन्नत मिलेगी।

तो मैंने कहा, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि एक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, जिसका कोई शरीक नहीं है और अपनी गरदन से बुतों को उतार कर उनसे अलग होने का इज़्हार करता हूं और इस

बात की गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

फिर मैं आपके साथ रहने लग गया, यहां तक कि मैंने क़ुरआन शरीफ़ की बहुत-सी सूरतें याद कर लीं। फिर मैं अपनी क़ौम में वापस आ गया।

अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अदवी बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को एक जमाअत का अमीर बनाकर भेजा। इन लोगों को एक जगह बीस ऊंट मिले। वे उनको साथ लेकर चल पड़े।

हज़रत अली बिन अबी तालिब को पता चला कि यह ऊंट हज़रत ज़िमाद की क़ौम के हैं, तो उन्होंने फ़रमाया, ये ऊंट उनको वापस कर दो, चुनांचे वे सब ऊंट वापस कर दिए गए।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत इमरान रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना

क़ुरैश हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की बड़ी इज़्ज़त करते थे। एक बार क़ुरैश उनके पास आए और उनसे कहा—

'आप हमारी ओर से जाकर इस आदमी से बात करें, क्योंकि वह हमारे ख़ुदाओं को बुरा-भला कहता है।'

चुनांचे क़ुरैश हुसैन के साथ चले और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े के क़रीब आकर बैठ गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बड़े मियां (यानी हज़रत हुसैन) के लिए जगह ख़ाली कर दो।

हज़रत हुसैन के साहबज़ादे हज़रत इम्रान रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके बहुत से साथी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहले से जमा थे। हज़रत हुसैन ने कहा कि यह क्या हो रहा है कि हमें आपकी तरफ़ से ये बातें पहुंच रही हैं कि आप हमारे ख़ुदाओं को बुरा-भला कहते हैं, हालांकि आपके वालिद बड़े सुलझे हुए और भले आदमी थे?

1. दलाइलुन्नुबूवत, पृ० 77

इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ हुसैन ! मेरे बाप और तुम्हारे बाप दोनों जहन्नम में हैं। ऐ हुसैन ! अच्छा यह तो बताओ कि तुम कितने ख़ुदाओं की इबादत करते हो ?

हज़रत हुसैन ने कहा, मेरे सात ख़ुदा ज़मीन पर हैं और एक ख़ुदा आसमान में है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम्हें किसी क़िस्म का नुक़सान पहुंचता है, तो किस ख़ुदा को पुकारते हो ?

हज़रत हुसैन ने कहा, आसमान वाले ख़ुदा को।

आपने फ़रमाया, जब माल हलाक हो गए, तो किसको पुकारते हो ?

हज़रत हुसैन ने कहा, आसमान वाले को।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह अजीब बात है कि तुम्हारी पुकार पर वह अकेला तुम्हारी फ़रियाद सुनता है और तुम उसके साथ और ख़ुदाओं को शरीक करते हो ? क्या तुम आसमान वाले ख़ुदा की रज़ा व इजाज़त से इन देवताओं को शरीक करते हो या इन देवताओं से डरते हो कि अगर तुम उनको शरीक नहीं करोगे, तो वे तुम पर ग़ालिब आ जाएंगे।

हज़रत हुसैन ने कहा, इन दोनों बातों में से कोई भी बात नहीं है।

हज़रत हुसैन कहते हैं कि उस वक़्त मुझे पता चला कि आज तक इन जैसी बड़ी हस्ती से मैंने बात नहीं की।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'ऐ हुसैन ! मुसलमान हो जाओ, सलामती पा लोगे।'

हज़रत हुसैन ने कहा, मेरी क़ौम है और मेरा ख़ानदान है। (अगर इस्लाम लाऊंगा तो इनसे मुझे ख़तरा है) इसलिए अब मैं क्या करूं ?

आपने फ़रमाया, यह दुआ पढ़ो—

اَللّٰهُمَّ اَسْتَهْدِيْكَ لِاَرْشَدِ اَمْرِيْ وَزِدْنِيْ عِلْمًا يَّنْفَعُنِيْ .

'अल्लाहुम-म अस्तह्दियु-क लि उर्शि-द अमरी व ज़िदनी इलमन यनफ़उनी।'

(ऐ अल्लाह ! मैं अपने मामले में ज़्यादा रुश्द व हिदायत वाले रास्ते

की आपसे रहनुमाई चाहता हूं और मुझे नफ़ा पहुंचाने वाला इल्म और ज़्यादा अता फ़रमा।)

चुनांचे हज़रत हुसैन ने यह दुआ पढ़ी और उसी मज्लिस में उठने से पहले ही मुसलमान हो गए। यह देखते ही हज़रत इम्रान ने खड़े होकर अपने वालिद हज़रत हुसैन के सर और हाथों और पैरों का बोसा लिया।

जब हुज़ूर सल्ल० ने यह मंज़र देखा तो आपकी आंखों में आंसू आ गए और फ़रमाया, 'इमरान के रवैए की वजह से मुझे रोना आ गया कि उनके वालिद हुसैन जब अन्दर आए, तो वह काफ़िर थे। उस वक़्त इमरान न उनके लिए खड़े हुए और न उनकी ओर मुतवज्जह हुए, लेकिन वह मुसलमान हो गए, तो फ़ौरन उनका हक़ अदा कर दिया। इसकी वजह से मेरी आंखों में आंसू आ गए।

जब हज़रत हुसैन बाहर जाने लगे, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा से फ़रमाया—'उठो और इन्हें इनके घर तक पहुंचाओ।'

हज़रत हुसैन ज्यों ही दरवाज़े से बाहर आए, तो क़ुरैश ने देखते ही कहा, यह तो बेदीन हो गया और सारे क़ुरैश उन्हें छोड़कर इधर-उधर बिखर गए।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ऐसा सहाबी को दावत देना, जिनका नाम नहीं बयान किया गया

हज़रत अबू तमीमा हुजैमी रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी क़ौम के एक आदमी का वाक़िया बयान करते हैं कि वह आदमी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। (या हज़रत अबू तमीमा कहते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में मौजूद था, वहां एक आदमी आया) और उस आदमी ने पूछा कि आप अल्लाह के रसूल हैं? या यह पूछा कि आप मुहम्मद हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां।

1. इसाबा, पृ० 337

फिर उसने पूछा कि आप किसको पुकारते हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अकेले अल्लाह को पुकारता हूं जिसकी ख़ूबी यह है कि जब तुमको कोई नुक़्सान पहुंचे और तुम उसको पुकारो तो वह तुम्हारे नुक़्सान को दूर कर दे और जब तुम पर अकाल (क़हत साली) आ जाए और तुम उसको पुकारो, तो वह तुम्हारे लिए ग़ल्ला उगा दे और जब तुम चटयल मैदान में हो और तुम्हारी सवारी गुम हो जाए और तुम उसको पुकारो तो वह तुम्हारी सवारी तुम्हें वापस कर दे।

यह बात सुनकर वह आदमी फ़ौरन मुसलमान हो गया। फिर उसने अर्ज़ किया—'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे कुछ वसीयत फ़रमाएं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, किसी चीज़ को कभी गाली न देना।

(हकम रिवायत करने वाले को शक हुआ कि इस मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० ने शैअन (चीज़) फ़रमाया या अहदन (कोई) फ़रमाया, मतलब दोनों का एक ही है।)

वह साहब कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के वसीयत फ़रमाने के बाद मैंने आज तक कभी किसी ऊंट या किसी बकरी को भी गाली नहीं दी।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत मुआविया बिन हैदा रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना

हज़रत मुआविया बिन हैदा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया—

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं आपकी खिदमत में अब तक इसलिए नहीं आया था कि मैंने हाथों के पोरों की तायदाद से भी ज़्यादा बार क़सम खाई थी कि न मैं कभी आपके पास आऊंगा और न आपके दीन को अख़्तियार करूंगा और हज़रत मुआविया ने यह फ़रमाते हुए दोनों हाथों को एक दूसरे पर रखते हुए पोरों की तायदाद की तरफ़

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 72

इशारा फ़रमाया। (लेकिन अब अल्लाह मुझे आपके पास ले ही आया है) तो आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूं और मेरी हालत यह है कि मेरे पास थोड़ा सा इल्म है। मैं आपको अल्लाह की अज़ीम ज़ात का वास्ता देकर पूछता हूं कि हमारे रब ने आपको क्या देकर हमारे पास भेजा है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'दीन इस्लाम देकर भेजा है।'

हज़रत मुआविया ने पूछा, दीन इस्लाम क्या है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, दीन इस्लाम यह है कि तुम यह कहो कि मैंने अपने आपको अल्लाह का फ़रमांबरदार बना दिया और अल्लाह के अलावा बाक़ी सबसे मैं अलग हो गया और नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात अदा करो। हर मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिए एहतराम के क़ाबिल है। दोनों मुसलमान आपस में भाई और एक दूसरे के मददगार हैं और मुश्रिक आदमी जब मुसलमान हो गया तो अब इस्लाम के बाद अल्लाह उसके अमल को उस वक़्त कुबूल फ़रमाएंगे जब वह मुश्रिकों से जुदा हो जाए। (यानी हिजरत कर ले) मुझे क्या ज़रूरत थी कि मैं तुम्हारी कमर पकड़कर तुम लोगों को जहन्नम की आग से बचाऊं, मगर सुनो बात यह है कि मेरा रब मुझे बुलाएगा और मुझसे पूछेगा, क्या मेरा दीन तूने मेरे बन्दों तक पहुंचा दिया था, तो मैं अर्ज़ कर सकूंगा, ऐ मेरे रब! हां, मैंने पहुंचा दिया था। ग़ौर से सुनो, तुममें से जो यहां हाज़िर हैं, वे ग़ैर-हाज़िर लोगों तक मेरा दीन पहुंचाएं। ग़ौर से सुनो! तुम्हें क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने इस हाल में बुलाया जाएगा कि तुम्हारे मुंह बन्द किए होंगे (यानी तुम बात नहीं कर सकोगे) और सबसे पहले हर आदमी की रान और हथेली उसके कामों की ख़बर देगी।'

हज़रत मुआविया फ़रमाते हैं, मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! यही हमारा दीन है?

आपने फ़रमाया, हां, यही तुम्हारा दीन है। जहां भी रहकर तुम इस पर अच्छी तरह चलोगे, यह दीन तुम्हारे लिए काफ़ी हो जाएगा।[1]

---

1. इस्तीआब, भाग 1, पृ० 323, इसाबा, भाग 1, पृ० 350

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना मुनव्वरा हिजरत करने की ख़बर मिली (या आपके नुबूवत का दावा करने की ख़बर मिली) तो मुझे यह बहुत बुरा लगा। चुनांचे मैं अपने वतन से निकलकर रूम की ओर चला गया।

और कुछ रिवायतों में है कि मैं क़ैसर के पास चला गया और मेरा यह रूम में आकर क़ैसर के पास चले जाना मुझे हुज़ूर सल्ल० के हिजरत फ़रमाने से भी और ज़्यादा बुरा लगा और मैंने अपने दिल में कहा कि मुझे उस आदमी के पास जाना चाहिए। अगर वह झूठा होगा तो मेरा नुक़्सान नहीं करेगा और अगर सच्चा होगा तो मुझे पता चल जाएगा।

फ़रमाते हैं कि मैं मदीना पहुंचा तो लोग (ख़ुश होकर) कहने लगे, अदी बिन हातिम आ गए, अदी बिन हातिम आ गए।

चुनांचे मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने मुझसे तीन बार फ़रमाया, ऐ अदी बिन हातिम! मुसलमान हो जाओ, सलामती पाओगे।

मैंने कहा, मैं ख़ुद एक दीन पर चल रहा हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुम्हारे दीन को तुमसे ज़्यादा जानता हूं।

मैंने (हैरान होकर) कहा, आप मेरे दीन को मुझसे ज़्यादा जानते हैं?

आपने फ़रमाया, हां। क्या तुम फ़िरक़ा रकूसिया में से नहीं हो? (यह ईसाइयों और साबियों के बीच का फ़िरक़ा है) और तुम अपनी क़ौम का चौथाई माले ग़नीमत खा जाते हो?

मैंने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, हालांकि तुम्हारे लिए यह तुम्हारे दीन में हलाल नहीं है।

मैंने कहा, जी हां! हलाल नहीं है।

हुज़ूर सल्ल० ने इतनी ही बात की थी कि मैं आपकी बात के सामने झुक गया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, और सुनो, मैं इस बात को भी ख़ूब जानता हूं जो तुम्हें इस्लाम से रोक रही है। तुम यह कहते हो कि इनके पीछे चलने वाले तो कमज़ोर क़िस्म के वे लोग हैं जिनके पास कोई ताक़त नहीं है और तमाम अरब ने उनको अलग फेंक रखा है। (या तमाम अरब ने उनको निशाना बना रखा है) क्या तुम हियरा शहर को जानते हो?

मैंने कहा, उसे देखा तो नहीं है, अलबत्ता उसका नाम सुना ज़रूर है।

आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अल्लाह इस दीन को ज़रूर पूरा करके रहेंगे (और ऐसा अम्न व अमान हो जाएगा कि) परदा नशीन औरत तंहा हियरा से चली जाएगी और अकेले बैतुल्लाह का तवाफ़ करेगी और कोई उसके साथ न होगा और किसरा बिन हुरमुज़ के ख़ज़ाने फ़त्ह किए जाएंगे।

मैंने (हैरान होकर) कहा कि किसरा बिन हुरमुज़ के ख़ज़ाने?

आपने फ़रमाया, हां, किसरा बिन हुरमुज़ के ख़ज़ाने! और माल ख़ूब ख़र्च किया जाएगा, यहां तक कि उसे कोई लेनेवाला न होगा।

यह क़िस्सा सुनाने के बाद हज़रत अदी बिन हातिम ने फ़रमाया, देखो, यह बिल्कुल अकेली औरत हियरा से आ रही है और अकेली बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रही है और इसके साथ कोई भी नहीं है और मैं ख़ुद उन लोगों में से था जिन्होंने किसरा के ख़ज़ाने फ़त्ह किए और उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, तीसरी बात भी ज़रूर होकर रहेगी, इसलिए कि हुज़ूर सल्ल० फ़रमा चुके हैं।"[1]

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग उक़रब जगह पर थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भेजा हुआ घुड़सवारों का एक दस्ता आया, तो मेरी फूफी और कुछ लोगों को

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 66, इसाबा, भाग 2, पृ० 468

गिरफ़्तार करके ले गया और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश कर दिया।

जब ये सब आपके सामने एक पंक्ति में खड़े किए गए, तो मेरी फूफी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरा मददगार नुमाइन्दा अलग हो गया, औलाद ख़त्म हो गई, मैं ख़ुद बहुत बूढ़ी उम्र को पहुंची हुई हूं और मुझसे कोई सेवा भी नहीं हो सकती। आप मुझ पर एहसान कीजिए, अल्लाह आप पर एहसान करेगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारा मददगार नुमाइन्दा कौन है?

फूफी ने कहा, अदी बिन हातिम।

आपने फ़रमाया, वही जो अल्लाह और रसूल से भागा हुआ है।

फूफी फ़रमाती है कि आपने मुझ पर एहसान फ़रमा दिया। जब आप वापस जाने लगे तो एक आदमी आपके साथ था। हमारा ख़्याल यह है कि वह हज़रत अली थे। उन्होंने फूफी से कहा, हुज़ूर सल्ल० से सवारी मांग लो।

फूफी ने हुज़ूर सल्ल० से सवारी मांगी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इनको सवारी दे दी जाए।

हज़रत अदी फ़रमाते हैं कि वहां से फूफी मेरे पास आईं और मुझसे यह कहा, तुमने ऐसा काम किया है कि तुम्हारा बाप तो कभी न करता। (यानी तुम मुझको छोड़कर भाग गए)

और कहा, तुम्हारा दिल चाहे, या डर की वजह से न चाहे, उनके पास ज़रूर जाओ। फ़्लां उनके पास गया, उसे हुज़ूर सल्ल० से ख़ूब मिला और फ़्लां गया, उसे भी हुज़ूर सल्ल० से ख़ूब मिला।

हज़रत अदी फ़रमाते हैं (फूफी के कहने पर) मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के पास एक औरत और दो बच्चे या एक बच्चा बैठा हुआ था, जोकि आपके क़रीब बैठे हुए थे। (यों औरत और बच्चों के पास बैठने से) मैं समझ गया कि यह किसरा व क़ैसर वाली बादशाही नहीं है।

हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, ऐ अदी बिन हातिम ! किस वजह से भाग रहे हो? क्या इस वजह से भाग रहे हो कि ला इला-ह इल्लल्लाह कहना पड़ेगा? तो क्या अल्लाह के अलावा कोई माबूद है? किस वजह से भाग रहे हो? क्या इस वजह से भाग रहे हो कि अल्लाहु अक्बर कहना पड़ेगा? क्या कोई चीज़ अल्लाह से बड़ी है?

यह सुनकर मैं मुसलमान हो गया और मैंने देखा कि (मेरे इस्लाम लाने पर) आपका चेहरा खिल गया और आपने फ़रमाया, 'जिन पर अल्लाह नाराज़ हुआ, वे यहूदी हैं और जो गुमराह हुए वे ईसाई हैं।'

हज़रत अदी रज़ि० फ़रमाते हैं, फिर कुछ लोगों ने आपसे मांगा (आपके पास कुछ था नहीं, इसलिए आपने सहाबा को दूसरों पर ख़र्च करने पर उभारा) चुनांचे आपने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और फ़रमाया—'ऐ लोगो ! ज़रूरत से ज़्यादा माल ख़र्च करो, कोई एक साअ (एक पैमाना), कोई साअ से कम, कोई एक मुट्ठी, कोई मुट्ठी से कम।'

रिवायत करने वाले शोबा कहते हैं, जहां तक मुझे याद है, आपने यह भी फ़रमाया कोई एक खजूर दे, कोई खजूर का टुकड़ा। और तुममें से हर आदमी अल्लाह के सामने हाज़िर होगा और अल्लाह उससे यह पूछेंगे, जो मैं तुम्हें बता रहा हूं, क्या मैंने तुम्हें देखने और सुनने की नेमत नहीं दी थी? क्या मैंने तुम्हें माल और औलाद नहीं दी थी? तुमने आगे के लिए क्या भेजा है? यह सुनकर आदमी आगे-पीछे, दाएं-बाएं देखेगा, लेकिन कुछ न पाएगा। जहन्नम से सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात के ज़रिए से ही बचा जा सकता है, इसलिए आग से बचो और (आग से बचने के लिए देने को कुछ न हो तो) खजूर का टुकड़ा ही दे दो और अगर खजूर का टुकड़ा भी न हो, तो नर्म बात ही कर दिया करो। मुझे तुम पर भुखमरी का डर नहीं है, अल्लाह तुम्हारी ज़रूर मदद करेंगे और तुम्हें बहुत ज़्यादा देंगे और बहुत ज़्यादा जीत देंगे, यहां तक कि परदानशीन औरत अकेली हियरा और यसरिब के बीच या इससे भी ज़्यादा लंबा सफ़र किया करेगी और उसे चोरी का डर न होगा।[1]

---

1. अहमद, तिर्मिज़ी, बैहक़ी, बुख़ारी, बिदाया, भाग 5, पृ० 65

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत ज़ुल जौशन ज़िबाबी रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना

हज़रत ज़ुल जौशन ज़िबाबी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बद्र की लड़ाई से फ़ारिग़ हुए, तो मैं अपनी क़रहा नामी घोड़ी का बछेरा लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैंने कहा—

ऐ मुहम्मद ! मैं आपके पास क़रहा घोड़ी का बछेरा लेकर आया हूं, ताकि आप उसे अपने इस्तेमाल के लिए ले लें।

आपने कहा, मुझे इसकी ज़रूरत नहीं। हां, अगर तुम चाहो, तो मैं तुम्हें इसके बदले में बद्र की कवचों में से तुम्हारे पसन्द की एक कवच दे दूं।

मैंने कहा कि मैं उसको आज ऊंचे दर्जे के एक घोड़े के बदले में देने को तैयार नहीं हूं।

आपने फ़रमाया, फिर मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है।

फिर आपने फ़रमाया, ऐ ज़ुल जौशन ! तुम मुसलमान क्यों नहीं हो जाते, ताकि शुरू में इस्लाम लाने वालों में से हो जाओ ?

मैंने कहा, नहीं।

आपने फ़रमाया, क्यों ?

मैंने कहा, इसलिए कि मैं देख रहा हूं आपकी क़ौम ने आपको झुठलाया है।

आपने फ़रमाया, बद्र में उनकी हार के बारे में तुम्हें कैसी ख़बर पहुंची ?

मैंने कहा, मुझे सारी ख़बर पहुंच चुकी है।

आपने फ़रमाया, हमें तो तुम्हें अल्लाह की सीधी राह बतानी है।

मैंने कहा, मुझे मंज़ूर है, बशर्तेकि आप काबा को जीत कर वहीं रहने लग जाएं।

आपने फ़रमाया, अगर तुम ज़िंदा रहे, तो इसे भी देख लोगे।

फिर आपने एक आदमी से फ़रमाया, ओ फ्लाने ! इस आदमी का थैला ले लो और इसमें रास्ते के लिए अज्वा खजूरें डाल दो।

जब मैं वापस होने लगा, तो आपने (सहाबा से) फ़रमाया, यह आदमी बनी आमिर के सबसे अच्छे घुड़सवारों में से है।

हज़रत ज़ुल जौशन फ़रमाते हैं कि अल्लाह की क़सम, मैं ग़ौर नामी जगह में अपने घरवालों में था कि इतने में एक सवार आया। मैंने उससे पूछा, लोगों का क्या बना ?

उसने बताया, अल्लाह की क़सम ! मुहम्मद काबा पर ग़ालिब आ चुके हैं और उसमें ठहरे हुए हैं। तो मैंने यह सुनकर कहा, काश ! मैं पैदा होते ही मर जाता और मेरी मां की गोद मुझसे ख़ाली हो जाती। काश कि जिस दिन आपने फ़रमाया था, मैं उसी दिन मुसलमान हो जाता और मैं आपसे हियरा भी मांगता तो आप मुझे जागीर के तौर पर ज़रूर दे देते।

और एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया, तुम्हें इस्लाम लाने से कौन-सी चीज़ रोक रही है ?

मैंने कहा, मैं देख रहा हूं कि आपकी क़ौम ने आपको झुठलाया है और आपको (आपके शहर मक्का से) निकाल दिया है और अब आपसे लड़ाई कर रहे हैं। मैं देख रहा हूं कि अब आप क्या करेंगे ? अगर इन पर ग़ालिब आ गए तो मैं आप पर ईमान ले आऊंगा और आपकी पैरवी करूंगा और अगर वे आप पर ग़ालिब आ गए, तो आपकी पैरवी नहीं करूंगा।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत बशीर बिन ख़सासीया रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना

हज़रत बशीर बिन ख़सासीया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने

1. तबरानी, हैसमी, भाग 6, पृ० 162

मुझे इस्लाम की दावत दी, फिर आपने मुझसे फ़रमाया, तुम्हारा क्या नाम है?

मैंने कहा, नज़ीर।

आपने फ़रमाया, नहीं, बल्कि (आज से तुम्हारा नाम) बशीर है।

आपने मुझे चबूतरे पर बिठाया (जहां ग़रीब मुहाजिर बैठा करते थे) आपकी यह आदत-सी थी जब आपके पास हदिया आता, तो ख़ुद भी उसे इस्तेमाल फ़रमाते और हमें भी उसमें शरीक फ़रमा लेते और जब सदक़ा आता तो सारा हमें दे देते।

एक रात आप घर से निकले, मैं भी आपके पीछे हो लिया। आप जन्नतुलबक़ी तशरीफ़ ले गए और वहां पहुंच कर यह दुआ पढ़ी—

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ وَاِنَّا بِكُمْ لَاحِقُوْنَ وَاِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ.

'अस्सलामु अलैकुम दा-र क़ौमिम मोमिनीन व इन्ना बिकुम ल-लाहिक़ून व इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०'

और फिर फ़रमाया, तुमने बहुत बड़ी ख़ैर हासिल कर ली और बड़े शर और फ़ित्ने से बचकर तुम आगे निकल गए, फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, 'यह कौन है?'

मैंने कहा, बशीर।

आपने फ़रमाया, तुम अच्छे घोड़ों को ज़्यादा से ज़्यादा पालने वाले क़बीला रबीआ में से हो, जो यह कहते हैं कि अगर वह न होते तो ज़मीन अपने रहने वालों को लेकर उलट जाती। क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि उस क़बीला में से अल्लाह ने तुम्हारे दिल और कान और आंख को इस्लाम की ओर फेर दिया।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! बिल्कुल राज़ी हूं।

आपने फ़रमाया, तुम यहां क्यों आए हो?

मैंने कहा, मुझे इस बात का डर हुआ कि आपको कोई मुसीबत न पहुंच जाए या ज़मीन का कोई ज़हरीला जानवर न काट ले।'[1]

---

1. इब्ने असाकिर, तबरानी, बैहक़ी, मुन्तख़ब, भाग 5, पृ० 140

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ऐसे सहाबी को दावत देना, जिनका नाम नहीं बयान किया गया

क़बीला बल अदवीया के एक आदमी कहते हैं कि मुझे मेरे दादा ने अपने इस्लाम लाने का क़िस्सा इस तरह सुनाया कि मैं मदीना के इरादे से चला तो एक घाटी के पास मैंने पड़ाव डाला तो मैंने देखा कि दो आदमी आपस में बकरी का सौदा कर रहे हैं और ख़रीदार बेचने वाले से कह रहा है कि मुझसे ख़रीदने-बेचने में अच्छा मामला करो,

तो मैंने दिल में कहा, क्या यह वही आदमी हाश्मी है, जिसने लोगों को गुमराह किया है?

इतने में एक और आदमी आता हुआ नज़र आया, जिसका जिस्म बहुत ख़ूबसूरत और पेशानी फैली हुई और नाक पतली और भवें बारीक थीं और सीने के ऊपर वाले हिस्से से नाफ़ तक काले धागे की तरह से बालों की एक लकीर थी और वह दो पुरानी चादरों में थे। हमारे क़रीब आकर उन्होंने 'अस्सलामु अलैकुम' कहा। हमने उनको सलाम का जवाब दिया। उनके आते ही ख़रीदार ने पुकारकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप इस बकरी वाले से फ़रमा दें कि वह मुझसे मामला अच्छी तरह करे।

आपने हाथ उठाकर फ़रमाया, तुम लोग अपने मालों के ख़ुद मालिक हो। मैं चाहता हूं कि क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने इस तरह हाज़िरी दूं कि तुममें से कोई भी मुझसे अपने माल या जान या इज़्ज़त के बारे में किसी क़िस्म के नाहक़ ज़ुल्म की मांग न कर रहा हो। अल्लाह उस आदमी पर रहम फ़रमाए जो ख़रीदने और बेचने में, लेने और देने में नर्मी का मामला करे और क़र्ज़ के अदा करने और क़र्ज़ की मांग करने में नर्मी करे।

फिर वह आदमी चला गया, फिर मैंने दिल में कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं उस आदमी के हालात अच्छी तरह मालूम करूंगा, क्योंकि उसकी बातें अच्छी हैं।

मैं आपके पीछे हो लिया और मैंने आवाज़ दी, ऐ मुहम्मद !

आप मेरी ओर पूरी तरह मुड़कर मुतवज्जह हुए और फ़रमाया, तुम क्या चाहते हो ?

मैंने कहा, आप वही हैं, जिसने (नऊज़ुबिल्लाहि) लोगों को गुमराह किया और उन्हें हलाक कर दिया और उनके बाप-दादा, जिन ख़ुदाओं की इबादत करते थे, उनसे रोक दिया ?

आपने फ़रमाया, ये सारे काम तो अल्लाह ने किए हैं।

मैंने कहा, आप किस चीज़ की दावत देते हैं ?

आपने फ़रमाया, मैं अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की दावत देता हूं।

मैंने कहा, आप इस दावत में क्या कहते हैं ?

आपने फ़रमाया, तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और मैं मुहम्मद अल्लाह का रसूल हूं और अल्लाह ने जो कुछ मुझ पर उतारा है, उस पर ईमान लाओ और लात और उज़्ज़ा का इंकार कर दो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो।

मैंने कहा, ज़कात क्या चीज़ है ?

आपने फ़रमाया, हमारे मालदार अपने माल में से कुछ हमारे ग़रीबों को दें।

मैंने कहा, आप जिन चीज़ों की दावत देते हैं, वे तो बहुत अच्छी हैं।

मेरे दादा कहते हैं कि इस मुलाक़ात और बातचीत से पहले मेरे दिल की यह हालत थी कि धरती का कोई आदमी मुझे आपसे ज़्यादा नफ़रत के क़ाबिल नहीं था, लेकिन इस बातचीत के बाद मेरे दिल की यह हालत हो गई कि आप मुझे अपनी औलाद और मां-बाप और तमाम लोगों से ज़्यादा प्रिय हो गए और एकदम मेरी ज़ुबान से निकला कि मैं पहचान गया।

आपने फ़रमाया, तुम पहचान गए ?

मैंने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया कि तुम इस बात की गवाही देते हो कि अल्लाह

के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं मुहम्मद अल्लाह का रसूल हूं और जो कुछ अल्लाह ने मुझ पर नाज़िल किया है, उस पर ईमान लाते हो।

मैंने कहा, जी हां। ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरा ख़्याल यह है कि फ़्लां चश्मे पर जाऊं जिस पर बहुत से लोग ठहरे हुए हैं और जिन बातों की आपने मुझे दावत दी है, मैं जाकर उनको इन बातों की दावत दूं। मुझे उम्मीद है, वे सब आपकी पैरवी कर लेंगे।

आपने फ़रमाया, हां जाओ, उनको दावत दो।

(चुनांचे उन्होंने वहां जाकर सबको दावत दी) और उस चश्मे वाले तमाम मर्द और औरत मुसलमान हो गए।

(ख़ुश होकर) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके सर पर शफ़क़त का हाथ फेरा।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू नज्जार के एक आदमी के पास पूछने के लिए तशरीफ़ ले गए।

आपने उनसे फ़रमाया, ऐ मामूं जान ! आप ला इला-ह इल्लल्लाहु لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ पढ़ लें।

उन्होंने कहा, मैं मामूं हूं या चचा ?

आपने फ़रमाया, आप चचा नहीं, मामूं हैं। ला इला-ह इल्लल्लाह لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ पढ़ लें।

उन्होंने कहा, क्या यह मेरे लिए बेहतर है ?

आपने फ़रमाया, हां।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक यहूदी लड़का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत किया करता था, वह बीमार हो गया। आप उसके पूछने के लिए तशरीफ़ ले गए और उसके सिरहाने बैठ गए। फिर उससे फ़रमाया, मुसलमान हो जाओ।

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 18
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 305

उसका बाप भी वहीं मौजूद था। वह अपने बाप की ओर देखने लगा। बाप ने कहा, अबुल क़ासिम (यानी हुज़ूर सल्ल०) की मान लो। वह मुसलमान हो गया।

आप यह फ़रमाते हुए बाहर तशरीफ़ ले आए, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने उसे दोज़ख़ की आग से बचाया।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी से फ़रमाया, मुसलमान हो जाओ, सलामती पा लोगे।

उसने कहा, मेरा दिल नहीं चाहता।

आपने फ़रमाया, दिल न चाहे, तब भी (मुसलमान हो जाओ।)[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत अबू क़हाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देना

हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं, फ़तहे मक्का के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू क़हाफ़ा से फ़रमाया, आप मुसलमान हो जाएं, सलामती पा लेंगे।[3]

हज़रत अस्मा रज़ि० फ़रमाती हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में दाखिल हुए और इत्मीनान के साथ मस्जिद में बैठ गए, तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु (अपने वालिद) हज़रत अबू क़हाफ़ा को लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए। जब आपने उनको (आते हुए) देखा, तो फ़रमाया, ऐ अबूबक्र! बड़े मियां को वहीं क्यों नहीं रहने दिया? मैं उनके पास चलकर जाता।

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! उन पर ज़्यादा हक़ बनता है कि वह आपके पास चलकर आएं, इसके मुक़ाबले में कि आप इनके पास चलकर तशरीफ़ ले जाते।

---

1. बुख़ारी, अबू दाऊद, फ़वाइद (भाग 1, पृ० 124)
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 305
3. हैसमी, भाग 5, पृ० 305

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनको अपने सामने बिठाया और उनके दिल पर अपना हाथ रखकर फ़रमाया, आप मुसलमान हो जाएं, सलामती पा लेंगे।

चुनांचे हज़रत अबू कुहाफ़ा मुसलमान हो गए और शहादत का कलिमा पढ़ लिया।

जब अबू क़ुहाफ़ा हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लाए गए, तो उनके सर और दाढ़ी के बाल सग़ामा बूटी की तरह सफ़ेद थे। आपने फ़रमाया, इस सफ़ेदी को बदल दो, लेकिन काला ख़िज़ाब न करना।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उन मुश्रिकों को एक-एक करके दावत देना जो मुसलमान नहीं हुए

हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, सबसे पहले दिन जो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहचाना उसका क़िस्सा यों हुआ कि मैं और अबू जह्ल बिन हिशाम मक्का की एक गली में चले जा रहे थे कि अचानक हमारी हुज़ूर सल्ल० से मुलाक़ात हो गई। हुज़ूर सल्ल० ने अबू जह्ल से फ़रमाया 'ऐ अबुल हकम! आओ अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़। मैं तुम्हें अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूं।'

अबू जह्ल ने जवाब दिया, ऐ मुहम्मद! क्या तुम हमारे ख़ुदाओं को बुरा-भला कहने से बाज़ नहीं आओगे? आप यही चाहते हैं कि हम गवाही दे दें कि आपने (अल्लाह का) पैग़ाम पहुंचा दिया। चलो, हम गवाही दिए देते हैं कि आपने पैग़ाम पहुंचा दिया। अल्लाह की क़सम! अगर मुझे मालूम होता कि जो कुछ आप कह रहे हैं, वह हक़ है, तो आपकी पैरवी ज़रूर करता।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० वापस तशरीफ़ ले गए। इसके बाद अबू जह्ल मेरी ओर मुतवज्जह होकर कहने लगा, अल्लाह की क़सम! मैं ख़ूब जानता हूं कि जो कुछ यह कह रहे हैं, वह हक़ है, लेकिन इनकी

1. इब्ने साद, भाग 5, पृ० 45।

बात मैं इस वजह से नहीं मानता कि (वह बनी क़ुसई में से हैं और) बनी कुसई ने कहा कि बैतुल्लाह की दरबानी हमारे ख़ानदान में होगी, हमने कहा ठीक है। फिर उन्होंने कहा, हाजियों को पानी पिलाने की ख़िदमत हमारे ख़ानदान में होगी, हमने कहा, ठीक है। फिर उन्होंने कहा, मज्लिसे शूरा का इन्तिज़ाम हमारे ज़िम्मे होगा। हमने कहा, ठीक है। फिर उन्होंने कहा, लड़ाई का झंडा हमारे ख़ानदान में होगा। हमने कहा, ठीक है। फिर उन्होंने खाना खिलाया, यहां तक कि जब खाना खिलाने में हम और वह बराबर हो गए, तो वह कहने लगे कि हम में से एक नबी है। अल्लाह की क़सम ! उनकी यह बात मैं कभी न मानूंगा।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं—

वलीद बिन मुग़ीरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। आपने उसे कुरआन पढ़कर सुनाया। देखने में वह कुरआन सुनकर नर्म पड़ गया।

अबू जह्ल को यह ख़बर पहुंची। वलीद के पास आकर उसने कहा, ऐ चचा जान ! आपकी क़ौम आपके लिए माल जमा करने का इरादा कर रही है।

वलीद ने पूछा, किसलिए ?

अबू जह्ल ने कहा, आपको देने के लिए, क्योंकि आप मुहम्मद के पास इसलिए गए थे ताकि आपको उनसे कुछ मिल जाए।

वलीद ने कहा, कुरैश को ख़ूब मालूम है कि मैं उनमें सबसे ज़्यादा मालदारों में से हैं। (मुझे मुहम्मद से माल लेने की ज़रूरत नहीं है।)

अबू जह्ल ने कहा, तो फिर आप मुहम्मद के बारे में ऐसी बात कहें जिससे आपकी क़ौम को यह पता चल पाए कि आप मुहम्मद के मुन्किर हैं (उनको नहीं मानते हैं)।

वलीद ने कहा, मैं क्या करूं ? अल्लाह की क़सम, तुममें से कोई आदमी मुझसे ज़्यादा शेर (काव्य) और शेर के रजज़ और क़सीदे को

1. बैहक़ी, बिदाया, भाग 3, पृ० 64, कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 129

और जिन्नात के अशआर को जानने वाला नहीं है। अल्लाह की क़सम ! वह (मुहम्मद) जो कुछ कहते हैं, वह उनमें से किसी चीज़ से मिलती-जुलती नहीं है और अल्लाह की क़सम ! वह जो कुछ फ़रमाते हैं, उसमें बड़ी मिठास (और मज़ा) और बड़ी ख़ूबसूरती और खिंचाव है और जो कुछ वह फ़रमाते हैं, वह ऐसा ज़ोरदार पेड़ है, जिसका ऊपर का हिस्सा ख़ूब फल देता है और नीचे का हिस्सा ख़ूब हरा-भरा है और आपका कलाम हमेशा ऊपर रहता है। कोई और कलाम उससे ऊपर नहीं हो सकता और आपका कलाम अपने को नीचे वाले कलामों को तोड़कर रख देता है।

अबूजह्ल ने कहा, आपकी क़ौम आपसे उस वक़्त तक राज़ी नहीं होगी, जब तक आप उनके ख़िलाफ़ कुछ कहेंगे नहीं।

वलीद ने कहा, अच्छा, ज़रा ठहरो। मैं इस बारे में कुछ सोचता हूं। कुछ देर सोचकर वलीद ने कहा। उनका (मुहम्मद का) कलाम एक जादू है, जिसे वह दूसरों से सीख-सीख कर बयान करते हैं। इस पर क़ुरआन मजीद की ये आयतें उतरीं—

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۙ وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا ۙ وَبَنِينَ شُهُودًا ۙ

'छोड़ दे मुझको और उसको जिसको मैंने बनाया अकेला और दिया मैंने माल उसको फैला कर और बेटे मज्लिस में बैठने वाले।'[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दो आदमियों को दावत देना

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बीवी हिन्दा को अपने पीछे सवारी पर बिठा कर अपने खेत की तरफ़ चले। मैं भी दोनों के आगे-आगे चल रहा था और मैं नव-उम्र लड़का अपनी गधी पर सवार था कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास पहुंचे।

1. इस्हाक़ बिन राहवैह, बैहक़ी, बिदाया, भाग 3, पृ० 60, इब्ने कसीर भाग 4, पृ०443

अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ मुआविया ! नीचे उतर जाओ ताकि मुहम्मद सवार हो जाएं।

चुनांचे मैं गधी से उतर गया और उस पर हुज़ूर सवार हो गए। आप हमारे आगे-आगे कुछ दूर चले, फिर हमारी ओर मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ अबू सुफ़ियान बिन हर्ब ! ऐ हिन्द बिन्त उत्बा ! अल्लाह की क़सम ! तुम ज़रूर मरोगे, फिर तुमको दोबारा ज़िंदा किया जाएगा, फिर नेक लोग जन्नत में जाएंगे और बुरे दोज़ख़ में। और मैं तुमको बिल्कुल सही और हक़ बात बता रहा हूं और तुम दोनों ही सबसे पहले (अल्लाह के अज़ाब) से डराए गए हो, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ قَالَتَا اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ۔

'हामीम० तंज़ीलुम मिनर रहमानिर्रहीम०' से लेकर 'क़ालता आतैना ताइईन' तक आयतें तिलावत फ़रमाई, तो उनसे अबू सुफ़ियान ने कहा—

'ऐ मुहम्मद ! क्या आप अपनी बात कहकर फ़ारिग हो गए?'

आपने फ़रमाया, जी हां। और हुज़ूर सल्ल० गधी से नीचे उतर आए और मैं उस पर सवार हो गया।

हिन्द ने अबू सुफ़ियान की ओर मुतवज्जह होकर कहा, क्या इस जादूगर के लिए तुमने मेरे बेटे को गधी से उतारा था?

अबू सुफ़ियान ने कहा, 'नहीं, अल्लाह की क़सम ! वह जादूगर और झूठे आदमी नहीं हैं।'[1]

हज़रत यज़ीद बिन रूमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे-पीछे चले और दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए।

हुज़ूर सल्ल० ने दोनों पर इस्लाम को पेश फ़रमाया और क़ुरआन पढ़कर सुनाया और दोनों को इस्लाम के हुक़ूक़ बताए और इन दोनों से

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 94, हैसमी भाग 6, पृ० 20

अल्लाह की तरफ़ से इकराम व एज़ाज़ मिलने का वायदा फ़रमाया। चुनांचे वे दोनों ईमान लाए और दोनों ने तस्दीक़ की।

हज़रत उस्मान ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अभी शाम देश से चला आ रहा हूं। (इस सफ़र में एक अजीब वाक़िया पेश आया कि) हम लोग मआन और जरक़ा के बीच में ठहरे हुए थे और हमारी हालत सोने वालों जैसी थी कि अचानक किसी पुकारने वाले ने ऊंची आवाज़ से पुकार कर कहा, ऐ सोने वालो उठो, क्योंकि मक्का में अहमद का ज़हूर हो गया है। चुनांचे हम मक्का में आए तो आते ही आपकी ख़बर हमने सुनी और हज़रत उस्मान शुरू ज़माने में ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दारे अरक़म में तशरीफ़ ले जाने से पहले मुसलमान हो गए थे।[1]

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, दारे अरक़म के दरवाज़े पर हज़रत सुहैब बिन सिनान रज़ियल्लाहु अन्हु से मेरी मुलाक़ात हुई और उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दारे अरक़म में तशरीफ़ रखते थे।

मैंने हज़रत सुहैब से कहा, किस इरादे से आए हो?

उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम किस इरादे से आए हो?

मैंने कहा मैं इस इरादे से आया हूं कि मुहम्मद की ख़िदमत में जाकर उनकी बातें सुनूं।

उन्होंने कहा, मेरा भी यही इरादा है।

चुनांचे हम दोनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने हम पर इस्लाम को पेश फ़रमाया, हम दोनों मुसलमान हो गए। फिर उस दिन शाम तक वहीं ठहरे रहे। फिर वहां से हम छिपकर निकले।

हज़रत अम्मार रज़ि० और हज़रत सुहैब रज़ि० तीस से कुछ ज़्यादा मुसलमानों के बाद मुसलमान हुए।[2]

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 55
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 347

हज़रत ख़ुबैब बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत असद बिन ज़ुरारह और ज़कवान बिन अब्द क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हुमा मदीना से मक्का उत्बा बिन रबीआ से अपना कोई फ़ैसला करवाने के लिए चले। वहां आकर दोनों ने नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कुछ सुना। वे दोनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए।

आपने इन दोनों पर इस्लाम पेश फ़रमाया और उनको क़ुरआन पढ़कर सुनाया। वे दोनों मुसलमान हो गए और उत्बा बिन रबीआ के क़रीब भी न गए और वैसे ही मदीना को वापस चले गए और ये दोनों सबसे पहले मदीना में इस्लाम को लेकर पहुंचे।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दो से ज़्यादा की जमाअत पर इस्लाम की दावत पेश करना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ और अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और बनू अब्दुद्दार के एक आदमी और बनुल असद के अबुल बख़्तरी और अस्वद बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन असद और ज़मआ बिन अस्वद और वलीद बिन मुग़ीरह और अबू जह्ल बिन हिशाम और अब्दुल्लाह बिन अबी उमैया और उमैया बिन ख़ल्फ़ और आस बिन वाइल और नुबैह बिन हज्जाज सह्मी और मुनब्बह बिन हज्जाज सह्मी और कम व बेश सबके सब सूरज डूबने के बाद काबा के पीछे की ओर जमा हुए और आपस के मश्विरे से यह बात तै की कि मुहम्मद को आदमी भेजकर बुलाओ और उनसे खुलकर बात करो और उनसे इतना झगड़ो कि लोग समझ लें कि हमने पूरी कोशिश की है।

चुनांचे एक आदमी को यह पैग़ाम देकर हुज़ूर सल्ल० के पास भेजा कि आपकी क़ौम के सरदार आपसे बात करने के लिए यहां जमा हैं।

आप जल्दी से उनके पास इस ख़्याल से तशरीफ़ ले आए कि

1. इब्ने साद भाग 3, पृ० 608

शायद इस्लाम क़ुबूल करने के बारे में उन लोगों की राय बन गई है, क्योंकि आप उनके ईमान लाने के लिए बेचैन रहा करते थे और दिल से चाहते थे कि उनको हिदायत मिल जाए और उनका नुक़्सान और बिगाड़ आप पर बोझ था।

आप उनके पास आकर बैठ गए, तो उन्होंने कहा, ऐ मुहम्मद ! हमने तुमको आदमी भेजकर इसलिए बुलाया है, ताकि तुमको समझाने में हम अपना सारा ज़ोर लगा दें और लोग समझ जाएं कि हमने समझाने की पूरी कोशिश कर ली है। अल्लाह की क़सम ! हमें पूरे अरब में कोई आदमी ऐसा नज़र नहीं आता, जिसने अपनी क़ौम को इन परेशानियों में डाल दिया हो, जिनमें आपने अपनी क़ौम को डाल दिया है। आपने इनके बाप-दादा को बुरा-भला कहा और इनके दीन में ऐब निकाले और इनको बेवक़ूफ़ बताया और इनके ख़ुदाओं को बुरा-भला कहा और इनकी जमाअत में फूट डाल दी। हमसे ताल्लुक़ात बिगाड़ने वाला हर बुरा काम किया। अगर आपका इन बातों से मक़्सद माल हासिल करना है, तो हम आपके लिए इतना माल जमा कर देंगे कि आप हममें सबसे ज़्यादा मालदार हो जाएंगे और अगर हमारे सरदार बनना चाहते हैं तो हम आपको अपना सरदार बना लेंगे और अगर आप बादशाह बनना चाहते हैं, तो हम आपको अपना बादशाह बना लेंगे और अगर यह जो कुछ हो रहा है, सब कुछ जिन्नात के असर से हो रहा है, जिसके सामने आप बेबस हैं, तो हम इसका इलाज कराने के लिए सारी दौलत ख़र्च करते रहेंगे, यहां तक कि या तो आप ठीक हो जाएं, या आपके आगे के इलाज में हम मजबूर समझे जाएं, यानी यह पता चल जाए कि यह लाइलाज मर्ज़ है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया, जितनी बातें तुम कह रहे हो, इनमें से कोई बात भी मेरे दिल में नहीं है। जिस दावत को लेकर मैं तुम्हारे पास आया हूं, उससे मक़्सद न तो तुम्हारा माल हासिल करना है, न तुम्हारा सरदार या बादशाह बनना है, बल्कि अल्लाह ने मुझे तुम्हारी तरफ़ रसूल बनाकर भेजा है और मुझ पर एक किताब उतारी है और मुझे इस बात का हुक्म दिया है कि तुममें से जो

मान जाए, उसे ख़ुशख़बरी सुनाऊं और जो न माने, उसे अल्लाह के अज़ाब से डराऊं और मैंने तुम्हें अल्लाह के पैग़ाम पहुंचा दिए और मैं तुम्हारा भला चाहता हूं। जो दावत लेकर मैं तुम्हारे पास आया हूं, अगर तुम उसे क़ुबूल करोगे, तो दुनिया और आख़िरत में तुम्हारा हिस्सा है और अगर क़ुबूल नहीं करोगे, तो मैं अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार करूंगा, यहां तक कि वही मेरे और तुम्हारे बीच फ़ैसला करे।

यह सुनकर क़ुरैश के सरदारों ने कहा, ऐ मुहम्मद ! जो बातें हमने आपको पेश की हैं, अगर वे आपको क़ुबूल नहीं हैं, तो आपको ख़ूब मालूम है कि दुनिया में कोई हमसे ज़्यादा तंग शहर वाला और हमसे ज़्यादा कम माल वाला और हमसे ज़्यादा सख़्त ज़िंदगी वाला नहीं है, तो आपके जिस रब ने यह दावत देकर भेजा है, उससे आप हमारे लिए यह सवाल करें कि वह इन पहाड़ों को हमसे दूर हटा दे, जिनकी वजह से हमारे शहर तंग पड़ गए हैं और हमारे शहरों को फैला हुआ बना दें और यहां शाम व इराक़ जैसी नहरें चला दें। और जो हमारे बाप-दादा मर चुके हैं, उनको दोबारा ज़िंदा कर दे, उनमें से ख़ास तौर से क़ुसई बिन किलाब को भी ज़िंदा करे, क्योंकि वह सच्चे बुज़ुर्ग थे। फिर हम उनसे पूछेंगे कि जो कुछ आप कह रहे हैं, वह हक़ है या ग़लत है। जितनी बातों की हमने आपसे मांग की है, अगर आप उनको पूरा कर देंगे और हमारे बाप-दादा आपकी तस्दीक़ कर देंगे, तो हम भी आपको सच्चा मान लेंगे और इससे हमें पता चलेगा कि अल्लाह के यहां आपका बड़ा दर्जा है और जैसे आप कह रहे हैं, वाक़ई उसने आपको रसूल बनाकर भेजा है।

इस पर आपने उनसे फ़रमाया, मुझे इन कामों के लिए नहीं भेजा गया है और मैं तुम्हारे पास वही बातें लेकर आया हूं, जिनको देकर अल्लाह ने मुझे भेजा है और जो कुछ देकर मुझे तुम्हारी ओर भेजा गया है, वह सब मैं तुम्हें पहुंचा चुका हूं। अगर तुम उन्हें क़ुबूल कर लोगे, तो तुम्हें दुनिया और आख़िरत में ख़ुशक़िस्मती मिलेगी और अगर तुम क़ुबूल न करोगे, तो मैं अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार करूंगा, यहां तक कि वह मेरे और तुम्हारे बीच फ़ैसला करे।

इस पर उन सरदारों ने कहा, अगर आप हमारे लिए ये बातें करने को तैयार नहीं हैं, तो कम से कम अपने लिए इतना तो करो कि अपने रब से कहो कि वह एक फ़रिश्ता भेज दे जो आपकी बातों की तस्दीक़ करे और आपकी ओर से हमें जवाब दिया करे और अपने रब से कहो कि वह आपके लिए बाग़ और ख़ज़ाने और सोने-चांदी के महल बना दे, जिसकी वजह से आपको इन बातों की तक्लीफ़ न उठानी पड़े, जिनको हम देख रहे हैं कि आपको बाज़ारों में जाकर हमारी तरह रोज़ी खोजनी पड़ती है। अगर आपका रब ऐसा कर देगा, तो इससे हमें पता चलेगा कि आपका अपने रब के यहां बड़ा दर्जा है और जैसे आप कह रहे हैं, वाक़ई आप उसके रसूल हैं।

आपने फ़रमाया, न ही मैं यह करूंगा और न ही अपने रब से मैं यह मांगूगा और न ही इस काम के लिए मुझे तुम्हारे पास भेजा गया है। अल्लाह ने तो मुझे ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, तो जो बातें लेकर मैं तुम्हारे पास आया हूं अगर तुम उनको कुबूल कर लोगे, तो दुनिया और आख़िरत में तुम्हारा नसीबा है और अगर कुबूल नहीं करोगे, तो मैं अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार करूंगा, यहां तक कि वही मेरे और तुम्हारे दर्मियान फ़ैसला कर दे।

इस पर उन सरदारों ने कहा, आप हम पर आसमान गिरा दें, जैसे कि आपका कहना है कि अगर आपका रब चाहे तो वह ऐसा कर सकता है, क्योंकि जब तक आप ऐसा नहीं करेंगे, हम हरगिज़ आपको सच्चा नहीं मानेंगे।

उनसे आपने फ़रमाया, यह तो अल्लाह के अख़्तियार में है, वह अगर चाहे तो तुम्हारे साथ ऐसा कर भी दे।

उन सरदारों ने कहा, क्या आपके रब को इसका इल्म नहीं था कि हम आपके पास बैठेंगे और हम आपसे ये सवाल और मांग करेंगे? तो आपको वह पहले से ही यह सब कुछ बता देता और हमारे जवाब आपको सिखा देता और आपको यह भी बता देता कि अगर हम आपकी लाई हुई बातों को कुबूल नहीं करेंगे, तो वह हमारे साथ क्या मामला करेगा? हमें तो यह ख़बर पहुंची है कि आपको यह सब कुछ

यमामा का एक आदमी सिखाता है, जिसे रहमान कहा जाता है। अल्लाह की क़सम है! हम हरगिज़ रहमान पर ईमान नहीं लाएंगे और ऐ मुहम्मद! हमने आपके सामने अपनी तमाम बातें रख दी हैं और आपके लिए कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी, अल्लाह की क़सम अब हम आपका पीछा नहीं छोड़ेंगे और जो कुछ आपने हमारे साथ किया है, हम उसका बदला लेकर रहेंगे, यहां तक कि या तो हम आपको ख़त्म कर दें या आप हमें ख़त्म कर दें।

इनमें से एक बोला कि हम फ़रिश्तों की इबादत करते हैं जोकि अल्लाह की बेटियां हैं। (नऊज़ुबिल्लाह) और दूसरे ने कहा, हम आपको उस वक़्त सच्चा मानेंगे जब आप हमारे सामने अल्लाह और फ़रिश्तों को (नऊज़ुबिल्लाह) लाकर खड़ा करेंगे।

जब वे यह बातें करने लगे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां से खड़े हो गए और आपके साथ आपकी फूफी आतिका बिन्त अब्दुल मुत्तलिब का बेटा अब्दुल्लाह बिन अबी उमैया बिन मुग़ीरा बिन अब्दुल्लाह बिन उमर बिन मख़्ज़ूम भी खड़ा हुआ और उसने आपसे कहा कि—

ऐ मुहम्मद! आपकी क़ौम ने आपके सामने माल और सरदारी और बादशाही की पेशकश की, लेकिन आपने इन सबको ठुकरा दिया, फिर उन्होंने आपसे अपने फ़ायदे के कुछ काम करवाने चाहे, ताकि उनको इन कामों के ज़रिए से अल्लाह के यहां आपके दर्जे का पता चल जाए, लेकिन आपने वह भी न किया, फिर उन्होंने आपसे यह मांग की कि आप इनको जिस अज़ाब से डराते हैं, वह अज़ाब जल्दी ले आएं। अल्लाह की क़सम! मैं आप पर तब ईमान ले आऊंगा जब आप आसमान तक सीढ़ी लगा कर उस पर चढ़ने लग जाएं और मैं आपको देखता रहूं, यहां तक कि आप आसमान तक पहुंच जाएं और वहां से अपने साथ खुली हुई किताब लेकर उतरें और आपके साथ चार फ़रिश्ते भी हों, जो इस बात की गवाही दें कि आप वैसे ही हैं जैसे कि आपका दावा है और अल्लाह की क़सम! आप अगर इस तरह कर भी दें, तो भी मेरा ख़्याल यही है कि फिर भी मैं आपको सच्चा नहीं मानूंगा।

यह कहकर वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से चला गया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सललम वहां से अपने घर तशरीफ़ ले आए।

दो बातों की वजह से आपको बड़ा ग़म और अफ़सोस था—

एक तो यह कि आप उनके बुलाने पर जिस चीज़ की उम्मीद लेकर गए थे, वह पूरी न हुई।

दूसरे यह कि आपने देखा कि वे आपसे दूर होते जा रहे हैं।[1]

हज़रत महमूद बिन लबीद क़बीला बनू अब्दुल अशहल वाले बयान करते हैं कि जब अबुल हैसर अनस बिन राफ़ेअ (मदीना से) मक्का आया और उसके साथ बनू अब्दुल अशह्ल के कुछ नवजवान भी थे जिनमें अयास बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे और ये लोग अपनी क़ौम क़बीला ख़ज़रज की ओर से क़ुरैश के साथ दोस्ती और मदद व समझौता करना चाहते थे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके आने की ख़बर सुनी। आप उनके पास तशरीफ़ लाए और उनके पास बैठकर फ़रमाया—'तुम जिस काम के लिए आए हो, उससे बेहतर बात तुमको न बता दूं?'

उन्होंने कहा, वह कौन-सी बात है?

आपने फ़रमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूं। मुझे अल्लाह ने बन्दों की ओर भेजा है। मैं उनको अल्लाह की दावत देता हूं कि वे अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी भी चीज़ को शरीक न करें और अल्लाह ने मुझ पर किताब उतारी।

फिर आपने इस्लाम की ख़ूबियों का ज़िक्र किया और उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया।

हज़रत अयास बिन मुआज़ जो नव-उम्र लड़के थे, उन्होंने कहा—

'ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की क़सम, तुम जिस काम के लिए आए हो, वाक़ई यह उससे बेहतर है।'

---

1. इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 62, बिदाया, भाग 3, पृ० 50

तो अबुल हैसर अनस बिन राफ़ेअ ने कंकरियों की एक मुट्ठी लेकर हज़रत अयास के चेहरे पर मारी और कहा, इस बात को छोड़ो। मेरी जान की क़सम ! हम तो किसी और काम के लिए आए हैं।

हज़रत अयास ख़ामोश हो गए और हुज़ूर सल्ल० वहां से खड़े होकर तशरीफ़ ले गए और ये लोग मदीना वापस चले गए। फिर औस और ख़ज़रज के बीच बुआस की लड़ाई शुरू हो गई जिसके कुछ ही दिनों के बाद हज़रत अयास का इंतिक़ाल हो गया।

महमूद बिन लुबैद कहते हैं, मेरी क़ौम के जो लोग हज़रत अयास के इंतिक़ाल के वक़्त उनके पास मौजूद थे, उन्होंने मुझे बताया कि वे लोग उनसे 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' 'अल्लाहु अक्बर' और 'सुबहानल्लाह' मरते दम तक सुनते रहे और इस बात में उन्हें कोई शक नहीं है कि उनका इंतिक़ाल इस्लाम की हालत में हुआ है।

जिस मज्लिस में उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस्लाम की दावत को सुना था, उसी मज्लिस में इस्लाम को क़ुबूल कर लिया था।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मज्मा के सामने दावत को पेश करना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह ने यह आयत उतारी—

وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ

'और डर सुना दे अपने क़रीब के रिश्तेदारों को।'

तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और मर्वः पहाड़ी पर चढ़ गए और आपने पुकारकर कहा—

'ऐ आले फ़ह्र !' तो क़ुरैश आपके पास आ गए। अबू लहब बिन अब्दुल मुत्तलिब ने कहा, 'यह फ़ह्र क़बीला आपके पास हाज़िर है, इसलिए आप फ़रमाएं क्या कहना चाहते हैं ?'

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 11, हैसमी, भाग 36, इसाबा, भाग, पृ० 9।

आपने फ़रमाया, ऐ आले ग़ालिब ! तो फ़ह्र की औलाद में से बनू मुहारिब और बनू हारिस वापस चले गए।

आपने फ़रमाया, ऐ आले लुई बिन ग़ालिब ! तो बनी तैम अल-अदरम बिन ग़ालिब वापस चले गए।

आपने फ़रमाया, ऐ आले काब बिन लुई, तो बनू आमिर बिन लुई वापस चले गए।

फिर आपने फ़रमाया, ऐ आले मुर्रा बिन काब, तो बनी अदी बिन काब और बनू सह्म और बनू जुम्ह बिन अम्र बिन हुसैस बिन काब बिन लुई वापस चले गए।

फिर आपने फ़रमाया, ऐ आले किलाब बिन मुर्रा !' तो बनू मख़्ज़ूम बिन यक़ज़ा बिन मुर्रा और बने तैय बिन मुर्रा वापस चले गए।

फिर आपने फ़रमाया, ऐ आले क़ुसई ! तो बनू ज़ोहरा बिन किलाब वापस चले गए।

फिर आपने फ़रमाया, ऐ आले अब्दे मुनाफ़ ! तो बनू अब्द बिन क़ुसई और बनू असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन क़ुसई और बनू अब्द बिन क़ुसई वापस चले गए।

अबू लहब ने कहा, यह अबू अब्द मुनाफ़ आपके पास हाज़िर हैं। आप फ़रमाएं, क्या कहते हैं?

तो आपने फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराऊं और आप लोग ही क़ुरैश में से मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं और मेरा अल्लाह के सामने कोई अख़्तियार नहीं चलता है और न मैं आख़िरत में तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूं, जब जक कि तुम ला इला-ह इल्लल्लाहु का इक़रार न कर लो और जब तमु इसका इक़रार कर लोगे, तो इस कलिमा की वजह से तुम्हारे रब के सामने तुम्हारे लिए गवाही दे सकूंगा और इसकी वजह से तमाम अरब तुम्हारे इताअत गुज़ार और फ़रमांबरदार हो जाएंगे और तमाम अजम तुम्हारी मान कर चलेंगे।

इस पर अबू लहब बोला, (नऊज़ुबिल्लाह) तू बर्बाद हो जाए, क्या

इसीलिए हम लोगों को बुलाया था ? इस पर अल्लाह ने 'तब्बत यदा अबी ल-हब' सूर: नाज़िल फ़रमाई कि अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए, यानी उसके हाथ बर्बाद हो गए।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब अल्लाह ने

व अंज़िर अशीरतकल अक़रबीन॰' आयत उतारी, तो आप सफ़ा पहाड़ी पर तशरीफ़ ले गए और उस पर चढ़कर ज़ोर से पुकारा, 'या सबाहाह' (यानी ऐ लोगो ! सुबह-सुबह दुश्मन हमला करने वाला है, इसलिए यहां जमा हो जाओ)।

चुनांचे सब लोग आपके पास जमा हो गए, कोई ख़ुद आया, किसी ने अपना क़ासिद भेज दिया। इसके बाद आपने फ़रमाया, ऐ बनू अब्दुल मुत्तलिब ! ऐ बनू फ़ह्र ! ऐ बनू काब ! ज़रा यह तो बताओ, अगर मैं तुम्हें यह ख़बर दूं कि इस पहाड़ के दामन में घुड़सवारों की एक फ़ौज है, जो तुम पर हमला करना चाहती है, क्या तुम मुझे सच्चा मान लोगे ?

सबने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, मैं तुम्हें एक सख़्त अज़ाब के आने से पहले उससे डराने वाला हूं।

अबू लहब बोला, तू बर्बाद हो जाए। हमें सिर्फ़ इसीलिए बुलाया था और अल्लाह ने 'तब्बत यदा अबी लहबिंव-व तब्ब॰' सूर: उतारी।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज के मौसम में अरब क़बीलों पर दावत पेश फ़रमाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नुबूवत के बाद तीन साल तक छुपकर दावत का काम करते रहे, फिर चौथे साल आपने एलानिया दावत का काम शुरू कर दिया, जो वहां दस साल तक चलता रहा। इस

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ॰ 277
2. बिदाया, भाग 3, पृ॰ 38

अर्से में आप हज के मौसम में भी दावत का काम किया करते थे और उकाज़ और मजन्ना और ज़िलमजाज़ बाज़ारों में हाजियों के पास उनकी क़ियामगाहों में जाया करते थे और उन्हें इस बात की दावत दिया करते कि वे आपकी मदद करें और आपकी हिफ़ाज़त करें, ताकि आप अपने रब का पैग़ाम पहुंचा सकें और उनको इसके बदले में जन्नत मिलेगी, लेकिन आप अपनी मदद के लिए किसी को भी तैयार न पाते, यहां तक कि आप एक एक क़बीले के बारे में और उसके ठहरने की जगह के बारे में पूछते और हर क़बीले के पास जाते और इसी तरह चलते-चलते आप बनी आमिर बिन सासआ के पास पहुंचे। आपको कभी किसी की ओर से इतना कष्ट नहीं पहुंचा जितना उनकी ओर से पहुंचा, यहां तक कि जब आप उनके पास से वापस चले, तो वे आपको पीछे से पत्थर मार रहे थे।

फिर आप बनू मुहारिब बिन ख़सफ़ा के पास तशरीफ़ ले गए। उनमें आपको एक बूढ़ा मिला, जिसकी उम्र एक सौ बीस साल थी। आपने उससे बातें कीं और उसको इस्लाम की दावत दी और इस बात की दावत दी कि वह आपकी मदद और हिफ़ाज़त करे, ताकि आप अपने रब का पैग़ाम पहुंचा सकें।

तो उस बूढ़े ने जवाब दिया, ओ आदमी! तेरी क़ौम तेरे हालात को (हमसे) ज़्यादा जानती है। अल्लाह की क़सम! जो भी तुझे अपने साथ अपने इलाक़े में लेकर जाएगा, वह हाजियों में से सबसे ज़्यादा बुरी चीज़ को लेकर जाएगा। (नऊज़ुबिल्लाह) अपने आपको हमसे दूर रखो, यहां से चले जाओ।

अबू लहब वहां खड़ा हुआ मुहारबी बूढ़े की बातें सुन रहा था, तो वह उस मुहारबी बूढ़े के पास खड़े होकर कहने लगा, अगर सारे हाजी तेरी तरह (सख़्त जवाब देने वाले) होते तो यह आदमी अपने दीन को छोड़ देता। यह एक बेदीन और झूठा आदमी है। (नऊज़ुबिल्लाह)

उस मुहारबी बूढ़े ने जवाब दिया, तुम इसको ज़्यादा जानते हो, यह तुम्हारा भतीजा और रिश्तेदार है। ऐ अबू उत्बा! इसे जुनून है। हमारे साथ क़बीले का एक आदमी है, जो इसका इलाज जानता है।

अबू लहब ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन वह जब भी आपको अरब के किसी क़बीले के पास खड़ा हुआ देखता, तो दूर ही से चिल्लाकर कहता, यह बेदीन और झूठा आदमी है।[1]

हज़रत वाबसा अपने दादा से नक़ल करते हैं कि हम लोग मिना में पहला जमरा जो मस्जिद ख़ीफ़ के क़रीब है, उसके पास ठहरे हुए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास हमारी क़ियामगाह में तशरीफ़ लाए और आपकी सवारी पर आपके पीछे हज़रत ज़ैद बिन हारिसा भी बैठे हुए थे। आपने हमें दावत दी, जिसे हमने अल्लाह की क़सम! क़ुबूल न किया और यह हमने अच्छा नहीं किया और हमने हज के इसी मौसम में आपके और आपकी दावत के बारे में सुन रखा था। आपने हमारे पास खड़े होकर दावत दी, जिसे हमने क़ुबूल नहीं किया।

हमारे साथ हज़रत मैसरा बिन मसरूक़ अबसी भी थे। वह कहने लगे, मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं कि अगर हम इस आदमी को सच्चा मान लें और इसे अपने साथ अपने इलाक़े में ले जाकर अपने बीच में ठहरा लें, तो यह बहुत अच्छी राय होगी। मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं कि इस आदमी की बात ग़ालिब होकर रहेगी, यहां तक कि दुनिया में हर जगह पहुंच जाएगी।

क़ौम ने मैसरा से कहा, इन बातों को छोड़ो, ऐसी बात हम पर क्या पेश करते हो, जिसके बरदाश्त की हममें ताक़त नहीं।

मैसरा की बात सुनकर हुज़ूर सल्ल० को मैसरा के ईमान लाने की कुछ उम्मीद हो गई और आपने मैसरा से कुछ और बातें भी कीं।

मैसरा ने कहा, आपका कलाम बहुत ही ख़ूबसूरत और बहुत नूरानी है, लेकिन मेरी क़ौम मेरी मुख़ालफ़त कर रही है और आदमी तो अपनी क़ौम के साथ ही चला करता है। जब आदमी की क़ौम ही आदमी की मदद न करे, तो दुश्मन तो और ज़्यादा दूर हैं।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० वापस तशरीफ़ ले गए।

---

1. दलाइलुन्नुबूवत, पृ० 101

वह क़ौम अपने इलाक़े को वापस जाने लगी, तो उनसे हज़रत मैसरा ने कहा, आओ, फ़िदक चलते हैं, क्योंकि यहां यहूदी रहते हैं। इनसे हम इस आदमी के बारे में पूछेंगे।

चुनांचे वे लोग यहूदियों के पास गए (और उनसे हुज़ूर सल्ल० के बारे में पूछा)

वे अपनी एक किताब निकाल कर लाए और सामने रखकर उसमें से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक ज़िक्र पढ़ने लगे। उसमें यह लिखा हुआ था कि आप अनपढ़ और अरबी नबी हैं। ऊंट पर सवार हुआ करेंगे। मामूली चीज़ पर या टुकड़े पर गुज़ारा कर लेंगे। उनका क़द न ज़्यादा लम्बा होगा और न छोटा। उनके बाल न बिल्कुल घुंघराले होंगे, न बिल्कुल सीधे। उनकी आंखों में लाल डोरा होगा और उनका रंग सफ़ेद सुर्ख़ी माइल होगा।

इतना पढ़ने के बाद यहूदियों ने यह कहा, जिस आदमी ने तुम्हें दावत दी है, अगर वह ऐसा ही है, तो तुम उसकी दावत क़ुबूल कर लो और उसके दीन में दाख़िल हो जाओ, क्योंकि हम जलन की वजह से उनकी पैरवी नहीं करेंगे और हमारी उनसे ज़बरदस्त लड़ाइयां होंगी। अरब का हर रहने वाला या तो आपकी पैरवी करेगा या आपसे लड़ेगा। इसलिए तुम उनकी पैरवी करने वालों में से बन जाओ।

हज़रत मैसरा ने कहा, ऐ मेरी क़ौम ! अब तो बात बिल्कुल साफ़ हो गई।

क़ौम ने कहा, अगले साल हज पर जाकर उनसे मिलेंगे। चुनांचे वे सब अपने इलाक़े को वापस चले गए। उनके सरदारों ने उनको इससे रोक दिया और उनमें से कोई भी हुज़ूर सल्ल० की पैरवी न कर सका।

जब हुज़ूर सल्ल० हिजरत फ़रमा कर मदीना तशरीफ़ ले आए और हज्जतुल विदाअ में तशरीफ़ ले गए तो वहां हज़रत मैसरा से मुलाक़ात हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको पहचान लिया, तो हज़रत मैसरा ने अर्ज़ किया—

'ऐ अल्लाह के रसूल ! जिस दिन आप हमारे यहां ऊंटनी पर सवार

होकर तशरीफ़ लाए थे, उसी दिन से मेरे दिल में आपकी पैरवी की बड़ी आरज़ू है, लेकिन जो होना था, वह हो गया और अल्लाह को मेरा इतनी देर से मुसलमान होना ही मंज़ूर था। उस मौक़े पर जितने लोग मेरे साथ थे, उनमें से अक्सर मर गए हैं। ऐ अल्लाह के नबी ! अब वे कहां होंगे ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो भी इस्लाम के अलावा किसी और दीन पर मरा है, वह अब दोज़ख़ में है।

हज़रत मैसरा ने कहा, अलहम्दुलिल्लाह ! तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मुझे बचा लिया।

और हज़रत मैसरा मुसलमान हो गए और अच्छे मुसलमान बनकर ज़िंदगी गुज़ारी और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के यहां उनका बड़ा दर्जा था।[1]

हज़रत इब्ने रोमान और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुम फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाज़ार उकाज़ में क़बीला किन्दा के पास उनकी क़ियामगाह में तशरीफ़ ले गए। आप उनसे ज़्यादा नर्म मिज़ाज क़बीले के पास कभी नहीं गए थे।

जब आपने देखा कि ये लोग नर्म हैं और बहुत मुहब्बत कर रहे हैं तो आपने उनसे दावत की बात शुरू कर दी कि मैं तुम्हें एक अल्लाह की दावत देता हूं, जिसका कोई शरीक नहीं है और इस बात की दावत देता हूं कि जिस तरह अपनी जानों की हिफ़ाज़त करते हो, उसी तरह तुम मेरी भी हिफ़ाज़त करो। फिर अगर मैं ग़ालिब आ गया, तो तुम्हें पूरा अख़्तियार होगा।

अक्सर क़बीले वालों ने कहा, यह तो बहुत अच्छी बात है, लेकिन हम उन्हीं ख़ुदाओं की इबादत करेंगे, जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा किया करते थे।

क़ौम में से एक छोटी उम्र वाले ने कहा, ऐ मेरी क़ौम ! दूसरों के

1. अबू नुऐम, पृ० 102, बिदाया, भाग 3, पृ० 145

मानने और साथ ले जाने से पहले तुम उनकी मानकर उनको अपने साथ ले जाओ। अल्लाह की क़सम! अह्ले किताब बयान करते हैं कि एक नबी हरम से ज़ाहिर होगा, जिसका ज़माना क़रीब आ चुका है। क़ौम में एक काना आदमी भी था, उसने कहा—

चुप रहो, मेरी भी सुनो। उसको तो उसके ख़ानदान ने निकाल दिया है और तुम उसको पनाह देकर पूरे अरब की लड़ाई मोल लेना चाहते हो। नहीं, नहीं, ऐसा हरगिज़ न करो।

यह सुनकर आप वहां से बड़े ग़मगीन होकर वापस तशरीफ़ ले आए और वे लोग अपनी क़ौम में वापस गए और उनको अपने सारे हालात सुनाए।

तो एक यहूदी ने उनसे कहा, तुमने बड़ा सुनहरा मौक़ा बरबाद कर दिया। अगर तुम दूसरों से पहले उसकी बात मान लेते, तो तुम तमाम अरब के सरदार बन जाते। उनकी सिफ़तों और हुलिया का बयान हमारी किताब में मौजूद है।

वह यहूदी किताब में से हुज़ूर सल्ल० के सिफ़तें और हुलिए पढ़कर सुनाता जाता और जो हुज़ूर सल्ल० को देखकर आए थे, वे इस सारे की तस्दीक़ करते जाते। उस यहूदी ने कहा, हमारी किताब में यह भी है कि वह मक्का में ज़ाहिर होंगे और वह हिजरत करके यसरिब (मदीना) जाएंगे।

यह सुनकर सारी क़ौम ने तै किया कि अगले साल के मौसम में जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़रूर मिलेंगे, लेकिन उनके एक सरदार ने उनको अगले साल हज पर जाने से रोक दिया। चुनांचे उनमें कोई भी आपसे न मिल सका और उस यहूदी का इन्तिक़ाल हो गया और लोगों ने सुना कि मरते वक़्त वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्दीक़ कर रहा था और ईमान ज़ाहिर कर रहा था।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान आमिरी अपनी क़ौम के कुछ बुज़ुर्गों से नक़ल

1. दलाइल, पृ० 103

करते हैं कि हम लोग उकाज़ के बाज़ार में ठहरे हुए थे। वहां हमारे पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और आपने फ़रमाया, तुम किस क़बीले के लोग हो?

हमने कहा, बनू आमिर बिन सासआ के।

आपने फ़रमाया, बनू आमिर के कौन से ख़ानदान के हो?

हमने कहा, बनू काब बिन रबीआ के।

आपने फ़रमाया, तुम्हारा रौब और दबदबा कैसा है?

हमने कहा, किसी की मजाल नहीं है कि कोई हमारे इलाक़े में आकर किसी चीज़ को हाथ लगा सके या हमारी आग पर हाथ ताप सके। यानी हम बहुत बहादुर हैं, हमारा कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूं। तो अगर मैं तुम्हारे पास आ जाऊं, तो तुम लोग मेरी हिफ़ाज़त करोगे, ताकि मैं अपने रब का पैग़ाम पहुंचा सकूं और मैं तुममें से किसी को किसी बात पर मजबूर नहीं करता हूं।

तो उस क़बीले वालों ने कहा, आप क़ुरैश के कौन-से ख़ानदान से हैं?

आपने फ़रमाया, बनू अब्दुल मुत्तलिब के ख़ानदान से हूं।

तो उन्होंने कहा, बनू अब्दे मुनाफ़ ने आपके साथ क्या बर्ताव किया?

आपने फ़रमाया, उन्होंने तो सबसे पहले मुझे झुठलाया और धुत्कारा।

उन्होंने कहा, हम आपको न धुत्कारते हैं और न आप पर ईमान लाते हैं, अलबत्ता (आपको अपने इलाक़े में ले जाएंगे और) आपकी हर तरह हिफ़ाज़त करेंगे ताकि आप अपने रब का पैग़ाम पहुंचा सकें।

चुनांचे आप (उनके साथ जाने के इरादे से) सवारी से उतर कर उनके पास बैठ गए। वे लोग बाज़ार में क्रय-विक्रय करने लगे। इतने में उनके पास बैहरा बिन फ़िरास, क़ुशैरी आया और उसने पूछा, यह मुझे तुम्हारे पास कौन नज़र आ रहा है, जिसे मैं पहचानता नहीं हूं?

उन्होंने कहा, यह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह क़ुरैशी हैं।

उसने कहा, तुम्हारा इनसे क्या ताल्लुक़ है?

वे कहने लगे, उन्होंने हमारे पास आकर यह कहा कि वह अल्लाह के रसूल हैं और हमसे इस बात की मांग की कि हम उनको अपने इलाक़े में ले जाएं और उनकी हर तरह हिफ़ाज़त करें, ताकि वह अपने रब का पैग़ाम पहुंचा सकें।

उसने कहा, तुमने उनको क्या जवाब दिया?

उन्होंने कहा, हमने उनका स्वागत किया और यह कहा कि हम आपको अपने इलाक़े में ले जाएंगे और अपनी जानों की तरह आपकी भी हिफ़ाज़त करेंगे।

बैहरा बोला, जहां तक मेरा ख़्याल है इस बाज़ार वालों में से तुम सबसे ज़्यादा बुरी चीज़ लेकर जा रहे हो। तुम ऐसा काम करने लगे हो, जिसकी वजह से तमाम लोग तुम्हारे दुश्मन बनकर तुम्हारा बाइकाट कर देंगे और सारे अरब मिलकर तुमसे लड़ेंगे। इसकी क़ौम इसको अच्छी तरह जानती है। अगर इन लोगों को इनमें कोई भलाई नज़र आती, तो उनका साथ देने में अपना बड़ा सौभाग्य समझते, यह अपनी क़ौम का एक कम अक़्ल आदमी है। (नऊज़ुबिल्लाह) और इसे उसकी क़ौम ने धुत्कार दिया है और झुठलाया है और तुम उसे ठिकाना देना चाहते हो और उसकी मदद करना चाहते हो। तुमने बिल्कुल ग़लत फ़ैसला किया है। फिर उसने हुज़ूर सल्ल० की ओर मुड़कर कहा कि उठो और अपनी क़ौम के पास चले जाओ। अल्लाह की क़सम! अगर तुम मेरी क़ौम के पास न होते, तो मैं तुम्हारी गरदन उड़ा देता।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठे और अपनी ऊंटनी पर सवार हो गए।

ख़बीस बैहरा ने हुज़ूर सल्ल० की ऊंटनी की कोख में लकड़ी से ज़ोर से चौका दिया जिससे आपकी ऊंटनी बिदक गई और आप ऊंटनी से नीचे गिर गए।

उस दिन हज़रत ज़ुबाआ बिन्त आमिर बिन क़ुर्त रज़ियल्लाहु अन्हा

अपने चचेरे भाइयों से मिलने के लिए इस क़बीला बनू आमिर में आई हुई थीं और वह उन औरतों में से थीं, जो मुसलमान होकर मक्का में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ दिया करती थीं, वह यह मंज़र देखकर बेताब होकर बोल उठीं—

ऐ आमिर की औलाद ! आज तुममें से कोई भी आमिर की तरह मेरी मदद करने वाला नहीं रहा या आज से मेरा क़बीला आमिर से कोई ताल्लुक़ नहीं। क्या तुम्हारे सामने अल्लाह के रसूल के साथ यह बुरा सुलूक किया जा रहा है और तुममें से कोई भी उनकी मदद के लिए खड़ा नहीं होता।

चुनांचे उनके तीन चचेरे भाई बैहरा की ओर लपके और दो आदमी बैहरा की मदद के लिए उठे।

इन तीनों भाइयों में से हर एक ने एक-एक को पकड़ कर ज़मीन में गिरा लिया और उनके सीनों पर बैठ कर उनके चेहरों पर खूब थप्पड़ मारे। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह ! इन (तीनों भाइयों) पर बरकत नाज़िल फ़रमा और उन तीनों पर लानत कर।'

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हुज़ूर की मदद करने वाले तीनों भाई मुसलमान हुए और उन्होंने शहादत का दर्जा पाया और बाक़ी तीनों ज़िल्लत की मौत मरे और जिन दो आदमियों ने बहीरा बिन फ़िरास की मदद की, उनमें से एक का नाम हज़न बिन अब्दुल्लाह और दूसरे का नाम मुआविया बिन उबादा है और जिन तीन भाइयों ने हुज़ूर सल्ल० की मदद की, वे ग़ितरीफ़ बिन सह्ल और ग़तफ़ान बिन सह्ल और उर्वः बिन अब्दुल्लाह हैं।[1]

हज़रत ज़ोहरी बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू आमिर बिन सासआ के पास तशरीफ़ ले गए और उनको अल्लाह की दावत दी और अपने आपको उन पर पेश किया (कि वे आपकी मदद करें)। उनमें से बैहरा बिन फ़िरास नामी आदमी ने कहा

1. दलाइलुन्नुबूवः, पृ० 100, बिदाया, भाग 3, पृ० 141

कि अगर मैं कुरैश के इस नवजवान का दामन पकड़ लूं, तो मैं इसके ज़रिए सारे अरब को ख़त्म कर सकता हूं।

फिर उसने हुज़ूर सल्ल० से कहा, आप यह बताएं कि अगर आपके काम में हम आपका साथ दें और फिर अल्लाह आपको आपके मुख़ालिफ़ों पर ग़ालिब कर दे, तो आपके बाद क्या हुकूमत हमें मिल जाएगी?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इसका अख़्तियार तो अल्लाह को है, वह जिसे चाहे दे।

उसने कहा, वाह! वाह! आपको बचाने के लिए अरबों के सामने हम अपने सीने कर दें और जब अल्लाह आपको ग़ालिब कर दे, तो हुकूमत दूसरों को मिल जाए। हमें आपके काम की कोई ज़रूरत नहीं और यह कहकर उन सब ने हुज़ूर सल्ल० को इंकार कर दिया।

जब हाजी लोग वापस जाने लगे, तो बनू आमिर भी अपने इलाक़े को वापस गए, वहां एक बड़े मियां थे, जिनकी बहुत ज़्यादा उम्र थी, जो उनके साथ हज का सफ़र नहीं कर सकते थे, और जब उनके क़बीले हज करके वापस आते, तो उनको इस हज की सारी कारगुज़ारी सुनाया करते।

चुनांचे इस साल जब क़बीले के लोग हज करके वापस हुए तो उन्होंने इस हज के सारे हालात उनसे पूछे।

उन्होंने यह बताया कि एक कुरैशी नवजवान जो बनू अब्दुल मुत्तलिब में से थे, वह हमारे पास आए थे, जो यह कह रहे थे कि वह नबी हैं और हमें इस बात की दावत दे रहे थे कि हम उनकी हिफ़ाज़त करें और उनका साथ दें और उनको अपने इलाक़े में ले आएं।

यह सुनकर उस बड़े मियां ने अपना सर पकड़ लिया और कहा, ऐ बनी आमिर! क्या इस ग़लती की कोई तलाफ़ी हो सकती है? क्या उस परिंदे की दुम हाथ में आ सकती है? यानी तुमने एक सुनहरा मौक़ा खो दिया। उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में फ्लां की जान है, आज तक कभी किसी इस्माईली ने नुबूवत का झूठा दावा नहीं किया।

उनकी नुबूवत का दावा बिल्कुल हक़ है, तुम्हारी अक़्ल कहां चली गई थी?[1]

हज़रत ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़बीला किन्दा के पास उनके ठहरने की जगह तशरीफ़ ले गए और उनमें मुलैह नामी उनका एक सरदार भी था। आपने उनको अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाया और अपने आपको उन पर पेश किया (कि मुझे अपने साथ अपने इलाक़े में ले जाओ, ताकि मैं अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा सकूं) लेकिन सबने इंकार कर दिया।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन हुसैन बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़बीला कल्ब के खानदान बनू अब्दुल्लाह के पास उनके ठहरने की जगह तशरीफ़ ले गए और उनको अल्लाह की दावत दी और अपने आपको उन पर पेश किया, यहां तक कि आप उनको (तैयार करने के लिए) यह फ़रमा रहे थे कि ऐ बनू अब्दुल्लाह! अल्लाह ने तुम्हारे बाप का नाम बहुत अच्छा रखा है, लेकिन आपकी पेश की हुई दावत को क़ुबूल न किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़बीला बनी हनीफ़ा के पास उनके ठहरने की जगह तशरीफ़ ले गए और उनको अल्लाह की दावत दी और अपने आपको उन पर पेश किया, लेकिन अरबों में से किसी ने आपकी दावत को उनसे ज़्यादा बुरे तरीक़े से नहीं ठुकराया।[3]

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि मुझसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे तुम्हारे पास और तुम्हारे भाई के पास अपनी हिफ़ाज़त का सामान नज़र नहीं आ रहा है। क्या आप मुझे कल बाज़ार ले जाएंगे ताकि हम अलग-अलग क़बीलों के ठहरने की जगहों में जाकर उनको दावत दे सकें और इन दिनों अरब

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 139, अबू नुऐम पृ० 100
2. अख़-र-जहु इब्नु इस्हाक़
3. बिदाया, भाग 3, पृ० 139

वहां इकट्ठे थे।

हज़रत अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि ये क़बीला किनदा और उस जैसे विचार वाले लोग हैं और ये यमन से हज के लिए आने वालों में सबसे अच्छे लोग हैं और यह क़बीला बिक्र बिन वाइल के ठहरने की जगह है और यह क़बीला बनू आमिर बिन सासआ के ठहरने की जगह है। आप इनमें से किसी को अपने लिए पसन्द फ़रमा लें।

चुनांचे आपने क़बीला किन्दा से दावत की शुरूआत फ़रमाई और उनके पास तशरीफ़ ले जाकर फ़रमाया कि आप लोग कहां के हैं?

उन्होंने कहा, यमन के।

आपने फ़रमाया, यमन के कौन-से क़बीले के?

उन्होंने कहा, क़बीला किन्दा के।

आपने फ़रमाया, क़बीला किन्दा के कौन-से ख़ानदान के?

उन्होंने कहा बनी अम्र बिन मुआविया के।

आपने फ़रमाया कि क्या अपनी भलाई को तुम्हरा दिल चाहता है?

उन्होंने कहा, वह भलाई की बात क्या है?

आपने फ़रमाया, तुम ला इला-ह इल्लल्लाहु की गवाही दो और नमाज़ क़ायम करो और जो कुछ अल्लाह के पास से आया है, उस पर ईमान लाओ।[1]

उन्होंने कहा कि अगर आप कामियाब हो गए तो अपने बाद बादशाही आप हमें दे देंगे?

आपने फ़रमाया, बादशाही देने का अख़्तियार तो अल्लाह को है, वह जिसको चाहे दे दे।

तो उन्होंने कहा, जो दावत आप हमारे पास लेकर आए हैं, हमें उसकी कोई ज़रूरत नहीं है।

कलबी की रिवायत में यह है कि उन्होंने कहा, क्या आप इसलिए

---

1. अब्दुल्लाह बिन अजलह

हमारे पास आए हैं ताकि आप हमें हमारे ख़ुदाओं से रोक दें और हम सारे अरब की मुख़ालफ़त मोल ले लें। आप अपनी क़ौम के पास चले जाएं, हमें आपकी कोई ज़रूरत नहीं। चुनांचे आप उनके पास से उठकर क़बीला बक्र बिन वाइल के पास तशरीफ़ ले गए और आपने फ़रमाया आपका कौन-सा क़बीला है?

उन्होंने कहा, बक्र बिन वाइल।

आपने फ़रमाया, बक्र बिन वाइल का कौन-सा ख़ानदान?

उन्होंने कहा, बनू क़ैस बिन सालबा।

आपने फ़रमाया, आप लोगों की तायदाद कितनी है?

उन्होंने कहा रेत के ज़र्रों की तरह बहुत सारी।

आपने फ़रमाया कि तुम्हारा रौब और दबदबा कैसा है?

उन्होंने कहा, कुछ नहीं। फ़ारस के लोग हमारे पड़ोसी हैं। न हम उनसे हिफ़ाज़त कर सकते हैं और न हम उनके मुक़ाबले में किसी को पनाह दे सकते हैं।

आपने फ़रमाया कि 33 बार सुब्हानल्लाह और 33 बार अल-हम्दु लिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अक्बर अल्लाह की रिज़ा के लिए पढ़ना अपने ज़िम्मे कर लो तो अगर अल्लाह ने तुम्हें बाक़ी रखा, तो तुम फ़ारस वालों के घरों पर क़ब्ज़ा कर लोगे और उनकी औरतों से निकाह कर लोगे और उनके बेटों को अपना ग़ुलाम बना लोगे।

उन्होंने कहा, आप कौन हैं?

आपने फ़रमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूं। फिर आप वहां से चल दिए।

कलबी की रिवायत में यह है कि आपका चचा अबू लहब आपके पीछे चल रहा था और लोगों से कह रहा था कि इनकी बात न मानो। चुनांचे जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास से चले गए तो अबू लहब उनके पास से गुज़रा। उन्होंने अबू लहब से कहा, तुम इस आदमी को जानते हो?

उसने कहा, हां, यह हमारे क़बीले में चोटी का आदमी है। तुम

इनकी किस चीज़ के बारे में पूछना चाहते हो?

हुज़ूर सल्ल० ने उनको जिस बात की दावत दी थी, वे सारी बातें उन्होंने अबू लहब को बताईं और यह कहा कि वह कह रहे हैं कि वह अल्लाह के रसूल हैं।

अबू लहब ने कहा, ख़बरदार! उसकी बात की कोई अहमियत न दो, क्योंकि वह दीवाना है। (नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक) पागलपन में उलटी-सीधी बातें कहता रहता है।

उन्होंने कहा कि उन्होंने फ़ारस वालों के बारे में जो कुछ कहा, उससे भी हमें यही अन्दाज़ा हुआ।[1]

हज़रत रबीआ बिन इबाद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं नवजवान लड़का अपने बाप के साथ मिना में था और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अरब के क़बीलों के ठहरने की जगहों में तशरीफ़ ले जाते थे और उनसे फ़रमाते थे, ऐ बनी फ़्लां! मुझे अल्लाह ने तुम्हारे पास अपना रसूल बनाकर भेजा है। मैं तुम्हें इस बात का हुक्म देता हूं कि अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और अल्लाह के अलावा जिनको तुम अल्लाह का शरीक ठहरा कर इबादत कर रहे हो, उनको छोड़ दो और मुझ पर ईमान ले आओ और मेरी तस्दीक़ करो और मेरी हिफ़ाज़त करो ताकि जो पैग़ाम लेकर मुझे अल्लाह ने भेजा है, वह मैं उसकी ओर से वाज़ेह तौर पर पहुंचा सकूं।

हज़रत रबीआ फ़रमाते हैं कि आपके पीछे एक भेंगा और एक सुन्दर आदमी था, जिसकी दो ज़ुल्फ़ें थीं। अदनी जोड़ा पहने हुए था। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी बात और अपनी दावत से फ़ारिग़ हो गए, तो उस आदमी ने कहा, ऐ बनी फ़्लां! यह आदमी तुम्हें इस बात की दावत देता है कि तुम लात और उज़्ज़ा को और बनी मालिक बिन उक़ैश के मित्र जिन्नों को अपनी गरदन से उतार फेंको और जिस बिदअत और गुमराही को यह लाया है, उसे अपना लो। इसकी बात हरगिज़ न मानो और न इसकी बात सुनो।

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 140

हज़रत रबीआ फ़रमाते हैं, मैंने अपने वालिद से कहा, ऐ अब्बा जान ! यह आदमी कौन है ? जो उनके पीछे लगा हुआ है और जो वह कहते हैं, उसको रद्द करता है।

मेरे बाप ने कहा, यह उनका चचा अबुल उज़्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब अबू लहब है।[1]

मुदरिक से यह रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मैंने अपने बाप के साथ हज किया। जब हम मिना में ठहरे हुए थे, तो हम लोगों ने एक जगह मज्मा देखा। मैंने अपने बाप से पूछा, यह मज्मा कैसा है ?

उन्होंने कहा, यह एक बे-दीन आदमी है, (नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक) जिसकी वजह से लोग जमा हैं।

मैंने वहां देखा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों से यह फ़रमा रहे थे कि ऐ लोगो ! ला इलाह-ह इल्लल्लाहु पढ़ लो, कामियाब हो जाओगे।[2]

हज़रत हारिस बिन हारिस ग़ामिदी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम मिना में ठहरे हुए थे। मैंने अपने वालिद से पूछा, यह मज्मा कैसा है ?

उन्होंने कहा, ये सब एक बे-दीन आदमी की वजह से जमा हैं।

फ़रमाते हैं, मैंने गरदन ऊंची करके देखा तो नज़र आया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों को अल्लाह के एक होने की दावत दे रहे हैं और लोग आपकी बात का इंकार कर रहे हैं।[3]

हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हज करने गया, वहां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों को इस्लाम की दावत दे रहे थे और आपके सहाबा को तरह-तरह की तक्लीफ़ें दी जा रही थीं। चुनांचे मैं हज़रत उमर रज़ि० के पास आकर खड़ा हुआ। (उस वक़्त तक हज़रत उमर मुसलमान नहीं हुए थे।) वह बनी अम्र बिन

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 138, हैसमी, भाग 3, पृ० 36
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 21
3. बुख़ारी, तबरानी, इसाबा, भाग 1, पृ० 275

मुअम्मल की एक लौंडी को तक्लीफ़ें पहुंचा रहे थे। फिर हज़रत उमर हज़रत ज़िन्नीरा के पास आकर रुके और उनको भी तरह-तरह की तक्लीफ़ें देने लगे।[1]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस बात का हुक्म दिया कि आप अपने आपको अरब क़बीलों पर पेश करें, तो आप मिना तशरीफ़ ले गए। मैं और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आपके साथ थे।

हम अरब की मज्लिसों में से एक मज्लिस में पहुंचे तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने आगे बढ़कर सलाम किया। हज़रत अबूबक्र हरदम पेशक़दमी करने वाले थे और वह अरब के नसब को ख़ूब अच्छी तरह जानते थे, तो उन्होंने कहा, तुम किस क़ौम के लोग हो ?

उन्होंने कहा, रबीआ के हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, तुम रबीआ के कौन से ख़ानदान के हो ?

इसके बाद अबू नुऐम ने बहुत लम्बी हदीस ज़िक्र की, जिसमें यह भी आता है कि हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि फिर हम एक बा-वक़ार मज्लिस में पहुंचे। इसमें बहुत-से बुलन्द मर्तबा और इज़्ज़तदार बुज़ुर्ग बैठे हुए थे। चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने आगे बढ़कर सलाम किया।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि हज़रत अबूबक्र हरदम पेशक़दमी करने वाले थे। तो उनसे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, तुम किस क़ौम के लोग हो ?

उन्होंने कहा, हम बनू शैबान बिन सालबा हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर मुतवज्जह होकर कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों। उनकी

---

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 312

क़ौम में उनसे ज़्यादा इज़्ज़तदार कोई नहीं है। उस वक़्त उस क़ौम में मफ़रूक़ बिन अम्र और हानी बिन क़बीसा और मुसन्ना बिन हारिसा और नोमान बिन शरीक मौजूद थे और उनमें हज़रत अबूबक्र रज़ि० के सबसे ज़्यादा क़रीब मफ़रूक़ बिन अम्र थे और मफ़रूक़ बयान और बातचीत में अपनी क़ौम पर छाए हुए थे, और उनकी दो ज़ुल्फ़ें थीं, जो उनके सीने पर पड़ी हुई थीं।

चूंकि यह मज्लिस में हज़रत अबूबक्र रज़ि० से सबसे ज़्यादा क़रीब थे, इसीलिए हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनसे पूछा, तुम्हारे क़बीले की तायदाद कितनी है?

उन्होंने कहा, हम हज़ार से ज़्यादा हैं और एक हज़ार से कम होने की वजह से हार का मुंह नहीं देख सकते।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने पूछा, तुम्हारे यहां हिफ़ाज़त की क्या शक्ल है?

उन्होंने कहा, हमारा काम तो कोशिश करना है। बाक़ी हर क़ौम की अपनी-अपनी क़िस्मत है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने पूछा, तुम्हारे और तुम्हारे दुश्मन के दर्मियान लड़ाई का क्या हाल होता है?

मफ़रूक़ ने कहा, जब हम लड़ते हैं, तो हम बहुत ज़्यादा गुस्से में होते हैं और जब हमें गुस्सा आ जाता है तो हम बहुत सख़्त क़िस्म की लड़ाई लड़ते हैं और हम अच्छे घोड़ों के औलाद पर और हथियारों को दूध देने वाले जानवरों पर तर्जीह देते हैं, यानी लड़ाई का सामान हमें सबसे ज़्यादा प्यारा है और मदद तो अल्लाह की ओर से आती है। कभी अल्लाह हमें ग़ालिब कर देते हैं और कभी दूसरों को। शायद आप कुरैश क़बीले के हैं?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, अगर तुम्हें यह ख़बर पहुंची है कि कुरैश में अल्लाह के एक रसूल हैं, तो वह यह हैं।

मफ़रूक़ ने कहा, हां, हमें यह ख़बर पहुंची है कि कुरैश के एक आदमी कहते हैं कि वह अल्लाह के रसूल हैं। फिर मफ़रूक़ ने हुज़ूर

सल्ल० की ओर मुतवज्जह होकर कहा, आप किस चीज़ की दावत देते हैं? क़ुरैशी भाई!

हुज़ूर सल्ल० आगे बढ़कर बैठ गए और हज़रत अबूबक्र खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० पर अपने कपड़े से साया करने लगे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं तुम्हें इस बात की दावत देता हूं कि तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूं और इसकी दावत देता हूं कि मुझे अपने यहां रहने की जगह दे दो और मेरी हर तरह से हिफ़ाज़त करो और मेरी मदद करो, ताकि मैं अल्लाह के हुक्म को पहुंचा सकूं, क्योंकि क़बीला क़ुरैश के लोग अल्लाह के दीन के ख़िलाफ़ एक दूसरे की मदद कर रहे हैं और अल्लाह के रसूल को झुठला रहे हैं और बातिल में लग कर उन्होंने हक़ को बिल्कुल छोड़ दिया है और अल्लाह से बेनियाज़ हो गए हैं, हालांकि अल्लाह ही हर हाल में सारी मख़्लूक़ से बेनियाज़ और तारीफ़ के क़ाबिल है।

मफ़रूक़ ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, ऐ क़ुरैशी भाई! आप और किस चीज़ की दावत देते हैं?

आपने ये आयतें तिलावत फ़रमाई—

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ

فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝

'तू कह, तुम आओ, मैं सुना दूं जो हराम किया है तुम पर तुम्हारे रब ने कि शरीक न करो उसके साथ किसी चीज़ को और मां-बाप के साथ नेकी करो और मार न डालो अपनी औलाद को ग़रीबी के डर से। हम रोज़ी देते हैं तुमको और उनको और पास न जाओ बेहयाई के काम के जो ज़ाहिर हो उसमें से और जो छिपा हो और मार न डालो उस जान को, जिसको हराम किया है अल्लाह ने, मगर हक़ पर। तुमको यह हुक्म किया है ताकि तुम समझो और पास न जाओ यतीम के माल के, मगर इस तरह से कि बेहतर हो, यहां तक कि पहुंच जावे अपनी जवानी को

और पूरा करो नाप और तौल को इंसाफ़ से। हम किसी के ज़िम्मे वही चीज़ लाज़िम करते हैं जिसकी उसको ताक़त हो और जब बात कहो तो हक़ की कहो, अगरचे वह अपना करीब ही हो। और अल्लाह का अह्द पूरा करो। तुमको यह हुक्म कर दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो और हुक्म किया है कि यह राह है मेरी सीधी, सो उस पर चलो और मत चलो और रास्तों पर कि वे तुमको जुदा कर देंगे अल्लाह के रास्ते से। यह हुक्म नसीहत कर दिया है तुमको ताकि तुम बचते रहो।'

(अल-अनआम 151-153)

मफ़रूक़ ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, ऐ क़ुरैशी भाई ! आप और किस चीज़ की दावत देते हैं? अल्लाह की क़सम ! यह ज़मीन वालों का कलाम नहीं है और अगर यह ज़मीन वालों का कलाम होता तो हम इसे ज़रूर पहचान लेते।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने—

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ - لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

'इन्नल्ला-ह यामुरु बिल अदलि वल एहसान' से लेकर 'लअल्लकुम त-ज़क्करून' तक (अन-नह्ल 90) तिलावत फ़रमाई, जिसका तर्जुमा यह है—

'अल्लाह हुक्म करता है इंसाफ़ करने का और भलाई करने का और क़राबत वालों के देने का और मना करता है बेहयाई से और नामाक़ूल काम से और सरकशी से, तुमको समझाता है ताकि तुम याद रखो।'

मफ़रूक़ ने कहा, ऐ क़ुरैशी ! अल्लाह की क़सम ! तुमने बड़े अच्छे अख़्लाक़ और अच्छे अमल की दावत दी है और जिस क़ौम ने आपको झुठलाया है और आपके ख़िलाफ़ एक दूसरे की मदद की है, उन्होंने झूठ बोला है।

मफ़रूक़ ने यह मुनासिब समझा कि इस बातचीत में हानी बिन क़बीसा भी उनके शरीक हो जाएं। इस वजह से उन्होंने कहा कि यह हानी बिन क़बीसा हैं जो हमारे बुज़ुर्ग और हमारे दीनी मामलों के ज़िम्मेदार हैं।

हानी ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, ऐ कुरैशी भाई! मैंने आपकी बात सुनी है और आपकी बात को मैं सच्चा मानता हूं और मेरा ख़्याल यह है कि आपकी हमारे साथ यह पहली बैठक है। इनसे पहले कभी मुलाक़ात नहीं हुई और आगे की कोई ख़बर नहीं और हमने अभी तक आपके मामले में ग़ौर नहीं किया और आपकी दावत के अंजाम के बारे में सोचा नहीं और अभी से हम अपने दीन को छोड़कर आपके दीन को अख़्तियार कर लें, तो इस फ़ैसले में ग़लती भी मुम्किन हो सकती है और यह कम अक़्ल होने और अंजाम में ग़ौर न करने की निशानी है। जल्दी के फ़ैसले में ग़लती हो जाया करती है।

और दूसरी बात यह है कि हमारे पीछे बड़ा ख़ानदान है, जिनके बग़ैर हम कोई समझौता करना पसन्द नहीं करते हैं। फ़िलहाल आप भी वापस तशरीफ़ ले जाएं और हम भी वापस जाते हैं। आप भी ग़ौर करें और हम भी ग़ौर करते हैं।

और हानी ने यह बात भी मुनासिब समझी कि इस बातचीत में मुसन्ना बिन हारिसा भी शरीक हो जाएं। चुनांचे उन्होंने कहा कि यह मुसन्ना बिन हारिसा हमारे बुज़ुर्ग और हमारे लड़ाई के मामलों के ज़िम्मेदार हैं।

इस पर मुसन्ना ने हुज़ूर सल्ल० से कहा कि मैंने आपकी बात सुनी और ऐ कुरैशी भाई! मुझे आपकी बात अच्छी लगी और आपका कलाम मुझे पसन्द आया, लेकिन मेरी तरफ़ से भी वही जवाब है जो हानी बिन क़बीसा ने जवाब दिया है। हम दो मुल्कों की सरहदों के बीच में रहते हैं, एक यमामा है और दूसरा समावा है, तो इनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

यह कौन-से दो मुल्कों की सरहदें हैं?

मुसन्ना ने कहा, एक ओर तो अरब देश की सरज़मीन और ऊंचे टीले और पहाड़ हैं और दूसरी ओर फ़ारस की सरज़मीन और किसरा की नहरें हैं और हमें वहां रहने की इजाज़त किसरा ने इस शर्त पर दी है कि हम वहां कोई नई चीज़ न चलाएं और न किसी नई तहरीक चलाने

वाले को वहां रहने दें और बहुत मुम्किन है कि आप जिस चीज़ की दावत दे रहे हैं, वह बादशाहों को नापसन्द हो। सरज़मीने अरब के आस-पास के इलाक़े का दस्तूर यह है कि ख़तावार की ख़ता माफ़ कर दी जाती है और उसका उज़्र क़ुबूल कर लिया जाता है, इसलिए अगर आप यह चाहते हैं कि हम आपको अपने इलाक़े में ले जाएं और अरबों के मुक़ाबले में हम आपकी मदद करें, तो हम इसकी ज़िम्मेदारी ले सकते हैं। (लेकिन फ़ारस वालों के मुक़ाबले में कोई ज़िम्मेदारी नहीं ले सकते हैं।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने सच्ची बात साफ़-साफ़ कह दी, तो यह तुमने बुरा जवाब नहीं दिया, लेकिन बात यह है कि अल्लाह के दीन को लेकर वही खड़ा हो सकता है जो दीन की हर ओर से हिफ़ाज़त करे।

फिर हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबू अबूबक्र रज़ि० का हाथ पकड़कर खड़े हो गए। इसके बाद हम औस और ख़ज़रज की मज्लिस में पहुंचे। हमारे इस मज्लिस से उठने से पहले ही वह हुज़ूर सल्ल० से (इस्लाम पर) बैअत हो गए।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि ये औस व ख़ज़रज वाले बड़े सच्चे और बड़े सब्र करने वाले थे।[1]

साहिबे हिदाया ने इस हदीस में यह मज़्मून भी बयान किया है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह के दीन को लेकर वही खड़ा हो सकता है, जो दीन की हर ओर से हिफ़ाज़त करे।

फिर आपने फ़रमाया, तुम मुझे ज़रा यह बताओ कि थोड़े ही अर्से में अल्लाह पाक तुम्हें उसका मुल्क और माल दे दे और उनकी बेटियों को तुम्हारा बिछौना बना दे, यानी वे तुम्हारी बीवियां और बांदियां बन जाएं, क्या तुम इसके लिए अल्लाह की तस्बीह व तक़्दीस बयान करने के लिए तैयार हो?

नोमान बिन शरीक ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, ऐ क़ुरैशी! आपकी यह बात हमें मंज़ूर है।

1. दलाइल, पृ० 96

फिर आपने ये आयतें तिलावत फ़रमाई,

إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّ نَذِيرًا ۙ وَ
دَاعِيًا إِلَى اللّٰهِ بِإِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ۝

जिसका तर्जुमा इस तरह है—

'हमने तुमको भेजा बताने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला और बुलाने वाला अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से और चमकता हुआ चिराग़।'

फिर हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबूबक्र रज़ि० का हाथ पकड़ कर खड़े हो गए।

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने हमारी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ अली! जाहिलियत के ज़माने के अरब अख़्लाक़ क्या हैं? ये कितने ऊंचे हैं। इन अख़्लाक़ की वजह से दुनिया की ज़िंदगी में एक दूसरे की हिफ़ाज़त कर लेते हैं।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, फिर हम औस व ख़ज़रज की मज्लिस में पहुंचे। हमारे उठने से पहले ही वे हुज़ूर सल्ल० से बैअत हो गए।

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि वह औस व ख़ज़रज बड़े सच्चे और बड़े सब्र करने वाले थे।

अरब के ख़ानदानों के बारे में हज़रत अबूबक्र रज़ि० की इतनी ज़्यादा जानकारी से हुज़ूर सल्ल० बहुत ख़ुश हुए।

इसके कुछ दिनों बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा के पास आकर फ़रमाया कि अल्लाह की बहुत ही तारीफ़ बयान करो, क्योंकि आज बनू रबीआ ने फ़ारस वालों पर कामियाबी हासिल कर ली है, उनके बादशाहों को क़त्ल कर दिया है, उनकी फ़ौज को बिल्कुल तबाह कर दिया है और उनकी यह सारी मदद मेरी वजह से हुई है।[1]

---

1. बिदाया भाग 3, पृ० 142, 145

दूसरी रिवायत में यह तफ़्सील भी है कि जब बनू रबीआ की फ़ारस वालों से लड़ाई हुई और फ़ुरात के क़रीब कुराक़िर नामी जगह पर दोनों फ़ौजों का मुक़ाबला हुआ, तो बनू रबीआ ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम को अपनी ख़ास निशानी बना लिया, जिसकी वजह से फ़ारस के ख़िलाफ़ अल्लाह ने उनकी मदद फ़रमाई और बनू रबीआ इस लड़ाई के बाद इस्लाम में दाख़िल हो गए।[1]

हज़रत अली रज़ियल्ललाहु अन्हु ने एक दिन अंसार की फ़ज़ीलत और उनके पुराने होने और इस्लाम में आगे बढ़ जाने का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि जो अंसार से मुहब्बत न करे और उनके हक़ों को न पहचाने, वह मोमिन नहीं है। उन्होंने इस्लाम की ऐसे देखभाल की, जैसे घोड़े के बछेरे की की जाती है। वे अपने हथियारों की महारत और अपनी बातों की ताक़त और अपने दिलों की सख़ावत की वजह से इस्लाम की देखभाल के लिए काफ़ी हो गए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज के मौसम में क़बीलों के पास तशरीफ़ ले जाकर उनको दावत दिया करते थे, लेकिन इनमें से कोई भी आपकी बात न मानता और आपकी दावत क़ुबूल न करता।

आप मजन्ना और उकाज़ और मिना के बाज़ारों में इन क़बीलों के पास तशरीफ़ ले जाते और हर साल जाकर उनको दावत दिया करते थे। आप उनके पास इतनी बार गए कि क़बीले वाले लोग (आपके जमाव से हैरान होकर) कहने लग गए कि क्या अब तक वह वक़्त नहीं आया कि आप हम लोगों से नाउम्मीद हो जाएं, यहां तक कि अल्लाह ने अंसार के इस क़बीले को नवाज़ने का इरादा फ़रमाया।

चुनांचे आपने उन अंसार पर इस्लाम को पेश फ़रमाया, जिसे उन्होंने जल्दी से क़ुबूल कर लिया और उन्होंने आपको (मदीने में) अपने पास ठहरा लिया और आपके साथ मदद और ग़मख़्वारी का मामला किया। फ़-जज़ाहुमुल्लाहु ख़ैरा० हम मुहाजिर उनके पास गए, तो उन्होंने हमें अपने साथ घरों में ठहराया और कोई भी हमें दूसरों के पास भेजने को

1. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 156, दलाइल 105

तैयार न होता, यहां तक कि कभी-कभी हमें अपना मेहमान बनाने के लिए कुरआअन्दाज़ी किया करते थे। फिर उन्होंने ख़ुशी-ख़ुशी अपने मालों का हमें अपने से भी ज़्यादा हक़दार बना दिया और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व अलैहिम अजमईन की हिफ़ाज़त के लिए अपनी जानों को क़ुरबान कर दिया।[1]

हज़रत उम्मे साद बिन्त साद बिन रबीअ रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक मक्का में रहे, क़बीलों को अल्लाह की दावत देते रहे, जिसकी वजह से आपको तक्लीफ़ें पहुंचाई जाती रहीं और बुरा-भला कहा जाता रहा, यहां तक कि अल्लाह ने अंसार के उस क़बीले को (इस्लाम की मदद की) शराफ़त से नवाज़ने का इरादा किया।

चुनांचे आप अंसार के कुछ लोगों के पास पहुंचे जो अक़बा के पास बैठे हुए (मिना में) अपने सर मूंड रहे थे। रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने (हज़रत उम्मे साद से) पूछा कि वे कौन लोग थे?

उन्होंने बताया कि वे छः या सात आदमी थे, जिनमें बनी नज्जार के तीन आदमी थे, असद बिन ज़ुरारा और अफ़रा के दो बेटे। उन्होंने बाक़ी लोगों का नाम नहीं बताया। फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने उनके पास बैठकर उनको अल्लाह की दावत दी और उनको क़ुरआन पढ़कर सुनाया।

चुनांचे उन लोगों ने अल्लाह और रसूल की बात को मान लिया और वे अगले साल भी (हज पर) आए। यह (बैअत) अक़बा-ऊला कहलाती है। इसके बाद (बैअत) अक़बा सानिया हुई।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने हज़रत उम्मे साद से पूछा कि हुज़ूर सल्ल० मक्का में कितने दिन रहे?

उन्होंने कहा, क्या तुमने अबू सिरमा क़ैस बिन अबी अनस रज़ियल्लाहु अन्हु का कलाम नहीं सुना?

---

1. दलाइल, पृ० 105

मैंने कहा, मुझे मालूम नहीं है कि उन्होंने क्या कहा है? चुनांचे उन्होंने मुझे उनका यह शेर (पद) पढ़कर सुनाया—

ثَوٰى فِيْ قُرَيْشٍ بِضْعَ عَشْرَةَ حِجَّةً يُذَكِّرُ لَوْ لَاقٰى صَدِيْقًا مُّوَاتِيًا

'आपने क़ुरैश में दस साल से ज़्यादा ठहरे और इस सारी मुद्दत में नसीहत और तब्लीग़ फ़रमाते रहे। (और आप यह चाहते थे कि) कोई साथ देने वाला दोस्त आपको मिल जाए, और भी कई शेर (पद) पढ़े, जिनका ज़िक्र हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की हदीस में 'नुसरत' के बाब में बहुत जल्द आएगा।[1]

हज़रत अक़ील बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ोहरी फ़रमाते हैं, जब मुश्रिकों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बहुत ज़्यादा सख़्ती का मामला शुरू किया तो आपने अपने चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब से फ़रमाया, ऐ मेरे चचा! अल्लाह अपने दीन की मदद ऐसी क़ौम के ज़रिए से करेंगे जिनको क़ुरैश क़ी ज़ुल्म भरी मुख़ालफ़त मामूली बात मालूम होगी और जो अल्लाह के यहां इज़्ज़त के तलबगार होंगे। आप मुझे उकाज़ के बाज़ार ले चलें और मुझे अरब के क़बीलों के ठहरने की जगह दिखाएं, ताकि मैं उनको अल्लाह की दावत दूं और इस बात की दावत दूं कि वे मेरी हिफ़ाज़त करें और मुझे अपने यहां ले जाकर रखें ताकि मैं अल्लाह की ओर से अल्लाह के पैग़ाम को इंसानों तक पहुंचा सकूं।

रिवायत करने वाले फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्बास ने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे! आप उकाज़ चलें, मैं भी आपके साथ चलता हूं। आपको क़बीलों के ठिकाने दिखाऊंगा। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने क़बीला सक़ीफ़ से शुरूआत की और फिर उस साल हज में क़बीलों को खोज कर के दावत देते रहे, फिर जब अगला साल हुआ जबकि अल्लाह ने आपको खुल्लम-खुल्ला दावत देने का हुक्म दिया तो औस और ख़ज़रज के छः आदमियों से आपकी मुलाक़ात हुई, जिनके नाम ये हैं—

1. असद बिन ज़ुरारा, 2. अबुल हैसम बिन तैहान, 3. अब्दुल्लाह

1. दलाइल, पृ० 105

बिन रुवाहा, 4. साद बिन रबीअ, 5. नोमान बिन हारिसा, और 6. उबादा बिन सामित

हुज़ूर सल्ल० की इनसे मुलाक़ात मिना के दिनों में जमरा अक़बा के पास रात के वक़्त हुई। आप उनके पास बैठे और उनको अल्लाह की और उसकी इबादत करने की और उसके दीन की मदद करने की दावत दी, जो दीन देकर अल्लाह ने अपने नबियों और रसूलों को भेजा है। उन्होंने ने दरख़्वास्त की कि हुज़ूर (आसमान से आने वाली) वह्य को उन पर पेश फ़रमाएं।

चुनांचे आपने सूर: इब्राहीम 'व इज़ क़ा-ल इ-ब राहीमु रब्बिज-अल हाज़ल ब-ल-द आमिना० से लेकर आख़िर तक पढ़कर सुनाई। जब उन्होंने क़ुरआन सुना तो उनके दिल नर्म पड़ गए और अल्लाह के सामने आजिज़ी करने लगे और (हुज़ूर सल्ल० की दावत को) क़बूल कर लिया। जब हुज़ूर सल्ल० की और उनकी बातें हो रही थीं, तो हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब पास से गुज़रे, तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की आवाज़ को पहचान लिया और फ़रमाया—

'ऐ मेरे भतीजे ! ये तुम्हारे पास कौन लोग हैं?'

आपने फ़रमाया, ऐ मेरे चचा ! ये यसरिब के रहने वाले औस व ख़ज़रज के लोग हैं। इनको भी मैंने इसी बात की दावत दी जिसकी दावत इनसे पहले दो क़बीलों को दे चुका हूं। इन्होंने मेरी दावत को क़ुबूल करके मेरी तस्दीक़ की और यह कहा कि वे मुझे अपने इलाक़े में ले जाएंगे।

चुनांचे हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब अपनी सवारी से नीचे उतरे और अपनी सवारी की टांगें बांध दीं, फिर उनसे कहा—

'ऐ औस व ख़ज़रज की जमाअत ! यह मेरा भतीजा है और यह मुझे तमाम लोगों से ज़्यादा प्यारा है। अगर तुमने इनकी तस्दीक़ की है और तुम इन पर ईमान ले आए हो और इनको अपने साथ ले जाना चाहते हो, तो मैं तुमसे अपने दिली इत्मीनान के लिए यह अह्द लेना चाहता हूं कि तुम इनको ले जाकर वहां बे यार व मददगार नहीं छोड़ोगे

और इनको धोखा नहीं दोगे, क्योंकि तुम्हारे पड़ोसी यहूदी हैं और यहूदी इनके दुश्मन हैं और मुझे ख़तरा है कि वे इनके ख़िलाफ़ तदबीरें करेंगे।

हज़रत अब्बास ने जब हज़रत साद और उनके साथियों के बारे में बे-इत्मीनानी ज़ाहिर की, तो यह बात हज़रत असद बिन ज़ुरारा पर बड़ा बोझ बन गई, इसलिए उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप हमें हज़रत अब्बास को ऐसा जवाब देने की इजाज़त दें, जिसमें ऐसी कोई बात नहीं होगी, जिससे आपको गुस्सा आए या आपको नागवार गुज़रे, बल्कि ऐसा जवाब देंगे, जिसमें आपकी दावत क़ुबूल करने की तस्दीक़ होगी और आप पर ईमान ज़ाहिर किया गया होगा।

आपने फ़रमाया, अच्छा, तुम हज़रत अब्बास को ज़रूर जवाब दो, मुझे तुम पर पूरा इत्मीनान है।

हज़रत असद बिन ज़ुरारा ने हुज़ूर सल्ल० की ओर चेहरा करके कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हर दावत का एक रास्ता होता है। किसी का रास्ता नर्म होता है, किसी का सख़्त। आज आपने ऐसी दावत दी है जो नई भी है और लोगों के लिए सख़्त और कठिन भी है। आपने हमें इस बात की दावत दी है कि हम अपना दीन छोड़कर आपके दीन की पैरवी कर लें और यह बड़ा मुश्किल काम और सख़्त घाटी है, लेकिन हमने आपकी इस बात को क़ुबूल कर लिया और आपने हमें इस बात की दावत दी है कि लोगों से दूर और क़रीब के जितने रिश्ते हैं और इनसे जिस तरह के ताल्लुक़ात हैं, इन सबको हम ख़त्म दें। (यानी दीन के मामले में सिर्फ़ आपकी मानें और किसी की न मानें), यह भी बड़ा कठिन काम और सख़्त घाटी है, लेकिन हमने इसे भी क़ुबूल किया। हमारा मज़बूत जत्था है। जहां हम रहते हैं, वहां हमारी बड़ी इज़्ज़त है और वहां हमारी सब चीज़ें हिफ़ाज़त से हैं। कोई इस बात को सोच भी नहीं सकता है कि हमारा सरदार बाहर का ऐसा आदमी बन जाए जिसको उसकी क़ौम ने अकेले और उसके चचाओं ने बेयार व मददगार छोड़ दिया हो और आपने हमको दावत दी (कि आपको हम अपना सरदार बना लें) यह भी बड़ा मुश्किल काम और सख़्त घाटी है,

लेकिन हमने आपकी इस बात को भी कुबूल कर लिया। लोगों को ये तमाम काम नापसन्द हैं, इन कामों को सिर्फ़ वही पसन्द करेगा जिसकी हिदायत का अल्लाह ने फ़ैसला कर दिया हो और जो इन कामों के अंजाम में ख़ैर चाहता हो। हमने आपके इन तमाम कामों को दिल व जान से कुबूल कर लिया है और इन्हें कुबूल करने का ज़ुबान से इक़रार कर रहे हैं और इनके पूरा करने में सारी ताक़त ख़र्च करेंगे आप और जो कुछ लाए हैं, उस पर ईमान ला रहे हैं और ख़ुदा की उस मारफ़त की हम तस्दीक़ कर रहे हैं जो हमारे दिलों में बैठ गई है। इन तमाम बातों पर हम आपसे बैअत होते हैं और हम अपने रब और आपके रब से बैअत होते हैं। अल्लाह (की मदद) का हाथ हमारे हाथों के ऊपर है और आपके ख़ून की हिफ़ाज़त के लिए हम अपने ख़ून बहा देंगे और आपकी जान को बचाने के लिए अपनी जानें कुर्बान कर देंगे और उन तमाम चीज़ों से हम आपकी हिफ़ाज़त करेंगे जिनसे हम अपनी और अपनी बीवी-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हैं। अगर हम अपने इस अह्द को पूरा करेंगे तो अल्लाह के लिए पूरा करेंगे और अगर हम इस अह्द की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेंगे, तो यह अल्लाह से ग़द्दारी होगी जो हमारी इंतिहाई बदनसीबी होगी। ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये हमारी तमाम गुज़ारिशें सच्ची हैं और (इन गुज़ारिशों को पूरा करने के लिए) हम अल्लाह ही से मदद मांगते हैं।

इसके बाद हज़रत असद ने हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब की ओर चेहरा करके कहा, ऐ वह आदमी जो अपनी बात कहकर हमारे और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान आ गया है, अल्लाह ही जानता है कि आपका इन बातों से क्या मक़्सद है? आपने यह कहा कि ये आपके भतीजे हैं और तमाम लोगों से ज़्यादा आपको महबूब हैं, तो हमने भी इनकी वजह से अपने क़रीब और दूर के तमाम रिश्तेदारों से ताल्लुक़ात तोड़ लिए हैं और हम इस बात की गवाही दे रहे हैं कि यह अल्लाह के रसूल हैं। अल्लाह ने इनको अपने पास से भेजा है, ये झूठे नहीं हैं और जो कलाम यह लाए हैं, वह इंसानों के कलाम से मिलता-जुलता नहीं है। बाक़ी आपने जो यह कहा है कि आप इनके

बारे में हमसे तब मुतमइन होंगे जब आप हमसे पक्का अह्द ले लेंगे, तो हुज़ूर सल्ल० के लिए हम से जो भी कोई पक्का अह्द लेना चाहे, हमें उससे इन्कार नहीं है, इसलिए आप जो अह्द लेना चाहते हैं, ले लें और फिर हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ मुतवज्जह होकर अर्ज़ किया—

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अपनी ज़ात के लिए आप जो अह्द हम से लेना चाहें, ले लें और अपने रब के लिए जो शर्त हम पर लगाना चाहें, लगा लें।'

आगे हदीस में इन लोगों के बैअत होने के पूरे क़िस्से का ज़िक्र हुआ है।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बाज़ार में जाकर दावत पेश करना

हज़रत रबीआ बिन इबाद रज़ियल्लाहु अन्हु जो क़बीला बनी वैल के हैं, जिन्होंने जाहिलियत का ज़माना पाया था और मुसलमान हो गए थे, वह फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जाहिलियत के ज़माने में ज़िलमजाज़ में देखा कि आप फ़रमा रहे थे—

ऐ लोगो ! ला इला-ह इल्लल्लाहु कहो, कामियाब हो जाओगे और लोग आपके आस-पास जमा थे और आपके पीछे एक रोशन चेहरे वाला भेंगा आदमी था, जिसकी दो ज़ुल्फ़ें थीं और वह यह कह रहा था (नऊज़ुबिल्लाह) कि यह बेदीन और झूठा आदमी है। जहां भी आप तशरीफ़ ले जाते, वह आपके पीछे हो लेता।

मैंने उस आदमी के बारे में पूछा (कि यह कौन है ?)

लोगों ने बताया कि उनका चचा अबू लहब है।[2]

एक रिवायत में यह भी है कि आप अबू लहब से भागते थे और वह आपका पीछा करता था।

और एक रिवायत में यह है कि लोग आप पर टूटे पड़ते थे। लोगों

---

1. दलाइल, पृ० 105
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 41, हैसमी भाग 6, पृ० 22, फ़त्ह भाग 7, पृ० 156

में से मैंने किसी को (आपके सामने) बोलते हुए नहीं देखा और आप बराबर दावत देते जाते थे, ख़ामोश नहीं होते थे।[1]

हज़रत तारिक़ बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं बाज़ार ज़िलमजाज़ में था कि अचानक एक नवजवान आदमी गुज़रा, जिसने लाल धारियों वाला जोड़ा पहन रखा था और वह यह कह रहा था, ऐ लोगो ! ला इला-ह इल्लल्लाहु कहो, कामियाब हो जाओगे। और उसके पीछे एक आदमी था, जिसने इस नवजवान की एड़ियों और पिंडुलियों को घायल कर रखा था और वह कह रहा था कि ऐ लोगो ! यह झूठा है, इसकी बात मत मानो।

मैंने पूछा, यह कौन है ?

किसी ने कहा, यह बनी हाशिम का नवजवान है जो अपने को अल्लाह का रसूल बताता है और दूसरा उसका चचा अब्दुल उज़्ज़ा (अबू लहब) है)। (आगे हदीस और भी हैं।)[2]

बनी मालिक बिन किनाना के एक आदमी बयान करते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बाज़ार ज़िलमजाज़ में फिरते हुए देखा। आप फ़रमा रहे थे, ऐ लोगो ! ला इला-ह इल्लल्लाहु कहो, कामियाब हो जाओगे।

वह साहब कहते हैं कि अबू जह्ल आप पर मिट्टी फेंकता और कहता, ख़्याल रखना, यह आदमी तुम्हें तुम्हारे दीन से हटा न दे। यह तो चाहता है कि तुम अपने ख़ुदाओं को और लात व उज़्ज़ा को छोड़ दो और हुज़ूर सल्ल० उसकी ओर कोई तवज्जोह न फ़रमाते थे।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि आपका हुलिया और उस वक़्त की हालत बयान करें।

उन्होंने कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो लाल धारियों वाली चादरें पहने हुई थीं। आपका क़द दर्मियाना और जिस्म भरा हुआ और चेहरा बहुत ख़ूबसूरत और बाल बहुत घने और आप

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 22
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 23

ख़ुद बहुत गोरे-चिट्टे थे और आपके बाल पूरे और घने थे।[1]

(और क़बीलों पर दावत पेश करने के बाब में हुज़ूर सल्ल० का उकाज़ के बाज़ार में दावत देना पहले गुज़र चुका है।)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपने क़रीबी रिश्तेदारों पर दावत को पेश करना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब यह आयत,

وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ

'और डर सुना दो अपने क़रीब के रिश्तेदारों को', उतरी, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े होकर फ़रमाया, ऐ फ़ातमा बिन्त मुहम्मद! ऐ सफ़िया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब! ऐ औलादे अब्दुल मुत्तलिब! (अपनी बेटी और फूफी को और दादा अब्दुल मुत्तलिब की औलाद को मुख़ातब करके फ़रमाया) अल्लाह से लेकर तुम्हें कुछ देने में मेरा कोई ज़ोर नहीं चलता है, हां, मेरे माल में से जो चाहो, मांग सकते हो।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब ऊपर वाली आयत उतरी, तो हुज़ूर सल्ल० ने अपने ख़ानदान वालों को जमा किया। तीस आदमी जमा हो गए। सबने खाया-पीया।

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने उनसे यह फ़रमाया, तुममें कौन ऐसा है जो क़र्ज़े की अदाएगी और मेरे वायदों के पूरा करने की ज़िम्मेदारी लेता है? जो यह ज़िम्मेदारी लेगा, वह जन्नत में मेरे साथ होगा और वह मेरे घर में मेरा क़ायम मक़ाम होगा।

एक आदमी ने कहा, आप तो समुन्दर हैं। आपकी इन ज़िम्मेदारियों को कौन निभा सकता है?

इसके बाद आपने इस बात को तीन बार पेश फ़रमाया,

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि आपने यह बात आपने घरवालों

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 21, बिदाया, भाग 3, पृ० 139
2. अहमद, मुस्लिम

पर भी पेश की, इस पर हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मैं तैयार हूं।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू अब्दुल मुत्तलिब को जमा किया या आपने उनको बुलाया और ये ऐसे लोग थे कि इनमें से हर एक सालिम बकरा खा जाता था और तीन साअ यानी साढ़े दस सेर तक पी जाता था। लेकिन आपने इनके लिए एक मुद्द (चौदह छटांक) खाना तैयार किया। उन्होंने ख़ूब सैर होकर खाना खाया। खाना उतना ही रहा, जितना पहले था, उसमें कोई कमी नहीं आई। ऐसा लग रहा था कि जैसे उसे हाथ ही न लगा हो।

फिर आपने एक छोटा प्याला मंगवाया, जिसे उन्होंने पिया तो उनका जी भर गया और वह पेय वैसे ही बाक़ी रहा, जैसे उसे किसी ने हाथ ही न लगाया हो, या उसे किसी ने पिया ही न हो।

और आपने फ़रमाया, ऐ बनू अब्दुल मुत्तलिब ! मुझे तुम्हारी तरफ़ ख़ास तौर से और तमाम इंसानों की तरफ़ आम तौर से भेजा गया है और तुम मेरा यह मोजज़ा देख चुके हो (कि तुम सब ने पेट भरकर खाया और पिया और खाने और पीने में कोई कमी नहीं आई) तुममें से कौन मेरा भाई और मेरा साथी बनने पर मुझसे बैअत करता है?

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि कोई भी खड़ा न हुआ तो मैं खड़ा हो गया, हालांकि मैं इन सब में छोटा था।

आपने (मुझसे) फ़रमाया, बैठ जाओ। आपने उनसे तीन बार यह मांग की। हर बार मैं ही खड़ा होता रहा और आप मुझे फ़रमा देते कि बैठ जाओ। तीसरी बार आपने अपना हाथ मेरे हाथ पर मारा (यानी मुझे बैअत किया)[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब यह आयत 'डराओ अपने क़रीबी रिश्तेदारों को' उतरी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अली ! बकरी की एक दस्ती का सालन बना

---

1. अहमद,
2. इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 350

लो और एक साअ यानी साढ़े तीन सेर की आटे की रोटियां तैयार कर लो और बनी हाशिम को मेरे पास बुला लाओ। उस वक़्त बनी हाशिम की तायदाद चालीस या उनतालीस थी।

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं, (बनी हाशिम के जमा होने के बाद) हुज़ूर सल्ल० ने खाना मंगवा कर उनके सामने रख दिया। उन सब ने खूब पेट भर कर खाया। हालांकि उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो अकेला ही सलिम बकरा सालन के साथ खा जाएं। फिर आपने उनको दूध का एक प्याला दिया। सब ने उसको पिया और सबका जी भर गया, तो उनमें से एक ने कहा, हमने आज जैसा जादू कभी नहीं देखा। लोगों का ख़्याल है कि यह कहने वाला अबू लहब था।

(दूसरे दिन) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया,

ऐ अली ! बकरी की एक दस्ती का सालन बना लो और एक साअ यानी साढ़े तीन सेर के आटे की रोटियां तैयार कर लो और दूध का एक बड़ा प्याला तैयार कर लो।

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने यह सारा इन्तिज़ाम कर लिया। उन्होंने पहले दिन की तरह से खूब खाया और खूब पिया और पहले दिन की तरह खाना और दूध बच गया। (उनमें बरकत हो गई) उस दिन भी एक आदमी ने कहा, हमने आज जैसा जादू कभी नहीं देखा।

(तीसरे दिन) हुज़ूर सल्ल० ने फिर फ़रमाया, ऐ अली ! बकरी की एक दस्ती का सालन बना लो और एक साअ आटे की रोटियां तैयार कर लो और दूध का एक बड़ा प्याला तैयार कर लो।

चुनांचे मैंने सब कुछ तैयार कर लिया।

आपने फ़रमाया, ऐ अली ! बनी हाशिम को मेरे पास बुला लाओ।

मैं इन सबको बुला लाया। इन सबने खाया और पिया। हुज़ूर सल्ल० ने उनके कुछ कहने से पहले ही बात शुरू कर दी और फ़रमाया, तुममें से कौन ऐसा है, जो मेरे क़र्ज़ की अदाएगी की ज़िम्मेदारी लेता है?

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं, मैं भी चुप रहा और बाक़ी लोग भी चुप रहे। आपने दोबारा यही बात इर्शाद फ़रमाई, तो मैंने कहा, ऐ

अल्लाह के रसूल ! मैं तैयार हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम ऐ अली ! तुम ऐ अली ! यानी इस काम के लिए तुम ही मुनासिब हो।[1]

इब्ने अबी हातिम ने भी इसी मफ़्हूम की हदीस बयान की और इसमें यह मज़्मून है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तुममें से कौन मेरे क़र्ज़े की अदाएगी की ज़िम्मेदारी लेता है? और मेरे बाद मेरे अह्ल में मेरा क़ायम मक़ाम बनने के लिए तैयार है?

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि सब लोग ख़ामोश रहे और हज़रत अब्बास भी इस डर की वजह से ख़ामोश रहे कि हुज़ूर सल्ल० के क़र्ज़े को अदा करने के लिए कहीं उनको सारा माल न ख़र्च करना पड़ जाए।

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं इस वजह से ख़ामोश रहा कि हज़रत अब्बास रज़ि० मुझसे उम्र में बड़े हैं और फिर ख़ामोश हैं।

फिर आपने यही बात दोबारा फ़रमाई। हज़रत अब्बास फिर ख़ामोश रहे। जब मैंने यह देखा, तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं (तैयार हूं)।

हज़रत अली फ़रमाते हैं, (मैं इस ज़िम्मेदारी के लिए तैयार तो हो गया) लेकिन मेरी शक्ल व सूरत सबसे बुरी थी और मेरी आंखें चुंधियाई हुई थीं। पेट बड़ा था, टांगें पतली थीं।[2]

यही हदीस मज्मे पर दावत पेश करने के बाब में हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत से पहले एक और तरह से गुज़र चुकी है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सफ़र में दावत पेश फ़रमाना

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु रहबर बनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रकूबा घाटी के रास्ते से लेकर गए थे। उनके बेटे कहते हैं कि मेरे वालिद ने मुझसे यह बयान फ़रमाया कि हुज़ूर—

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 302
2. इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 350-351, बिदाया, भाग 3, पृ० 39

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे यहां तशरीफ़ लाए। आपके साथ हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० की एक दूधपीती बेटी हमारे यहां दूध पीने के सिलसिले में रहती थी और हुज़ूर सल्ल० चाहते थे कि मदीना का सफ़र छोटे रास्ते से करें, तो उनसे हज़रत साद ने अर्ज़ किया कि रकूबा घाटी के नीचे से जो रास्ता जाता है, वह ज़्यादा क़रीब है, लेकिन वहां क़बीला असलम के दो डाकू रहते हैं, जिनको मुहानान कहा जाता है। अगर आप चाहें तो उनके पास से गुज़रने वाले रास्ते से सफ़र करें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इन डाकुओं वाले रास्ते से हमें ले चलो।

हज़रत साद फ़रमाते हैं कि हम उस रास्ते से चले। जब हम उनके क़रीब पहुंचे, तो उनमें से एक दूसरे से कह रहा था, लो, यह यमानी आ गया। हुज़ूर सल्ल० ने उन दोनों को दावत दी और उन पर इस्लाम को पेश फ़रमाया। वे दोनों मुसलमान हो गए।

आपने उनके नाम पूछे।

उन्होंने कहा, हम मुहानान हैं। (यानी दो गिरे-पड़े आदमी)

आपने फ़रमाया, नहीं, तुम दोनों मुकरमान हो (यानी इज़्ज़त के क़ाबिल) फिर आपने उन्हें अपने पास मदीना आने का हुक्म दिया।[1] (आगे हदीस और भी हैं)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हम एक सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। सामने से एक देहाती आया। जब वह हुज़ूर सल्ल० के क़रीब पहुंचा, तो उससे हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, कहां का इरादा है?

उसने कहा, अपने घर जा रहा हूं।

आपने फ़रमाया, क्या तुम कोई भली बात लेना चाहते हो?

उसने कहा, वह भली बात क्या है?

आपने फ़रमाया, तुम कलिमा शहादत

---

1. अहमद, भाग 4, पृ० 74, हैसमी, भाग 6, पृ० 58

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०' पढ़ लो।

उसने कहा, जो बात आप कह रहे हैं, क्या इस पर कोई गवाह है?

आपने फ़रमाया, यह पेड़ गवाह है। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उस पेड़ को बुलाया और वह पेड़ घाटी के किनारे पर था। वह पेड़ ज़मीन को फाड़ता हुआ आपके सामने आकर खड़ा हो गया। आपने उससे तीन बार गवाही तलब फ़रमाई।

उसने तीन बार गवाही दी कि हुज़ूर सल्ल० जैसे फ़रमा रहे हैं, बात वैसे ही है। फिर वह पेड़ अपनी जगह वापस चला गया।

वह देहाती अपनी क़ौम के पास वापस चला गया और जाते हुए उसने हुज़ूर सल्ल० से यह अर्ज़ किया कि अगर मेरी क़ौम वालों ने मेरी बात मान ली, तो मैं इन सबको आपके पास ले आऊंगा, वरना मैं ख़ुद आपके पास वापस आ जाऊंगा और आपके साथ रहा करूंगा।[1]

हज़रत आसिम अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० ने मक्का से मदीना को हिजरत फ़रमाई और आप ग़मीम नामी जगह पर पहुंचे तो हज़रत बुरैदा बिन हुसैब रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने उनको इस्लाम की दावत दी, वह भी मुसलमान हो गए और उनके साथ लगभग अस्सी घराने भी मुसलमान हुए। फिर हुज़ूर सल्ल० ने इशा की नमाज़ पढ़ाई और उन्होंने आपके पीछे नमाज़ अदा की।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दावत देने के लिए पैदल सफ़र फ़रमाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब अबू तालिब का इन्तिक़ाल हुआ, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 125, हैसमी, भाग 8, पृ० 292
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 242

सल्लम तायफ़ वालों को इस्लाम की दावत देने के लिए तायफ़ पैदल तशरीफ़ ले गए। आपने उनको इस्लाम की दावत दी, लेकिन उन्होंने आपकी दावत को क़ुबूल न किया। आप वहां से वापस हुए। रास्ते में एक पेड़ के साए में दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और फिर यह दुआ पढ़ी—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَشْكُوْٓ اِلَيْكَ ضُعْفَ قُوَّتِیْ وَهَوَانِیْ عَلَى النَّاسِ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ
اَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ اِلٰى مَنْ تَكِلُنِیْٓ اِلٰى عَدُوٍّ يَّتَجَهَّمُنِیْٓ اَمْ اِلٰى قَرِيْبٍ
مَلَّكْتَهٗ اَمْرِیْٓ اِنْ لَّمْ تَكُنْ غَضْبَانَ عَلَیَّ فَلَآ اُبَالِیْ غَيْرَ اَنَّ عَافِيَتَكَ
اَوْسَعُ لِیْٓ اَعُوْذُ بِوَجْهِكَ الَّذِیْٓ اَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَصَلَحَ عَلَيْهِ اَمْرُ
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اَنْ يَّنْزِلَ بِیْ غَضَبُكَ اَوْ يَحِلَّ بِیْ سَخَطُكَ لَكَ الْعُتْبٰی حَتّٰی
تَرْضٰی وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۔

अल्लाहुम-म इन्नी अश्कू इलै-क जो-फ क़ूवती व हवानी अलन्नासि अर-हमर्राहिमीन० अन-त अर-हमुर्राहिमीन इला मन तकिलुनी इला अदूव्विं-य-त-जह-हमुनी अम इला क़रीबिम मल्लक्तहू अमरी इल्लम तकुन ग़-ज़-बा-न अलय-य फ़ला उबाली ग़ै-र अन-न आफ़ि-यति-क औ-सउ ली अऊज़ु बि-वज्हि-कल्लज़ी अश-रक़-तलहुज़्ज़ुलुमात व सलु-ह अलैहि अमरुद दुनया वल-आख़िरति अंय्यन्ज़ि-ल बी ग़ज़बुक अव यहिल्-ल बी स-ख़-त-क ल-कल उत्बा हत्ता तर्ज़ा व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि०

(ऐ अल्लाह! तुझी ही से शिकायत करता हूं मैं अपनी कमज़ोरी और लोगों में ज़िल्लत और रुसवाई की। ऐ तमाम रहम करने वालों में सबसे ज़्यदा रहम करने वाले! तू अरहमुर्राहिमीन है। तू मुझे किसके हवाले करता है, किसी ऐसे दुश्मन के जो मुझे देखकर तुर्शरू होता है और मुंह चिढ़ाता है या ऐसे रिश्तेदार के जिसको तूने मुझ पर क़ाबू दे दिया। ऐ अल्लाह! अगर तू मुझसे नाराज़ नहीं, तो मुझे किसी की भी परवाह नहीं है। तेरी हिफ़ाज़त मुझे काफ़ी है। मैं आपके इस चेहरे के तुफ़ैल जिससे तमाम अंधेरियां रोशन हो गईं और जिससे दुनिया और आख़िरत के सारे काम दुरुस्त हो जाते हैं, इससे पनाह मांगता हूं कि मुझ पर तेरा ग़ुस्सा हो या तू मुसझे नाराज़ हो। तेरी नाराज़ी का उस वक़्त तक दूर करना ज़रूरी है, जब तक तू राज़ी न हो। अल्लाह के सिवा

किसी से नेकी की ताक़त नहीं मिलती।[1]

यही हदीस अल्लाह की ओर बुलाने की वजह से तक्लीफ़ें बरदाश्त करने के बाब में हज़रत ज़ोहरी वग़ैरह की रिवायत से और तफ़्सील से आएगी।

लड़ाई के मैदान में अल्लाह की ओर दावत देना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी क़ौम को दावत न दे लेते, उस वक़्त तक उनसे लड़ाई न लड़ते।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन आइज़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई फ़ौज रवाना फ़रमाते, तो उनको यह नसीहत फ़रमाते कि लोगों से मुहब्बत पैदा करो। (उनको अपने से क़रीब करो) जब तक उनको दावत न दे लो, उन पर हमला न करना, और छापा न मारना, क्योंकि धरती पर जितने कच्चे और पक्के मकान हैं (यानी जितने शहर और देहात हैं) उनके रहने वालों को तुम अगर मुसलमान बनाकर मेरे पास ले आओ, यह मुझे इससे ज़्यादा प्यारा है कि तुम उनकी औरतों और बच्चों को मेरे पास ले आओ और उनके मर्दों को क़त्ल कर दो।[3]

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी को किसी जमाअत या फ़ौज का अमीर बनाकर रवाना फ़रमाते थे, तो उसको ख़ास अपनी ज़ात के बारे में भी अल्लाह से डरने का हुक्म देते और जो मुसलमान उसके साथ हैं, उनके साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म देते और यह फ़रमाते कि जब तुम्हारा मुश्रिक दुश्मनों से सामना हो तो उनको तीन बातों में से एक की दावत

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 35
2. मुस्तदरक, मुस्नद अहमद, नस्बुर्राया भाग 2, पृ० 278, हैसमी, भाग 5, पृ० 304, कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 298, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 107
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 294, इसाबा, भाग 3, पृ० 152, तिर्मिज़ी, भाग 1, पृ० 195

देना। इन बातों में से जो बात भी वे मान लें, तुम उनसे कुबूल कर लेना और उनसे लड़ाई करने से रुक जाना। पहले उनको इस्लाम की दावत दो। अगर वे उसे मंज़ूर कर लें, तो तुम उनसे इसे कुबूल कर लो और उनसे रुक जाओ। फिर तुम उनको अपना इलाक़ा छोड़कर दारुल मुहाजिरीन यानी मदीना मुनव्वरा की ओर हिजरत कर जाने की दावत दो और उन्हें यह बतला दो कि अगर वे ऐसा करेंगे, तो उनको वे तमाम फ़ायदे हासिल होंगे जो मुहाजिर को मिलते हैं और उन पर वे तमाम ज़िम्मेदारियां होंगी जो मुहाजिरों पर होती हैं और अगर वे उसे न मानें और अपने इलाक़े में ही रहने को पसन्द करें, तो उन्हें यह बता दो कि वे देहाती मुसलमानों की तरह ही होंगे और अल्लाह के हुक्म जो आम मुसलमानों के ज़िम्मे हैं, वे उनके ज़िम्मे होंगे और उन्हें फ़ै और ग़नीमत के माल में से कोई हिस्सा न मिलेगा। हां, अगर मुसलमानों के साथ जिहाद में शरीक हुए तो हिस्सा मिलेगा।

अगर वे इस्लाम को कुबूल करने से इन्कार कर दें, तो उन्हें जिज़्या देने की दावत दो। अगर वे इसे मान जाएं, तो तुम उसे कुबूल कर लो और उनसे रुक जाओ और अगर वे इसे भी न मानें तो अल्लाह से मदद लेकर उनसे लड़ाई करो और जब तुम किसी क़िले वाले का घेराव करो और क़िले वाले तुमसे यह मांग करें कि हमें अल्लाह के हुक्म पर उतारो, तो तुम ऐसा न करना, क्योंकि तुम यही नहीं जानते हो कि उनके बारे में अल्लाह का हुक्म क्या है? बल्कि तुम उनसे अपने फ़ैसले के मानने की मांग करो। फिर तुम उनके बारे में जो चाहे फ़ैसला करो।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को एक क़ौम से लड़ाई लड़ने के लिए भेजा, फिर हज़रत अली रज़ि० के पास एक दूत भेजा और उस दूत को यह हिदायत की कि हज़रत अली को पीछे से आवाज़ न देना (बल्कि उनके क़रीब

1. अबू दाऊद, पृ० 358, मुस्लिम, भाग 2, पृ० 82, इब्ने माजा, पृ० 210, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 184, कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 297

जाकर) उनसे यह कहना कि जब तक इस क़ौम वालों को दावत न दे लें, उनसे लड़ें नहीं।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको एक रुख़ पर भेजा। फिर एक आदमी से कहा कि अली के पास जाओ और उन्हें पीछे से मत आवाज़ देना और उनको यह पैग़ाम दो कि हुज़ूर सल्ल० उन्हें अपना इन्तिज़ार करने का हुक्म दे रहे हैं और उनसे यह भी कहो कि तुम जब तक किसी क़ौम को दावत न दे लो, उनसे लड़ाई न लड़ो।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें भेजा तो उनसे फ़रमाया कि जब तक तुम किसी क़ौम को दावत न दे लो उनसे लड़ाई न लड़ो।[3]

और पीछे हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस बरवायत बुख़ारी वग़ैरह गुज़र चुकी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि० को ख़ैबर की लड़ाई के दिन फ़रमाया तुम इत्मीनान से चलते रहो, यहां तक कि उनके मैदान में पहुंच जाओ, फिर उनको इस्लाम की दावत दो और अल्लाह के जो हक़ उन पर वाजिब हैं, वह उनको बताओ। अल्लाह की क़सम! तुम्हारे ज़रिए से अल्लाह एक आदमी को हिदायत दे दे, यह तुम्हारे लिए इससे ज़्यादा बेहतर है कि तुम्हें लाल ऊंट मिल जाएं।

हज़रत फ़र्व: बिन मुसैक ग़ुतैफ़ी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या मैं अपनी क़ौम के मानने वालों को लेकर क़ौम के न मानने वालों से लड़ाई न करूं?

आपने फ़रमाया, ज़रूर करो।

फिर मेरी राय कुछ बदल गई, तो मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 305
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 297
3. नस्बुर राया, भाग 2, पृ० 378

रसूल सल्ल० ! मेरा ख़्याल है कि उनसे न लड़ूं, क्योंकि वे सबा वाले हैं। वे बड़ी इज़्ज़त और बहुत ताक़त वाले हैं।

लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने मुझे अमीर बना दिया और सबा वालों से लड़ने का हुक्म दिया।

जब मैं आपके पास से चला गया, तो अल्लाह ने सबा के बारे में कुरआन की आयतें उतारीं, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, गुतैफ़ी का क्या हुआ?

आपने मुझे बुलाने के लिए मेरे घर एक आदमी को भेजा। जब वह आदमी मेरे घर पहुंचा तो मैं घर से चल चुका था। उसने मुझे रास्ते से वापस होने को कहा।

चुनांचे मैं वापस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया। आप बैठे हुए थे और आपके चारों ओर सहाबा भी बैठे हुए थे। आपने मुझसे फ़रमाया, क़ौम को दावत दो, इनमें से जो मान जाए, उसे कुबूल कर लो और जो न माने, उसके बारे में, जब तक मुझे ख़बर न हो जाए, जल्दी न करना।

लोगों में से एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! सबा क्या चीज़ है? कोई जगह है या कोई औरत?

आपने फ़राया, सबा तो अरब का एक मर्द था, जिसके दस बेटे हुए। उनमें से छः यमन में आबाद हुए और चार शाम में। जो शाम में आबाद हुए, उनके नाम लख्म और जुज़ाम और ग़स्सान और आमिला हैं और यमन में आबाद होने वालों के नाम अज़्द और किन्दा और हिमयर और अशअरीयून और अनमार और मुज़हिज हैं।

उस आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल ! अनमार कौन हैं?

आपने फ़रमाया, अनमार वे हैं जिनमें ख़सअम और बजीला क़बीला के लोग हैं।[1]

हज़रत फ़रवा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 154, कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 260

अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या मैं अपनी क़ौम के मानने वालों को लेकर न मानने वालों से लड़ूं?

आपने फ़रमाया, हां, अपनी क़ौम के मानने वालों को लेकर न मानने वालों से लड़ो।

जब मैं वापस हुआ, तो आपने मुझे बुलाया और फ़रमाया कि जब तक तुम उनको इस्लाम की दावत न दे लो, उनसे लड़ना नहीं।

मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! सबा क्या चीज़ है? क्या वह कोई घाटी है या कोई पहाड़ है या और कोई चीज़ है?

आपने फ़रमाया, नहीं, सबा तो एक आदमी था, जिसके दस बेटे हुए। आगे हदीस और भी हैं।[1]

हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे यमन भेजा और फ़रमाया कि अरब के जिस क़बीले पर तुम्हारा गुज़र हो, और तुम्हें उस क़बीले से अज़ान की आवाज़ सुनाई दे, तो उनसे छेड़छाड़ न करना और जिस क़बीले से तुम्हें अज़ान की आवाज़ सुनाई न दे, उनको इस्लाम की दावत देना।[2]

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि लात और उज़्ज़ा बुतों के पास रहने वालों में से कुछ लोग क़ैदी बनाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाए गए। फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने (लाने वालों से) पूछा, क्या तुमने इनको इस्लाम की दावत दी थी?

उन्होंने अर्ज़ किया, जी नहीं।

आपने उन क़ैदियों से पूछा, क्या इन्होंने तुम्हें इस्लाम की दावत दी थी?

उन्होंने कहा, नहीं।

---

1. इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 531
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 307

आपने फ़रमाया, इनका रास्ता छोड़ दो, यहां तक कि अपने अम्न की जगह पहुंच जाएं। फिर आपने ये दो आयतें तिलावत फ़रमाईं—

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ۝

'हमने तुझको भेजा बताने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला और बुलाने वाला अल्लाह की ओर उसके हुक्म से और चमकता हुआ चिराग़।'

وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُم بِهِ وَمَن بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ

'और उतरा है मुझ पर यह क़ुरआन, ताकि तुमको इससे ख़बरदार करूं और जिसको यह पहुंचे। क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ माबूद और भी हैं।'[1] (आख़िर आयत तक)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लात व उज़्ज़ा के पास रहने वालों की ओर एक फ़ौज भेजी, जिन्होंने अरब के क़बीले पर रात को अचानक हमला किया और उनके तमाम लड़ने वालों को और उनके बाल-बच्चों को क़ैद कर लिया (और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लेकर आए)

इन क़ैदियों ने (हुज़ूर सल्ल० से) कहा, इन्होंने दावत दिए बग़ैर हमला किया है।

हुज़ूर सल्ल० ने लश्कर वालों से पूछा। उन्होंने क़ैदियों की बात की तस्दीक़ की। आपने फ़रमाया, उनको उनकी अम्न की जगह में वापस पहुंचाओ, फिर इनको दावत दो।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लोगों को अल्लाह और रसूल की ओर दावत देने के लिए भेजना

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब अंसार ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात सुन ली और इस पर उन्हें

---

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 107
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 297

यक़ीन आ गया और उनके दिल आपकी दावत से पूरी तरह मुतमइन हो गए, तो उन्होंने आपकी तस्दीक़ की और आप पर ईमान ले आए और ये लोग (सारी दुनिया के लिए) भलाई और ख़ैर की वजह बने और इन्होंने हज के मौसम के मौक़े पर आपकी ख़िदमत में हाज़िर होने का वायदा किया और अपनी क़ौम में वापस चले गए और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में यह पैग़ाम भेजा कि आप हमारे पास अपने यहां से एक ऐसा आदमी भेज दें, जो लोगों को अल्लाह की किताब की दावत दे, क्योंकि आदमी के आने से लोग बात जल्दी मान लेंगे।

तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० को उनके यहां भेज दिया।

हज़रत मुस्अब रज़ियल्लाहु अन्हु क़बीला बनू अबदुद्दार में से थे। हज़रत मुस्अब क़बीला बनी ग़नम में हज़रत असअद बिन ज़ुरारह रज़ियल्लाहु अन्हु के पास ठहरे। वह लोगों को हुज़ूर सल्ल० की बातें बताते, क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर सुनाते।

फिर हज़रत मुस्अब रज़ि० हज़रत साद बिन मुआज़ के पास ठहरकर दावत के काम में लगे रहे और अल्लाह उनके हाथों लोगों को हिदायत देते रहे, यहां तक कि अंसार के हर घर में कुछ न कुछ लोग मुसलमान हो गए और उनके सरदारों ने भी इस्लाम क़ुबूल कर लिया, और हज़रत अम्र बिन जमूह भी मुसलमान हो गए और उनके बुत तोड़ दिए गए।

हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के पास वापस चले गए और उनको मुक़री (पढ़ाने वाले) के नाम से पुकारा जाता था।[1]

तबरानी में हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु की यह हदीस और ज़्यादा तफ़्सील से आई है और इसमें हुज़ूर सल्ल० के अंसार पर दावत को पेश फ़रमाने का ज़िक्र भी है, जैसे कि अमरे अंसार के शुरू के बाब में इनशाअल्लाह आएगा।

इस हदीस में यह मज़्मून है कि अंसार अपनी क़ौम में वापस चले

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 107

गए और ख़ुफ़िया तौर पर दावत देने लगे। उनको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़बर दी और जो दीन देकर अल्लाह ने आपको भेजा है, उसके बारे में उनको बताया और क़ुरआन सुनाकर हुज़ूर सल्ल० की और दीन की दावत दी।

चुनांचे अंसार के हर घर में कुछ न कुछ लोग मुसलमान हो गए। फिर उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में यह पैग़ाम भेजा कि आप हमारे पास अपने यहां से एक ऐसा आदमी भेज दें जो लोगों को अल्लाह की किताब सुनाकर अल्लाह की ओर बुलाए, क्योंकि आदमी के आने से लोग बात जल्दी मान लेंगे।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने क़बीला बनी अब्दुद्दार के हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० को उनके यहां भेज दिया और वह क़बीला बनी ग़नम में हज़रत असद बिन ज़ुरारा के पास ठहरे और लोगों को दावत देने में लग गए। इस्लाम फैलने लगा और इस्लाम वाले ज़्यादा होने लगे और वे ख़ुफ़िया तौर पर दावत दे रहे थे।

फिर हज़रत उर्व: ने हज़रत मुस्अब के हज़रत साद बिन मुआज़ को दावत देने का और हज़रत साद के मुसलमान होने और क़बीला बनू अशहल के मुसलमान होने का ज़िक्र किया है, जैसे कि हज़रत मुस्अब के दावत देने के बाब में आगे आएगा।

फिर हज़रत उर्व: ने फ़रमाया कि बनी नज्जार ने हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० को अपने यहां से चले जाने को कहा और (इस बारे में) उनके मेज़बान हज़रत असअद बिन ज़ुरारा पर उन्होंने सख़्ती की। चुनांचे हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० के यहां मुंतक़िल हो गए।

वह दावत के काम में लगे रहे और अल्लाह उनके हाथों लोगों को हिदायत देते रहे, यहां तक कि अंसार के घर में कुछ न कुछ लोग ज़रूर मुसलमान हो गए और उनके सरदार और शरीफ़ लोग मुसलमान हो गए। हज़रत अम्र बिन जमूह भी मुसलमान हो गए और उनके बुत तोड़ दिए गए।

मुसलमान ही मदीना में ज़्यादा इज़्ज़तदार गिने जाने लगे और उनका मामला ठीक हो गया और हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस चले गए और उनको मुक़री (पढ़ाने वाले) के नाम से पुकारा जाता था।[1]

अबू नुऐम ने ज़ोहरी से हुलीया में यह रिवायत इस तरह बयान की है कि अंसार ने हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा और हज़रत राफ़ेअ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हुमा को हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में यह पैग़ाम देकर भेजा कि आप अपने यहां से हमारे पास एक ऐसा आदमी भेज दें जो लोगों को अल्लाह की किताब सुनाकर अल्लाह की दावत दे, क्योंकि उनकी बात ज़रूर क़बूल कर ली जाएगी।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत मुस्अब बिन उमैर को अंसार के यहां भेज दिया। आगे का मज़्मून पिछली रिवायत की तरह है।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरी क़ौम के पास भेजा ताकि मैं उनको अल्लाह की दावत दूं और उन पर इस्लाम के हुक्मों को पेश करूं।

चुनांचे जब मैं अपनी क़ौम के पास पहुंचा तो वे अपने ऊंटों को पानी पिला चुके थे और उनका दूध निकालकर पी चुके थे। जब उन्होंने मुझे देखा तो (ख़ुश होकर) कहा, सुदी बिन अजलान को ख़ुश आमदीद हो। (सुदी हज़रत अबू उमामा का नाम है)

उन्होंने यह भी कहा कि हमें यह ख़बर पहुंची है कि तुम उस आदमी की ओर झुक गए हो।

मैंने कहा, नहीं, मैं तो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया हूं। और मुझे अल्लाह के रसूल ने तुम्हारे पास भेजा है, ताकि मैं तुम पर इस्लाम और उसके हुक्म पेश करूं।

फ़रमाते हैं कि हमारी ये बातें हो ही रही थीं कि वह खाने का एक बड़ा प्याला लेकर आए और उसे बीच में रखकर सब उसके आस-पास

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 42, दलाइल, पृ० 108, हुलीया भाग 1, पृ० 107

जमा हो गए और उसमें खाने लगे और मुझसे कहा, ऐ सुदी ! तुम भी आओ।

मैंने कहा, तुम्हारा भला हो। मैं तुम्हारे पास ऐसी ज़ातेगरामी के पास से आ रहा हूं जो अल्लाह का उतारा हुआ यह हुक्म बताते हैं कि जो जानवर ज़िब्ह न किया जाए, वह तुम पर हराम है।

उन्होंने पूछा कि इसके बारे में उन्होंने क्या बताया है ?

मैंने कहा, यह आयत उतरी है—

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ
وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ

'हराम हुआ तुम पर मुर्दा जानवर, लहू और गोश्त सूअर का' से लेकर 'और यह कि तक़्सीम करो जुए के तीरों से' तक

चुनांचे मैं उनको इस्लाम की दावत देने लगा, लेकिन वे इंकार करते रहे।

मैंने कहा, तुम्हारा भला हो, ज़रा मुझे पानी ला दो, मैं बहुत प्यासा हूं।

उन्होंने कहा, नहीं, हम तुम्हें पानी नहीं देंगे, ताकि तुम ऐसे ही प्यासे मर जाओ।

मेरे पास एक पगड़ी थी। मैंने उसमें अपना सर लपेट लिया और मैं कड़ी गर्मी में रेत पर लेट गया। मेरी आंखें लग गईं। मैंने सपने में देखा कि एक आदमी मेरे पास शीशे का गिलास लेकर आया। उस गिलास से ख़ूबसूरत गिलास किसी ने न देखा होगा और उसमें एक ऐसी पीने की चीज़ है जिससे ज़्यादा लज़्ज़त वाली और लुभावनी चीज़ किसी ने न देखी होगी। उसने वह गिलास मुझे दे दिया, जिसे मैंने पी लिया। जब मैं पी चुका तो मेरी आंख खुल गई और अल्लाह की क़सम ! इसके बाद मुझे कभी प्यास नहीं लगी और अब मुझे यह भी नहीं पता कि प्यास क्या चीज़ होती है ?[1]

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 387, कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 94

अबू याली ने यह हदीस थोड़े में बयान की है, जिसके आख़िर में यह है कि मेरी क़ौम के एक आदमी ने उनसे कहा कि तुम्हारी क़ौम के सरदारों में से एक आदमी आया है और तुमने उसका कोई सत्कार नहीं किया। चुनांचे वे मेरे पास दूध लेकर आए।

मैंने उनसे कहा, मुझे इस दूध की ज़रूरत नहीं। (और मैंने उनको सपने वाली बात बताई) फिर अपना (भरा हुआ) पेट उनको दिखाया, जिस पर वे सब मुसलमान हो गए।

बैहक़ी ने दलाइल में जो रिवायत नक़ल की है, उसमें यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको उनकी क़ौम बाहिला की ओर भेजा था।[1]

हज़रत अह्नफ़ बिन क़ैस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा था कि इतने में बनू लैस के एक आदमी ने मेरा हाथ पकड़कर कहा—क्या मैं तुमको एक ख़ुशख़बरी न सुना दूं?

मैंने कहा, ज़रूर।

उसने कहा, क्या तुम्हें याद है कि मुझे हुज़ूर सल्ल० ने तुम्हारी क़ौम के पास भेजा था, मैं उन पर इस्लाम को पेश करने लगा और उनको इस्लाम की दावत देने लगा तो तुमने कहा था कि तुम हमें भलाई की दावत दे रहे हो और भली बात का हुक्म कर रहे हो और वह (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भलाई की दावत दे रहे हैं।

तो हुज़ूर सल्ल० को जब तुम्हारी यह बात पहुंची, तो आपने फ़रमाया,

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْاَحْنَفِ

ऐ अल्लाह! अह्नफ़ की मग़्फ़िरत फ़रमा।

हज़रत अह्नफ़ फ़रमाया करते थे कि मेरे पास ऐसा कोई अमल नहीं है, जिस पर मुझे हुज़ूर सल्ल० की इस दुआ से ज़्यादा उम्मीद हो।[2]

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 182, हैसमी, भाग 9, पृ० 387, मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 641
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 100, मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 614

इमाम अहमद और इमाम तबरानी ने इस हदीस को इस तरह बयान किया है कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपकी क़ौम बनू साद के पास इस्लाम की दावत देने के लिए भेजा, तो तुमने (दावत को सुनकर) कहा था कि वह (हुज़ूर सल्ल०) भलाई की बात ही कर रहे हैं या कहा था कि मैं अच्छी बात ही सुन रहा हूं।

फिर मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस आकर तुम्हारी बात बताई, जिस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! अह्नफ़ की मग़फ़िरत फ़रमा।'

हज़रत अह्नफ़ ने फ़रमाया, मुझे हुज़ूर सल्ल० की इस दुआ पर जितनी उम्मीद है, उतनी और किसी अमल पर नहीं है।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न अपने सहाबा में से एक आदमी को जाहिलियत के ज़माने के एक बड़े सरदार के पास अल्लाह की दावत देने के लिए भेजा।

(दावत को सुनकर) उस सरदार ने कहा, तुम मुझे अपने जिस रब की दावत दे रहे हो, वह किस चीज़ का बना हुआ है, लोहे या तांबे का, चांदी या सोने का?

उन सहाबी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर सारा क़िस्सा सुनाया।

हुज़ूर सल्ल० ने उनको उनके पास (दावत देने के लिए) दोबारा भेज दिया। इस बार भी उसने वही बात कही।

उन्होंने आकर हुज़ूर सल्ल० को फिर बता दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने तीसरी बार फिर उनको उसके पास भेजा। उसने फिर वही बात कही। उन्होंने आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फिर बता दिया, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने उस सरदार पर बिजली गिराई, जिसने उसे जला दिया। चुनांचे यह आयत उतरी—

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 2

وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ۝

'और भेजता है कड़क बिजलियां, फिर डालता है जिस पर चाहे और ये लोग झगड़ते हैं अल्लाह की बात में और उसकी पकड़ सख़्त है।[1]

अबू याली और बज़्ज़ार की एक हदीस इसी जैसी और है जिसमें यह मज़्मून है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी को अरब के फ़िरऔनों में से एक फ़िरऔन की ओर भेजा तो उन सहाबी ने उस आदमी के बारे में यह कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! वह तो फ़िरऔन से भी ज़्यादा सरकश है।

उस रिवायत में यह भी है कि उन सहाबी ने उस आदमी के पास जाकर तीसरी बार फिर अपनी बात दोहराई (यानी तीसरी बार फिर उसको अल्लाह की दावत दी।)

अभी यह सहाबी उस आदमी से बात कर ही रहे थे कि अल्लाह ने उस आदमी के सर पर एक बादल भेज, जो ज़ोर से गरजा। फिर उस बादल में से एक बिजली उस आदमी पर गिरी जिसने उसकी खोपड़ी को उड़ा दिया।[2]

हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस 'पहले लड़ाई के मैदान में अल्लाह की दावत देने के बाब में' पिछले पन्नों में गुज़र चुकी है, वह फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे यमन भेजा और फ़रमाया कि अरब के जिस क़बीले पर तुम्हारा गुज़र हो और तुम्हें उस क़बीले से अज़ान की आवाज़ सुनाई दे, तो उनसे छेड़छाड़ न करना और जिस क़बीले से तुम्हें अज़ान की आवाज़ सुनाई न दे, उनको इस्लाम की दावत देना और हुज़ूर सल्ल० का हज़रत अम्र बिन मुर्रा को उनकी क़ौम की ओर भेजने का क़िस्सा बहुत जल्द आएगा।

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 42
2. अवसत, तबरानी

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अल्लाह की दावत देने के लिए जमाअतों को भेजना

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को बुलाकर फ़रमाया, तुम तैयारी कर लो, क्योंकि मैं तुम्हें एक जमाअत के साथ भेजना चाहता हूं।

इसके बाद लम्बी हदीस आई है जिसमें यह मज़्मून है कि फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रवाना हुए और अपने साथियों के पास पहुंच गए।

फिर ये लोग वहां से आगे चले, यहां तक कि दूमतुल जन्दल नामी जगह पर पहुंच गए। (यह मदीना मुनव्वरा और शाम देश के बीच एक क़िला था, जिहसके साथ कई बस्तियां थीं)

चूंकि जब दूमा में हज़रत अब्दुर्रहमान दाख़िल हुए, तो उन्होंने दूमा वालों को तीन दिन इस्लाम की दावत दी। तीसरे दिन असबअ बिन अम्र कल्बी रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमान हो गए, जो कि ईसाई थे और अपनी क़ौम के सरदार थे।

इसके बाद हज़रत अब्दुर्रहमान ने क़बीला जुहैना के एक आदमी हज़रत राफ़ेअ बिन मकीस रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में एक ख़त भेजा, जिसमें तमाम हालात लिखे, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनको जवाब में यह लिखा—

'तुम असबग़ की बेटी से शादी कर लो।' चुनांचे उन्होंने उससे शादी कर ली। हज़रत असबग़ की उस बेटी का नाम तुमाज़िर है जिनसे हज़रत अब्दुर्रहमान के बेटे अबू सलमा पैदा हुए।[1]

हज़रत मुहम्मद अब्दुर्रहमान तमीमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा, ताकि वह अरबों को इस्लाम की ओर जल्दी आने की दावत दें, चूंकि उनके वालिद आस बिन वाइल की वालिदा

1. इसाबा, भाग 1, पृ० 108

यानी उनकी दादी क़बीला बनू बली से थीं, इसलिए उन्हें क़बीला बनू बली की ओर भेजा। आप इस ख़ानदानी रिश्तेदारी की वजह से उस क़बीला को मालूम करना और उनसे जोड़ बिठाना चाहते थे।

हज़रत अम्र इलाक़ा जुज़ाम के सलासिल नाम के एक सोत पर पहुंचे। इसी सोत की वजह से इस ग़ज़्वे का नाम ग़ज़्वा ज़ातुस्सलासिल मशहूर हो गया।

जब यह वहां पहुंचे और उन्हें ज़्यादा ख़तरा महसूस हुआ तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आदमी भेजकर और मदद तलब की।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उबैदा बिन जर्राह को शुरू के मुहाजिरों के साथ उनके पास भेजा, जिनमें हज़रत अबूबक्र रज़ि० व उमर रज़ि० भी थे।

(आगे हदीस और भी है जो इमारत के बाब में आगे इंशाअल्लाह आएगी।)[1]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को इस्लाम की दावत देने के लिए यमन भेजा। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के साथ जाने वाली जमाअत में मैं भी था। हम छः महीने वहां ठहरे। हज़रत ख़ालिद रज़ि० उनको दावत देते रहे, लेकिन उन्होंने इस दावत को क़ुबूल न किया।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को वहां भेजा और उनसे फ़रमाया कि हज़रत ख़ालिद रज़ि० को तो वापस भेज दें और उनके साथियों में से जो हज़रत अली रज़ि० के साथ वहां रहना चाहें, वे वहां रह जाएं।

चुनांचे हज़रत बरा फ़रमाते हैं कि मैं भी उन लोगों में था जो हज़रत अली रज़ि० के साथ ठहर गए। जब हम यमन वालों के बिल्कुल नज़दीक पहुंचे तो वह भी निकलकर हमारे सामने आ गए।

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 373

हज़रत अली रज़ि० ने आगे बढ़कर हमें नमाज़ पढ़ाई। फिर उन्होंने हमारी एक सफ़ बनाई और हमसे आगे खड़े होकर उनको हुज़ूर सल्ल० का ख़त पढ़कर सुनाया। चुनांचे क़बीला हमदान सारा ही मुसलमान हो गया। हज़रत अली रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में क़बीला हमदान के मुसलमान होने की ख़ुशख़बरी का ख़त भेजा।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह ख़त पढ़ा तो (ख़ुशी की वजह से) फ़ौरन सज्दा में गिर गए। फिर आपने (सज्दे से) सर उठाकर क़बीला हमदान को दुआ दी कि हमदान पर सलामती हो, हमदान पर सलामती हो।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को बनू हारिस बिन काब के पास नजरान भेजा और उनसे फ़रमाया कि क़बीला बनू हारिस से लड़ने से पहले उनको तीन दिन इस्लाम की दावत देना। फिर अगर वे इस्लाम की दावत को क़ुबूल कर लें तो तुम भी उसके इस्लाम लाने को मान लेना और अगर वे इस दावत को क़ुबूल न करें, तो फिर तुम उनसे लड़ाई करना।

चुनांचे हज़रत ख़ालिद मदीना से रवाना हुए और क़बीला बनू हारिस के पास पहुंच गए तो हज़रत ख़ालिद ने हर ओर सवारों को गश्त करने के लिए भेज दिया, जो यह कहते हुए इस्लाम की दावत दे रहे थे—

اَيُّهَا النَّاسُ اَسْلِمُوْا تَسْلَمُوْا

'ऐ लोगो ! इस्लाम ले आओ, सलामती पा लोगे।'

चुनांचे वे सब लोग मुसलमान हो गए और जिस इस्लाम की उन्हें दावत दी गई थी, उसमें वह दाख़िल हो गए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ालिद को हुक्म दिया था कि अगर क़बीला बनू हारिस मुसलमान हो जाएं और लड़ाई न लड़ें तो हज़रत ख़ालिद रज़ि० उनमें ठहरकर उनको इस्लाम और क़ुरआन व हदीस सिखाएं।

---

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 105

चुनांचे हज़रत ख़ालिद उनमें ठहरकर इस्लाम और क़ुरआन व हदीस सिखाने लगे, फिर हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ख़त भेजा, जिसका मज़्मून यह था—

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'बख़िदमत जनाब हज़रत नबी रसूलुल्लाह मिन जानिब ख़ालिद बिन वलीद।

अस्सलामु अलै-क या रसूलल्लाह व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

मैं आपके सामने उस अल्लाह की तारीफ़ करता हूं जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। इसके बाद, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैक! आपने बनू हारिस बिन काब की तरफ़ मुझे भेजा था और आपने मुझसे फ़रमाया था कि जब मैं उनके पास पहुंच जाऊं तो उनसे तीन दिन न लड़ूं बल्कि उनको इस्लाम की दावत दूं और अगर वे मुसलमान हो जाएं तो उनके इस्लाम को मान लूं। उनको इस्लाम के हुक्म और क़ुरआन व हदीस सिखाऊं और अगर वे मुसलमान न हों तो उनसे लड़ूं।

चुनांचे जैसे अल्लाह के रसूल का हुक्म था, मैंने उनके पास पहुंचकर उनको तीन दिन इस्लाम की दावत दी और उनमें गश्त करने के लिए सवारों की जमाअतों को भेज दिया, जो यों दावत देते थे—

'ऐ बनू हारिस! मुसलमान हो जाओ, सलामती पा लोगे।'

चुनांचे वे मुसलमान हो गए और वे लड़े नहीं और अब मैं उनमें ठहरा हुआ हूं और जिन कामों के करने का अल्लाह ने उनको हुक्म दिया है, उनको इन कामों का हुक्म दे रहा हूं और जिन कामों से अल्लाह ने रोका है, उनको इन कामों से रोक रहा हूं और उनको इस्लाम के हुक्म और हुज़ूर सल्ल० की सुन्नत सिखा रहा हूं। अब आगे क्या करना है। मैं इसके बारे में अल्लाह के रसूल सल्ल० के पत्र का इन्तिज़ार कर रहा हूं।

वस्सलामु अलै-क या रसूलल्लाहि व रहमतुल्लाहि व ब-र-कातुहू

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ालिद रज़ि० को यह जवाब भेजा—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

'मुहम्मद नबी रसूलुल्लाह की ओर से ख़ालिद बिन वलीद के नाम।'

सलामुन अलैक ! मैं तुम्हारे सामने उस अल्लाह की तारीफ़ करता हूं जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। अम्मा बादु ! तुम्हारा ख़त तुम्हारे क़ासिद के साथ मेरे पास पहुंचा, जिससे यह मालूम हुआ कि बनू हारिस बिन काब तुम्हारे लड़ने से पहले ही मुसलमान हो गए और उन्होंने तुम्हारी इस्लाम की दावत को क़ुबूल कर लिया और कलिमा शहादत—

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

'अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०' पढ़ लिया और अल्लाह ने उनको अपनी हिदायत से नवाज़ दिया। इसलिए अब तुम उनको ख़ुशख़बरियां सुनाओ, अल्लाह के अज़ाब से डराओ, फिर तुम वापस आ जाओ और तुम्हारे साथ एक प्रतिनिधिमंडल भी यहां आए। वस्सलामु अलैक व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू०

चुनांचे हज़रत ख़ालिद रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस आ गए और उनके साथ बनू हारिस बिन काब का प्रतिनिधिमंडल भी आया। जब वे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए और आपने उनको देखा तो आपने फ़रमाया, ये कौन लोग हैं, जो हिन्दुस्तान के आदमी मालूम होते हैं। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये बनू हारिस बिन काब हैं। जब वे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया और कहा कि हम इस बात की गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं है।

आपने फ़रमाया, मैं भी इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूं।

फिर आपने फ़रमाया कि तुम वही लोग हो, जिनको जब धक्का दिया जाए, जब वे काम के लिए आगे बढ़ते हैं।

सब चुप रहे, किसी ने कोई जवाब न दिया।

आपने दूसरी बार, तीसरी बार पूछा। फिर भी किसी ने कोई जवाब न दिया।

फिर आपने चौथी बार पूछा, तो हज़रत यज़ीद बिन अब्दुल मदान ने कहा, जी हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम ही वे लोग हैं जिनको जब धक्का दिया जाए, जब वे काम के लिए आगे बढ़ते हैं। यह बात उन्होंने चार बार कही (क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने बार-बार पूछा था)।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर हज़रत ख़ालिद मुझे यह न लिखते कि तुम मुसलमान हो गए हो और तुमने लड़ाई नहीं की है, तो आज मैं तुम्हारे (सर कटवा कर) तुम्हारे पैरों तले डलवा देता।

हज़रत यज़ीद बिन अब्दुल मदान ने अर्ज़ किया, हज़रत (अपने मुसलमान होने के बारे में) हमने न आपकी तारीफ़ की है और न हज़रत ख़ालिद की।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, फिर तुमने किसकी तारीफ़ की है ?

उन सबने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! हमने उस अल्लाह की तारीफ़ की है, जिसने आपके ज़रिए हमें हिदायत से नवाज़ा।

आपने फ़रमाया, तुम ठीक कहते हो।

फिर आपने फ़रमाया, जाहिलियत के ज़माने में तुम अपने मुक़ाबले के दुश्मन पर किस वजह से ग़ालिब आते थे ?

उन्होंने कहा, हम तो किसी पर ग़ालिब नहीं आते थे।

आपने फ़रमाया, क्यों नहीं ? तुम लोग तो अपने मुक़ाबले के दुश्मन पर ग़ालिब आ जाया करते थे।

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! हम अपने मुक़ाबले के दुश्मन पर इस बात की वजह से ग़ालिब आते थे कि हम एक रहते थे और एक दूसरे से अलग नहीं होते थे और किसी पर ज़ुल्म करने में पहल नहीं करते थे। आपने फ़रमाया, तुम ठीक कहते हो।

फिर आपने हज़रत क़ैस बिन हुसैन को उनका अमीर मुक़र्रर फ़रमा दिया।[1]

---

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 98, इसाबा, भाग 1, पृ० 660

इस्लाम के फ़र्ज़ों की दावत देना

हज़रत जरीर बन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आदमी भेजकर मुझे बुलवाया (और जब मैं ख़िदमत में हाज़िर हो गया) तो आपने फ़रमाया, ऐ जरीर! तुम किस वजह से आए हो?

मैंने अर्ज़ किया, आपके हाथ पर मुसलमान होने के लिए आया हूं। फिर आपने मुझ पर एक चादर डाल दी और अपने सहाबा की ओर मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि जब तुम्हारे पास किसी क़ौम का उम्दा अख़्लाक़ वाला बेहतरीन आदमी आ जाए, तो तुम उसका इकराम करो। (जैसे मैंने जरीर का किया)

फिर आपने फ़रमाया, ऐ जरीर! मैं तुम्हें इस बात की दावत देता हूं कि तुम यह गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूं और इस बात की दावत देता हूं कि तुम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और तक़्दीर पर ईमान लाओ और जो कुछ भला या बुरा है, वह अल्लाह की ओर से है और इस बात की दावत देता हूं कि तुम फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ो और फ़र्ज़ ज़कात अदा करो।

चुनांचे मैंने ऐसा ही किया। इसके बाद जब भी आप मुझे देखते, तो मुस्करा देते।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन भेजा तो उनको यह हिदायतें दीं कि तुम ऐसी क़ौम के पास जा रहे हो जो अह्ले किताब है। जब तुम उनके पास पहुंच जाओ तो उनको इस बात की दावत देना कि वे यह गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। अगर वे तुम्हारी यह बात मान लें तो फिर उनको यह बताना कि अल्लाह ने उन पर दिन-रात में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। अगर वे तुम्हारी यह बात भी मान लें, तो फिर उनको

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 78, कंज़ुल उम्माल भाग 7, पृ० 19

यह बताना कि अल्लाह ने उन पर ज़कात फ़र्ज़ की है जो उनके मालदारों से लेकर उनके फ़क़ीरों को दे दी जाएगी। अगर वे तुम्हारी यह बात भी मान लें तो फिर तुम उनके अच्छे माल लेने से बचना और मज़्लूम की बद-दुआ से भी बचना, क्योंकि इसकी बद-दुआ और अल्लाह के बीच कोई चीज़ रुकावट नहीं बनती।[1]

हज़रत ख़ौशब ज़ी ज़ुलैम फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ग़लबा दे दिया, तो मैंने अब्देशर के साथ आपकी ख़िदमत में चालीस सवारों की एक जमाअत भेजी। वह मेरा ख़त लेकर मदीना हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए। वहां जाकर अब्देशर ने पूछा, आप लोगों में मुहम्मद कौन हैं?

सहाबा ने कहा, यह हैं।

अब्देशर ने (हुज़ूर सल्ल० से) अर्ज़ किया, आप हमारे पास क्या लेकर आए हैं? अगर वह हक़ होगा तो हम आपकी पैरवी कर लेंगे।

आपने फ़रमाया, तुम नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और इंसानों के ख़ून की हिफ़ाज़त करो और नेकियों का हुक्म दो और बुराइयों को मिटाओ।

अब्देशर ने कहा, आपकी ये तमाम बातें बहुत अच्छी हैं। आप हाथ बढ़ाएं ताकि मैं (इस्लाम लाने के लिए) आपसे बैअत हो जाऊं।

आपने फ़रमाया, तुम्हारा क्या नाम है?

उन्होंने कहा, मेरा नाम अब्देशर है।

आपने फ़रमाया, नहीं, बल्कि तुम अब्दे ख़ैर हो और हुज़ूर सल्ल० ने उनको इस्लाम पर बैअत फ़रमाया। हौशब ज़ी ज़ुलैम के ख़त का जवाब लिखकर उनके हाथ हौशब को भेजा, जिस पर हज़रत हौशब ईमान ले आए।[2]

---

1. बुख़ारी, बिदाया, भाग 5, पृ० 100
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 325, कंज़, भाग 1, पृ० 84, इसाबा, भाग 1, पृ० 382

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि क़ौम अब्दुल क़ैस का वफ़्द हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने (उनका स्वागत करते हुए) फ़रमाया, स्वागत हो क़ौम को (चूंकि तुम लोग ख़ुशी से मुसलमान होकर आए हो, इस वजह से न दुनिया में तुम्हारे लिए रुसवाई है, न आख़िरत में पशेमानी।

इस वफ़्द ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारे और आपके बीच मुज़र का (मशहूर लड़ने वाला) क़बीला पड़ता है। इस वजह से हम आपकी ख़िदमत में सिर्फ़ इन महीनों में आ सकते हैं जिनमें लड़ना हराम है, इसलिए आप हमें दीन की थोड़ी मोटी-मोटी बातें बता दें, जिन पर अमल करके हम जन्नत में दाख़िल हो जाएं और जो हमारे क़बीले के लोग पीछे रह गए हैं, उनको इन बातों की दावत दें।

आपने फ़रमाया, मैं तुमको चार बातों का हुक्म देता हूं और चार बातों से रोकता हूं। वे चार बातें जिनका मैं तुम्हें हुक्म देता हूं, ये हैं कि—

1. अल्लाह पर ईमान ले आओ और ला इला-ह इल्लल्लाह की गवाही दो।

2. नमाज़ क़ायम करो,

3. ज़कात अदा करो और

4. रमज़ान के रोज़े रखो और

5. पांचवीं बात यह है कि ग़नीमत के माल में से पांचवां हिस्सा (अल्लाह और रसूल को) दिया करो।

और जिन चार चीज़ों से रोकता हूं, वह कद्दू के तोंबे और पेड़ की खोखली जड़ों से बनाए हुए बरतन और रोग़नी मर्तबान और राल लगाए हुए बरतन हैं। (ये वे बरतन हैं जिनमें शराब और नबीज़ बनाई जाती थी।)

तयालिसी ने भी इसी तरह रिवायत ज़िक्र की है जिसमें कुछ चीज़ें ज़्यादा हैं और आख़िर में यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया कि इन बातों को याद रखो और जो तुम्हारे

लोग पीछे रह गए हैं, उनको इन बातों की दावत दो।[1]

हज़रत अलक़मा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मेरे साथ मेरी क़ौम के छः आदमी और भी थे। हम लोगों ने हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया। हुज़ूर सल्ल० ने हमारे सलाम का जवाब दिया। फिर हमने आपसे बातें कीं। आपको हमारी बातें पसन्द आईं। आपने पूछा, तुम लोग कौन हो?

हमने कहा, (हम) मोमिन (ईमान वाले) हैं।

आपने फ़रमाया, हर बात की एक हक़ीक़त (सच्चाई) और निशानी हुआ करती है। तुम्हारे ईमान की क्या हक़ीक़त है?

हमने अर्ज़ किया पन्द्रह ख़सलतें (हमारे ईमान की हक़ीक़त और निशानी) हैं। पांच ख़स्लतें वे हैं, जिनका आपने हमें हुक्म दिया है और पांच ख़स्लतें वे हैं, जिनका आपके क़ासिदों ने हमें हुक्म दिया और पांच ख़स्लतें वे हैं जिनको हमने जाहिलियत के ज़माने में अपनाया था और अब तक हम उन पर बाक़ी हैं। हां, अगर आप इनसे मना करेंगे, तो हम इनको छोड़ देंगे।

आपने फ़रमाया, वे पांच ख़स्लतें कौन-सी हैं जिनका मैंने तुमको हुक्म दिया?

हमने कहा कि आपने हमें इस बात का हुक्म दिया कि हम अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर और तक़्दीर पर ईमान लाएं कि भला या बुरा जो कुछ भी है, वह अल्लाह की ओर से है।

फिर आपने फ़रमाया, वे पांच ख़स्लतें कौन-सी हैं जिनका तुमको मेरे क़ासिदों ने हुक्म दिया?

हमने कहा, आपके क़ासिदों ने हमें इस बात का हुक्म दिया कि हम इस बात की गवाही दें कि एक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, उसका कोई शरीक नहीं और आप अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं और

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 46

इस बात का हुक्म दिया कि हम फ़र्ज़ नमाज़ क़ायम करें और फ़र्ज़ ज़कात अदा करें और रमज़ान के महीने के रोज़े रखें और अगर हम सफ़र की ताक़त रखते, तो बैतुल्लाह का हज करें।

फिर आपने फ़रमाया कि वे पांच ख़स्लतें कौन-सी हैं जिनको तुमने जाहिलियत के ज़माने में अपनाया था?

हमने कहा, आसानी और ख़ुशहाली के वक़्त अल्लाह का शुक्र करना और मुसीबत और आज़माइश के वक़्त सब्र करना और लड़ाई के मौक़े पर जमना और जौहर दिखाना और अल्लाह की क़ज़ा व तक़्दीर पर राज़ी रहना और दुश्मन पर जब मुसीबत आए तो उससे ख़ुश न होना।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (सहाबा को मुख़ातब होकर) फ़रमाया, ये लोग तो बड़े समझदार और सलीक़े वाले हैं। इन अच्छी और बेहतरीन ख़स्लतों की वजह से क़रीब था कि ये नबी हो जाते (यानी इनकी ये तमाम ख़स्लतें नबियों वाली हैं) और हमें देखकर आप मुस्कराए, फिर आपने फ़रमाया कि तुम्हें पांच ख़स्लतों की वसीयत करता हूं ताकि अल्लाह तुम्हारे अन्दर भलाई की ख़स्लतें पूरी कर दे यानी यह कि—

1. जो तुम्हें खाना नहीं है, उसे जमा न रखो (यानी ज़रूरत से ज़्यादा बचा हुआ खाना सदक़ा कर दिया करो)

2. जिस मकान में रहना नहीं है, उसे मत बनाओ, (यानी ज़रूरत के मुताबिक़ मकान बनाओ, ज़रूरत से ज़्यादा न बनाओ।)

3. जिस दुनिया को छोड़कर तुम कल चल दोगे, उसमें एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश न करो।

4. जिस अल्लाह के पास तुम्हें जाना है और उसके पास जमा होना है, उससे तुम डरो,

5. जिस आख़िरत के घर में तुम्हें जाना है और जहां हमेशा रहना है, उसकी फ़िक्र करो।[1]

1. कंज़, भाग 1, पृ० 69, इसाबा, भाग 2. पृ० 98

इसी हदीस को अबू नुऐम¹ ने हज़रत सुवैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु से इस तरह ज़िक्र किया है कि हज़रत सुवैद फ़रमाते हैं कि मैं अपनी क़ौम के साथ आदमियों का वफ़्द लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया।

जब हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और हमने आपसे बातें कीं तो आपको हमारा बात करने का अन्दाज़, उठने-बैठने का तरीक़ा और पहनावा पसन्द आया। आपने फ़रमाया, तुम कौन लोग हो?

हमने कहा, मोमिन (ईमान वाले) हैं।

इस पर आप मुस्कराने लगे और फ़रमाया, हर बात की एक हक़ीक़त और निशानी हुआ करती है। तुम्हारे इस कहने की और ईमान की क्याा निशानी है?

हज़रत सुवैद फ़रमाते हैं कि हमने कहा, पन्द्रह ख़स्लतें हैं। इनमें से पांच ख़स्लतें तो वे हैं, जिनके बारे में आपके क़ासिदों ने हमें हुक्म दिया कि हम उन पर ईमान लाएं और उनमें से पांच ख़स्लतें वे हैं जिनके बारे में आपके क़ासिदों ने हमें हुक्म दिया कि हम उन पर अमल करें और इनमें से पांच ख़स्लतें वे हैं जिनको हमने जाहिलियत के ज़माने में अख़्तियार किया था और हम अब तक उन पर क़ायम हैं, लेकिन अगर इनमें से किसी को आप नागवार समझेंगे तो हम उसे छोड़ देंगे। फिर आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया। अलबत्ता तक़्दीर पर ईमान लाने के बजाए मरने के बाद दोबारा ज़िंदा होने का ज़िक्र किया और दुश्मन की मुसीबत पर ख़ुश न होने के बजाए दुश्मन के ख़ुश होने के वक़्त सब्र करने का ज़िक्र किया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ऐसा आदमी को दावत देना, जिसका नाम ज़िक्र नहीं किया गया, इस बाब में पीछे बल-अदवीया क़बीले के एक आदमी की हदीस गुज़र चुकी है जिसको वह अपने दादा से नक़ल करते हैं।

इस हदीस में यह मज़्मून है कि उनके दादा ने कहा आप किस चीज़

1. हुलीया, भाग 9, पृ० 279

की दावत देते हैं ?

आपने फ़रमाया, मैं अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की तरफ़ दावत देता हूं।

मैंने कहा, आप उस दावत में क्या कहते हैं ?

आपने फ़रमाया, तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं मुहम्मद अल्लाह का रसूल हूं और अल्लाह ने जो कुछ मुझ पर नाज़िल फ़रमाया है, उस पर ईमान लाओ और लात व उज़्ज़ा का इंकार करो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तमाम मुल्कों के बादशाहों वग़ैरह के पास अपने सहाबा रज़ि० को ख़त देकर भेजना; जिनमें आपने उनको अल्लाह की ओर और इस्लाम में दाख़िले की ओर दावत दी।

हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा के पास तशरीफ़ लाकर फ़रमाया कि अल्लाह ने मुझे तमाम इंसानों के लिए रहमत बनाकर भेजा है। अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए, तुम मेरी ओर से (मेरा दीन तमाम इंसानों तक) पहुंचाओ और जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारियों ने ईसा अलैहिस्सलाम के सामने इख़्तिलाफ़ किया, तुम मेरे सामने ऐसा इख़्तिलाफ़ न करना, क्योंकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने हवारियों को इसी चीज़ की दावत दी थी, जिसकी मैं तुमको दावत देने लगा हूं। (यानी उनको दावत देने के लिए दूर और नज़दीक भेजना चाहते थे) चुनांचे उनमें से जिसकी तश्कील दूर की हुई, उसने इसको नागवार समझा (और जिनकी तश्कील नज़दीक की हुई, वे तैयार हो गए)

हज़रत ईसा बिन मरयम ने अल्लाह से इसकी शिकायत की। चुनांचे अगले दिन इनमें से हर आदमी उस क़ौम की ज़ुबान में बात कर रहा था, जिस क़ौम की तरफ़ उसकी तश्कील हुई थी।

इस पर ईसा अलैहिस्सलाम ने उन हवारियों से फ़रमाया, अल्लाह ने तुम लोगों के लिए यह काम ज़रूरी क़रार दे दिया है, इसलिए अब तुम इसे ज़रूर करो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम आपकी ओर से (आपका दीन तमाम

इंसानों तक) पहुंचाएंगे। आप हमें जहां चाहें भेज दें।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि० को किसरा के पास भेजा और सलीत बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु को यमामा के नवाब हौज़ा बिन अली के पास भेजा और अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु को हजर के राजा मुंज़िर बिन सावा के पास भेजा और अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को उमान के दो बादशाहों जैफ़र और अब्बाद के पास भेजा जो जुलन्दी के बेटे थे और दिह्या कल्बी रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ैसर के पास भेजा और शुजाअ बिन वह्ब असदी रज़ियल्लाहु अन्हु को मुंज़िर बिन हारिस बिन अबी शिम्र ग़स्सानी के पास भेजा और अम्र बिन उमैया ज़मरी रज़ियल्लाहु अन्हु को नजाशी के पास भेजा। अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा बाक़ी तमाम लोग हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल से पहले वापस आ गए। अला बिन हज़रमी हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल के वक़्त बहरैन में थे।[1]

हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़रमाते हैं कि अस्हाबे सियर ने इतना और बढ़ाया है कि हुज़ूर सल्ल० ने मुहाजिर अबी उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु को हारिस बिन अब्दे कुलाल के पास भेजा और जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़िल कलाअ के पास भेजा और साइब रज़ियल्लाहु अन्हु को मुसैलमा के पास भेजा और हातिब बिन अबी बलतआ को मुक़ौक़िस के पास भेजा।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इंतिक़ाल से पहले किसरा और क़ैसर और नजाशी और हर सरकश, मुतकब्बिर बादशाह को ख़त भेजे, जिनमें उनको अल्लाह की तरफ़ दावत दी और यह वह नजाशी नहीं हैं जिनकी आपने जनाज़े की नमाज़ पढ़ी थी।[3]

1. मज्मा, भाग 5, पृ० 306
2. फ़त्ह, भाग 8, पृ० 89
3. बिदाया, भाग 4, पृ० 262

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इंतिक़ाल से पहले किसरा और क़ैसर और हर ज़ालिम और सरकश बादशाह को (दावत) के ख़ुतूत भेजे थे।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हबशा के बादशाह हज़रत नजाशी के नाम ख़त

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अम्र बिन उमैया ज़मरी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथियों के बारे में नजाशी के नाम यह ख़त भेजा—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'मुहम्मद रसूलुल्लाह की जानिब से नजाशी असहम हबशा के बादशाह के नाम, सलामती तुम पर, मैं तुम्हारे सामने उस अल्लाह की तारीफ़ करता हूं जो बादशाह है, पाक ज़ात है और अमान देने वाला और पनाह में लेने वाला है और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि हज़रत ईसा, अल्लाह की (पैदा की हुई) रूह हैं और अल्लाह का वह कलिमा हैं, जिसको अल्लाह ने मरयम बतूल पाक-साफ़ और पाक दामन की तरफ़ इलक़ा फ़रमाया था। चुनांचे वह हज़रत ईसा के साथ उम्मीद से हो गईं और अल्लाह ने उनको अपनी (ख़ास) रूह और अपनी (यानी अपने फ़रिश्ते की) फूंक से पैदा फ़रमाया, जैसे कि अल्लाह ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अपनी ख़ास कुदरत और फूंक से पैदा फ़रमाया और मैं तुमको अल्लाह वह्दहू ला शरी-क लहू की दावत देता हूं और इस बात की दावत देता हूं कि तुम पाबन्दी से अल्लाह की इताअत करते रहो, और मेरी पैरवी करो और मुझ पर और जो कुछ मेरे पास आया है, उस पर ईमान लाओ, क्योंकि मैं अल्लाह का रसूल हूं और मैंने तुम्हारे पास अपने चचेरे भाई हज़रत जाफ़र को मुसलमानों की एक जमाअत के साथ भेजा है। जब ये तुम्हारे पास पहुंचें तो इनको अपना मेहमान बना लो और घमंड और ग़रूर छोड़ देना, क्योंकि मैं तुम्हें

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 305

और तुम्हारे लश्कर को अल्लाह की दावत देता हूं। मैं तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा चुका हूं और तुम्हारे भले की बात कह चुका हूं। तुम मेरी नसीहत मान लो और उस पर सलामती हो जो हिदायत की पैरवी करे।'

नजाशी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जवाब में यह ख़त लिखा—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

बख़िदमत हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह नजाशसी असहम बिन अबजर की ओर से

ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह की ओर से आप पर सलामती हो और रहमत हो और बरकतें हों। उस ज़ात के अलावा कोई माबूद नहीं जिसने मुझे इस्लाम की हिदायत फ़रमाई, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपका गरामी नामा मुझे मिला। इसमें आपने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की कुछ सिफ़तों का ज़िक्र फ़रमाया है। आसमान और ज़मीन के रब की क़सम! आपने हज़रत ईसा के बारे में जो कुछ ज़िक्र फ़रमाया है, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मर्तबा इससे ज़र्रा भर भी ज़्यादा नहीं है। जो पैग़ाम आपने हमारे पास भेजा है, हमने उसे अच्छी तरह समझ लिया है। हमने आपके चचेरे भाई और उनके साथियों की अच्छी तरह मेज़बानी की है और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं और आपकी तस्दीक़ की गई है। मैं आपसे बैअत करता हूं और मैं आपके चचेरे भाई से बैअत हो चुका हूं और मैं उनके हाथों मुसलमान हो चुका हूं और अल्लाह रब्बुल आलमीन का फ़रमांबरदार बन चुका हूं। ऐ अल्लाह के नबी! मैं आपके पास (अपने बेटे) अरैहा बिन असहम बिन अबजर को भेज रहा हूं, क्योंकि मुझे सिर्फ़ अपनी जान पर ही पूरा अख़्तियार है। ऐ अल्लाह के रसूल! अगर आप फ़रमा दें तो मैं आपकी ख़िदमत में ख़ुद हाज़िर होने को भी तैयार हूं, क्योंकि मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप जो कुछ फ़रमाते हैं, वह बिल्कुल हक़ है।'

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 83

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शाहे रूम क़ैसर के नाम ख़त

हज़रत दिह्या कल्बी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़त देकर क़ैसर के पास भेजा। मैंने क़ैसर के पास पहुंचकर उसे हुज़ूर सल्ल० का ख़त दिया। उसके पास उसका भतीजा बैठा हुआ था, जिसका रंग लाल और आंखें नीली और बाल बिल्कुल सीधे थे, जब उसने हुज़ूर सल्ल० का पत्र पढ़ा, तो उसमें यह विषय था—'मुहम्मद अल्लाह के रसूल की ओर से, रूम वाले हिरक़्ल के नाम।'

हज़रत दिह्या फ़रमाते हैं, इतना पढ़कर उसका भतीजा ज़ोर से गुर्राया और गरजकर कहा कि यह ख़त आज हरगिज़ नहीं पढ़ा जाएगा।

क़ैसर ने पूछा, क्यों?

उसने कहा, इस वजह से कि एक तो उसने ख़त अपने नाम से शुरू किया है और दूसरे यह कि आपको रूम वाला लिखा है, रूम का बादशाह नहीं लिखा।

क़ैसर ने कहा, नहीं, तुम्हें यह ख़त ज़रूर पढ़ना पड़ेगा।

जब उसे सारा ख़त पढ़कर सुना दिया और तमाम दरबारी क़ैसर के पास से चले गए, तो क़ैसर ने मुझे अपने पास बुलाया और जो पादरी मदारुलमुहाम और ख़ास मुशीर था, उसे पैग़ाम भेजकर बुलाया।

लोगों ने भी उस पादरी को सारी बातें बताईं और क़ैसर ने भी बताईं और उसे हुज़ूर सल्ल० का ख़त पढ़ने के लिए दिया तो उस पादरी ने क़ैसर से कहा, यह तो वही आदमी हैं जिनका हम इन्तिज़ार कर रहे थे, और जिनकी हमको हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने बशारत दी थी।

क़ैसर ने पादरी से कहा, मेरे बारे में आपका क्या हुक्म है?

पादरी ने जवाब दिया, मैं तो इनकी तस्दीक़ करूंगा और इनकी पैरवी करूंगा।

क़ैसर ने उससे कहा कि अगर मैं ऐसा करूं तो मेरी बादशाही चली जाएगी।

इसके बाद हम क़ैसर के पास से बाहर निकल आए।

हज़रत अबू सुफ़ियान उन दिनों (तिजारत के लिए) वहां आए हुए थे। उनको बुलाकर क़ैसर ने उनसे पूछा कि जो आदमी तुम्हारे यहां ज़ाहिर हुआ है, वह कैसा है?

अबू सुफ़ियान ने कहा, वह जवान आदमी है।

क़ैसर ने पूछा, उनका ख़ानदान तुम लोगों में कैसा है?

अबू सुफ़ियान ने जवाब दिया, उनका ख़ानदान ऐसा ऊंचा है कि कोई ख़ानदान इससे बढ़ा हुआ नहीं है।

क़ैसर ने कहा, यह नुबूवत की निशानी है।

फिर उसने पूछा कि उसकी सच्चाई किस दर्जे की है?

अबू सुफ़ियान ने जवाब दिया कि वह कभी झूठ नहीं बोले।

तो क़ैसर ने कहा, यह भी नुबूवत की निशानी है।

फिर क़ैसर ने पूछा, ज़रा यह तो बताओ कि तुम्हारे साथियों में से, जो उनसे जा मिलता है, क्या वह तुम्हारी तरफ़ वापस आता है?

अबू सुफ़ियान ने कहा, नहीं।

क़ैसर ने कहा, यह भी नुबूवत की एक निशानी है।

फिर क़ैसर ने पूछा कि जब वह अपने साथियों को लेकर लड़ाई लड़ते हैं, तो क्या कभी वह पसपा भी होते हैं?

अबू सुफ़ियान ने कहा, हां, उनकी क़ौम ने उनसे कई बार लड़ाई लड़ी है, कभी वे हरा देते हैं, कभी उनकी हार हो जाती है।

क़ैसर ने कहा, यह भी नुबूवत की निशानी है।

हज़रत दिह्या फ़रमाते हैं, फिर क़ैसर ने मुझे बुलाया और कहा कि अपने साथियों को मेरा यह पैग़ाम पहुंचा देना कि मैं अच्छी तरह जानता हूं कि वह नबी हैं, लेकिन मैं अपनी बादशाहत नहीं छोड़ सकता हूं।

हज़रत दिह्या फ़रमाते हैं कि पादरी का यह हुआ कि लोग हर इतवार

को उसके पास जमा होते थे और वह बाहर उनके पास आकर उनको वाज़ व नसीहत किया करता था। अब जब इतवार का दिन आया तो वह बाहर न निकला और अगले इतवार तक वह अन्दर ही बैठा रहा।

इस दौरान मैं उसके पास आता-जाता रहा। वह मुझसे बातें किया करता और अलग-अलग क़िस्म के सवाल करता रहता।

जब अगला इतवार आया तो लोगों ने उसके बाहर आने का बड़ा इन्तिज़ार किया, लेकिन वह बाहर न आया, बल्कि बीमारी का बहाना कर दिया और उसने ऐसा कई बार किया।

फिर तो लोगों ने उसके पास यह पैग़ाम भेजा, या तो तुम हमारे पास बाहर आओ, नहीं तो हम ज़बरदस्ती अन्दर आकर तुमको क़त्ल कर देंगे। हम लोग तो तुझे उसी दिन से बदला हुआ पाते हैं, जब से वह अरबी आदमी आया है।

तो पादरी ने (मुझसे) कहा, मेरा यह ख़त ले लो और अपने नबी को जाकर यह ख़त दे देना और उनको मेरा सलाम कहना, उनको यह बता देना कि मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और यह भी बता देना कि मैं उन पर ईमान ला चुका हूं और उनको सच्चा मान चुका हूं और मैं उनकी पैरवी कर चुका हूं और यह भी बता देना कि यहां वालों को मेरा ईमान लाना बुरा लगा है और जो कुछ तुम देख रहे हो, वह भी उनको पहुंचा देना।

इसके बाद वह पादरी बाहर निकला, तो लोगों ने उसे शहीद कर दिया।[1]

कुछ विद्वान कहते हैं कि हिरक़्ल ने हज़रत दिह्या रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, तुम्हारा भला हो, अल्लाह की क़सम! मुझे पूरा यक़ीन है कि तुम्हारे हज़रत अल्लाह के भेजे हुए नबी हैं और यह वही हैं, जिनका हम इन्तिज़ार कर रहे थे। इन्हीं का तज़्किरा हम अपनी किताब में पाते थे, लेकिन मुझे रूमियों से अपनी जान का ख़तरा है। अगर यह ख़तरा न

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 236-237, भाग 5, पृ० 306, दलाइल, पृ० 121

होता तो मैं ज़रूर इनकी पैरवी कर लेता। तुम ज़गातिर पादरी के पास जाओ और अपने हज़रत की बात उनके सामने रखो, क्योंकि रूम देश में वह मुझसे बड़ा है और उसकी बात ज़्यादा चलती है।

चुनांचे हज़रत दिह्या ने उसे जाकर सारी बात बताई, तो उसने हज़रत दिह्या से कहा कि अल्लाह की क़सम! तुम्हारे हज़रत वाक़ई अल्लाह के भेजे हुए नबी हैं। हम उनको उनकी सिफ़तों और उनके नाम से जानते हैं।

फिर वह अन्दर गया, अपने कपड़े उतारे, सफ़ेद कपड़े पहने और बाहर रूम वालों के पास आया और कलिमा शहादत पढ़ा।

वे सब उस पर पिल पड़े और उसे शहीद कर डाला।[1]

हज़रत सईद बिन अबी राशिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि क़बीला तन्नूख़ के जिस आदमी को हिरक़्ल ने अपना दूत बनाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजा था, मैंने उस आदमी को हिम्स में देखा, वह मेरा पड़ोसी था, बहुत बूढ़ा, मरने के क़रीब पहुंच चुका था।

मैंने उससे कहा कि हिरक़्ल ने हुज़ूर सल्ल० को जो पैग़ाम भेजा था और फिर हुज़ूर सल्ल० ने हिरक़्ल को जो जवाब भिजवाया था, क्या आप मुझे उसके बारे में बताएंगे?

उसने कहा, ज़रूर। हुज़ूर सल्ल० तबूक तशरीफ़ लाए हुए थे और आपने दिह्या कलबी को हिरक़्ल के पास भेजा। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़त हिरक़्ल को मिला तो उसने रूम के छोटे-बड़े तमाम पादरियों को बुलाया और उनको अपने दरबार में जमा करके सब दरवाज़े बन्द करा दिए। उसने कहा, यह आदमी (यानी हुज़ूर सल्ल०) वहां आ पहुंचा है, जहां तुम देख रहे हो (यानी तबूक में) और उसने मुझे ख़त भेजा है, जिसमें उसने मुझे तीन बातों की दावत दी है, या तो मैं उसके दीन की पैरवी कर लूं या हम उसे जिज़या अदा करें और यह मुल्क और यह ज़मीन हमारे पास रहे या हम उससे लड़ने के लिए तैयार हो जाएं।

---

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 216

अल्लाह की क़सम ! तुम आसमानी किताबों को पढ़कर मालूम कर चुके हो कि वह आदमी मेरे क़दमों के नीचे की ज़मीन पर ज़रूर क़ब्ज़ा करेगा, इसलिए आओ, या तो हम उसके दीन की पैरवी करें या हम अपना मुल्क और अपनी ज़मीन बचाकर उसको जिज़्या देने लग जाएं।

यह सुनकर वे सब एक साथ गुर्राए और अपने आपे से बाहर होकर अपनी टोपियां उतार फेंकी और कहने लगे कि तुम हमें इस बात की दावत देते हो कि हम अपनी नसरानियत (ईसाइयत) को छोड़ दें या हम उस आराबी के गुलाम बन जाएं जो हिजाज़ से आया है।

जब हिरक़्ल ने यह महसूस किया कि ये लोग अगर (इसी हाल में) बाहर चले गए तो ये अपने साथियों को बग़ावत पर तैयार कर लेंगे और मुल्क का निज़ाम उलट-पुलट देंगे। तो उसने उनसे कहा, मैंने तुमसे यह बात सिर्फ़ इसलिए कही थी, ताकि मुझे पता चल जाए कि तुम अपने दीन पर कितने पक्के हो।

इसके बाद उसने अरब के तुजीब क़बीले के उस आदमी को बुलाया, जो अरब नसारा का हाकिम था और उससे कहा कि एक आदमी मेरे पास लेकर आओ जो बात याद रख सकता हो और अरबी ज़ुबान जानता हो। उसे मैं इस आदमी (यानी हुज़ूर सल्ल०) के पास ख़त का जवाब देकर भेजूंगा।

चुनांचे वह हाकिम मेरे पास आया। (मैं हिरक़्ल के पास गया) हिरक़्ल ने मुझे हुज़ूर सल्ल० के नाम ख़त दिया और कहा कि मेरा ख़त इस आदमी के पास ले जाओ और इसकी बातों को ग़ौर से सुनना, और तीन चीज़ों को ख़ास तौर से याद रखना—

एक तो इसका ख़्याल रखना कि जो ख़त उन्होंने मुझे लिखा है, उसके बारे में वह क्या कहते हैं?

दूसरे इसका ख़्याल रखना कि वह मेरा ख़त पढ़कर रात का ज़िक्र करते हैं या नहीं?

तीसरे उनकी पीठ की ओर ग़ौर से देखना कि क्या उनकी पीठ पर कोई ऐसी ख़ास चीज़ है, जिससे तुम्हें शक पड़े?

चुनांचे मैं हिरक़्ल का ख़त लेकर तबूक पहुंचा, तो हुज़ूर सल्ल० एक चश्मे के किनारे अपने सहाबा के दर्मियान बैठे हुए हैं। (मैं पहचानता नहीं था)

मैंने पूछा, आप लोगों के हज़रत कहां हैं?

मुझे बताया गया, यही तो हैं। तो मैं चलते-चलते आपके सामने जाकर बैठ गया। मैंने अपना ख़त आपको दिया।

आपने वह ख़त अपनी गोद में रख लिया और फ़रमाया, तुम कौन-से क़बीले के हो? मैंने कहा, मैं क़बीला तन्नूख़ का हूं।

आपने फ़रमाया, क्या तुम अपने बाप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन में दाख़िल होना चाहते हो? जो हर ग़लत और बातिल से पाक हैं?

मैंने कहा, मैं एक क़ौम की तरफ़ से क़ासिद बनकर आया हूं और उसी क़ौम के दीन पर हूं। जब तक उस क़ौम के पास वापस न चला जाऊं, उनके दीन को छोड़ नहीं सकता हूं।

इस पर आपने यह आयत पढ़ी,

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

'तू राह पर नहीं लाता, जिसको तू चाहे, पर अल्लाह राह पर लाए जिसको चाहे और वही ख़ूब जानता है, जो राह पर आएंगे।'

इसके बाद फ़रमाया, ऐ तन्नूख़ी भाई! मैंने एक ख़त नजाशी को भेजा था, उसने मेरा ख़त फाड़ दिया। इस वजह से अल्लाह उसे और उसके मुल्क को फाड़ देंगे (बज़ाहिर यह नजाशी और है, जो नजाशी हुज़ूर सल्ल० का ख़त पढ़कर मुसलमान हो गए थे और जिनकी हुज़ूर सल्ल० ने जनाज़े की ग़ायबाना नमाज़ पढ़ी थी, वह और हैं) और मैंने तुम्हारे बादशाह (क़ैसर) को भी ख़त लिखा था। उसने मेरे ख़त को संभालकर रखा, (उसे फाड़ा नहीं) इसलिए जब तक उसकी ज़िंदगी में ख़ैर लिखा हुआ है, उस वक़्त तक लोगों के दिलों में उसका रौब रहेगा।

मैंने अपने दिल में कहा कि हिरक़्ल ने मुझे जिन तीन बातों का ख़्याल रखने को कहा था, उनमें से एक तो हो गई। मैंने अपने तिरकश

में से तीर निकालकर फ़ौरन अपनी तलवार के नियाम की खाल पर तीर से लिख लिया।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने यह ख़त अपनी बाईं तरफ़ वाले एक आदमी को दिया। मैंने पूछा कि यह ख़त पढ़ने वाले साहब कौन हैं?

लोगों ने बताया कि यह हज़रत मुआविया हैं। (हज़रत मुआविया ख़त पढ़ने लगे।)

हिरक़्ल के उस ख़त में यह मज़्मून था कि आप मुझे ऐसी जन्नत की दावत दे रहे हैं जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है और जो ख़ुदा का डर रखने वालों के लिए तैयार की गई है। (जब आसमानों और ज़मीन के बराबर जन्नत हो गई तो) दोज़ख़ कहां होगी?

तो आपने फ़रमाया, सुब्हानल्लाह! जब दिन आता है तो रात कहां चली जाती है?

मैंने अपने तिरकश में से तीर निकालकर अपनी तलवार के नियाम पर इस बात को भी लिख लिया।

जब आप मेरे ख़त को सुन चुके, तो आपने मुझसे फ़रमाया, तुम मेरे पास क़ासिद बनकर आए हो, तुम्हारा हम पर हक़ है। अगर हमारे पास तोहफ़े के तौर पर देने के लिए कोई चीज़ हुई, तो हम तुम्हें ज़रूर देंगे, क्योंकि इस वक़्त हम सफ़र में हैं और रास्ते का सामान बिल्कुल ख़त्म हो चुका है।

लोगों में से एक आदमी ने ऊंची आवाज़ से कहा, मैं इसको तोहफ़ा देता हूं।

चुनांचे उसने अपना सामान खोला और एक सफ़्फ़ूरिया (जार्डन के शहर सफ़ूरा का बना हुआ) जोड़ा लाकर उन्होंने मेरी गोद में रख दिया।

मैंने पूछा, यह जोड़ा देने वाले साहब कौन हैं?

मुझे बताया गया कि यह हज़रत उस्मान रज़ि० हैं।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस क़ासिद को कौन अपना मेहमान बनाएगा?

एक नवजवान अंसारी ने कहा, मैं बनाऊंगा।

वह अंसारी खड़े हुए तो मैं भी उनके साथ खड़ा हो गया। जब मैं आपकी मज्लिस से बाहर चला गया, तो आपने मुझे आवाज़ दी, ऐ तनूख़ी भाई!

तो मैं वापस आया और आपके सामने पहले जहां बैठा हुआ था, वहां आकर खड़ा हो गया। आपने अपनी मुबारक पीठ से चादर उतार दी और फ़रमाया, जो काम तुमको कहा गया था, वह काम तुम इधर आकर कर लो। (यानी नुबूवत की मोहर देख लो)

मैं घूमकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पीठ की ओर गया। मुझे कंधे की नर्म हड्डी पर नुबूवत की मोहर नज़र आई, जो कबूतर के अंडे के बराबर थी।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे यह बयान किया कि जिस ज़माने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू सुफ़ियान और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से समझौता कर रखा था, उस ज़माने में हज़रत अबू सुफ़ियान क़ुरैश के एक तिजारती क़ाफ़िले के साथ शाम देश गए हुए थे और वहां वे लोग ईलिया शहर में ठहरे हुए थे। हिरक़्ल ने क़ासिद भेजकर उनको अपने पास बुलाया।

चुनांचे ये लोग हिरक़्ल के पास गए। उसने इन सबको अपने दरबार में बिठाया, और वहां रूम के बड़े-बड़े सरदार भी थे, उनको भी जमा किया और एक तर्जुमान को बुलाकर कहा कि जिस आदमी ने नुबूवत का दावा किया है, तुममें से कौन नसब में उनसे सबसे ज़्यादा क़रीब है?

हज़रत अबू सुफ़ियान फ़रमाते हैं कि मैंने कहा मैं नसब में उनके सबसे ज़्यादा क़रीब हूं, तो हिरक़्ल ने कहा, इस आदमी को मेरे क़रीब कर दो और इसके साथियों को इसके पीछे क़रीब ही बिठा दो।

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 235-236, बिदाया, भाग 5, पृ० 15, भाग 6, पृ० 27

फिर उसने अपने तर्जुमान से कहा कि इनसे यह कहो कि मैं नुबूवत का दावा करने वाले आदमी के बारे में इनसे (यानी अबू सुफ़ियान से) पूछूंगा, अगर वह मुझसे कोई ग़लत बात कहे, तो तुम तुरन्त टोक देना।

(हज़रत अबू सुफ़ियान फ़रमाते हैं कि) अल्लाह की क़सम ! अगर मुझे यह ख़तरा न होता कि मेरे साथी मुझे झूठा मशहूर कर देंगे, तो मैं हुज़ूर सल्ल० के बारे में उस दिन ज़रूर ग़लतबयानी से काम ले लेता।

फिर हिरक़्ल ने मुझसे सबसे पहले यह सवाल किया कि इस आदमी का तुम्हारे में नसब कैसा है ?

मैंने कहा, वह हमारे में बड़े नसब वाला है।

फिर उसने पूछा, क्या इससे पहले तुममें से किसी और ने भी यह दावा किया है ? मैंने कहा, नहीं।

फिर उसने पूछा, क्या उनके पास बाप-दादा में कोई बादशाह गुज़रा है ?

मैंने कहा, नहीं।

फिर उसने पूछा कि क्या बड़े और ताक़तवर लोगों ने उसकी पैरवी की है ? या छोटे और कमज़ोर लोगों ने की है ?

मैंने कहा, छोटे और कमज़ोर लोगों ने।

फिर उसने पूछा, उनके मानने वालों की तायदाद बढ़ रही है या घट रही है ?

मैंने कहा, बढ़ रही है।

फिर उसने पूछा, कि क्या उनके मानने वालों में से कोई उनके दीन में दाख़िल होने के बाद उनके दीन को बुरा समझकर मुर्तद (विधर्मी) हुआ है ?

मैंने कहा, नहीं।

फिर उसने पूछा कि क्या इस दावा करने से पहले तुम लोगों ने कभी उन पर झूठ बोलने का इलज़ाम लगाया था ?

मैंने कहा, नहीं।

फिर उसने पूछा कि क्या कभी वह समझौते और वायदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हैं?

मैंने कहा, नहीं, लेकिन आजकल हमारा उनसे एक समझौता चल रहा है। हमें पता नहीं है कि वह इस समझौते के बारे में क्या करेंगे?

हज़रत अबू सुफ़ियान फ़रमाते हैं कि मैं सारी बातचीत में हुज़ूर सल्ल० के ख़िलाफ़ इस जुम्ले (वाक्य) के अलावा और कोई जुम्ला नहीं बढ़ा सका।

फिर हिरक़्ल ने पूछा, क्या कभी तुम्हारी उससे लड़ाई हुई है?

मैंने कहा, हां।

उसने कहा, उनसे लड़ाई लड़ने का क्या नतीजा निकला?

मैंने कहा, बराबर-बराबर, कभी वह जीत जाते हैं और कभी हम जीत जाते हैं।

फिर उसने पूछा, वह तुम्हें किन बातों का हुक्म देते हैं?

मैंने कहा, वह यह कहते हैं कि एक अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ और तुम्हारे बाप-दादा जो कहते थे, उसे छोड़ दो और वह हमें नमाज़ पढ़ने, सच बोलने और पाक-दामनी और सिला रहमी का हुक्म देते हैं।

उसने तर्जुमान से कहा कि इनको यह कहो कि मैंने तुमसे उनके नसब के बारे में पूछा, तुमने बताया कि वह तुम लोगों में बड़े नसब वाले हैं और तमाम रसूल अपनी क़ौम के ऊंचे नसब में भेजे जाते हैं। मैंने तुमसे पूछा कि क्या इससे पहले तुममें से किसी और ने भी यह दावा किया है? तुमने बताया कि नहीं, तो मैंने दिल में कहा कि अगर इनसे पहले किसी और ने भी यह दावा किया होता, तो मैं यह कहता कि उसकी देखादेखी यह भी वही दावा करने लग गया है और मैंने तुमसे पूछा, क्या इसके बाप-दादा में से कोई बादशाह गुज़रा है, तुमने बताया कि नहीं। अगर इनके बाप-दादा में कोई बादशाह गुज़रा होता, तो मैं यह कहता कि यह आदमी अपने बाप-दादा की बादशाहत हासिल करना

चाहता है। मैंने तुमसे पूछा कि क्या इन दावा करने से पहले तुम लोगों ने इन पर झूठ बोलने का इलज़ाम लगाया था? तुमने कहा, नहीं। मैं इससे यह समझा कि यह नहीं हो सकता कि एक आदमी इंसानों के मामले में तो झूठ बोलना गवारा न करे और अल्लाह के मामले में झूठ बोल दे और मैंने तुमसे पूछा कि क्या बड़े और ताक़तवर लोगों ने उसकी पैरवी की है या छोटे और कमज़ोर लोगों ने? तो तुमने यह बताया कि छोटे और कमज़ोर लोगों ने इसकी पैरवी की है और यही लोग (शुरू में) रसूलों को मानने वाले होते हैं। मैंने तुमसे पूछा कि इनके मानने वालों की तायदाद बढ़ रही है या घट रही है? तुमने बताया, बढ़ रही है और ईमान की शान यही है, यहां तक कि पूरा हो। मैंने तुमसे पूछा कि क्या इनके मानने वालों में से कोई इनके दीन में दाख़िल होने के बाद इनके दीन को बुरा समझकर मुर्तद हुआ है? तो तुमने बताया कि नहीं। ईमान की मिठास जब दिलों में उतर जाती है, तो ऐसा ही हुआ करता है। मैंने तुमसे पूछा कि क्या कभी उन्होंने किसी समझौते की ख़िलाफ़वर्ज़ी की है? तो तुमने बताया कि नहीं और इसी तरह रसूल समझौते की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं किया करते। मैंने तुमसे पूछा कि वह तुम्हें किन बातों का हुक्म देते हैं? तो तुमने बताया कि वह तुम्हें इस बात का हुक्म देते हैं कि तुम एक अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराओ और वह तुम्हें बुतों की इबादत से रोकते हैं और तुम्हें नमाज़ पढ़ने और सच बोलने और पाक दामनी का हुक्म देते हैं। ये सारी बातें जो तुमने कही हैं, अगर ये सच हैं तो याद रखो कि वह इस जगह के भी मालिक होकर रहेंगे, जो मेरे दोनों क़दमों के नीचे है। मुझे यह मालूम था कि वह ज़ाहिर होने वाले हैं, लेकिन मेरा यह ख़्याल नहीं था कि वह तुम लोगों में से होंगे। अगर मुझे यह मालूम होता कि मैं उन तक पहुंच सकता हूं तो मैं उनकी मुलाक़ात के लिए सारा ज़ोर लगा देता और अगर मैं आपके पास होता तो आपके दोनों पैर धोता।

फिर उसने हुज़ूर सल्ल० का वह ख़त मंगवाया जो हज़रत दिह्या रज़ियल्लाहु अन्हु लेकर बुसरा के हाकिम के पास आए थे और बुसरा के

हाकिम ने वह ख़त हिरक़्ल तक पहुंचाया था। इस ख़त में यह मज़्मून था—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह के रसूल मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की ओर से हिरक़्ल के नाम, जो रूम का बड़ा है, उस पर सलामती हो, जिसने हिदायत को अख़्तियार किया। अम्मा बादु ! मैं तुमको इस्लाम की दावत देता हूं। मुसलमान हो जाओ, सलामती पा लोगे और अल्लाह तुमको दोगुना अज्र अता फ़रमाएंगे और अगर तुमने इस्लाम से मुंह फेरा, तो तुम्हारी रियाया का गुनाह भी तुम पर होगा और ऐ अह्ले किताब ! आओ इस कलिमे की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है (और वह यह है कि) हम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करें और हम अल्लाह के अलावा एक दूसरे को ख़ुदा न बनाएं। अगर अह्ले किताब इस दावत से मुंह फेर लें, तो (ऐ मुसलमानो !) तुम कह दो कि हम तो यक़ीनन मुसलमान हैं।'

हज़रत अबू सुफ़ियान फ़रमाते हैं कि जब वह अपनी बात कह चुका और ख़त सुना चुका, तो उसकी मज्लिस में एक शोर व शग़ब बरपा हो गया और सब लोग ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगे और उसने हमें मज्लिस से बाहर भेज दिया।

जब हम बाहर आए तो मैंने अपने साथियों से कहा कि इब्ने अबी कबशा (मक्का के कुफ़्फ़ार हुज़ूर सल्ल० को इब्ने अबी कबशा कहा करते थे) का मामला इतना ज़ोरदार हो गया है कि बनुल अस्फ़र (यानी रूमियों का बादशाह) भी उनसे डरने लग गया है। इसके बाद मुझे पक्का यक़ीन हो गया था कि हुज़ूर सल्ल० ग़ालिब होकर रहेंगे, यहां तक कि अल्लाह ने मुझे इस्लाम से नवाज़ दिया।

ज़ोहरी कहते हैं कि इब्ने नातूर ईलिया का हाकिम, हिरक़्ल का दोस्त और शाम के नसारा का बड़ा पादरी था। उसने बयान किया कि हिरक़्ल जब ईलिया (यानी बैतुल मक़्दिस) आया हुआ था तो एक दिन सुबह के वक़्त बड़ा परेशान और दुखी था, तो उससे एक बड़े पादरी ने कहा कि

आपकी तबियत ठीक मालूम नहीं हो रही है।

इब्ने नातूर का बयान है कि हिरक़्ल नजूमी था और सितारों का हिसाब जानता था। पादरी के पूछने पर उसने यह बताया कि सितारों में ग़ौर करने से मुझे पता चला है कि ख़त्ना वाले बादशाह का दुनिया में ज़हूर हो चुका है। तुम यह बताओ कि लोगों में से किस क़ौम में ख़त्ने का रिवाज है?

उन्होंने कहा कि सिर्फ़ यहूदी ख़त्ना करते हैं और यहूदियों की ओर से आपको परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। अपने मुल्क के तमाम शहरों में यह हुक्मनामा भेज दें कि वहां जितने यहूदी हैं, वे सब क़त्ल कर दिए जाएं।

इन लोगों में अभी ये बातें हो ही रही थी कि इतने में ग़स्सान के बादशाह का भेजा हुआ क़ासिद आ पहुंचा और उसने उनको हुज़ूर सल्ल० के बारे में ख़बर दी। उससे सारी ख़बर मालूम करके उन लोगों से यह कहा कि जाओ और पता करो कि उस क़ासिद ने ख़त्ना कराया हुआ है या नहीं?

उन लोगों ने पता लगाने के बाद हिरक़्ल को बताया कि उसने ख़त्ना कराया हुआ है?

फिर हिरक़्ल ने उस क़ासिद से अरबों के बारे में पूछा, तो उसने बताया कि अरबों में ख़त्ना का रिवाज है।

इस पर हिरक़्ल ने कहा कि यह अरब क़ौम के बादशाह हैं जिनका ज़हूर हो गया है। फिर हिरक़्ल ने अपने एक साथी को (इस बारे में) एक ख़त लिखा कि जो रूमिया में रहता था और नुजूम के इल्म (ज्योतिष विद्या) में इसी तरह माहिर था और ख़ुद हिरक़्ल वहां से हम्स चला गया।

अभी हिरक़्ल हम्स पहुंचा नहीं था कि रूमिया से उसके साथी का जवाब आ गया, जिसमें वह हिरक़्ल की राय से पूरा इत्तिफ़ाक़ कर रहा था कि वाक़ई इस नबी का ज़हूर हो गया है जो अरब क़ौम का बादशाह है।

हिरक़्ल ने हम्स में अपने महल के खुले पार्क में रूम के बड़े सरदारों को जमा किया। फिर उसने दरवाज़ों को बन्द करने का हुक्म दिया।

चुनांचे तमाम दरवाज़े बन्द कर दिए गए। फिर उसने महल के एक झरोखे से उनके सामने आकर उनसे यह कहा, ऐ रूम के सरदारो! क्या तुम यह चाहते हो कि तुमको भलाई और हिदायत मिले और तुम्हारे पास तुम्हारा मुल्क बाक़ी रहे? अगर तुम यह चाहते हो तो इस नबी की पैरवी कर लो।

यह सुनते ही वे सारे सरदार बिदक कर वहशी गधों की तरह दरवाज़ों की तरफ़ दौड़े, लेकिन उन्होंने देखा कि दरवाज़े तो सारे बन्द हैं।

हिरक़्ल ने जब उनका इस तरह भागना देखा और वह उनके ईमान कुबूल करने से नाउम्मीद हो गया, तो उसने हुक्म दिया कि इन सबको मेरे पास लाओ। (चुनांचे वे वापस हुए) तो उसने उनसे कहा कि मैंने तो यह बात सिर्फ़ इसलिए कही थी ताकि मुझे पता लग जाए कि तुम अपने दीन पर कितने पक्के हो और अब मुझे यक़ीन आ गया है कि तुम अपने दीन पर पक्के हो।

इस पर वे सब हिरक़्ल के आगे सज्दे में गिर गए और उससे ख़ुश हो गए। हिरक़्ल के क़िस्से का आख़िरी अंजाम यही हुआ कि वह ईमान न लाया।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ारस के बादशाह किसरा के नाम ख़त

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी के हाथ अपना ख़त रवाना फ़रमाया और उन सहाबी को हुज़ूर सल्ल० ने यह हिदायत फ़रमाई कि वह यह ख़त बहरैन

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 266, भाग 4, पृ० 262, दलाइलुन्नुबूवा, पृ० 119, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 178

के गवर्नर को दे दें। चुनांचे बहरैन के गवर्नर ने यह ख़त लेकर किसरा तक पहुंचा दिया। जब किसरा ने यह ख़त पढ़ा तो उसने ख़त को फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि मेरा ख़्याल यह है कि हज़रत इब्ने मुसय्यिब ने फ़रमाया था कि यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए बद-दुआ की कि उनके भी ऐसे ही टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएं।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अब्द क़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन बयान फ़रमाने के लिए मिंबर पर खड़े हुए, अल्लाह की हम्द व सना बयान फ़रमाई, और कलिमा-ए-शहादत पढ़ा, फिर आपने फ़रमाया—अम्माबाद।

'मैं तुममें से कुछ लोगों को अजम के बादशाहों के पास भेजना चाहता हूं और जैसे बनी इसराईल ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सामने इख़्तिलाफ़ किया था, तुम मेरे सामने वैसा इख़्तिलाफ़ न करना।'

तो मुहाजिरों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम कभी भी आपके सामने किसी चीज़ के बारे में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं करेंगे। आप हमें जो चाहें हुक्म दें और जहां चाहें भेज दें।

चुनांचे आपने हज़रत शुजाअ बिन वह्ब रज़ियल्लाहु अन्हु को किसरा की ओर रवाना कर दिया।

(हज़रत शुजाअ के आने पर) किसरा ने अपने महल को सजाने का हुक्म दिया। इसके बाद उसने फ़ारस के बड़े-बड़े सरदारों को जमा करके हज़रत शुजाअ बिन वह्ब को बुलवाया।

जब हज़रत शुजाअ महल में दाख़िल हो गए तो किसरा ने किसी दरबारी को हुक्म दिया कि उनसे ख़त ले ले।

हज़रत शुजाअ बिन वह्ब ने फ़रमाया कि यह हरगिज़ नहीं हो सकता। मैं तो हुज़ूर सल्ल० के हुक्म के मुताबिक़ अपने हाथ से ख़ुद तुम्हें ख़त दूंगा।

---

1. बुख़ारी,

तो किसरा ने कहा, अच्छा, फिर क़रीब आ जाओ। चुनांचे उन्होंने आगे बढ़कर किसरा को यह ख़त दिया। फिर उसने हियरा के रहने वाले अपने एक मुंशी को बुलाया। उसने हुज़ूर सल्ल० का ख़त पढ़ना शुरू किया, तो ख़त में मज़्मून यह था

'अल्लाह के रसूल मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की ओर से किसरा के नाम जो फ़ारस का बड़ा है।'

इस बात पर उसे बड़ा ग़ुस्सा आया कि हुज़ूर सल्ल० ने अपना नाम उसके नाम से पहले लिखा है। उसने बड़ा शोर मचाया। ख़त को पढ़ने से पहले ही उसने ख़त लेकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और हुक्म देकर हज़रत शुजाअ को अपने दरबार से बाहर निकाल दिया।

हज़रत शुजाअ यह मंज़र देखकर अपनी सवारी पर बैठकर चल दिए और फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्ल० का ख़त किसरा को पहुंचा दिया है। अब मुझे कोई परवाह नहीं है, चाहे वह ख़ुश हो, चाहे वह नाराज़ हो।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि जब किसरा का ग़ुस्सा ठंडा हो गया तो उसने हज़रत शुजाअ को अपने पास बुलाने के लिए एक आदमी भेजा।

हज़रत शुजाअ रवाना हो चुके थे, इसलिए वहां न मिले। वह आदमी खोज में हियरा तक गया, लेकिन हज़रत शुजाअ वहां से भी आगे निकल चुके थे।

हज़रत शुजाअ ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचकर सारी कारगुज़ारी सुनाई और यह बताया कि किसरा ने हुज़ूर सल्ल० के ख़त के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

आपने फ़रमाया, किसरा ने तो अपने देश के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।[1]

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़त किसरा के पास पहुंचा और उसने पढ़कर उसे फाड़ डाला, तो उसने अपने यमन के गवर्नर बाज़ान को ख़त लिखा कि अपने पास से दो मज़बूत क़िस्म के आदमी हिजाज़ के इस (ख़त लिखने वाले) आदमी के पास भेज दो, ताकि वे उसे पकड़कर मेरे पास ले आएं।

चुनांचे उनसे किसरा के ख़त की वजह से अपने दारोग़ा के साथ जद्दे जमीरा नामी फ़ारसी आदमी को भेजा। इस दारोग़ा का नाम अबानौह था। वह मुंशी और बड़ा हिसाबदां था। उसने इन दोनों के साथ हुज़ूर सल्ल० के नाम एक ख़त भेजा, जिसमें यह मज़्मून था कि हुज़ूर सल्ल० इन दोनों के साथ किसरा के पास चले जाएं। यमन के गवर्नर ने अपने दारोग़ा से यह भी कहा कि उनकी (यानी हुज़ूर सल्ल० की) तमाम चीज़ों को ग़ौर से देखना, उनसे ख़ूब बातचीत करना, उनके तमाम हालात अच्छी तरह मालूम करके आना और सब मुझे बताना।

वे दोनों यमन से चले, तायफ़ पहुंचे। वहां इन दोनों को क़ुरैश के कुछ व्यापारी मिले। उन्होंने व्यापारियों से हुज़ूर सल्ल० के बारे में मालूम किया।

इन व्यापारियों ने बताया कि हुज़ूर सल्ल० यसरिब में (यानी मदीना में) हैं।

(हुज़ूर सल्ल० को किसरा के पास ले जाने के लिए इन दो सिपाहियों के आने से) वे व्यापारी बड़े ख़ुश हुए, कहने लगे कि अब तो हुज़ूर सल्ल० के मुक़ाबले में किसरा खड़ा हो गया है, इसलिए अब हुज़ूर सल्ल० से निपटने के लिए तुम्हें कुछ करने की ज़रूरत नहीं है।

वे दोनों वहां से चले, यहां तक कि मदीना पहुंच गए। वहां अबानौह ने हुज़ूर सल्ल० से कहा कि किसरा ने यमन के गवर्नर बाज़ान को ख़त भेजा कि वह (बाज़ान) आपके पास कुछ सिपाहियों को भेज दे जो आपको किसरा के पास पहुंचा दें। चुनांचे बाज़ान ने हमें इसी ग़रज़ से भेजा है, ताकि आप हमारे साथ किसरा के पास चलें।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अब तो तुम दोनों

वापस चले जाओ, कल मेरे पास आना।

अब अगले दिन सुबह को वे दोनों हुज़ूर सल्ल० के पास आए तो हुज़ूर सल्ल० ने उनको बताया कि अल्लाह ने फ़्लां महीने की फ़्लां रात में किसरा पर उसके बेटे शेरवैह को मुसल्लत कर दिया, जिसने उसे क़त्ल करके हुकूमत पर क़ब्ज़ा कर लिया।

उन दोनों ने कहा, क्या आप सोच-समझकर बोल रहे हैं? क्या यह बात हम बाज़ान को लिख दें?

आपने फ़रमाया, हां, लिख दो। उसको यह भी कह देना कि अगर वह मुसलमान हो जाएगा, तो जितना इलाक़ा उसके क़ब्ज़े में है, सब उसी को दे दूंगा।

फिर आपने जद्दे जमीरा को एक पटका दिया, जो आपको हदिए में मिला था, और इसमें सोना-चांदी था।

इन दोनों ने यमन वापस आकर बाज़ान को सारी बात बताई।

बाज़ान ने कहा, अल्लाह की क़सम! यह किसी बादशाह का कलाम नहीं मालूम होता है। जो कुछ उन्होंने कहा, हम उसकी जांच कर लेते हैं।

कुछ दिनों बाद बाज़ान के पास शेरवैह का ख़त आया, जिसमें लिखा हुआ था कि मैंने फ़ारस वालों की हिमायत के लिए गुस्से में आकर किसरा को क़त्ल कर दिया, क्योंकि वह फ़ारस के शरीफ़ों को बेवजह क़त्ल करना अपने लिए दुरुस्त समझता था। अपने इलाक़े के तमाम लोगों से मेरी इताअत का अह्द ले लो और जिस आदमी (यानी हुज़ूर) की गिरफ़्तारी का किसरा ने तुम्हें ख़त लिखा, अब उस आदमी को कुछ न कहो।

जब बाज़ान ने शेरवैह का ख़त पढ़ा, तो उसने कहा कि यह आदमी (यानी हुज़ूर सल्ल०) तो यक़ीनन अल्लाह के भेजे हुए नबी हैं। फिर वह मुसलमान हो गया और यमन में जितने फ़ारसी शहज़ादे रहते थे, वे भी मुसलमान हो गए।[1]

1. इसाबा, भाग 1, पृ० 259

इब्ने इस्हाक़ बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना ख़त देकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को किसरा के पास भेजा। इस ख़त में आपने किसरा को इस्लाम की दावत दी थी। जब किसरा ने वह ख़त पढ़ा, तो उसे फाड़ दिया, फिर उसने यमन में अपने गवर्नर बाज़ान को ख़त लिखा। आगे पिछले हदीस जैसा मज़्मून है।

उसमें यह भी है कि वे दोनों आदमी मदीना पहुंचे और बाबवैह ने हुज़ूर सल्ल० से यह बात कही कि शहनशाह किसरा ने नवाब बाज़ान को ख़त लिखकर यह हुक्म दिया है कि वह (बाज़ान) आपके पास आदमी भेजे जो आपको किसरा के पास ले जाएं। अगर आप ख़ुशी-ख़ुशी चल दें तो मैं आपको एक ख़त लिखकर दूंगा जो किसरा के यहां आपके काम आएगा। अगर आप जाने से इंकार करते हैं तो किसरा आपको और आपकी क़ौम को हलाक कर देगा, और आपके तमाम इलाक़े कर देगा।

आपने उनसे फ़रमाया, अभी तो तुम वापस चले जाओ, कल मेरे पास आना। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून है।[1]

हज़रत ज़ैद बिन अबी हबीब फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़ारस के बादशाह किसरा बिन हुरमुज़ के पास भेजा और उनको यह ख़त लिखकर दिया।

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से किसरा के नाम जो फ़ारस का बड़ा है, सलामती हो उस इंसान पर जो हिदायत की पैरवी करे और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और इस बात की गवाही दे कि एक अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं। मैं तुम्हें अल्लाह की तरफ़ दावत देता हूं, क्योंकि मैं दुनिया के तमाम इंसानों की तरफ़ भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूं,

1. दलाइलुन्नुबूवः, इसाबा, भाग 1, पृ० 169

ताकि मैं हर ज़िंदा इंसान को अल्लाह से डराऊं और हुज्जत काफ़िरों पर साबित हो जाए। अगर तुम मुसलमान हो जाओगे, तो सलामती पा लोगे और अगर इंकार करोगे तो तमाम आग के पुजारी मजूसियों (के ईमान न लाने) का गुनाह तुम पर होगा।'

रिवायत करने वाले कहते हैं कि जब किसरा ने हुज़ूर सल्ल० का ख़त पढ़ा तो उसे फाड़ डाला और (गुस्से में) आकर कहा कि मेरा गुलाम होकर मुझे ऐसा ख़त लिखता है। फिर किसरा ने बादाम को ख़त लिखा। आगे रिवायत करने वाले ने इब्ने इस्हाक़ जैसा मज़्मून लिखा है।

उसमें इतना बढ़ा हुआ है कि वे दोनों सिपाही जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए, तो इन दोनों ने अपनी दाढ़ियां मुंडवा रखी थीं और मूंछें बढ़ा रखीं थीं। आपने नागवारी के साथ इन दोनों को देखा और फ़रमाया कि तुम्हारा नास हो, तुम्हें ऐसा करने का किसने हुक्म दिया?

तो इन दोनों ने कहा, हमारे रब ने यानी किसरा ने।

इस पर आपने फ़रमाया कि मुझे तो मेरे रब ने दाढ़ी बढ़ाने और मूंछें कतरवाने का हुक्म दिया है।[1]

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मबऊस हुए तो किसरा ने यमन और उसके आस-पास के इलाक़े और अरब के गवर्नर बादाम को यह पैग़ाम भेजा कि मुझे यह ख़बर पहुंची है कि तुम्हारे इलाक़े में एक ऐसा आदमी ज़ाहिर हुआ है जो अपने नबी होने का दावा करता है। उससे कह दो कि या तो वह इससे बाज़ आ जाए, वरना मैं उसकी ओर ऐसा लश्कर भेजूंगा जो उसे और उसकी क़ौम को क़त्ल कर डालेगा।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि बादाम के क़ासिद ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचकर यह सारा पैग़ाम पहुंचाया। आपने उससे फ़रमाया कि अगर नुबूवत का यह दावा मैंने अपनी ओर से किया होता,

1. बिदाया, भाग ४, पृ० [illegible]

तो मैं इसे छोड़ देता। वह तो मुझे अल्लाह ने नबी बनाकर भेजा है और इस काम पर लगाया है।

वह क़ासिद आपके यहां ठहर गया। हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया कि मेरे रब ने किसरा को क़त्ल कर दिया और आज के बाद किसी का लक़ब किसरा न होगा और क़ैसर को क़त्ल कर दिया और आज के बाद किसी का लक़ब क़ैसर न होगा।

चुनांचे क़ासिद ने वह घड़ी, वह दिन और वह महीना लिख लिया, जिसमें आपने यह बात बताई थी और फिर वह बादाम के पास वापस चला गया। वहां पहुंचकर मालूम हुआ, वाक़ई किसरा मर चुका है और क़ैसर क़त्ल हो चुका है।[1]

हज़रत दिह्या कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़त देकर क़ैसर के पास भेजा। आगे वैसी हदीस ज़िक्र की है जैसी पीछे हुज़ूर सल्ल० के क़ैसर के नाम ख़त के बारे में गुज़र चुकी है। उसके आख़िर में यह मज़्मून है, फिर हज़रत दिह्या हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस आए तो वहां किसरा के सनआ इलाक़े के जो गवर्नर थे, उनकी तरफ़ से क़ासिद आए हुए थे और किसरा ने सनआ के गवर्नर को धमकी भरा ख़त लिखा था और बड़े ज़ोर से लिखा था कि तुम उस आदमी (यानी हुज़ूर सल्ल०) का काम तमाम कर दो (नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक) जो तुम्हारे इलाक़े में ज़ाहिर हुआ है और वह मुझे इस बात की दावत दे रहा है कि या तो मैं उसका दीन क़ुबूल कर लूं, नहीं तो मैं उसको जिज़्या देने लग जाऊं और अगर तुमने उसका काम तमाम न किया, तो मैं तुमको क़त्ल कर दूंगा और तुम्हारे साथ ऐसा-वैसा करूंगा।

चुनांचे सनआ के गवर्नर ने हुज़ूर सल्ल० के पास पचीस आदमी भेजे जिनको हज़रत दिह्या कलबी ने हुज़ूर सल्ल० के पास मौजूद पाया। जब उनका नुमाइन्दा हुज़ूर सल्ल० को ख़त सुना चुका, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको पन्द्रह दिन तक कुछ न कहा।

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 287

जब पन्द्रह दिन गुज़र गए तो ये लोग सामने आए। जब आपने उनको देखा तो उनको बुला लिया और उनसे फ़रमाया कि जाकर अपने गवर्नर से कह दो कि आज रात मेरे रब ने उसके रब को क़त्ल कर दिया है।

चुनांचे वे वापस चले गए और अपने गवर्नर को सारी कहानी सुनाई।

उसने कहा कि इस रात की तारीख़ याद रखो और यह भी कहा कि मुझे बताओ कि तुमने उनको (यानी हुज़ूर सल्ल० को) कैसा पाया।

तो उन्होंने कहा कि हमने उनसे ज़्यादा बरकत वाला कोई बादशाह नहीं देखा। वह आम लोगों में बिना किसी ख़तरे के चलते-फिरते हैं। उनका पहनावा मामूली और सीधा-सादा है। उनका कोई पहरेदार और हिफ़ाज़त करने वाला नहीं है। उनके सामने लोग अपनी आवाज़ ऊंची नहीं करते।

हज़रत दिह्या फ़रमाते हैं कि यह ख़बर आ गई कि किसरा ठीक उसी रात क़त्ल किया गया जो रात आपने बताई थी।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शाह स्कन्दरिया मुक़ौक़िस के नाम ख़त

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्द क़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ रज़ियल्लाहु अन्हु को शाह स्कन्दरिया मुक़ौक़िस के पास भेजा। वह हुज़ूर सल्ल० का ख़त लेकर उनके पास पहुंचे। मुक़ौक़िस ने हुज़ूर सल्ल० के ख़त को चूमा और हज़रत हातिब का बहुत एहतराम किया, ख़ूब अच्छी तरह उनकी मेहमानदारी की और वापस भेजते हुए उनका बड़ा इकराम किया। हज़रत हातिब के साथ एक जोड़ा कपड़ा और ज़ीन समेत एक खच्चर और दो बांदियां हदिए में हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भेजीं। इन बांदियों में एक (मारिया क़िब्तिया हैं जो) हज़रत इब्राहीम

1. बज़्ज़ार, भाग 2, पृ० 309

रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा थीं और दूसरी बांदी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुहम्मद बिन क़ैस अब्दी को दे दी थी।[1]

हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शाह स्कन्दरिया मुक़ौक़िस के पास भेजा। मैं हुज़ूर सल्ल० का ख़त लेकर उनके पास गया। उसने मुझे अपने महल में ठहराया। उसने अपने तमाम बड़े पादरियों को जमा किया और मुझे बुलाकर कहा कि मैं तुमसे कुछ बातें पूछना चाहता हूं, तो तुम मेरी बात अच्छी तरह समझ लो।

हज़रत हातिब फ़रमाते हैं कि मैंने कहा, ज़रूर पूछो।

तो उसने कहा, मुझे अपने हज़रत के बारे में बताओ कि क्या वह नबी नहीं हैं?

मैंने कहा, हैं, बल्कि वह तो अल्लाह के रसूल भी हैं।

उसने कहा, जब वह अल्लाह के रसूल थे, तो जब उनकी क़ौम ने उनको उनके शहर (मक्का) से निकाला, तो उन्होने अपनी क़ौम के लिए बद-दुआ क्यों नहीं की?

मैंने कहा, क्या तुम इस बात की गवाही नहीं देते हो कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के रसूल हैं?

उसने कहा, हां (मैं गवाही देता हूं)।

तो मैंने कहा, जब उनको उनकी क़ौम ने पकड़ा और वे उनको सूली देना चाहते थे, लेकिन अल्लाह ने उनको आसमाने दुनिया की ओर उठा लिया, तो उन्होंने अपनी क़ौम के हलाक होने की बद-दुआ क्यों नहीं की?

उसने मुझसे कहा, तुम तो बड़े अक़्लमंद और समझदार हो, अक़्लमंद और समझदार इंसान के पास से आए हो। ये कुछ हदिए हैं जो मैं तुम्हारे साथ हज़रत मुहम्मद की ख़िदमत में भेज रहा हूं और तुम्हारे साथ कुछ गार्ड भी भेजूंगा, जो तुम्हें तुम्हारे सुरक्षित क्षेत्र तक हिफ़ाज़त के साथ पहुंचाकर वापस आएंगे।

1. बैहक़ी,

चुनांचे उसने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में तीन बांदियां भेजीं, जिनमें से एक हुज़ूर सल्ल० के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम की वालिदा थीं। दूसरी बांदी हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत हस्सान बिन साबित को दे दी थी और मक़ूक़िस ने अपने इलाक़े के नए और ख़ास क़िस्म के तोहफ़े भी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भेजे।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नजरान वालों को ख़त

अब्द यसूअ के दादा पहले ईसाई थे, बाद में मुसलमान हुए, वह बयान करते हैं कि सूरः ता-सीन सुलैमान (यानी सूरः नम्ल) के उतरने से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नजरान वालों को यह ख़त लिखा। (मतलब यह है कि इस सूरः में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम का ज़िक्र है, इसलिए इस सूरः के उतरने के बाद हुज़ूर सल्ल० अपने ख़तों के शुरू में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखने लग गए। चूंकि यह ख़त इस सूरः के उतरने से पहले लिखा गया है, इसलिए इसके शुरू में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहीं है।)

'बिइस्मि इलाहि इब्राहीम व इस्हाक़ व याक़ूब' (हज़रत इब्राहीम हज़रत इस्हाक़ और हज़रत याक़ूब अलैहि० के परवरदिगार के नाम से शुरू करता हूं।)

अल्लाह के नबी और उसके रसूल मुहम्मद की ओर से नजरान के पादरी और नजरान वालों के नाम, तुम सलामती में रहो। मैं तुम्हारे सामने हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़ और हज़रत याक़ूब के माबूद की तारीफ़ बयान करता हूं। अम्माबादु—

मैं तुम्हें इस बात की दावत देता हूं कि बन्दों की इबादत छोड़कर अल्लाह की इबादत अख़्तियार करो और बन्दों की दोस्ती छोड़कर अल्लाह की दोस्ती अपनाओ। अगर मेरी इस दावत को तुम न मानो, तो फिर जिज़या अदा करो और अगर तुम जिज़या से भी इंकार करते हो, तो

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 272, इसाबा, भाग 1, पृ० 300

फिर मेरी ओर से तुम्हारे लिए लड़ाई का एलान है। वस्सलामु'

जब पादरी को हुज़ूर सल्ल० का यह ख़त मिला और उसने पढ़ा, तो वह एकदम घबरा गया। वह बहुत ज़्यादा डर गया। उसने नजरान वालों में से एक आदमी को बुलवाया, जिसका नाम शुरहबील बिन वदाआ था और वह क़बीला हमदान का था। किसी भी कठिन घड़ी के आने पर उससे पहले किसी को नहीं बुलाया जाता था, यहां तक कि ऐहम और सैयद और आक़िब को भी इससे पहले नहीं बुलाया जाता था।[1]

शुरहबील के आने पर पादरी ने उसको हुज़ूर सल्ल० का ख़त दिया। उसने ग़ौर से ख़त पढ़ा। पादरी ने पूछा, ऐ अबू मरयम! इस ख़त के बारे में तुम्हारी क्या राय है?

उसने कहा कि अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हज़रत इस्माईल की औलाद में नबी भेजने का जो वायदा कर रखा है, वह आप जानते ही हैं, इसलिए हो सकता है कि यह आदमी वही नबी हो। नुबूवत के मामले में मैं कोई राय नहीं दे सकता हूं। दुनिया का कोई मामला हो तो मैं सोच-समझकर अपना मश्विरा पेश कर देता।

पादरी ने शुरहबील से कहा, एक ओर होकर बैठ जाओ। चुनांचे शुरहबील एक कोने में बैठ गए।

फिर पादरी ने आदमी भेजकर नजरानियों में से एक और आदमी को बुलाया, जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन शुरहबील था और वह क़बीला हिमयर की ज़ी अस्बह शाख़ में से था। पादरी ने उसे ख़त पढ़ने के लिए दिया। उस ख़त के बारे में उसकी राय पूछी।

उसने भी शुरहबील जैसा जवाब दिया, तो उससे पादरी ने कहा, एक ओर होकर बैठ जाओ। चुनांचे वह एक कोने में बैठ गया।

फिर पादरी ने आदमी भेजकर नजरानियों में से एक और आदमी को बुलवाया, जिसका नाम जब्बार बिन फ़ैज़ था और वह क़बीला बनू हारिस बिन काब की शाखा बनुल हमास में से था। उसे भी पढ़ने के

1. ये तीनों उनके बड़े अहम ओहदों के नाम हैं।

लिए ख़त दिया और उस ख़त के बारे में उसकी राय पूछी। उसने भी शुरहबील और अब्दुल्लाह जैसा जवाब दिया। पादरी के कहने पर वह भी एक कोने में बैठ गया।

जब इन सब ने इस बारे में एक ही राय दी तो पादरी के हुक्म देने पर घंटा बजाया गया और गिरजाघरों में आग रोशन की गई और टाट के झंडे बुलन्द किए गए।

दिन में जब घबराहट की बात पेश आती, तो वे लोग ऐसा ही किया करते और अगर रात को घबराहट की बात पेश आती तो सिर्फ़ घंटे बजाते और गिरजाघरों में आग रोशन करते।

चुनांचे जब घंटा बजाया गया और टाट के झंडे ऊंचे किए गए तो घाटी के तमाम ऊपर-नीचे के रहने वाले जमा हो गए। वह घाटी इतनी लम्बी थी कि तेज़ सवार उसे एक दिन में तै करे। उसमें तिहत्तर बस्तियां और एक लाख बीस हज़ार जंगजू जवान थे।

पादरी ने इन सबको हुज़ूर सल्ल० का ख़त पढ़कर सुनाया और उनसे इस ख़त के बारे में राय पूछी तो उनके तमाम अह्ले शूरा ने यह राय दी कि शुरहबील बिन वदाआ हमदानी, अब्दुल्लाह बिन शुरहबील असबई और जब्बार बिन फ़ैज़ हारिसी को हुज़ूर सल्ल० के पास भेज दिया जाए। ये तीनों हुज़ूर सल्ल० के तमाम हालात मालूम करके आएं।

चुनांचे इन तीनों का वफ़्द गया। जब ये मदीना पहुंचे, तो उन्होंने अपने सफ़र के कपड़े उतार दिए और यमन के बने हुए सजे-सजाए और लम्बे-चौड़े जोड़े पहन लिए जो ज़मीन पर घिसट रहे थे। हाथों में सोने की अंगूठियां पहन लीं।

फिर आपकी खिदमत में हाज़िर होकर सलाम किया, लेकिन आपने उनके सलाम का जवाब न दिया।

वे लोग दिन भर हुज़ूर सल्ल० से बात करने का मौक़ा खोजते रहे, लेकिन आपने उनसे कोई बात न की, क्योंकि उन्होंने वे जोड़े और सोने की अंगूठियां पहन रखी थीं।

फिर वे तीनों हज़रत उस्मान और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़

रज़ि० की खोज में चले। उन लोगों की इन दोनों से जान-पहचान थी। वे दोनों मुहाजिरीन और अंसार की एक मज्लिस में मिल गए, तो उन लोगों ने कहा, ऐ उस्मान और ऐ अब्दुर्रहमान! तुम्हारे नबी ने हमें ख़त लिखा, जिसकी वजह से हम यहां आए हैं। हमने उनकी ख़िदमत में जाकर सलाम किया, लेकिन उन्होंने सलाम का जवाब नहीं दिया और दिन भर हम उनसे बात करने का मौक़ा खोजते रहे, लेकिन उन्होंने हमें कोई मौक़ा नहीं दिया। हम तो अब थक गए, तो आप दोनों का क्या ख़्याल है? क्या हम वापस चले जाएं?

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी इस मज्लिस में मौजूद थे। इन दोनों ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया, ऐ अबुल हसन! इन लोगों के बारे में आपकी क्या राय है? तो हज़रत अली रज़ि० ने उन दोनों से फ़रमाया कि मेरा ख़्याल यह है कि ये लोग अपने ये जोड़े और अंगूठियां उतार दें और अपने सफ़र वाले कपड़े पहने लें, फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाएं।

चुनांचे उन लोगों ने ऐसा ही किया और ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम किया तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके सलाम का जवाब दिया।

फिर आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम! जिसने मुझे हक़ देकर भेजा है, ये लोग जब पहली बार मेरे पास आए थे, तो इब्लीस भी इनके साथ था, फिर हुज़ूर सल्ल० ने उनसे हालात पूछे।

उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से अपने सवाल किए। यों ही सवालों का सिलसिला चलता रहा, यहां तक कि उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से यह पूछा कि आप ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में क्या फ़रमाते हैं, क्योंकि हम ईसाई हैं। हम अपनी क़ौम के पास वापस जाएंगे। अगर आप नबी हैं, तो हमारी ख़ुशी इसमें है कि हम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में आपके ख़्यालात सुनकर जाएं।

आपने फ़रमाया, आज तो मेरे पास इनके पास इनके बारे में कुछ ज़्यादा मालूमात नहीं हैं। आज तुम लोग ठहर जाओ। मेरा रब ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में जो कुछ बताएगा, मैं तुम्हें उसकी ख़बर कर दूंगा।

अगले दिन सुबह को अल्लाह ने यह आयत उतारी—

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ —— الْكَاذِبِينَ ۝

'बेशक ईसा अलैहिस्सलाम की मिसाल अल्लाह के नज़दीक जैसे मिसाल आदम की। बनाया उसको मिट्टी से, फिर कहा उसको कि हो जा। वह हो गया। हक़ वह है जो तेरा रब कहे। फिर तू मत रह शक लाने वालों से। फिर जो कोई झगड़ा करे तुझसे इस क़िस्से में, बाद इसके कि आ चुकी तेरे पास सच्ची, तो तू कह दे आओ बुलाएं हम अपने बेटे और तुम्हारे बेटे, अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें, अपनी जान और तुम्हारी जान, फिर इल्तिजा करें हम सब और लानत करें अल्लाह की उन पर कि जो झूठे हैं।'

(हुज़ूर सल्ल० ने उनको यह आयतें सुनाईं, लेकिन इन आयतों को सुनकर) उन्होंने इनको मानने से इंकार कर दिया (और मुबाहला के लिए तैयार हो गए)।

चुनांचे अगले दिन हुज़ूर सल्ल० मुबाहले के लिए तशरीफ़ लाए। आप अपनी चादर में हज़रत हसन और हुसैन रज़ि० को लपेटे हुए थे और हज़रत फ़ातिमा आपके पीछे-पीछे चल रही थीं। उस दिन आपकी बहुत-सी बीवियां थीं।

(यह मंज़र देखकर) शुरहबील ने अपने दोनों साथियों से कहा कि जब घाटी के ऊपर और नीचे के रहने वाले लोग जमा हो जाते हैं, तो सब मेरे फ़ैसले पर ही मुतमइन होकर वापस जाते हैं। और अल्लाह की क़सम! मैं बहुत मुश्किल और कठिन बात देख रहा हूं। अल्लाह की क़सम! अगर यह आदमी वाक़ई गुस्से से भरा हुआ है (और हम उनकी बात नहीं मानते हैं) तो हम अरबों में सबसे पहले उनकी आंखों को फोड़ने वाले और उसके मामले का सबसे पहले खंडन करने वाले हो जाएंगे, तो फिर उनके और उनके साथियों के दिल से हमारा ख़्याल उस वक़्त तक नहीं निकलेगा, यानी उनका गुस्सा उस वक़्त तक ठंडा नहीं पड़ेगा, जब तक कि हमें जड़ से नहीं उखाड़ देते हैं। हम अरबों में उनके सबसे क़रीबी पड़ोसी हैं। अगर यह आदमी वाक़ई नबी और रसूल हैं

और हमने उनसे मुबाहला कर लिया तो इस धरती के हम तमाम ईसाई हलाक हो जाएंगे। हममें से किसी का बाल और नाख़ून तक नहीं बचेगा।

तो शुरहबील के दोनों साथियों ने कहा, ऐ अबू मरयम ! तो फिर तुम्हारा क्या ख़्याल है?

शुरहबील ने कहा, मेरा ख़्याल यह है कि मैं उनको हकम बना लेता हूं, क्योंकि मैं देख रहा हूं कि वह ऐसे इंसान हैं जो कभी भी बेजा शर्त नहीं लगाएंगे।

उन दोनों में कहा, अच्छा, तुम जैसे मुनासिब समझो।

चुनांचे शुरहबील हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में मुलाक़ात के लिए गया और उसने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि मुबाहला से बेहतर एक बात मेरी समझ में आई है।

आपने फ़रमाया, वह क्या है?

उसने कहा, (हम आपसे सुलह कर लेते हैं) आप रात भर सोचकर सुबह में अपनी शर्तें बता दें। आप जो भी शर्तें लगाएंगे, वे हमें मंज़ूर हैं।

आपने फ़रमाया कि हो सकता है कि तुम्हारी क़ौम के लोग तुम्हारी मुख़ालफ़त करें और यों सुलह करने पर तुझ पर एतराज़ करें।

शुरहबील ने कहा, आप मेरे इन दोनों साथियों से पूछ लें।

आपने उन दोनों से पूछा, तो उन दोनों ने कहा कि हमारी घाटी के तमाम लोग शुरहबील के फ़ैसले को दिल व जान से मान लेते हैं।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० वापस तशरीफ़ ले गए और उनसे मुबाहला न फ़रमाया। अगले दिन वे तीनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको यह ख़त लिखकर दिया—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

यह वह समझौता है जो अल्लाह के नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह ने नजरान वालों के बारे में लिखा है कि मुहम्मद का उनके बारे में यह

फ़ैसला है कि तमाम फल, सोना और चांदी और ग़ुलाम वग़ैरह सब नजरान वालों के पास रहेगा और यह मुहम्मद की ओर से उन पर फ़ज़्ल व एहसान है और इसके बदले में वे दो हज़ार जोड़े दिया करेंगे। एक हज़ार जोड़े रजब में और एक हज़ार जोड़े सफ़र में।

और बाक़ी तमाम शर्तें भी ज़िक्र कीं।[1] बिदाया (भाग 5, पृ० 55) में इसके बाद यह मज़्मून है कि हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और हज़रत ग़ैलान बिन अम्र और बनी नस्र के हज़रत मालिक बिन औफ़ और अक़रअ बिन हाबिस हंज़ली और हज़रत मुग़ीरह रज़ियल्लाहु अन्हुम इस समझौते पर गवाह बने और आपने यह समझौता लिखवाया।

समझौता नामा लेकर वे नजरान को वापस चल पड़े। जब ये लोग नजरान पहुंचे तो पादरी के पास उसका मांजाया चचेरा भाई मौजूद था, जिसका नाम बशीर बिन मुआविया और जिसकी कुन्नियत (उपाधि) अबू अलक़मा थी। इन लोगों ने हुज़ूर सल्ल० का समझौता नामा उस पादरी को दिया। वह पादरी और उसका भाई अबू अलक़मा दोनों सवारी पर जा रहे थे और पादरी हुज़ूर सल्ल० का समझौता नामा पढ़ रहा था कि इतने में बशीर की ऊंटनी ठोकर खाकर मुंह के बल गिर पड़ी और बशीर भी गिर गया और उसने हुज़ूर सल्ल० का नाम साफ़ लेकर हुज़ूर सल्ल० के लिए हलाकत की बद-दुआ की। इसमें इशारे या कनाए से काम नहीं लिया। इस पर पादरी ने उससे कहा, अल्लाह की क़सम! तुमने एक नबी और रसूल की हलाकत की बद-दुआ की है।

(इस पर पादरी से मुतास्सिर होकर) बशीर ने पादरी से कहा कि अगर वह वाक़ई नबी और रसूल हैं, तो फिर मैं अल्लाह के रसूल की ख़िदमत में हाज़िर होने से पहले अपनी ऊंटनी के कजावे की कोई भी गिरह नहीं खोलूंगा।

चुनांचे बशीर ने अपनी ऊंटनी का मुंह मदीने की ओर मोड़ दिया। पादरी ने भी अपनी ऊंटनी उनकी ओर मोड़ दी और उससे कहा, ज़रा

1. इब्ने कसीर, भाग 1, पृ० 369

मेरी बात समझ तो लो। मैंने तो यह बात डरते-डरते सिर्फ़ इसलिए कह दी थी, ताकि मेरी ओर से अरबों को यह बात पहुंच जाए कि हमने आपके हक़ होने को मान लिया है या हमने आपकी आवाज़ (नुबूवत के दावे) को क़ुबूल कर लिया है या हमने आजिज़ होकर आपकी बात का इक़रार कर लिया है जिसका तमाम अरबों ने भी इक़रार नहीं किया, हालांकि हम अरबों में ज़्यादा इज़्ज़त वाले और ज़्यादा घरों वाले (यानी ज़्यादा आबादी वाले) हैं।

बशीर ने उससे कहा कि नहीं, नहीं, अल्लाह की क़सम ! जो बात तुम अब कह रहे हो, मैं उसे कभी नहीं मानूंगा।

इसके बाद बशीर ने अपनी ऊंटनी की रफ़्तार तेज़ करने के लिए उसे मारा और पादरी को पीठ पीछे छोड़ गए और वह ये पद पढ़ते जाते थे—

إِلَيْكَ تَعْدُو قَلِقًا وَضِينُهَا مُعْتَرِضًا فِي بَطْنِهَا
جَنِينُهَا مُخَالِفًا دِينَ النَّصَارَى دِينُهَا

'ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरी यह ऊंटनी आप ही की ओर चल रही है। इसका पेट तेज़ चलने की वजह से ख़ूब हिल रहा है और इसके पेट में इसका बच्चा टेढ़ा पड़ा हुआ है और इसका दीन यानी इसके सवार का दीन नसारा के दीन से अलग हो चुका है।'

चुनांचे बशीर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचकर मुसलमान हो गए और फिर ज़िंदगी भर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहे, यहां तक कि (एक ग़ज़वे में) वह शहीद हो गए।

बहरहाल वह तीन आदमियों का वफ़्द नजरान के इलाक़े में पहुंचा। फिर वह वफ़्द इब्ने अबी शिम्र ज़ुबैदी राहिब (पादरी) के पास गया जो कि अपने गिरजे के ऊपर कमरे में था। वफ़्द ने उसे यह बताया कि तिहामा में एक नबी भेजे गए हैं और फिर उन्होंने उस राहिब को अपने सफ़र की कारगुज़ारी सुनाई कि वे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए। हुज़ूर सल्ल० ने उनको मुबाहला की दावत दी, लेकिन उन्होंने

मुबाहला करने से इंकार कर दिया और बशीर बिन मुआविया हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर मुसलमान हो चुका है।

तो उस राहिब ने कहा, मुझे इस कोठे से नीचे उतार दो, वरना मैं अपने आपको नीचे गिरा दूंगा। चुनांचे लोगों ने उसे नीचे उतारा और कुछ हदिए लेकर हुज़ूर सल्ल० की ओर चल पड़ा। इन हदियों में वह चादर भी थी जो ख़लीफ़ा लोग ओढ़ा करते थे, और एक प्याला और एक लाठी भी थी।

वह काफ़ी अर्से तक हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ठहरकर वह्य को सुनता रहा, लेकिन उसके मुक़द्दर में इस्लाम नहीं था और जल्द वापस आने का वायदा करके अपनी क़ौम की ओर चला गया, लेकिन हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस आना भी उसके मुक़द्दर में नहीं था, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया।

अबुल हारिस पादरी सैयिद और आक़िब और अपनी क़ौम के नुमायां लोगों को लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया और ये सब लोग वहां ठहरकर आसमान से उतरने वाले क़ुरआन को सुनते रहे। हुज़ूर सल्ल० ने नजरान के इस पादरी के लिए और दूसरे पादरियों के लिए यह तहरीर लिख दी—

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नबी मुहम्मद की ओर से यह तहरीर अबुल हारिस पादरी और नजरान के दूसरे पादरियों, काहिनों और राहिबों के लिए है।

थोड़ी या ज़्यादा जितनी चीज़ें उनके क़ब्ज़े में हैं, वे सब उन्हीं के पास रहेंगी, इन सबको अल्लाह और उसके रसूल ने अपनी पनाह में ले लिया है। किसी पादरी, राहिब और काहिन को उसके मंसब से नहीं हटाया जाएगा और उनके हुक़ूक़ और उनके इक़्तिदार और उनके ओहदों को नहीं छीना जाएगा और अल्लाह और रसूल की यह पनाह उस वक़्त तक है, जब तक कि ये ठीक-ठीक चलें और लोगों के साथ ख़ैरख़्वाही करते रहें। न उन पर ज़ुल्म किया जाएगा, न ये किसी पर ज़ुल्म करें।'

हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा ने यह तहरीर लिखी थी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बक्र बिन वाइल के नाम ख़त

हज़रत मरसद बिन ज़बियान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़त आया। हमें अपने क़बीले में कोई ऐसा आदमी न मिला जो ख़त पढ़ सके। चुनांचे क़बीला बनू ज़बीआ के एक आदमी ने यह ख़त हमें पढ़कर सुनाया। ख़त का मज़्मून यह था—

यह ख़त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से बक्र बिन वाइल के नाम है, तुम लोग मुसलमान हो जाओ सलामती पा लोगे।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बनू जुज़ामा के नाम ख़त

हज़रत माबद जुज़ामी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत रिफ़ाआ बिन ज़ैद जुज़ामी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गए। आपने उनको एक ख़त लिखकर दिया, जिसमें यह मज़्मून था—

'यह ख़त लिखकर मुहम्मद रसूलुल्लाह ने रिफ़ाआ बिन ज़ैद को दिया है। मैं उनको अल्लाह और रसूल की ओर दावत देने के लिए उनकी क़ौम, और जो उनमें गिने जाते हैं, उनकी ओर भेज रहा हूं, जो ईमान लाएगा, वह अल्लाह और उसकी जमाअत में दाख़िल हो जाएगा, जो नहीं लाएगा, उसे दो माह की मोहलत है।'

जब यह अपनी क़ौम के पास आए तो सबने इनका कहा मान लिया।[2]

---

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 305
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 310, इसाबा, भाग 3, पृ० 441

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उन अख़्लाक़ और आमाल के क़िस्से जिनकी वजह से लोगों को हिदायत मिलती थी

हज़रत ज़ैद बिन सुअना रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने का क़िस्सा जोकि यहूदियों के बड़े आलिम थे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह ने हज़रत ज़ैद बिन सोअना को हिदायत से नवाज़ने का इरादा फ़रमाया, तो हज़रत ज़ैद बिन सोअना ने अपने दिल में कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे पर निगाह पड़ते ही मैंने नुबूवत की तमाम निशानियों को हुज़ूर सल्ल० के चेहरे में पा लिया था, लेकिन दो निशानियां ऐसी हैं जिनकी मैंने आपमें अभी तक आज़माया नहीं है।

एक तो यह कि नबी की बुर्दबारी उसके जल्द ग़ुस्सा में आ जाने पर ग़ालिब होती है।

दूसरे यह कि नबी के साथ जितना ज़्यादा नादानी का मामला किया जाएगा, उसकी बुर्दबारी उतनी बढ़ती जाएगी।

चुनांचे एक दिन आप हुजरों से बाहर तशरीफ़ लाए। आपके साथ हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। आपके पास एक आदमी ऊंटनी पर सवार होकर आया जो देखने में बद्दू मालूम होता था।

उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! फ़्लां क़बीले की बस्ती में मेरे कुछ साथी मुसलमान हो चुके हैं। मैंने उनसे कहा था कि अगर वह इस्लाम क़ुबूल कर लेंगे, तो उन पर रोज़ी फैला दी जाएगी, लेकिन अब वहां अकाल आ गया है और वर्षा बिल्कुल नहीं हो रही है। ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे इस बात का ख़तरा है कि जैसे वे लालच में आकर इस्लाम में दाख़िल हुए, उसी तरह लालच में आकर कहीं वे इस्लाम से

निकल न जाएं। अगर आप मुनासिब समझें तो उनकी मदद करने के लिए कुछ भेज दें।

आपके पहलू में जो आदमी था, आपने उनकी ओर देखा। मेरा ख़्याल यह है कि वह हज़रत अली थे, तो उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इस माल में से कुछ नहीं बचा ?

हज़रत ज़ैद बिन सोअना फ़रमाते हैं कि मैंने आपके क़रीब जाकर कहा, ऐ मुहम्मद ! अगर आप चाहें तो मैं पैसे आपको अभी दे देता हूं और उसके बदले में आप फ़्लां क़बीले के बाग़ की इतनी खजूरें मुझे फ़्लां वक़्त तक दे दें।

आपने फ़रमाया, ठीक है, लेकिन किसी के बाग़ को तै न करो।

मैंने कहा, चलो ठीक है।

चुनांचे आपने मुझसे सौदा कर लिया। मैंने अपनी कमर से हिमयानी खोली और इन खजूरों के बदले में आपको अस्सी मिस्क़ाल सोना दे दिया।

आपने वह सारा सोना उस आदमी को दे दिया और उससे फ़रमाया, लो, यह इनकी मदद के लिए ले जाओ और इनमें बराबर-बराबर बांट देना।

हज़रत ज़ैद बिन सोअना फ़रमाते हैं कि तैशुदा मीआद में अभी दो-तीन दिन बाक़ी थे कि हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ लाए और आपके साथ हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि० और कुछ सहाबा भी थे। जब आप जनाज़े की नमाज़ पढ़ा चुके और एक दीवार के क़रीब बैठने के लिए तशरीफ़ ले गए, तो मैंने आगे बढ़कर आपका गरेबान पकड़ लिया और ग़ुस्से वाले चेहरे से मैंने आपकी ओर देखा और मैंने आपसे कहा, ओ मुहम्मद ! आप मेरा हक़ क्यों नहीं अदा करते हैं ? अल्लाह की क़सम ! तुम अब्दुल मुत्तलिब की औलाद ने तो टाल-मटोल करना ही सीखा है और अब साथ रहकर भी यही नज़र आया है।

इतने में मेरी नज़र हज़रत उमर पर पड़ी। ग़ुस्से के मारे उनकी दोनों-

आंखें गोल आसमान की तरह घूम रही थीं। उन्होंने मुझे घूरकर देखा और कहा, ऐ अल्लाह के दुश्मन ! तू अल्लाह के रसूल को वह बातें कह रहा है जो मैं सुन रहा हूं और उनके साथ वह सुलूक कर रहा है, जो मैं देख रहा हूं। अगर आपकी मज्लिस के अदब का ध्यान न होता तो अभी अपनी तलवार से तेरी गरदन उड़ा देता।

हुज़ूर सल्ल० मुझे बड़े सुकून और इत्मीनान से देख रहे थे। आपने फ़रमाया, ऐ उमर ! मुझे और इसे जल्दी किसी और चीज़ की ज़रूरत थी। मुझे तो तुम अच्छी तरह और जल्दी अदा करने को कहते और इसे ज़रा सलीक़े से मांग रखने को कहते। ऐ उमर ! इन्हें ले जाओ और जितना इनका हक़ बनता है, वह भी इनको दो और जो तुमने इनको धमकाया है, इसके बदले में बीस साअ खजूर और दो।

हज़रत ज़ैद फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर मुझे ले गए और जितनी मेरी खजूरें थीं, वह भी मुझे दीं और बीस साअ खजूरें ज़्यादा भी दीं।

मैंने कहा, ये ज़्यादा खजूरें क्यों दे रहे हो ?

हज़रत उमर ने कहा कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि मैंने जो तुमको धमकाया है, उसके बदले में तुमको और खजूरें भी दूं ?

मैंने कहा, ऐ उमर ! क्या तुम मुझको जानते हो ?

हज़रत उमर ने कहा, नहीं।

मैंने कहा, मैं ज़ैद बिन सोअना हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, वह यहूदियों के बड़े विद्वान ?

मैंने कहा, हां, वही।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, (इतने बड़े आलिम होकर) तुमने अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ ऐसा सुलूक क्यों किया ? और उनको ऐसी बातें क्यों कहीं ?

मैंने कहा, ऐ उमर ! हुज़ूर सल्ल० के चेहरे पर निगाह पड़ते ही मैंने नुबूवत की तमाम निशानियों को हुज़ूर सल्ल० के चेहरे में पा लिया था, लेकिन दो निशानियां ऐसी थीं, जिनको मैंने आपमें अभी तक आज़माया

नहीं था। एक यह कि नबी की बुर्दबारी और उसके जल्द गुस्सा में आ जाने पर ग़ालिब होती है। दूसरी यह कि नबी के साथ जितना नादानी का मामला किया जाएगा, उसकी बुर्दबारी उतनी बढ़ती जाएगी और अब मैंने इन दोनों बातों को आज़मा लिया है। ऐ उमर! मैं तुम्हें इस बात पर गवाह बनाता हूं कि मैं अल्लाह के रब पर, इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद के नबी होने पर दिल से राज़ी हूं और इस बात पर गवाह बनाता हूं कि मेरा आधा माल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारी उम्मत के लिए वक़्फ़ है और मैं मदीना में सबसे ज़्यादा मालदार हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, सारी उम्मत के बजाए कुछ उम्मत कहो, क्योंकि तुम सारी उम्मत को देने की गुंजाइश नहीं रखते हो।

मैंने कहा, अच्छा, कुछ उम्मत के लिए वक़्फ़ है।

वहां से हज़रत उमर और हज़रत ज़ैद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस गए और हज़रत ज़ैद ने पहुंचते ही कहा,

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अशहदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु अशहदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू० और हुज़ूर सल्ल० पर ईमान ले आए, और आपकी तस्दीक़ की, आपके हाथ पर बैअत की। हुज़ूर सल्ल० के साथ बहुत-से ग़ज़वों में शरीक रहे और ग़ज़वा तबूक से वापस आते हुए नहीं, बल्कि आगे बढ़ते हुए उन्होंने वफ़ात पाई। अल्लाह हज़रत ज़ैद[1] पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाए—

सुलह हुदैबिया का क़िस्सा

हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा और मरवान रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुलह हुदैबिया के मौक़े पर मदीना से रवाना हुए। रास्ते में एक जगह हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि ख़ालिद बिन वलीद क़ुरैश के सवारों की एक जमाअत

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 248, इसाबा भाग 1, पृ० 566, दलाइल, पृ० 23

लेकर ग़नीम नामी जगह पर हालात मालूम करने के लिए आए हुए हैं, इसलिए तुम दाईं ओर को हो जाओ। अल्लाह की क़सम ! ख़ालिद को हुज़ूर सल्ल० के क़ाफ़िले की ख़बर उस वक़्त हुई जबकि ये लोग ठीक उनके सर पर पहुंच गए और उन्हें इस क़ाफ़िले की धूल नज़र आई।

जब हज़रत ख़ालिद को पता चला तो उन्होंने घोड़ा दौड़ा कर क़ुरैश को आपके आने की ख़बर दी।

हुज़ूर सल्ल० चलते रहे, यहां तक कि जब आप उस घाटी पर पहुंचे जहां से मक्का की ओर रास्ता जाता था, तो आपकी ऊंटनी बैठ गई। उस ऊंटनी का नाम क़सवा था। लोगों ने (उसे उठाने के लिए अरब रिवाज के मुताबिक़) हल-हल कहा, लेकिन वह बैठी रही, तो लोगों ने कहा, क़सवा अड़ गई है, क़सवा अड़ गई है।

आपने फ़रमाया, क़सवा अड़ी नहीं है। न इस तरह अड़ जाना उसकी आदत है, बल्कि उसको उसी ज़ात ने रोका है, जिसने हाथियों को रोका था यानी अल्लाह ने।

फिर आपने फ़रमाया, क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मक्का के कुफ़्फ़ार, मुझसे जिस ऐसी तज्वीज़ की मांग करेंगे, जिससे वे अल्लाह की एहतराम के क़ाबिल चीज़ों की ताज़ीम कर रहे होंगे, मैं उनकी ऐसी तज्वीज़ को ज़रूर मान लूंगा।

फिर आपने उस ऊंटनी को झिड़का, तो वह तुरन्त खड़ी हो गई।

फिर आपने मक्का का रास्ता छोड़ दिया और हुदैबिया घाटी के आख़िरी किनारे पर पड़ाव डाला, जहां एक सोत में से थोड़ा-थोड़ा पानी निकल रहा था। सहाबा उसमें से थोड़ा-थोड़ा पानी लेने लगे। थोड़ी देर में सारा पानी ख़त्म हो गया और सहाबा ने हुज़ूर सल्ल० से प्यास की शिकायत की।

आपने अपने तिरकश में से एक तीर निकालकर दिया और फ़रमाया कि इसे उस चश्मे में गाड़ दो।

(सहाबा ने वह तीर उस चश्मे में गाड़ दिया) तो जब तक सहाबा वहां रहे, उस चश्मे में से पानी जोश मार कर फूटता रहा और सहाबा

उससे ख़ूब सैराब होते रहे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम हुदैबिया की घाटी में ठहरे हुए थे कि इतने में बुदैल बिन वरक़ा अपनी क़ौम ख़ुज़ाआ की एक जमाअत को लेकर आए और ये लोग तिहामा के लोगों में से आपका सबसे ज़्यादा भला चाहने वाले थे। उन्होंने कहा, मैं काब बिन लुई और आमिर बिन लुई के पास से आ रहा हूं। उन्होंने हुदैबिया के चश्मों में पड़ाव डाला हुआ है (और वे लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार होकर सारा सामान लेकर आए हैं, यहां तक कि) उनके साथ ब्याही और बच्चे वाली ऊंटनियां भी हैं, वे आपसे लड़ना चाहते हैं और आपको बैतुल्लाह से रोकेंगे।

आपने फ़रमाया, हम किसी से लड़ने के लिए नहीं आए, बल्कि हम तो उमरा करने आए हैं। (हम बहुत हैरान हैं कि वे लड़ाई के लिए तैयार होकर आ गए हैं, हालांकि) लड़ाइयों ने तो क़ुरैश को बहुत थका दिया है और उनको बहुत नुक़्सान पहुंचाया है। अगर वे चाहें, तो मैं उनसे एक अर्से तक के लिए समझौता करने को तैयार हूं। इस अर्से में वे मेरे और लोगों के बीच कोई दख़ल नहीं देंगे (और मैं इस अर्से में दूसरे लोगों को दावत देता रहूंगा) अगर दावत देकर मैं लोगों पर ग़ालिब आ गया (और लोग मेरे दीन में दाख़िल हो गए) तो फिर क़ुरैश की मर्ज़ी है, अगर वे चाहें तो वे भी इस दीन में दाख़िल हो जाएं, जिसमें दूसरे लोग दाख़िल हुए होंगे और अगर मैं ग़ालिब न आया (और दूसरे लोगों ने ग़ालिब आकर मुझे ख़त्म कर दिया) तो फिर ये लोग आराम से रहेंगे और अगर वे सुलह करने से इंकार कर दें, तो उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं उनसे इस दीन के लिए ज़रूर लडूंगा, यहां तक कि मेरी गरदन मेरे जिस्म से अलग हो गए। (यानी मुझे मार दिया जाए) और अल्लाह का दीन ज़रूर चलकर रहेगा।

हज़रत बुदैल ने कहा, आप जो कुछ कह रहे हैं, मैं वह सब मक्का वालों को पहुंचा दूंगा।

चुनांचे हज़रत बुदैल वहां से चलकर क़ुरैश के पास पहुंचे और उनसे कहा, हम उस आदमी के पास से आपके पास आ रहे हैं और हमने

उसको एक बात कहते हुए सुना है। अगर आप चाहें तो हम उसकी बात आपको पेश कर दें।

मक्का के नादान क़िस्म के लोगों ने कहा, हमें उनकी कोई बात बताने की ज़रूरत नहीं है।

लेकिन उनमें से समझदार लोगों ने कहा, तुमने उनसे जो सुना है, वह हमें ज़रूर बताओ।

हज़रत बुदैल ने कहा, मैंने उनको यह कहते हुए सुना और उनको हुज़ूर सल्ल० की सारी बात बताई।

तो हज़रत उर्वा बिन मसऊद ने खड़े होकर कहा कि क्या मैं तुम्हारे लिए वालिद का दर्जा नहीं रखता हूं?

उन्होंने कहा, रखते हैं।

उर्वा ने कहा, क्या तुम मेरे लिए औलाद की तरह नहीं हो?

उन्होंने कहा, हां, औलाद की तरह हैं।

उर्वा ने कहा, क्या तुम्हें मेरे बारे में कोई शक या शुबहा है?

उन्होंने कहा, नहीं।

उर्वा ने कहा, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मैंने उकाज़ वालों को तुम्हारी मदद के लिए तैयार किया था, लेकिन जब वे तैयार न हुए, तो मैं अपने घरवालों, अपने बच्चों और अपने फ़रमांबरदार इंसानों को लेकर तुम्हारी मदद के लिए आ गया था?

उन्होंने कहा, हां मालूम है।

उर्वा ने कहा, उस आदमी ने (यानी हुज़ूर सल्ल० ने) तुम्हारे सामने एक भली और अच्छी तज्वीज़ पेश की है, तो तुम उसको मान लो और मुझे इस सिलसिले में उनसे बात करने के लिए जाने दो।

मक्का वालों ने कहा, ज़रूर जाओ।

चुनांचे उर्वा हुज़ूर सल्ल० के पास गए और हुज़ूर सल्ल० से बात करने लगे। हुज़ूर सल्ल० ने जो कुछ बुदैल से फ़रमाया था, वही आपने उनसे भी कहा, तो इस पर उर्वा ने कहा—

'ऐ मुहम्मद ! आप यह बताइए कि अगर आपने अपनी क़ौम को जड़ से उखाड़ फेंका तो क्या आपने सुना है कि आपसे पहले अरब के किसी आदमी ने अपने ख़ानदान वालों को जड़ से उखाड़ दिया हो और अगर दूसरी शक्ल हुई यानी क़ुरैश तुम पर ग़ालिब आ गए, तो मैं तुम्हारे साथ भरोसेमंद और वफ़ादार लोगों का मजमा नहीं देख रहा हूं, बल्कि इधर-उधर के फुटकर लोगों की भीड़ है, जो (लड़ाई शुरू होते ही) तुम्हें छोड़कर भाग जाएंगे।

इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, तू अपने माबूद लात बुत की पेशाबगाह चूस, क्या हम हुज़ूर सल्ल० को अकेला छोड़कर भाग जाएंगे ?

उर्वा ने कहा, यह कौन है ?

लोगों ने कहा, यह अबूबक्र हैं ?

उर्वा ने कहा, क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुम्हारा मुझ पर वह एहसान न होता, जिसका मैं अब तक बदला न दे सका, तो मैं तुम्हारी इस बात का जवाब ज़रूर देता।

उर्वा हुज़ूर सल्ल० से बातें करते हुए हुज़ूर सल्ल० की दाढ़ी को हाथ लगाने लगता, और (उर्वा के भतीजे) हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि० हाथ में तलवार लिए और सर पर ख़ूद पहने हुए हुज़ूर के सिरहाने खड़े थे। जब भी उर्वा हुज़ूर सल्ल० की दाढ़ी की ओर हाथ बढ़ाते, हज़रत मुग़ीरह उसके हाथ पर तलवार का दस्ता मारते और कहते कि हुज़ूर सल्ल० की मुबारक दाढ़ी से अपना हाथ दूर रख।

चुनांचे सर उठाकर पूछा, यह आदमी कौन है ?

लोगों ने बताया, यह मुग़ीरह बिन शोबा हैं ?

उर्वा ने कहा, ओ ग़द्दार ! क्या मैं तेरी ग़द्दारी को अभी तक नहीं भुगत रहा हूं (यानी तुमने जो क़त्ल किया था, उसका ख़ूंबहा मैं अभी तक दे रहा हूं और जो तुमने माल लूटा था, उसका जुर्माना अब तक भर रहा हूं।)

हज़रत मुग़ीरह अज्ञानता-काल में एक क़ौम के साथ सफ़र में गए

थे। उनको क़त्ल करके और माल लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आ गए थे और मुसलमान हो गए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे साफ़ फ़रमाया था कि तुम्हारा इस्लाम तो क़ुबूल है, लेकिन तुम जो माल लाए हो, उससे मेरा कोई ताल्लुक़ नहीं है। (उर्वा का इशारा इसी क़िस्से की तरफ़ था)

फिर उर्वा हुज़ूर सल्ल० के सहाबा को बड़े ग़ौर से देखने लगे। वह कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्ल० जब भी थूकते तो उसे कोई न कोई सहाबी अपने हाथ में ले लेता और उसको अपने चेहरे और जिस्म पर मल लेता और हुज़ूर सल्ल० जब उन्हें किसी काम के करने का हुक्म देते, तो सहाबा उसे फ़ौरन करते और जब आप वुज़ू फ़रमाते तो आपके वुज़ू के पानी लेने के लिए सहाबी रज़ि० एक दूसरे पर टूट पड़ते और लड़ने के क़रीब हो जाते और जब आप बातें करते, तो सहाबा आपके सामने अपनी आवाज़ें पस्त कर लेते। सहाबा के दिल में आपकी इतनी अज़्मत थी कि वे आपको नज़र भरकर नहीं देख सकते थे।

चुनांचे उर्वा अपने साथियों के साथ वापस आए और उनसे यह कहा कि मैं बड़े-बड़े बादशाहों के दरबार में गया हूं, क़ैसर, किसरा और नजाशी के दरबार में गया हूं। अल्लाह की क़सम! मैंने कोई ऐसा बादशाह नहीं देखा जिसकी ताज़ीम उसके दरबारी इतनी करते हों कि जितनी मुहम्मद के सहाबा मुहम्मद की करते हैं। अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्ल० जब भी थूकते तो उसे कोई न कोई सहाबी अपने हाथ पर लेकर अपने चेहरे और जिस्म पर मल लेता और उन्हें जिस काम के करने का हुक्म देते, उस काम को वे फ़ौरन करते और वे जब वुज़ू करते तो उनके वुज़ू का पानी लेने के लिए एक दूसरे पर टूट पड़ते और लड़ने के क़रीब हो जाते और वह जब बातें करते तो सब अपनी आवाज़ें पस्त कर लेते यानी चुप हो जाते। और ताज़ीम की वजह से सहाबा आपको नज़र भरकर न देख सकते उन्होंने तुम्हारे सामने एक अच्छी तज्वीज़ पेश की है तुम उसे क़ुबूल कर लो।

इसके बाद बनू किनाना के एक आदमी ने कहा, मुझे इनके पास जाने दो।

तो मक्का वालों ने कहा, ज़रूर जाओ।

जब यह आदमी हुज़ूर सल्ल० और सहाबा के क़रीब पहुंचा, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह फ़्लां आदमी है और यह उस क़ौम का आदमी है जो कुरबानी के ऊंटों की बड़ी ताज़ीम करते हैं। इसलिए तुम जो कुरबानी के ऊंट लेकर आए हो, वे उसके सामने खड़े कर दो।

चुनांचे वे ऊंट उसके सामने खड़े कर दिए गए और लोगों ने लब्बैक कहते हुए उसका स्वागत किया। उसने जब यह मंज़र देखा तो उसने कहा, सुब-हानल्लाह! इन लोगों को तो बैतुल्लाह से हरगिज़ नहीं रोकना चाहिए। तो उस आदमी ने अपने साथियों को वापस जाकर यह कहा कि मैं यह मंज़र देखकर आया हूं कि सहाबा ने कुरबानी के ऊंटों के गले में क़लादा (यानी हार) डाला हुआ है और इनके कोहान को ज़ख्मी किया हुआ है। (उस ज़माने में कुरबानी के ऊंट के साथ ये दो काम किए जाते थे, ताकि इन निशानियों से हर एक को पता चल जाए कि यह कुरबानी का ऊंट है, यानी वे लोग उमरा के लिए तैयार आए हैं। इसलिए) मेरी राय नहीं है कि इन लोगों को बैतुल्लाह से रोका जाए।

तो उनमें से मिक्रज़ बिन हफ़्स नामी एक आदमी खड़ा हुआ और उसने कहा, ज़रा मुझे उनके पास जाने दो।

लोगों ने कहा, ज़रूर जाओ।

जब वह हुज़ूर सल्ल० के क़रीब आया, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह तो मिक्रज़ है। यह तो बड़ा बदकार आदमी है।

वह आकर हुज़ूर सल्ल० से बातें करने लगा कि इतने में सुहैल बिन अम्र आ गए।

मामर रिवायत करने वाले कहते हैं, मुझे अय्यूब ने इक्रिमा से यह नक़ल किया है कि जब सुहैल बिन अम्र आए, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके नाम नेक फ़ाल लेते हुए कहा, अब तुम्हारा काम आसान हो गया।

मामर कहते हैं कि ज़ोहरी अपनी हदीस में यों बयान करते हैं कि

सुहैल ने कहा, आइए, समझौता नामा लिख देते हैं।

हुज़ूर ने लिखने वाले को बुलाया और उससे फ़रमाया, लिखो

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०'

सुहैल ने कहा, मुझे तो पता नहीं कि रहमान कौन होता है? इसलिए आप—

بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ

'बिस्मिकल्लाहुम-म' लिखें, जैसे पहले लिखा करते थे।

सहाबा ने कहा, नहीं, नहीं हम तो सिर्फ़—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' लिखेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कोई बात नहीं। 'बिस्मिकल्लाहुम-म' लिख दो। फिर आपने फ़रमाया, यह लिखो

'हाज़ा मा क़ाज़ा अलैहि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह०' कि यह वह सुलहनामा है जिसका मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ने फ़ैसला किया है।

सुहैल ने कहा, अगर हम यह बात मान लेते कि आप अल्लाह के रसूल हैं, तो न हम आपको बैतुल्लाह से रोकते और न हम आपसे लड़ाई लड़ते। (और सुलहनामा में वह बात लिखी जाती है जो दोनों फ़रीक़ों को तस्लीम हो) इसलिए 'मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह' लिखो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! चाहे तुम न मानो, हूं तो मैं अल्लाह का रसूल, लेकिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिख दो।

हज़रत ज़ोहरी फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० काफ़िरों की हर बात इसलिए मान रहे थे, क्योंकि क़सवा ऊंटनी के बैठ जाने पर आपने अल्लाह से यह अह्द किया था कि मक्का के कुफ़्फ़ार मुझसे जिस ऐसी तज्वीज़ की भी मांग करेंगे, जिससे वे अल्लाह की एहतिराम के क़ाबिल

चीज़ों की ताज़ीम कर रहे होंगे, तो मैं उनकी ऐसी हर तज्वीज़ को मान लूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया कि सुलह की शर्त यह होगी कि तुम हमें बैतुल्लाह का तवाफ़ करने दोगे, तो सुहैल ने कहा कि अगर आप इसी साल बैतुल्लाह का तवाफ़ करेंगे तो सारे अरब में यह बात मशहूर हो जाएगी कि हम मक्का वाले आपसे दब गए। इसलिए आप इस साल न करें, अगले साल कर लेना।

चुनांचे यह बात सुलहनामा में लिखी गई (कि अगले साल तवाफ़ और उमरा करेंगे।)

सुहैल ने कहा, सुलहनामा की एक शर्त यह होगी कि हम में से जो आदमी भी आपके पास चला जाएगा, चाहे वह आपके दीन पर हो, आप उसे हमारे पास वापस कर देंगे।

मुसलमानों ने कहा, सुबहानल्लाह ! यह कैसे हो सकता है कि वह मुसलमान होकर हमारे पास आए और उसे मुश्रिकों के पास वापस कर दिया जाए? अभी यह बात हो ही रही थी कि सुहैल बिन अम्र के बेटे हज़रत अबू जुन्दल रज़ियल्लाहु अन्हु बेड़ियों में चलते हुए आ गए। यह मक्का के नीचे वाले हिस्से में क़ैद थे। वहां से किसी तरह निकलकर आए और गिरते-गिरते मुसलमानों के मज्मे में पहुंच गए। सुहैल ने कहा, ऐ मुहम्मद ! मेरी मांग यह है कि सुलह की इस शर्त के मुताबिक़ आप सबसे पहले मुझे यह आदमी वापस करें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अभी तो इस सुलहनामा की तहरीर पूरी नहीं हुई। (इसलिए अभी तो समझौता नहीं हुआ)

सुहैल ने कहा, अल्लाह की क़सम ! फिर तो मैं आपसे हरगिज़ सुलह नहीं करूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम इसे मेरी वजह से ही छोड़ दो।

सुहैल ने कहा, नहीं, मैं नहीं छोड़ सकता।

इस पर मिक्रज़ ने कहा, अच्छा, हम इसे आपकी वजह से छोड़ते हैं।

हज़रत अबू जुन्दल ने कहा, ऐ मुसलमानो ! मैं तो मुसलमान होकर

आया था और अब मुझे मुश्रिकों की ओर वापस किया जा रहा है। क्या तुम देख नहीं रहे हो कि मैं कितनी मुसीबतें उठा रहा हूं? (और वाक़ई उन्हें अल्लाह की ख़ातिर सख़्त मुसीबतें पहुंचाई गई थीं।)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि क्या आप अल्लाह के बरहक़ नबी नहीं हैं?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हूं।

फिर मैंने कहा, क्या हम हक़ पर हैं और हमारा दुश्मन बातिल पर नहीं हैं?

आपने फ़रमाया, हां, तुम ठीक कहते हो।

मैंने कहा, फिर हम क्यों इतना दबकर सुलह करें?

आपने फ़रमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूं। उसकी नाफ़रमानी नहीं कर सकता हूं और वही मेरा मददगार है।

मैंने कहा, क्या आपने हमसे यह नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह जाकर उसका तवाफ़ करेंगे?

आपने फ़रमाया, हां, मैंने कहा था, लेकिन क्या मैंने तुमसे यह भी कहा था कि हम इसी साल बैतुल्लाह जाएंगे?

मैंने अर्ज़ किया, नहीं।

आपने फ़रमाया, तुम बैतुल्लाह ज़रूर जाओगे और उसका तवाफ़ करोगे।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास गया और उनसे कहा, ऐ अबूबक्र! क्या यह अल्लाह के सच्चे नबी नहीं हैं?

उन्होंने कहा, हैं।

मैंने कहा, क्या हम हक़ पर और हमारा दुश्मन बातिल पर नहीं है?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, हां, तुम ठीक कहते हो।

मैंने कहा, फिर हम क्यों इतना दबकर सुलह करें?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ आदमी ! वह अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं कर सकते हैं और अल्लाह उनका मददगार है। तुम उनका दामन मज़बूती से थामे रखो। अल्लाह की क़सम ! वह हक़ पर हैं।

मैंने कहा, क्या उन्होंने हमसे यह नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह जाकर उसका तवाफ़ करेंगे।

उन्होंने कहा, हां, उन्होंने कहा था, लेकिन क्या उन्होंने तुमको यह भी कहा था कि तुम इसी साल बैतुल्लाह जाओगे?

मैंने कहा, नहीं।

उन्होंने कहा, तुम बैतुल्लाह ज़रूर जाओगे और उसका तवाफ़ करोगे?

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि मैंने इस गुस्ताख़ी की माफ़ी के लिए बहुत से नेक काम किए।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० जब सुलहनामा की लिखाई से फ़ारिग़ हुए, तो आपने अपने सहाबा से फ़रमाया, उठो, अपनी क़ुरबानी ज़िब्ह करो, फिर अपने सर मूंड लो।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि अल्लाह की क़सम ! कोई आदमी भी खड़ा न हुआ, यहां तक कि आपने यह हुक्म तीन बार दिया।

जब इनमें से कोई भी न खड़ा हुआ, तो हुज़ूर सल्ल० उम्मे सलमा रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गए और लोगों की ओर से आपको जो परेशानी पेश आ रही थी, वह उनको बताई, तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या आप ऐसा कराना चाहते हैं? आप बाहर तशरीफ़ ले जाएं और इनमें से किसी से कोई बात न करें, बल्कि अपनी क़ुरबानी ज़िब्ह करें और अपने नाई को बुलाकर सर मुंडा लें।

चुनांचे आप बाहर तशरीफ़ लाए, इनमें से किसी से कोई बात न की, अपनी क़ुरबानी को ज़िब्ह किया और अपने नाई को बुलाकर बाल मुंडवाए। जब सहाबा ने यह देखा तो उन्होंने भी खड़े होकर अपनी क़ुरबानियां ज़िब्ह कीं और एक दूसरे के बाल मूंडने लगे, और रंज व ग़म

के मारे यह हाल था कि ऐसे लग रहा था कि जैसे एक दूसरे को क़त्ल कर देंगे, फिर आपके पास कुछ मोमिन औरतें आईं, जिनके बारे में उसी वक़्त अल्लाह ने यह आयत उतारी—

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ

—— بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ

तर्जुमा—'ऐ ईमान वालो ! जब आएं तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें वतन छोड़कर, तो उनको जांच लो। अल्लाह ख़ूब जानता है उनके ईमान को। फिर अगर जानो कि वे ईमान पर हैं तो मत फेरो उनको काफ़िरों की तरफ़। न ये औरतें हलाल हैं इन काफ़िरों को और न वे काफ़िर हलाल हैं इन औरतों को। और दे दो इन काफ़िरों को जो इनका ख़र्च हुआ हो और गुनाह नहीं तुमको कि निकाह कर लो इन औरतों से, जब उनको दो उनके मह्र और न रखो अपने क़ब्ज़े में नामूस काफ़िर औरतों के।'

चुनांचे इस हुक्म की वजह से हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी दो औरतों को तलाक़ दे दी, जो मुश्रिक थीं। उनमें से एक से मुआविया बिन अबू सुफ़ियान ने और दूसरी से सफ़वान बिन उमैया ने शादी कर ली। (ये दोनों उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे।)

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना वापस आ गए। इतने में क़ुरैश के अबू बसीर रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमान होकर आपके पास आ गए। मक्का वालों ने उनको वापस बुलाने के लिए दो आदमी भेजे कि आपने हमसे जो समझौता किया है, उसे पूरा करें। आपने हज़रत अबू बसीर को उन दोनों के हवाले कर दिया। वे दोनों उनको लेकर वहां से चल पड़े, यहां तक कि ज़ुल हुलैफ़ा पहुंचकर ठहर गए और खजूरें खाने लगे।

हज़रत अबू बसीर ने इन दोनों में से एक से कहा, ऐ फ़्लां ! मुझे तेरी तलवार बड़ी अच्छी नज़र आ रही है।

उसने म्यान में से तलवार निकालकर कहा, हां, अल्लाह की क़सम ! यह तो बहुत अच्छी तलवार है और मैंने इसे बहुत से लोगों पर आज़माया है।

हज़रत अबू बसीर ने कहा, ज़रा मुझे दिखाओ, मैं इसे देखूं। उसने तलवार उनके हवाले कर दी। उन्होंने उस पर तलवार का ऐसा वार किया कि वह वहीं ठंडा हो गया।

दूसरा वहां से मदीना की ओर भाग पड़ा और दौड़ता हुआ मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने उसे देखकर फ़रमाया, इसने कोई घबराहट की चीज़ देखी है। जब वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचा तो उसने कहा, मेरा साथी तो मारा जा चुका, अब मेरा नम्बर है।

इसके बाद अबू बसीर पहुंचे और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी ! अल्लाह ने आपका अह्द पूरा करा दिया कि आपने तो मुझे वापस कर दिया था। अब अल्लाह ने मुझे इन लोगों से छुटकारा दिला दिया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसकी मां का सत्यानास हो, यह लड़ाई भड़काने वाला है। काश कोई इसे संभालने वाला होता।

हज़रत अबू बसीर ने यह सुना तो वह समझ गए (कि अब भी अगर मक्का से उनको कोई लेने आया) तो हुज़ूर सल्ल० उनको वापस कर देंगे। चुनांचे वहां से चलकर वह समुद्र के किनारे एक जगह आ पड़े।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत अबू जुन्दल बिन सुहैल बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा मक्का वालों से छूट कर हज़रत अबू बसीर के पास आ गए। इसी तरह क़ुरैश का जो आदमी भी मुसलमान होता, वह हज़रत अबू बसीर से जा मिलता।

कुछ दिनों में यह एक छोटी-सी टुकड़ी हो गई। अल्लाह की क़सम ! इन लोगों को जब ख़बर लगती कि क़ुरैश का कोई तिजारती कारवां शामदेश जा रहा है, तो उन पर टूट पड़ते, उनको क़त्ल कर देते और उनका माल ले लेते। यहां तक कि क़ुरैश के कुफ़्फ़ार ने (परेशान होकर) हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अल्लाह का और रिश्तेदारी का वास्ता देकर आदमी भेजा कि इस बे-सिरी जमाअत को आप अपने पास बुला लें (ताकि ये समझौते में दाख़िल हो जाएं और हमारे लिए आने-जाने का रास्ता खुले) और इसके बाद जो भी आपके पास आएगा, उसे अम्न है (हम उसे वापस न लेंगे)।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने आदमी भेजकर उनको मदीना बुलवा लिया। इस पर अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई—

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ مِن بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ـــــــ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ

तर्जुमा—'और वही है जिसने रोक रखा उनके हाथों को तुमसे और तुम्हारे हाथों को उनसे, बीच शहर मक्का के, बाद इसके कि तुम्हारे हाथ लगा दिया उनको' से लेकर अल्लाह के इस फ़रमान तक 'जब रखी इंकारियों ने अपने दिलों में कद, नादानी की ज़िद' तक।

इन काफ़िरों की ज़िद यह थी कि उन्होंने न तो हुज़ूर सल्ल० के नबी होने का इक़रार किया और न बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखे जाने को माना और मुसलमानों के और बैतुल्लाह के दर्मियान रुकावट बन गए।[1]

हज़रत उर्वा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि हुदैबिया समझौते के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुदैबिया में क़ियाम फ़रमाने की वजह से कुरैश घबरा गए। हुज़ूर सल्ल० ने मुनासिब समझा कि अपने सहाबा में से किसी को कुरैश के पास भेजें।

चुनांचे आपने कुरैश के पास भेजने के लिए हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को बुलाया। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! (आपके इर्शाद पर अमल करने से इंकार नहीं है, लेकिन) मैं मक्का वालों के नज़दीक सबसे ज़्यादा मबग़ूज़ हूं। अगर उन्होंने मुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचाई, तो मक्का में (मेरे ख़ानदान) बनू काब में से ऐसा कोई नहीं है, (जो मेरा बचाव करे और) मेरी वजह से नाराज़ हो। आप हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को भेज दें, क्योंकि उनका ख़ानदान मक्का में है, तो जो पैग़ाम आप भेजना चाहते हैं, वह मक्का वालों को पहुंचा देंगे।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० को बुलाकर कुरैश की ओर भेजा और उनसे फ़रमाया कि उन्हें यह बता दो कि हम (किसी से) लड़ने के लिए नहीं आए हैं, हम तो सिर्फ़ उमरा करने

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 177, बैहक़ी भाग 9, पृ० 218

आए हैं और उनको इस्लाम की ओर दावत देना।

आपने हज़रत उस्मान रज़ि० को यह भी हुक्म दिया कि मक्का में जो मोमिन मर्द और औरतें हैं, हज़रत उस्मान उनके पास जाकर उनको फ़त्ह की ख़ुशख़बरी सुना दें और उनको बता दें कि अल्लाह बहुत जल्द मक्का में अपने दीन को ऐसा ग़ालिब करेंगे कि फिर किसी को अपना ईमान छिपाने की ज़रूरत न रहेगी। यह ख़ुशख़बरी देकर आप मक्का के कमज़ोर मुसलमानों को (ईमान पर) जमाना चाहते थे।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ि० तशरीफ़ ले गए। (मक्का के रास्ते में) बलदह नामी जगह पर उनका क़ुरैश की एक जमाअत पर गुज़र हुआ। क़ुरैश ने पूछा, कहां (जा रहे हो)?

उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, ताकि मैं तुम्हें अल्लाह की ओर और इस्लाम की तरफ़ दावत दूं और तुम्हें बता दूं कि हम किसी से लड़ने नहीं आए हैं, हम तो सिर्फ़ उमरा करने के लिए आए हैं। जैसे हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था, उन्होंने वैसे उनको दावत दी।

उन्होंने कहा, हमने आपकी बात सुन ली है। जाओ, अपना काम करो।

अबान बिन सईद बिन आस ने खड़े होकर हज़रत उस्मान रज़ि० का स्वागत किया और उनको अपनी पनाह में लिया, अपने घोड़े की ज़ीन कसी और हज़रत उस्मान रज़ि० को अपने घोड़े पर आगे बिठाकर मक्का ले गए।

फिर क़ुरैश ने बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाअी और क़बीला बनू किनाना के एक आदमी को हुज़ूर सल्ल० के पास भेजा। इसके बाद उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी आए। आगे हदीस और भी है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का वालों

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 288, 290, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 221

से (दबकर) सुलह की और उनकी सारी बातें मान लीं। अगर हुज़ूर सल्ल० किसी और को अमीर बनाकर भेजते और वह इस तरह करता, जैसे हुज़ूर सल्ल० ने किया, तो मैं उसकी कोई बात न सुनता, न मानता। आपने उनकी यह शर्त भी मान ली थी कि जो काफ़िर (मुसलमान होकर) मुसलमानों के पास जाएगा, मुसलमान उसे वापस कर देंगे और जो मुसलमान (नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक काफ़िर होकर) काफ़िरों के पास जाएगा, काफ़िर उसे वापस नहीं करेंगे।[1]

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि इस्लाम में हुदैबिया की जीत से बड़ी कोई जीत नहीं है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके रब के दर्मियान जो मामला था, लोग उसे समझ न सके। बन्दे जल्दबाज़ी करते हैं और अल्लाह उनकी तरह जल्दबाज़ी नहीं करते, बल्कि (अपनी तर्तीब और इरादे के मुताबिक़) हर काम को अपने मुक़र्रर किए हुए वक़्त पर करते हैं।

यह मंज़र भी मेरे सामने है कि आख़िरी हज के मौक़े पर हज़रत सुहैल बिन अम्र क़ुर्बानगाह में खड़े होकर क़ुरबानी की ऊंटनियां हुज़ूर सल्ल० के क़रीब कर रहे थे और हुज़ूर सल्ल० उनको अपने हाथ से ज़िब्ह कर रहे थे। फिर आपने नाई को बुलाकर अपने बाल मुंडवाए तो मैंने देखा कि हज़रत सुहैल हुज़ूर सल्ल० के बालों को चुन-चुनकर अपनी आंखों पर रख रहे थे और मैं यह सोच रहा था कि यह वही सुहैल हैं जिन्होंने हुदैबिया समझौते के मौक़े पर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के और मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के (समझौता नामा में) लिखे जाने से इंकार कर दिया था। (यह देखकर) मैंने उस अल्लाह की तारीफ़ की जिसने उनको इस्लाम की हिदायत दी।[2]

हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा

हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हम ग़ज़्वा ख़ंदक़

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 286
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 286

से वापस आए तो मैंने क़ुरैश के उन लोगों को जमा किया जो मेरी राय से इत्तिफ़ाक़ किया करते थे और मेरी बात सुना करते थे। मैंने उनसे यह कहा कि अल्लाह की क़सम! तुम लोग जानते हो कि मैं देख रहा हूं मुहम्मद (सल्ल०) का दीन तमाम दीनों पर बुरी तरह ग़ालिब आता जा रहा है, मुझे एक बात समझ में आई है, तुम लोगों का इस बारे में क्या ख़्याल है?

उन्होंने कहा, वह क्या बात है?

मैंने कहा, मेरा ख़्याल यह है कि हम नजाशी के पास चले जाएं और वहीं रहा करें। फिर अगर मुहम्मद (सल्ल०) हमारी क़ौम पर ग़ालिब आ गए तो उस वक़्त हम नजाशी के पास होंगे, क्योंकि नजाशी के मातहत होकर रहना हमें मुहम्मद (सल्ल०) के मातहत होकर रहने से ज़्यादा पसन्द है और अगर हमारी क़ौम ग़ालिब आ गई तो हम जाने-पहचाने लोग हैं। वह हमारे साथ भलाई ही का मामला करेंगे।

सबने कहा, यह तो बहुत अच्छी राय है।

मैंने कहा, उसको देने के लिए कुछ हदिए जमा कर लो।

नजाशी को हमारे यहां के चमड़े का हदिया सबसे ज़्यादा पसन्द था। चुनांचे हम लोगों ने यहां का तैयार किया हुआ चमड़ा बड़ी तायदाद में जमा किया। फिर हम मक्का से चले और उसके पास पहुंच गए। अल्लाह की क़सम! हम वहां ही थे कि इतने में अम्र बिन उमैया ज़मरी रज़ियल्लाहु अन्हु वहां आए और हुज़ूर सल्ल० ने उनको नजाशी के पास हज़रत जाफ़र और उनके साथियों के बारे में भेजा था।

हज़रत अम्र बिन आस फ़रमाते हैं कि हज़रत अम्र बिन उमैया नजाशी के पास मिलने गए और फिर वहां से बाहर आए, तो मैंने अपने साथियों से कहा, यह अम्र बिन उमैया हैं। अगर मैं नजाशी के पास जाकर उनसे उनको मांग लूं और वे मुझे यह दे दें और मैं उनकी गरदन उड़ा दूं, तो क़ुरैश यह समझेंगे कि मैंने मुहम्मद के क़ासिद को क़त्ल करके उनका बदला ले लिया है।

चुनांचे मैंने नजाशी के दरबार में जाकर नजाशी को सज्दा किया,

जैसे मैं पहले किया करता था। उसने कहा, स्वागत है मेरे दोस्त के लिए। अपने इलाक़े में मेरे लिए कुछ हदिया लाए हो?

मैंने कहा, हां, ऐ बादशाह! मैं आपके लिए हदिए में बहुत-से चमड़े लाया हूं। चुनांचे मैंने वे चमड़े उसके सामने पेश किए। वे उसे बहुत पसन्द आए, क्योंकि वे उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ थे।

फिर मैंने उससे कहा, ऐ बादशाह! मैंने एक आदमी आपके पास से निकलता हुआ देखा है, वह हमारे दुश्मन का क़ासिद है। आप उसे मेरे हवाले कर दें, ताकि मैं उसे क़त्ल कर दूं, क्योंकि उसने हमारे सरदारों और इज़्ज़तदार लोगों को क़त्ल किया है।

(यह सुनते ही) नजाशी को एकदम गुस्सा आ गया। उसने गुस्से के मारे अपना हाथ अपनी नाक पर इस ज़ोर से मारा कि मैं समझा उसकी नाक टूट गई है और डर के मारे मेरा यह हाल था कि अगर ज़मीन फट जाती तो मैं उसमें घुस जाता।

फिर मैंने कहा, ऐ बादशाह! अल्लाह की क़सम! अगर मुझे अन्दाज़ा होता कि यह बात आपको नागवार गुज़रेगी, तो मैं आपसे उसे बिल्कुल न मांगता।

नजाशी ने कहा, तुम मुझसे उस आदमी के क़ासिद की मांग करके क़त्ल करना चाहते हो, जिसके पास वही नामूस अक्बर (जिब्रील अलैहिस्सलाम) आते हैं, जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास आया करते थे।

मैंने कहा, ऐ बादशाह! क्या वह ऐसे ही हैं?

उसने कहा, तेरा नास हो। ऐ अम्र! मेरी बात मान ले और उनकी पैरवी कर ले, वह हक़ पर हैं और वे अपने मुख़ालिफ़ों पर ऐसे ग़ालिब आएंगे जैसे हज़रत मूसा बिन इम्रान फ़िरऔन और उसकी फ़ौज पर ग़ालिब आए थे।

मैंने कहा, क्या तुम मुझे उनकी तरफ़ से इस्लाम पर बैअत करोगे?

उसने कहा, हां।

फिर उसने हाथ बढ़ा दिया और मैं उनके हाथ इस्लाम पर बैअत हो

गया। फिर मैं अपने साथियों के पास बाहर आया, तो मेरी राय बदल चुकी थी। अपने साथियों से अपना इस्लाम छिपाए रखा, फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम लाने के इरादे से मैं वहां से चल पड़ा। रास्ते में मुझे हज़रत ख़ालिद बिन वलीद मिले, वह मक्का से आ रहे थे। यह वाक़िया मक्का की जीत से कुछ पहले का है। मैंने कहा, ऐ अबू सुलेमान ! कहां (जा रहे हो ?)

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! बात साफ़ हो गई है और यह आदमी यक़ीनन नबी हैं, अल्लाह की क़सम ! मैं (इनके पास) मुसलमान होने जा रहा हूं। कब तक (हम इधर-उधर भागते रहेंगे ?)

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं भी मुसलमान होने जा रहा हूं।

चुनांचे हम दोनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में मदीना पहुंचे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद आगे बढ़कर मुसलमान हुए और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से बैअत की। फिर मैंने क़रीब होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं आपसे एक शर्त पर बैअत करता हूं कि मेरे पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो जाएं। आगे के गुनाहों के बारे में मुझे ख़्याल नहीं आया।

आपने फ़रमाया, ऐ अम्र ! बैअत हो जाओ क्योंकि इस्लाम अपने से पहले के तमाम गुनाहों को मिटा देता है और हिजरत भी अपने से पहले के तमाम गुनाहों को मिटा देती है।

फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० से बैअत हो गया, फिर वापस आ गया।[1]

इस रिवायत को बैहक़ी ने वाक़िदी के हवाले से ज़्यादा तफ़्सीली और ज़्यादा बेहतर तरीक़े से ज़िक्र किया है और इसमें यह मज़्मून भी है।

फिर मैं (हब्शा से) चल दिया, यहां तक कि जब मैं हदा नामी जगह पर पहुंचा तो मैंने देखा कि दो आदमी ज़रा कुछ आगे जाकर पड़ाव

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 142, हैसमी, भाग 9, पृ० 351

डाल रहे हैं। एक खेमा के अन्दर है और दूसरा दोनों सवारियों को थामे हुए है। ग़ौर से देखने पर पता चला कि यह तो ख़ालिद बिन वलीद हैं। मैंने कहा, कहां जा रहे हो?

उन्होंने कहा, मुहम्मद (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िरी का इरादा है, क्योंकि सारे लोग इस्लाम में दाख़िल हो चुके हैं, कोई ढंग का आदमी बाक़ी नहीं रहा। अगर हम यों ही ठहरे रहे तो हमारी गरदन को ऐसे पकड़ लिया जाएगा, जैसे कि भट्ट में बिज्जू की गरदन पकड़ ली जाती है।

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरा भी मुहम्मद (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िरी का इरादा है और मैं भी मुसलमान होना चाहता हूं।

हज़रत उस्मान बिन तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ेमे से बाहर आकर मेरा स्वागत किया, फिर हम सब वहीं ठहर गए, फिर हम एक साथ ही मदीना आए।

मुझे उस आदमी की बात नहीं भूलती है जो हमें बेरे अबू उत्बा के पास मिला। वह 'या रबाह! या रबाह! या रबाह! कहकर अपने ग़ुलाम को पुकार रहा था। (रबाह उसके ग़ुलाम का नाम था, लेकिन उसके मानी हैं नफ़ा)

हमने उसके इन लफ़्ज़ों से नेक फ़ाल ली और हमें बड़ी ख़ुशी हुई। फिर उसने हमें देखकर कहा, इन दोनों (सरदारों) के बाद मक्का ने अपनी क़ियादत (नेतृत्व) हमें दे दी है। वह यह कहकर मेरी और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की तरफ़ इशारा कर रहा था और वह आदमी दौड़ता हुआ मस्जिद गया। मुझे ख़्याल हुआ कि यह हुज़ूर सल्ल० को हमारे आने की ख़ुशख़बरी सुनाने गया है। चुनांचे ऐसा ही हुआ।

हमने अपने ऊंट हर्रा नामी जगह पर बिठाए और अपने साफ़-सुथरे कपड़े पहने। फिर अस्र की अज़ान हो गई। हम चलकर आपकी ख़िदमत में जा पहुंचे। आपका मुबारक चेहरा (ख़ुशी से) चमक रहा था और आपके चारों ओर मुसलमान बैठे हुए थे, जो हमारे मुसलमान होने से बहुत ख़ुश हो रहे थे।

चुनांचे हज़रत ख़ालिद बिन वलीद आगे बढ़कर हुज़ूर सल्ल० से बैअत हुए। फिर हज़रत उस्मान बिन तलहा आगे बढ़कर बैअत हुए, फिर मैं आगे बढ़ा। अल्लाह की क़सम! जब मैं आपके सामने बैठ गया, तो मैं शर्म की वजह से अपनी निगाह न उठा सका और मैंने आपसे इस शर्त पर बैअत की कि मेरे पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो जाएं और बाद में होने वाले गुनाहों का मुझे ख़्याल न आया।

आपने फ़रमाया, इस्लाम अपने से पहले वाले तमाम गुनाह मिटा देता है और हिजरत भी अपने से पहले वाले तमाम गुनाह मिटा देती है।

अल्लाह की क़सम! जब से हम दोनों, मैं और ख़ालिद बिन वलीद मुसलमान हुए, उस वक़्त से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी भी परेशान करने वाले मामले में अपने किसी सहाबी को हमारे बराबर का नहीं समझा।[1]

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह ने मेरे साथ भलाई का इरादा फ़रमाया तो अल्लाह ने मेरे दिल में इस्लाम लाने का जज़्बा पैदा फ़रमा दिया और हिदायत का रास्ता मेरे सामने खुल गया और मैंने अपने दिल में कहा कि मुहम्मद (सल्ल०) के ख़िलाफ़ तमाम लड़ाइयों में शरीक हुआ हूं, लेकिन हर लड़ाई से वापसी पर मुझे यह ख़्याल आता था कि मैं सारी भाग-दौड़ बे-फ़ायदा कर रहा हूं और यक़ीनन मुहम्मद ग़ालिब होकर रहेंगे।

जब हुज़ूर सल्ल० हुदैबिया के लिए रवाना हुए तो मैं मुश्रिकों के सवारों का एक दस्ता लेकर निकला और उस्फ़ान में मेरा हुज़ूर और सहाबा से सामना हो गया और मैं आपके मुक़ाबले में खड़ा हो गया। मैंने आपसे कुछ छेड़छाड़ करनी चाही।

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 237

आप हमारे सामने अपने सहाबा को ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाने लगे। हमने सोचा कि हम नमाज़ के दौरान ही आप पर हमला कर दें, लेकिन हम किसी फ़ैसले तक न पहुंच सके, इसलिए हमने हमला न किया और इसी में ख़ैर थी।

आपको हमारे इस इरादे का पता लग गया। (यानी आपको अल्लाह ने बता दिया) चुनांचे आपने सहाबा को अस्र की नमाज़ सलातुल ख़ौफ़ (डर की नमाज़) के तरीक़े पर पढ़ाई। इस बात का हमारे दिलों पर बहुत असर पड़ा और मैंने अपने दिल में कहा कि इस आदमी की हिफ़ाज़त का मुस्तक़िल (ग़ैबी) इन्तिज़ाम है। आप हमसे एक ओर हो गए और हमारे घोड़ों का रास्ता छोड़कर दाएं ओर चले गए।

जब आपने हुदैबिया में क़ुरैश से समझौता कर लिया और क़ुरैश ने आपको ज़ुबानी जमा ख़र्च से वापस करके अपनी जान बचाई तो मैंने अपने दिल में कहा, अब कौन-सी चीज़ बाक़ी रह गई है? अब मैं कहां जाऊं? नजाशी के पास? नजाशी ने तो मुहम्मद की पैरवी की और उनके सहाबा उसके पास अम्न से रह रहे हैं क्या मैं हिरक़्ल के पास चला जाऊं? तो मुझे अपना दीन छोड़कर ईसाई या यहूदी बनना पड़ेगा और अजम में रहना पड़ेगा, या अपने वतन में बाक़ी लोगों के साथ रहूं?

मैं इसी सोच-विचार में था कि अचानक हुज़ूर सल्ल० उमरा की क़ज़ा करने के लिए मक्का में तशरीफ़ लाए। मैं मक्का से ग़ायब हो गया और आपके आने पर मैं हाज़िर नहीं हुआ और मेरे भाई वलीद बिन वलीद भी हुज़ूर सल्ल० के साथ इस उमरे में मक्का आए। उन्होंने मुझे बहुत खोजा, लेकिन कहीं न पाया, तो उन्होंने मुझे एक ख़त लिखा, जिसका मज़्मून यह है— بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० अम्मा बादु अभी तक इस्लाम लाने की तुम्हारी राय नहीं बनी। इससे ज़्यादा अजीब बात मैंने कोई नहीं देखी, हालांकि तुम बहुत अक़्लमंद हो। इस्लाम जैसे मज़हब से भी कोई अनजाना रह सकता है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे तुम्हारे बारे में पूछा था कि ख़ालिद कहां हैं? मैंने कहा अल्लाह उनको

ज़रूर ले आएंगे। आपने फ़रमाया, ख़ालिद जैसा आदमी भी अब तक इस्लाम से अनजाना है। अगर वह अपनी सारी ताक़त और मेहनत मुसलमानों के साथ लगा देते, तो उनके लिए ज़्यादा बेहतर था और हम उनको दूसरों से आगे रखते। ऐ मेरे भाई! ख़ैर के बहुत से मौक़े तुमसे रह गए, अब तो उनकी तलाफ़ी कर लो।'

हज़रत ख़ालिद फ़रमाते हैं कि जब मुझे अपने भाई का ख़त मिला, तो मेरे दिल में मदीना जाने का एक शौक़ पैदा हुआ और इस्लाम का चाव बढ़ने लगा। मुझे इस बात से बड़ी ख़ुशी हुई कि हुज़ूर सल्ल० ने मेरे बारे में पूछा और उस ज़माने में मैंने एक सपना देखा कि मैं एक अकाल के मारे हुए इलाक़े में हूं और वहां से निकल कर एक हरे-भरे और लम्बे-चौड़े इलाक़े में पहुंच गया हूं। मैंने कहा, यह सच्चा सपना मालूम होता है।

जब मैं मदीना आया, तो मैंने कहा, इस सपने का हज़रत अबूबक्र रज़ि० से ज़रूर ज़िक्र करूंगा। (चुनांचे मैंने उनसे इस सपने का ज़िक्र किया, तो) उन्होंने बताया कि इलाक़े की तंगी से मुराद वह शिर्क है, जिसमें तुम पड़े थे और तंग इलाक़े से निकलने से मुराद अल्लाह की ओर से इस्लाम की हिदायत का मिल जाना है।

जब मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िरी का पक्का इरादा कर लिया, तो मैंने सोचा कि हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िरी के लिए किसको अपने साथ लूं? इस सिलसिले में सफ़वान बिन उमैया के पास गया और मैंने उससे कहा, ऐ अबू वह्ब! क्या तुम देखते नहीं हो कि हम किस हाल में हैं? हमारी तायदाद दाढ़ों की तरह से कम होती जा रही है और मुहम्मद अरब व अजम पर ग़ालिब आते जा रहे हैं। मेरा ख़्याल यह है कि हमें मुहम्मद की ख़िदमत में हाज़िर होकर उनकी बात मान लेनी चाहिए, क्योंकि मुहम्मद की इज़्ज़त हमारी इज़्ज़त है, लेकिन सफ़वान ने सख़्ती से इंकार कर दिया और कहा कि मेरे अलावा और कोई भी न बचा, तो भी मैं उनकी पैरवी हरगिज़ न करूंगा।

मैं उसे छोड़कर चल दिया और मैंने कहा, इस आदमी के भाई और

बाप को बद्र में क़त्ल किया गया था, (इसलिए यह नहीं मान रहे हैं।)

फिर मेरी इक्रिमा बिन अबू जह्ल से मुलाक़ात हुई। मैंने उनसे वही बात की जो सफ़वान बिन उमैया से की थी। उन्होंने सफ़वान बिन उमैया जैसा जवाब दिया। मैंने उनसे कहा, मेरी इस बात को छिपाए रखना।

उन्होंने कहा, अच्छा किसी को नहीं बताऊंगा।

फिर मैं अपने घर गया और अपनी सवारी को तैयार कराया। मैं उसको लेकर चल पड़ा तो रास्ते में मेरी मुलाक़ात उस्मान बिन तलहा से हुई। मैंने कहा, यह मेरा दोस्त है, लाओ इससे भी अपनी बात करके देखूं। फिर मुझे ख़्याल आया कि इसके बाप-दादा भी (मूसलमानों के हाथों) क़त्ल हो चुके हैं, तो इनसे ज़िक्र करने को मुनासिब न समझा।

फिर मैंने कहा, इनसे ज़िक्र करने में क्या हरज है? मैं तो अब जा ही रहा हूं? चुनांचे (इस्लाम के ख़िलाफ़) हमारी मेहनत का जो नतीजा निकल रहा है, वह मैंने इनको बताया और मैंने यह भी कहा, हमारी मिसाल उस लोमड़ी की-सी है जो किसी सूराख़ में घुस गई हो, तो अगर उस सूराख़ में एक डोल भी पानी डाल दिया जाए, तो लोमड़ी को निकलना पड़ेगा।

पहले दोनों साथियों से मैंने जो बात की, ऐसी ही उनसे भी की। वह फ़ौरन मान गए। मैंने उनसे कहा, मैं आज ही जाना चाहता हूं और मेरी सवारी फ़ज्ज नामी जगह पर तैयार बैठी है।

हम दोनों ने आपस में (मक्का से बाहर) याजुज नामी जगह पर इकट्ठा होना तै किया कि अगर वह मुझसे पहले वहां पहुंच गए तो वह मेरा वहां इन्तिज़ार करेंगे और मैं उनसे पहले वहां पहुंच गया तो मैं उनका इन्तिज़ार करूंगा।

चुनांचे सुबह सेहरी के वक़्त हम लोग घरों से निकले और भोर से पहले ही हम लोग याजुज नामी जगह पर जमा हो गए, फिर वहां से हम दोनों रवाना हुए।

जब हम हदा नामी जगह पर पहुंचे तो वहां हमें अम्र बिन आस

मिले। उन्होंने कहा, तुम लोगों को ख़ुश आगदीद!

हमने कहा, तुम्हें भी ख़ुश आमदीद हो।

उन्होंने पूछा, कहां जा रहे हो?

हमने कहा, तुम घर से किस इरादे से चले हो?

उन्होंने कहा, आप लोग घर से किस इरादे से चले हैं?

हमने कहा, हमारा इरादा तो इस्लाम में दाख़िल होने का है और मुहम्मद सल्ल० की पैरवी का है।

उन्होंने कहा, मैं भी इसी वजह से आया हूं।

अब हम तीनों साथ हो लिए और मदीना जा पहुंचे, हर्रा में अपनी सवारियां बिठा दीं।

हुज़ूर सल्ल० को हमारे आने की ख़बर मिली, जिससे आप बहुत ख़ुश हुए। मैंने अपने साफ़-सुथरे कपड़े पहने और हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ चल पड़ा। रास्ते में मेरे भाई मुझे मिले।

उन्होंने कहा, जल्दी करो, हुज़ूर सल्ल० को तुम्हारी ख़बर मिल चुकी है और वह तुम्हारे आने से ख़ुश हैं और तुम लोगों के आने का इन्तिज़ार कर रहे हैं। हम तेज़ चलने लगे।

जब मैंने आपको दूर से देखा तो आप मुझे देखकर मुस्कराते रहे, यहां तक कि मैंने आपके क़रीब आकर, ऐ अल्लाह के नबी! कहकर सलाम किया। आपने खिले हुए चेहरे के साथ सलाम का जवाब दिया। मैंने कलिमा शहादत पढ़ा—

إني أشهد أن لا إله إلا الله وأنك رسول الله

'इन्नी अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन्न-क रसूलुल्लाह'

आपने फ़रमाया, आगे आओ। 'तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने तुमको हिदायत दी, तुम्हारी अक़्ल व समझ को देखकर मुझे यही उम्मीद थी कि तुम्हें ख़ैर ही की तौफ़ीक़ मिलेगी।'

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं जिन लड़ाइयों में आपके मुक़ाबले में हक़ के ख़िलाफ़ लड़ा हूं, मुझे उनका बहुत ख़्याल

आ रहा है। आप मेरे लिए अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह इन सबको माफ़ कर दें।

आपने फ़रमाया, इस्लाम अपने से पहले के तमाम गुनाह मिटा देता है।

मैंने कहा, आप इसके बावजूद मेरे लिए दुआ फ़रमाएं।

आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिए खालिद बिन वलीद ने जितनी भी कोशिश और मेहनत की है, उसे माफ़ फ़रमा दे।

फिर हज़रत उस्मान और हज़रत अम्र रज़ि० आपसे बैअत हुए। हम लोग सफ़र आठ हिजरी को मदीना आए थे। अल्लाह की क़सम! ज़रूरी और मुश्किल मामलों में हुज़ूर सल्ल० अपने सहाबा में से किसी को मेरे बराबर क़रार न देते थे।[1]

फ़त्हे मक्का ज़ादहल्लाहु तशरीफ़न का क़िस्सा

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (मदीना से) रवाना हुए और अपने पीछे हज़रत अबूरुहम कुलसूम बिन हुसैन ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना का अमीर बनाया। आप दस रमज़ान को रवाना हुए। आपने भी रोज़ा रखा और लोगों ने भी आपके साथ रोज़ा रखा। उस्फ़ान और अमज के दर्मियान कदीद नामी सोत पर पहुंच कर रोज़े रखने छोड़ दिए, फिर वहां से चलकर दस हज़ार मुसलमानों की हमराही में मर्रज़्ज़हरान नामी जगह पर पड़ाव डाला। मुज़ैना और सुलैम के एक हज़ार आदमी भी थे। हर क़बीला सामान और हथियार से लैस था। इस सफ़र में तमाम मुहाजिर और अंसार हुज़ूर सल्ल० के साथ थे। उनमें से कोई भी पीछे न रहा था। कुरैश को पता भी न चला और आप मर्रज़्ज़हरान पहुंच गए।

हुज़ूर सल्ल० की कोई ख़बर उन तक न पहुंच सकी और वे यह न जान सके कि हुज़ूर सल्ल० क्या करने वाले हैं? अबू सुफ़ियान बिन हर्ब

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 238, कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 30

और हकीम बिन हिज़ाम और बुदैल बिन वरक़ा, उस रात मालूमात हासिल करने और देखभाल करने की ग़रज़ से निकले कि कहीं से कुछ पता चले या किसी से कोई ख़बर सुनें।

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु रास्ते में हुज़ूर सल्ल० के साथ मिल गए थे। अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब (हुज़ूर सल्ल० के चचेरे भाई) और अब्दुल्लाह बिन अबी उमैया बिन मुग़ीरह (हुज़ूर सल्ल० के फुफेरे भाई और आपकी ज़ौजा मोहतरमा हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के भाई) मदीना और मक्का के बीच हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंच गए। इन दोनों ने आपकी ख़िदमत में हाज़िरी की दरख़्वास्त की।

हज़रत उम्मे सलमा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इन दोनों की सिफ़ारिश की और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इनमें से एक तो आपका चचेरा भाई है और दूसरा आपका फुफेरा भाई और ससुराली रिश्तेदार (साला) है।

आपने फ़रमाया, मुझे इन दोनों की ज़रूरत नहीं है। इस चचेरे भाई ने तो मुझे मक्का में बहुत ही बेइज़्ज़त किया था और इस फुफेरे भाई और साले ने मक्का में बहुत सख़्त बातें की थीं।

जब इन दोनों को हुज़ूर सल्ल० के इस जवाब का पता चला तो अबू सुफ़ियान की गोद में उसका एक छोटा बेटा था, तो उसने कहा, या तो हुज़ूर सल्ल० मुझे (अपनी ख़िदमत में हाज़िरी की) इजाज़त दे दें, नहीं तो मैं अपने इस बेटे की उंगली पकड़ कर जंगल को निकल जाऊंगा और वहीं कहीं भूखे-प्यासे हम दोनों मर जाएंगे।

जब यह बात हुज़ूर सल्ल० को पहुंची, तो आपको इन दोनों पर तरस आ गया। आपने इन दोनों को आने की इजाज़त दे दी। वे दोनों ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हो गए।

जब हुज़ूर सल्ल० मर्रुज़्ज़हरान में ठहरे हुए थे, तो हज़रत अब्बास ने कहा, हाए! क़ुरैश की हलाकत! अगर हुज़ूर सल्ल० मक्का में फ़ातिहाना दाख़िल हुए और मक्का वालों ने हुज़ूर सल्ल० से अम्न न

तलब किया तो क़ुरैश हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएंगे।

हज़रत अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० के सफ़ेद ख़च्चर पर सवार होकर चला, यहां तक कि अराक नामी जगह पर पहुंच गया। मैंने सोचा, शायद मुझे लकड़ियां चुनने वाला या दूध वाला यानी चरवाहा या कोई ज़रूरत से आया हुआ आदमी मिल जाए जो मक्का जाकर हुज़ूर सल्ल० के आने की उनको ख़बर दे दे, ताकि वे हुज़ूर सल्ल० के फ़ातिहाना दाख़िल होने से पहले ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अम्न ले लें। मैं ख़च्चर पर चला जा रहा था और किसी आदमी की खोज में था कि इतने में मुझे अबू सुफ़ियान और बुदैल बिन वरक़ा की आवाज़ सुनाई दी। वे दोनों आपस में बातें कर रहे थे।

अबू सुफ़ियान कह रहा था कि मैंने आज तक न इतनी बड़ी तायदाद में जलती हुई आग देखी और न इतनी बड़ी फ़ौज देखी। बुदैल कह रहा था, अल्लाह की क़सम! यह आग क़बीला ख़ुज़ाआ की है। मालूम होता है कि ये लोग लड़ाई के इरादे से निकले हैं।

अबू सुफ़ियान ने जवाब दिया कि ख़ुज़ाआ की तायदाद इतनी नहीं है कि वे इतनी जगह आग जलाएं और उनकी इतनी बड़ी फ़ौज हो।

हज़रत अब्बास फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत अबू सुफ़ियान की आवाज़ को पहचान लिया। मैंने उनको आवाज़ दी, ऐ अबू हंज़ला! उन्होंने मेरी आवाज़ पहचान ली और कहा, तुम अबुल फ़ज़्ल हो?

मैंने कहा, हां।

अबू सुफ़ियान ने कहा, मेरे मां-बाप तुम पर क़ुर्बान हों, इस वक़्त तुम यहां कैसे?

मैंने कहा, ऐ अबू सुफ़ियान! तेरा नाश हो। यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों को लेकर आए हुए हैं। अल्लाह की क़सम! हाय क़ुरैश की हलाकत!

उसने कहा, मेरे मां-बाप तुम पर क़ुरबान हों। अब बचने की क्या शक्ल हो सकती है?

मैंने कहा, अगर तुम उनके हाथ लग गए, तो तुम्हारी गरदन ज़रूर

उड़ा दी जाएगी। तुम मेरे साथ इस खच्चर पर सवार हो जाओ, ताकि मैं तुम्हें हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले जाकर तुम्हें उनसे अम्न दिलवा दूं?

चुनांचे उसके दोनों साथी तो वापस चले गए और वह मेरे पीछे सवार हो गए।

मैं अबू सुफ़ियान को तेज़ी से लेकर चला। जब भी मुसलमानों की किसी आग के पास से गुज़रता, वे पूछते, यह कौन है? लेकिन हुज़ूर सल्ल० के ख़च्चर को देखकर कहते, यह तो हुज़ूर सल्ल० के चचा हुज़ूर सल्ल० के ख़च्चर पर जा रहे हैं। यहां तक कि मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की आग के पास से गुज़रने लगा, तो हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, यह कौन है? और खड़े होकर मेरे पास आ गए। जब उन्होंने मेरे पीछे खच्चर पर अबू सुफ़ियान को देखा, तो कहने लगे, यह तो अल्लाह का दुश्मन अबू सुफ़ियान है। अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है कि उसने मुझे तुम पर क़ाबू दे दिया है और इस वक़्त हमारा तुम्हारा कोई समझौता भी नहीं है और वे हुज़ूर सल्ल० की ओर दौड़ पड़े और मैंने भी ख़च्चर को एड़ लगाई और मैं उनसे आगे निकल गया और ज़ाहिर है कि सवार पैदल आदमी से आगे निकल ही जाता है। आगे जाकर मैं ख़च्चर से कूद पड़ा और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच गया।

इतने में हज़रत उमर रज़ि० भी आ गए और उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह अबू सुफ़ियान हैं, जिस पर अल्लाह ने क़ाबू दे दिया और इसका हमारा कोई समझौता भी नहीं है। आप मुझे इजाज़त दें, मैं इसकी गरदन उड़ा दूं।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इनको पनाह दे चुका हूं। फिर मैंने हुज़ूर सल्ल० के पास बैठकर अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम ! आज रात तो बस मैं इनसे अकेले ही बातचीत करूंगा।

जब हज़रत उमर रज़ि० ने इनके बारे में ज़्यादा ज़ोर लगाया, तो मैंने कहा, ऐ उमर ! बस करो। अगर यह बनी अदी बिन काब ख़ानदान में से होते, तो तुम इतनी बातें न करते, लेकिन तुम्हें पता है, यह बनू अब्द

मुनाफ़ में से हैं, (इसलिए इतना ज़ोर लगा रहे हो।)

उन्होंने कहा, ऐ अब्बास ! ठहरो, तुम्हारे इस्लाम लाने से मुझे जितनी ख़ुशी हुई, अगर मेरा बाप इस्लाम लाता, तो इतनी ख़ुशी न होती और इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि तुम्हारा इस्लाम लाना हुज़ूर सल्ल० के लिए मेरे बाप ख़त्ताब के इस्लाम लाने से ज़्यादा ख़ुशी की वजह था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अब्बास ! इस वक़्त तो तुम उनको अपने ठहरने की जगह ले जाओ, सुबह मेरे पास ले आना।

चुनांचे मैं उनको अपने ठहरने की जगह ले गया। उन्होंने मेरे पास रात गुज़ारी, सुबह मैं उनको हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले गया। उनको देखकर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू सुफ़ियान ! तेरा भला हो। क्या तुम्हारे लिए अभी यह वक़्त नहीं आया कि तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।

उन्होंने कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, आप तो बहुत बुज़ुर्ग, बहुत इल्म वाले और बहुत ज़्यादा जोड़ लेने वाले हैं। अब तो मुझे यक़ीन हो गया कि अगर अल्लाह के साथ कोई और भी माबूद होता, तो मेरे किसी काम तो आता।

आपने फ़रमाया, ऐ अबू सुफ़ियान ! तेरा भला हो, क्या तुम्हारे लिए अभी यह वक़्त नहीं आया कि तुम इस बात का यक़ीन कर लो कि मैं अल्लाह का रसूल हूं।

उन्होंने कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों। आप तो बहुत बुज़ुर्ग और बहुत हिल्म वाले और बहुत ज़्यादा जोड़ लेने वाले हैं। इसके बारे में अभी तक दिल में कुछ खटक है।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, ऐ अबू सुफ़ियान ! तेरा नाश हो। मुसलमान हो जाओ, इससे पहले कि तुम्हारी गरदन उड़ा दी जाए, तुम कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

'अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन

अब्दुहू व रसूलुहू०' पढ़ लो। चुनांचे अबू सुफ़ियान ने कलिमा शहादत पढ़ लिया और मुसलमान हो गए।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह अबू सुफ़ियान अपने लिए इज़्ज़त व एहतराम पसन्द करते हैं। इनको आप कोई ख़ास रियायत दे दें।

आपने फ़रमाया, जो अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हो जाएगा, उसे अम्न है, जो अपने दरवाज़े को बन्द कर लेगा, उसे अम्न है और जो मस्जिद (हराम) में दाख़िल हो जाएगा, उसे अम्न है।

जब हज़रत अबू सुफ़ियान वापस होने लगे, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अब्बास ! इनको ले जाकर घाटी में उस जगह खड़ा कर दो जहां पहाड़ का कुछ हिस्सा नाक की तरह आगे से निकला हुआ है। (वह जगह पहाड़ों के बीच तंग थी) ताकि यह वहां से तमाम फ़ौजों को गुज़रते हुए देखें।

चुनांचे मैं उनको लेकर गया और वादी की उस तंग घाटी में ले जाकर खड़ा कर दिया, जहां के लिए हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था। वहां से क़बीले अपने झंडे लेकर गुज़रने लगे। जब भी कोई क़बीला गुज़रता, तो अबू सुफ़ियान पूछते, ये कौन लोग हैं ऐ अब्बास !

मैं कहता ये बनू सुलैम हैं। वह कहते, मुझे बनू सुलैम से क्या वास्ता ?

फिर कोई क़बीला गुज़रता, वह कहते ये कौन लोग हैं ?

मैं कहता, ये मुज़ैना हैं। वह कहते, मुझे मुज़ैना से क्या वास्ता ? यहां तक कि तमाम क़बीले गुज़र गए। जो भी क़बीला गुज़रता, वह पूछते, ये कौन लोग हैं ?

मैं कहता, ये बनू फ़्लां हैं। वह कहते इनसे मुझे क्या वास्ता ? यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० लोहे से लैस स्याह दस्ते में गुज़रे। उनमें मुहाजिर और अंसार थे। उनकी आंखों के अलावा और कुछ नज़र न आता था। (यानी सब ने ख़ूद और ज़िरहें पहन रखी थीं और हर तरह के हथियार लगा रखे थे।) तो उन्होंने (हैरान होकर) कहा, सुब्हानल्लाह ! ये कौन

लोग हैं? ऐ अब्बास!

मैंने कहा, यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुहाजिरीन और अंसार में तशरीफ़ ले जा रहे हैं।

उन्होंने कहा, ऐ अबुल फ़ज़्ल! अल्लाह की क़सम! इनसे मुक़ाबला की तो किसी में हिम्मत और ताक़त नहीं है। आज तो तुम्हारे भतीजे की बादशाही बहुत बड़ी हो गई है।

मैंने कहा (यह बादशाहत नहीं है) यह नुबूवत है।

उन्होंने कहा, हां, यही (नुबूवत ही) सही।

मैंने कहा, अब तो अपनी क़ौम की जाकर फ़िक्र करो।

चुनांचे वह गए और मक्का में पहुंचकर ऊंची आवाज़ से यह एलान किया कि ऐ कुरैश! यह मुहम्मद तुम्हारे यहां इतनी बड़ी फ़ौज लेकर आ रहे हैं, जिसका तुम मुक़ाबला नहीं कर सकते हो, इसलिए जो अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हो जाएगा, उसे अम्न मिल जाएगा, (इस एलान पर गुस्सा होकर) उनकी बीवी हिन्द बिन्त उत्बा ने खड़े होकर उनकी मूंछें पकड़ ली और कहने लगी, तुम काले-कलूटे कमीने को क़त्ल कर दो (इनको दुश्मन की जासूसी के लिए भेजा था) यह तो बहुत बुरी ख़बर लाने वाला है।

उन्होंने कहा, तुम्हारा नाश हो। इस औरत की बातों से धोखे में न आ जाना, क्योंकि सच तो यही है कि मुहम्मद (सल्ल०) ऐसी फ़ौज लेकर आए हैं, जिसका तुम मुक़ाबला नहीं कर सकते हो। जो अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हो जाएगा, उसे अम्न मिल जाएगा।

लोगों ने कहा, तेरा नाश हो, क्या तुम्हारा घर हम सबको काफ़ी हो जाएगा?

उन्होंने कहा, और जो अपना दरवाज़ा बन्द कर लेगा, उसे भी अम्न है और जो मस्जिद (हराम) में दाख़िल हो जाएगा, उसे भी अम्न है। (यह सुनकर) तमाम लोग अपने घरों और मस्जिद को दौड़ पड़े।[1]

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 167, बिदाया, भाग 4, पृ० 291

इब्ने असाकिर ने भी वाक़िदी के हवाले से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से तबरानी की पिछली हदीस जैसी हदीस नक़ल की है और उसमें यह मज़्मून है कि जब हज़रत अबू सुफ़ियान (हुज़ूर सल्ल० के पास से) चले गए तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अब्बास को फ़रमाया, इन्हें ले जाकर घाटी की उस तंग जगह में खड़ा कर दो, जहां पहाड़ का कुछ हिस्सा नाक की तरह आगे निकला हुआ है, ताकि यह वहां से अल्लाह की फ़ौजों को गुज़रता हुआ देख लें।

हज़रत अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, आम रास्ते को छोड़कर मैंने उनको घाटी की उस जगह पर ले जाकर खड़ा कर दिया, जब मैंने वहां जाकर उनको रोक लिया, तो उन्होंने कहा, ऐ बनी हाशिम ! क्या मुझे धोखा देना चाहते हो ? (वह समझे कि शायद मुझे यहां रोक कर मारना चाहते हैं।)

हज़रत अब्बास ने फ़रमाया, नुबूवत के घराने वाले धोखा नहीं दिया करते। मैं तो तुम्हें किसी ज़रूरत से यहां लाया हूं।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, तुमने मुझे शुरू में क्यों न बता दिया कि तुम मुझे किसी ज़रूरत से यहां लाना चाहते हो, ताकि मेरा दिल मुतमइन रहता।

हज़रत अब्बास ने कहा, मेरा ख़्याल नहीं था कि तुम इस तरह सोचोगे ?

हुज़ूर सल्ल० अपने सहाबा की फ़ौज को तर्तीब दे चुके थे। हर क़बीला अपने अमीर के साथ गुज़रने लगा और हर दस्ता अपना झंडा लहराता हुआ जा रहा था। हुज़ूर सल्ल० ने सबसे पहले जिस दस्ते को भेजा, उसके अमीर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद थे। यह दस्ता बनी सुलैम का था, उनकी तायदाद एक हज़ार थी। उनमें एक छोटा झंडा हज़रत अब्बास बिन मर्दास के हाथ में था और दूसरा छोटा झंडा हज़रत ख़ुफ़ाफ़ बिन नुदबा के हाथ में था, और एक बड़ा झंडा हज्जाज बिन इलात ने उठा रखा था।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने पूछा, ये लोग कौन हैं ?

हज़रत अब्बास ने कहा, यह ख़ालिद बिन वलीद हैं।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, अरे, वही नवउम्र लड़का?

उन्होंने कहा, हां।

जब हज़रत ख़ालिद हज़रत अब्बास के सामने से गुज़रने लगे और वहां उनके साथ हज़रत अबू सुफ़ियान भी खड़े हुए थे तो हज़रत ख़ालिद की फ़ौज ने तीन बार आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहा और आगे बढ़ गए।

फिर उनके बाद हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम पांच सौ के दस्ते को लेकर गुज़रे, जिनमें कुछ मुहाजिर और कुछ ग़ैर-मशहूर लोग थे और उनके साथ एक काला बड़ा झंडा था। जब हज़रत ज़ुबैर हज़रत अबू सुफ़ियान के सामने से गुज़रने लगे, तो उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर तीन बार आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहा।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने पूछा, यह कौन है?

हज़रत अब्बास ने कहा, यह ज़ुबैर बिन अव्वाम हैं।

उन्होंने कहा, तुम्हारे भांजे?

हज़रत अब्बास ने कहा, हां।

फिर ग़िफ़ार क़बीले के तीन सौ आदमी गुज़रे, जिनका बड़ा झंडा हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी ने उठा रखा था। कुछ कहते हैं कि हज़रत ईमा बिन रहज़ा ने उठा रखा था। उन लोगों ने भी हज़रत अबू सुफ़ियान के सामने तीन बार अल्लाहु अक्बर ऊंची आवाज़ से कहा।

उन्होंने कहा, ऐ अबुल फ़ज़्ल! ये लोग कौन हैं?

हज़रत अब्बास ने कहा, ये बनू ग़िफ़ार हैं।

उन्होंने कहा, मुझे बनू ग़िफ़ार से क्या वास्ता?

फिर बनू अस्लम के चार सौ आदमी गुज़रे। उनके दो छोटे झंडे थे। एक हज़रत बुरैदा बिन हुसैब के हाथ में था और दूसरा हज़रत नाजिया बिन आजम के हाथ में था। उन्होंने भी अबू सुफ़ियान के सामने पहुंच कर ऊंची आवाज़ से तीन बार अल्लाहु अक्बर कहा।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने पूछा, ये कौन लोग हैं ?

हज़रत अब्बास ने कहा, बनू अस्लम।

उन्होंने कहा, ऐ अबुल फ़ज़्ल ! मुझे बनू अस्लम से क्या वास्ता ? हमारे और उनके बीच कभी कोई गड़बड़ नहीं हुई।

हज़रत अब्बास ने कहा, ये मुसलमान लोग हैं, इस्लाम में दाख़िल हो चुके हैं।

फिर बनू काब बिन अम्र के पांच सौ आदमी गुज़रे, जिनका झंडा बिश्र बिन शैबान ने उठा रखा था।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने पूछा, ये कौन लोग हैं ?

हज़रत अब्बास ने कहा, ये बनू काब बिन अम्र हैं।

उन्होंने कहा, अच्छा, ये तो मुहम्मद (सल्ल०) के मित्र हैं।

उन्होंने भी हज़रत अबू सुफ़ियान के सामने पहुंच कर ऊंची आवाज़ से तीन बार अल्लाहु अक्बर कहा।

फिर मुज़ैना क़बीला के एक हज़ार आदमी गुज़रे, जिनमें सौ घोड़े और तीन छोटे झंडे थे। जिन्हें हज़रत नोमान बिन मुक़र्रिन और हज़रत बिलाल बिन हारिस और अब्दुल्लाह बिन अम्र ने उठा रखा था। उन्होंने भी उनके सामने आकर ऊंची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहा।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, ये कौन लोग हैं ?

हज़रत अब्बास ने कहा, ये मुज़ैना हैं।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ अबुल फ़ज़्ल ! मुझे मुज़ैना से क्या वास्ता ? लेकिन ये भी पहाड़ों की चोटियों से हथियारों को खटखटाते हुए यहां मेरे सामने आ गए हैं।

फिर जुहैना के आठ सौ आदमी अपने अमीरों के साथ गुज़रे। इनके चार छोटे झंडे थे, जिन्हें अबू ज़ुरआ, माबद बिन ख़ालिद, और सुवैद बिन सख़्र और राफ़ेअ बिन मकीस और अब्दुल्लाह बिन बद्र ने उठा रखा था। उन्होंने भी उनके सामने पहुंच कर तीन बार ऊंची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहा। फिर किनाना बनू लैस और ज़मरा और साद

बिन बक्र के दो सौ आदमी गुज़रे। उनका झंडा अबू वाक़िद लैसी ने उठा रखा था। उन्होंने भी उनके सामने पहुंचकर तीन बार ऊंची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहा।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने पूछा, ये कौन लोग हैं?

हज़रत अब्बास ने कहा, ये बनू बक्र हैं।

उन्होंने कहा, अच्छा, ये तो बड़े मनहूस हैं। इन्हीं की वजह से तो मुहम्मद (सल्ल०) ने हम पर चढ़ाई की है। (सुलह हुदैबिया के बाद क़बीला ख़ुज़ाआ ने हुज़ूर सल्ल० से समझौता कर लिया था और क़बीला बनू बक्र ने क़ुरैश से और क़ुरैश और बनू बक्र ने क़बीला ख़ुज़ाआ पर ज़्यादती की और यों उन्होंने ख़िलाफ़वर्ज़ी करके सुलह ख़त्म करा दी, जिसकी वजह से हुज़ूर सल्ल० को मक्का पर चढ़ाई का जवाज़ मिल गया। अबू सुफ़ियान इसी ओर इशारा कर रहे हैं।) ज़रा सुनो तो सही, अल्लाह की क़सम! (क़ुरैश ने ख़ुज़ाआ के साथ जो ज़्यादती की थी) उसके बारे में मुझसे मश्विरा नहीं किया था और न मुझे इसका पता चल सका और जब मुझे इसकी ख़बर हुई, तो मैंने इस पर नापसन्दीदगी ज़ाहिर की थी, लेकिन जो मुक़द्दर में था, वह हो गया।

हज़रत अब्बास ने कहा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तुम पर चढ़ाई में भी अल्लाह ने तुम्हारे लिए ख़ैर मुक़द्दर फ़रमा रखी है। यों तो तुम सब इस्लाम में दाख़िल हो जाओगे।

वाक़िदी कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन आमिर ने मुझसे बयान किया कि अबू अम्र बिन हिमास ने फ़रमाया कि बनू लैस अकेले गुज़रे, उनकी तायदाद ढाई सौ थी। उनका झंडा हज़रत साब बिन जस्सामा ने उठा रखा था। गुज़रते वक़्त उन्होंने तीन बार ऊंची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहा।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने पूछा, ये कौन हैं?

हज़रत अब्बास ने कहा, बनू लैस हैं।

फिर सबसे आख़िर में क़बीला अशजअ गुज़रा। ये तीन सौ थे। इनका एक झंडा हज़रत माक़िल सिनान के हाथ में था और दूसरा नुऐम

बिन मसऊद के हाथ में।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, ये लोग अरबों में से हुज़ूर सल्ल० के लिए सबसे ज़्यादा सख़्त थे।

हज़रत अब्बास ने कहा, अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से अब तो इस्लाम उनके दिलों में दाख़िल कर दिया है।

हज़रत अबू सुफ़ियान कुछ देर चुप रहे और फिर पूछा कि अभी तक मुहम्मद (सल्ल०) नहीं गुज़रे?

हज़रत अब्बास ने कहा, अभी तक नहीं गुज़रे। जिस दस्ते में हुज़ूर सल्ल० हैं और अगर तुम उसको देखोगे, तो तुम्हें लोहा ही लोहा, घोड़े ही घोड़े और बड़े बहादुर आदमी नज़र आएंगे, और ऐसी फ़ौज देखोगे जिसके मुक़ाबले में किसी की ताक़त नहीं है।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, अल्लाह की क़सम! ऐ अबुल फ़ज़्ल! अब तो मुझे भी इसी का यक़ीन हो गया है और उनसे मुक़ाबले की ताक़त किस में हो सकती है।

जब हुज़ूर का दस्ता सामने आया, तो हर ओर लोहा ही लोहा और घोड़ों के दुमों से उड़ने वाली धूल नज़र आने लगी और लोग लगातार गुज़र रहे थे। हज़रत अबू सुफ़ियान हर बार पूछते, क्या अभी मुहम्मद (सल्ल०) नहीं गुज़रे?

हज़रत अब्बास कहते, नहीं।

इतने में हुज़ूर सल्ल० अपनी क़सवा ऊंटनी पर गुज़रे। आपके दाएं-बाएं हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० थे। आप इन दोनों से बात कर रहे थे।

हज़रत अब्बास ने कहा, यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने स्याह दस्ते में तशरीफ़ ले जा रहे हैं। इसमें मुहाजिर और अंसार हैं। इसमें छोटे-बड़े बहुत-से झंडे हैं। हर अंसारी बहादुर के हाथ में एक बड़ा झंडा है और एक छोटा। सब लोहे से ऐसे ढके हुए हैं कि आंख के अलावा और कुछ नज़र नहीं आ रहा है। हज़रत उमर रज़ि० पर लोहा ही लोहा है और वे अपनी ऊंची और गरजदार आवाज़ से

लश्कर को तर्तीब से चला रहे हैं।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने पूछा, ऐ अबुल फ़ज़्ल ! यह ऊंची आवाज़ से बोलने वाला कौन है ?

हज़रत अब्बास ने कहा, उमर बिन ख़त्ताब।

अबू सुफ़ियान ने कहा, बनू अदी (हज़रत उमर रज़ि० का ख़ानदान) तो बहुत कम थे, बड़े ज़लील थे। अब तो उनकी बात बड़ी ऊंची हो गई।

हज़रत अब्बास ने कहा, ऐ अबू सुफ़ियान ! अल्लाह जिसे चाहें और जैसे चाहें, ऊंचा कर दें। हज़रत उमर रज़ि० उन लोगों में से हैं, जिनको इस्लाम ने ऊंचा किया है।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि इस दस्ते में दो हज़ार ज़िरहें थीं।

हुज़ूर सल्ल० ने अपना झंडा हज़रत साद बिन उबादा को दे रखा था। वह दस्ते के आगे चल रहे थे।

जब हज़रत साद हुज़ूर सल्ल० का झंडा लेकर अबू सुफ़ियान के पास से गुज़रे, तो उन्होंने उनको आवाज़ देकर कहा, आज का दिन ख़ूरेंज़ी का दिन है। आज के दिन हरमे मक्का की हुर्मत उठा ली जाएगी। आज अल्लाह क़ुरैश को ज़लील करेंगे।

जब हुज़ूर सल्ल० आगे बढ़े और अबू सुफ़ियान के सामने पहुंच गए तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को पुकार कर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आपने अपनी क़ौम के क़त्ल करने का हुक्म दे दिया है? साद और उनके साथी हमारे पास से गुज़रते हुए कह गये हैं कि आज का दिन ख़ूरेंज़ी का दिन है। आज के दिन हरमे मक्का की हुर्मत उठा ली जाएगी। आज अल्लाह क़ुरैश को ज़लील कर देंगे। मैं आपको आपकी क़ौम के बारे में अल्लाह का वास्ता देता हूं। आप तो लोगों में सबसे ज़्यादा नेक और सबसे ज़्यादा जोड़ लेने वाले हैं।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० और हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमें ख़तरा है कहीं साद क़ुरैश पर हमला न कर दें।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अबू सुफ़ियान ! आज तो रहम करने का दिन है। आज अल्लाह क़ुरैश को इज़्ज़त देंगे।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत साद के पास आदमी भेजकर उनको माज़ूल कर दिया (हटा दिया) और फ़रमाया कि झंडा क़ैस को दे दें। आपने यह सोचा कि जब झंडा साद के बेटे क़ैस को मिल जाएगा, तो गोया साद के हाथ से झंडा नहीं निकला, लेकिन हज़रत साद रज़ि० ने फ़रमाया कि जब तक हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से कोई निशानी नहीं आएगी, वह झंडा नहीं देंगे।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनके पास अपनी पगड़ी भेजी जिसे पहचान कर हज़रत साद रज़ि० ने झंडा अपने बेटे क़ैस को दे दिया।[1]

हज़रत अबू याला रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि (फ़त्हे मक्का के सफ़र में) हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबू सुफ़ियान इस वक़्त अराक नाम की जगह पर हैं। हम लोगों ने वहां जाकर उनको पकड़ लिया। मुसलमान उनको तलवारों से घेरे हुए हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले आए।

आपने फ़रमाया, ऐ अबू सुफ़ियान ! तेरा भला हो, मैं तुम्हारे पास दुनिया व आख़िरत दोनों लेकर आया हूं, तुम मुसलमान हो जाओ, सलामती पा लोगे।

हज़रत अब्बास उनके दोस्त थे। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अबू सुफ़ियान शोहरत पसन्द हैं।

चुनांचे आपने एक मुनादी को मक्का भेज दिया जो यह एलान करने के लिए कि जिसने अपना दरवाज़ा बन्द कर लिया, उसे अम्न है और जिसने अपने हथियार डाल दिए, उसे अम्न है और जो अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हुआ, उसे अम्न है।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अब्बास रज़ि० को उनके साथ भेजा। ये दोनों जाकर घाटी के किनारे बैठ गए, तो वहां से बनू सुलैम गुज़रे।

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 295

अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ अब्बास ! ये कौन लोग हैं ?

हज़रत अब्बास ने कहा, ये बनू सुलैम हैं।

उन्होंने कहा, मुझे बनू सुलैम से क्या वास्ता ?

फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मुहाजिरों को लेकर गुज़रे, तो उन्होंने पूछा, ऐ अब्बास ! ये कौन लोग हैं ?

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, यह हज़रत अली बिन अबी तालिब मुहाजिरों को लेकर जा रहे हैं। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंसार के साथ गुज़रे। उन्होंने पूछा, ऐ अब्बास ! ये कौन हैं ?

हज़रत अब्बास ने कहा, ये लोग लाल मौत हैं। (यानी अपने दुश्मन का ख़ूनबहा देने वाले हैं) ये अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अंसार हैं।

अबू सुफ़ियान ने कहा, मैंने किसरा और क़ैसर की बादशाहत देखी है, लेकिन तुम्हारे भतीजे जैसी बादशाहत नहीं देखी।

हज़रत अब्बास ने कहा, (यह बादशाहत नहीं) यह तो नुबूवत है।[1]

हज़रत उर्वः फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुहाजिरीन और अंसार और अस्लम और ग़िफ़ार और जुहैना और बनू सुलैम के बारह हज़ार की फ़ौज को लेकर चले। यह फ़ौज घोड़ों पर इस तेज़ी से चली कि ये लोग (मक्का के क़रीब) मर्रज़्ज़हरान पहुंच गए और क़ुरैश को पता भी न चला। क़ुरैश ने तो हकीम बिन हिज़ाम और अबू सुफ़ियान को (मदीना) हुज़ूर सल्ल० से बात करने के लिए भेजा हुआ था कि आपसे हमारी सलामती का वायदा लेकर आएं या लड़ाई का एलान करके आएं।

उन्हें रास्ते में बुदैल बिन वरक़ा मिले, तो उन्हें भी साथ ले लिया। अभी ये लोग मक्का से चलकर रात को अराक पहुंचे ही थे, तो उन्होंने वहां से बहुत से ख़ेमे और लश्कर देखे और घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ें सुनीं, तो ये तीनों डर गए और बहुत घबरा गए और कहने लगे,

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 170

ये बनू काब हैं, जो लड़ने के लिए तैयार होकर आए हैं।

बुदैल ने कहा, इनकी तायदाद तो बनू काब से ज़्यादा है। वे तो सारे मिलकर भी इतने नहीं हो सकते, तो क्या हवाज़िन हमारे इलाक़े में घास की खोज में आ गए हैं? मगर अल्लाह की क़सम! यह बात भी नहीं मालूम होती। इतना मज्मा तो हाजियों का हुआ करता है। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी अपने लश्कर से आगे सवार भेज रखे थे, जिनका काम यह था कि जासूसों को गिरफ़्तार करके लाएं और (हुज़ूर के हलीफ़ यानी मित्र) क़बीला ख़ुज़ाआ वाले भी उसी रास्ते पर रहते थे जो किसी को जाने नहीं देते थे।

जब अबू सुफ़ियान और उनके साथी मुसलमानों के लश्कर में दाख़िल हुए, तो उन्हें सवारों ने रात के अंधेरे में गिरफ़्तार कर लिया और उन्हें लेकर (मुसलमानों में) आए, अबू सुफ़ियान और उनके साथियों को डर था कि उन्हें क़त्ल कर दिया जाएगा। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने खड़े होकर अबू सुफ़ियान की गरदन पर ज़ोर से हाथ मारा और सब लोग उनको चिमट गए और उनको हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले चले। उन्हें डर था कि उन्हें क़त्ल कर दिया जाएगा।

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० जाहिलियत के दौर में उनके बड़े गहरे दोस्त थे, इसलिए अबू सुफ़ियान ने ऊंची आवाज़ से कहा कि तुम लोग मुझे अब्बास के सुपुर्द क्यों नहीं कर देते?

हज़रत अब्बास (आवाज़ सुनकर) आ गए और उन्होंने उन लोगों से हटाया और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में यह दरख़्वास्त की कि अबू सुफ़ियान को उनके हवाले कर दें और सारे लश्कर में अबू सुफ़ियान के आने की ख़बर फैल गई।

हज़रत अब्बास ने रात ही में अबू सुफ़ियान को सवारी पर सारे लश्कर का गश्त कराया। तमाम लश्कर वालों ने भी अबू सुफ़ियान को देख लिया। हज़रत उमर ने अबू सुफ़ियान की गरदन पर ज़ोर से हाथ मारते हुए कहा था कि तुम मरकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच सकते हो।

अबू सुफ़ियान ने हज़रत अब्बास से मदद मांगी और कहा, मैं तो मारा गया। अबू सुफ़ियान पर लोगों के हमला करने से पहले उनको हज़रत अब्बास रज़ि० ने अपनी पनाह में ले लिया। जब अबू सुफ़ियान ने देखा कि लोग इतने ज़्यादा हैं और सब फ़रमांबरदार हैं, तो कहने लगे, मैंने आज रात जैसा किसी क़ौम का मज्मा नहीं देखा।

हज़रत अब्बास ने उनको लोगों के हाथ से छुड़ा कर कहा कि अगर तुम मुसलमान न हुए और हुज़ूर सल्ल० के रसूल होने की गवाही न दी, तो तुमको क़त्ल कर दिया जाएगा।

अबू सुफ़ियान हर चन्द कलिमा पढ़ना चाहते थे, लेकिन उनकी ज़ुबान चलकर न देती थी। उन्होंने वह रात हज़रत अब्बास रज़ि० के साथ गुज़ारी। उनके दोनों साथी हकीम बिन हिज़ाम और बुदैल बिन वरक़ा हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हो गए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन दोनों से मक्का वालों के हालात पूछते रहे। जब फ़ज्र की अज़ान हुई तो सब लोग जमा होकर नमाज़ का इन्तिज़ार करने लगे।

अबू सुफ़ियान ने घबराकर पूछा, ऐ अब्बास रज़ि० ! आप लोग क्या करना चाहते हैं? हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, ये मुसलमान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तशरीफ़ लाने का इन्तिज़ार कर रहे हैं, तो हज़रत अब्बास उनको लेकर बाहर निकले। अबू सुफ़ियान ने मुसलमानों को देखकर कहा, ऐ अब्बास! हुज़ूर सल्ल० इनको जिस बात का भी हुक्म देते हैं, ये उसी को करने लगते हैं।

हज़रत अब्बास ने कहा, हां, अगर हुज़ूर सल्ल० इनको खाने-पीने से रोक दें, तो भी ये उनकी फ़रमांबरदारी करेंगे।

अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ अब्बास! हुज़ूर सल्ल० से अपनी क़ौम के बारे में बात करो कि क्या वह उनको माफ़ कर सकते हैं?

अबू सुफ़ियान को लेकर हज़रत अब्बास रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह अबू सुफ़ियान हैं।

अबू सुफ़ियान ने कहा, मैंने अपने माबूद से मदद मांगी और आपने

अपने माबूद से मदद मांगी। अल्लाह की क़सम ! अब यह तो साफ़ नज़र आ रहा है कि आप मुझ पर ग़ालिब आ गए हैं। अगर मेरा माबूद सच्चा और आपका माबूद झूठा होता, तो मैं आप पर ग़ालिब आता और इसके बाद हज़रत अबू सुफ़ियान ने कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अशहदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदन रसूलुल्लाह० पढ़ लिया।

हज़रत अब्बास ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं चाहता हूं कि आप मुझे इजाज़त दें। मैं आपकी क़ौम के पास जाऊं और जो मुसीबत उन पर आ पड़ी है, उससे उन्हें डराऊं और उन्हें अल्लाह और रसूल की ओर दावत दूं। हुज़ूर सल्ल० ने उनको इजाज़त दे दी।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं उनको क्या कहूं ? आप मुझे उनको अम्न देने के बारे में ऐसी साफ़ बात बता दें जिससे उनको इत्मीनान हो जाए।

आपने फ़रमाया, उनसे कह देना कि जिसने कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अशहदुअल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक-लहू व अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू० पढ़ लिया, उसे अम्न है और जो हथियार डालकर काबे के पास बैठ गया उसे अम्न है, जिसने अपना दरवाज़ा बन्द कर लिया, उसे भी अम्न है।

हज़रत अब्बास ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अबू सुफ़ियान हमारे चचेरे भाई हैं और वह मेरे साथ वापस जाना चाहते हैं, आप उन्हें कुछ इम्तियाज़ी एज़ाज़ दे दें।

आपने फ़रमाया, और जो अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हो गया, उसे भी अम्न है और जो हाथ रोक कर हकीम बिन हिज़ाम के घर में दाख़िल हो गया, उसे भी अम्न है। (आपने ये दो घर इसलिए तै फ़रमाए कि) अबू सुफ़ियान का घर मक्का के ऊपर वाले हिस्से में था और हकीम बिन हिज़ाम का घर मक्का के नीचे वाले हिस्से में था। अबू

सुफ़ियान हुज़ूर सल्ल० के इन तमाम एलानों को अच्छी तरह समझने लगे।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत दिह्या कलबी रज़ि० का दिया हुआ सफ़ेद खच्चर हज़रत अब्बास को दे दिया। वह इस पर अपने पीछे हज़रत अबू सुफ़ियान को बिठा कर चल पड़े।

जब हज़रत अब्बास रज़ि० रवाना हुए तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके पीछे कुछ आदमी भेजे कि जाकर अब्बास को मेरे पास वापस ले आओ।

आपको अबू सुफ़ियान से जिस बात का ख़तरा था, वह बात इन जाने वालों को बताई। क़ासिद ने हज़रत अब्बास को वापसी का पैग़ाम पहुंचाया। हज़रत अब्बास ने वापसी को अच्छा न जाना और कहा, क्या हुज़ूर सल्ल० को इस बात का ख़तरा है कि (मक्का के) थोड़े से (काफ़िर) लोगों को देखकर अबू सुफ़ियान लौट जाएंगे और मुसलमान होकर फिर काफ़िर हो जाएंगे। क़ासिद ने कहा, उनको यहां ही रोके रखो। चुनांचे हज़रत अब्बास रज़ि० ने अबू सुफ़ियान को वहां रोक लिया।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ बनू हाशिम! क्या मुझसे वायदा शिकनी करने लगे हो?

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, हम किसी से वायदा शिकनी नहीं करते, लेकिन मुझे तुमसे कुछ काम है।

अबू सुफ़ियान ने कहा, क्या है? मैं तुम्हारा काम करूंगा।

हज़रत अब्बास ने कहा, जब ख़ालिद बिन वलीद और ज़ुबैर बिन अव्वाम आएंगे, तब तुम्हें इस काम का पता चल जाएगा।

हज़रत अब्बास मर्रज़्ज़हरान और अराक से पहले तंग घाटी के किनारे ठहर गए और हज़रत अबू सुफ़ियान ने हज़रत अब्बास की बात को ज़ेहन में रखा। फिर हुज़ूर सल्ल० एक के बाद एक घुड़सवारों के दस्ते भेजने लगे।

हुज़ूर सल्ल० ने घुड़सवारों के दो हिस्से कर दिए थे। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को आपने आगे भेजा और उनके पीछे अस्लम और ग़िफ़ार और

कुज़ाआ के घुड़सवार थे। (हज़रत ख़ालिद भी हज़रत ज़ुबैर के साथ थे)

अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ अब्बास ! क्या यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं ?

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, नहीं। यह तो ख़ालिद बिन वलीद हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने अपने से आगे अंसार के एक दस्ते के साथ हज़रत साद बिन उबादा को भेजा था। हज़रत साद ने कहा, आज ख़ूरेज़ी का दिन है। आज के दिन (हरमे मक्का की) हुर्मत उठा ली जाएगी। फिर हुज़ूर ईमान के दस्ते में यानी मुहाजिरीन और अंसार के दस्ते में तशरीफ़ लाए।

जब अबू सुफ़ियान ने इतने बड़े मज्मे को देखा, जिसे वे पहचानते नहीं थे, तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने अपनी क़ौम पर इस जमाअत को तर्जीह दे दी ?

आपने फ़रमाया, यह तुम्हारे और तुम्हारी क़ौम के बर्ताव का नतीजा है। जब तुमने मुझे झुठलाया, उस वक़्त इन लोगों ने मेरी तस्दीक़ की और जब तुमने मुझे (मक्का से) निकाल दिया, उस वक़्त इन्होंने मेरी मदद की और उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के साथ अक़रअ बिन हाबिस और अब्बास बिन मिरदास और उऐना बिन हिस्न बिन बद्र फ़ज़ारी थे।

जब हज़रत अबू सुफ़ियान ने इन लोगों को हुज़ूर सल्ल० के आस-पास देखा, तो पूछा, ऐ अब्बास ! ये कौन लोग हैं ?

उन्होंने कहा, यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दस्ता है। ये मुहाजिरीन और अंसार हैं। इनके साथ सुर्ख़ मौत है।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, अब चलो। ऐ अब्बास ! मैंने तो आज के दिन जैसा बड़ा लश्कर और इतनी बड़ी जमाअत कभी नहीं देखी।

हज़रत ज़ुबैर अपने लश्कर को लेकर हजून नामी जगह पर आकर ठहर गए। हज़रत ख़ालिद अपने लश्कर को लेकर मक्का के निचले हिस्से की ओर से दाख़िल हुए। उनसे बनू बक्र के कुछ आवारागर्द लोगों ने मुक़ाबला किया। हज़रत ख़ालिद ने उनसे लड़ाई की। अल्लाह

ने उनको पसपा किया। उनमें से कुछ हज़वरा नामी जगह पर मारे गए और कुछ अपने घरों में घुस गए और जो घुड़सवार थे, वे ख़न्दमा पहाड़ पर चढ़ गए और मुसलमानों ने उनका पीछा किया।

हुज़ूर सल्ल० सबसे आख़िर में मक्का में दाख़िल हुए और एक मुनादी ने एलान किया कि जिसने अपना हाथ रोक कर अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर लिया, उसे अम्न है। और हज़रत अबू सुफ़ियान ने मक्का में ऊंची आवाज़ से यह दावत दी, ऐ लोगो! इस्लाम ले आओ, सलामती पाओगे और हक़ीक़त यह है कि अल्लाह ने हज़रत अब्बास के ज़रिए मक्का वालों की हिफ़ाज़त फ़रमाई। (यह सुनकर अबू सुफ़ियान की बीवी) हिन्द बिन्त उत्बा ने उनकी दाढ़ी को आगे बढ़कर पकड़ लिया और ज़ोर से कहा, ऐ आले ग़ालिब! इस बेवक़ूफ़ बूढ़े को क़त्ल कर दो।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने फ़रमाया, मेरी दाढ़ी छोड़ दे। मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं, अगर तू इस्लाम न लाई, तो तेरी गरदन उड़ा दी जाएगी। तेरा नाश हो। हुज़ूर हक़ बात लेकर आए हैं। अपनी मसहरी में चली जा और चुप हो जा।[1]

हज़रत सुहैल बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में दाख़िल हुए और (मक्का वालों पर) ग़ालिब आ गए, मैं अपने घर में घुस गया और मैंने अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर लिया। मैंने अपने बेटे अब्दुल्लाह बिन सुहैल को भेजा कि जाकर मुहम्मद (सल्ल०) से मेरे लिए अम्न ले आओ, क्योंकि मुझे ख़तरा है कि मुझे क़त्ल कर दिया जाएगा।

चुनांचे अब्दुल्लाह बिन सुहैल ने जाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आप मेरे बाप को अम्न दे देंगे?

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, हां, वह अल्लाह के अम्न में हैं, वह बाहर निकल आएं।

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 173, भाग 8, पृ० 4, बैहक़ी भाग 9, पृ० 119

फिर हुज़ूर सल्ल० ने पास बैठे हुए सहाबा से कहा, तुममें से जो भी सुहैल से मिले वह उनको घूर कर भी न देखे, ताकि वह (बे-ख़ौफ़ व ख़तर) बाहर आ जा सकें। मेरी उम्र की क़सम! (उस वक़्त तक अल्लाह के अलावा किसी और की क़सम खाने से मना नहीं किया गया था) सुहैल तो बड़ी अक़्ल व शराफ़त वाला है और सुहैल जैसा आदमी भी कभी इस्लाम से अनजान रह सकता है? और अब तो वह देख चुका है कि जिस रास्ते पर वह मेहनत कर रहा था, उससे कुछ नफ़ा न मिला। हज़रत अब्दुल्लाह ने जाकर अपने बाप को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारी बात बता दी।

सुहैल ने कहा, हुज़ूर सल्ल० तो बचपन में भी नेक थे। वह अब बड़े होकर भी नेक हैं। चुनांचे हज़रत सुहैल हुज़ूर सल्ल० के पास आया जाया करते थे। शिर्क की हालत में वह ग़ज़वा हुनैन में हुज़ूर सल्ल० के साथ गए, यहां तक कि वह जिइर्राना में मुसलमान हो गए और उस दिन हुज़ूर सल्ल० ने उनको ग़नीमत के माल में से सौ ऊंट दिए।[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० फ़रमाते हैं कि मक्का की जीत के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आदमी भेजकर सफ़वान बिन उमैया और अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और हारिस बिन हिशाम को बुलाया।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने कहा कि आज अल्लाह ने हमें इन पर क़ाबू दिया है। उन्होंने आज तक जो कुछ हमारे साथ किया है, वह सब मैं उनको याद दिलाऊंगा कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे यह फ़रमाया कि मेरी और तुम्हारी मिसाल तो ऐसी है जैसे कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाइयों को फ़रमाया था—

لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ

'कुछ इलज़ाम नहीं तुम पर आज। बख़्शे अल्लाह तुमको और वह है सब मेहरबानों से मेहरबान।'

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 294, मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 281

हज़रत उमर फ़रमाते हैं (हुज़ूर सल्ल० की ओर से यों माफ़ी का एलान सुनकर) शर्म के मारे मैं पानी-पानी हो गया। अगर बे-सोचे-समझे मेरी ज़ुबान से कोई बात निकल जाती, तो कितना बुरा होता जबकि हुज़ूर सल्ल० उनसे यह फ़रमा रहे हैं।[1]

हज़रत इब्ने अबी हुसैन फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का जीत लिया तो आप बैतुल्लाह में दाख़िल हुए। फिर आपने बाहर आकर दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं पर हाथ रखकर (कुफ़्फ़ार से) फ़रमाया, तुम क्या कहते हो ?

सुहैल बिन अम्र ने कहा, हम आपके बारे में भलाई का गुमान रखते हैं। आप करम फ़रमाने वाले भाई हैं और करम फ़रमाने वाले भाई के बेटे हैं और अब आप पर हम क़ाबू पा चुके हैं। (और यह बात मशहूर है कि करीम आदमी क़ाबू पाकर माफ़ कर दिया करता है।) आपने फ़रमाया, मैं भी तुमसे वही कहता हूं जो मेरे भाई यूसुफ़ ने (अपने भाइयों से) कहा था—

لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ

'कुछ इलज़ाम नहीं तुम पर आज।'[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० एक लम्बी हदीस बयान करते हैं, जिसमें यह है कि फिर आप काबे में दाख़िल हुए और उसके दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं को पकड़ कर आपने फ़रमाया, तुम (मेरे बारे में) क्या कहते हो और क्या गुमान रखते हो ?

उन्होंने कहा, हम यह कहते हैं कि आप हमारे भतीजे और चचेरे भाई हैं और बड़े बुर्दबार और मेहरबान रहम करने वाले हैं। और उन्होंने यह बात तीन बार कही।

आपने फ़रमाया, मैं भी तुमको वही कहता हूं जो हज़रत यूसुफ़ ने (अपने भाइयों से) कहा था—

لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ۔

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 292
2. इसाबा, भाग 2, पृ० 93

'कुछ इलज़ाम नहीं तुम पर आज। बख़्शे अल्लाह तुमको और वह है सब मेहरबानों से मेहरबान।'

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, (आपकी बात सुनकर) मक्का के वे कुफ़्फ़ार मस्जिद से निकले और वे इतने ख़ुश थे कि जैसे उनको क़ब्रों से निकाला गया हो और फिर वे इस्लाम में दाख़िल हो गए।

इमाम बैहक़ी फ़रमाते हैं कि इस क़िस्से में इमाम शाफ़ई रह० ने हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रह० से यह नक़ल किया है कि जब कुफ़्फ़ार मस्जिद में जमा हुए, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया, तुम्हारा क्या ख़्याल है? मैं तुम्हारे साथ क्या करूंगा?

उन्होंने कहा, (आप हमारे साथ) भला करेंगे। आप करीम भाई हैं और करीम भाई के बेटे हैं।

आपने फ़रमाया, जाओ तुम सब आज़ाद हो।[1]

हज़रत इक्रिमा बिन अबू जहल रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि फ़त्हे मक्का के दिन हज़रत इक्रिमा बिन अबी जह्ल की बीवी उम्मे हकीम बिन्त हारिस बिन हिशाम मुसलमान हो गईं। फिर हज़रत उम्मे हकीम ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! इक्रिमा आपके डर से यमन भाग गए हैं। उन्हें डर था कि आप उन्हें क़त्ल कर देंगे। आप उनको अम्न दे दें।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उन्हें अम्न है।

अपने साथ अपना रूमी गुलाम लेकर वह इक्रिमा की खोज में निकलीं। इस गुलाम ने हज़रत उम्मे हकीम को फुसलाना चाहा। वह उसे उम्मीद दिलाती रहीं, यहां तक कि क़बीला उक में पहुंच गईं। तो उन्होंने उस क़बीले वालों से उस गुलाम के ख़िलाफ़ मदद चाही।

उन्होंने उस गुलाम को रस्सियों में जकड़ लिया।

हज़रत उम्मे हकीम इक्रिमा के पास जब पहुंचीं तो वह तिहामा के

1. बैहक़ी, भाग ९, पृ० ११८

एक तट पर पहुंच कर नाव पर सवार हो चुके थे और मल्लाह उनसे कह रहा था कि कलिमा इख़्लास पढ़ लो।

इक्रिमा ने पूछा, मैं क्या कहूं?

उसने कहा, لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ला इला-ह इल्लल्लाहु कहो।

इक्रिमा ने कहा, मैं तो सिर्फ़ इसी कलिमा से ही भाग रहा हूं।

इतने में हज़रत उम्मे हकीम वहां पहुंच गईं और (कपड़े हिलाकर) उनकी ओर इशारा करने लगीं। (या उन पर इसरार करने लगीं।) और वह उनसे कह रही थीं, ऐ मेरे चचेरे भाई! मैं तुम्हारे पास ऐसी ज़ात के पास से आ रही हूं, जो लोगों में सबसे ज़्यादा जोड़ लेने वाले और सबसे ज़्यादा नेकी करने वाले और सबसे ज़्यादा बेहतरीन इंसान हैं। अपने आपको हलाक न करो।

चुनांचे इक्रिमा यह सुनकर रुक गए और वह उनके पास पहुंच गईं और उनसे कहा, मैं तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अम्न ले चुकी हूं।

उन्होंने कहा, वाक़ई तुम ले चुकी हो?

उन्होंने कहा, हां। मैंने उनसे बात की थी, उन्होंने तुम्हें अम्न दे दिया है। चुनांचे वह उनके साथ वापस चल पड़े।

हज़रत उम्मे हकीम ने इक्रिमा को अपने रूमी ग़ुलाम की सारी बात बताई। उन्होंने (ग़ुस्से में आकर) उस ग़ुलाम को क़त्ल कर दिया और वह उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे।

और जब यह मक्का के क़रीब पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा को फ़रमाया कि इक्रिमा बिन अबू जहल तुम्हारे पास मोमिन और मुहाजिर बनकर आ रहे हैं। आगे इसके बाप को बुरा-भला न कहना, क्योंकि मरे हुए को बुरा कहने से उसके ज़िंदा रिश्तेदारों को तक्लीफ़ होती है और वह उस मुर्दे तक पहुंचता नहीं।

(रास्ते में) इक्रिमा ने अपनी बीवी से सोहबत करनी चाही, लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि तुम काफ़िर हो और मैं मुसलमान हूं।

इक्रिमा ने कहा, मालूम होता है कि जिस काम ने तुमको मेरी बात मानने से रोका है, वह बहुत बड़ा काम है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इक्रिमा को देखते ही लपके और जल्दी की वजह से आपके जिस्मे अतहर पर चादर तक न थी, क्योंकि उन (के आने) से बहुत ख़ुश थे। फिर हुज़ूर सल्ल० बैठ गए और वह हुज़ूर सल्ल० के सामने खड़े रहे और उनके साथ उनकी बीवी नक़ाब पहने हुए थीं।

उन्होंने कहा, ऐ मुहम्मद (सल्ल०)! मेरी इस बीवी ने मुझे बताया है कि आपने मुझे अम्न दे दिया है।

आपने फ़रमाया, यह सच कहती है, तुम्हें अम्न है।

इक्रिमा ने कहा, ऐ मुहम्मद! आप किस चीज़ की दावत देते हैं?

आपने फ़रमाया, मैं तुम्हें इस बात की दावत देता हूं कि तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और मैं अल्लाह का रसूल हूं और तुम नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और फ़्लां-फ़्लां काम करो। आपने इस्लाम के कुछ अमल गिनाए, तो इक्रिमा ने कहा, अल्लाह की क़सम! आपने हक़ बात की और अच्छी और उम्दा बात की दावत दी है। अल्लाह की क़सम! आप तो इस दावत के काम को शुरू करने से पहले ही हम में सबसे ज़्यादा सच्चे और सबसे ज़्यादा नेक थे। फिर हज़रत इक्रिमा ने कलिमा-शहादत पढ़ा—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०'

आप उनके इस्लाम लाने से बहुत ख़ुश हुए, फिर उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप मुझे पढ़ने के लिए कोई बेहतरीन चीज़ बताएं। आपने फ़रमाया—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

'अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०' पढ़ा करो।

हज़रत इक्रिमा ने कहा, कुछ और बता दें।

आपने फ़रमाया, यह कहो कि मैं अल्लाह को और तमाम हाज़िर लोगों को इस बात पर गवाह बनाता हूं कि मैं मुसलमान और मुजाहिद और मुहाजिर हूं। हज़रत अकरमा ने यह कह दिया।

हुज़ूर ने (ख़ुश होकर) कहा, तुम मुझसे आज जो भी ऐसी चीज़ मांगोगे, जो मैं दे सकता हूं, वह मैं तुम्हें ज़रूर दे दूंगा।

हज़रत इक्रिमा रज़ि० ने कहा, मैं आपसे यह दरख़्वास्त करता हूं कि आप मेरे लिए यह दुआ करें कि मैंने आपकी जितनी दुश्मनी की है या आपके ख़िलाफ़ जितने सफ़र किए हैं और आपके ख़िलाफ़ जितनी जंगें की हैं या आपको आपके सामने या आपके पीछे जितनी नामुनासिब बातें कही हैं, अल्लाह उन सबको माफ़ कर दे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! इन्होंने मुझसे जितनी दुश्मनी की है और आपके नूर को बुझाने के लिए जितने सफ़र किए हैं, इन सबको माफ़ फ़रमा दे और इन्होंने मेरे सामने और मेरे पीछे जितनी बेइज़्ज़ती की है, वह सब माफ़ फ़रमा दे।

हज़रत इक्रिमा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अब मैं ख़ुश हो गया हूं, अल्लाह की क़सम ! ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अब तक मैं अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिए जितना माल ख़र्च कर चुका हूं, अब आगे अल्लाह के रास्ते में उससे दो गुना (इनशाअल्लाह) ख़र्च करूंगा और अब तक अल्लाह के रास्ते से रोकने की जितनी लड़ाइयां लड़ चुका हूं, अब अल्लाह के रास्ते में उससे दोगुनी लड़ाई लड़ूंगा।

चुनांचे हज़रत इक्रिमा पूरे ज़ोर-शोर से जिहाद में शरीक होते रहे, यहां तक कि (अल्लाह के रास्ते में) शहीद हो गए।

हुज़ूर सल्ल० ने (नए निकाह के बग़ैर ही) पहले निकाह की बुनियाद पर ही हज़रत उम्मे हकीम को उनके निकाह में बाक़ी रखा।

वाक़दी ने अपनी सनद से यह नक़ल किया है कि ग़ज़वा हुनैन के दिन (जब शुरू में मुसलमानों की हार हुई तो) सुहैल बिन अम्र ने कहा,

मुहम्मद सल्ल० और उनके सहाबा को क़बीला सक़ीफ़ और क़बीला हवाज़िन का पहले से अन्दाज़ा न था, तो उनको हज़रत इक्रिमा ने कहा, यह बात नहीं है, बल्कि हार और जीत तो अल्लाह के हाथ में है। मुहम्मद (सल्ल०) के अख़्तियार में कुछ नहीं है। अगर आज उनको हार हो गई है तो कल को उनके हक़ में अच्छा नतीजा निकल आएगा।

सुहैल ने कहा, अरे, कुछ दिन पहले तक तो तुम इनके बड़े मुख़ालिफ़ थे। (अब उनके बड़े हामी हो गए हो)

हज़रत इक्रिमा ने कहा, ऐ अबू यज़ीद! अल्लाह की क़सम! हम लोग बिल्कुल ग़लत रास्ते पर मेहनत करते रहे। हमारी अक़्ल भी कोई अक़्ल थी कि हम ऐसे पत्थरों की इबादत करते रहे जो न नफ़ा दे सकते थे, न नुक़्सान।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० की एक हदीस में यह मज़्मून है कि हज़रत इक्रिमा जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर पहुंचे, तो हुज़ूर सल्ल० बहुत ख़ुश हुए और उनके आने की इसी ख़ुशी की वजह से आप खड़े होकर फ़ौरन उनकी ओर लपके और हज़रत उर्व: बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में यह है कि हज़रत इक्रिमा बिन अबू जह्ल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचा, तो मैंने कहा, ऐ मुहम्मद (सल्ल०)! (मेरी) इस (बीवी) ने मुझे बताया है कि आपने मुझे अम्न दे दिया है।

आपने फ़रमाया, हां, तुम्हें अम्न है।

मैंने कहा, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है। उसका शरीक नहीं और आप अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और आप लोगों में सबसे ज़्यादा नेक और सबसे ज़्यादा सच्चे और सबसे ज़्यादा वायदा को पूरा करने वाले हैं।

हज़रत इक्रिमा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं यह सब कुछ कह तो रहा था, लेकिन शर्म के मारे मैंने अपना सर झुकाया हुआ था। फिर मैंने

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 75

कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मेरे लिए अल्लाह से दुआ फ़रमा दें कि मैंने आपकी आज तक जितनी दुश्मनी की है और शिर्क को ग़ालिब करने की कोशिश और मेहनत करने में, मैंने जितने सफ़र किए हैं, अल्लाह इन सबको माफ़ फ़रमा दे।

हुज़ूर सल्ल० ने दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! इस इक्रिमा ने आज तक जितनी मेरी दुश्मनी की है और आपसे रोकने के लिए जितने सफ़र किए हैं, उन सबको माफ़ फ़रमा दे।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप जो कुछ जानते हैं, उसमें से बेहतरीन बात मुझे बताएं, ताकि मैं भी उसे जान लूं, (और उस पर अमल करूं)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कहो—

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

(अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०) और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करो।

फिर हज़रत इक्रिमा ने कहा, अल्लाह की क़सम ! ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मैं अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिए जितना माल ख़र्च कर चुका हूं। अब उससे दोगुना माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करूंगा और अब तक अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिए जितनी लड़ाई लड़ चुका हूं, अब अल्लाह के रास्ते में उससे दोगुनी लड़ाई लडूंगा।

चुनांचे हज़रत इक्रिमा पूरे ज़ोर व शोर से जिहाद में शरीक होते रहे और हज़रत अबू बक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त के दौर में ग़ज़वा अजनादैन में शहीद हुए।

हुज़ूर सल्ल० ने हज्जतुल विदाअ वाले साल उनको हवाज़िन से सदक़ा वसूल करने भेजा था। जब हुज़ूर सल्ल० का इन्तिक़ाल हुआ, उस वक़्त हज़रत इक्रिमा तबाला (यमन) में थे।[1]

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 241, मज्मा, भाग 6, पृ० 174

हज़रत सफ़वान बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने का क़िस्सा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि फ़त्हे मक्का के दिन सफ़वान बिन उमैया की बीवी हज़रत बग़ूम बिन्त मुअद्दल मुसलमान हो गईं। उनका ताल्लुक़ क़बीला किनाना से था, लेकिन ख़ुद सफ़वान बिन उमैया मक्का से भाग कर एक घाटी में छिप गए थे। उनके साथ सिर्फ़ उनका गुलाम यसार ही था। उसको उन्होंने कहा, तेरा नाश हो, देखो, कौन आ रहा है?

उसने कहा, यह उमैर बिन वह्ब आ रहे हैं।

सफ़वान ने कहा, मैं उमैर के साथ क्या करूं? अल्लाह की क़सम! यह तो मुझे क़त्ल करने के इरादे से ही आ रहे हैं। इन्होंने तो मेरे ख़िलाफ़ मुहम्मद (सल्ल०) की मदद की है।

इतने में हज़रत उमैर वहां पहुंच गए, तो उनसे सफ़वान ने कहा, इतना कुछ मेरे साथ कर गुज़रने के बाद भी तुम्हें चैन न आया। अपने क़र्ज़ और अपने बाल-बच्चों की ज़िम्मेदारी तुमने मुझ पर डाली थी (वह सब मैंने बरदाश्त की) और अब तुम मुझे क़त्ल करने आ गए हो।

हज़रत उमैर ने कहा, ऐ अबू वह्ब! (यह सफ़वान का उपनाम है) मैं तुम पर क़ुरबान हूं। मैं तुम्हारे पास ऐसे आदमी के पास से आ रहा हूं जो लोगों में सबसे ज़्यादा नेक और सबसे ज़्यादा जोड़ लेने वाले हैं।

हज़रत उमैर ने आने से पहले हुज़ूर सल्ल० से कहा था, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरी क़ौम का सरदार (सफ़वान) समुन्दर में छलांग लगाने के लिए भाग गया है और उसे यह डर था कि आप उसे अम्न नहीं देंगे। मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, आप उसे अम्न दे दें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने उसे अम्न दे दिया।

चुनांचे यह उनकी खोज में चल पड़े और सफ़वान से कहा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हें अम्न दे चुके हैं।

सफ़वान ने कहा, नहीं, मैं अल्लाह की क़सम! तुम्हारे साथ (मक्का)

नहीं वापस जाऊंगा, जब तक तुम ऐसी निशानी नहीं ले आते जिसको मैं पहचानता हूं। (चुनांचे हज़रत उमैर ने वापस जाकर हुज़ूर सल्ल० से किसी निशानी के देने की दरख़्वास्त की।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लो, मेरी पगड़ी ले जाओ।

वह पगड़ी लेकर हज़रत उमैर सफ़वान के पास वापस आए। यह पगड़ी वह धारीदार चादर थी जिसे बांधे हुए हुज़ूर सल्ल० (मक्का में) दाख़िल हुए थे। चुनांचे हज़रत उमैर-सफ़वान की खोज में दोबारा निकले और उनसे कहा, ऐ अबू वह्ब! तुम्हारे पास मैं ऐसे आदमी के पास से आ रहा हूं जो लोगों में सबसे बेहतरीन और सबसे ज़्यादा जोड़ लेने वाले और सबसे ज़्यादा नेक और सबसे ज़्यादा बुर्दबार हैं। उनकी शराफ़त तुम्हारी शराफ़त है। उनकी इज़्ज़त तुम्हारी इज़्ज़त है और उनका मुल्क तुम्हारा मुल्क है। तुम्हारे ही ख़ानदान के आदमी हैं। मैं तुम्हें नसीहत करता हूं कि अपने बारे में अल्लाह से डरो।

सफ़वान ने उनसे कहा, मुझे अपने क़त्ल होने का डर है।

हज़रत उमैर ने कहा, हुज़ूर सल्ल० तो तुम्हें इस्लाम में दाख़िल होने की दावत दे रहे हैं। अगर तुम्हें ख़ुशी के साथ यह मंज़ूर है तो ठीक है, वरना तुम्हें उन्होंने दो माह की मोहलत दे दी है और जो पगड़ी बांध कर हुज़ूर (मक्का में) दाख़िल हुए थे, तुम उसे पहचानते हो?

सफ़वान ने कहा, हां।

चुनांचे हज़रत उमैर ने वह पगड़ी निकालकर दिखाई, तो सफ़वान ने कहा, हां, यह वही है।

चुनांचे सफ़वान वहां से चल कर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त मस्जिदे हराम में अस्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। ये दोनों वहां पहुंचकर खड़े हो गए।

सफ़वान ने पूछा, मुसलमान दिन-रात में कितनी नमाज़ें पढ़ते हैं?

हज़रत उमैर ने कहा, पांच नमाज़ें।

सफ़वान ने कहा, क्या मुहम्मद (सल्ल०) उनको नमाज़ पढ़ा रहे हैं?

हज़रत उमैर ने कहा, हां।

ज्योंही हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ से सलाम फेरा। सफ़वान ने ऊंची आवाज़ से कहा, ऐ मुहम्मद! उमैर बिन वह्ब मेरे पास आपकी पगड़ी लेकर आए हैं और यह कहते हैं कि आपने मुझे अपने पास बुलाया है कि मैं (इस्लाम में दाख़िल होने पर) राज़ी हो जाऊं, तो ठीक है, वरना आपने मुझे दो माह की मोहलत दे दी है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू वह्ब! (सवारी से नीचे) उतर आओ।

उन्होंने कहा, मैं उस वक़्त तक नहीं उतरूंगा, जब तक आप साफ़-साफ़ न बयान फ़रमा दें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, दो माह छोड़ तुम्हें चार माह की मोहलत है।

चुनांचे सफ़वान सवारी से उतर आए, फिर हुज़ूर (सहाबा का लश्कर लेकर) हवाज़िन की ओर तशरीफ़ ले गए। (इस सफ़र में) हुज़ूर सल्ल० के साथ सफ़वान भी गए। वह अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे उनके हथियार उधार के तौर पर लेने के लिए आदमी भेजा। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को सौ ज़िरहें (कवच) सारे सामान के साथ उधार के तौर पर भेज दिया।

उन्होंने कहा, आप मुझसे ये ज़िरहें मेरी ख़ुशी से लेना चाहते हैं या ज़बरदस्ती?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हम उधार के तौर पर लेना चाहते हैं, जो वापस कर देंगे।

चुनांचे उन्होंने वे ज़िरहें उधार के तौर पर दे दीं। हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर वह ये ज़िरहें अपनी सवारी पर लाद कर हुनैन ले गए। वह ग़ज़्वा हुनैन व ताइफ़ में शरीक रहे। फिर वहां से हुज़ूर सल्ल० जिअिर्राना वापस आए। हुज़ूर सल्ल० चल-फिरकर माले ग़नीमत देख रहे थे। सफ़वान बिन उमैया भी आपके साथ थे।

सफ़वान बिन उमैया ने भी देखना शुरू किया कि जिअिर्राना की तमाम घाटी जानवरों, बकरियों और चरवाहों से भरी हुई है और बड़ी देर

तक ग़ौर से देखते रहे। हुज़ूर सल्ल० भी उनको कनखियों से देखते रहे।

आपने फ़रमाया, ऐ अबू वह्ब! क्या यह (माले ग़नीमत से भरी हुई) घाटी तुम्हें पसन्द है?

उन्होंने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, यह सारी घाटी तुम्हारी है और जितना माले ग़नीमत है, वह भी तुम्हारा है।

यह सुनकर सफ़वान ने कहा, इतनी बड़ी सख़ावत की हिम्मत सिर्फ़ नबी ही कर सकता है और कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

'अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०' पढ़कर वहीं मुसलमान हो गए।[1]

हज़रत सफ़वान बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनसे ज़िरहें ग़ज़्वा हुनैन के दिन रियायत के तौर पर तलब फ़रमाईं। उन्होंने कहा, ऐ मुहम्मद सल्ल०! क्या आप छीन कर लेना चाहते हैं?

आपने फ़रमाया, नहीं, मैं तो उधार के तौर पर अपनी ज़िम्मेदारी पर लेना चाहता हूं। (अगर ख़राब होंगी तो उनका जुर्माना दूंगा) चुनांचे कुछ ज़िरहें ख़राब हो गईं।

हुज़ूर सल्ल० ने उनको उनका जुर्माना देना चाहा, तो हज़रत सफ़वान ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आज तो मेरे दिल में इस्लाम का शौक़ है। (माल लेने का नहीं है)।[2]

हज़रत हुवैतिब बिन अब्दुल उज़्ज़ा रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा

हज़रत मुंज़िर बिन जह्म फ़रमाते हैं कि हज़रत हुवैतिब बिन अब्दुल उज़्ज़ा ने बयान किया कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़त्हे

1. कंज़, भाग 5, पृ० 294, बिदाया, भाग 4, पृ० 308
2. अहमद, भाग 6, पृ० 465

मक्का के साल मक्का में दाख़िल हो गए, तो मुझे बहुत ही डर महसूस हुआ। चुनांचे मैं अपने घर से निकल गया और अपने घर वालों को ऐसी जगहों पर भिजवा दिया, जहां से वे हिफ़ाज़त से रह सकें और ख़ुद औफ़ के बाग़ में जा पहुंचा।

एक दिन अचानक वहां हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए। मेरी उनसे पुरानी दोस्ती थी और दोस्ती हमेशा काम आया करती है, लेकिन मैं उनको देखते ही (डर के मारे) भाग खड़ा हुआ।

उन्होंने मुझे पुकारा, ऐ अबू मुहम्मद!

मैंने कहा, लब्बैक, हाज़िर हूं।

उन्होंने कहा, तुम्हें क्या हुआ?

मैंने कहा, डर के मारे (भाग रहा हूं)।

उन्होंने कहा, डरो मत। तुम सब अल्लाह की अमान में हो। (यह सुनकर) मैं उनके पास वापस आ गया और उन्हें सलाम किया।

उन्होंने कहा, अपने घर जाओ।

मैंने कहा, क्या मेरे लिए अपने घर जाने का कोई रास्ता है? अल्लाह की क़सम! मेरा तो यह ख़्याल है कि अपने घर ज़िंदा नहीं पहुंच सकता हूं। अव्वल तो रास्ते ही में क़त्ल कर दिया जाऊंगा और अगर किसी तरह घर पहुंच गया, तो वहां घर में आकर मुझे कोई न कोई ज़रूर क़त्ल कर देगा और मेरे घर वाले भी अलग-अलग जगहों पर हैं।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, अपने घर वालों को एक जगह जमा कर लो और मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे घर तक जाऊंगा। चुनांचे वह मेरे साथ मेरे घर तक गए और रास्ते में ऊंची आवाज़ से यह कहते गए कि हुवैतिब को अमान मिल चुका। उन्हें कोई न छेड़े। फिर हज़रत अबूज़र रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस पहुंचे और उनको सारा क़िस्सा सुनाया।

आपने फ़रमाया कि मैं जिन लोगों को क़त्ल करने का हुक्म दे चुका हूं, क्या उनके अलावा तमाम लोगों को अम्न नहीं मिल चुका है?

हज़रत हुवैतिब कहते हैं कि इस बात से मुझे इत्मीनान हो गया और मैं अपने बाल-बच्चों को घर ले आया।

हज़रत अबूज़र रज़ि० मेरे पास दोबारा आए और उन्होंने कहा, ऐ अबू मुहम्मद! कब तक? और कहां तक? तुम तमाम लड़ाइयों में पीछे रह गए। भलाई के तमाम मौक़े तुम्हारे हाथ से निकल गए, लेकिन अब भी भलाई के बहुत से मौक़े बाक़ी हैं, तुम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर मुसलमान हो जाओ, सलामती पा लोगे और हुज़ूर सल्ल० तो तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा नेक और सबसे ज़्यादा जोड़ लेने वाले और सबसे ज़्यादा बुर्दबार हैं। उनकी शराफ़त तुम्हारी शराफ़त है और उनकी इज़्ज़त तुम्हारी इज़्ज़त है।

मैंने कहा, मैं तुम्हारे साथ हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाने को तैयार हूं। चुनांचे मैं उनके साथ चल कर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हजरत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी आपके पास मौजूद थे। मैं आपके सिरहाने खड़ा हो गया और मैंने हज़रत अबूज़र से पूछा कि हुज़ूर सल्ल० को सलाम किस तरह करते हैं।

उन्होंने कहा, यह कहो—

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

'अस्सलामु अलैकुम अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू०'

चुनांचे मैंने आपको उन्हीं के लफ़्ज़ों में सलाम किया।

आपने फ़रमाया, 'वा अलैकुम अस्सलामु ऐ हुवैतिब!'

मैंने कहा, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अल्लाह के रसूल हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने तुम्हें हिदायत दी।

हज़रत हुवैतिब कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० मेरे इस्लाम लाने से बहुत ख़ुश हुए। आपने मुझसे कुछ क़र्ज़ मांगा। मैंने आपको चालीस हज़ार दिरहम क़र्ज़ दिए और आपके साथ ग़ज़वा हुनैन और ताइफ़ में शरीक

रहा। आपने मुझे हुनैन के माले ग़नीमत में से सौ ऊंट दिए।[1]

हज़रत जाफ़र बिन महमूद बिन मुहम्मद बिन सलमा अशहली से लम्बी हदीस रिवायत की गई है, जिसमें यह मज़्मून भी है कि फिर हज़रत हुवैतिब ने कहा, क़ुरैश के उन बड़े लेगों में जो फ़त्हे मक्का तक अपनी क़ौम के दीन पर बाक़ी रह गए थे, कोई भी मुझसे ज़्यादा इस जीत को नापसंद समझने वाला नहीं था, लेकिन होता तो वही है जो मुक़द्दर में है। मैं मुश्रिकों के साथ बद्र की लड़ाई में भी शरीक हुआ था। मैंने (इस लड़ाई में) बहुत से सबक़ वाले मंज़र देखे। चुनांचे मैंने फ़रिश्तों को देखा कि वे ज़मीन आसमान के दर्मियान उतर रहे हैं और काफ़िरों को क़त्ल कर रहे हैं और उनको क़ैद कर रहे हैं, तो मैंने कहा, इस आदमी की हिफ़ाज़त का मुस्तक़िल (ग़ैबी) इन्तिज़ाम है और मैंने जो कुछ देखा था, उसका किसी से ज़िक्र नहीं किया। चुनांचे हार का मुंह देखकर हम मक्का वापस आ गए। फिर बाद में क़ुरैश एक-एक करके मुसलमान होते रहे। हुदैबिया की सुलह के मौक़े पर मैं भी मौजूद था और सुलह कराने में मैं भी दौड़-भाग करता रहा, यहां तक कि सुलहनामा मुकम्मल हो गया और इन तमाम बातों से इस्लाम को तरक़्क़ी होती रही, क्योंकि अल्लाह सिर्फ़ उसी चीज़ को वजूद देते हैं, जिसे वे चाहते हैं। इस सुलहनामा का आख़िरी गवाह मैं था। और मैंने (अपने दिल में) कहा कि क़ुरैश हुज़ूर सल्ल० को ज़ुबानी जमा ख़र्च से वापस भेजकर अगरचे इस वक़्त ख़ुश हो रहे हैं, लेकिन उनको आगे हुज़ूर सल्ल० की ओर से बुरे हालात ही देखने पड़ेंगे।

अगले साल जब हुज़ूर सल्ल० उमरा की क़ज़ा पूरी करने के लिए तशरीफ़ लाए और सारे क़ुरैश मक्का से बाहर चले गए, तो मैं और सुहैल बिन अम्र और कुछ लोग इसलिए मक्का ठहर गए ताकि वक़्त के ख़त्म होने पर हम लोग हुज़ूर सल्ल० को मक्का से वापस जाने के लिए कहें।

चुनांचे जब तीन दिन गुज़र गए तो मैंने और सुहैल बिन अम्र ने

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 493, इसाबा, भाग 1, पृ० 364

जाकर कहा कि शर्त के मुताबिक़ आपका वक़्त पूरा हो गया है। आप हमारे शहर से चले जाएं।

आपने फ़रमाया, ऐ बिलाल! (यह एलान कर दो कि) जितने मुसलमान हमारे साथ आए हैं, वे सूरज डूबने से पहले ही मक्का से निकल जाएं।[1]

हज़रत हारिस बिन हिशाम रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन इक्रिमा रह० फ़रमाते हैं कि फ़त्हे मक्का के दिन हारिस बिन हिशाम और अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ हज़रत उम्मे हानी बिन्त अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आए। उन दोनों ने उनसे पनाह मांगी और यों कहा, हम तुम्हारी पनाह में आना चाहते हैं। हज़रत उम्मे हानी ने उन दोनों को पनाह दे दी।

फिर हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु वहां आए। उनकी नज़र उन दोनों पर पड़ी। वह अपनी तलवार निकाल कर उन पर हमला करने के लिए झपट पड़े, तो हज़रत उम्मे हानी (उन दोनों को बचाने के लिए) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से लिपट गईं और कहने लगीं, तमाम लोगों में से तुम ही मेरे साथ ऐसा करने लगे हो? अगर तुमने मारना ही है, तो पहले मुझे मारो।

हज़रत अली रज़ि० (रुक गए और) उनको यह कहकर चले गए कि तुम मुश्रिकों को पनाह देती हो?

हज़रत उम्मे हानी रज़ि० फ़रमाती हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरे मांजाए भाई हज़रत अली रज़ि० ने मेरे साथ ऐसा मामला किया है कि मेरा बचना मुश्किल हो गया था। मैंने अपने दो मुश्रिक देवरों को पनाह दी थी, वह तो क़त्ल करने के लिए उन पर झपट पड़े।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। जिसको तुमने पनाह दी, उसे हमने भी पनाह दे दी। जिसे तुमने अम्न दिया, उसे

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 492

हमने भी अम्न दे दिया।

हज़रत उम्मे हानी रज़ि० ने वापस आकर उन दोनों को सारी बात बताई। वे दोनों अपने घरों को चले गए।

लोगों ने आकर हुज़ूर सल्ल० से कहा कि हारिस बिन हिशाम और अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ तो ज़ाफ़रान वाली चादरें पहने हुए अपनी मज्लिस में इत्मीनान से बैठे हुए हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अब तुम लोग उनका कुछ नहीं कर सकते हो, क्योंकि हम उनको अम्न दे चुके हैं।

हज़रत हारिस बिन हिशाम फ़रमाते हैं कि मैं बहुत देर तक सोचता तक रहा कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझे मुश्रिकों की हर लड़ाई में देखा है। अब मैं उनकी ख़िदमत में जाऊंगा, तो उनकी निगाह मुझ पर पड़ेगी, तो उससे मुझे शर्म आएगी। लेकिन फिर मुझे ख़्याल आया कि आप बहुत नेक और बहुत रहमदिल हैं। इसलिए मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िरी के लिए चल पड़ा।

जब मैं आपके पास पहुंचा तो आप मस्जिदे हराम में दाख़िल हो रहे थे। मुझे देखकर आप हंसते हुए मुझसे पेश आए और रुक गए।

मैंने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम किया और कलिमा शहादत पढ़ लिया।

आपने फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने तुमको हिदायत दी। तुम्हारे जैसे आदमी को इस्लाम से अनजाना नहीं रहना चाहिए।

हज़रत हारिस ने कहा, मैं भी यही समझता हूं कि इस्लाम जैसे दीन से अनजाना नहीं रहना चाहिए।[1]

हज़रत नुज़ैर बिन हारिस अब्दरी रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा

हज़रत मुहम्मद बिन शुरहबील अब्दरी कहते हैं कि हज़रत नुज़ैर

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 277

बिन हारिस रज़ि० लोगों में बड़े आलिम थे और कहा करते थे कि तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमें इस्लाम की दौलत से नवाज़ा और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजकर हम पर एहसान फ़रमाया और हम उस दीन पर नहीं मरे, जिस पर हमारे बाप-दादा मरे हैं। मैं (हुज़ूर सल्ल० के ख़िलाफ़) कुरैश के साथ हर रास्ते पर कोशिश करता रहा, यहां तक कि मक्का जीत लिया गया और आप हुनैन तशरीफ़ ले गए। हम भी आपके साथ गए।

हमारा इरादा यह था कि अगर हुज़ूर सल्ल० को हार का मुंह देखना पड़ा, तो हम आपके ख़िलाफ़ आपके दुश्मनों की मदद करेंगे, लेकिन यह हमारे लिए मुम्किन न हो सका। जब आप जिअिर्राना पहुंचे तो मैं इसी इरादे पर था कि अचानक हुज़ूर सल्ल० से मेरी मुलाक़ात हुई।

आप बड़े ख़ुश थे। आपने फ़रमाया, नुज़ैर!

मैंने कहा, जी हाज़िर हूं।

आपने फ़रमाया, तुमने ग़ज़वा हुनैन के दिन जो कुछ करने को सोचा था, यह उससे बेहतर है।

मैं लपक कर आपके ज़रा और क़रीब हुआ। आपने फ़रमाया, अब तुम्हारे लिए इस बात का वक़्त आ गया है कि तुम अपने दीन के बारे में ग़ौर करो।

मैंने कहा, मैं इस बारे में पहले से सोच रहा हूं।

आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! इसको साबितक़दमी में तरक़्क़ी नसीब फ़रमा।

(हुज़ूर सल्ल० की इस दुआ का असर यह हुआ) कि उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, दीन पर पुख़्तगी में और हक़ की मदद करने में मेरा दिल पत्थर की तरह मज़बूत हो गया। फिर मैं अपने घर वापस आया, तो वहां अचानक मेरे पास बनू दुइल का एक आदमी आकर कहने लगा, ऐ अबुल हारिस! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हें सौ ऊंट देने का हुक्म दिया है, मुझे उनमें से कुछ ऊंट दे दो, क्योंकि मुझ पर बहुत ज़्यादा क़र्ज़ा है।

पहले तो मेरा इरादा हुआ कि ये ऊंट न लूं और मैंने कहा कि हुज़ूर सल्ल० मेरा दिल रखने के लिए दे रहे हैं। मैं इस्लाम के लिए रिश्वत नहीं लेना चाहता हूं। फिर मैंने सोचा कि न तो ऊंटों की मेरे दिल में तलब थी और न मैंने (हुज़ूर सल्ल० से) मांगे। (हुज़ूर सल्ल० ख़ुद ही दे रहे हैं) इसलिए मैंने वे ऊंट ले लिए और उनमें से दुइली को दस ऊंट दे दिए।[1]

तायफ़ के बनू सक़ीफ़ के इस्लाम लाने का क़िस्सा

इब्ने इस्हाक़ ने बयान किया है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू सक़ीफ़ के पास से वापस हुए, तो (बनू सक़ीफ़ में से) हज़रत उर्वः बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आपके पीछे चल दिए और मदीना से पहले ही हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच गए और मुसलमान हो गए और हुज़ूर सल्ल०से इस बात की इजाज़त चाही कि इस्लाम को लेकर अपनी क़ौम के पास वापस जाएं।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, वे तुम्हें क़त्ल कर देंगे। (आपको बनू सक़ीफ़ के पिछले रवैए से यह मालूम था कि उनमें घमंड और हठधर्मी है।)

हज़रत उर्वः ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इन्हें इनकी कुंवारी लड़कियों से भी महबूब हूं और वह वाक़ई बनू सक़ीफ़ में बहुत महबूब थे और उनकी बात मानी जाती थी। चुनांचे वह अपनी क़ौम को इस्लाम की दावत देने के इरादे से वापस हो गए और उन्हें उम्मीद थी कि चूंकि उनका बनू सक़ीफ़ में बड़ा दर्जा है, इसलिए बनू सक़ीफ़ उनकी मुख़ालफ़त नहीं करेंगे।

चुनांचे उन्होंने अपने एक कोठे पर चढ़कर सारी क़ौम के सामने अपना मुसलमान होना ज़ाहिर कर दिया और उन्हें इस्लाम की दावत दी।

बनू सक़ीफ़ ने हर ओर से तीर बरसाने शुरू कर दिए। उन्हें एक

1. इसाबा, भाग 3, पृ० 558

तीर ऐसा लगा, जिससे वह शहीद हो गए।

जब वह घायल हो गए, तो उनसे पूछा गया कि आप अपने ख़ून के बारे में क्या कहते हैं?

उन्होंने कहा, यह एज़ाज़ है जो अल्लाह ने मुझे अता फ़रमाया और मुझे शहादत का दर्जा दिया। मेरा भी वही दर्जा है जो उन सहाबा का था, जो यहां से जाने से पहले हुज़ूर सल्ल० के साथ शहीद हुए थे, इसलिए मुझे उनके साथ दफ़न कर देना।

चुनांचे लोगों ने उनको उन्हीं सहाबा के साथ दफ़न किया।

सहाबा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने उन उर्व: के बारे में फ़रमाया था कि सूर: यासीन में जिन (हबीब नज्जार) के साथ उनकी क़ौम के मामले का ज़िक्र किया गया है, हज़रत उर्व: के साथ उनकी क़ौम ने वैसा ही मामला किया है।

हज़रत उर्व: की शहादत के कुछ महीनों बाद बनू सक़ीफ़ ने आपस में बैठकर यह सोचा कि आस-पास के तमाम अरब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत होकर मुसलमान हो चुके हैं। अब उनसे लड़ने की ताक़त नहीं रही और यह फ़ैसला किया कि अपना एक आदमी हुज़ूर सल्ल० के पास भेजें। चुनांचे अब्द या लैलन बिन अम्र के साथ बनी अह्लाफ़ के दो आदमी और बनी मालिक के तीन आदमी भेजे। ये लोग मदीना के क़रीब पहुंच कर एक चश्मे के पास ठहरे। वहां उनकी हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा से मुलाक़ात हो गई, जो अपनी बारी में हुज़ूर सल्ल० के सहाबा की सवारियों को चरा रहे थे।

उन्होंने जब बनू सक़ीफ़ के इस वफ़्द को देखा तो हुज़ूर सल्ल० को उनके आने की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए तेज़ी से चले। रास्ते में उन्हें हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ मिले।

उन्होंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को बताया कि बनू सक़ीफ़ का वफ़्द आया है। वे हुज़ूर सल्ल० से बैअत होकर मुसलमान होना चाहते हैं, बशर्तेकि हुज़ूर सल्ल० उनकी शर्त मान लें और उनकी क़ौम के नाम ख़त लिख कर दे दें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत मुग़ीरह रज़ि० से कहा, मैं तुम्हें क़सम देता हूं कि तुम मुझसे पहले हुज़ूर सल्ल० के पास मत जाओ। मैं जाकर ख़ुद हुज़ूर सल्ल० को बताता हूं।

हज़रत मुग़ीरह रज़ि० राज़ी हो गए।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने जाकर हुज़ूर सल्ल० को इस वफ़्द के आने की ख़बर दी और हज़रत मुग़ीरह इस वफ़्द के पास वापस गए और उनको साथ लेकर अपने जानवर वापस ले आए और रास्ते में उस वफ़्द को सिखाया कि वे हुज़ूर सल्ल० को सलाम कैसे करें, लेकिन उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को जाहिलियत के तरीक़े पर ही सलाम किया। जब ये लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे तो उनके लिए मस्जिद में ख़ेमा लगाया गया।

हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल० के और उस वफ़्द के दर्मियान वास्ता थे। जब वह इस वफ़्द के लिए हुज़ूर सल्ल० के यहां से खाना लेकर आते, तो जब तक उनसे पहले हज़रत ख़ालिद इस खाने में से खा न लेते, वे इस खाने को हाथ न लगाते।

हज़रत ख़ालिद ने ही हुज़ूर सल्ल० की ओर से उनके लिए ख़त लिखा था। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के सामने अपनी यह शर्त भी रखी थी कि हुज़ूर सल्ल० तीन साल तक ताग़िया बुत (यानी लात) को रहने दें। फिर वे एक-एक साल कम करते रहे, लेकिन हुज़ूर सल्ल० बराबर इंकार करते रहे, यहां तक कि उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से एक माह की मोहलत मांगी कि जिस दिन वे लोग मदीना आए हैं, उस दिन से एक महीने तक उस बुत के बाक़ी रखने की इजाज़त दे दी जाए और उन्होंने उस मोहलत का मक़सद यह बताया कि वह इस तरह अपनी क़ौम के नादान लोगों को ज़रा मानूस करना चाहते हैं, लेकिन आपने किसी क़िस्म की मोहलत देने से इंकार कर दिया, बल्कि हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा को उन लोगो के साथ भेजा कि ये दोनों वहां जाकर उस बुत को गिरा कर आएं और उन्होंने यह मांग भी की थी कि वे नमाज़ नहीं पढ़ा करेंगे और अपने हाथों से अपने बुतों को नहीं गिराएंगे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस बात को तो हम मान लेते हैं कि तुम अपने हाथ से अपने बुतों को न तोड़ो। (हम अपने आदमी भेजकर तोड़वा देंगे) लेकिन तुम नमाज़ न पढ़ो, यह बात नहीं मान सकते, क्योंकि उस दीन में कोई ख़ैर नहीं, जिसमें नमाज़ न हो।

उन्होंने कहा, अच्छा, हम नमाज़ पढ़ लेंगे, है तो यह घटिया अमल।

हज़रत उस्मान बिन अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सक़ीफ़ का वफ़्द हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया। आपने उनको मस्जिद में ठहराया, ताकि उनके दिल पर ज़्यादा असर पड़े।

उन्होंने इस्लाम लाने के लिए हुज़ूर सल्ल० के सामने ये शर्तें पेश कीं कि जिहाद में जाने के लिए उनको कहीं जमा नहीं किया जाएगा और उनकी पैदावार का उश्र नहीं लिया जाएगा और वे नमाज़ नहीं पढ़ेंगे और उनका अमीर किसी और क़बीले का नहीं बनाया जाएगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (तीन शर्तें तो मंज़ूर हैं कि) तुम्हें जिहाद में जाने के लिए नहीं कहा जाएगा और तुमसे पैदावार का उश्र नहीं लिया जाएगा, दूसरे क़बीले का आदमी तुम पर अमीर नहीं बनाया जाएगा, (अलबत्ता नमाज़ पढ़नी पड़ेगी, क्योंकि) उस दीन में कोई ख़ैर नहीं है जिसमें रुकूअ न हो।

हज़रत उस्मान बिन अबिल आस ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे क़ुरआन सिखा दें और मुझे मेरी क़ौम का इमाम बना दें।[1]

हज़रत वह्ब कहते हैं कि मैंने जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से बनू सक़ीफ़ की बैअत के क़िस्से के बारे में पूछा, उन्होंने कहा कि बनू सक़ीफ़ ने हुज़ूर सल्ल० के सामने ये शर्तें पेश कीं कि न वे सदक़ा (ज़कात) देंगे और न वे जिहाद करेंगे। (हुज़ूर सल्ल० ने इन शर्तों को मान लिया)

और हज़रत जाबिर रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को बाद में यह फ़रमाते हुए सुना कि जब ये लोग मुसलमान हो जाएंगे, तो ख़ुद ही ये सदक़ा

1. अहमद, अबू दाऊद,

(ज़कात) देने लग जाएंगे, और जिहाद करने लग जाएंगे।[1]

हज़रत औस बिन हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम सक़ीफ़ के वफ़्द में शरीक होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए। बनी अह्लाफ़ के लोग हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा के पास ठहरे और बनी मालिक को हुज़ूर सल्ल० ने अपने ख़ेमे में ठहराया।

आप हर दिन इशा के बाद हमारे पास तशरीफ़ लाते और खड़े-खड़े हमसे बातें करते और इतनी देर खड़े रहते कि आप थक जाते और बारी-बारी से दोनों पांवों पर आराम लेते। ज़्यादातर आप उन तक्लीफ़ों का ज़िक्र करते, जो आपको अपनी क़ौम क़ुरैश की तरफ़ से पेश आई थीं, और इसके बाद फ़रमाया करते थे, मुझे इन तक्लीफ़ों का कोई ग़म नहीं है, क्योंकि उस वक़्त हमें मक्का में कमज़ोर और बे-सर व सामान समझा जाता था। जब हम मदीना आ गए तो हमारी उनकी लड़ाइयां शुरू हो गईं। कभी अल्लाह उनको ग़लबा देता और कभी हम को।

एक रात तैशुदा वक़्त से आपको आने में कुछ देर हुई। हम लोगों ने कहा, आज रात तो आपने देर कर दी।

आपने फ़रमाया, हर दिन जितना कुरआन मैं पढ़ता हूं, उसमें से कुछ रह गया था, उसे पूरा किए बग़ैर आना मुझे अच्छा न लगा।[2]

---

1. अबू दाऊद, बिदाया, भाग 5, पृ० 29
2. अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माजा, बिदाया, भाग 5, पृ० 32, इब्ने साद 5, पृ० 510

सहाबा किराम रज़ि० का लोगों को अलग-अलग अपने तौर पर दावत देना

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का इंफ़िरादी दावत देना

इब्ने इस्हाक़ ने बयान किया है कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम लाए और उन्होंने अपने इस्लाम का इज़्हार किया, तो वह अल्लाह अज़्ज़-ज़ व जल-ल की तरफ़ दावत देने लग गए।

हज़रत अबूबक्र से उनकी क़ौम को बड़ी उलफ़त और मुहब्बत थी, वह नर्म मिज़ाज़ थे और क़ुरैश के नसबनामे को और उनके अच्छे-बुरे हालात को सबसे ज़्यादा जानने वाले थे, बड़े बा-अख़्लाक़ और भले और नेक ताजिर थे। उनकी क़ौम के लोग उनके पास आया करते थे। आपकी भारी मालूमात और कारोबारी तजुर्बे और हुस्ने सुलूक जैसे बहुत से मामलों की वजह से वे लोग आपसे मुहब्बत रखते थे। जो लोग आपके पास आया करते और आपकी मज्लिस में बैठा करते और आपको उन पर भरोसा था, उन्हें आप अल्लाह की ओर और इस्लाम की ओर दावत देने लगे।

चुनांचे मेरी जानकारी के मुताबिक़ हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम और हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुम उन्हीं के हाथों मुसलमान हुए।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० के साथ ये सब लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए। आपने उनके सामने इस्लाम को पेश फ़रमाया और उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया और उन्हें इस्लाम के हुक़ूक़ बताए। वे सब ईमान ले आए। इस्लाम में पहल करने वाले इन आठ आदमियों ने हुज़ूर सल्ल० की तस्दीक़ की और जो कुछ अल्लाह के पास से आया, उस पर ईमान ले आए।[1]

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 29

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का इंफ़िरादी दावत देना

अस्बक़ कहते हैं कि मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का गुलाम था और मैं ईसाई था। आप मेरे सामने इस्लाम को पेश करते रहते थे और फ़रमाते थे कि अगर तू मुसलमान हो जाएगा तो मैं अपनी अमानत के संभालने में तुझसे मदद ले सकूंगा, क्योंकि जब तक मुसलमानों के दीन को अख़्तियार नहीं करोगे, उस वक़्त तक मुसलमानों की अमानत को संभालने के लिए तुमसे मदद लेना मेरे लिए हलाल नहीं है। मैं हमेशा इंकार करता रहा। आप फ़रमा देते, दीन में जब्र नहीं है। जब आपके इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब आया, तो मैं ईसाई ही था। आपने मुझे आज़ाद कर दिया और फ़रमाया, जहां तेरा जी चाहे, चला जा। (हज़रत अस्बक़ बाद में मुसलमान हो गए थे।)[1]

हज़रत अस्लम कहते हैं कि जब हम लोग शाम देश में थे, तो मैं वुज़ू का पानी लेकर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने पूछा, तुम यह पानी कहां से लाए हो? मैंने ऐसा मीठा पानी कभी नहीं देखा और बारिश का पानी भी इससे बेहतर नहीं होगा।

मैंने कहा, मैं उस ईसाई बुढ़िया के घर से लाया हूं।

वुज़ू से फ़ारिग़ होकर आप उस बुढ़िया के पास गए और उससे कहा, ऐ बड़ी बी! इस्लाम ले आओ। अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हक़ देकर भेजा है, उसने अपना सर खोल कर दिखाया तो सग़ामा बूटी (के फूलों) की तरह उसके बाल बिल्कुल सफ़ेद थे और उसने कहा, मैं बहुत बूढ़ी हो चुकी हूं और बस अब मरने ही वाली हूं (यानी अब इस्लाम लाने का वक़्त नहीं रहा)।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना।[2]

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 50, हुलीया भाग 9, पृ० 34
2. कंज़, भाग 5, पृ० 1

हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० का इंफ़िरादी दावत देना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़्म और दूसरे लोग कहते हैं कि हज़रत अस्अद बिन ज़ुरारह रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु को बनू अब्दुल अशहल और बनू ज़फ़र के मुहल्लों में ले गए। हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० हज़रत असअद बिन ज़ुरारह के ख़लेरे भाई थे। हज़रत असअद हज़रत मुसअब को बनू ज़फ़र के एक बाग़ में मरक़ नामी कुंए पर ले गए। ये दोनों बाग़ में जाकर बैठ गए। सारे मुसलमान मर्द उनके पास जमा हो गए।

हज़रत साद बिन मुआज़ और हज़रत उसैद बिन हुज़ैर दोनों उस वक़्त अपनी क़ौम बनू अब्दुल अश्हल के सरदार थे और दोनों मुश्रिक थे और अपनी क़ौम के मज़हब पर क़ायम थे।

इन दोनों ने जब हज़रत मुसअब और हज़रत असअद के बाग़ में मज्लिस लगाने की ख़बर सुनी, तो हज़रत साद ने हज़रत उसैद से कहा, तेरा बाप न रहे। तुम उन दोनों आदमियों के पास जाओ, जिन्होंने हमारे मुहल्लों में आकर हमारे कमज़ोरों को बेवक़ूफ़ बनाना शुरू कर दिया है। उन्हें डांटो और उन्हें हमारे मुहल्लों में आने से रोक दो। अगर असअद बिन ज़ुरारह का मुझसे क़रीबी रिश्ता न होता, जैसा कि तुम्हें मालूम है, तो यह काम मैं ख़ुद ही कर लेता, तुम्हें न भेजता। वह मेरा ख़लेरा भाई है, उसके पास जाने की मुझमें हिम्मत नहीं। चुनांचे हज़रत उसैद बिन हुज़ैर अपना नेज़ा लेकर उन दोनों के पास गए।

जब हज़रत असअद बिन ज़ुरारह ने हज़रत उसैद को आते हुए देखा, तो उन्होंने हज़रत मुसअब से कहा, वह अपनी क़ौम का सरदार है और तुम्हारे पास आ रहा है, तुम इनके साथ इख़्लास से बात करो और जितना ज़ोर लगा सकते हो, लगा दो।

हज़रत मुसअब रज़ि० ने कहा, अगर यह बैठ गए, तो मैं इनसे बात करूंगा।

चुनांचे उसैद बिन हुज़ैर खड़े होकर इन दोनों को गालियां देने लगे

और यों कहा, तुम हमारे पास किस लिए आए हो? हमारे कमज़ोरों को बेवक़ूफ़ बनाना चाहते हो, अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी है, तो तुम दोनों हमारे यहां से चले जाओ।

उनसे हज़रत मुस्अब ने कहा, ज़रा बैठ जाओ, कुछ हमारी भी तो सुन लो। अगर हमारी बात तुम्हें पसन्द आ जाए, तो तुम मान लेना और अगर पसन्द न आए, तो हम आपकी नापसंदीदा बात से रुक जाएंगे।

उसैद ने कहा, तुमने इंसाफ़ की बात कही है। चुनांचे अपना नेज़ा ज़मीन में गाड़ कर उन दोनों के पास बैठ गए। हज़रत मुसअब रज़ि० ने उनसे इस्लाम के बारे में बातें कीं और उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया।

ये दोनों हज़रात फ़रमाते हैं कि उनके बोलने से पहले ही क़ुरआन सुनते ही उनके चेहरे की चमक और नर्मी से हमें यह महसूस हो गया कि यह इस्लाम क़ुबूल कर लेंगे, चुनांचे उन्होंने कहा कि यह दीन इस्लाम कितना अच्छा और कितना सुन्दर है। जब तुम इस दीन में दाख़िल होना चाहते हो, तो क्या करते हो?

इन दोनों ने उनसे कहा, ग़ुस्ल करके पाक हो जाओ और अपने दोनों कपड़ों को पाक करो, फिर कलिमा शहादत पढ़ो और फिर नमाज़ पढ़ो।

चुनांचे उन्होंने खड़े होकर ग़ुस्ल किया और अपने दोनों कपड़े पाक किए और कलिमा शहादत पढ़ा और फिर खड़े होकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, फिर उन दोनों से कहा कि मेरे पीछे एक आदमी है, अगर उसने तुम दोनों का कहा मान लिया, तो उसकी क़ौम का कोई आदमी भी उससे पीछे न रहेगा और मैं अभी उसे तुम्हारे पास भेजता हूं और वह साद बिन मुआज़ हैं।

फिर वह अपना नेज़ा लेकर साद और उनकी क़ौम के पास वापस गए। वे लोग अपनी मज्लिस में बैठे हुए थे। जब साद बिन मुआज़ ने उनको आते हुए देखा, तो उन्होंने कहा, मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं उसैद के चेहरे को पहले के मुक़ाबले में बदला हुआ पाता हूं, (क्योंकि उस पर अब इस्लाम का नूर चमक रहा है।)

जब हज़रत उसैद मज्लिस में जा खड़े हुए तो उनसे साद ने पूछा, क्या करके आए हो?

उन्होंने कहा, मैंने उन दोनों से बात की है, अल्लाह की क़सम ! मुझे उन दोनों की बातों में कोई ख़तरा नज़र नहीं आया और मैंने उन दोनों को रोक दिया है।

उन्होंने कहा, तुम जैसे कहोगे, हम वैसे करेंगे। मुझे पता चला है कि बनू हारिसा हज़रत असअद बिन ज़ुरारह को क़त्ल करने गए हैं, क्योंकि उन्हें पता है, वह तुम्हारा ख़लेरा भाई है, इस तरह वे तुम्हारी तौहीन करना चाहते हैं।

यह सुनकर साद बिन मुआज़ आग बगोला हो गए। वह बड़ी तेज़ी से चले, उन्हें डर था कि बनू हारिसा कहीं कुछ कर न गुज़रें और नेज़ा हाथ में लेकर चल पड़े और यों कहा, अरे, तुमने तो कुछ भी न किया।

हज़रत साद ने वहां जाकर देखा कि वे दोनों इत्मीनान से बैठे हुए हैं, समझ गए कि हज़रत उसैद ने यह बात इसलिए कही थी, ताकि मैं भी उन दोनों की बातें सुन लूं। उन्होंने भी खड़े होकर उन दोनों को गालियां देना शुरू कीं और फिर हज़रत अस्अद बिन ज़ुरारा से कहा, अल्लाह की क़सम ! ऐ अबू उमामा ! अगर मेरे और तुम्हारे दर्मियान रिश्तेदारी न होती, तो तुम इस तरह करने को सोच भी न सकते। तुम हमारे मुहल्ले में वह चीज़ लाना चाहते हो, जिसे हम बुरा समझते हैं।

उनको आता हुआ देखकर हज़रत अस्अद ने हज़रत मुसअब से कह दिया था कि आपके पास ऐसा बड़ा सरदार आ रहा है, जिसके पीछे ऐसी मानने वाली क़ौम है, कि अगर उन्होंने आपका कहा मान लिया, तो उनकी क़ौम में दो आदमी भी आपका कहा मानने से पीछे नहीं रहेंगे।

हज़रत मुस्अब ने हज़रत साद बिन मुआज़ से कहा, ज़रा बैठ जाओ, कुछ हमारी भी तो सुन लो। अगर हमारी बात पसन्द आ जाए और दिल चाहे तो मान लेना और अगर पसन्द न आए, तो हम आपकी नापसन्दीदा बात को छोड़ देंगे।

हज़रत साद ने कहा, आपने इंसाफ़ की बात कही है, फिर नेज़ा गाड़ कर बैठ गए।

हज़रत मुसअब ने उन पर इस्लाम पेश किया और उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया।

मूसा बिन उक़्बा का बयान है कि उन्होंने सूर: ज़ुख़रुफ़ की शुरू की आयतें सुनाई थीं।

ये दोनों हज़रात बयान फ़रमाते हैं कि उनके बोलने से पहले ही क़ुरआन सुनते ही उनके चेहरे की चमक और नर्मी से हमें यह महसूस हो गया कि यह इस्लाम क़ुबूल कर लेंगे।

चुनांचे उन्होंने इन दोनों से पूछा, कि जब तुम मुसलमान होकर इस दीन में दाख़िल हुआ करते हो, तो क्या किया करते हो?

उन्होंने कहा, ग़ुस्ल करके पाक हो जाओ और अपने दोनों कपड़ों को पाक कर लो। फिर कलिमा शहादत पढ़ो, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़ो।

चुनांचे उन्होंने खड़े होकर ग़ुस्ल किया, अपने दोनों कपड़ों को पाक किया और कलिमा शहादत पढ़ा, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, फिर अपना नेज़ा लेकर अपनी क़ौम की मज्लिस की ओर वापस गए और उनके साथ हज़रत उसैद बिन हुज़ैर भी थे।

जब उनकी क़ौम ने उनको आते हुए देखा, तो उन्होंने कहा, हम अल्लाह की क़सम खाकर कहते हैं कि वापसी में हज़रत साद का चेहरा बदला हुआ है, (अब उस पर इस्लाम का नूर चमक रहा है।)

उन्होंने अपनी क़ौम के पास खड़े होकर कहा, ऐ बनू अब्दुल अश्हल! तुम मुझे अपने में कैसा समझते हो?

उन्होंने कहा; आप हमारे सरदार हैं। हम में सबसे अच्छी राय वाले और सबसे अच्छी तबियत के मालिक हैं।

उन्होंने कहा, तुम्हारे मर्दों और औरतों से बात करना मुझ पर हराम है, जब तक तुम लोग अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान न ले आओ।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि शाम तक बनू अब्दुल अश्हल के

तमाम मर्द और औरतें मुसलमान हो चुकी थीं और हज़रत साद और हज़रत मुसअब दोनों हज़रत असअद बिन ज़ुरारह के घर आ गए और उनके यहां ठहर कर दोनों इस्लाम की दावत देते रहे, यहां तक कि अंसार के हर मुहल्ले में कुछ न कुछ मर्द और औरतें मुसलमान ज़रूर हो गईं, लेकिन बनू उमैया बिन ज़ैद, ख़तमा, वाइल और वाक़िफ़ के मुहल्लों में कोई मुसलमान न हुआ। ये औस क़बीले के अलग-अलग ख़ानदान हैं।[1]

तबरानी ने और दलाइलुन्नुबूव: में अबू नुऐम ने हज़रत उर्व: से एक लंबी रिवायत ज़िक्र की है, जिसमें यह मज़्मून भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अंसार के सामने इस्लाम की दावत पेश की और वे ईमान लाए, जैसा कि आगे आ रहा है।

फिर अंसार का अपनी क़ौम को छिप कर दावत देना और अंसार का हुज़ूर सल्ल० से ऐसे आदमी के भेजने की मांग करना, जो लोगों को दावत दे, यह सब उस रिवायत में मौजूद है।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने अंसार के पास हज़रत मुसअब को भेजा, जिसका ज़िक्र हुज़ूर सल्ल० के लोगों को अल्लाह और रसूल सल्ल० की तरफ़ दावत देने के लिए भेजने के बाब में आ चुका है। फिर हज़रत उर्व: ने कहा कि असअद बिन ज़ुरारह और हज़रत मुस्अब बिन उमैर दोनों बेरे मरक़ (कुंएं) या उसके क़रीब के इलाक़े में आए और वहां आकर बैठ गए। उस ज़मीन वालों को पैग़ाम भेजकर बुलवाया। वे छुपकर उनके पास आए। हज़रत मुसअब बिन उमैर उन लोगों से बातें करते रहे और क़ुरआन पढ़कर सुनाते रहे।

इधर साद बिन मुआज़ को इसकी ख़बर लगी। वह अपने हथियार बांध कर और नेज़ा लेकर उनके पास आए और खड़े होकर कहने लगे, तुम हमारे यहां इस अकेले आदमी को क्यों लाए हो जो कि तंहा, और धुत्कारा हुआ और परदेसी है? और वह ग़लत-ग़लत कहकर हमारे कमज़ोरों को बहकाता है और उन्हें अपनी दावत देता है। तुम दोनों

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 152

आज के बाद पड़ोस में भी कहीं नज़र न आना।

यह सुनकर ये लोग वापस चले गए, फिर दोबारा ये लोग बेरे मरक़ (कुंएं) या उसके आस-पास आकर बैठ गए।

हज़रत साद बिन मुआज़ को इसकी दोबारा ख़बर मिली, तो उन्होंने आकर इन दोनों को पहले से कम सख़्त लहजे में धमकाया।

जब हज़रत असअद ने उनमें कुछ नर्मी महसूस की, तो कहा, ऐ मेरे ख़लेरे भाई ! इनकी ज़रा बात सुन लो। अगर इनसे कोई बुरी बात सुनने में आए, तो उसे रद्द करके तुम उससे अच्छी बात बता देना और अगर अच्छी बात सुनो तो अल्लाह की बात मान लेना।

हज़रत साद ने कहा, यह क्या कहते हैं?

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० ने—

حٰمٓ ۚ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۚ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۚ

पढ़कर सुनाई।

हज़रत साद ने कहा, मैं तो जानी-पहचानी बातें ही सुन रहा हूं। अल्लाह ने उनको हिदायत से नवाज़ दिया। लेकिन उन्होंने अपने इस्लाम को अपनी क़ौम के पास जाकर ज़ाहिर किया और अपनी क़ौम बनू अब्दुल अशहल को इस्लाम की दावत दी और यह भी कहा कि अगर किसी बड़े या छोटे को, किसी मर्द या औरत को इस्लाम के बारे में शक हो तो, हमें उससे ज़्यादा बेहतर दीन बता दे, हम उसे क़ुबूल कर लेंगें। अल्लाह की क़सम ! अब तो ऐसी बात खुलकर सामने आ गई है जिसकी वजह से गरदनें कटवाई जा सकती हैं।

चुनांचे हज़रत साद के मुसलमान होने और उनके दावत देने पर क़बीला बनू अब्दुल अशहल सारा ही मुसलमान हो गया, बस उंगलियों पर गिने जाने वाले कुछ लोग ही ईमान न लाए। चुनांचे यह अंसार का पहला मुहल्ला था जो सारे का सरा मुसलमान हो गया।

आगे इसी तरह हदीस ज़िक्र की है जैसे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लोगों को अल्लाह और रसूल की ओर दावत देने के लिए भेजने के बाब में गुज़र चुकी है और उसके आख़िर में यह है

कि फिर हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में मक्का वापस चले गए।

हज़रत तुलैब बिन उमैर रज़ि० का इंफ़िरादी दावत देना

हज़रत मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन हारिस तैमी कहते हैं कि जब हज़रत तुलैब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमान हुए और अपनी मां अरवा बिन्त अब्दुल मुत्तलिब के पास गए और उनसे कहा, मैं मुसलमान हो चुका हूं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी कर चुका हूं और पूरा क़िस्सा बयान किया और उसमें यह भी है कि उन्होंने अपनी मां से कहा कि इस्लाम लाने में और हुज़ूर सल्ल० की पैरवी करने में आपके लिए कौन सी चीज़ रुकावट है? आपके भाई हज़रत हमज़ा रज़ि० भी मुसलमान हो चुके हैं।

उन्होंने कहा कि मैं इस इन्तिज़ार में हूं कि मेरी बहनें क्या करती हैं? मैं भी उन्हीं का साथ दूंगी।

हज़रत तुलैब रज़ि० कहते हैं, मैंने कहा, मैं अल्लाह का वास्ता देकर आपसे दरख़्वास्त करता हूं कि आप ज़रूर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाएं और उनको सलाम करें और उनकी तस्दीक़ करें और इस बात की गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है। (उन पर ऐसा असर पड़ा कि उसी वक़्त) उन्होंने कलिमा शहादत

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदर रसूलुल्लाह०' पढ़ लिया।

इसके बाद वह अपनी ज़ुबान से हुज़ूर सल्ल० की बहुत मदद किया करती थीं और अपने बेटे को हुज़ूर सल्ल० की मदद करने और आपके काम को लेकर खड़े हो जाने पर उभारती रहती थीं।[1]

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान कहते हैं कि हज़रत तुलैब बिन उमैर रज़ि० दारे अरक़म में मुसलमान हुए, फिर वहां से निकलकर

1. इस्तीआब, भाग 4, पृ० 225, इसाबा, भाग 4, पृ० 227

अपनी मां अरवा बिन्त अब्दुल मुत्तलिब के पास आए और उनसे कहा, मैं मुहम्मद (सल्ल०) की पैरवी कर चुका हूं और अल्लाह का फ़रमांबरदार हो चुका हूं।

उनकी वालिदा (मां) ने कहा, तुम्हारी मदद के सबसे ज़्यादा हक़दार तुम्हारे मामूज़ाद भाई ही हैं। अल्लाह की क़सम ! अगर हम औरतों में मर्दों जैसी ताक़त होती तो हम भी आपकी पैरवी करतीं और आपकी ओर से पूरा बचाव करतीं।

हज़रत तुलैब रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने अपनी मां से कहा, ऐ अम्मा जान ! आपको कौन सी चीज़ इस्लाम से रोक रही है? आगे वैसी ही हदीस ज़िक्र की, जैसी पहली गुज़र चुकी है।[1]

हज़रत उमैर बिन वह्ब जुमही रज़ि० का इंफ़िरादी दावत देना और उनके इस्लाम लाने का वाक़िआ

हज़रत उर्व: बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि ग़ज़वा बद्र में हार जाने की परेशानी के कुछ दिनों बाद उमैर बिन वह्ब जुमही सफ़वान बिन उमैया के साथ हतीम में बैठा था। उमैर बिन वह्ब क़ुरैश के शैतानों में से बड़ा शैतान था और हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा रज़ि० को बहुत तक्लीफ़ दिया करता था और मक्का में मुसलमानों ने उसकी ओर से बड़ी तक्लीफ़ें बरदाश्त कीं और उसका बेटा वह्ब बिन उमैर बद्र में मुसलमानों के हाथों गिरफ़्तार होने वालों में था।

उमैर बिन वह्ब ने बद्र के क़ुलैब का ज़िक्र किया, यानी जिस कुंएं में सत्तर काफ़िरों को क़त्ल करके डाला गया था और दूसरी मुसीबतों का भी ज़िक्र किया, तो सफ़वान ने कहा, अल्लाह की क़सम ! उन लोगों के बाद तो अब ज़िंदगी में कोई मज़ा नहीं रहा।

उमैर ने कहा, तुम सच कहते हो, अल्लाह की क़सम ! अगर मुझ पर क़र्ज़ा न होता, जिसको अदा करने का अभी मेरे पास कोई इन्तिज़ाम नहीं

1. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 239, तबक़ात, भाग 3, पृ० 123, हाकिम, भाग 3, पृ० 239, इसाबा, भाग 2, पृ० 234

है और अपने पीछे बाल-बच्चों के तबाह होने का ख़तरा न होता, तो मैं अभी सवार होकर मुहम्मद के पास जाता और (नऊज़ुबिल्लाह) उनको ख़त्म कर देता, क्योंकि मेरे लिए उनके पास जाने का एक बहाना है और वह यह कि मेरा बेटा उनके हाथों में क़ैद है।

सफ़वान बिन उमैया ने इस मौक़े को ग़नीमत समझा और कहा, तुम्हारा क़र्ज़ा मेरे ज़िम्मे है, मैं उसे तुम्हारी तरफ़ से अदा कर दूंगा। तुम्हारे बाल-बच्चे मेरे बाल-बच्चों के साथ रहेंगे और जब तक वे ज़िंदा रहे, मैं अपनी उसअत के मुताबिक़ उनका पूरा ख़्याल रखूंगा।

उमैर ने कहा, मेरी और अपनी ये बातें राज़ में रखना।

सफ़वान ने कहा, ऐसा ही करूंगा।

उमैर के कहने पर तलवार तेज़ कर दी गई और ज़हर में बुझा दी गई। फिर वहां से चलकर मदीना पहुंचे।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब मुसलमानों की एक जमाअत में बैठे हुए बद्र की लड़ाई के हालात का ज़िक्र कर रहे थे और मुसलमानों को अल्लाह ने जो ज़ाहिर के ख़िलाफ़ फ़त्ह से नवाज़ा और दुश्मनों को खुली हार हुई, उसका ज़िक्र कर रहे थे। इतने में हज़रत उमर रज़ि० की निगाह उमैर बिन वह्ब पर पड़ी, जो गले में तलवार लटकाए हुए मस्जिद के दरवाज़े पर अपनी सवारी बिठा चुके थे।

हज़रत उमर ने कहा, यह कुत्ता, अल्लाह का दुश्मन उमैर बिन वह्ब बुरी नीयत ही से आया है। इसी ने हमारे बीच फ़साद बरपा किया था और बद्र के दिन हमारा अन्दाज़ा लगाकर अपनी क़ौम को बताया था।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० फ़ौरन हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! यह अल्लाह का दुश्मन उमैर बिन वह्ब अपने गले में तलवार लटकाए हुए आया है।

आपने फ़रमाया, इसे मेरे पास ले आओ।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० गए और उमैर की तलवार के परतले को उसके गरेबान समेत पकड़कर खींचा और अपने साथ के अंसार से कहा, तुम जाकर हुज़ूर सल्ल० के पास बैठ जाओ और इस ख़बीस से

होशियार रहना, इसका कोई एतबार नहीं।

फिर हज़रत उमर रज़ि० उसे लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। जब हुज़ूर सल्ल० ने देखा कि हज़रत उमर ने उसे परतले और गरेबान से पकड़ रखा है तो फ़रमाया, ऐ उमर! इसे छोड़ दो और ऐ उमैर! क़रीब आ जाओ।

उमैर ने क़रीब आकर कहा, सुबह बख़ैर (जाहिलियत वाले आपस में यों ही सलाम किया करते थे।)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ उमैर! अल्लाह ने हमें तुम्हारे इस सलाम से बेहतर सलाम से नवाज़ा है और वह है 'अस्सलामु अलैकुम' जो कि जन्नतियों का आपस में सलाम होगा।

उमैर ने कहा, अल्लाह की क़सम! ऐ मुहम्मद! मेरे लिए तो यह नई बात है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उमैर! तुम क्यों आए हो?

उसने कहा, मैं इस क़ैदी की वजह से आया हूं जो आपके हाथों में क़ैद है। आप इस पर एहसान करें।

आपने फ़रमाया, तो फिर गले में तलवार लटकाने का क्या मक़सद है?

उमैर ने कहा, अल्लाह इन तलवारों का बुरा करे, क्या ये तलवारें हमारे कुछ काम आईं?

आपने फ़रमाया, मुझे सच बताओ, क्यों आए हो?

उमैर ने कहा, मैं तो सिर्फ़ इसी लिए आया हूं।

आपने फ़रमाया, नहीं, बल्कि तुम और सफ़वान बिन उमैया हतीम में बैठे थे। तुमने कुरैश के उन लोगों का ज़िक्र किया था जिनको मारकर बद्र के कुंएं में फेंका गया था, फिर तुमने कहा था, अगर मुझ पर क़र्ज़ा और बाल-बच्चों की ज़िम्मेदारी का बोझ न होता, तो मैं जाकर (नऊज़ुबिल्लाह) मुहम्मद को क़त्ल कर आता। फिर सफ़वान बिन उमैया ने तुम्हारे क़र्ज़े और बाल-बच्चों की ज़िम्मेदारी इस शर्त पर उठाई कि तुम मुझे क़त्ल करोगे, हालांकि अल्लाह तुम्हारे और तुम्हारे इस इरादे के

बीच रोक है।

हज़रत उमैर ने (यह सुनते ही फ़ौरन) कहा, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के रसूल हैं, ऐ अल्लाह के रसूल! आप जो आसमान की ख़बरें और उतरने वाली वह्य इसे बताते थे, हम उसको झुठलाते थे और यह तो एक ऐसा वाक़िआ है जिसमें मेरे और सफ़वान के अलावा और कोई मौजूद न था, अल्लाह की क़सम! मुझे पूरा यक़ीन है कि यह बात आपको अल्लाह ही ने बताई है। लाख-लाख अल्लाह का शुक्र है कि जिसने मुझे इस्लाम की हिदायत से नवाज़ा और मुझे यहां खींच कर लाया। फिर उन्होंने कलिमा शहादत पढ़ा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपने भाई (उमैर) को दीन की बातें सिखाओ और इसे क़ुरआन पढ़ाओ और इसके क़ैदी को छोड़ दो।

चुनांचे सहाबा ने ऐसा ही किया।

फिर हज़रत उमैर रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं अल्लाह के नूर को मिटाने के लिए बहुत कोशिश किया करता था और अल्लाह के दीन वालों को बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ पहुंचाया करता था, मैं यह चाहता हूं कि आप मुझे इजाज़त दें कि मैं मक्का जाकर मक्का वालों को अल्लाह और रसूल की तरफ़ और इस्लाम की तरफ़ दावत दूं। उम्मीद है कि अल्लाह उन्हें हिदायत दे देंगे, वरना मैं उनको उनके दीन की वजह से ऐसे ही तक्लीफ़ें दूंगा, जैसे मैं आपके सहाबा को दीन की वजह से दिया करता था।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनको इजाज़त दे दी और वह मक्का चले गए।

हज़रत उमैर बिन वह्ब के मक्का से रवाना होने के बाद सफ़वान यह कहा करता था, ऐ लोगो! कुछ दिनों के बाद तुम्हें एक ऐसी ख़ुशख़बरी मिलेगी जो तुम्हें बद्र की सारी मुसीबतें भुला देगी।

सफ़वान हज़रत उमैर के बारे में आने वाले सवारों से पूछा करता था, यहां तक कि एक सवार ने आकर उन्हें बताया कि उमैर तो मुसलमान हो चुके हैं। यह सुनकर सफ़वान ने इस बात की क़सम खाई

कि न तो वह कभी उमैर से बात करेगा, और न उसके किसी काम आएगा।[1]

इब्ने जरीर ने हज़रत उर्व: रज़ि० से लम्बी हदीस बयान की है, जिसमें यह मज़्मून भी है कि हज़रत उमैर मक्का वापस आकर इस्लाम की दावत में लग गए और जो उनकी मुख़ालफ़त करता, उसे सख़्त तक्लीफ़ पहुंचाते, चुनांचे उनके हाथों बहुत से लोग मुसलमान हुए।[2]

हज़रत उर्व: बिन ज़ुबैर रज़ि० से मुरसलन रिवायत किया गया है कि जब अल्लाह ने हज़रत उमैर को हिदायत दी तो मुसलमान बहुत ख़ुश हुए और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने फ़रमाया कि जिस दिन उमैर आए थे, उस दिन वह ख़िंज़ीर से भी ज़्यादा बुरे लग रहे थे, आज वह मुझे अपने बेटों से भी ज़्यादा महबूब हैं।[3]

हज़रत अम्र बिन उमैया फ़रमाते हैं कि जब हज़रत उमैर बिन वह्ब रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमान होने के बाद मक्का आए तो सीधे अपने घर गए और सफ़वान बिन उमैया से न मिले और अपने इस्लाम का इज़्हार किया और उसकी दावत देने लग गए।

जब सफ़वान को यह ख़बर पहुंची, तो उसने कहा, मैं तो उसी वक़्त समझ गया था, जब उमैर मेरे पास पहले नहीं आए, बल्कि सीधे अपने घर चले गए कि उमैर जिस मुसीबत से बचना चाहता था, उसी में जा गिरा और बद-दीन हो गया और मैं न कभी उससे बात करूंगा और न कभी उसका और उसके बाल-बच्चों का कोई काम करूंगा।

एक दिन सफ़वान हतीम में था कि इतने में हज़रत उमैर ने उसके पास खड़े होकर उसे आवाज़ दी। सफ़वान ने मुंह फेर लिया, तो उससे हज़रत उमैर ने कहा, तुम हमारे सरदारों में से एक सरदार हो। आप बताओ कि हम जो पत्थरों की इबादत किया करते थे, और उनके नाम पर जो जानवर ज़िब्ह किया करते थे, क्या यह भी कोई दीन है?

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 313
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 81, हैसमी, भाग 8, पृ० 286
3. हैसमी भाग 8, पृ० 287, इसाबा, भाग 3, पृ० 36

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०'

सफ़वान ने उनको कोई जवाब न दिया।[1]

सफ़वान बिन उमैया के इस्लाम लाने के बारे में हज़रत उमैर ने जो कोशिश की, उसका तज़्किरा पीछे गुज़र चुका है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का इंफ़िरादी दावत देना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरी मां मुश्रिका थीं। मैं उनको इस्लाम की दावत दिया करता था। एक दिन मैंने उनको इस्लाम की दावत दी। उन्होंने मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में बड़ी नागवार बातें सुनाईं।

मैं रोता हुआ हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अपनी मां को इस्लाम की दावत दिया करता था, वह इंकार कर दिया करती थीं। आज मैंने उनको दावत दी, तो उन्होंने मुझे आपके बारे में बड़ी नागवार बातें कहीं। आप अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह अबू हुरैरह रज़ि० की मां को हिदायत दे दे।

आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! अबू हुरैरह रज़ि० की मां को हिदायत दे दे।

मैं हुज़ूर सल्ल० की दुआ लेकर ख़ुशी-ख़ुशी घर को चला। वहां पहुंच कर मैंने दरवाज़ा खोलना चाहा, लेकिन वह बन्द था।

मेरी मां ने मेरे क़दमों की आहट सुनकर कहा, अबू हुरैरह ! ज़रा ठहरो।

मैंने पानी गिरने की आवाज़ सुनी (यानी मेरी मां इस्लाम में दाख़िल होने के लिए नहा रही थीं) मेरी मां ने कुरता पहन लिया और जल्दी में दोपट्टा न ओढ़ सकीं और दरवाज़ा खोलकर कहा, ऐ अबू हुरैरह !

---

1. इस्तीआब, भाग 2, पृ० 486

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदर् रसूलुल्लाह०

फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस आकर आपको बताया। आपने अल्लाह का शुक्र अदा किया और दुआ-ए-ख़ैर फ़रमाई।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! जो भी मुसलमान मर्द और औरत मेरा नाम सुनता है, वह मुझसे मुहब्बत करने लग जाता है।

रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने अर्ज़ किया, आपको इसका कैसे पता चलता है? तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने कहा, मैं अपनी मां को दावत दिया करता था और फिर पिछले मज़्मून जैसा क़िस्सा ज़िक्र किया और उसके आख़िर में यह बढ़ा हुआ भी है कि मैं दौड़ता हुआ हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया और अब मैं ख़ुशी से रो रहा था, जैसे कि पहले मैं ग़म से रो रहा था।

मैंने कहा; ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपको ख़ुशख़बरी हो। अल्लाह ने आपकी दुआ को क़ुबूल फ़रमा लिया और अल्लाह ने अबू हुरैरह रज़ि० की मां को इस्लाम की हिदायत दे दी।

फिर मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह मेरी और मेरी मां की मुहब्बत तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के दिल में और हर मोमिन मर्द और औरत के दिल में डाल दे।

चुनांचे आपने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! अपने इस छोटे-से बन्दे और इसकी मां की मुहब्बत हर मोमिन मर्द और औरत के दिल में डाल दे। चुनांचे जो भी मुसलमान मर्द और औरत मेरा नाम सुनता है, वह मुझसे मुहब्बत करने लग जाता है।[2]

---

1. मुस्लिम, अहमद, इसाबा, भाग 4, पृ० 241
2. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 328

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा का इंफ़िरादी दावत देना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम लाने से पहले (मेरी मां) हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा को निकाह का पैग़ाम दिया।

उन्होंने कहा, ऐ अबू तलहा ! क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम जिस ख़ुदा की इबादत करते हो, वह तो ज़मीन से उगने वाला पेड़ है?

उन्होंने कहा, हां।

उम्मे सुलैम ने कहा, पेड़ की इबादत करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती। अगर तुम मुसलमान हो जाओ, तो मैं तुमसे इस्लाम के अलावा किसी क़िस्म के मह्र की मांग नहीं करूंगी।

उन्होंने कहा, अच्छा मैं ज़रा सोच लूं और चले गए और थोड़ी देर के बाद आकर कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदर रसूलुल्लाह० पढ़ लिया तो हज़रत उम्मे सुलैम ने कहा, ऐ अनस ! मेरा निकाह अबू तलहा से कर दो, चुनांचे हज़रत अनस ने उनका निकाह करवा दिया।[1]

---

1. अहमद, इब्ने साद, इसाबा भाग 4, पृ० 46।

सहाबा किराम का अलग-अलग क़बीलों और अरब की क़ौमों को दावत देना

हज़रत ज़िमाम बिन सालबा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़बीला बनू साद बिन बक्र को दावत देना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि क़बीला बनू साद बिन बक्र ने हज़रत ज़िमाम बिन सालबा रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना नुमाइन्दा बनाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भेजा। उन्होंने मदीना पहुंचकर मस्जिद के दरवाज़े पर अपना ऊंट बिठाया और उसकी टांगों में रस्सी बांधी, फिर मस्जिद में दाख़िल हुए, उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा के साथ बैठे हुए थे।

हज़रत ज़िमाम बड़े मज़बूत और ज़्यादा बालों वाले आदमी थे। उनके सर पर दो बालों वाली ज़ुल्फ़ें (लटें) थीं। आकर हुज़ूर सल्ल० और सहाबा के सामने खड़े हो गए और पूछा, आप लोगों में से कौन इब्ने अब्दुल मुत्तलिब है?

आपने फ़रमाया, मैं इब्ने अब्दुल मुत्तलिब हूं।

उन्होंने कहा, क्या आप मुहम्मद हैं?

आपने फ़रमाया, जी हां।

उन्होंने कहा, ऐ इब्ने अब्दुल मुत्तलिब! मैं आपसे कुछ पूछूंगा और इस पूछने में ज़रा सख़्ती करूंगा। आप नाराज़ न होना।

आपने फ़रमाया, नहीं, मैं नाराज़ नहीं हूंगा, तुम जो चाहो, पूछो।

उन्होंने कहा कि मैं आपको उस अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूं, जो आपका भी माबूद है और आपसे से पहले वालों और बाद वालों का भी माबूद है। क्या अल्लाह ने आपको हमारी ओर रसूल बनाकर भेजा है?

आपने फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम! यही बात है।

फिर उन्होंने कहा, मैं आपको उस अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूं

जो आपका भी माबूद है और आपसे पहले वालों और बाद वालों का भी माबूद है, क्या अल्लाह ने आपको इस बात का हुक्म दिया है कि आप हमें इस बात का हुक्म दें कि हम सिर्फ़ उसकी इबादत करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराएं और उनके बुतों को छोड़ दें जिनकी हमारे बाप-दादा इबादत किया करते थे ?

आपने फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम ! यही बात है।

फिर उन्होंने कहा, मैं आपको अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूं, जो आप का भी माबूद है और आपसे पहले वालों और बाद वालों का भी माबूद है, क्या अल्लाह ने आपको इस बात का हुक्म दिया है कि हम ये पांच नमाज़ें पढ़ें ?

आपने फ़रमाया, जी हां।

फिर वह ज़कात, रोज़े, हज और इस्लाम के दूसरे फ़र्ज़ों के बारे में पूछते गए, और हर बार अल्लाह का वास्ता देकर पूछते। जब इन सवालों से फ़ारिग़ हो गए, तो कहा—

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदर रसूलुल्लाह०

और मैं उन तमाम फ़र्ज़ों को अदा करूंगा और जिन बातों से आपने रोका है, उनसे मैं बचूंगा और मैं उसमें (अपनी ओर से) कमी या ज़्यादती नहीं करूंगा, फिर अपने ऊंट की ओर वापस जाने के लिए चल पड़े, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर इस दो लटों वाले आदमी ने सच कहा है, तो यह ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा।

चुनांचे उन्होंने अपने ऊंट के पास आकर उसकी रस्सी को खोला और वापस चल दिए। जब वह अपनी क़ौम में वापस पहुंचे, तो सब उनके पास जमा हो गए, तो सबसे पहले उन्होंने यह कहा कि लात और उज़्ज़ा का बुरा हो।

लोगों ने कहा, ऐ ज़िमाम ! ख़ामोश रहो, ऐसा न कहो कि इस तरह कहने से तुम बर्स (सफ़ेद दाग़) या कोढ़ या पागलपन में पड़ जाओगे।

उन्होंने कहा, तुम्हारा नाश हो, यह लात और उज़्ज़ा, अल्लाह की क़सम ! न नुक़्सान पहुंचा सकते हैं और न नफ़ा। अल्लाह ने अपना रसूल भेजा है और उन पर एक किताब उतारी है और अल्लाह ने तुमको इस किताब के ज़रिए उस शिर्क से निकाल दिया है जिसमें तुम पड़े हुए थे और फिर कलिमा-शहादत पढ़कर सुनाया—

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अन्-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०

और उन्होंने तुम्हें जिन कामों का हुक्म दिया है और जिन कामों से रोका है, उन तमाम हुक्मों को उनके पास से लेकर तुम्हारे पास आया हूं।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि शाम होने से पहले ही उस आबादी का हर मर्द और औरत मुसलमान हो चुका था।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाया करते थे कि हज़रत ज़िमाम बिन सालबा से ज़्यादा बेहतर हमने किसी क़ौम का नुमाइन्दा नहीं सुना और वाक़िदी में यह है कि शाम होने से पहले ही इस आबादी का हर मर्द और औरत मुसलमान हो चुका था। उन लोगों ने मस्जिदें भी बनाईं और नमाज़ के लिए अज़ान भी दिया करते थे।[1]

हज़रत अम्र बिन मुर्रा जुहनी रज़ि० का अपनी क़ौम को दावत देना

हज़रत अम्र बिन मुर्रा जुह्नी फ़रमाते हैं कि जाहिलियत के ज़माने में हम लोग अपनी क़ौम की एक जमाअत के साथ हज करने गए, तो मैंने मक्का में एक चमकता हुआ नूर देखा जो काबे से निकल रहा था और उसकी रोशनी से यसरिब का पहाड़ और जुहैना का अशअर पहाड़ रोशन हो गया और मुझे उस नूर में यह आवाज़ सुनाई दी कि अंधेरा छंट गया और रोशनी ऊंची होकर फैल गई और ख़ातमुल अंबिया की

1. अहमद, अबू दाऊद, बिदाया, भाग 5 पृ० 60, मुस्तदरक भाग 3, पृ० 54

बेसत हो गई। वह नूर मेरे सामने दोबारा चमका, यहां तक कि मैंने हियरा शहर के महल और मदाइन शहर का सफ़ेद महल अपनी आंखों से देख लिया और उस नूर में यह आवाज़ सुनाई दी कि इस्लाम ज़ाहिर हो चुका है और बुत तोड़ दिए गए और रिश्ते जोड़ दिए गए।

मैं घबरा कर उठा और अपनी क़ौम से कहा, अल्लाह की क़सम! क़ुरैश के इस क़बीले में कोई बड़ा वाक़िआ पेश आने वाला है और मैंने उनको अपना सपना सुनाया।

जब मैं अपने इलाक़े में पहुंचा तो वहां यह ख़बर पहुंची कि अहमद नामी एक आदमी पैग़म्बर बनाकर भेजे गए हैं।

चुनांचे मैं वहां से चलकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपको अपना सपना सुनाया। आपने फ़रमाया, ऐ अम्र बिन मुर्रा! मैं वह नबी हूं जिसको तमाम बन्दों की ओर रसूल बनाकर भेजा गया है, मैं सबको इस्लाम की दावत देता हूं और मैं उनको इस बात का हुक्म देता हूं कि वे ख़ून की हिफ़ाज़त करें और रिश्तेदारियां जोड़ें और एक अल्लाह की इबादत करें और बुतों को छोड़ दें और हज बैतुल्लाह करें और बारह महीनों में से रमज़ान के एक महीने के रोज़े रखें। जो मेरी बात मानेगा, उसे जन्नत मिलेगी और जो मेरी नाफ़रमानी करेगा, वह दोज़ख़ की आग में जाएगा। ऐ अम्र! ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हें जहन्नम की हौलनाकी से अम्न देगा।

मैंने कहा, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अल्लाह के रसूल हैं और आप जो हलाल और हराम लेकर आए हैं, मैं उन सब पर ईमान ले आया, अगरचे ये बातें बहुत सी क़ौमों को बुरी लगेंगी।

फिर मैंने आपको वे कुछ शेर (पद) पढ़कर सुनाए, जो मैंने आपकी बेसत की ख़बर सुनकर कहे थे। हमारा एक बुत था और हमारे बाप उसके पुजारी थे। मैंने खड़े होकर उस बुत को तोड़ दिया, फिर मैं हुज़ूर सल्ल० की ओर चल दिया और मैं ये शेर पढ़ रहा था—

شَهِدْتُ بِاَنَّ اللّٰهَ حَقٌّ وَّاِنَّنِيْ   لِاٰلِهَةِ الْاَحْجَارِ اَوَّلُ تَارِكٖ

'मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह हक़ है और मैं पत्थरों से बने हुए बुतों को सबसे पहले छोड़ने वाला हूं।'

وَشَمَّرْتُ عَنْ سَاقِ الْإِزَارِ مُهَاجِرًا   أَجُوْبُ إِلَيْكَ الْوَعْثَ بَعْدَ الدَّكَادِكِ

'और मैंने अपनी पिंडुली से लुंगी को ऊपर चढ़ा लिया और मैं हिजरत करता हुआ जा रहा हूं। (ऐ अल्लाह के रसूल !) आप तक पहुंचने के लिए कठिन रास्तों को और सख़्त ज़मीनों को तै कर रहा हूं।'

لِأَصْحَبَ خَيْرَ النَّاسِ نَفْسًا وَّوَالِدًا   رَسُوْلَ مَلِيْكِ النَّاسِ فَوْقَ الْحَبَائِكِ

(मैं यह सारी मशक़्क़त इसलिए उठा रहा हूं), ताकि मैं उस ज़ात की सोहबत में रहा करूं, जो ख़ुद भी लोगों में सबसे बेहतर हैं और उनका ख़ानदान भी और जो उस अल्लाह के रसूल हैं जो तमाम इंसानों का बादशाह है और आसमानों के ऊपर है।

हुज़ूर सल्ल० ने (शेर सुनकर) कहा, शाबाश ! ऐ अम्र बिन मुर्रा ! फिर मैंने कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों। आप मुझे मेरी क़ौम की तरफ़ भेज दें, हो सकता है कि अल्लाह उन पर भी मेरे ज़रिए से फ़ज़्ल फ़रमा दे, जैसे आपके ज़रिए से मुझ पर फ़ज़्ल फ़रमाया।

चुनांचे आपने मुझे भेज दिया और ये हिदायतें दीं कि नर्मी से पेश आना और सही और सीधी बात कहना। सख़्त बात करने से बचना और बुरे अख़्लाक़ से पेश न आना और घमंड और जलन न करना।

मैं अपनी क़ौम के पास आया और मैंने कहा, ऐ बनी रिफ़ाआ ! बल्कि ऐ क़बीला जुहैना ! मैं तुम्हारी ओर अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का क़ासिद हूं और तुम्हें इस्लाम की दावत देता हूं और मैं तुम्हें इस बात का हुक्म देता हूं कि तुम ख़ून की हिफ़ाज़त करो और रिश्ते-नाते जोड़ो और एक अल्लाह की इबादत करो और बुतों को छोड़ दो और बैतुल्लाह का हज करो और बारह महीनों में से रमज़ान के एक महीने के रोज़े रखो। जो मान लेगा, उसे जन्नत मिलेगी, जो नाफ़रमानी करेगा, वह दोज़ख़ की आग में जाएगा।

ऐ क़बीला जुहैना ! अल्लाह ने तुम्हें अरबों में से बेहतरीन क़बीला बनाया है और जो बुरी बातें अरब के दूसरे क़बीलों को अच्छी लगती

थीं, अल्लाह ने जाहिलियत के ज़माने में भी तुम्हारे दिलों में उनकी नफ़रत डाली हुई थी, क्योंकि वे दूसरे क़बीले दो बहनों से इकट्ठी शादी कर लेते थे और हराम महीनों में लड़ाई लड़ लेते थे और अपने बाप की बीवी से बाद में निकाह कर लेते थे।

बनी लुई बिन ग़ालिब! अल्लाह के भेजे हुए इस नबी की बात मान लो, दुनिया की शराफ़त और आख़िरत की बुज़ुर्गी मिलेगी।

हज़रत अम्र फ़रमाते हैं, मेरी क़ौम में से कोई मेरे पास न आया, सिर्फ़ एक आदमी ने आकर यह कहा, ऐ अम्र बिन मुर्रा! अल्लाह तेरी ज़िंदगी को कड़ुवा बनाए! क्या तुम हमें इस बात का हुक्म देते हो कि हम अपने माबूदों को छोड़ दें और हम अपना शीराज़ा बिखेर दें और हम अपने उन बाप-दादाओं के दीन की मुख़ालफ़त करें जो उम्दा और ऊंचे अख़्लाक़ वाले थे। यह तिहामा का रहने वाला क़ुरैशी हमें किस चीज़ की दावत देता है? न हमें इससे मुहब्बत है और न हम इसकी बुज़ुर्गी तस्लीम करते हैं, फिर यह ख़बीस ये शेर (पद) (नऊज़ुबिल्लाह) पढ़ने लगा—

إِنَّ ابْنَ مُرَّةَ قَدْ أَتَى بِمَقَالَةٍ   لَيْسَتْ مَقَالَةَ مَنْ يُّرِيْدُ صَلَاحًا

'इब्ने मुर्रा ऐसी बात लेकर आया है जो उस आदमी की बात नहीं हो सकती है, जो चाहता है कि हालात दुरुस्त हो जाएं।'

إِنِّيْ لَأَحْسَبُ قَوْلَهُ وَفِعَالَهُ   يَوْمًا وَّإِنْ طَالَ الزَّمَانُ ذُبَاحًا

'मैं यह समझता हूं कि इब्ने मुर्रा का क़ौल व फ़ेल (कथनी-करनी) एक न एक दिन ज़रूर गले का छछूंदर बनकर रहेगा, चाहे उसमें कुछ देर लगे।'

لَيُسَفِّهُ الْأَشْيَاخَ مِمَّنْ قَدْ مَضٰى   مَنْ رَّامَ ذٰلِكَ لَا أَصَابَ فَلَاحًا

'वह हमारे गुज़रे हुए बुज़ुर्गों को मूर्ख बताता है, जो ऐसा करना चाहता है, वह कभी कामियाब नहीं हो सकता है।'

हज़रत अम्र बिन मुर्रा फ़रमाते हैं कि मैंने कहा, हम दोनों में से जो झूठा हो, ख़ुदा उसकी ज़िंदगी को कड़ुवी कर दे और उसकी ज़ुबान को गूंगा और आंखों को अंधा कर दे।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! मरने से पहले

ही उस आदमी के सारे दांत गिर चुके थे और वह अंधा हो चुका था और उसकी अक़्ल ख़राब हो चुकी थी और उसे किसी खाने में स्वाद नहीं मिलता था। चुनांचे जब अम्र अपनी क़ौम के मुसलमानों को लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए, हुज़ूर सल्ल० ने उनका बड़ा स्वागत किया, उनके लिए लम्बी उम्र की दुआ दी और उनको एक ख़त लिखकर दिया, जिसका विषय यह है—

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

'यह तमाम ताक़तों के मालिक अल्लाह की ओर से उनके रसूल की ज़ुबानी ख़त है जो रसूल सच्चे और हक़ बताने वाली किताब को लेकर आए। यह ख़त अम्र बिन मुर्रा के हाथ जुहैना ज़ैद क़बीले के नाम भेजा जा रहा है। सारा नीचे का और हमवार इलाक़ा और वादियों का नीचे और ऊपर का इलाक़ा सब तुम्हारा है। जहां चाहो, अपने जानवर चराओ और इसका पानी इस्तेमाल करो, शर्त यह है कि (माले ग़नीमत का) पांचवां हिस्सा देते रहो, और पांच नमाज़ें पढ़ते रहो। भेड़-बकरियां के दो रेवड़ अगर इकट्ठा कर दिए जाएं (और उनकी तायदाद एक सौ बीस से ज़्यादा और दो सौ से कम हो) तो ज़कात में दो बकरियां दी जाएंगी और अगर अलग-अलग रेवड़ हों (और हर रेवड़ में चालीस या उससे ज़्यादा बकरियां हों) तो हर एक में से एक-एक बकरी दी जाएगी। खेती के काम आने वाले और पानी निकालने वाले जानवरों पर ज़कात नहीं है। अल्लाह और तमाम हाज़िर मुसलमान हमारे इस समझौते पर गवाह हैं।' (बक़लम क़ैस बिन शम्मास)[1]

हज़रत उर्वः बिन मस्ऊद रज़ि० का क़बीला सक़ीफ़ को दावत देना

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं, जब लोगों ने सन् 09 हि० में हज की तैयारी शुरू की, तो हज़रत उर्वः बिन मस्ऊद रज़ि० हुज़ूर

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 64, बिदाया, भाग 2, पृ० 351, मज्मा, भाग 8, पृ० 244

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में मुसलमान होकर हाज़िर हुए और हुज़ूर सल्ल० से इस बात की इजाज़त चाही कि अपनी क़ौम के पास वापस चले जाएं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे डर है कि वे तुम्हें कहीं क़त्ल न कर दें।

उन्होंने कहा, (वे मेरा इतना आदर करते हैं कि) अगर वे मेरे पास आएं और मैं सो रहा हूं, तो वे मुझे जगाते नहीं हैं।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनको इजाज़त दे दी। वह मुसलमान होकर अपनी क़ौम के पास वापस इशा के वक़्त पहुंचे। सारा क़बीला उन्हें सलाम करने आया। उन्होंने सबको इस्लाम की दावत दी। क़ौम ने उन पर तरह-तरह के इलज़ाम लगाए और उन्हें ग़ुस्सा दिलाया और उन्हें बहुत ही नागवार बातें सुनाईं, फिर उन्हें शहीद कर डाला।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलहि व सल्लम ने (यह ख़बर सुनकर) फ़रमाया, उर्वः भी उन (हबीबे नज्जार) जैसे हैं, जिनका ज़िक्र सूरः यासीन में है कि उन्होंने अपनी क़ौम को अल्लाह की ओर दावत दी, उन्होंने उनको शहीद कर दिया।[1]

बहुत से विद्वान इस क़िस्से को तफ़्सील से ज़िक्र करते हैं और उसमें से यह है कि हज़रत उर्वः रज़ि० इशा के वक़्त ताइफ़ पहुंचे और अपने घर में दाख़िल हुए। क़बीला सक़ीफ ने आकर उनको जाहिलियत के तरीक़े पर सलाम किया।

उन्होंने लोगों को इस सलाम से रोका और उनसे कहा, तुम जन्नत वालों के तरीक़े पर सलाम करो और—

السلام عليكم ورحمة الله وبركاته

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू० कहो।

क़ौम ने उनको तरह-तरह से सताया और उनको बेइज़्ज़त किया, लेकिन यह बरदाश्त करते रहे। क़ौम के लोग उनके पास से जाकर

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 386, हाकिम, भाग 3, पृ० 616

उनके बारे में मश्विरा करते रहे, यहां तक कि सुबह सादिक़ हो गई।

हज़रत उर्वः ने बाला ख़ाने पर चढ़कर फ़ज्र की अज़ान दी। क़बीला सक़ीफ़ के लोग हर ओर से निकल आए। बनू मालिक के औस बिन औफ़ नामी आदमी ने उनको ऐसा तीर मारा, जो उनकी शह रग में लगा और उस शह रग का ख़ून न रुका, तो ग़ैलान बिन सलमा और कनाना बिन अब्दया लैल और हकम बिन अम्र और बनू अह्लाफ़ के दूसरे मशहूर सरदारों ने खड़े होकर हथियार पहन लिए और जमा हो गए और यों कहा—

'या तो हम सारे लोग मारे जाएंगे या उर्वः बिन मसऊद के बदले में बनू मालिक के दस सरदारों को क़त्ल कर देंगे।'

हज़रत उर्वः बिन मसऊद ने जब यह मंज़र देखा, तो कहा, मेरी वजह से तुम किसी को क़त्ल न करो। मैंने अपना ख़ून अपने क़ातिल को इसलिए माफ़ कर दिया, ताकि उससे तुम्हारी सुलह बाक़ी रहे। यह मेरा क़त्ल तो अल्लाह का मुझ पर ख़ास इनाम है और उसने मुझे शहादत का दर्जा इनायत फ़रमाया है और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। उन्होंने मुझे बताया था कि तुम मुझे क़त्ल करोगे, फिर उन्होंने अपने ख़ानदान वालों को बुलाकर कहा, जब मैं मर जाऊं, तो मुझे उन शहीदों के साथ दफ़न करना जो हुज़ूर सल्ल० के साथ तुम्हारे यहां से जाने से पहले शहीद हुए, चुनांचे उनका इन्तिक़ाल हो गया और उनके ख़ानदान वालों ने उनको उन्हीं शहीद सहाबा के साथ दफ़न किया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनके क़त्ल की ख़बर पहुंची, तो फ़रमाया कि उर्वः भी.... आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून है।[1]

क़बीला सक़ीफ़ के मुसलमान होने का क़िस्सा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उन अख़्लाक़ व आमाल के क़िस्सों में गुज़र चुका है, जिनकी वजह से लोगों को हिदायत मिलती थी।

---

1. इब्ने साद, भाग 5, पृ० 369

हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी रज़ि० का अपनी क़ौम को दावत देना

मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी क़ौम की तरफ़ से सख़्त रवैया देखने के बावजूद उनकी ख़ैरख़्वाही की पूरी कोशिश करते रहते और दुनिया और आख़िरत की जिस मुसीबत में वह गिरफ़्तार थे, उससे निजात पाने की उनको दावत देते थे।

जब अल्लाह ने क़ुरैश से हुज़ूर की पूरी हिफ़ाज़त फ़रमा दी, तो उन्होंने यह रवैया अपनाया कि लोगों को और बाहर से आने वाले अरबों को डरा कर हुज़ूर सल्ल० से मिलने से रोकते।

हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी रज़ि० बयान करते हैं कि वह मक्का गए और हुज़ूर सल्ल० वहां ही थे। हज़रत तुफ़ैल बहुत इज़्ज़तदार, बड़े शायर और बड़े समझदार थे। क़ुरैश के कुछ लोग उनके पास आए और उनसे कहा, ऐ तुफ़ैल! आप हमारे शहर में आए हैं। यह आदमी जो हमारे बीच रहता है, उसने हमें बड़ी मुश्किल में डाल दिया है। हमारी जमाअत में फूट डाल दी है, उसकी बात तो जादू की तरह असर करती है। यह बाप-बेटे में और भाई-भाई में और मियां-बीवी में जुदाई पैदा करता है। हमें ख़तरा है कि जो परेशानियां हम पर आ गई हैं कहीं वे आप पर और आपकी क़ौम पर न आ जाएं, इसलिए आप न तो उससे बात करें और न उसकी कोई बात सुनें।

हज़रत तुफ़ैल कहते हैं कि उन्होंने मुझसे इतनी बार कहा और मेरे इतना पीछे पड़े कि मैंने भी तै कर लिया कि मैं न तो हुज़ूर सल्ल० से कोई बात सुनूंगा और न ही उनसे कोई बात करूंगा, यहां तक कि सुबह को जब मैं मस्जिद को जाने लगा तो कानों में रूई इस डर से भर ली कि कहीं बे-इरादा आपकी कोई बात मेरे कान में न पड़ जाए।

चुनांचे मैं मस्जिद गया, तो हुज़ूर सल्ल० काबा के पास खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहे थे, मैं आपके क़रीब खड़ा हो गया। इस सारी सावधानी के बावजूद अल्लाह ने मुझे हुज़ूर सल्ल० के कुछ शब्द सुना ही दिए।

मुझे यह बहुत अच्छा कलाम महसूस हुआ, तो मैंने अपने दिल में कहा, मेरी मां मुझे रोए, मैं एक समझदार और शायर आदमी हूं, अच्छे और बुरे कलाम में फ़र्क़ कर लेता हूं, इसमें क्या हरज है कि मैं उनकी बात सुनूं, अगर अच्छी हुई तो क़ुबूल कर लूंगा और अगर बुरी हुई तो छोड़ दूंगा।

फिर मैं वहां इन्तिज़ार में बैठा रहा, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० नमाज़ से फ़ारिग़ होकर घर को तशरीफ़ ले गए, तो मैं भी आपके पीछे चल पड़ा, यहां तक कि जब आप अपने घर में दाख़िल हो गए तो मैंने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, ऐ मुहम्मद ! आपकी क़ौम ने मुझसे ऐसे-ऐसे कहा और अल्लाह की क़सम ! मुझे आपसे इतना डराते रहे कि मैंने अपने कानों में रूई अच्छी तरह से भर ली, ताकि आपकी बात न सुन सकूं, लेकिन अल्लाह ने मुझे आपकी बात सुना ही दी। मुझे बहुत अच्छा कलाम महसूस हुआ, आप अपनी बात मेरे सामने पेश करें।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे सामने इस्लाम को पेश किया और मुझे क़ुरआन पढ़कर सुनाया।

फ़रमाते हैं अल्लाह की क़सम ! मैंने इससे पहले इससे ज़्यादा अच्छी और इससे ज़्यादा इंसाफ़ वाली बात नहीं सुनी थी। चुनांचे मैं कलिमा शहादत पढ़कर मुसलमान हो गया और मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी ! मेरी क़ौम में मेरी चलती है। मैं उनके पास वापस जाकर उन्हें इस्लाम की दावत दूंगा। आप अल्लाह से मेरे लिए दुआ करें कि अल्लाह मुझे ऐसी कोई निशानी दे, जिससे मुझे उन्हें दावत देने में मदद मिले।

आपने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! इनको कोई निशानी अता फ़रमा। चुनांचे मैं अपनी क़ौम की तरफ़ चल पड़ा। जब मैं उस घाटी पर पहुंचा, जहां से मैं अपनी आबादी वालों को नज़र आने लगा, तो मेरी दोनों आंखों के दर्मियान चिराग़ की तरह एक चमकता हुआ नूर ज़ाहिर हुआ। मैंने दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! इस नूर को मेरे चेहरे के अलावा किसी और जगह ज़ाहिर कर दे, क्योंकि मुझे ख़तरा है कि मेरी क़ौम

वाले (आंखों के बीच नूर देखकर) यह समझेंगे कि उनके दीन को छोड़ने की वजह से मेरा चेहरा बदल गया है।

चुनांचे वह नूर बदलकर मेरे कूड़े के सिरे पर आ गया। जब मैं घाटी से आबादी की ओर उतर रहा था, तो आबादी वालों को मेरे कूड़े का यह नूर लटके हुए क़िन्दील की तरह नज़र आ रहा था, जिसे वे एक दूसरे को दिखा रहे थे, यहां तक कि मैं उनके पास पहुंच गया।

जब मैं सवारी से उतरा तो मेरे वालिद (पिता) आए, जो कि बहुत बूढ़े हो चुके थे। मैंने उनसे कहा, ऐ अब्बा जान! मुझसे दूर रहें, आपका मुझसे कोई ताल्लुक़ नहीं और न मेरा आप से।

उन्होंने कहा, ऐ मेरे बेटे! क्यों?

मैंने कहा, क्योंकि मैं मुसलमान हो चुका हूं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दीन अख़्तियार कर चुका हूं।

मेरे वालिद ने कहा, मेरा दीन भी वही है, जो तुम्हारा दीन है।

फिर उन्होंने गुस्ल किया और अपने कपड़े पाक किए, फिर मेरे पास आए। मैंने उन पर इस्लाम पेश किया, वे इस्लाम में दाख़िल हो गए।

फिर मेरी बीवी मेरे पास आई। मैंने उससे कहा, परे हट, मेरा तुमसे कोई ताल्लुक़ नहीं, और न तुम्हारा मुझसे।

उसने कहा क्यों? मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों।

मैंने कहा, इस्लाम की वजह से मेरे और तुम्हारे दर्मियान जुदाई हो गई है, चुनांचे वह भी मुसलमान हो गई।

फिर मैं अपने क़बीला दौस को इस्लाम की दावत देता रहा, लेकिन वह इंकार करते रहें और उन्होंने बहुत देर कर दी।

आख़िर में मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में मक्का हाज़िर होकर कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल०! क़बीला दौस ने मुझे हरा दिया। (मैंने उन्हें बहुत दावत दी, लेकिन वे ईमान न लाए।) आप उनके लिए बद-दुआ करें।

आपने (बजाए बद-दुआ करने के) उनके लिए दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! दौस को हिदायत दे दे (और मुझसे फ़रमाया) अपनी क़ौम में

वापस जाओ और उनको दावत देते रहो। लेकिन उनके साथ नर्मी से पेश आओ।

चुनांचे मैं वापस आया और क़बीला दौस में ठहर कर उनको इस्लाम की दावत देता रहा, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० हिजरत फ़रमा कर मदीना तशरीफ़ ले गए और बद्र व उहुद और ख़ंदक़ के ग़ज़वे भी हो गए।

फिर मैं अपनी क़ौम के मुसलमानों को साथ लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया, और उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० ख़ैबर गए हुए थे। मैं दौस के सत्तर या अस्सी घरानों को लेकर मदीना पहुंचा।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र रज़ि० के इस्लाम लाने और उनके अपने वालिद और बीवी और अपनी क़ौम को दावत देने और उनके मक्का आने के क़िस्से को तफ़्सील से ज़िक्र करते हैं और उसमें यह इज़ाफ़ा भी है कि उनको हुज़ूर सल्ल० ने ज़ुलकफ़्फ़ैन बुत के जलाने के लिए भेजा था और यह यमामा भी गए थे और इस बारे में उन्होंने ख़्वाब भी देखा था और ग़ज़वा यमामा में यह शहीद हो गए थे।[2]

इसाबा में अबुल फ़रज इस्बहानी के वास्ते से इब्ने कलबी की यह रिवायत है कि हज़रत तुफ़ैल जब मक्का आए तो उनसे क़ुरैश के कुछ लोगों ने हुज़ूर सल्ल० की दावत का ज़िक्र किया और उनसे यह भी कहा कि वह हुज़ूर सल्ल० का इम्तिहान लेकर देखें।

चुनांचे उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के पास जाकर अपने शेर पढ़कर सुनाए। हुज़ूर सल्ल० ने सूरः इख़्लास और मुअव्वज़तैन पढ़कर सुनाईं। यह फ़ौरन मुसलमान हो गए और अपनी क़ौम के पास वापस चले गए।

फिर कूड़े में नूर ज़ाहिर होने के क़िस्से का भी ज़िक्र किया। उन्होंने अपनी मां-बाप को दावत दी। वालिद तो मुसलमान हो गए, लेकिन

---

1. दलाइल, पृ० 78, बिदाया, भाग 3, पृ० 100, इसाबा, भाग 2, पृ० 225, इब्ने साद भाग 4, पृ० 237
2. इस्तीआब, भाग 2, पृ० 232

वालिदा न हुई और उन्होंने अपनी क़ौम को दावत दी, जिनमें से हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने उनकी दावत को कुबूल किया।

इसके बाद उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, क्या आप चाहते हैं कि आपको दौस की ज़मीन मिल जाए, जोकि मज़बूत और महफ़ूज़ क़िला है? (यानी हमला करके उस पर क़ब्ज़ा कर लें, या उनके लिए बद-दुआ करें, लेकिन) हुज़ूर सल्ल० ने दौस की हिदायत की दुआ फ़रमाई, तो हज़रत तुफ़ैल ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, मैं तो (उनकी हिदायत की) यह (दुआ) नहीं चाहता था।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इनमें तेरे जैसे बहुत सारे हैं।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत जुन्दुब बिन अम्र बिन हुममा बिन औफ़ दौसी रज़ि० जाहिलियत के ज़माने में कहा करते थे इस मख़्लूक़ का कोई न कोई ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) ज़रूर है, लेकिन वह कौन है? यह मैं नहीं जानता।

जब उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़बर सुनी तो अपनी क़ौम के 75 आदमियों को लेकर चल पड़े और (हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर) ख़ुद भी मुसलमान हुए और उनके साथी भी मुसलमान हुए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत जुन्दुब एक-एक आदमी को (हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में मुसलमान होने के लिए) पेश करते जाते थे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का क़बीला हमदान को दावत देना और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० का बनू हारिस बिन काब को दावत देना और हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु का अपनी क़ौम को दावत देना पहले गुज़र चुका है।

हज़रात सहाबा किराम रज़ि० का एक-एक व्यक्ति को और जमाअतों को दावत के लिए भेजना

हज़रत हिशाम बिन आस उमवी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे और एक और आदमी को रूम के बादशाह हिरक़्ल के पास इस्लाम की

दावत देने के लिए भेजा गया, यहां तक कि ग़ूता यानी दमिश्क़ पहुंचे। जबला बिन ऐहम ग़स्सानी के पास हमारा क़ियाम हुआ।

चुनांचे हम उसके पास गए, तो वह अपने तख़्त पर बैठा हुआ था। उसने अपना क़ासिद हमारे पास भेजा, ताकि हम उस क़ासिद से बात करें।

हमने कहा, अल्लाह की क़सम! हम किसी क़ासिद से बात नहीं करेंगे। हमें तो बादशाह के पास भेजा गया है, अगर वह हमें इजाज़त दे तो हम उससे बात करेंगे वरना हम क़ासिद से बात नहीं करेंगे।

चुनांचे क़ासिद ने वापस जाकर उनको यह बताया तो उसने हमें अपने पास आने की इजाज़त दी। (चुनांचे हम उसके पास गए, तो) उसने कहा, कहो, क्या कहना चाहते हो?

तो हज़रत हिशाम बिन आस ने उससे बातें शुरू कीं और उसे इस्लाम की दावत दी।

वह काले कपड़े पहने हुए था। हज़रत हिशाम ने उससे पूछा, ये काले कपड़े क्यों पहन रखे हैं?

उसने कहा, यह काले कपड़े पहनकर हमने क़सम खाई है कि जब तक तुम्हें शाम से न निकाल दूं, इनको न उतारूंगा।

हमने कहा, अल्लाह की क़सम! तुम्हारा यह दरबार जहां तुम बैठे हुए हो, यह भी हम तुमसे ज़रूर ले लेंगे और इनशाअल्लाह (तुम्हारे) बड़े बादशाह (हिरक़्ल) का मुल्क (रूम) भी ज़रूर ले लेंगे, क्योंकि हमें इसकी ख़बर हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी हैं।

उसने कहा, तुम वे लोग नहीं हो, जो यह फ़त्ह करेंगे, बल्कि ये तो वे लोग होंगे जो दिन को रोज़ा रखेंगे और रात को इबादत करेंगे।

आगे लम्बी हदीस है जो 'ताईदाते ग़ैबीया' के बाब में आएगी।[1]

हज़रत मूसा बिन उक़्बा फ़रमाते हैं कि हज़रत हिशाम बिन आस और हज़रत नुऐम बिन अब्दुल्लाह और एक और सहाबी रज़ि०, जिनका

---

1. दलाइल, इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 25।

नाम रिवायत करने वाले ने ज़िक्र किया था, ये तीनों हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त के ज़माने में रूम के बादशाह के पास भेजे गए। फ़रमाते हैं कि हम जबला बिन ऐहम के पास गए। वह ग़ूता में था। उसने काले कपड़े पहन रखे थे और उसके चारों तरफ़ हर चीज़ काली थी।

उसने कहा, ऐ हिशाम ! बात करो।

चुनांचे हज़रत हिशाम ने उससे बात की और उसे अल्लाह की तरफ़ दावत दी। इसके बाद की तफ़्सील إِنْ شَاءَ اللّٰهُ आगे आएगी।

हज़रात सहाबा किराम रज़ि० का अल्लाह की ओर और इस्लाम में दाख़िल होने की ओर दावत देने के लिए ख़तों का लिखना

हज़रत ज़ियाद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु का अपनी क़ौम के नाम ख़त

हज़रत ज़ियाद बिन हारिस सुदाई रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और इस्लाम पर आपसे बैअत हुआ। मुझे पता चला कि हुज़ूर सल्ल० ने एक फ़ौज मेरी क़ौम की ओर भेजी है। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप फ़ौज वापस बुला लें। मैं इस बात की ज़िम्मेदारी लेता हूं कि मेरी क़ौम मुसलमान भी हो जाएगी और आपकी इताअत भी करेगी।

आपने फ़रमाया, तुम जाओ और उस फ़ौज को वापस बुला लाओ।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरी सवारी थकी हुई है।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने एक आदमी को भेजकर फ़ौज वापस बुला लिया।

मैंने अपनी क़ौम को ख़त लिखा, वे मुसलमान हो गए और उनका एक वफ़्द यह ख़बर लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया। आपने मुझसे फ़रमाया, ऐ सुदाई भाई ! वाक़ई तुम्हारी क़ौम तुम्हारी बात मानती है।

मैंने कहा, (इसमें मेरा कमाल नहीं है) बल्कि अल्लाह ने उनको इस्लाम की हिदायत दी है।

आपने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें उनका अमीर न बना दूं?

मैंने कहा, बना दें ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने मेरी इमारत (अमीर बनाने) के बारे में मुझे एक ख़त लिखकर दिया।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उनके सदक़ों में से मेरे लिए कुछ हिस्सा मुक़र्रर कर दें।

आपने फ़रमाया, अच्छा, और इस बारे में मुझे एक और ख़त लिखकर दिया। यह सारा वाक़िया एक सफ़र में पेश आया था, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक जगह पड़ाव डाला। उस जगह वालों ने आकर अपने सदक़े वसूल करने वाले के बारे में आपसे शिकायत की और कहा कि हमारे और उसकी क़ौम के दर्मियान जाहिलियत के ज़माने में कुछ (झगड़ा) था, जिसकी वजह से उसने हमारे साथ सख़्ती की है।

आपने फ़रमाया, अच्छा, उसने ऐसा किया है?

उन्होंने कहा, जी हां।

आपने अपने सहाबा को मुख़ातब करते हुए फ़रमाया और मैं भी उनमें था कि मोमिन आदमी के लिए अमीर बनने में कोई भलाई नहीं।

हुज़ूर सल्ल० की यह बात मेरे दिल में बैठ गई। फिर आपके पास एक और आदमी ने कहा कि मुझे कुछ दे दें।

आपने फ़रमाया, जो आदमी ग़नी होकर फिर लोगों से मांगता है, तो यह मांगना उसके सर का दर्द और पेट की बीमारी बनकर रहेगा।

उस आदमी ने कहा, मुझे सदक़ों में से दे दें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह ने सदक़ों के बांटने के बारे में नबी और उसके अलावा किसी और से फ़ैसला नहीं करवाया, बल्कि इस बारे में ख़ुद फ़ैसला किया है, और आठ क़िस्म के इंसानों में सदक़ों का माल बांटने का हुक्म दिया है। अगर तुम इन आठ क़िस्म के इंसानों में से हुए, तो मैं तुम्हें दे दूंगा।

तो मेरे दिल में यह बात भी बैठ गई और मुझे ख़्याल आया कि मैं ग़नी हूं और मैंने हुज़ूर सल्ल० से सदक़ों में से मांगा है। आगे लम्बी हदीस है, जिसमें यह भी है कि जब हुज़ूर सल्ल० नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मैं आपके दोनों ख़त लेकर आपकी ख़िदमत में आया और मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे इन दोनों बातों से माफ़ी दे दें।

आपने फ़रमाया, तुम्हें क्या हुआ ?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने आपको यह कहते हुए सुना है कि मोमिन आदमी के लिए अमीर बनने में कोई ख़ैर नहीं है और मैं अल्लाह और रसूल पर ईमान रखता हूं और मैंने आपको मांगने वाले से यह कहते हुए सुना है कि जो आदमी ग़नी होकर फिर लोगों से मांगता है, तो यह मांगना उसके सर का दर्द और पेट की बीमारी बनकर रहेगा और मैं ग़नी था, फिर भी मैंने आपसे सवाल किया।

आपने फ़रमाया, बात तो वही है, अगर तुम चाहो तो यह ख़त रख लो और चाहो तो वापस कर दो।

मैंने कहा, मैं तो वापस करता हूं।

आपने फ़रमाया, मुझे कोई ऐसा आदमी बताओ, जिसे तुम सबका अमीर बना दूं। आने वाले वफ़्द में से मैंने एक का नाम बताया। हुज़ूर सल्ल० ने उसे उसका अमीर बना दिया।[1]

हज़रत बुजैर बिन ज़ुहैर बिन अबी सुलमा रज़ि० का अपने भाई काब के नाम ख़त

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन काब फ़रमाते हैं कि हज़रत काब बिन ज़ुहैर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत बुजैर बिन ज़ुहैर रज़ि० दोनों सफ़र में रवाना हुए। अबरक़ुल अज़्ज़ाफ़ चश्मे पर पहुंचकर हज़रत बुजैर ने हज़रत काब से कहा, तुम इसी जगह पर इन जानवरों के साथ रहो। मैं ज़रा इस आदमी यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाकर सुनता हूं कि वह क्या कहते हैं ?

चुनांचे हज़रत काब वहीं ठहर गए और हज़रत बुजैर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हो गए। आपने उनके सामने इस्लाम को पेश किया, वह मुसलमान हो गए।

जब यह ख़बर काब को पहुंची तो उन्होंने (मुख़ालफ़त में) ये शेर

---

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 83, कंज़, भाग 7, पृ० 38, इसाबा, भाग 1, पृ० 557, हैसमी, भाग 5, पृ० 204

(पद) कहे—

أَلَا أَبْلِغَا عَنِّيْ بُجَيْرًا رِسَالَةً   عَلَىٰ أَيِّ شَيْءٍ وَيْبَ غَيْرِكَ دَلَّكَا

'ख़बरदार, ऐ मेरे दोनों साथियो ! मेरी ओर से बुजैर को यह पैग़ाम पहुंचा दो कि तेरे ग़ैर का नाश हो, उसने तुझे किस रास्ते पर डाल दिया ? (ग़ैर से हज़रत अबूबक्र मुराद है)'

عَلَىٰ خُلُقٍ لَّمْ تُلْفِ أُمًّا وَّلَا أَبًا   عَلَيْهِ وَلَمْ تُدْرِكْ عَلَيْهِ أَخًا لَّكَا

'ऐसे अख़्लाक़ पर तुम्हें डाल दिया है, जिन पर न तुम्हारे मां-बाप हैं और न तुम्हारे भाई ।'

سَقَاكَ أَبُوْ بَكْرٍ بِكَأْسٍ رَّوِيَّةٍ   وَأَنْهَلَكَ الْمَأْمُوْرُ مِنْهَا وَعَلَّكَا

'अबूबक्र ने तुम्हें एक ख़राब प्याला पिलाया है और इस ग़ुलाम ने तुम्हें बार-बार पिला कर सैराब किया है ।'

जब ये शेर (पद) हुज़ूर सल्ल० तक पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० ने काब के ख़ून को मुबाह कर दिया और फ़रमाया, जिसे काब जहां भी मिले वह काब को क़त्ल कर दे । हज़रत बुहैर ने यह बात ख़त में अपने भाई को लिखी कि हुज़ूर सल्ल० ने उनका ख़ून मुबाह कर दिया है और उसमें यह भी लिखा है कि तुम अपनी जान बचाओ और मेरा ख़्याल यह है कि तुम बच नहीं सकते ।

इसके बाद उनको यह लिखा कि आपको मालूम होना चाहिए कि जो भी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

पढ़ लेता है हुज़ूर सल्ल० उसके कलिमा शहादत को ज़रूर क़ुबूल कर लेते हैं । (यानी उसे मुसलमान मान लेते हैं) इसलिए ज्योंही तुम्हें मेरा यह ख़त मिले, मुसलमान होकर आ जाओ ।

चुनांचे हज़रत काब (ख़त पढ़कर) मुसलमान हो गए । फिर दूसरा क़सीदा हुज़ूर सल्ल० की तारीफ़ में कहा, फिर (मदीना) आए और हुज़ूर सल्ल० की मस्जिद के दरवाज़े पर अपनी सवारी बिठाई, फिर मस्जिद में दाख़िल हुए और उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा के बीच में ऐसे बैठे हुए थे जैसे दस्तरख़ान बीच में होता है ।

सहाबा हुज़ूर सल्ल० के इर्द-गिर्द हलक़े पर हलक़ा बनाए हुए बैठे हुए थे। कभी आप एक ओर मुतवज्जह होकर बात फ़रमाते और कभी दूसरी ओर।

हज़रत काब फ़रमाते हैं, मैंने मस्जिद के दरवाज़े पर अपनी सवारी बिठाई और मैंने हुलिया मुबारक से ही हुज़ूर सल्ल० को पहचान लिया। मैं लोगों को फलांग कर आपकी ख़िदमत में जाकर बैठ गया और अपने इस्लाम को ज़ाहिर करते हुए मैंने कहा—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अपने लिए अम्न चाहता हूं।

आपने फ़रमाया, तुम कौन हो ?

मैंने कहा, मैं काब बिन ज़ुहैर हूं।

आपने फ़रमाया, तुम्हीं ने वे शेर (पद) कहे थे ?

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ अबूबक्र ! इसने कैसे कहा था ? तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह शेर पढ़ा—

سَقَاكَ أَبُوْبَكْرٍ بِكَأْسٍ رَوِيَّةٍ ‏ وَأَنْهَلَكَ الْمَأْمُوْنُ مِنْهَا وَعَلَّكَا

'अबूबक्र ने तुम्हें एक ख़राब प्याला पिलाया है और उस ग़ुलाम ने तुम्हें बार-बार पिला कर सेराब किया है।'

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! यह शेर ऐसे मैंने नहीं कहा था। आपने फ़रमाया, तुमने कैसे कहा था ?

मैंने कहा, मैंने तो यह कहा था। (शब्दों में थोड़ी-सी तब्दीली करके तारीफ़ का शेर बना दिया।)

سَقَاكَ أَبُوْبَكْرٍ بِكَأْسٍ رَّدِيَّةٍ ‏ وَأَنْهَلَكَ الْمَأْمُوْرُ مِنْهَا وَعَلَّكَا

'अबूबक्र ने तुम्हें एक लबालब भरा प्याला पिलाया है और उस भरोसेमंद व्यक्ति ने तुम्हें बार-बार पिला कर सेराब किया है।'

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! (अबूबक्र) वाक़ई भरोसेमंद आदमी हैं। फिर काब ने अपना पूरा क़सीदा आख़िर तक

सुनाया। आगे पूरा क़सीदा है।[1]

हज़रत मूसा बिन उक़्बा कहते हैं कि हज़रत काब बिन ज़ुहैर ने मदीने में मस्जिदे नबवी के अन्दर हुज़ूर सल्ल० को अपना क़सीदा 'बानत सुआद' पढ़कर सुनाया। जब वह अपने इस शेर (पद) पर पहुंचे—

إِنَّ الرَّسُوْلَ لَسَيْفٌ يُسْتَضَاءُ بِهٖ   وَصَارِمٌ مِّنْ سُيُوْفِ اللّٰهِ مَسْلُوْلُ

'बेशक रसूलुल्लाह सल्ल० एक ऐसी तलवार हैं, जिससे (हिदायत की) रोशनी हासिल की जाती है और अल्लाह की तलवारों में से वह तलवार हैं जो ख़ूब काटने वाली और सौंती हुई है।'

فِيْ فِتْيَةٍ مِّنْ قُرَيْشٍ قَالَ قَائِلُهُمْ   بِبَطْنِ مَكَّةَ لَمَّا أَسْلَمُوْا زُوْلُوْا

'क़ुरैश के कुछ नवजवान मुसलमान हो गए थे, उनमें यह रसूल सल्ल० बैठे हुए थे, तो उनमें से मक्का में एक नवजवान ने कहा था, (ऐ काफ़िरो !) सामने से हट जाओ।'

तो हुज़ूर सल्ल० ने अपनी आस्तीन से मज्मे की ओर इशारा किया, ताकि लोग उसे ग़ौर से सुनें।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत बुजैर बिन ज़ुहैर ने अपने भाई काब बिन अबी सुलमा को एक ख़त लिखा था, जिसमें वह अपने भाई को डरा रहे थे और उनको इस्लाम की दावत दे रहे थे और उस ख़त में ये शेर भी लिखे थे—

مَنْ مُّبْلِغٌ كَعْبًا فَهَلْ لَّكَ فِي الَّتِيْ   تَلُوْمُ عَلَيْهَا بَاطِلًا وَّهِيَ أَحْزَمُ

'काब को मेरी ओर से यह पैग़ाम कौन पहुंचाएगा कि क्या उसे उस दीन में दाख़िल होने का शौक़ है, जिसके बारे में तू नाहक़ मलामत करता है, हालांकि वही दीन ज़्यादा मज़बूत और भरोसे के लायक़ है।'

إِلَى اللّٰهِ لَا الْعُزّٰى وَلَا اللَّاتِ وَحْدَهٗ   فَتَنْجُوْا إِذَا كَانَ النَّجَاءُ وَتَسْلَمُ

'अगर तुम नजात हासिल करना चाहते हो, तो लात व उज़्ज़ा को छोड़कर एक अल्लाह की ओर आ जाओ, नजात पा लोगे और महफ़ूज़ हो जाओगे।'

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 579

لَدٰى يَوْمٍ لَّا يَنْجُوْ وَلَيْسَ بِمُفْلِتٍ ۞ مِّنَ النَّارِ اِلَّا طَاهِرُ الْقَلْبِ مُسْلِمُ

'तुम उस दिन नजात पा लोगे, जिस दिन पाक दिल मुसलमान के अलावा कोई भी न नजात पा सकेगा और न आग से ख़लासी हासिल कर सकेगा।'

فَدِيْنُ زُهَيْرٍ وَّهُوَ لَا شَيْئٌ بَاطِلٌ ۞ وَدِيْنُ اَبِيْ سُلْمٰى عَلَيَّ مُحَرَّمُ

'(हमारे बाप) ज़ुहैर का दीन कुछ भी नहीं है और वह बातिल है और (हमारे दादा) अबू सुलमा का दीन मेरे लिए हराम है।'[1]

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० का फ़ारस वालों के नाम ख़त

हज़रत अबू वाइल रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने फ़ारस वालों को इस्लाम की दावत देने के लिए यह ख़त लिखा—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ख़ालिद बिन वलीद की ओर से रुस्तम और मेहरान और फ़ारस के सरदारों के नाम, जिसने हिदायत की पैरवी की, उस पर सलाम हो, फिर हम तुम्हें इस्लाम की दावत देते हैं। अगर तुम इस्लाम लाने से इंकार करते हो, तो मातहत होकर, रऐयत बनकर जिज़या दो और अगर तुम जिज़या देने से भी इंकार करते हो, तो मेरे साथ एक ऐसी जमाअत है जो अल्लाह के रास्ते की मौत को ऐसे ही महबूब रखती है, जैसे फ़ारस वाले शराब को और जिसने हिदायत की पैरवी की, उस पर सलाम हो।[2]

हज़रत शाबी फ़रमाते हैं कि मुझे बनू बुक़ैला ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० का वह ख़त पढ़वाया, जो उन्होंने मदाइन वालों के नाम लिखा था। (और वह यह है)

'ख़ालिद बिन वलीद की ओर से फ़ारस वालों के सूबेदारों के

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 582, हाकिम, भाग 3, पृ० 583, हैसमी, भाग 9, पृ० 394, इसाबा, भाग 3, पृ० 295, बिदाया, भाग 4, पृ० 372
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 210, मुस्तदरक, भाग, पृ० 299

नाम। जिसने हिदायत की पैरवी की उस पर सलाम हो, फिर तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने तुम्हारी जमईयत को बिखेर दिया और तुम्हारा मुल्क छीन लिया और तुम्हारी तदबीरों को कमज़ोर कर दिया। (लिखने की असल) बात यह है कि जो आदमी हमारी तरह नमाज़ पढ़ेगा और हमारे क़िबले की तरफ़ मुंह करेगा और हमारे हाथों का ज़िब्ह किया हुआ जानवर खाएगा वह मुसलमान गिना जाएगा, उसे भी वे हक़ मिलेंगे जो हमें हासिल हैं और उस पर भी वे तमाम ज़िम्मेदारियां आएंगी जो हम पर हैं।

फिर जब तुम्हारे पास मेरा यह ख़त पहुंचे, तो मेरे पास गिरवी की चीज़ें भेजो (ताकि बात पक्की हो) और इस बात का यक़ीन रखो कि हम तुम्हारी तमाम चीज़ों के ज़िम्मेदार हैं, वरना उस ज़ात की क़सम, जिसके अलावा कोई माबूद नहीं है, मैं तुम्हारी तरफ़ ऐसी जमाअत भेजूंगा जो मौत से ऐसी मुहब्बत करते हैं, जैसी तुम ज़िंदगी से करते हो।'

जब फ़ारिस वालों के सूबेदारों ने यह ख़त पढ़ा, तो उनको बड़ा ताज्जुब हुआ। यह 12 हि० का वाक़िया है।[1]

हज़रत शाबी फ़रमाते हैं कि यमामा के रहने वाले ज़बाज़िबा के बाप अज़ाज़बा के साथ हुर्मुज़ के निकलने से पहले हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुर्मुज़ को ख़त लिखा और उन दिनों हुर्मुज़ सरहद की कमान संभाले हुए थे। ख़त का विषय यह था—

'तुम इस्लाम ले आओ, सुरक्षित हो जाओगे या अपने आपको और अपनी क़ौम को ज़िम्मी मान लो और जिज़या देने का इक़रार कर लो, वरना अपने किए पर तुम्हें पछताना पड़ेगा। मैं तुम्हारे पास ऐसी जमाअत लेकर आया हूं, जिनको मौत ऐसी प्यारी है जैसे तुम्हें ज़िंदगी प्यारी है।'[2]

इब्ने जरीर ने ही अपनी सनद से बयान किया है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब इराक़ के हरे-भरे इलाक़े के दो सिरों में से एक

1. इब्ने जरीर, भाग 2, पृ० 553
2. इब्ने जरीर, भाग 2, पृ० 554

सिरे को जीत लिया, तो हियरा वालों में से एक आदमी को बुलाया और उसे फ़ारस वालों के नाम ख़त लिखकर दिया। उन दिनों (उनके बादशाह) अर्दशेर का इंतिक़ाल हुआ था, इसलिए तमाम फ़ारस वाले मदाइन आए हुए थे। एक झंडे तले नहीं थे, बल्कि अपना-अपना झंडा ऊंचा किए हुए थे। सिर्फ़ बह्मन जाज़विया को उन लोगों ने आगे-आगे चलने वाली टुकड़ी देकर बुहसीर शहर में ठहराया हुआ था। बह्मन जाज़विया के साथ अज़ाज़िबा और उस जैसे सरदार भी थे।

हज़रत ख़ालिद ने सलूबा (शहर) से एक और आदमी भी बुलाया और उन दोनों को दो ख़त लिखकर दिए। एक ख़त ख़ास सरदारों के नाम और दूसरा आम सरदारों के नाम। दोनों क़ासिदों (दूतों) में से एक तो हियरा का स्थानीय निवासी था और दूसरा नबती था। (नबती वे अजमी लोग हैं जो इराक़ में आबाद हो गए थे) हज़रत ख़ालिद ने हियरा वाले क़ासिद से पूछा, तुम्हारा क्या नाम है?

उसने कहा मुर्रा (जिसका अनुवाद तल्ख़ और कड़ुवा है, उसके नाम से फ़ाल लेते हुए) हज़रत ख़ालिद ने कहा कि यह ख़त फ़ारस वालों के पास ले जाओ, या तो अल्लाह उनकी ज़िंदगी को कड़ुवा कर देगा या वे मुसलमान हो जाएंगे और (अल्लाह की ओर) रुजू करेंगे और सलूबा शहर वाले (नबती) क़ासिद से हज़रत ख़ालिद ने पूछा, तुम्हारा क्या नाम है? उसने कहा हिज़्क़ील।

(उसके नाम से फ़ाल लेते हुए) हज़रत ख़ालिद ने कहा, यह किताब ले जाओ और यह दुआ की—

اَللّٰهُمَّ اَزْهِقْ نُفُوْسَهُمْ.

अल्लाहुम-म अज़्हिक़ नुफ़ूसहुम० (ऐ अल्लाह! फ़ारस वालों की जान निकाल दे)।

इब्ने जरीर कहते हैं, इन दोनों ख़तों का मज़्मून यह है—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ख़ालिद बिन वलीद की ओर से फ़ारस के राजाओं के नाम। अम्मा बाद, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने तुम्हारी व्यवस्था

अस्त-व्यस्त कर दी और तुम्हारी चालें कमज़ोर कर दीं और तुम्हें बिखेर कर रख दिया। और अगर वह तुम्हारे साथ ऐसा न करता, तो तुम्हारे लिए बहुत बड़ा फ़ित्ना होता। तुम हमारे दीन में दाख़िल हो जाओ, हम तुम्हें तुम्हारे इलाक़े में रहने देंगे और हम तुम्हारे इलाक़े में से गुज़र कर आगे के इलाक़े में चले जाएंगे। हमारे दीन में ख़ुशी-ख़ुशी दाख़िल हो जाओ, नहीं तो तुम्हें मजबूर होकर ऐसी क़ौम के हाथों मग़्लूब होकर हमारे दीन का मातहत बनना पड़ेगा जिनको मौत ऐसी प्यारी है, जैसे तुम्हें ज़िंदगी।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ख़ालिद बिन वलीद की ओर से फ़ारस के सूबेदारों के नाम, अम्मा बाद, तुम मुसलमान हो जाओ, सुरक्षित हो जाओगे और अगर मुसलमान नहीं होते तो ज़िम्मी बनना क़ुबूल कर लो और जिज़या अदा करो, वरना मैं तुम्हारे पास ऐसी क़ौम लेकर आया हूं जिनको मौत ऐसी प्यारी है, जैसे तुम्हें शराब पीना।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में सहाबा किराम रज़ि० का लड़ाई के मैदान में दावत देना

हज़रत मुस्लिम हारिस बिन मुस्लिम तमीमी फ़रमाते हैं कि मुझसे मेरे बाप (हारिस) ने यह बयान किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें एक जमाअत में भेजा। जब हम छापा मारने की जगह के क़रीब पहुंचे, तो मैंने अपने घोड़े को तेज़ दौड़ाया और अपने साथियों से आगे चला गया, तो तमाम क़बीला वाले रोते-पीटते बस्ती से बाहर निकल आए।

मैंने उनसे कहा, ला इला-ह इल्लल्लाहु कह लो, सुरक्षित हो जाओगे। चुनांचे उन लोगों ने कलिमा पढ़ लिया।

फिर मेरे साथी भी पहुंच गए। (उन्हें जब यह पता चला, तो) वे मुझे मलामत (निंदा) करने लगे और कहने लगे कि ग़नीमत का माल हमें आसानी से मिल सकता था, लेकिन तुमने हमें उससे महरूम कर दिया।

1 इब्ने जरीर, भाग 2, पृ० 57।

(बहरहाल) जब हम वापस लौटे, तो साथियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसका ज़िक्र किया।

आपने मुझे बुलाकर मेरे इस अमल की बड़ी तारीफ़ की और फ़रमाया, अल्लाह ने तुम्हारे लिए हर इंसान के बदले में इतना-इतना सवाब लिख दिया है।

रिवायत करने वाले अब्दुर्रहमान कहते हैं कि मुझे वह सवाब भूल गया, फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुम्हें एक तहरीर लिख देता हूं और मेरे बाद जो मुसलमानों के इमाम होंगे, उनको तुम्हारे बारे में वसीयत कर देता हूं। चुनांचे आपने वह तहरीर लिखवा कर उस पर मुहर लगाई और मुझे दे दी और मुझसे फ़रमाया, सुबह की नमाज़ पढ़कर किसी से बात करने से पहले सात बार—

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِىْ مِنَ النَّارِ.

'अल्लाहुम-म अजिरनी मिनन्नारि०' पढ़ा करो। अगर तुम उस दिन मर गए, तो अल्लाह तुम्हारे लिए आग से पनाह लिख देंगे और मग़रिब की नमाज़ पढ़कर किसी से बात करने से पहले—

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِىْ مِنَ النَّارِ.

'अल्लाहुम-म अजिरनी मिनन्नारि०' सात बार पढ़ा करो। अगर तुम उस रात मर गए तो अल्लाह तुम्हारे लिए आग से पनाह लिख देंगे। जब आपका इंतिक़ाल हो गया, तो मैंने वह तहरीर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को दी। उन्होंने उसकी मुहर तोड़कर उसे पढ़ा और (हुज़ूर सल्ल० के लिखने के मुताबिक़) उन्होंने मुझे माल दिया और फिर उस पर मुहर लगा दी।

फिर मैं वह तहरीर हज़रत उमर रज़ि० के (ज़माने में उनके) पास लाया। उन्होंने भी ऐसा ही किया।

फिर मैं वह तहरीर लेकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के (ज़माने में उनके) पास आया। उन्होंने भी ऐसा ही किया। मुस्लिम बिन हारिस फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ि० की ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत हारिस का इन्तिक़ाल हो गया, तो हुज़ूर सल्ल० की वह तहरीर

हमारे पास थी, यहां तक कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ख़लीफ़ा बने। उन्होंने हमारे इलाक़े के गवर्नर को लिखा कि मुस्लिम बिन हारिस बिन मुस्लिम तमीमी के बाप हारिस को हुज़ूर सल्ल० ने जो तहरीर लिखकर दी थी, मुस्लिम को उस तहरीर के साथ मेरे पास भेजो, चुनांचे वह तहरीर लेकर मैं उनके पास गया। उन्होंने उसे पढ़ा और (हुज़ूर सल्ल० के लिखे के मुताबिक़) मुझे माल दिया और उस पर मुहर लगा दी।[1]

हज़रत ज़ोहरी कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पन्द्रह आदमियों की जमाअत में हज़रत काब बिन उमैर ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा। जब ये लोग शाम देश की जगह ज़ात अतलाह पहुंचे, तो उन्होंने वहां काफ़िरों की बहुत बड़ी तायदाद को पाया। इन लोगों ने उन काफ़िरों को इस्लाम की दावत दी, जिसे उन्होंने क़ुबूल न किया, बल्कि उन्होंने तीर बरसाने शुरू कर दिए। सहाबा ने यह देखकर उनसे बड़ी ज़ोरदार लड़ाई लड़ी, यहां तक कि वे सब शहीद हो गए। इन शहीदों में सिर्फ़ एक घायल आदमी ज़िंदा बच गया, जो रात के अंधेरे में किसी तरह चलकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच गया (जिसने हुज़ूर सल्ल० को सारी कारगुज़ारी सुनाई, इस पर) हुज़ूर सल्ल० ने इन काफ़िरों की ओर फ़ौज भेजने का इरादा फ़रमाया, लेकिन आपको पता चला कि वे काफ़िर वहां से किसी और जगह चले गए हैं। (इसलिए वह फ़ौज न भेजी)[2]

हज़रत ज़ोहरी फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उमरतुल क़ज़ा से ज़िलहिज्जा 07 हि० को (मदीना) वापस तशरीफ़ लाए, तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत इब्ने अबिल औजा सुलमी रज़ियल्लाहु अन्हु को पचास सवारों की जमाअत देकर भेजा। एक जासूस ने जाकर अपनी क़ौम को इन लोगों की ख़बर दी और उनसे डराया। वे बहुत बड़ी तायदाद में जमा हो गए। जब हज़रत इब्ने अबिल

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 28, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 162
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 248, तबक़ात, भाग 2, पृ० 127, इसाबा, भाग 3, पृ० 301

औजा वहां पहुंचे, तो वे लोग पूरी तैयारी किए हुए थे।

जब सहाबा रज़ि० ने उनकी इस बड़ी तायदाद को देखा, तो (बे-ख़ौफ़ होकर) उनको इस्लाम की दावत दी। उन लोगों ने सहाबा रज़ि० की बात को न सुना और कहा कि तुम जिस (दीन) की दावत दे रहे हो, हमें उसकी कोई ज़रूरत नहीं है और (यह कहकर उन्होंने सहाबा पर हमला कर दिया) उन पर तीर फेंकने लगे और उन दुश्मनों की मदद में हर ओर से लोग आने लगे और उन्होंने उन सहाबा को हर ओर से घेर लिया। सहाबा ने बड़ी हिम्मत से उनका मुक़ाबला किया और ख़ूब ज़ोर-शोर से उनसे लड़ाई लड़ी, यहां तक कि अक्सर सहाबा शहीद हो गए और ख़ुद हज़रत इब्ने अबिल औजा बहुत ज़्यादा घायल हुए, लेकिन ज़िंदा रह जाने वाले अपने बाक़ी साथियों को लेकर सफ़र सन् 08 हि० की पहली तारीख़ को वह किसी तरह मदीना पहुंच गए।[1]

सहाबा किराम रज़ि० का हज़रत अबूबक्र रज़ि० के ज़माने में लड़ाई के मैदान में अल्लाह और रसूल की तरफ़ दावत देना और हज़रत अबूबक्र रज़ि० का अपने ज़िम्मेदारों को इसकी ताकीद करना

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने शाम की ओर फ़ौज भेजी और उनका अमीर हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान रज़ि० और हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० और हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ि० को बनाया। जब ये फ़ौजें चलीं, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० इन फ़ौजों के ज़िम्मेदारों के साथ उन्हें विदा करने के लिए सनीयतुल विदाअ तक पैदल गए। उन सरदारों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा! आप पैदल चल रहे हैं और हम सवार हैं?

उन्होंने कहा, मैं सवाब की नीयत से ये कुछ क़दम अल्लाह के रास्ते में उठा रहा हूं। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० उनको हिदायतें देने लगे और फ़रमाया, मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की ताकीद करता हूं। अल्लाह

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 235, तबक़ात, भाग 2, पृ० 123

के रास्ते में जिहाद करो और जो अल्लाह को न माने, उससे लड़ो, क्योंकि अल्लाह अपने दीन का मददगार है और ग़नीमत के माल में ख़ियानत न करना और वायदों को तोड़ना नहीं और बुज़दिली न दिखाना और ज़मीन में फ़साद न फैलाना, और तुम्हें जो हुक्म दिया जाए, उसके ख़िलाफ़ न करना। जब तक़्दीरे ख़ुदावन्दी से मुश्रिक दुश्मन से तुम्हारा सामना हो, तो उसे तीन बातों की दावत देना। अगर वे तुम्हारी बातें मान लें, तो तुम उनसे क़ुबूल कर लेना और रुक जाना—

(सबसे पहले) उनको इस्लाम की दावत दो, अगर वे इसे मान लें तो तुम उनसे उसे क़ुबूल कर लो और उनसे (लड़ाई करने से) रुक जाओ, फिर उनसे कहो कि वे अपना वतन छोड़कर मुहाजिरों के वतन चले जाएं। अगर वे ऐसा कर लें तो उन्हें बताओ कि उनको वे तमाम हक़ मिलेंगे जो मुहाजिरों को मिले हुए हैं और उन पर वे तमाम ज़िम्मेदारियां डाली जाएंगी, जो मुहाजिरों पर हैं और अगर वे इस्लाम में दाख़िल हो जाएं और अपने वतन में ही रहना पसन्द करें और मुहाजिरों के वतन न आना चाहें, तो उन्हें बता देना कि उनके साथ देहात में रहने वाले मुसलमानों वाला मामला होगा और उन पर अल्लाह के वे तमाम हुक्म लागू होंगे जो तमाम ईमान वालों पर अल्लाह ने फ़र्ज़ फ़रमाए हैं और मुसलमानों के साथ जिहाद में शिर्कत किए बग़ैर उन्हें फ़ै और ग़नीमत के माल में से कुछ नहीं मिलेगा और अगर इस्लाम क़ुबूल करने से वे इंकार करें तो उन्हें जिज़या अदा करने की दावत दो। अगर वे उसे मान जाएं तो तुम उनसे उसे क़ुबूल कर लो और उनसे (लड़ाई लड़ने से) रुक जाओ और अगर वे (जिज़या देने से भी) इंकार कर दें तो अल्लाह से मदद तलब करके उनसे लड़ो। ख़जूर के किसी पेड़ को बर्बाद न करना और न उसे जलाना और किसी जानवर की टांगें न काटना और न किसी फलदार पेड़ को काटना और न (उनकी) किसी इबादतगाह को गिराना और बच्चों और बूढ़ों और औरतों को क़त्ल न करना।

तुम ऐसे लोगों को भी पाओगे जो ख़लवत ख़ानों (एकान्त गृहों) के गोशों (कोनों) में पड़े होंगे, उन्हें उनकी हालत पर छोड़ देना कि वे अपने काम में लगे रहें और तुम्हें ऐसे लोग भी मिलेंगे जिनके सरों में शैतान ने

अपने घोंसले बना रखे होंगे। (यानी वे हर वक़्त शैतानी हरकतों में लगे रहते होंगे और गुमराह करने के लिए शैतानी मंसूबे चलाते होंगे) ऐसे लोगों की गरदनें उड़ा देना।[1]

हज़रत उर्वः फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को मुर्तद (इस्लाम से फिरे) अरबों की तरफ़ भेजा, तो उन्हें यह हिदायतें दीं कि वह उन मुर्तद लोगों को इस्लाम की दावत दें और उनको इस्लाम के फ़ायदे और ज़िम्मेदारियां बताएं और उनके दिल में उनकी हिदायत की पूरी तलब हो। उन मुर्तद लोगों में से जो भी इस दावत को क़ुबूल करेगा, वह काला हो या गोरा, उसका इस्लाम क़ुबूल कर लिया जाएगा, इसलिए कि जो आदमी अल्लाह का इंकार करता है और कुफ़्र अख़्तियार करता है, उससे अल्लाह पर ईमान लाने के लिए लड़ाई लड़ी जाती है, इसलिए जिसे इस्लाम की दावत दी गई और उसने इस्लाम को क़ुबूल कर लिया और उसने अपने ईमान को सच्चा कर दिखाया, तो अब उस पर कोई पकड़ नहीं होगी और अल्लाह ख़ुद उससे हिसाब लेंगे और जो मुर्तद इस्लाम की दावत को क़ुबूल न करे, हज़रत ख़ालिद उसे क़त्ल कर दें।[2]

हज़रत सालेह बिन कैसान कहते हैं कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हियरा में पड़ाव डाला, तो हियरा के इज़्ज़तदार शरीफ़ लोग क़बीसा बिन इयास बिन हय्या ताई के साथ शहर से निकल कर हज़रत ख़ालिद के पास आए। क़बीसा को किसरा ने नोमान बिन मुंज़िर के बाद हियरा का गवर्नर बनाया था।

चुनांचे हज़रत ख़ालिद ने क़बीसा और उसके साथियों से कहा, मैं तुम्हें अल्लाह और इस्लाम की तरफ़ दावत देता हूं। अगर तुम उसे क़ुबूल कर लो तो तुम मुसलमान समझे जाओगे और जो हक़ मुसलमानों को हासिल हैं, वे तुम्हें मिलेंगे और जो ज़िम्मेदारियां मुसलमानों पर आती हैं, वे तुम पर होंगी। अगर तुम (इस्लाम क़ुबूल करने से) इंकार

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 85, कंज़ुल उम्माल भाग 2, पृ० 295, 296
2. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 201, कंज़, भाग 3, पृ० 143

करो, तो फिर जिज़्या अदा करो और अगर इससे भी इंकार करो, तो मैं तुम्हारे पास ऐसे लोगों को लेकर आया हूं कि तुम्हें ज़िंदा रहने का जितना शौक़ है, उनको इससे कहीं ज़्यादा मरने का शौक़ है। हम तुमसे लड़ेंगे, यहां तक कि अल्लाह ही हमारे और तुम्हारे बीच फ़ैसला कर दे।

क़बीसा ने हज़रत ख़ालिद से कहा, हमें आपसे लड़ने की ज़रूरत नहीं है। हम अपने दीन पर क़ायम रहेंगे और आपको हम जिज़्या देंगे। चुनांचे हज़रत ख़ालिद ने उनसे नव्वे हज़ार दिरहम पर समझौता कर लिया।[1]

इसी वाक़िए को बैहक़ी ने इब्ने इस्हाक़ से इस तरह बयान किया है कि हज़रत ख़ालिद ने इनसे कहा कि मैं तुम्हें इस्लाम की ओर और इस बात की ओर दावत देता हूं कि तुम कलिमा शहादत—

اشهد ان لا اله الا الله وحده وان محمدا عبده ورسوله

अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू व अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू॰ पढ़ लो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और मुसलमानों के तमाम हुक्मों का इक़रार करो, इस तरह तुम्हें भी वे हक़ हासिल हो जाएंगे, जो मुसलमानों को हासिल हैं और तुम पर भी वही ज़िम्मेदारियां आएंगी, जो मुसलमानों पर हैं।

हानी ने पूछा कि अगर मैं इसे न चाहूं तो फिर?

हज़रत ख़ालिद ने कहा तुम इससे इंकार करते हो, तो फिर तुम अपने हाथों जिज़्या अदा करो।

उसने कहा, अगर हम इससे भी इंकार कर दें तो?

हज़रत ख़ालिद ने कहा, अगर तुम इससे भी इंकार करते हो, तो मैं तुमको एक ऐसी क़ौम के ज़रिए रौंद डालूंगा कि उनको मौत इससे ज़्यादा प्यारी है जितनी तुमको ज़िंदगी प्यारी है।

हानी ने कहा, हमें एक रात की मोहलत दें, ताकि हम इस बारे में विचार कर सकें।

---

1. तबरी भाग 2, पृ॰ 551

हज़रत ख़ालिद ने कहा, हां, तुम्हें मोहलत है।

सुबह हानी ने आकर कहा, हमने यह फ़ैसला किया है कि हम जिज़्या अदा करेंगे, आप आएं, हम आपसे समझौता कर लेते हैं। इसके बाद पूरा क़िस्सा बयान किया।[1]

जब यरमूक की लड़ाई में फ़ौजें आमने-सामने आईं, तो हज़रत अबू उबैदा रज़ि० और हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु आगे बढ़े और उनके साथ हज़रत ज़रार बिन अज़वर और हज़रत हारिस बिन हिशाम और हज़रत अबू जन्दल बिन सुहैल रज़ि० भी थे। उन्होंने ऊंची आवाज़ से कहा, हम तुम्हारे अमीर से मिलना चाहते हैं। उनका अमीर तज़ारुक़ था। उसने इन लोगों को दाख़िले की इजाज़त दे दी।

वह रेशमी ख़ेमे में बैठा हुआ था। सहाबा ने कहा, हमारे लिए इस ख़ेमे में दाख़िल होना हलाल नहीं है। उसने कहा कि इन लोगों के लिए रेशमी फ़र्श बिछाया जाए।

इन लोगों ने कहा, हम इस पर नहीं बैठ सकते हैं। आख़िरकार वह सहाबा रज़ि० के साथ वहां बैठा, जहां बैठना सहाबा रज़ि० ने पसन्द किया और दोनों फ़रीक़ सुलह पर राज़ी हो गए। सहाबा रज़ि० उनको अल्लाह की ओर दावत देकर वापस आ गए, लेकिन यह सुलह पूरी न हो सकी। (लड़ाई हो ही गई)[2]

वाक़िदी वग़ैरह कहते हैं कि (यरमूक की लड़ाई के दिन) जरजा नामी एक बड़ा सरदार दुश्मनों की सफ़ में से बाहर आया और उसने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को पुकारा। हज़रत ख़ालिद उसके पास आए और इतने क़रीब आए कि दोनों के घोड़ों की गरदनें मिल गईं।

जरजा ने कहा, ऐ ख़ालिद! (मेरे सवालों का) जवाब दें और आप मुझसे सच बोलें, झूठ न बोलें, क्योंकि ऊंचे अख़्लाक़ का मालिक झूठ नहीं बोला करता है और मुझे धोखा न देना क्योंकि शरीफ़ आदमी अपने पर भरोसा करने वाले को धोखा नहीं दिया करता है। मैं अल्लाह

---

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 187
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 187

की क़सम देकर पूछता हूं कि क्या अल्लाह ने तुम्हारे नबी पर आसमान से कोई तलवार उतारी है जो उन्होंने तुम्हें दी है, तुम वह तलवार जिस पर भी उठाते हो, उसे हरा देते हो?

हज़रत ख़ालिद ने कहा, नहीं।

उसने कहा, फिर आपको 'अल्लाह की तलवार' क्यों कहा जाता है?

हज़रत ख़ालिद ने कहा, बात यह है कि अल्लाह ने हम में अपना नबी भेजा, उसने हमें दावत दी। हम सब ने उससे नफ़रत की और उससे दूर भागे। फिर इनमें से कुछ लोगों ने उसे सच्चा मान लिया और उसकी पैरवी की और कुछ झुठलाने और दूर रहने पर अड़े रहे। मैं भी उन लोगों में था जो उनको झुठलाने और उनसे दूर रहने पर अड़े हुए थे। फिर अल्लाह ने हमारे दिलों और पेशानियों को पकड़कर हमें उनके ज़रिए से हिदायत दे दी और हम आपसे बैअत हो गए। फिर आपने मुझसे फ़रमाया, तुम अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार हो, जिसको अल्लाह ने मुश्रिकों पर सौंता है और आपने मेरे लिए मदद की दुआ फ़रमाई, इस वजह से मेरा नाम सैफुल्लाह (अल्लाह की तलवार) पड़ गया और मैं मुश्रिकों पर मुसलमानों में सबसे ज़्यादा भारी हूं।

जरजा ने पूछा, ऐ ख़ालिद! तुम किस चीज़ की दावत देते हो?

हज़रत ख़ालिद ने कहा, हम इस बात की दावत देते हैं कि कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू० पढ़ो और वह जो कुछ अल्लाह के पास से लाए हैं, उसका इक़रार करो।

जरजा ने कहा, जो तुम्हारी यह बात न माने, तो फिर?

हज़रत ख़ालिद ने कहा, वह जिज़या अदा करे, हम उसकी (हर तरह) हिफ़ाज़त करेंगे।

जरजा ने पूछा, अगर वह जिज़या न दे तो?

हज़रत ख़ालिद ने कहा, हम उससे लड़ने का एलान करके लड़ाई

शुरू कर देते हैं।

जरजा ने कहा, जो आदमी तुम्हारी बात मानकर आज तुम्हारे दीन में दाख़िल हो, उसका तुम्हारे नज़दीक क्या दर्जा होगा ?

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, अल्लाह के फ़र्ज़ किए हुए हुक्मों में हम सब बराबर हैं, चाहे कोई सरदार हो या आम इंसान, पहले इस्लाम लाया हो या बाद में।

जरजा ने पूछा कि जो आज तुममें दाख़िल हो, उसे भी तुम्हारे जैसा अज्र व सवाब मिलेगा ?

हज़रत ख़ालिद ने कहा, हां, बल्कि वह तो हमसे अफ़ज़ल है।

उसने पूछा कि जब तुम उससे पहले इस्लाम लाए हो, तो वह तुम्हारे बराबर कैसे हो सकता है ?

हज़रत ख़ालिद ने कहा, हमें तो हालात से मजबूर होकर इस्लाम क़ुबूल करना पड़ा। हम अपने नबी से उस वक़्त बैअत हुए जबकि वह हमारे बीच रहते थे और ज़िंदा थे। उनके पास आसमान से ख़बरें आती थीं। वह हमें क़ुरआन पढ़कर सुनाते थे और हमें मोजज़े दिखाते थे। जितना कुछ हमने देखा और सुना है, उतना कुछ जो भी देख ले और सुन ले, उसे मुसलमान होना ही चाहिए और उसे ज़रूर (हुज़ूर सल्ल०) से बैअत होना ही चाहिए। हमने जो कुदरत की अजीब-अजीब बातें देखीं, वे तुमने नहीं देखीं और हमने जो नबी की दलीलें सुनीं, वह तुमने नहीं सुनीं, इसलिए तुममें से जो भी अब सच्ची नीयत से इस दीन में दाख़िल होगा, वह हमसे अफ़ज़ल है।

जरजा ने कहा, अल्लाह की क़सम ! आपने मुझसे सच-सच कह दिया है और मुझे धोखा नहीं दिया।

हज़रत ख़ालिद ने कहा, अल्लाह की क़सम ! मैंने तुमसे सच ही कहा और अल्लाह गवाह है कि मैंने तुम्हारे हर सवाल का जवाब ठीक दिया है।

यह सुनकर जरजा ने अपनी ढाल को पलट दिया (जो लड़ाई न लड़ने की ओर इशारा है) और हज़रत ख़ालिद के साथ हो लिए और

उनसे कहा, आप मुझे इस्लाम सिखाएं।

हज़रत ख़ालिद उन्हें अपने ख़ेमें में ले गए और उन पर मश्क से पानी डालकर ग़ुस्ल कराया, फिर हज़रत ख़ालिद ने उनको दो रक्अत नमाज़ पढ़ाई। जब हज़रत जरजा हज़रत ख़ालिद के साथ चल पड़े तो रूमी यह समझे कि हज़रत ख़ालिद ने हमारे सरदार के साथ कोई चाल चली है, इसलिए इस ज़ोर से अचानक मुसलमानों पर हमला किया कि एक बार तो मुसलमानों के क़दम उखड़ गए, सिर्फ़ मुहामिया नामी हिफ़ाज़ती दस्ता अपनी जगह जमा रहा, जिसके ज़िम्मेदार हज़रत इक्रिमा बिन अबी जह्ल रज़ि० और हज़रत हारिस बिन हिशाम रज़ि० थे।

रूमी मुसलमानों के बीच घुसे हुए थे। यह देखकर हज़रत ख़ालिद अपने घोड़े पर सवार हुए और हज़रत जरजा भी उनके साथ थे। मुसलमानों ने एक दूसरे को पुकारा, जिस पर सारे मुसलमान वापस आकर जमा हो गए और रूमी अपने मोर्चों को वापस चले गए।

हज़रत ख़ालिद मुसलमानों को धीरे-धीरे लेकर रूमियों की ओर बढ़े, यहां तक कि तलवारें तलवारों से टकराने लग गईं। दोपहर से सूरज डूबने तक हज़रत ख़ालिद और हज़रज जरजा बराबर रूमियों पर तलवार चलाते रहे। मुसलमानों ने ज़ुहर और अस्त्र की नमाज़ें इशारे से पढ़ीं और इसी में हज़रत जरजा काफ़ी ज़ख़्मी हो गए और उन्होंने हज़रत ख़ालिद के साथ जो दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, उसके अलावा और कोई नमाज़ न पढ़ सके और उसी दिन शहीद हो गए।[1]

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने एक दिन लोगों में खड़े होकर बयान किया और मुसलमानों को अरब के इलाक़े छोड़ कर अजम के इलाक़े में जाने पर उभारा और कहा कि अजम के इलाक़ों में जो खाने-पीने की चीज़ों का बहाव है वह तुम्हें नज़र नहीं आता। अल्लाह की क़सम! अगर हम लोगों पर जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह और इस्लाम की दावत देना ज़रूरी न होता और सिर्फ़ खाना खाना ही हमारे सामने होता, तो भी मेरी राय यही थी कि हम लड़ाई लड़कर उस हरे-भरे इलाक़े को

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 12, इसाबा, भाग 1, पृ० 260

हासिल कर लें और आप लोग जिस जिहाद के लिए निकले हुए हैं, उसको छोड़कर जो लोग (अपने घरों में) रह गए हैं, भूख और तंगदस्ती उनके हिस्से में रहे।[1]

सहाबा किराम का हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में लड़ाई के मैदान में अल्लाह और रसूल की ओर दावत देना और हज़रत उमर रज़ि० का अपने अमीरों को उसकी ताकीद करना

हज़रत यज़ीद बिन अबी हबीब कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को यह ख़त लिखा कि मैं पहले लिख चुका हूं कि लोगों को तीन दिन तक इस्लाम की दावत देना। जो लड़ाई शुरू होने से पहले तुम्हारी दावत को क़ुबूल कर ले, वह मुसलमानों का एक आदमी समझा जाएगा। उसे वे तमाम हक़ हासिल होंगे जो बाक़ी तमाम मुसलमानों को हासिल हैं और उसका इस्लाम में हिस्सा है। (इसलिए उसे ग़नीमत के माल में से हिस्सा मिलेगा) और जो लड़ाई ख़त्म होने के बाद या हारने के बाद तुम्हारी दावत क़ुबूल करे (और बाद में मुसलमान हो) उसका माल मुसलमानों के लिए ग़नीमत का माल बनेगा, क्योंकि मुसलमानों ने उसके मुसलमान होने से पहले उसके माल पर क़ब्ज़ा कर लिया है। यह मेरा हुक्म है और यही तुम्हें ख़त लिखने की ग़रज़ है।[2]

हज़रत अबुल बख़्तरी कहते हैं कि मुसलमानों की एक फ़ौज के अमीर हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उन्होंने फ़ारिस के एक क़िले का घेराव किया। मुसलमानों ने कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! (यह हज़रत सलमान का उपनाम है) क्या हम इन पर हमला न कर दें?

उन्होंने कहा, मुझे इनको दावत देने दो, जैसे मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुश्मनों को दावत देते हुए सुना। चुनांचे उस

---

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 345, इब्ने जरीर, भाग 2, पृ० 559
2. कंज़, भाग 2, पृ० 297

क़िले वालों से हज़रत सलमान ने कहा, मैं तुममें का एक फ़ारसी आदमी हूं। तुम ख़ुद देख रहे हो कि अरब मेरी किस तरह मान रहे हैं। अगर तुम मुसलमान हो जाओगे, तो तुम्हें भी वे हक़ मिलेंगे जो हमें हासिल हैं और तुम पर वही ज़िम्मेदारियां आएंगी जो हम पर हैं और अगर तुम अपने दीन पर ही रहना चाहो, तो हम तुम्हें तुम्हारे दीन पर रहने देंगे और तुम मातहत होकर रियाया बनकर अपने हाथों हमें जिज़्या देना।

हज़रत सलमान ने फ़ारसी में उनसे यह कहा (गो हम तुम्हें कुछ न कहेंगे, लेकिन) तुम किसी इज़्ज़त के हक़दार न होगे और अगर तुम इससे भी इंकार करते हो तो हम तुमसे (लड़ाई के मैदान में) बराबर-सराबर मुक़ाबला करेंगे।

उन्होंने कहा, हम ईमान भी नहीं लाते हैं और जिज़्या भी नहीं देते। हम तो तुमसे लड़ेंगे।

हज़रत सलमान के साथियों ने कहा, क्या हम इन पर हमला न कर दें?

उन्होंने कहा, अभी नहीं और उनको तीन दिन इसी तरह उन्होंने इस्लाम की दावत दी, फिर कहा, अच्छा, अब इन पर हमला करो। चुनांचे मुसलमानों ने हमला किया और उस क़िले को जीत लिया।[1]

मुस्नद अहमद और मुस्तदरक की रिवायत में इस तरह है कि चौथे दिन सुबह को हज़रत सलमान रज़ि० ने मुसलमानों को हुक्म दिया। मुसलमानों ने आगे बढ़कर हमला किया और उसे जीत लिया।[2]

अबुल बख़्तरी कहते हैं कि हज़रत सलमान फ़ारसी मुसलमानों के लिए जगह और पानी और घास खोजने वाले दस्ते के अमीर थे और मुसलमानों ने उनको फ़ारस वालों को दावत देने के लिए बात करने वाला बनाया था।

हज़रत अतीया कहते हैं कि बहुरशीर शहर वालों को दावत देने के लिए हज़रत सलमान को अमीर मुक़र्रर किया था और क़सरे अबयज़ की

1. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 378, कंज़, भाग 2, पृ० 298
2. हुलीया, भाग, पृ० 189

विजय के दिन भी उन्हीं को मुक़र्रर किया था। चुनांचे उन्होंने उनको तीन दिन तक दावत दी थी। आगे उन्होंने हज़रत सलमान के दावत देने के बारे में पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है।[1]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने हज़रत नोमान बिन मुक़र्रिन, हज़रत फ़ुरात बिन हय्यान, हज़रत हंज़ला बिन रबीअ तमीमी और हज़रत उतारिद बिन हाजिब, हज़रत अशअस बिन क़ैस, हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा और हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब रज़ि० जैसे चुनींदा लोगों की जमाअत रुस्तम को अल्लाह की ओर दावत देने के लिए भेजी। रुस्तम ने उनसे कहा कि तुम लोग क्यों आए हो ?

इन लोगों ने कहा कि हम इसलिए आए हैं कि अल्लाह ने हमसे यह वायदा किया कि तुम्हारा मुल्क हमें मिल जाएगा और तुम्हारी औरतें और बच्चे हमारे क़ैदी बनेंगे और तुम्हारे माल पर हम क़ब्ज़ा करेंगे और अल्लाह के इस वायदे पर हमें पूरा यक़ीन है।

रुस्तम एक सपना इससे पहले देख चुका था कि आसमान से एक फ़रिश्ते ने उतर कर फ़ारस के तमाम हथियारों पर एक मुहर लगा दी और वे हथियार हुज़ूर सल्ल० के हवाले कर दिए और हुज़ूर सल्ल० ने वे हथियार हज़रत उमर रज़ि० को दे दिए।

हज़रत सैफ़ अपने उस्तादों से नक़ल करते हैं कि जब दोनों फ़ौजें आमने-सामने हुई तो रुस्तम ने हज़रत साद रज़ि० को यह पैग़ाम भेजा कि वह रुस्तम के पास एक ऐसा अक़्लमंद आदमी भेजें कि मैं जो कुछ पूंछूं वह उसका जवाब दे सके, तो हज़रत साद रज़ि० ने उसके पास हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० को भेजा।

हज़रत मुग़ीरह रज़ि० रुस्तम के पास पहुंचे, तो रुस्तम ने उनसे कहा, आप लोग हमारे पड़ोसी हैं। हम आप लोगों के साथ अच्छा सुलूक करते रहे हैं और तुम्हें कभी किसी क़िस्म की तक्लीफ़ नहीं पहुंचाई है। आप लोग अपने मुल्क को वापस चले जाएं और आगे हमारे मुल्क में आप लोग तिजारत के लिए आना चाहें तो हम नहीं रोकेंगे।

---

1. इब्ने जरीर, भाग 4, पृ० 173

हज़रत मुग़ीरह रज़ि० ने कहा, दुनिया हमारा मक़्सूद नहीं है, बल्कि आख़िरत हमारा मक़्सूद है और हमें सिर्फ़ उसी की चिन्ता है। अल्लाह ने हमारी ओर एक रसूल भेजा और उससे फ़रमा दिया कि मैंने (तुम्हारे सहाबा की) इस जमाअत को उन लोगों पर मुसल्लत कर दिया है जो मेरा दीन अख़्तियार न करें। इस जमाअत के ज़रिए मैं उनसे बदला लूंगा। जब तक यह जमाअत (सहाबा) दीन का इक़रार करती रहेगी, मैं उन्हीं को ग़ालिब रखूंगा और मेरा दीन सच्चा दीन है, जो उससे मुंह मोड़ेगा, ज़रूर ज़लील होगा और जो उसे मज़बूती से थामेगा, वह ज़रूर इज़्ज़त पाएगा।

रुस्तम ने पूछा, वह दीन क्या है?

हज़रत मुग़ीरह रज़ि० ने कहा, उस दीन का वह स्तून जिसके बग़ैर उसकी कोई चीज़ सही नहीं हो सकती, वह कलिमा शहादत—

أشهد أن لا إله إلا الله وأشهد أن محمدا رسول الله

'अशहदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह' पढ़ लेना है और जो कुछ हुज़ूर सल्ल० अल्लाह के पास से लाए हैं, उसका इक़रार कर लेना है।

रुस्तम ने कहा, यह तो कितनी अच्छी बात है, इसके अलावा और क्या है?

हज़रत मुग़ीरह रज़ि० ने कहा, अल्लाह के बन्दों को बन्दों की इबादत से निकाल कर अल्लाह की इबादत में लगा देना।

रुस्तम ने कहा, यह भी अच्छी बात है, इसके अलावा और क्या है?

हज़रत मुग़ीरह रज़ि० ने कहा, तमाम इंसान हज़रत आदम की औलाद हैं, इसलिए वे मां-बाप शरीक भाई हैं।

रुस्तम ने कहा कि यह भी अच्छी बात है। अच्छा, ज़रा यह तो बताओ, अगर हम तुम्हारे दीन में दाख़िल हो जाएं तो क्या तुम हमारे मुल्क से चले जाओगे?

हज़रत मुग़ीरह ने कहा, हां अल्लाह की क़सम! फिर तुम्हारे मुल्क में सिर्फ़ तिजारत या किसी और ज़रूरत की वजह से आएंगे।

रुस्तम ने कहा, यह भी अच्छी बात है।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि जब हज़रत मुग़ीरह रुस्तम के पास से वापस चले गए तो रुस्तम ने अपनी क़ौम के सरदारों से इस्लाम की बात छेड़ी, लेकिन उन सरदारों ने पसन्द न किया और इस्लाम में दाख़िल होने से इंकार कर दिया। अल्लाह ही उनको ख़ैर से दूर करे और रुसवा करे और अल्लाह ने ऐसा कर दिया।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि रुस्तम की मांग पर हज़रत साद रज़ि० ने एक और क़ासिद (दूत) हज़रत रिबआी बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु को रुस्तम के पास भेजा। यह रुस्तम के यहां पहुंचे तो क्या देखते हैं कि उन लोगों ने रुस्तम के दरबार को सोने के काम वाले तकियों और रेशमी क़ालीनों और चमकदार याक़ूतों और क़ीमती मोतियों से और बड़ी ज़ेब व ज़ीनत से सजा रखा था और ख़ुद रुस्तम ताज और क़ीमती सामान पहने हुए था और सोने के तख़्त पर बैठा हुआ था। हज़रत रिबआी मोटे-झोटे कपड़े पहने हुए थे, तलवार और ढाल लगा रखी थी, छोटे क़द वाली घोड़ी पर सवार थे और बराबर उस पर सवार रहे, यहां तक कि क़ालीन का एक किनारा घोड़ी ने रौंद डाला, फिर उससे उतर कर उन्होंने घोड़ी को एक तकिया से बांध दिया और आगे बढ़े तो वह हथियार और ज़िरह पहने हुए थे और ख़ूद उनके सर पर रखी हुई थी तो उनसे दरबानों ने कहा, आप अपने हथियार यहां उतार दें।

हज़रत रिबआी ने कहा, मैं ख़ुद से तुम्हारे पास नहीं आया हूं, बल्कि तुम लोगों के बुलाने पर आया हूं। अगर तुम मुझे ऐसे ही आगे जाने देते हो तो ठीक है, वरना मैं यहीं से वापस चला जाता हूं।

(दरबानों ने रुस्तम से पूछा) रुस्तम ने कहा, उनको ऐसे ही आने दो। यह रुस्तम की तरफ़ अपने नेज़े से क़ालीनों पर टेक लगाते हुए आगे बढ़े और यों अक्सर क़ालीन फाड़ डाले। दरबारियों ने हज़रत रिबआी से पूछा, आप लोग यहां किस लिए आए हो?

उन्होंने कहा, अल्लाह ने हमें इसलिए भेजा है कि जिसे अल्लाह चाहे, उसे हम बन्दों की इबादत से निकालकर अल्लाह की इबादत में

लगा दें और दुनिया की तंगी से निकाल कर दुनिया की वुसअत में पहुंचा दें और दूसरे दीनों के ज़ुल्मों से निकालकर इस्लाम के अद्ल व इंसाफ़ में दाख़िल कर दें। अल्लाह ने अपना दीन देकर हमें अपनी मख़्लूक़ की ओर भेजा है, ताकि हम उनको इस दीन की दावत दें। जो इस दीन को अख़्तियार कर लेगा, हम उससे उसे क़ुबूल कर लेंगे और वापस चले जाएंगे और जो इस दीन को अख़्तियार करने से इंकार करेगा, हम उससे लड़ते रहेंगे, यहां तक कि अल्लाह का वायदा हमसे पूरा हो जाए।

उन्होंने पूछा कि अल्लाह का वह वायदा क्या है?

हज़रत रिबओ ने कहा कि जो दीन का इंकार करने वालों से लड़ते हुए मरेगा, उसे जन्नत मिलेगी और जो बाक़ी रहेगा उसे जीत और कामियाबी मिलेगी।

रुस्तम ने कहा, मैंने तुम्हारी बात सुन ली है, क्या तुम कुछ मोहलत दे सकते हो? ताकि हम भी ग़ौर कर लें और तुम भी ग़ौर कर लो।

हज़रत रिबओ ने कहा, हां, कितनी मोहलत चाहते हो? एक दिन या दो दिन की?

उसने कहा, नहीं, हमें तो ज़्यादा दिनों की मोहलत चाहिए, क्योंकि हम अपनी शूरा के लोगों और अपनी क़ौम के सरदारों से पत्र-व्यवहार करेंगे।

हज़रत रिबओ ने कहा, जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे लिए यह तरीक़ा मुक़र्रर फ़रमाया है कि जब दुश्मन से सामना हो जाए, तो हम उसे तीन दिन से ज़्यादा मोहलत न दें (इसलिए तुम्हें तीन दिन की मोहलत है, इस बीच) तुम अपने और अपनी पब्लिक के बारे में विचार कर लो और मोहलत के ख़त्म होने पर तीन बातों में से कोई एक बात अख़्तियार कर लेना।

रुस्तम ने कहा, क्या तुम मुसलमानों के सरदार हो?

उन्होंने कहा, नहीं, लेकिन मुसलमान एक जिस्म की तरह हैं। आम मुसलमान भी पनाह देगा, तो वह उनके अमीर को माननी पड़ेगी। इसके

बाद हज़रत रिबअी दरबार से वापस चले गए।

रुस्तम ने अपनी क़ौम के सरदारों को इकट्ठा करके कहा, क्या तुमने उस आदमी की बातों से ज़्यादा वज़नी और दो टूक बातें सुनी हैं?

उन्होंने कहा, अल्लाह की पनाह इस बात से कि तुम उसकी किसी चीज़ की ओर झुक जाओ और अपना दीन छोड़कर (नऊज़ुबिल्लाह) इस कुत्ते (के दीन) को अपना लो। क्या तुमने उसके कपड़े नहीं देखे?

रुस्तम ने कहा, तुम्हारा नाश हो, कपड़ों को मत देखो, समझदारी, बात करने का अंदाज़ और सीरत को देखो, अरब के लोग कपड़े और खाने का ख़ास एहतमाम नहीं करते हैं। हां, ख़ानदानी सिफ़तों की बड़ी हिफ़ाज़त करते हैं। फिर अगले दिन उन्होंने एक और आदमी के भेजने की मांग की।

हज़रत साद ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन मिह्सन को भेजा। उन्होंने हज़रत रिबअी जैसी बात की। तीसरे दिन हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा को भेजा। उन्होंने अच्छे अंदाज़ में तफ़्सील से बात की। रुस्तम ने हज़रत मुग़ीरह से (मज़ाक़ उड़ाते हुए) कहा, तुम लोग जो हमारे इलाक़े में दाखिल हो गए हो, तो तुम्हारी मिसाल एक मक्खी जैसी है, जिसने शहद देखा, तो कहने लगी, जो मुझे इस शहद तक पहुंचा देगा, उसे दो दिरहम दूंगी और जब वह मक्खी शहद पर गिरी तो उसमें फंसने लगी, तो वह अब उससे निकलने की कोशिश करने लगी, लेकिन निकल न सकी और कहने लगी, जो मुझे इसमें से निकालेगा, उसे चार दिरहम दूंगी और तुम लोग तो उस कमज़ोर दुबली-पतली लोमड़ी की तरह से हो, जिसे अंगूरों के बाग़ की चारदीवारी में एक छोटा-सा सूराख़ नज़र आया। उस सूराख़ से वह अन्दर घुस गई। बाग़ वाले ने देखा कि बेचारी बड़ी कमज़ोर और दुबली-पतली है, उसे उस पर तरस आ गया। उसने उसे वहीं रहने दिया। जब (बाग़ में रहकर खा-पीकर) वह मोटी हो गई तो उसने बाग़ का बहुत नुक़्सान किया। बाग़ वाला उसे मारने के लिए डंडे और बहुत-से नवजवान ले आया। लोमड़ी मोटी हो चुकी थी (वह सूराख़ तंग था) उसने सूराख़में से बहुत निकलना चाहा, लेकिन निकल न सकी। आख़िर बाग़ वाले ने उसे मार डाला। तुम्हें भी ऐसे ही हमारे

इलाक़े से निकाला जाएगा। फिर ग़ुस्से के मारे भड़क उठा और सूरज की क़सम खाकर कहा, कल को मैं तुम सबको क़त्ल कर दूंगा।

हज़रत मुग़ीरह ने कहा, तुम्हें पता चल जाएगा।

फिर रुस्तम ने हज़रत मुग़ीरह से कहा, मैं कह चुका हूं कि तुम लोगों को एक-एक जोड़ा दे दिया जाए और तुम्हारे अमीर को हज़ार दीनार और एक जोड़ा और एक सवारी दे दी जाए। (ये चीज़ें ले लो) और फिर तुम हमारे यहां से चले जाओ।

हज़रत मुग़ीरह ने कहा, तुम्हें अब इसका ख़्याल आ रहा है? हम तो तुम्हारे मुल्क को कमज़ोर कर चुके हैं और तुम्हें बेइज़्ज़त कर चुके हैं और हम एक अर्से से तुम्हारे इलाक़े में आए हुए हैं और हम तुम्हें अपना मातहत बनाकर तुमसे जिज़या लेंगे, बल्कि हम तुम्हें ज़बरदस्ती अपना ग़ुलाम बना लेंगे। हज़रत मुग़ीरह ने जब ये बातें कहीं, तो वह ग़ुस्से से और भड़क उठा।[1]

हज़रत अबू वाइल कहते हैं, हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमानों को साथ लेकर चले, यहां तक कि क़ादसिया नामी जगह पर पड़ाव डाला। मुझे पूरी तरह याद नहीं, लेकिन हम लोग शायद सात या आठ हज़ार से ज़्यादा नहीं होंगे और मुश्रिकों की तायदाद तीस हज़ार थी।

इस रिवायत में तो यही तायदाद है लेकिन अल बिदाया में सैफ़ वग़ैरह की रिवायत में मुश्रिकों की तायदाद अस्सी हज़ार बताई गई है और एक रिवायत में है कि रुस्तम की फ़ौज एक लाख बीस हज़ार थी, जबकि अस्सी हज़ार की फ़ौज उसके पीछे थी। रुस्तम के साथ तैंतीस हाथी थे, जिनमें साबूर एक सफ़ेद हाथी भी था, जो सब हाथियों से बड़ा था और सबसे आगे था और तमाम हाथी उससे मानूस थे। अल-बिदाया की रिवायत ख़त्म हो गई और उस जैसी और तायदाद भी आई है।

रुस्तम की फ़ौज वालों ने (हमसे) कहा, न तुम्हारे पास क़ूवत है, न

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 38, तबरी, भाग 4, पृ० 105

ताक़त है और न हथियार, तुम लोग यहां क्यों आए हो? वापस चले जाओ।

हमने कहा, हम तो वापस नहीं जाएंगे। और वे हमारे तीरों को देखकर हंसते थे और दूक-दूक कहकर (अपनी भाषा में) हमारे तीरों को चर्खे का तकला बता रहे थे। जब हमने उनकी बात मानकर वापस जाने से इंकार कर दिया तो, उन्होंने कहा, अपने समझदार आदमियों में से एक समझदार आदमी हमारे पास भेजो, जो हमें खोलकर बताए कि आप लोग यहां क्यों आए हैं?

हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा ने कहा, मैं (इनके पास जाता हूं), चुनांचे वह दरिया पार करके उनके पास गए और तख़्त पर रुस्तम के पास बैठ गए। इस पर दरबार वाले गुर्राए और चिल्लाए। हज़रत मुग़ीरह ने कहा, इस तख़्त पर बैठने से मेरा दर्जा न बढ़ा, न घटा, न ही तुम्हारे सरदार का बढ़ा या घटा।

रुस्तम ने कहा, तुमने ठीक कहा, बताओ तुम लोग यहां क्यों आए हो?

हज़रत मुग़ीरह ने कहा, हमारी क़ौम शर और गुमराही में पड़ी हुई थी। अल्लाह ने हमारी ओर एक नबी भेजा। उनके ज़रिए से अल्लाह ने हमें हिदायत दी और हम लोगों को उनके हाथों बहुत रोज़ी दी और इस रोज़ी में वह दाना भी था जो इस इलाक़े में पैदा होता है। जब वह दाना हम लोगों ने खाया और अपने घरवालों को खिलाया तो हमारे घर वालों ने कहा कि अब हम इन दानों के बिना नहीं रह सकते। हमें उस इलाक़े में ले चलो, ताकि हम यह दाना खाया करें।

रुस्तम ने कहा, अब तो हम तुम्हें ज़रूर क़त्ल करेंगे।

हज़रत मुग़ीरह ने कहा, अगर तुम हमें क़त्ल करोगे तो हम जन्नत में जाएंगे और अगर हम तुम्हें कत्ल करेंगे तो तुम जहन्नम में जाओगे। (अगर तुम इस्लाम कुबूल नहीं करते हो, तो लड़ो नहीं) बल्कि जिज़या दे दो।

जब हज़रत मुग़ीरह ने यह कहा, तुम जिज़या दे दो तो वे सब गुर्राए

और चीखे और कहने लगे, हमारी-तुम्हारी सुलह नहीं हो सकती।

हज़रत मुग़ीरह ने कहा (लड़ने के लिए) तुम दरिया पार करके हमारे पास आओगे या हम तुम्हारे पास दरिया पार करके आएंगे?

रुस्तम ने कहा, हम दरिया पार करके आएंगे। चुनांचे मुसलमान पीछे हट गए तो रुस्तम के लश्कर ने दरिया पार कर लिया। सहाबा रज़ि० ने इस ज़ोर से उन पर हमला किया कि उन्हें हरा दिया।[1]

हज़रत मुआविया बिन क़ुर्रा रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़ादसिया की लड़ाई के दिन हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० को फ़ारस के सेनापति (रुस्तम) के पास भेजा गया। उन्होंने कहा, मेरे साथ दस आदमी और भेजो। चुनांचे उनके साथ दस आदमी और भेजे गए। उन्होंने अपने कपड़े ठीक किए और ढाल उठाई और चल दिए, यहां तक कि उस सेनापति के पास पहुंच गए। (वहां पहुंचकर) उन्होंने (अपने साथियों से) कहा, मेरे लिए ढाल बिछा दो। (उन्होंने बिछा दी) वे उस पर बैठ गए।

उस मोटे-ताज़े अजमी काफ़िर ने कहा, ऐ अरब के रहने वालो! मैं जानता हूं कि तुम लोग यहां क्यों आए हो? तुम इसलिए आए हो कि तुम्हें अपने मुल्क में पेट भर कर खाना नहीं मिलता तो तुम्हें जितना ग़ल्ला चाहिए, हम तुम्हें दे देते हैं। हम लोग आग के पुजारी हैं, तुम्हें क़त्ल करना अच्छा नहीं समझते, क्योंकि (तुम्हें क़त्ल करने से) हमारी ज़मीन नापाक हो जाएगी।

हज़रत मुग़ीरह ने कहा, अल्लाह की क़सम! हम इस वजह से नहीं आए, हम तो इस वजह से आए हैं कि हम लोग पत्थरों और बुतों की इबादत किया करते थे, जब कोई अच्छा पत्थर नज़र आता, तो पहले को फेंककर उसकी इबादत शुरू कर देते। हम परवरदिगार को नहीं पहचानते थे, यहां तक कि अल्लाह ने हम में से ही हमारी ओर एक रसूल भेजा। उसने हमें इस्लाम की दावत दी। हमने उनकी पैरवी कर ली। हम ग़ल्ला लेने नहीं आए। हमें इस बात का हुक्म दिया गया है कि हमारा जो दुश्मन इस्लाम को छोड़ दे हम उससे लड़ें। हम ग़ल्ला

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 40, हाकिम, भाग 3, पृ० 451

लेने नहीं आए। हम तो इसलिए आए हैं कि तुम्हारे जवानों को क़त्ल कर दें और तुम्हारे बीवी-बच्चों को क़ैद करें। बाक़ी तुमने जो हमारे मुल्क में खाने की कमी का ज़िक्र किया है, वह ठीक है। मेरी ज़िंदगी की क़सम! वाक़ई हमें इतना खाना नहीं मिलता, जिससे हमारा पेट भर जाए और हमें इतना पानी नहीं मिलता जिससे हमारी प्यास बुझ जाए। हम तुम्हारी इस ज़मीन में आए हैं। हमने यहां ग़ल्ला और पानी बहुत पाया है। अल्लाह की क़सम! अब हम इस इलाक़े को नहीं छोड़ेंगे, या तो यह भू-भाग हमारे हिस्से में आ जाए या तुम्हें मिल जाए।

उस अजमी काफ़िर ने फ़ारसी में कहा, यह आदमी ठीक कह रहा है। हज़रत मुग़ीरह से उस अजमी काफ़िर ने कहा, आपकी तो कल आंख फोड़ दी जाएगी। चुनांचे अगले दिन हज़रत मुग़ीरह को एक नामालूम तीर लगा और वाक़ई उनकी आंख बर्बाद हो गई।[1]

सैफ़ रह० कहते हैं, हज़रत साद रज़ि० ने लड़ाई से पहले अपने साथियों की एक जमाअत किसरा के पास अल्लाह की ओर दावत देने के लिए भेजी थी। इन लोगों ने किसरा के दरबार में पहुंच कर दाख़िले की इजाज़त मांगी। उसने इन लोगों को इजाज़त दे दी। शहर वाले उनको देखने के लिए बाहर निकल आए कि उनकी शक्ल व सूरत कैसी है?

इन लोगों की चादरें कंधों पर पड़ी हुई थीं, हाथों में कोड़े पकड़े हुए थे, पांवों में चप्पलें पहन रखी थीं, कमज़ोर घोड़ों पर सवार थे, जो (कमज़ोरी की वजह से) लड़खड़ा रहे थे। शहर वाले इन तमाम बातों को देखकर बहुत ज़्यादा हैरान हो रहे थे कि कैसे इन जैसे इंसान उनकी फ़ौजों पर ग़ालिब आ जाते हैं, हालांकि उनकी फ़ौजों की तायदाद और उनका सामान कहीं ज़्यादा है। इजाज़त मिलने पर ये लोग अन्दर शाह यज़्द जर्द (किसरा) के दरबार में गए। उसने उन्हें अपने सामने बिठाया। वह बड़ा घमंडी और बे-अदब था। उसने उनके पहनावे और चादरों और जूतियों और कोड़ों के नाम पूछने शुरू कर दिए। वे जिस चीज़ का भी

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 451, हैसमी, भाग 6, पृ० 215

नाम बताते, वह उससे अपने लिए नेक फ़ाल निकालता, लेकिन अल्लाह ने उसकी हर फ़ाल को उसके सर उलटा दे मारा।

फिर उसने इन लोगों से कहा, तुम्हें कौन-सी चीज़ इस इलाक़े में ले आई है? हमारी आपस की ख़ाना जंगी (गृह-युद्ध) की वजह से तुम यह समझ बैठे कि हम लोग कमज़ोर पड़ गए हैं, इसलिए तुममें (हम पर हमला करने की) जुर्रत पैदा हो गई?

हज़रत नोमान बिन मुक़रिन ने कहा कि अल्लाह ने हम पर तरस खाकर हमारी ओर एक रसूल भेजा, जो हमें नेकी के काम बताते थे और उनके करने का हुक्म देते थे और बुराई के काम बतला कर हमें उनसे रोकते थे। उनकी बात मानने पर अल्लाह ने हमसे दुनिया व आख़िरत की भलाई का वायदा किया। आपने जिस क़बीले को उसकी दावत दी, उसके दो हिस्से हो गए। कुछ आपका साथ देते और कुछ आपसे दूर हो जाते। सिर्फ़ ख़ास लोग गिने-चुने आपके दीन में दाख़िल होते। एक अर्से तक आप इसी तरह दावत देते रहे। फिर अल्लाह ने आपको हुक्म दिया कि अपने मुख़ालिफ़ अरबों पर चढ़ाई कर दें, पहल इन अरबों से करें (बाद में दूसरे मुल्कों में जाएं) चुनांचे आपने ऐसा ही किया। सारे अरब आपके दीन में दाख़िल हो गए, कुछ मजबूर होकर ज़बरदस्ती दाख़िल हुए, लेकिन बाद में वह भी ख़ुश हो गए और कुछ शुरू ही से ख़ुशी-ख़ुशी दाख़िल हुए और उनकी ख़ुशी बढ़ती रही। हम सब ने खुली आंखों देख लिया कि हम (जाहिलियत के ज़माने में) जिस दुश्मनी और तंगी में थे, आपका लाया हुआ दीन उससे हज़ार दर्जा बेहतर है और उन्होंने हमें हुक्म दिया कि हम आस-पास की क़ौमों में (दावत का काम) शुरू करें और उन्हें हम अद्ल व इंसाफ़ की दावत दें, इसलिए हम तुम्हें अपने दीने इस्लाम की दावत देते हैं जो हर अच्छी बात को अच्छा कहता है और हर बुरी बात को बुरा कहता है और अगर तुम (इस्लाम में दाख़िल होने से) इंकार करो तो फिर ज़िल्लत के दो कामों में से कम ज़िल्लत वाला काम अख़्तियार करो और वह है जिज़या अदा करना और अगर तुम इससे भी इंकार करो तो फिर लड़ाई है। अगर तुम हमारे प्यारे दीन को अख़्तियार कर लोगे, तो हम तुममें अल्लाह की किताब

छोड़ कर जाएंगे और तुम्हें उस पर डाल कर जाएंगे कि तुम इस किताब के हुक्मों के मुताबिक़ फ़ैसला करो और हम तुम्हारे इलाक़े से वापस चले जाएंगे, फिर तुम होगे और तुम्हारा इलाक़ा (जो चाहो करो) और अगर तुम जिज़्या देने के लिए तैयार हो जाओ, तो हम उसे क़ुबूल कर लेंगे और हम तुम्हारी (हर तरह) हिफ़ाज़त करेंगे, वरना हम तुमसे लड़ेंगे।

इस पर यज़्द जर्द बोला कि धरती पर कोई क़ौम मेरे इल्म में ऐसी नहीं है जो तुमसे ज़्यादा बदबख़्त हो और उसकी तायदाद तुमसे कम हो और उसके आपस के ताल्लुक़ात तुमसे ज़्यादा बिगड़े हुए हों। हमने तो तुम्हें आस-पास की बस्तियों के हवाले किया हुआ था कि वह हमारे बिना ख़ुद ही तुमसे निमट लिया करें। आज तक फ़ारस ने कभी तुम पर हमला नहीं किया और न तुम्हारा यह ख़्याल था कि तुम फ़ारस वालों के सामने ठहर सकते हो। अब अगर तुम्हारी तायदाद बढ़ गई है तो हमारे बारे में तुम धोखे में न रहो और अगर रोज़ी की तंगी ने तुम्हें यहां आने पर मजबूर किया है, तो हम तुम्हारे लिए मदद तै कर देते हैं, जो तुम्हें उस वक़्त तक मिलती रहेगी, जब तक तुम ख़ुशहाल न हो जाओ और हम तुम्हारे नुमायां लोगों का इकराम करेंगे और उनको जोड़े भी देंगे और तुम लोगों पर ऐसा बादशाह मुक़र्रर करेंगे जो तुम्हारे साथ नर्मी बरते।

(यह सुनकर) और लोग तो चुप रहे, लेकिन हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० ने खड़े होकर कहा, ऐ बादशाह! ये अरब के सरदार और नुमायां लोग हैं, वे सब शरीफ़ हैं और शरीफ़ों से शर्माते हैं और शरीफ़ों का इकराम शरीफ़ ही किया करते हैं और शरीफ़ों के हक़ों को शरीफ़ ही बड़ा समझते हैं। उनको तुमसे जितनी बातें कहने के लिए भेजा गया है, उन्होंने अपनी वे सारी बातें तुमसे कही नहीं हैं और उन्होंने तुम्हारी हर बात का जवाब भी नहीं दिया और उन्होंने यह अच्छा किया और इनके लिए यही मुनासिब था। मुझसे बात करो, मैं तुम्हारी हर बात का जवाब दूंगा और ये सब उसकी गवाही देंगे। तुमने हमारे जो हालात बताए हैं, तुम उनको पूरी तरह नहीं जानते। (मैं तुम्हें बताता हूं।)

तुमने जो हमारी बदहाली का ज़िक्र किया है, तो वाक़ई हमसे ज़्यादा कोई बदहाल नहीं था। हमारी भूख जैसी भूख कहीं हो नहीं सकती।

हम तो गंदगी के कीड़े-मकौड़े और बिच्छू और सांप तक खा जाते थे और उसी को अपना खाना समझते थे। हमारे मकान खुली ज़मीन थी, (छप्पर तक न थे) ऊंटों और बकरियों के बालों से बुने हुए कपड़े पहनते थे। एक दूसरे को क़त्ल करना और एक दूसरे पर ज़ुल्म करना हमारा मज़हब था और हम लोगों में कुछ ऐसे भी थे जो अपनी बेटी को खाना खिलाने के डर के मारे ज़िंदा क़ब्र में दफ़न कर देते थे। आज से पहले हमारी वही हालत थी, जो मैं तुमसे बयान कर रहा हूं।

फिर अल्लाह ने हमारी ओर एक मशहूर आदमी को भेजा, जिसके हसब-नसब को और उसके हुलिए को और उसके जन्म-स्थान को हम अच्छी तरह जानते हैं। उसकी ज़मीन हमारी ज़मीन में सबसे बेहतरीन ज़मीन थी और उसका हसब-नसब हमारे हसब-नसब में सबसे बेहतर था, उसका घर हमारे घरों से ऊंचा था और उसका क़बीला हमारे क़बीलों से अफ़ज़ल था। अरबों के तमाम बुरे हालात के बावजूद वे खुद भी अपनी ज़ात के एतबार से हममें सबसे बेहतर थे। हम में सबसे ज़्यादा सच्चे और सबसे ज़्यादा बुर्दबार (सहनशील) थे। उन्होंने हमें इस्लाम की दावत दी।

चुनांचे सबसे पहले उनकी दावत को उस आदमी ने क़ुबूल किया जो उनका हमउम्र और बचपन का साथी था और वही उनके बाद उनका ख़लीफ़ा बना। वह हमसे कहते हम उनको उलटी सुनाते, वह सच बोलते, हम झूठ बोलते। आख़िर उनके साथी बढ़ते गए और हमारी तायदाद घटती गई और जो-जो बातें उन्होंने कही थीं, वे सब होकर रहीं। आख़िर अल्लाह ने हमारे दिलों में उनको सच्चा मानने और उनकी पैरवी करने का जज़्बा पैदा कर दिया। वह हमारे और अल्लाह रब्बुल आलमीन के दर्मियान वास्ता थे। उन्होंने हमसे जितनी बातें कहीं, हक़ीक़त में वे अल्लाह ही की हैं और उन्होंने हमें जितने हुक्म दिए, वे हक़ीक़त में अल्लाह ही के हुक्म हैं।

उन्होंने हमसे कहा कि तुम्हारा रब कहता है कि मैं अल्लाह हूं, अकेला हूं, मेरा कोई शरीक नहीं, जब कुछ नहीं था, मैं उस वक़्त भी था, मेरी ज़ात के अलावा हर चीज़ फ़ना हो जाएगी, मैंने हर चीज़ को पैदा

किया है और हर चीज़ लौट कर मेरे पास आएगी। मेरी रहमत तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह हुई, चुनांचे मैंने तुम्हारी तरफ़ उस आदमी को मबऊस किया (भेजा), ताकि तुम्हें उस रास्ते पर डाल दूं जिसकी वजह से मैं तुम्हें मरने के बाद अपने अज़ाब से बचाऊं, और अपने घर दारुस्सलाम (जन्नत) में पहुंचा दूं, चुनांचे हम गवाही देते हैं कि हुज़ूर सल्ल० अल्लाह के पास से हक़ लेकर आए थे और तुम्हारे रब ने कहा, जो तुम्हारे इस दीन को अख़्तियार करेगा, उसको वे हक़ हासिल होंगे, जो तुम्हें हासिल हैं और उस पर वे ज़िम्मेदारियां होंगी जो तुम पर हैं और जो (इस दीन से) इंकार करे उस पर जिज़या पेश करो और उसकी उन तमाम चीज़ों की हिफ़ाज़त करो, जिनसे तुम अपनी हिफ़ाज़त करते हो और जो (जिज़या देने से भी) इंकार कर दे उससे लड़ो। मैं ही तुम्हारे बीच फ़ैसला करने वाला हूं। तुममें से जो शहीद किया जाएगा उसे अपनी जन्नत में दाख़िल करूंगा और जो बाक़ी रहेगा, उसके दुश्मन के ख़िलाफ़ उसकी मदद करूंगा। अब तुम चाहो तो मातहत बनकर जिज़या दे दो और चाहो तो तलवार लेकर (लड़ लो) या मुसलमान होकर ख़ुद को बचा लो।

यज़्द जर्द ने कहा, तुम मेरे सामने ऐसी बातें कर रहे हो?

हज़रत मुग़ीरह ने कहा, जिसने मुझसे बात की है, मैं उसी के सामने ऐसी बातें कर रहा हूं। अगर तुम्हारे अलावा कोई और मेरे साथ बात करता तो मैं तुम्हारे सामने ये बातें न करता।

यज़्द जर्द ने कहा, अगर यह विधान न होता कि क़ासिद (दूत) को क़त्ल नहीं किया जाएगा, तो मैं तुम सबको क़त्ल कर देता। तुम लोगों के लिए मेरे पास कुछ नहीं है और (अपने दरबारियों से) कहा, मिट्टी का एक टोकरा लाओ और इनमें जो सबसे बड़ा है, उसके सर पर रख दो- और उसे पीछे से हांकते रहो, यहां तक कि वह मदाइन शहर की आबादी से निकल जाए (और सहाबा से कहा) तुम लोग अपने अमीर के पास वापस जाकर उसे बता दो कि मैं उसकी तरफ़ रुस्तम को भेज रहा हूं, ताकि वह उसे और उसकी फ़ौज को क़ादसिया की खाई में गाड़ दे और उसे और तुम लोगों को बाद वालों के लिए सबक़ बना दे और फिर मैं

उसको तुम्हारे मुल्क में भेजूंगा और साबूर की ओर से तुम लोगों को जितनी मुसीबत उठानी पड़ी, मैं तुम लोगों को उससे ज़्यादा मुसीबत में गिरफ़्तार कर दूंगा।

फिर उसने पूछा, तुममें सबसे बड़ा कौन है?

सब लोग चुप रहे। हज़रत आसिम बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुद मिट्टी ले लेने के लिए बग़ैर मश्विरा के कह दिया कि मैं इनका बड़ा और इनका सरदार हूं। यह मिट्टी मेरे ऊपर लाद दो।

यज़्द जर्द ने पूछा, क्या बात इसी तरह है?

दूसरे सहाबा ने कहा, हां।

चुनांचे उन्होंने हज़रत आसिम की गरदन पर वह मिट्टी लाद दी। वह मिट्टी लेकर दरबार और शाही महल से बाहर आए और अपनी सवारी पर उस मिट्टी को रखा और उस पर बैठकर इतना तेज़ दौड़ाया, ताकि यह मिट्टी लेकर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जल्द पहुंच जाएं।

हज़रत आसिम अपने साथियों से आगे निकल गए और वह बराबर चलते रहे, यहां तक कि बाब क़ुदैस से आगे चले गए और कहा, अमीर को कामियाबी की ख़ुशख़बरी सुना दो। इनशाअल्लाह, हम कामियाब हो गए (ज़ाहिर में बाब क़ुदैस के क़रीब हज़रत साद ठहरे हुए थे) और आगे बढ़ते चले गए, यहां तक कि अरब की हदों में जाकर उस मिट्टी को डाल दिया, फिर वापस आकर हज़रत साद की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्हें सारी बात बताई, तो हज़रत साद ने कहा, अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने हमें (इस मिट्टी की शक्ल में) उनके देश की चाबियां दे दी हैं और सब ने उससे उनके मुल्क पर क़ब्ज़ा हो जाने की फ़ाल ली।[1]

हज़रत मुहम्मद रह० और हज़रत तलहा रह० वग़ैरह बयान करते हैं कि जब तकरीत की लड़ाई के मौक़े पर रूमियों ने यह देखा कि जब भी वे मुसलमानों की तरफ़ बढ़े, उन्हें मुंह की खानी पड़ी और मुसलमानों से हर मुक़ाबले में उनको हार खानी पड़ी, तो उन्होंने अपने सरदारों को छोड़

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 41, तबरी, भाग 4, पृ० 94

दिया और अपना सामान गावों पर लाद लिया। (अरब के ईसाई क़बीले) तग़लब और इयाद और नम्र के नुमाइन्दे ये सारी ख़बरें लेकर (मुसलमानों के अमीर) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मोतम के पास आए और उनसे यह दरख़्वास्त की कि अरब के इन क़बीलों से मुसलमान समझौता कर लें और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह को बताया कि ये तमाम क़बीले उनकी मानने को तैयार हो चुके हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह ने इन क़बीलों को यह पैग़ाम भेजा कि अगर तुम इस बात में सच्चे हो तो कलिमा शहादत—

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह० पढ़ो और हुज़ूर सल्ल० जो कुछ अल्लाह के पास से लेकर आए हैं, उसका इक़रार कर लो, फिर तुम इस बारे में अपनी राय का पता दो। वे नुमाइंदे यह पैग़ाम लेकर अपने क़बीलों के पास गए। इन क़बीलों ने इन नुमाइंदों को हज़रत अब्दुल्लाह के पास इस्लाम के क़ुबूल करने की ख़बर देकर वापस भेजा।[1]

हज़रत ख़ालिद और हज़रत उबादा रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के (शाम से) मदीना वापस जाने के बाद हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु मिस्र की ओर रवाना हुए, यहां तक कि बाब अलयून नामी जगह तक पहुंच गए। पीछे से हज़रत ज़ुबैर रज़ि० भी उनके पास वहां पहुंच गए। मिस्र का बड़ा पादरी अबू मरयम वहां लड़ने वालों को लेकर मुसलमानों के मुक़ाबले के लिए पहले से पहुंचा हुआ था। उसके साथ दूसरा पादरी भी था। मुक़ौक़िस ने उस अबू मरयम को अपने देश की हिफ़ाज़त के लिए भेजा था।

जब हज़रत अम्र ने वहां पड़ाव डाला, तो ये (मिस्री) उनसे लड़ने को तैयार हो गए। हज़रत अम्र ने उनको पैग़ाम भेजा कि हमसे (लड़ने में) जल्दी न करो। हम तुम्हारे सामने अपने आने का मक़सद बयान कर देते हैं, फिर तुम उसके बारे में ग़ौर कर लेना। चुनांचे उन्होंने अपनी फ़ौज को

1. इब्ने जरीर, भाग 4, पृ० 186

(लड़ाई से) रोक लिया।

हज़रत अम्र ने फिर यह पैग़ाम भेजा कि मैं (बात करने के लिए) सामने आ रहा हूं। अबू मरयम और अबू मरयाम भी मुझसे बात करने के लिए बाहर आ जाएं। उन्होंने हज़रत अम्र की यह बात मान ली। उन्होंने एक दूसरे को अम्न दिया।

हज़रत अम्र ने इन दोनों से कहा कि तुम दोनों इस शहर के बड़े पादरी हो, ज़रा ग़ौर से सुनो। अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हक़ देकर भेजा और हक़ (पर चलने) का हुक्म दिया और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें (हक़ पर चलने) का हुक्म दिया, जितने हुक्म आपको मिले हैं, वह आपने सारे हम तक पहुंचा दिए, फिर आप दुनिया से तशरीफ़ ले गए, आप पर अल्लाह की लाखों रहमतें हों, अपनी ज़िम्मेदारी का हक़ अदा कर गए और हमें एक खुले रास्ते पर छोड़ गए। आप जिन बातों का हुक्म हमें देकर गए, उनमें एक यह भी है कि हम लोगों के सामने अपना मक़्सद पूरे तौर पर बयान कर दें, इसलिए हम तुम्हें इस्लाम की दावत देते हैं। जो हमारी इस दावत को क़ुबूल कर लेगा, वह हमारे जैसा बन जाएगा और जो हमारी इस्लामी दावत को क़ुबूल नहीं करेगा, हम उस पर जिज़्या पेश करेंगे (कि वह जिज़्या अदा करे) हम उसकी हर तरह हिफ़ाज़त करेंगे। उन्होंने हमें बताया था कि हम तुम पर फ़त्ह हासिल कर लेंगे, उन्होंने हमें तुम्हारे साथ अच्छे सुलूक की वसीयत की थी, क्योंकि हमारी तुम्हारे साथ रिश्तेदारी है। (हज़रत हाजरा और हज़रत मारिया क़िब्तिया दोनों मिस्र के क़िब्ती क़बीले की थीं) अगर तुम हमारी जिज़्या वाली बात को क़ुबूल कर लोगे, तो दो वजह से तुम्हारी हम पर ज़िम्मेदारी होगी। (एक ज़िम्मी होने की वजह से और एक रिश्तेदारी की वजह से) हमारे अमीर ने भी हमें (मिस्र के) क़िब्तियों के साथ अच्छे सुलूक की नसीहत की है, इसलिए कि क़िब्तियों से रिश्तेदारी भी है और उनकी ज़िम्मेदारी भी है।

मिस्रियों ने कहा, इतने दूर की रिश्तेदारी का ख़्याल तो सिर्फ़ नबी ही कर सकते हैं। (हज़रत हाजरा) वह भली और शरीफ़ ख़ातून हमारे बादशाह की बेटी थीं। मनफ़ वालों में से थीं। (मनफ़ मिस्र की पुरानी

राजधानी है) और बादशाही उन्हीं की थी। ऐन शम्स वालों ने उन पर हमला करके उनको क़त्ल कर दिया और उनसे बादशाही छीन ली और जो बचे, वे उस इलाक़े को छोड़कर चले गए। इस तरह वह ख़ातून हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आ गईं। हज़रत इब्राहीम का हमारे यहां आना ख़ुशी की वजह था। जब तक हम (मश्विरा करके) वापस न आएं, उस वक़्त तक हमें अम्न दे दें।

हज़रत अम्र ने फ़रमाया, मुझ जैसे आदमी को कोई धोखा नहीं दे सकता। तुम दोनों को तीन दिन की मोहलत देता हूं, ताकि तुम दोनों ख़ुद भी ग़ौर कर लो और अपनी क़ौम से मश्विरा भी कर लो। अगर तुमने तीन दिन तक कोई जवाब न दिया, तो मैं तुमसे लड़ाई शुरू कर दूंगा, (और ज़्यादा इन्तिज़ार नहीं करूंगा)

उन दोनों ने कहा, कुछ वक़्त और बढ़ा दें। हज़रत अम्र ने एक दिन और बढ़ा दिया।

उन्होंने कुछ और वक़्त बढ़ाने की दरख़्वास्त की। हज़रत अम्र ने एक दिन और बढ़ा दिया। वे दोनों मुक़ौक़िस के पास वापस चले गए। मुक़ौक़िस ने कुछ आमादगी ज़ाहिर की, मगर अरतबून ने उन दोनों की बात मानने से इंकार कर दिया और मुसलमानों पर चढ़ाई करने का हुक्म दे दिया।

उन दोनों पादरियों ने मिस्र वालों से कहा, हम तो तुम्हारी ओर से बचाव की पूरी कोशिश करेंगे और उनकी ओर लौट कर न जाएंगे और अभी चार दिन बाक़ी हैं। इन चार दिनों में मुसमलानों की ओर से तुम पर हमले का ख़तरा नहीं, पनाह ही की उम्मीद है, लेकिन फ़ुरक़ुब ने हज़रत अम्र और हज़रत ज़ुबैर पर अचानक रात में छापा मारा। हज़रत अम्र (इस अचानक हमले के लिए) तैयारी किए हुए थे, उन्होंने फ़ुरक़ुब का मुक़ाबला किया और फ़ुरक़ुब और उसके साथी मारे गए और वे यों ख़ुद ही अपनी चाल में नाकाम हो गए। वहां से हज़रत अम्र और हज़रत ज़ुबैर ऐन शम्स की ओर रवाना हुए।[1]

1. इब्ने जरीर, भाग 4, पृ० 227

हज़रत अबू हारिसा और हज़रत अबू उस्मान कहते हैं, जब हज़रत अम्र मिस्रियों के पास ऐन शम्स पहुंचे तो मिस्र वालों ने अपने बादशाह से कहा, तुम उस क़ौम का क्या बिगाड़ लोगे जिन्होंने किसरा और क़ैसर को हरा कर उनके मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया? उनसे समझौता कर लो, न खुद उनके सामने मुक़ाबले के लिए जाओ और न हमें ले जाओ, लेकिन बादशाह न माना।

यह क़िस्सा चौथे दिन का है और उसने मुसलमानों पर हमला करके लड़ाई शुरू कर दी। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० उनके शहर की फ़सील (पनाह की दीवार) पर चढ़ गए। यह मंज़र देखकर (वे डर गए और) उन्होंने हज़रत अम्र के लिए शहर का दरवाज़ा खोल दिया और समझौता करने के लिए शहर से बाहर निकल आए। हज़रत अम्र ने उनके समझौते को मंज़ूर कर लिया। हज़रत ज़ुबैर तो उन पर ग़ालिब होकर दीवार से शहर में उतरे।[1]

हज़रत सुलैमान बिन बुरैदा कहते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि० के पास ईमान वालों की फ़ौज जमा हो जाती, तो उन पर किसी इल्म वाले और फ़क़ीह को अमीर बना देते। चुनांचे एक फ़ौज तैयार हुई। हज़रत सलमा बिन क़ैस अशजई को उनका अमीर बनाया और उनको ये हिदायतें दीं—

'तुम अल्लाह का नाम लेकर चलो और अल्लाह के रास्ते में उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह का इंकार करते हैं। जब तुम्हारा मुश्रिक दुश्मन से सामना हो, तो उनको तीन बातों की दावत दो। (सबसे पहले तो) उनको इस्लाम की दावत दो। अगर वे मुसलमान हो जाएं और अपने वतन ही में रहना पसन्द करें, तो उनके मालों में उन पर ज़कात वाजिब होगी और मुसलमानों के माले ग़नीमत में उनका कोई हिस्सा न होगा और अगर वे तुम्हारे साथ (मदीना में) रहना पसन्द करें, तो उन्हें वे तमाम हक़ हासिल होंगे जो तुम्हें हासिल हैं और उन पर वे तमाम ज़िम्मेदारियां आएंगी, जो तुम पर आती हैं और अगर (इस्लाम क़ुबूल

1. तबरी, भाग 7, पृ० 228

करने से) इंकार कर दें तो उन्हें जिज़या देने की दावत दो। अगर वे जिज़या देने पर राज़ी हो जाएं, तो उनके दुश्मनों से लड़ाई लड़ना और उनको जिज़या के अदा करने के लिए फ़ारिग़ कर देना और उनको उनकी ताक़त से ज़्यादा किसी काम की तक्लीफ़ न देना। अगर वे (जिज़या देने से भी) इंकार कर दें तो उनसे लड़ो अल्लाह उनके मुक़ाबले में तुम्हारी मदद करेगा। अगर वे तुमसे डर कर किसी क़िले में ख़ुद को सुरक्षित कर लें और वे अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर उतरने की मांग करें, तो तुम उनको अल्लाह के हुक्म पर मत उतारना, क्योंकि तुम जानते नहीं हो कि उनके बारे में अल्लाह और उसके रसूल का क्या हुक्म है? और अगर वे अल्लाह और उसके रसूल की ज़िम्मेदारी पर उतरने की मांग करें तो तुम उनको अल्लाह और उसके रसूल की ज़िम्मेदारी पर मत उतारना, बल्कि उनको अपनी ज़िम्मेदारी पर उतारना और अगर वे तुमसे लड़ाई लड़ें तो तुम ख़ियानत न करना और बद-अह्दी न करना और किसी का नाक-कान न काटना और किसी बच्चे को क़त्ल न करना।

हज़रत सलमा कहते हैं कि हम चले और मुश्रिक क़ौमों से हमारा सामना हुआ। (इस्लाम की) जिस बात को अमीरुल मोमिनीन ने हमसे कहा था, हमने उनको उस बात की दावत दी, लेकिन उन्होंने इस्लाम लाने से इंकार कर दिया, फिर हमने उनको जिज़या की दावत दी, उन्होंने उसे भी मानने से इंकार कर दिया। चुनांचे हमने उनसे लड़ाई लड़ी। अल्लाह ने उनके मुक़ाबले में हमारी मदद की। हमने उनकी लड़ने वाली फ़ौज को क़त्ल कर दिया और उनकी औरतों और बच्चों को क़ैद कर लिया और उनका सारा सामान जमा कर लिया। आगे लम्बी हदीस है।[1]

हज़रत अबू उमैया कहते हैं कि जब हज़रत (अबू मूसा) अशअरी रज़ि० अस्फ़हान पहुंचे, तो उन्होंने वहां वालों पर इस्लाम को पेश किया। उन्होंने (उसे क़ुबूल करने से) इंकार कर दिया। तो फिर हज़रत अशअरी ने जिज़या अदा करने की बात उनके सामने रखी तो उन्होंने इस पर

1. तबरी, भाग 5, पृ० 9

उनसे समझौता कर लिया। रात तो उन्होंने समझौते पर गुज़ारी, लेकिन सुबह होते ही उन्होंने ग़द्दारी की और लड़ाई शुरू कर दी। हज़रत अशअरी ने उनका मुक़ाबला किया और जल्द ही थोड़ी देर में अल्लाह ने उनको काफ़िरों पर ग़ालिब कर दिया।[1]

सहाबा किराम रज़ि० के उन आमाल और अख़्लाक़ के क़िस्से जिनकी वजह से लोगों को हिदायत मिलती थी

हज़रत इब्ने इस्हाक़ बयान करते हैं कि जब अंसार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत होकर मदीना आए, तो मदीना में इस्लाम फैलने लगा, लेकिन फिर भी अंसार के कुछ मुश्रिक लोग अपने दीन पर बाक़ी थे, जिनमें एक अम्र बिन जमूह भी थे। उनके बेटे हज़रत मुआज़ अक़बा में हुज़ूर सल्ल० के हाथ पर बैअत हो चुके थे।

हज़रत अम्र बिन जमूह क़बीला बनू सलमा के सरदारों और इज़्ज़तदार लोगों में से थे। उन्होंने इज़्ज़तदार लोगो के दस्तूर के मुताबिक़ अपने घर में लकड़ी का एक बुत बना रखा था, जिसे मनात कहा जाता था, उसे वे अपना माबूद समझते और उसे पाक-साफ़ रखते।

जब बनू सलिमा के कुछ नवजवान हज़रत मुआज़ बिन जबल और हज़रत मुआज़ बिन अम्र वग़ैरह बैअत अक़बा में शरीक होकर मुसलमान हो गए, तो वे हज़रत अम्र के उस बुत के पास जाते और उसे उठाकर बनू सलिमा के किसी गन्दगी वाले गढ़े में उसका सर औंधा करके फेंक देते, सुबह हज़रत अम्र शोर मचाते और कहते कि तुम्हारा नाश हो। आज रात किसने हमारे माबूद पर हाथ डाला? फिर उसे खोजने चल पड़ते। जब वह बुत मिल जाता तो उसे धोकर पाक-साफ़ करके ख़ुशबू लगाते, फिर कहते, अल्लाह की क़सम! अगर मुझे पता चल जाए कि किसने तेरे साथ ऐसा किया है, तो मैं उसे ज़रूर ज़लील करूं। शाम को जब हज़रत अम्र सो जाते तो वे नवजवान फिर उस बुत के साथ उसी तरह करते।

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 110

जब उन्होंने कई बार ऐसा किया, तो एक दिन उन्होंने उसे गढ़े में से निकाल कर धोया और उसे पाक-साफ़ करके ख़ुशबू लगाई और फिर अपनी तलवार लाकर इसके गले में लटका दी और (उस बुत से) कहा, अल्लाह की क़सम! मुझे नहीं पता चल सका कि तुम्हारे साथ यह गुस्ताख़ी कौन करता है? अगर तेरे में कुछ हिम्मत है, तो यह तलवार तेरे पास है, इसके ज़रिए अपनी हिफ़ाज़त कर लेना।

चुनांचे शाम को जब वे सो गए तो उन नवजवानों ने जब यह देखा कि आज तो बुत के गले में तलवार लटकी हुई है, तो उन्होंने तलवार समेत उसे उठाया और एक मरे हुए कुत्ते को रस्सी से उसके साथ बांध दिया और फिर उसे बनू सलिमा के गन्दगी वाले एक कुंएं में फेंक दिया।

सुबह को हज़रत अम्र बिन जमूह को यह बुत अपनी जगह न मिला, तो वह उसकी तलाश में निकले और उसे उस कुंएं में मुर्दा कुत्ते के साथ बंधा हुआ पाया। जब उन्होंने उस बुत को इस हाल में देखा तो उस बुत की सारी हक़ीक़त उन्हें नज़र आ गई (कि यह तो अपनी भी हिफ़ाज़त नहीं कर सकता) और उनकी क़ौम के मुसलमानों ने उनसे बात की, तो वह अल्लाह के फ़ज़्ल से मुसलमान हो गए और बड़े अच्छे मुसलमान साबित हुए।[1]

हज़रत मिनजाब ने ज़ियाद के वास्ते से यह हदीस इब्ने इस्हाक़ से इस तरह नक़ल की है कि इब्ने इस्हाक़ बिन यसार ने बनू सलिमा के एक आदमी से नक़ल किया कि जब बनू सलिमा के जवान मुसलमान हो गए, तो हज़रत अम्र बिन जमूह की बीवी और बेटे भी मुसलमान हो गए। उन्होंने अपनी बीवी से कहा कि अपने बच्चों को अपने ख़ानदान में जाने न देना, यहां तक कि मैं यह न देख लूं कि ख़ानदान वाले क्या कर रहे हैं?

उनकी बीवी ने कहा, मैं ऐसा ही करूंगी, लेकिन आप अपने फ़्लां बेटे से सुन तो लें कि वह हुज़ूर सल्ल० की क्या बातें बयान करता है?

1. दलाइल, पृ० 109

उन्होंने कहा, शायद वह बे-दीन हो गया होगा।

उनकी बीवी ने कहा, नहीं, वह तो लोगों के साथ गया ज़रूर था। हज़रत अम्र ने आदमी भेजकर अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा, उस आदमी का जो कलाम तुम सुनकर आए हो, वह मुझे भी बताओ।

उन्होंने 'अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन' से लेकर 'अस्सिरातल मुस्तक़ीम' तक सूरः फ़ातिहा पढ़कर सुनाई।

उन्होंने कहा, यह तो क्या ही हसीन व जमील कलाम है, क्या इनका सारा कलाम ऐसा ही है?

बेटे ने कहा, अब्बा जान! इससे भी ज़्यादा अच्छा है। आपकी क़ौम के ज़्यादातर लोग उनसे बैअत हो चुके हैं। आप भी उनसे बैअत हो जाएं।

उन्होंने कहा, पहले मैं मनात बुत से मश्विरा करके देख लूं, वह क्या कहता है? फिर मैं फ़ैसला करूंगा।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि ये लोग जब मनात से बात करना चाहते, तो मनात के पीछे एक बूढ़ी औरत को खड़ा कर देते जो मनात की तरफ़ से जवाब दिया करती। चुनांचे यह उस बुत के पास (मश्विरा लेने गए)। बूढ़ी औरत को वहां से चलता कर दिया गया। यह उसके सामने खड़े होकर उसकी ताज़ीम बजा लाए और कहा, ऐ मनात! तुझे मालूम होना चाहिए कि तुझ पर एक बहुत बड़ी मुसीबत आ पड़ी है और तू ग़फ़लत में पड़ा हुआ है। एक आदमी आया है जो हमें तेरी इबादत से रोकता है और तुझे छोड़ देने का हुक्म करता है। मुझे यह अच्छा न लगा कि तुझसे मश्विरा किए बग़ैर उससे बैअत हो जाऊं (यह बहुत देर तक उसके सामने ये बातें करते रहे, लेकिन उसकी ओर से कोई जवाब न आया, तो उससे कहा, मेरा ख़्याल यह है कि तू नाराज़ हो गया है, हालांकि मैंने अब तक तुझसे कोई (गुस्ताख़ी) नहीं की है। चुनांचे खड़े होकर उस बुत को तोड़ दिया।

इब्राहीम बिन सलिमा ने इब्ने इस्हाक़ से यों रिवायत किया है कि जब हज़रत अम्र बिन जमूह रज़ि० इस्लाम ले आए और अल्लाह को

पहचान लिया तो उन्होंने कुछ पद कहे, जिनमें उन्होंने बुत का और उसकी बेबसी का जो मंज़र देखा था, उसका ज़िक्र किया है और अल्लाह ने उनको जो अंधेपन और गुमराही से बचाया है, उस पर अल्लाह का शुक्र अदा किया है।

أَتُوْبُ إِلَى اللهِ مِمَّا مَضٰى وَأَسْتَنْقِذُ اللهَ مِنْ نَّارِهٖ

'मैं अपने पिछले गुनाहों पर अल्लाह के सामने तौबा करता हूं और मैं चाहता हूं कि अल्लाह अपनी आग से मुझे नजात दे दे।'

وَأُثْنِيْ عَلَيْهِ بِنَعْمَائِهٖ إِلٰهِ الْحَرَامِ وَأَسْتَارِهٖ

'और मैं अल्लाह की नेमतों की वजह से उसका गुणगान करता हूं। वही बैतुल्लाह का और उसके परदों का ख़ुदा है।'

فَسُبْحَانَهٗ عَدَدَ الْخَاطِئِيْنَ وَقَطْرِ السَّمَاءِ وَمِدْرَارِهٖ

'मैं ख़ताकार इंसानों और आसमान से उतरने वाली बूंदों और मूसलाधार वर्षा की बूंदों की तायदाद के बराबर उसकी पाकी बयान करता हूं।'

هَدَانِيْ وَقَدْ كُنْتُ فِيْ ظُلْمَةٍ حَلِيْفَ مَنَاةَ وَأَحْجَارِهٖ

'मैं अंधेरे में पड़ा हुआ था और मनात और उसके पत्थरों का पुजारी था, अल्लाह ने मुझे हिदायत दी।'

وَأَنْقَذَنِيْ بَعْدَ شَيْبِ الْقَذَالِ مِنْ شَيْنِ ذَاكَ وَمِنْ عَارِهٖ

'बुढ़ापे की वजह से मेरे सर के बाल सफ़ेद हो चुके थे, लेकिन अल्लाह ने मुझे बुतों की इबादत के ऐब और ख़राबी से नजात दिला दी।'

فَقَدْ كِدْتُ أَهْلِكُ فِيْ ظُلْمَةٍ تَدَارَكَ ذَاكَ بِمِقْدَارِهٖ

'मैं तो अंधेरे में बिल्कुल हलाक होने वाला था, लेकिन अल्लाह ने मुझे अपनी क़ुदरत से उससे बचा लिया।'

فَحَمْدًا وَّشُكْرًا لَّهٗ مَا بَقِيْتُ إِلٰهِ الْأَنَامِ وَجَبَّارِهٖ

'जब तक मैं ज़िंदा रहूंगा, उसकी तारीफ़ और उसका शुक्र अदा करता रहूंगा। वह तमाम मख़्लूक़ का ख़ुदा और मख़्लूक़ की ख़राबियों

को दुरुस्त करने वाला है।'

أُرِيْدُ بِذَالِكَ إِذْ قُلْتُهُ مُجَاوَرَةَ اللّٰهِ فِيْ دَارِهِ

इन पदों के कहने का मेरा मक़्सद यह है कि मुझे अल्लाह के घर (जन्नत) में उसका पड़ोस नसीब हो गए।

और अपने बुत मनात की निंदा में ये पद कहे—

تَاللّٰهِ لَوْ كُنْتَ إِلٰهًا لَمْ تَكُنْ أَنْتَ وَكَلْبٌ وَسْطَ بِئْرٍ فِيْ قَرَنْ

'अल्लाह की क़सम ! अगर तू सच्चा माबूद होता तो कुत्ते के साथ एक रस्सी में बंधा हुआ कुंएं में पड़ा हुआ न होता।'

أُفٍّ لِمُلْقَاكَ إِلٰهًا مُسْتَدَنْ أَلْآنَ فَتَّشْنَاكَ عَنْ سُوْءِ الْغَبَنْ

'इस पर तुफ़ हो कि तू माबूद होने के बावजूद ज़लील व ख़्वार उस जगह पड़ा हुआ था। अब हमने तेरे इंतिहाई बुरे नुक़्सान को मालमू कर लिया है।'

هُوَ الَّذِيْ أَنْقَذَنِيْ مِنْ قَبْلِ أَنْ أَكُوْنَ فِيْ ظُلْمَةِ قَبْرٍ مُّرْتَهَنْ

'अल्लाह ही ने मुझे इससे पहले बचा लिया कि मैं क़ब्र की अंधेरी में पड़ा हुआ होता।'

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ ذِي الْمِنَنْ أَلْوَاهِبِ الرَّزَّاقِ دَيَّانِ الدِّيَنْ

'तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो सबसे बरतर, बड़े एहसानों वाला, अतीया देने वाला, रोज़ी देने वाला, जो (हर तरह की) आदतों का बदला देने वाला है।'

वाक़िदी बयान करते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा के बारे में बयान किया गया है कि वह अपने घराने में सबसे आख़िर में मुसलमान हुए। वह अपने बुत की इबादत में बराबर लगे रहे। उन्होंने इस बुत पर एक रूमाल डाला हुआ था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु जाहिलियत के ज़माने में उनके भाई बने हुए थे। वे उनके पास आकर उनको इस्लाम की दावत दिया करते थे, यह हर बार इंकार कर देते। एक दिन हज़रत अब्दुल्लाह ने देखा कि हज़रत अबुद्दर्दा घर से बाहर जा रहे हैं। वह

उनके बाद उनके घर में उनकी बीवी को बताए बग़ैर दाख़िल हो गए। वह अपने सर में कंघी कर रही थी और उससे पूछा, अबुद्दर्दा कहां हैं?

उनकी बीवी ने कहा, आपके भाई अभी बाहर गए हैं।

हज़रत अबुद्दर्दा ने जिस कमरे में बुत रखा हुआ था, यह उसमें कुल्हाड़ा लेकर गए, और उस बुत को नीचे गिरा कर उसके टुकड़े करने लगे और तमाम शैतानों (यानी बुतों) के नाम लेकर धीरे-धीरे यह कहकर गुनगुना रहे थे—

الا کل ما یدعی مع اللہ باطل

'ज़रा ग़ौर से सुनो, अल्लाह के साथ जिसको भी पुकारा जाता है, वह झूठ और बेकार है।' और उस बुत के टुकड़े-टुकड़े करके बाहर आ गए।

जब वह बुत को तोड़ रहे थे हज़रत अबुद्दर्दा की बीवी ने कुल्हाड़े की आवाज़ सुन ली थी, तो वह चिल्लाई और कहा, ऐ इब्ने रुवाहा! तुमने तो मुझे मार डाला।

हज़रत अब्दुल्लाह अभी घर से निकले ही थे कि इतने में हज़रत अबुद्दर्दा अपने घर वापस आ गए तो उन्होंने देखा कि उनकी बीवी बैठी हुई उनसे डर कर रो रही है। उन्होंने अपनी बीवी से पूछा, तुझे क्या हुआ?

उसने बताया कि तुम्हारे भाई अब्दुल्लाह बिन रुवाहा यहां आए थे और देखो वह क्या कर गए?

(उसे देखकर एक बार तो) हज़रत अबुद्दर्दा को बड़ा ग़ुस्सा आया, लेकिन फिर उन्होंने अपने दिल में सोचा और कहा कि अगर इस बुत में कुछ भलाई होती तो अपना बचाव तो कर लेता। वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा को लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए और मुसलमान हो गए।[1]

हज़रत ज़ियाद बिन जज़्ज़ ज़ुबैदी कहते हैं कि हमने हज़रत उमर

1. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 336

रज़ि० की ख़िलाफ़त के ज़माने में स्कन्दरिया को जीत लिया। आगे तफ़्सील से हदीस ज़िक्र की है, उसमें यह भी है कि हम बलहीब बस्ती में ठहर गए और हम लोग हज़रत उमर रज़ि० के ख़त का इन्तिज़ार करते रहे, यहां तक कि हज़रत उमर का ख़त आ गया, जो हज़रत अम्र रज़ि० ने पढ़कर हमें सुनाया। उस ख़त में यह मज़्मून था—

'इसके बाद, तुम्हारा ख़त मिला, जिसमें तुमने लिखा है कि स्कन्दरिया के बादशाह ने तुम्हारे सामने इस शर्त पर जिज़या देने की पेशकश की है कि उनके देश के तमाम क़ैदी वापस कर दिए जाएं, मेरी ज़िंदगी की क़सम! जिज़या का जो माल हमें और हमारे बाद के मुसलमानों को बराबर मिलता रहेगा, वह मुझे उस माले ग़नीमत से ज़्यादा पसंद है, जिसे बांट दिया जाता है और फिर ख़त्म हो जाता है। तुम स्कन्दरिया के बादशाह के सामने यह तज्वीज़ रखो कि वह तुम्हें इस शर्त पर जिज़या दे कि तुम्हारे क़ब्ज़े में उनके जितने क़ैदी हैं उनको मुसलमान होने और अपने दीन पर बाक़ी रहने का अख़्तियार दिया जाएगा। इनमें से जो इस्लाम को अख़्तियार करेगा, वह मुसलमानों में से गिना जाएगा। मुसलमानों वाले सारे हक़ उसे मिलेंगे और मुसलमानों वाली सारी ज़िम्मेदारियां उस पर होंगी और उनमें से जो अपनी क़ौम के दीन पर बाक़ी रहना चाहेगा, उसे इतना जिज़या देना पड़ेगा, जितना उसके मज़हब वालों पर मुक़र्रर किया गया है और उनके वे क़ैदी जो अब देश में फैल गए हैं और मक्का, मदीना और यमन पहुंच गए हैं उनको वापस करना हमारे बस से बाहर है और हम किसी ऐसी बात पर समझौता नहीं करना चाहते हैं, जिसे हम पूरा न कर सकते हों।'

हज़रत अम्र ने स्कन्दरिया के बादशाह के पास आदमी भेजकर अमीरुल मोमिनीन के ख़त की उसे ख़बर दी। उसने कहा, मुझे मंज़ूर है। चुनांचे हमारे क़ब्ज़े में जितने क़ैदी थे, उन सबको एक जगह जमा किया गया और वहां के ईसाई भी जमा हो गए जो हमारे पास क़ैदी थे। उनमें से हम एक आदमी को लाते, फिर उसे मुसलमान होने या ईसाई रहने का अख़्तियार देते। अगर वह इस्लाम को अख़्तियार कर लेता, तो हम किसी शहर के जीते जाने पर जितनी ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहते, इस

मौक़े पर उससे कहीं ज़्यादा ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहते और फिर हम उसे मुसलमानों में ले आते और उनमें से जब कोई ईसाइयत को अपना लेता तो ईसाई ख़ुशी से शोर मचाते और फिर उसे अपने मज्मे में ले जाते और हम उस पर जिज़्या मुक़र्रर कर देते और उससे हमें इतना ज़्यादा दुख होता कि जैसे हम में से कोई आदमी निकलकर उधर चला गया हो।

चुनांचे यों ही सिलसिला चलता रहा, यहां तक कि अबू मरयम अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान को भी बीच में लाया गया। क़ासिम रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने उनकी ज़ियारत की है। उस वक़्त वह बनू ज़ुबैद के सरदार थे। चुनांचे हमने उनको खड़ा करके उन पर इस्लाम और ईसाइयत को पेश किया और उनके मां-बाप और भाई ईसाइयों के इस मज्मे में मौजूद थे। उन्होंने इस्लाम को अख़्तियार किया। हम उन्हें अपने में लाने लगे तो उनके मां-बाप और भाई उन पर झपटे और उनको हमसे छीनने लगे, इसी खींचातानी में उन्होंने उनके कपड़े फाड़ दिए। (बहरहाल उनको मुसलमानों में ले आए) और वे आज हमारे सरदार हैं जैसे कि आप देख रहे हैं। हदीस का मज़्मून आगे भी है।[1]

हज़रत शाबी बयान करते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बाज़ार तशरीफ़ ले गए, तो उन्होंने देखा कि एक ईसाई एक ज़िरह (कवच) बेच रहा है। हज़रत अली रज़ि० ने उस ज़िरह को पहचान लिया और फ़रमाया, यह ज़िरह मेरी है, चलो मेरे और तुम्हारे दर्मियान मुसलमानों का क़ाज़ी फ़ैसला करेगा और उन दिनों मुसलमानों के क़ाज़ी हज़रत शुरैह थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ही उनको क़ाज़ी बनाया था।

जब क़ाज़ी शुरैह ने अमीरुल मोमिनीन को देखा तो अपनी मज्लिस में खड़े हो गए और हज़रत अली रज़ि० को अपनी जगह बिठाया और ख़ुद उनके सामने उस ईसाई के पहलू में बैठ गए।

1. तबरी, भाग 4, पृ० 227

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, ऐ शुरैह ! अगर मेरा फ़रीक़ मुख़ालिफ़ मुसलमान होता तो मैं उसके साथ बैठता, लेकिन मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि इन (ग़ैर-मुस्लिम ज़िम्मियों) से मुसाफ़ा न करो और उनको सलाम करने में पहल न करो और उनके बीमारों का पूछना न करो और उनकी जनाज़े की नमाज़ न पढ़ो और उनको रास्ते के तंग हिस्से में चलने पर मजबूर करो, इन्हें छोटा बनाकर रखो जैसे अल्लाह ने इन्हें छोटा बनाया है। ऐ शुरैह ! मेरे और इसके बीच फ़ैसला करो।

हज़रत शुरैह ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप क्या कहते हैं?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, यह ज़िरह मेरी है। काफ़ी अर्से पहले यह कहीं गिर गई थी।

हज़रत शुरैह ने कहा, मेरा फ़ैसला यह है कि यह ज़िरह इससे नहीं ले जा सकती, क्योंकि आपके पास कोई गवाह नहीं।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, क़ाज़ी शुरैह ने ठीक फ़ैसला किया है। इस पर उस ईसाई ने कहा कि मैं गवाही देता हूं कि ये नबियों वाले फ़ैसले हैं कि अमीरुल मोमिनीन अपने मातहत क़ाज़ी के पास आए और उस क़ाज़ी ने अमीरुल मोमिनीन के ख़िलाफ़ फ़ैसला दिया हो। ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह की क़सम ! यह ज़िरह आपकी है। आपके पीछे मैं चल रहा था। आपके ख़ाकी रंग के ऊंट से यह गिरी थी, जिसे मैंने उठा लिया था और फिर उस ईसाई ने कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللّٰهِ

'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदर-रसूलुल्लाह०' पढ़ा। इस पर हज़रत अली ने कहा, जब तुम मुसलमान हो हो गए तो अब यह ज़िरह तुम्हारी ही है और उसे एक घोड़ा भी दिया।[1]

हाकिम की एक रिवायत में यह भी है कि जुमल की लड़ाई के दिन हज़रत अली रज़ि० की एक ज़िरह गुम हो गई थी। एक आदमी को मिली, उसने आगे बेच दी। हज़रत अली ने उस ज़िरह को एक यहूदी के

1. तिर्मिज़ी, हाकिम

पास देखकर पहचान लिया। क़ाज़ी शुरैह के यहां उस यहूदी पर मुक़दमा कर दिया। हज़रत हसन और हज़रत अली के आज़ाद किए हुए गुलाम क़ंबर ने हज़रत अली रज़ि० के हक़ में गवाही दी।

क़ाज़ी शुरैह ने कहा, हज़रत हसन की जगह कोई और गवाह लाओ।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, क्या आप हज़रत हसन की गवाही को क़ुबूल नहीं करते?

उन्होंने कहा, नहीं, बल्कि आप ही से सुनी हुई यह बात याद है कि बाप के हक़ में बेटे की गवाही सही नहीं है।

हज़रत यज़ीद तैमी ने इस हदीस को तफ़्सील से बयान किया है। इसमें यह मज़्मून है कि क़ाज़ी शुरैह ने हज़रत अली से कहा कि आपके गुलाम की गवाही तो हम मानते हैं, लेकिन आपके हक़ में आपके बेटे की गवाही नहीं मानते हैं।

इस पर हज़रत अली ने कहा, तुझे मेरी मां गुम करे, क्या तुमने हज़रत उमर को यह कहते हुए नहीं सुना कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया कि हसन और हुसैन जन्नत के जवानों के सरदार हैं और फिर हज़रत अली ने उस यहूदी से कहा, यह ज़िरह तुम्हीं ले जाओ।

उस यहूदी ने कहा, तमाम मुसलमानों का अमीर मेरे साथ मुसलमानों के क़ाज़ी के पास आया और क़ाज़ी ने उसके ख़िलाफ़ फ़ैसला दे दिया और मुसलमानों का अमीर इस फ़ैसले पर राज़ी भी हो गया। (यह मंज़र देखकर वह इतना मुतास्सिर (प्रभावित) हुआ कि उसने तुरन्त कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह की क़सम! आपने ठीक कहा था, यह ज़िरह आप ही की है, आपके ऊंट से गिरी थी, जिसे मैंने उठा लिया था और फिर उसने कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश्हदु अल ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदर रसूलुल्लाह० पढ़ा।

हज़रत अली ने वह ज़िरह उसे हदिए में दी और और इसके अलावा सात सौ दिरहम भी दिए और फिर वह मुसलमान होकर हज़रत अली रज़ि० के साथ ही रहा करता था, यहां तक कि उन्हीं के साथ सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में शहीद हो गया।[1]

---

1. हुलीया, भाग 4, पृ० 139, कंज़ुल उम्माल भाग 4, पृ० 6

हज़रात सहाबा किराम रज़ि० किस तरह हुज़ूर सल्ल० से और आपके बाद आपके ख़लीफ़ों से बैअत हुआ करते थे और किन मामलों पर बैअत हुआ करती थी

इस्लाम पर बैअत होना

हज़रत जरीर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमसे उन बातों पर बैअत ली, जिन बातों पर आपने औरतों से बैअत ली थी और आपने फ़रमाया कि तुममें से जो इस हाल में मरे कि उसने उन मना किए हुए कामों में से कोई काम न किया हो, तो मैं उसके लिए जन्नत की ज़मानत लेता हूं और तुममें से जो इस हाल में मरे कि उसने उन मना किए हुए कामों में से कोई काम कर लिया और उसको उसकी शरई सज़ा मिल गई तो यह सज़ा उसके लिए कफ़्फ़ारा है और जिसने उन मना किए हुए कामों में से कोई काम किया और इस पर परदा पड़ा रहा। (किसी को पता न चला और उसकी शरई सज़ा उसे न मिली) तो उसका हिसाब अल्लाह की किताब के ज़िम्मे है (वह जो चाहे करे)[1]।

हज़रत अस्वद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को मक्का के जीतने के दिन लोगों को बैअत करते हुए देखा। कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० क़र्नेमस्क़ला नामी जगह के पास बैठकर लोगों को इस्लाम और शहादत पर बैअत कर रहे थे।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने (अपने उस्ताद अब्दुल्लाह बिन उस्मान से) पूछा कि शहादत से क्या मुराद है?

उन्होंने कहा कि मुझे (मेरे उस्ताद) मुहम्मद बिन अस्वद बिन ख़ल्फ़ ने बताया था कि हुज़ूर सल्ल० उनको अल्लाह पर ईमान लाने और कलिमा शहादत—

---

1. मजमउज़्ज़वाइद भाग 6, पृ० 36, कंज़, भाग 1, पृ० 82

أشهد أن لا إله إلا الله وأشهد أن محمدا عبده ورسوله

अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू पर बैअत कर रहे थे।[1]

बैहक़ी की रिवायत में यह है कि छोटे-बड़े मर्द और औरत तमाम लोग हुज़ूर सल्ल० के पास आए। आपने उनको इस्लाम और शहादत पर बैअत किया।[2]

हज़रत मुजाशेअ बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि मैं और मेरा भाई हम दोनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। मैंने अर्ज़ किया, आप हमें हिजरत पर बैअत फ़रमा लें।

आपने कहा कि (मदीना की तरफ़) हिजरत तो हिजरत वालों के साथ ख़त्म हो गई। (अब हिजरत का हुक्म नहीं रहा।)

मैंने पूछा, फिर आप हमें किस चीज़ पर बैअत करेंगे?

आपने फ़रमाया, इस्लाम और जिहाद पर।[3]

हज़रत ज़ियाद बिन इलाक़ा कहते हैं कि जिस दिन हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ, उस दिन हज़रत ज़रीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० ने लोगों में बयान फ़रमाया, तो मैंने उनको सुना, वह कह रहे थे कि (ऐ लोगो!) मैं तुम्हें 'अल्लाह वह्दहू ला शरी-क लहू' से डरने की और वक़ार और इत्मीनान से रहने की ताकीद करता हूं। मैंने अपने इन हाथों से हुज़ूर सल्ल० से इस्लाम पर बैअत की है। आपने हर मुसलमान की ख़ैरख़्वाही को मेरे लिए ज़रूरी क़रार दिया। रब्बे काबा की क़सम! मैं तुम सबका ख़ैरख़्वाह हूं, फिर इस्तग़फ़ार पढ़कर (मिंबर से) नीचे उतर आए।[4]

बैहक़ी वग़ैरह ने रिवायत किया है कि हज़रत ज़ियाद बिन हारिस सुदाई रज़ि० कहते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 318, मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 6, पृ० 37
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 318 मज्मउज़्ज़वाइद भाग 6, पृ० 37, कंज़, भाग 1, पृ० 82
3. बैहक़ी, भाग 7, पृ० 16, कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 26-83
4. मुस्नद, अबू उवाना, भाग 1, पृ० 38, बुख़ारी भाग 1, पृ० 14

ख़िदमत में हाज़िर हुआ और इस्लाम पर आपसे बैअत हुआ। आगे लम्बी हदीस है, जैसे कि दावत के बाब में गुज़र चुकी है।

आमाले इस्लाम पर बैअत होना

हज़रत बशीर बिन खसासीया रज़ि० कहते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत होने के लिए आपकी खिदमत में हाज़िर हुआ। मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे किन चीज़ों पर बैअत करते हैं ?

आपने अपना हाथ बढ़ाकर फ़रमाया, तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू के अलावा कोई माबूद नहीं है और हज़रत मुहम्मद उसके बन्दे और उसके रसूल हैं और पांचों नमाज़ें वक़्त पर पढ़ो, फ़र्ज़ ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो, बैतुल्लाह का हज करो और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करो।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! बाक़ी तो तमाम काम करूंगा, लेकिन दो काम नहीं कर सकता, एक तो ज़कात, क्योंकि मेरे पास दस ऊंट हैं। उनके दूध पर ही मेरे घर वालों का गुज़ारा होता है और वही उनके बारबरदारी के काम आते हैं और दूसरे जिहाद, क्योंकि मैं डरपोक आदमी हूं और लोग यों कहते हैं कि जो (लड़ाई के मैदान से) पीठ फेरेगा, वह अल्लाह के ग़ज़ब के साथ लौटेगा। मुझे डर है कि अगर दुश्मन से लड़ना पड़ गया और मैं घबराकर (लड़ाई के मैदान से) भाग गया, तो मैं अल्लाह के ग़ज़ब के साथ लौटूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने अपना हाथ पीछे खींच लिया और हाथ हिलाते हुए फ़रमाया, ऐ बशीर ! जब तुम न ज़कात दोगे और न जिहाद करोगे, तो किस अमल के ज़रिए जन्नत में दाख़िल होगे ?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप अपना हाथ बढ़ाएं, मैं आपसे बैअत होता हूं। चुनांचे आपने अपना हाथ बढ़ाया और मैं उन तमाम आमाल पर आपसे बैअत हो गया।[1]

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 12, मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 1, पृ० 42

हज़रत जरीर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं नमाज़ क़ायम करने, ज़कात देने और हर मुसलमान का भला चाहने पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत हुआ।[1]

इमाम अहमद ने ही इसी रिवायत को इस तरह भी नक़ल किया है कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप (बैअत होने के लिए) मुझे बताएं कि बैअत होने के बाद कौन-से आमाल करने पड़ेंगे? क्योंकि जिन आमाल की पाबन्दी करनी होगी, उनको आप अच्छी तरह जानते हैं।

आपने फ़रमाया, मैं तुम्हें इस बात पर बैअत करता हूं कि तुम एक अल्लाह की इबादत करोगे और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओगे, नमाज़ क़ायम करोगे और ज़कात दोगे, मुसलमानों के साथ भला चाहने का मामला करोगे और शिर्क से बिल्कुल बचकर रहोगे।[2]

इब्ने जरीर ने भी ऐसी ही रिवायत नक़ल की है, लेकिन उसमें यह है कि तमाम मुसलमानों से भला चाहने का मामला करोगे और शिर्क को छोड़ दोगे।[3]

तबरानी की रिवायत में है कि हज़रत जरीर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ जरीर ! अपना हाथ (बैअत होने के लिए) बढ़ाओ।

हज़रत जरीर ने कहा, किन आमाल पर?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम अपने आपको अल्लाह के सामने झुका दोगे और हर मुसलमान के साथ भला चाहोगे। (यह सुनकर) हज़रत जरीर (बैअत के लिए) राज़ी हो गए। हज़रत जरीर इंतिहाई समझदार आदमी थे, इसलिए उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं इन आमाल की इतनी पाबन्दी करूंगा जितनी मेरे बस में है। चुनांचे इसके

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 82, तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 236
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 78
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 82

बाद तमाम लोगों को यह रियायत मिल गई।[1]

हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम सात या आठ या नौ आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में थे कि आपने फ़रमाया, क्या तुम अल्लाह के रसूल से बैअत नहीं होते? और इस जुम्ले को तीन बार दोहराया, तो हम हुज़ूर सल्ल० से बैअत होने के लिए आगे बढ़े और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम तो आपसे बैअत हो चुके हैं। अब हम आपसे किस चीज़ पर बैअत हों?

आपने फ़रमाया इस पर बैअत हो जाओ कि तुम अल्लाह की इबादत करोगे, उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करोगे, पांच नमाज़ें पढ़ोगे और एक जुम्ला धीरे से फ़रमाया कि लोगों से कोई चीज़ न मांगोगे।

हज़रत औफ़ कहते हैं कि मैंने उन लोगों को देखा कि उनमें से किसी का कोड़ा गिर जाता तो वह किसी से न कहता कि कोड़ा उसे पकड़ा दे।[2]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कौन बैअत होने के लिए तैयार है?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! आप हमें बैअत फ़रमा लें।

आपने फ़रमाया, हां, इस शर्त पर (बैअत करता हूं) कि किसी से कोई चीज़ न मांगोगे।

हज़रत सौबान ने कहा, (जो ऐसा करेगा) फिर उसे क्या मिलेगा?

आपने फ़रमाया, जन्नत। चुनांचे हज़रत सौबान रज़ि० आपसे बैअत हो गए।

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 82
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 83, तर्ग़ीब भाग 2, पृ० 98

हज़रत अबू उमामा कहते हैं कि मैंने हज़रत सौबान को मक्का में भरे मज्मे में देखा कि वह सवारी पर सवार होते थे, उनका कोड़ा गिर जाता और कभी-कभी वह कोड़ा किसी के कंधे पर गिर जाता और वह आदमी वह कोड़ा उनको पकड़ाना चाहता, तो वे उससे कोड़ा न लेते, बल्कि ख़ुद सवारी से नीचे उतर कर उस कोड़े को उठाते।[1]

हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पांच बार मुझे बैअत फ़रमाया और सात बार मुझसे वायदा लिया और सात ही बार आपने अल्लाह को मेरे ऊपर गवाह बनाकर फ़रमाया कि मैं अल्लाह के बारे में किसी की मलामत से न डरूं।

हज़रत अबुल मुसन्ना कहते हैं कि हज़रत अबूज़र ने कहा कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बुलाया और कहा, क्या तुम्हें बैअत होने का शौक़ है कि तुम्हें (उसके बदले में) जन्नत मिले?

मैंने कहा, जी हां। और मैंने अपना हाथ बढ़ा दिया और जो आमाल मुझे बैअत होने के बाद करने होंगे, वे आमाल बताते हुए हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं लोगों से कोई चीज़ न मांगूं।

मैंने कहा, बहुत अच्छा।

फिर आपने फ़रमाया, अगर तुम्हारा कोड़ा (सवारी से) नीचे गिर जाए, तो वह भी (किसी से) न मांगना, बल्कि ख़ुद (सवारी से) नीचे उतर कर उठाना।

एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने छः दिन फ़रमाया कि जो बात तुम्हें बाद में बताई जाएगी, उसे अच्छी तरह समझ लेना। सातवें दिन आपने फ़रमाया, मैं तुमको हर मामले में अल्लाह से डरने की ताकीद करता हूं, चाहे वह लोगों के सामने का हो या उनसे छिपा हुआ और जब तुमसे कोई गुनाह हो जाए तो फ़ौरन नेकी कर लो और किसी से कोई चीज़ हरगिज़ न मांगना, यहां तक कि गिरे हुए कोड़े को भी उठा कर देने को न कहना और अमानत हरगिज़ न लेना।[2]

1. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 99-101
2. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 99

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं हज़रत अबूज़र, हज़रत उबादा बिन सामित, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी, हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हुम और एक और छठे आदमी, हम सब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बात पर बैअत हुए कि अल्लाह के बारे में किसी की मलामत का हम बिल्कुल असर न लेंगे। उस छठे आदमी ने हुज़ूर सल्ल० से बैअत वापस लेने की मांग की। आपने उसे बैअत वापस कर दी।[1]

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं (मदीना के) उन सरदारों में से हूं जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत की थी। आपने हमें उन बातों पर बैअत किया था कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करेंगे, चोरी नहीं करेंगे, ज़िना नहीं करेंगे, जिस आदमी के क़त्ल को अल्लाह ने हराम फ़रमाया है, उसे नाहक़ क़त्ल नहीं करेंगे, लूट-मार नहीं करेंगे और नाफ़रमानी नहीं करेंगे। अगर हम इस अह्द को पूरा करेंगे, तो इसके बदले में हमें जन्नत मिलेगी और अगर हम इन (हराम) कामों में से कोई काम कर बैठे, तो इसका फ़ैसला अल्लाह के सुपुर्द है।[2]

हज़रत उबादा रज़ि० से रिवायत है कि हम लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर थे। आपने फ़रमाया, मुझसे इन बातों पर बैअत हो जाओ कि तुम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करोगे और चोरी नहीं करोगे और ज़िना नहीं करोगे। तुममें से जिसने इस अह्द को पूरा कर दिया, उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है और जो इनमें से कोई काम कर बैठा और अल्लाह ने उस पर परदा डाला, तो उसका मामला अल्लाह के हवाले है, अगर चाहे तो अज़ाब दे और अगर चाहे तो उसे माफ़ कर दे।[3]

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० कहते हैं कि पहली अक़बा की

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 82, मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 7, पृ० 264
2. मुस्लिम,
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 82

बैअत में हम ग्यारह आदमी थे। उस वक़्त तक हम पर लड़ना फ़र्ज़ नहीं हुआ था, इसलिए आपने हमें उन बातों पर बैअत किया जिन पर आप औरतों से बैअत किया करते थे। हमने आपसे इन बातों पर बैअत की कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करेंगे और चोरी नहीं करेंगे, ज़िना नहीं करेंगे, न औलाद का बोहतान बांधेंगे, जिसे अपने हाथों और पैरों के दर्मियान गढ़ा हो, न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगे और नेकी के किसी काम में नाफ़रमानी नहीं करेंगे। जो इस अह्द को पूरा करेगा, उसे जन्नत मिलेगी और जो इनमें से कोई काम कर बैठा, तो उसका मामला अल्लाह के हवाले है, चाहे तो उसे अज़ाब दे, चाहे तो उसे माफ़ कर दे।

अगले साल ये लोग दोबारा आकर हुज़ूर सल्ल० से बैअत हुए।[1]

हिजरत पर बैअत होना

हज़रत याला बिन मुनीह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं मक्का के जीते जाने के अगले दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे वालिद को हिजरत पर बैअत फ़रमा लें।

आपने फ़रमाया, हिजरत पर नहीं, बल्कि मैं उनको जिहाद पर बैअत करूंगा, क्योंकि फ़त्हे मक्का के दिन से हिजरत का हुक्म ख़त्म हो गया है[2] और पहले हज़रत मुजाशिअ रज़ि० की हदीस गुज़र चुकी है, जिसमें यह है कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! हमें हिजरत पर बैअत फ़रमा लें।

आपने फ़रमाया, हिजरत तो हिजरत वालों के साथ ख़त्म हो गई इससे पहले हज़रत जरीर की हदीस गुज़र चुकी है जिसमें यह है कि तुम शिर्क से बिल्कुल बचकर रहोगे।

बैहक़ी में हज़रत जरीर रज़ि० की रिवायत में यह है कि तुम ईमान

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 82, बिदाया, भाग 3, पृ० 150
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 16

वालों का भला चाहोगे और मुश्रिकों को छोड़ दोगे।[1]

हज़रत हारिस बिन ज़ियाद साइदी रज़ि॰ कहते हैं कि मैं ग़ज़वा ख़ंदक़ के दिन हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप लोगों की हिजरत पर बैअत फ़रमा रहे थे। मैं यह समझा कि सब लोगों को (मदीना वालों को भी और बाहर वालों को भी) इस बैअत के लिए बुलाया जा रहा है।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल॰! इसे हिजरत पर बैअत फ़रमा लें।

आपने फ़रमाया, यह कौन है?

मैंने कहा, ये मेरे चचेरे भाई हौत बिन यज़ीद या यज़ीद बिन हौत हैं।

आपने फ़रमाया, मैं तुम (मदीना के अंसार) को (हिजरत पर) बैअत नहीं करता हूं। लोग तुम्हारे पास हिजरत करके आते हैं, तुमको लोगों के पास हिजरत करके नहीं जाना है। क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जो भी मरते दम तक अंसार से मुहब्बत करेगा, वह अल्लाह का महबूब बनकर मरेगा और जो मरते दम तक अंसार से बुग़्ज़ रखेगा, वह अल्लाह का मबग़ूज़ बनकर मरेगा।[2]

हज़रत अबू उसैद साइदी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि ख़ंदक़ की खुदाई के मौक़े पर लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर बैअत हो रहे थे। जब आप (बैअत से) फ़ारिग़ हो गए तो फ़रमाया, ऐ अंसार की जमाअत! तुम हिजरत पर बैअत न हो, क्योंकि लोग हिजरत करके तुम्हारे पास आते हैं। जो अंसार से मुहब्बत करते हुए मरेगा, वह अल्लाह का महबूब बनकर अल्लाह के सामने हाज़िर होगा और जो अंसार से बुग़्ज़ रखते हुए मरेगा, वह अल्लाह का मबग़ूज़ बनकर अल्लाह के सामने हाज़िर होगा।[3]

---

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ॰ 13
2. कंज़, भाग 7, पृ॰ 134, इसाबा, भाग 1, पृ॰ 279, हैसमी, भाग 10, पृ॰ 38
3. हैसमी, भाग 10., पृ॰ 38

नुसरत पर बैअत होना

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का में दस साल इस तरह गुज़ारे कि आप लोगों के पास हज के मौक़े पर उनकी क़ियामगाहों में उकाज़ और मजन्ना के बाज़ारों में जाया करते थे और उनसे फ़रमाते, कौन मुझे ठिकाना देगा? और कौन मेरी मदद करेगा? ताकि मैं अपने रब का पैग़ाम पहुंचा सकूं? और उसे (उसके बदले में) जन्नत मिलेगी?

चुनांचे आपको कोई आदमी ऐसा न मिलता जो आपको ठिकाना दे और आपकी मदद करे। (बल्कि आपकी मुख़ालफ़त इस हद तक फैल गई थी) कि कोई आदमी यमन या मुज़र से (मक्का के लिए) रवाना होने लगता तो उसकी क़ौम के लोग और उसके रिश्तेदार उसके पास आकर उससे कहते कि क़ुरैश के नवजवान से बचकर रहना, कहीं वह तुम्हें फ़ित्ने में न डाल दे।

आप लोगों की क़ियामगाहों से गुज़रते तो लोग आपकी ओर उंगलियों से इशारा करते, यहां तक कि अल्लाह ने यसरिब से हमें आपके पास भेज दिया। हम आपको ठिकाना देने के लिए तैयार हो गए और हमने आपकी तस्दीक़ की, फिर हमारे आदमी एक-एक करके हुज़ूर सल्ल० के पास जाते रहे और आप पर ईमान लाते रहे और आप उनको क़ुरआन सिखाते रहे। वहां से वह आदमी मुसलमान होकर अपने घर आता तो उसके इस्लाम की वजह से उसके घर वाले मुसलमान हो जाते, यहां तक कि अंसार के हर मुहल्ले में मुसलमानों की एक जमाअत ऐसी तैयार हो गई जो अपने इस्लाम का इज़्हार करती थी।

फिर सबने मिलकर मश्विरा किया और हमने कहा कि कब तक हम हुज़ूर सल्ल० को ऐसे ही छोड़े रखेंगे कि आप यों ही लोगों में फिरते रहें और मक्का के पहाड़ों में आपको धुतकारा जाता रहे और आपको डराया जाता रहे।

चुनांचे हमारे सत्तर आदमी गए और हज के मौसम में हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हमने आपसे शेबे अक़बा में मिलना तै

किया। चुनांचे हम वहां एक-एक, दो-दो आदमी होकर सब इकट्ठे हो गए और हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! हम आपसे किस चीज़ पर बैअत करें ?

आपने फ़रमाया, तुम लोग मुझसे इस बात पर बैअत करो कि तुम्हारा दिल चाहे या न चाहे, हर हालत में तुम सुनोगे भी और मानोगे भी और तंगी और फ़राख़ी दोनों हालतों में ख़र्च करोगे, भलाई का हुक्म दोगे और बुराई से रोकोगे, तुम अल्लाह की ख़ुश्नूदी की बात करोगे। अल्लाह के बारे में किसी की मलामत से नहीं डरोगे, तुम मेरी मदद करोगे और जब मैं तुम्हारे यहां जाऊं, उस वक़्त तुम मेरी उन तमाम चीज़ों से हिफ़ाज़त करोगे, जिनसे तुम अपनी और अपने बीवी-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हो और तुम्हें (इसके बदले में) जन्नत मिलेगी।

हम लोग खड़े होकर आपकी ओर गए तो हज़रत असअद बिन ज़ुरारह रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपका हाथ पकड़ लिया। हज़रत असअद उन सत्तर आदमियों में उम्र में सबसे छोटे थे और बैहक़ी की रिवायत में यह है कि वह मेरे अलावा बाक़ी सबसे छोटे थे। उन्होंने कहा, ऐ यसरिब वालो ! ठहरो, हम इनके पास सफ़र करके सिर्फ़ इस वजह से आए हैं कि हमें यक़ीन है कि ये अल्लाह के रसूल हैं और आज आपको तुम (अपने यहां) ले जाओगे, तो इससे सारा अरब तुम्हारा दुश्मन बन जाएगा, तुम्हारे बेहतरीन लोगों को क़त्ल कर दिया जाएगा और तलवारें तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देंगी। अगर तुम इन चीज़ों पर सब्र कर सकते हो, तो फिर इनको ज़रूर ले जाओ और तुम्हें अल्लाह इसका (बड़ा) अज्र अता फ़रमाएंगे और अगर तुम्हें अपने बारे में कुछ ख़तरा हो, तो इन्हें छोड़ दो और इन्हें साफ़-साफ़ बता दो, तो इस तरह तुम्हारा उज़्र अल्लाह के यहां ज़्यादा क़ाबिले क़बूल होगा।

उन लोगों ने कहा, ऐ असअद ! तुम हमसे पीछे हट जाओ, अल्लाह की क़सम ! हम इस बैअत को नहीं छोड़ेंगे और न ही हमसे इसको कोई रोक सकता है। चुनांचे हम खड़े होकर आपसे बैअत हुए। आपने हमसे अह्द लिया और जो काम हमारे ज़िम्मे थे वे हमें बताए और इन कामों

के करने पर आपने जन्नत का वायदा फ़रमाया ।[1]

हज़रत काब बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग शाबे अक़बा में जमा होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्तिज़ार कर रहे थे कि थोड़ी देर के बाद हुज़ूर सल्ल० हमारे पास तशरीफ़ ले आए। हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब भी आपके साथ थे और वह उस वक़्त तक अपनी क़ौम के दीन पर थे, लेकिन उन्होंने चाहा कि अपने भतीजे के इस मामले में मौक़े पर हाज़िर हों और उनके लिए (मदीना के अंसार से) अह्द का पैमान लें।

चुनांचे जब हुज़ूर सल्ल० बैठ गए तो सबसे पहले हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ने बात शुरू की और कहा, ऐ ख़ज़रज के लोगो! जैसा कि तुम्हें मालूम है मुहम्मद हम में से हैं। हमने उनकी अपनी क़ौम के उन लोगों से हिफ़ाज़त की है जो उनके बारे में हमारे जैसे ख़्याल रखते हैं (यानी हमारी ख़ातिर उन पर ईमान नहीं लाए हैं) तो ये अपनी क़ौम में इज़्ज़त से और अपने शहर में हिफ़ाज़त से रह रहे हैं और अब उन्होंने सब कुछ छोड़कर तुम्हारे साथ जाने और तुम्हारे यहां रहने का फ़ैसला कर लिया है, इसलिए अगर तुम यह समझते हो कि तुम उनको जिस चीज़ की दावत दे रहे हो, उसे तुम पूरा कर लोगे, तो तुम जानो और तुम्हारी ज़िम्मेदारी।

और अगर तुम्हारा यह ख़्याल है कि जब ये तुम्हारे यहां पहुंच जाएंगे, तो इनको इनके दुश्मनों के हवाले कर दोगे और इनकी मदद छोड़ बैठोगे, तो अभी से इनको यहां छोड़ जाओ, क्योंकि यह अपनी क़ौम और अपने शहर में बड़ी इज़्ज़त और हिफ़ाज़त से रह रहे हैं।

हमने हज़रत अब्बास से कहा, हमने आपकी सारी बात सुन ली, ऐ अल्लाह के रसूल! अब आप फ़रमाएं अपने लिए और अपने रब के लिए हमसे जो अह्द लेना चाहें, वह ले लें।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने बातें कीं, क़ुरआन पढ़कर सुनाया, इन

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 159, फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 158, हैसमी, भाग 6, पृ० 46

सबको अल्लाह की तरफ़ दावत दी, और इस्लाम की चाहत दी और फ़रमाया, मैं तुमको इस बात पर बैअत करता हूं कि जिन चीज़ों से तुम अपने बीवी-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हो, उन तमाम चीज़ों से मेरी भी हिफ़ाज़त करोगे।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत बरा बिन मारूर रज़ि० ने खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० का हाथ पकड़ लिया और कहा, हां, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, हम उन तमाम चीज़ों से आपकी ज़रूर हिफ़ाज़त करेंगे, जिनसे हम अपने बीवी-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हैं, आप हमें बैअत फ़रमा लें ऐ अल्लाह के रसूल ! अल्लाह की क़सम ! हम लोग बड़े लड़ाकू हैं, और पीढ़ी दर पीढ़ी लड़ते रहना हमें विरासत में मिला है।

हज़रत बरा हुज़ूर सल्ल० से बात कर रहे थे कि बीच में हज़रत अबुल हैसम बिन तैहान बोले, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कुछ लोगों से यानी यहूदियों से हमारे पुराने ताल्लुक़ात हैं, इन ताल्लुक़ात को हम (आपकी वजह से) ख़त्म कर देंगे, तो कहीं ऐसा तो न होगा कि हम उनसे ताल्लुक़ात ख़त्म कर दें और अल्लाह आपको ग़ालिब कर दें और आप हमें छोड़कर अपनी क़ौम के पास वापस चले जाएं।

हुज़ूर सल्ल० ने मुस्कराते हुए फ़रमाया, मेरा ख़ून तुम्हारा ख़ून है, जहां तुम्हारी क़ब्र बनेगी, वहां मेरी बनेगी। मैं तुममें से हूं और तुम मुझसे हो। जिससे तुम लड़ोगे, मैं उससे लड़ूंगा और जिससे तुम समझौता करोगे, मैं उससे समझौता करूंगा।

हज़रत काब रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम अपने में से बारह आदमी ज़िम्मेदार नुमाइन्दे बना दो, जो अपनी क़ौम की हर बात के ज़िम्मेदार होंगे। चुनांचे उन्होंने अपने में से बारह आदमी ज़िम्मेदार बनाए जिनमें नौ खज़रज के और तीन औस के थे।[1]

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु से मुरसलन नक़ल किया है कि हुज़ूर

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 160, ज़वाइद, भाग 6, पृ० 45, हैसमी, भाग 6, पृ० 45, हाफ़िज़, भाग 7, पृ० 157

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सबसे पहले हज़रत अबुल हैसम बिन तैहान रज़ि० बैअत हुए। इसकी शक्ल यह हुई कि उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल ! हमारे और कुछ लोगों के दर्मियान पुराने ताल्लुक़ात और समझौते हैं, हम इन ताल्लुक़ात और समझौतों को (आपकी वजह से) ख़त्म कर देंगे, लेकिन हो सकता है कि हम तो तमाम ताल्लुक़ात और समझौते ख़त्म करें और तमाम लोगों से लड़ाई करें और आप अपनी क़ौम में वापस चले जाएं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी बात से मुस्कराए और फ़रमाया, मेरा ख़ून तुम्हारा ख़ून है, जहां तुम्हारी क़ब्र बनेगी, वहां मेरी बनेगी। जब हज़रत अबुल हैसम हुज़ूर सल्ल० के जवाब से मुतमइन हो गए, तो उन्होंने अपनी क़ौम की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, ऐ मेरी क़ौम ! यह अल्लाह के रसूल हैं, मैं गवाही देता हूं कि यह बिल्कुल सच्चे हैं और आज यह अल्लाह के हरम में और उसकी पनाह में और अपनी क़ौम और ख़ानदान के बीच में रह रहे हैं। यह अच्छी तरह समझ लो कि अगर तुम इनको अपने यहां ले जाओगे, तो सारे अरब मिलकर तुम पर एक कमान से तीर चलाएंगे। अगर तुम अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हो जाने और माल और औलाद सब कुछ चले जाने पर ख़ुशी-ख़ुशी राज़ी हो तो इनको ज़रूर अपने इलाक़े की तरफ़ जाने की दावत दो, क्योंकि यह अल्लाह के बरहक़ रसूल हैं और अगर तुम्हें डर हो कि तुम इनकी मदद नहीं कर सकोगे, तो अभी से इन्हें छोड़ दो, तो इस पर सबने कहा कि—

अल्लाह और रसूल जो भी काम हमारे ज़िम्मे लगाएंगे, वह हमें क़बूल है, ऐ अल्लाह के रसूल ! हमारी जान के बारे में आप जो फ़रमाएंगे, हम वैसे ही करेंगे। ऐ अबुल हैसम ! हमारे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान में से हट जाओ। हम तो इनसे ज़रूर बैअत होंगे।

हज़रत अबुल हैसम कहते हैं, मैं सबसे पहले बैअत हुआ, फिर बाक़ी सारे बैअत हुए।[1]

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 47

हज़रत आसिम बिन उमर बिन क़तादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब ये तमाम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत होने के लिए जमा हो गए तो हज़रत अब्बास बिन उबादा बिन नज़ला रज़ि० ने जो कि क़बीला बनू सालिम बिन औफ़ के हैं, कहा, ऐ ख़ज़रज के लोगो ! क्या तुम जानते हो कि तुम इस आदमी से किस बात पर बैअत हो रहे हो ?

लोगों ने कहा, हां।

हज़रत अब्बास बिन उबादा ने कहा, उनसे बैअत होने का मतलब यह है कि तुमको अरब व अजम से लड़ना होगा। अगर तुम यह समझते हो कि जब तुम्हारे माल हलाक होने लगें और तुम्हारे सरदार क़त्ल होने लगें तो तुम उस वक़्त उनको दुश्मन के हवाले कर दोगे, तो अभी से उन्हें छोड़ दो, क्योंकि अल्लाह की क़सम ! बाद में उनको छोड़ने से तुम दुनिया व आख़िरत में रुसवा हो जाओगे और अगर तुम यह समझते हो कि माली नुक़्सान और सरदारों के क़त्ल होने के बावजूद तुम उस चीज़ को पूरा कर लोगे, जिसकी तुम उनको दावत दे रहे हो, तो फिर तुम उनको ज़रूर ले जाओ, क्योंकि उनको ले जाना अल्लाह की क़सम ! दुनिया और आख़िरत की ख़ैर ही ख़ैर है।

तमाम लोगों ने कहा, चाहे हमारे सारे माल हलाक हो जाएं और हमारे सारे सरदार क़त्ल हो जाएं, हम फिर भी उनको लेकर जाएंगे। ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर हम अपने इस वायदे को पूरा कर देंगे, तो हमें क्या मिलेगा ?

आपने फ़रमाया, जन्नत।

उन लोगों ने कहा, आप अपना हाथ बढ़ाएं, चुनांचे आपने हाथ बढ़ाया और वे सब आपसे बैअत हो गए।[1]

हज़रत माबद बिन काब अपने भाई हज़रत अब्दुल्लाह से नक़ल करते हैं कि (बैअत के बाद) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम अपनी अपनी क़ियामगाहों पर एक-एक, दो-दो होकर वापस चले जाओ, तो हज़रत अब्बास बिन उबादा ने कहा, ऐ अल्लाह के

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 162

रसूल ! क़सम है उस ज़ात की, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, अगर आप फ़रमाएं तो हम कल ही अपनी तलवारें लेकर मिना वालों पर टूट पड़ें।

आपने फ़रमाया, अभी हमें इसका हुक्म नहीं दिया गया। तुम अपनी क़ियामगाहों को वापस चले जाओ।[1]

जिहाद पर बैअत होना

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खन्दक़ की ओर तशरीफ़ ले गए। वहां मुहाजिर और अंसार सख़्त सर्दी में सुबह-सुबह खंदक़ खोद रहे थे। इन लोगों के पास ग़ुलाम नहीं थे जो उनका यह काम कर देते। हुज़ूर सल्ल० ने उनकी इस थकावट और भूख को देखकर यह शेर पढ़ा—

اَللّٰهُمَّ اِنَّ الْعَيْشَ عَيْشُ الْاٰخِرَةْ ۔ وَاغْفِرِ الْاَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةْ

'ऐ अल्लाह ! असल ज़िंदगी तो आख़िरत की है। इन अंसार और मुहाजिरीन की मग़्फ़िरत फ़रमा।'

हुज़ूर सल्ल० के जवाब में सहाबा रज़ि० ने यह शेर पढ़ा—

نَحْنُ الَّذِيْنَ بَايَعُوْا مُحَمَّدًا ۔ عَلَى الْجِهَادِ مَا بَقِيْنَا اَبَدًا

'हम वे लोग हैं जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बात पर बैअत की है कि जब तक हम ज़िंदा रहेंगे, जिहाद करते रहेंगे।'[2]

पीछे हज़रत मुजाशे रज़ि० की हदीस गुज़र चुकी, जिसमें यह है कि मैंने अर्ज़ किया, आप हमें किस चीज़ पर बैअत करेंगे ?

आपने फ़रमाया, इस्लाम और जिहाद पर।

पीछे हज़रत बशीर बिन ख़सासीया की हदीस भी गुज़र चुकी है कि आपने फ़रमाया, ऐ बशीर ! जब तुम न ज़कात दोगे और न जिहाद करोगे, तो फिर किस अमल से जन्नत में दाख़िल होगे ?

मैंने कहा, आप अपना हाथ बढ़ाएं, मैं आपसे बैअत होता हूं।

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 164
2. बुख़ारी, पृ० 397, फ़वाइद, भाग 2, पृ० 51

चुनांचे आपने अपना हाथ बढ़ाया और मैं आपसे बैअत हो गया।

पीछे हज़रत याला बिन मुनीह रज़ि० की हदीस भी गुज़र चुकी है कि मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे बाप को हिजरत पर बैअत फ़रमा लें।

आपने फ़रमाया, हिजरत पर नहीं, बल्कि जिहाद पर बैअत करूंगा।

मौत पर बैअत होना

हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० से बैअत होकर एक पेड़ के साए में एक ओर जा बैठा। जब लोग कम हो गए, तो आपने फ़रमाया, ऐ इब्नुल अकवअ ! क्या तुम बैअत नहीं होते हो ?

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं तो बैअत हो चुका।

आपने फ़रमाया, फिर भी।

चुनांचे मैं आपसे दो बार बैअत हो गया। रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने हज़रत सलमा से कहा, ऐ अबू मुस्लिम ! आप लोग उस दिन किस चीज़ पर बैअत हो रहे थे ?

उन्होंने कहा, मौत पर।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हर्रा की लड़ाई के दिनों में उनके पास एक आदमी ने आकर कहा कि इब्ने हंज़ला ! लोगों को मौत पर बैअत कर रहे हैं, तो उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० के बाद मैं किसी से भी इस पर (यानी मौत पर) बैअत नहीं हूंगा।[2]

बात सुनने और ख़ुशी से मानने पर बैअत होना

हज़रत उबैदुलाह बिन राफ़ेअ रज़ि० फ़रमाते हैं कि शराब की कुछ

---

1. बुख़ारी पृ० 415, ऐनी, भाग 7, पृ० 16, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 146, इब्ने साद भाग 4, पृ० 39
2. बुख़ारी, पृ० 415, ऐनी, भाग 7, पृ० 15, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 146

मश्कें कहीं से आईं। हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० ने जाकर उन तमाम मश्कों को फाड़ दिया और कहा कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बात पर बैअत हुए कि दिल चाहे या न चाहे, हर हाल में बात सुना करेंगे और माना करेंगे, तंगी और फैलाव दोनों हालतों में अल्लाह की राह में ख़र्च करेंगे, भलाई का हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे और हम अल्लाह की ख़ुश्नूदी की बात कहेंगे, अल्लाह के बारे में किसी की मलामत से नहीं डरेंगे और जब हुज़ूर सल्ल० हमारे यहां यसरिब में तशरीफ़ लाएंगे, तो हम आपकी मदद करेंगे और उन तमाम चीज़ों से आपकी हिफ़ाज़त करेंगे, जिनसे हम अपनी और अपने बीवी-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हैं और हमें (इन कामों के बदले में) जन्नत मिलेगी। यह वह बैअत है जिस पर हम हुज़ूर सल्ल० से बैअत हुए हैं।[1]

हज़रत उबादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जंग पर बैअत की कि तंगी और फैलाव में, दिल चाहे या न चाहे और चाहे हम पर दूसरों को तर्जीह दी जाए, हर हाल में हम बात सुनेंगे और मानेंगे, अमीर से अमीरी के बारे में झगड़ा नहीं करेंगे, जहां भी होंगे, हक़ बात कहेंगे और अल्लाह के बारे में किसी की मलामत से नहीं डरेंगे।[2]

इब्ने जरीर रह० ने हज़रत जुवैरिया रज़ि० से रिवायत की है कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात सुनने और मानने और तमाम मुसलमानों का भला चाहने पर बैअत की।

इब्ने जरीर ने ही उन्हीं से दूसरी रिवायत यह नक़ल की है कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मैं आपसे इस बात पर बैअत होता हूं कि मुझे अच्छी लगे या बुरी लगे, मैं आपकी हर बात सुनूंगा और मानूंगा।

आपने फ़रमाया, क्या तुम इस तरह कर सकते हो? इस तरह न

---

1. बैहक़ी,
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 163, तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 3

कहो, बल्कि यों कहो कि जो बात मेरे बस में होगी (उसे सुनूंगा और मानूंगा)।

तो मैंने कहा, जो बात मेरे बस में होगी। चुनांचे आपने मुझे इस पर भी बैअत फ़रमाया और मुसलमानों का भला चाहने पर भी बैअत फ़रमाया।[1]

अबू दाऊद और नसई में यह हदीस इस तरह से है कि हज़रत जरीर फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हर बात सुनने और मानने पर और हर मुसलमान का भला चाहने पर बैअत हुआ। चुनांचे जब यह कोई चीज़ बेचते या ख़रीदते तो अगले आदमी से यह कह देते कि हमने तुमसे जो चीज़ ली है, वह हमें इससे ज़्यादा पसन्द है, जो हमने तुमको दी है। अब तुम्हें अख़्तियार है (यह सौदा करो या न करो)[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हर बात सुनने और मानने पर बैअत होते थे, तो आप यह फ़रमा दिया करते कि यों कहो कि जो बात मेरे बस में होगी।[3]

हज़रत उत्बा बिन अब्द रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० से सात बार बैअत हुआ, पांच बार मानने पर और दो बार मुहब्बत करने पर।[4]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं अपने इस हाथ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बात पर बैअत हुआ हूं कि जहां तक मुझसे हो सकेगा, मैं हर बात सुना करूंगा और माना करूंगा।[5]

औरतों का बैअत करना

हज़रत उम्मे अतीया रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 82
2. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 237
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 83
4. कंज़, भाग 1, पृ० 83
5. कंज़, भाग 1, पृ० 82

अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो आपने अंसार की औरतों को एक घर में जमा किया, फिर उनके पास हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को भेजा। उन्होंने दरवाज़े पर खड़े होकर उन औरतों को सलाम किया। उन औरतों ने सलाम का जवाब दिया।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़ासिद बनकर तुम्हारे पास आया हूं।

उन औरतों ने कहा, ख़ुश आमदीद हो, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और आपके क़ासिद को।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, क्या तुम इन बातों पर बैअत होती हो कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करोगी, चोरी नहीं करोगी, ज़िना नहीं करोगी, अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करोगी, न कोई बोहतान लगाओगी जिसको तुमने अपने हाथों और पैरों के बीच बांध खड़ा किया हो और किसी नेकी के काम में नाफ़रमानी नहीं करोगी।

उन औरतों ने कहा, जी हां।

हज़रत उमर रज़ि० ने दरवाज़े के बाहर से अपना हाथ बढ़ाया और उन औरतों ने अन्दर से अपने हाथ बढ़ाए। (लेकिन हज़रत उमर का हाथ किसी औरत के हाथ को नहीं लगा) फिर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह ! तू गवाह हो जा।

फिर हमें इस बात का हुक्म दिय गया कि दोनों ईदों में हैज़ वाली औरतों और सयानी बच्चियों को भी (ईदगाह) ले जाया करें (कि ये नमाज़ तो नहीं पढ़ेंगी, लेकिन इनके जाने से मुसलमानों की तायदाद भी ज़्यादा मालूम होगी और ये दुआ में शरीक हो जाएंगी।) और हमें जनाज़े के साथ जाने से रोका गया और यह बताया गया कि हम पर जुमा फ़र्ज़ नहीं।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने अपने उस्ताद से बोहतान के बारे में और अल्लाह के क़ौल 'वला या सी-न-क फ़ी मारूफ़ि' के बारे में पूछा। उन्होंने कहा, इससे मुराद किसी के मरने पर नौहा करना है।[1]

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 38, मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 6, पृ० 38, कंज़, भाग 1, पृ० 8।

हज़रत सलमा बिन्त क़ैस रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ाला थीं और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के साथ दोनों क़िब्लों (बैतुल मक़्दिस और बैतुल्लाह) की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ी थी और वह बनू अदी बिन नज्जार क़बीले की थीं, फ़रमाती हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आई और अंसार की औरतों के साथ आपसे बैअत हो गई। जब आपने हमें इन चीज़ों पर बैअत फ़रमाया कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करेंगी, चोरी नहीं करेंगी, ज़िना नहीं करेंगी, अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करेंगी, कोई बोहतान नहीं लाएंगी, जिसे हमने अपने हाथों और पैरों के दर्मियान बांध खड़ा किया हो और किसी नेकी के काम में हुज़ूर सल्ल० की नाफ़रमानी नहीं करेंगी, तो आपने यह भी फ़रमाया कि अपने ख़ाविन्दों से ख़ियानत नहीं करोगी।

चुनांचे हम बैअत होकर वापस जाने लगीं, तो मैंने उनमें से एक औरत से कहा कि वापस जाकर हुज़ूर सल्ल० से पूछ आओ कि ख़ाविंदों से ख़ियानत करने का क्या मतलब है?

उसने जाकर हुज़ूर सल्ल० से पूछा। आपने फ़रमाया कि ख़ियानत यह है कि औरत ख़ाविंद का माल लेकर किसी को ख़ुद दे दे। (यानी ख़ाविंद की इजाज़त के बग़ैर)[1]

हज़रत उक़ैला बिन्त अतीक़ बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं और मेरी मां हज़रत क़रीरा बिन्त हारिस उतवारीया मुहाजिर औरतों के साथ आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत हुईं। आप अबतह नामी जगह पर एक ख़ेमा में तशरीफ़ रखते थे। आपने हमसे यह अह्द लिया कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करेंगी। आगे आयत वाले लफ़्ज़ हैं।

जब हम इक़रार कर चुकीं और आपसे बैअत होने के लिए हाथ बढ़ाए, तो आपने फ़रमाया, मैं औरतों के हाथ नहीं छू सकता। चुनांचे आपने हमारे लिए मग़्फ़िरत की दुआ की और यही हमारी बैअत थी।[2]

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 38, इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 353
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 39

हज़रत उमैमा बिन्त रुक़ैक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं, मैं कुछ औरतों के साथ हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में बैअत होने के लिए हाज़िर हुई। हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हम आपसे इस बात पर बैअत होती हैं कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करेंगी, चोरी नहीं करेंगी, ज़िना नहीं करेंगी, अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करेंगी, कोई बोहतान नहीं लाएंगी, जिसे हमने अपने हाथों और पैरों के दर्मियान बांध खड़ा किया हो और किसी नेकी के काम में आपकी नाफ़रमानी नहीं करेंगी।

आपने फ़रमाया, (यह भी कहो) कि जितना तुमसे हो सके।

हमने कहा अल्लाह और उसके रसूल हम पर हमसे भी ज़्यादा तरस खाने वाले हैं। ऐ अल्लाह के रसूल! आइए (आप हाथ बढ़ाएं) हम आपसे बैअत होती हैं।

आपने फ़रमाया, मैं औरतों से मुसाफ़ा नहीं करता हूं, सो औरतों से मेरी ज़ुबानी बात ऐसी है जैसे एक औरत से (यानी मैं औरतों को ज़ुबानी बैअत करता हूं, चाहे सौ हों, चाहे एक।)[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमैमा बिन्त रुक़ैक़ा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में इस्लाम पर बैअत होने के इरादे से आईं।

आपने फ़रमाया, मैं तुमको इस बात पर बैअत करता हूं कि तुम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करोगी, चोरी नहीं करोगी, ज़िना नहीं करोगी, अपने बच्चे को क़त्ल नहीं करोगी, कोई बोहतान नहीं लाओगी जिसे तुमने अपने हाथों और पैरों के दर्मियान बांध खड़ा किया हो और नौहा नहीं करोगी और जाहिलियत के पुराने ज़माने के मुताबिक़ अपनी ज़ीनत दिखाती नहीं फिरोगी।[2]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत फ़ातिमा बिन्त उत्बा बिन रबीआ रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में बैअत होने के इरादे से आईं। आपने क़ुरआनी आयत—

---

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 240
2. मज्मा भाग 6, पृ० 37, इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 352

اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْئًا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ

के मुताबिक़ उनसे अह्द लेना शुरू किया, (जिसमें शिर्क न करने, ज़िना न करने वग़ैरह का ज़िक्र है) तो हज़रत फ़ातिमा ने शर्म के मारे अपना हाथ सर पर रख लिया। हुज़ूर सल्ल० को उनकी यह अदा बहुत पसन्द आई। (उनकी इस झिझक को देखकर) हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, ऐ बीबी! इक़रार कर लो, क्योंकि अल्लाह की क़सम! हमने इन्हीं बातों पर बैअत की है।

उन्होंने कहा, अच्छा, फिर ठीक है। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने इसी आयत के मज़्मून के मुताबिक़ उनको बैअत किया।[1]

हज़रत अज़्ज़ा बिन्त ख़ायल रज़ि० फ़रमाती हैं कि वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुईं। चुनांचे आपने उनको इन लफ़्ज़ों में बैअत फ़रमाया कि तुम ज़िना नहीं करोगी, चोरी नहीं करोगी, औलाद को ज़िंदा दफ़न नहीं करोगी, न ज़ाहिर में, न छिपकर।

मैंने (अपने दिल में) कहा कि ज़ाहिर में ज़िंदा दफ़न करना तो मैं जानती हूं और छिप कर ज़िंदा दफ़न करना, मैंने हुज़ूर सल्ल० से पूछा नहीं और आपने मुझे बताया नहीं, लेकिन मेरे दिल में इसका मतलब यह आया है कि इससे मुराद औलाद को बिगाड़ देना है। चुनांचे मैं अल्लाह की क़सम! अपने किसी बच्चे को नहीं बिगाड़ूंगी।[2]

हज़रत फ़ातिमा बिन्त उत्बा बिन रबीआ बिन अब्दे शम्स फ़रमाती हैं कि उनको और हिन्द बिन्त उत्बा को लेकर अबू हुज़ैफ़ा बिन उत्बा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, ताकि ये हुज़ूर सल्ल० से बैअत हो जाएं। आप हमसे अह्द लेने लगे और बैअत की पाबन्दियां बताने लगे।

मैंने आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ मेरे चचेरे भाई! क्या आपने अपनी क़ौम में इन ऐबों और कमज़ोरियों में से कोई चीज़ देखी है?

1. मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 6, पृ० 37
2. मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 6, पृ० 31

हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहा, अरी, हुज़ूर सल्ल० से बैअत हो जाओ, क्योंकि इन्हीं लफ़्ज़ों से लोग बैअत होते हैं और यही पाबन्दियां बताई जाती हैं।

हज़रत हिन्द ने कहा, मैं तो चोरी (न) करने पर आपसे बैअत नहीं होती हूं, क्योंकि मैं अपने शौहर के माल में से चोरी करती हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने अपना हाथ पीछे हटा लिया और उन्होंने भी अपना हाथ पीछे कर लिया, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० ने आदमी भेजकर अबू सुफ़ियान को बुलाया और अबू सुफ़ियान से फ़रमाया कि तुम इसे अपने माल में से ले लेने की इजाज़त दे दो।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा कि तर व ताज़ा (खाने-पीने की) चीज़ों की तो इजाज़त है, अलबत्ता सूखी चीज़ों (जैसे दिरहम, दीनार, कपड़े वग़ैरह) की इजाज़त नहीं है और न ही किसी नेमत की। चुनांचे हम आपसे बैअत हो गईं।

फिर हज़रत फ़ातिमा ने कहा, आपके ख़ेमे से ज़्यादा नापसन्दीदा कोई ख़ेमा नहीं था, और इससे ज़्यादा कोई बात पसन्द नहीं थी कि इस ख़ेमे को और इस ख़ेमे के अन्दर जो कुछ है, उस सब को अल्लाह तबाह कर दे और अल्लाह की क़सम, अब सबसे ज़्यादा आपके क़ुब्बे के बारे में यह बात पसन्द है कि अल्लाह उसे आबाद करे और उसमें बरकत दे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इतनी (मुहब्बत मुझसे) होनी भी चाहिए। अल्लाह की क़सम, तुममें से हर आदमी तभी कामिल ईमान वाला होगा जबकि मैं उसको उसकी औलाद और वालिद से ज़्यादा महबूब हो जाऊं।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत हिन्द बिन्त उत्बा बिन रबीआ रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बैअत होने के लिए आईं। आपने उनके दोनों हाथों को देखा तो फ़रमाया, जाओ और (मेंहदी लगाकर) अपने दोनों हाथों को बदलकर

---

1. हाकिम, भाग 2, पृ० 486

आओ। चुनांचे वह गईं और मेंहदी लगाकर अपने हाथों को बदल कर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आईं।

आपने फ़रमाया, मैं तुमको इस बात पर बैअत करता हूं कि तुम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करोगी और चोरी नहीं करोगी और ज़िना नहीं करोगी।

इस पर हज़रत हिन्द ने कहा, क्या आज़ाद औरत भी ज़िना किया करती है?

फिर आपने फ़रमाया कि फ़क़्र के डर से अपने बच्चों को क़त्ल नहीं करोगी, तो उन्होंने कहा क्या आपने हमारे लिए बच्चे छोड़े हैं, जिन्हें हम क़त्ल करें? (सब ही को आपने लड़ाइयों में मार डाला है) फिर वह हुज़ूर सल्ल० से बैअत हो गईं। और उन्होंने हाथों में सोने के दो कंगन पहन रखे थे, तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप इन दो कंगनों के बारे में क्या फ़रमाते हैं?

आपने फ़रमाया, ये तो जहन्नम के अंगारों में से दो अंगारे हैं।[1]

हज़रत हिन्द ने (अपने शौहर अबू सुफ़ियान से) कहा कि मैं मुहम्मद सल्ल० से बैअत होना चाहती हूं।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, मैंने तो अब तक यह देखा है कि तुम हमेशा से (मुहम्मद सल्ल० की बात का) इंकार करती रही हो।

उन्होंने कहा, हां, अल्लाह की क़सम, (तुम्हारी यह बात ठीक है) लेकिन अल्लाह की क़सम! आज रात से पहले मैंने इस मस्जिद में अल्लाह की इतनी इबादत होते हुए नहीं देखी, अल्लाह की क़सम! मुसलमानों ने सारी रात नमाज़ पढ़ते हुए क़ियाम, रुकूअ और सज्दे में गुज़ारी है।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, तुम तो (इस्लाम के ख़िलाफ़) बहुत से काम कर चुकी हो, इसलिए तुम अपने साथ अपनी क़ौम के किसी आदमी को ले जाओ। चुनांचे वह हज़रत उमर रज़ि० के पास गईं और

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 37, इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 354, इसाबा भाग 4, पृ० 425

हज़रत उमर उनके साथ गए और उनके लिए (हुज़ूर सल्ल० से दाख़िले की) इजाज़त मांगी। वह नक़ाब डाले हुए हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुईं। आगे बैअत का क़िस्सा ज़िक्र किया है।

इसी रिवायत में हज़रत शाबी से यह नक़ल किया गया है कि हज़रत हिन्द ने कहा कि मैं तो अबू सुफ़ियान का बहुत-सा माल ज़ाया कर चुकी हूं। तो अबू सुफ़ियान ने कहा, तुम मेरा जितना माल ले चुकी हो, वह सब तुम्हारे लिए हलाल है।[1]

इब्ने जरीर ने हज़रत इब्ने अब्बास से इसी हदीस को तफ़्सील से ज़िक्र किया है और इसमें यह है कि हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, तुम मेरा जितना माल ले चुकी हो, चाहे वह ख़त्म हो गया हो या बाक़ी हो, सब तुम्हारे लिए हलाल है।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० हंसे और आपने हिन्द को पहचान लिया और उनको बुलाया, उन्होंने हुज़ूर सल्ल० का हाथ पकड़ लिया और हुज़ूर सल्ल० से माज़रत करने लगीं। आपने फ़रमाया, तुम हिन्द हो?

हज़रत हिन्द ने कहा, पिछली ज़िंदगी में जो हो चुका, अल्लाह उसे माफ़ करे।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे तवज्जोह हटा कर (बाक़ी औरतों की तरफ़ मुतवज्जह होकर) कहा कि वह ज़िना नहीं करेंगी। तो हज़रत हिन्द ने कहा कि क्या कोई शरीफ़ औरत भी ज़िना किया करती है?

आपने फ़रमाया, नहीं, अल्लाह की क़सम! शरीफ़ औरत ज़िना नहीं करती। आपने फिर (औरतों से) कहा कि वे अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करेंगी।

हज़रत हिन्द ने कहा, आपने ही तो उनको बद्र की लड़ाई के दिन क़त्ल किया है। अब आप जानें और वे।

फिर आपने (औरतों से) कहा कि वे कोई बोहतान नहीं लाएंगी जिसे उन्होंने अपने पैरों और हाथों के दर्मियान बांध खड़ा किया हो और

1. इब्ने मुन्दा,

किसी नेकी के काम में नाफ़रमानी नहीं करेंगी। आपने उन औरतों को नौहा करने से मना किया। जाहिलियत के ज़माने में औरतें कपड़े फाड़ा करती थीं और चेहरे नोचा करती थीं और सर के बाल काट देती थीं और बहुत वावैला मचाया करती थीं। (आपने इन तमाम कामों से मना फ़रमाया)[1]

हज़रत उसैद बिन अबी उसैद बर्राद (हुज़ूर सल्ल० से) बैअत होने वाली औरतों में से एक औरत से नक़ल करते हैं कि उन्होंने कहा कि हमसे हुज़ूर सल्ल० ने जिन बातों का अह्द लिया, उनमें ये बातें भी थीं कि हम किसी नेकी के काम में हुज़ूर सल्ल० की नाफ़रमानी नहीं करेंगी और चेहरा नहीं नोचेंगी, बालों को नहीं बिखेरेंगी, गरेबान नहीं फाड़ेंगी और वावैला नहीं करेंगी।[2]

नाबालिग़ बच्चों का बैअत होना

हज़रत मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन रज़ि० फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हसन, हज़रत हुसैन, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० को बचपन ही में बैअत फ़रमाया। न अभी उनकी दाढ़ी निकली थी और न अभी ये लोग बालिग़ हुए थे। हमारे अलावा और किसी बच्चे को बैअत नहीं किया।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० से रिवायत किया जाता है कि ये दोनों सात साल की उम्र में हुज़ूर सल्ल० से बैअत हुए थे। हुज़ूर सल्ल० इन दोनों को देखकर मुस्कराए और अपना हाथ बढ़ा दिया और उन दोनों को बैअत फ़रमा लिया।[4]

हज़रत हरमास बिन ज़ियाद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं कमसिन बच्चा

---

1. इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 355
2. इब्ने कसीर, भाग 5, पृ० 355
3. हैसमी, भाग 6, पृ० 40
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 285, मुन्तख़ब, पृ० 5, पृ० 227

था। मैंने अपना हाथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ बैअत होने के लिए बढ़ाया, लेकिन आपने मुझे बैअत नहीं किया।[1]

सहाबा किराम रज़ि० का हुज़ूर सल्ल० के ख़लीफ़ों के हाथों पर बैअत होना

हज़रत मुन्तशिर के वालिद कहते हैं कि जिस वक़्त यह आयत—

إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ ،

(तह्क़ीक़ जो लोग बैअत करते हैं तुझसे, वे बैअत करते हैं अल्लाह से) नाज़िल हुई, तो आपने लोगों को उस वक़्त इस तरह बैअत फ़रमाया कि हम अल्लह के लिए बैअत होते हैं और हम हक़ बात माना करेंगे।

और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने सहाबा को बैअत करते हुए फ़रमाया था कि मैं जब तक अल्लाह का फ़रमांबरदार रहूं, तुम मेरी बैअत पर उस वक़्त तक बाक़ी रहो, लेकिन हज़रत उमर रज़ि० और बाद वाले ख़लीफ़ों ने हुज़ूर सल्ल० की तरह बैअत फ़रमाया।[2]

हज़रत इब्नुल उफ़ैफ़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० लोगों को बैअत फ़रमा रहे थे। सहाबा की एक जमाअत उनकी ख़िदमत में आती। वह कहते, क्या तुम मुझसे इस बात पर बैअत होते हो कि तुम अल्लाह और उसकी किताब की और फिर अमीर की बात को सुनोगे और मानोगे?

वे लोग कहते, जी हां। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० उनको बैअत फ़रमा लेते।

मैं उन्हीं दिनों या कुछ अर्सा पहले बालिग़ हो चुका था। मैं कुछ देर आपके पास खड़ा रहा और आप लोगों से बैअत में जो अह्द ले रहे थे, वह मैंने सीख लिया, फिर मैंने आपके पास जाकर ख़ुद ही यह कहना शुरू कर दिया कि मैं आपसे इस बात पर बैअत होता हूं कि अल्लाह

1. जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 14
2. इसाबा, भाग 3, पृ० 458

और उसकी किताब की और फिर अमीर की बात को सुनूंगा और मानूंगा।

यह सुनकर आपने मुझ पर ऊपर से नीचे एक निगाह डाली। मेरा ख़्याल यह है कि मेरा यह अमल आपको बहुत पसन्द आया। अल्लाह की उन पर रहमत हो। (फिर आपने मुझे बैअत फ़रमा लिया।)[1]

हज़रत अबू सफ़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० शाम की ओर कोई फ़ौज भेजते तो उनको इस बात पर बैअत फ़रमाते कि (काफ़िरों से) ख़ूब नेज़ों से लड़ाई करेंगे और अगर प्लेग की बीमारी आ गई तो भी जमे रहेंगे।[2]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं मदीना पहुंचा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० का इंतिक़ाल हो चुका था और उनकी जगह हज़रत उमर रज़ि० ख़लीफ़ा बन चुके थे। मैंने हज़रत उमर रज़ि० से अर्ज़ किया, आप अपना हाथ बढ़ाएं, मैं आपके हाथ पर उसी चीज़ पर बैअत होता हूं जिस पर मैं आपसे पहले आपके साथी (हज़रत अबूबक्र रज़ि०) से बैअत हुआ था कि जहां तक मेरा बस चलेगा बात सुनूंगा और मानूंगा।[3]

हज़रत उमैर बिन अतीया लैसी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप अपना हाथ ऊंचा करें, अल्लाह उसे ऊंचा ही रखे। मैं आपसे अल्लाह और उसके तरीक़े के मुताबिक़ बैअत होता हूं।

आपने मुस्कराते हुए अपना हाथ ऊंचा किया और फ़रमाया, इस बैअत का मतलब यह है कि इस बैअत से तुम्हारे कुछ हक़ हम पर आ गए और हमारे कुछ हक़ तुम पर आ गए (और वे यह हैं कि तुम हमारी मानोगे और हम तुम्हें सही-सही बताएंगे) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन हकीम रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं अपने इस हाथ से हज़रत उमर रज़ि० से

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 146
2. कंज़, भाग 2, पृ० 323
3. कंज़, भाग 2, पृ० 81

इस बात पर बैअत हुआ कि बात सुनूंगा और मानूंगा।[1]

हज़रत सुलैम बिन आमिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमरा का वफ़्द हज़रत उस्मान रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उन्होंने हज़रत उस्मान से इस पर बैअत करनी चाही कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करेंगे, नमाज़ क़ायम करेंगे, ज़कात देंगे, रमज़ान के रोज़े रखेंगे और मजूसियों की ईद छोड़ देंगे। जब उन्होंने इन तमाम बातों की हां कर ली, तब उनको बैअत किया।[2]

हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस जमाअत को हज़रत उमर रज़ि० ने (ख़िलाफ़त के फ़ैसले के लिए) ज़िम्मेदार बनाया था, वे जमा होकर मश्विरा करने लगे, तो उनसे हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने कहा कि यह मेरा फ़ैसला है कि मुझे तो ख़लीफ़ा बनना नहीं है, ख़लीफ़ा तो आप लोगों में से कोई होगा। अब अगर आप कहो तो आप लोगों में से किसी एक को चुन देता हूं।

चुनांचे इन सबने हज़रत अब्दुर्रहमान को इसका अख़्तियार दे दिया। जब इन लोगों ने अपना मामला हज़रत अब्दुर्रहमान के सुपुर्द कर दिया तो सब लोगों की तवज्जोह हज़रत अब्दुर्रहमान की ओर हो गई। इस जमाअत के बाक़ी लोगों के पास न जाता हुआ कोई नज़र आया और न पीछे चलता हुआ। सब लोग इन्हीं दिनों में हज़रत अब्दुर्रहमान को ही जाकर अपने मश्विरे देते, यहां तक कि वह रात आ गई कि जिसकी सुबह को हम लोग हज़रत उस्मान रज़ि० से बैअत हुए।

जब उस रात का कुछ हिस्सा गुज़र गया, तो हज़रत अब्दुर्रहमान ने आकर मेरा दरवाज़ा इस ज़ोर से खटखटाया कि मैं जाग उठा। उन्होंने कहा, तुम तो मज़े से सो रहे हो और मैं आज रात ज़रा भी नहीं सोया। जाओ हज़रत ज़ुबैर और हज़रत साद रज़ि० को बुला लाओ।

मैं इन दोनों को बुला लाया। उन्होंने इन दोनों से कुछ देर मश्विरा

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 81
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 81

किया, फिर मुझसे कहा, जाओ हज़रत अली रज़ि० को मेरे पास बुला लाओ।

मैं उनको बुला लाया। उनसे हज़रत अब्दुर्रहमान आधी रात तक अलग बातें करते रहे। फिर हज़रत अली उनके पास से उठकर चले गए। उन्हें (अपने ख़लीफ़ा बनने की) कुछ उम्मीद थी और हज़रत अब्दुर्रहमान को हज़रत अली रज़ि० से इस बारे में कुछ ख़तरा था।

फिर हज़रत अब्दुर्रहमान ने मुझसे कहा, जाओ और हज़रत उस्मान रज़ि० को बुला लाओ। मैं उन्हें बुला लाया। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० उनसे बातें करते रहे, यहां तक कि फ़ज्र की अज़ान पर दोनों अलग हुए। जब लोग सुबह की नमाज़ पढ़ चुके और यह ज़िम्मेदार जमाअत मिंबर के पास जमा हो गई तो हज़रत अब्दुर्रहमान ने मदीने में जितने मुहाजिर और अंसार थे, उन सबके पास पैग़ाम भेजा और इस साल हज में फ़ौजों के जो अमीर हज़रत उमर रज़ि० के साथ थे, उनके पास भी पैग़ाम भेजा।

जब ये सब लोग जमा हो गए तो हज़रत अब्दुर्रहमान ने ख़ुत्बा पढ़कर फ़रमाया, ऐ अली! मैंने लोगों की रायों पर ख़ूब ग़ौर किया। लोग हज़रत उस्मान रज़ि० के बराबर किसी को नहीं समझते हैं। तुम अपने दिल में कोई वैसा ख़्याल न आने देना और फिर हज़रत उस्मान का हाथ पकड़ कर कहा कि मैं तुमसे इस बात पर बैअत करता हूं कि तुम अल्लाह के तरीक़े पर उसके रसूल (सल्ल०) की और उनके बाद के दोनों ख़लीफ़ों की सुन्नत पर चलोगे। पहले उनसे हज़रत अब्दुर्रहमान बैअत हुए और फिर मुहाजिर और अंसार और फ़ौजों के अमीर और तमाम लोग बैअत हुए।[1]

---

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 147

नबी करीम सल्ल० और आपके सहाबा किराम रज़ि० दीने हक़ को फैलाने के लिए किस तरह तक्लीफ़ों और सख़्तियों और भूख-प्यास को बरदाश्त किया करते थे और अल्लाह के कलिमा को बुलन्द करने के लिए अल्लाह के वास्ते अपनी जानों को क़ुरबान करना किस तरह उनके लिए आसान हो गया था

हज़रत नुफ़ैर फ़रमाते हैं कि एक दिन हम लोग हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठे हुए थे कि इतने में एक आदमी वहां से गुज़रा। उसने कहा, कितनी ख़ुशक़िस्मत हैं ये दो आंखें जिन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है। अल्लाह की क़सम ! हमें तो तमन्ना ही रही कि जो कुछ आपने देखा, हम भी वह देख लेते और जिन मज्लिसों में आप हाज़िर हुए, हम भी उनमें हाज़िर होते।

हज़रत नुफ़ैर कहते हैं कि उस आदमी की बात सुनकर हज़रत मिक़्दाद भड़क उठे। मुझे इस पर ताज्जुब हुआ कि उसने तो एक अच्छी बात ही कही थी, (फिर हज़रत मिक़्दाद क्यों नाराज़ हो गए?) तो हज़रत मिक़्दाद ने उसकी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि जिस मज्लिस में अल्लाह ने तुम्हें शरीक न होने दिया, तुम उस मज्लिस में शरीक होने की तमन्ना क्यों कर रहे हो? क्या पता अगर तुम उस मज्लिस में होते तुम्हारा क्या हाल होता? अल्लाह की क़सम ! बहुत से लोगों ने हुज़ूर सल्ल० को देखा, लेकिन अल्लाह ने उनको मुंह के बल दोज़ख़ में डाल दिया, क्योंकि उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की दावत क़ुबूल नहीं किया और

आपको सच्चा न माना। क्या तुम इस पर अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करते हो कि उसने जब तुमको पैदा किया, तो तुम अपने रब को पहचानते थे और हुज़ूर सल्ल० जो कुछ लेकर आए हैं, तुम उसे सच्चा मानते थे और (कुफ़्र व ईमान की) आज़माइश दूसरों पर आई और तुम इस आज़माइश से बच गए। अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसे ज़माने में भेजा गया जिसमें कुफ़्र और गुमराही इतने जोरों पर थी कि किसी नबी के ज़माने में इतने ज़ोरों पर न थी। एक लम्बे समय से नबियों का सिलसिला रुका हुआ था और जाहिलियत का ऐसा दौर-दौरा था कि बुतों की इबादत को सबसे बेहतरीन समझा जाता था। आप ऐसा फ़ुरक़ान (फ़ैसले की किताब यानी कुरआन) लेकर आए कि जिसने हक़ और बातिल को अलग-अलग कर दिया और (मुसलमान) वालिद और उसके (काफ़िर) बेटे के दर्मियान जुदाई कर दी।

चुनांचे (मुसलमान) आदमी यह देखता कि उसका बाप या बेटा या भाई काफ़िर है (और ख़ुद वह मुसलमान है) और उसके दिल के ताले को खोलकर अल्लाह ने ईमान से भर दिया है और इसका भी उसे यक़ीन है कि उसका यह ख़ास ताल्लुक़ वाला दोज़ख़ में जाएगा और इस बात का भी यक़ीन कि जो दोज़ख़ में गया वह बर्बाद हो गया। इसलिए (इस ख़्याल से) उसे न चैन आता था, न उसकी आंख ठंडी होती थी, जिसे अल्लाह ने कुरआन की इस दुआ में बयान किया है—

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ

'ऐ रब! दे हमको हमारी औरतों की तरफ़ से और औलाद की तरफ़ से आंख की ठंडक।'[1]

हज़रत मुहम्मद बिन काब कुरज़ी कहते हैं कि कूफ़ा वालों में से एक आदमी ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० से कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! आपने अल्लाह के रसूल सल्ल० को देखा है और उनकी सोहबत में रहे हैं?

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 175, मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 6, पृ० 17

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने कहा, हां, ऐ मेरे भतीजे !

उस आदमी ने कहा, आप लोग क्या करते थे ?

हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहा, हम पूरी तरह से मेहनत करते थे।

उस आदमी ने कहा, अल्लाह की क़सम ! अगर हम हुज़ूर सल्ल० को पा लेते, तो हम आपको ज़मीन पर न चलने देते, बल्कि कंधों पर उठाए रखते।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने कहा, ऐ मेरे भतीजे ! मैंने ग़ज़वा ख़ंदक़ के मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० के साथ अपना ऐसा सख़्त हाल देखा। आगे उन्होंने इस मौक़े पर ख़ौफ़ की ज़्यादती और भूख और सर्दी की सख़्ती बरदाश्त करने वाली हदीस ज़िक्र की।

इमाम मुस्लिम की रिवायत में यह है कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने फ़रमाया, क्या यह काम तुम कर लेते ? अरे, मैंने ग़ज़वा अहज़ाब (ग़ज़वा ख़ंदक़) की एक रात में मुसलमानों को हुज़ूर सल्ल० के साथ इस हाल में देखा कि तेज़ हवा चल रही थी और सख़्त सर्दी पड़ रही थी और आगे हदीस ज़िक्र की।

हाकिम और बैहक़ी की रिवायत में यह है कि हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहा, अरे, इसकी तमन्ना न करो। आगे और हदीस भी है जैसे कि ख़ौफ़ बरदाश्त करने के बाब में आएगी।[1]

हुज़ूर सल्ल० का अल्लाह की तरफ़ दावत देने की वजह से सख़्तियों और तक्लीफ़ों का बरदाश्त करना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह की ख़ातिर तक्लीफ़ मुझे पहुंचाई गई, उतनी किसी को नहीं पहुंचाई गई। और जितना मुझे अल्लाह की वजह से डराया गया, उतना किसी को नहीं डराया गया और मुझ पर तीस दिन और तीस रातें बराबर ऐसी गुज़री हैं कि मेरे और बिलाल (रज़ि०) के पास किसी जानदार के खाने के क़ाबिल सिर्फ़ इतनी

चीज़ होती जो बिलाल की बग़ल के नीचे आ जाए। (यानी बहुत थोड़ी मिक़्दार में होती थी)[1]

हज़रत अक़ील बिन अबी तालिब रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़ुरैश अबू तालिब के पास आए और कहा, ऐ अबू तालिब ! आपका भतीजा (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमारे घरों और हमारी मज्लिसों में हमारे पास आता है और हमें ऐसी बात सुनाता है, जिनसे हमें बड़ी तक्लीफ़ होती है। अगर आप मुनासिब समझें तो उसको हमारे पास आने से रोक दें। तो अबू तालिब ने मुझसे कहा, ऐ अक़ील ! अपने चचेरे भाई को मेरे पास ढूंढकर ले आओ।

चुनांचे मैं आपको अबू तालिब की एक कोठरी में से बुलाकर लाया। आप मेरे साथ चल रहे थे। आप साए में चलना चाहते थे (क्योंकि धूप तेज़ थी) लेकिन रास्ते में साया नहीं मिल सका, यहां तक कि आप अबू तालिब के पास पहुंच गए, तो आपसे अबू तालिब ने कहा, ऐ मेरे भतीजे ! अल्लाह की क़सम ! जैसे कि तुमको ख़ुद भी मालूम है, मैं तुम्हारी हर बात मानता हूं, तुम्हारी क़ौम वालों ने आकर यह कहा कि तुम काबा में और उनकी मज्लिसों में जाकर उनको ऐसी बातें सुनाते हो, जिनसे उनको तक्लीफ़ होती है। अगर तुम मुनासिब समझो तो उनके पास जाना छोड़ दो।

आपने अपनी निगाह को आसमान की ओर उठा कर फ़रमाया कि जिस काम को देकर मुझे भेजा गया है, उसको छोड़ने की मैं क़ुदरत नहीं रखता हूं, जैसे कि तुममें कोई सूरज में से आग को शोला लाने की क़ुदरत नहीं रखता।

इस पर अबू तालिब ने कहा, मेरा भतीजा कभी ग़लत बात नहीं कहता, तुम सब भलाई के साथ वापस चले जाओ।[2]

हुज़ूर सल्ल० से अबू तालिब ने कहा, ऐ मेरे भतीजे ! आपकी क़ौम मेरे पास आई है और उसने ऐसी-ऐसी बातें कहीं हैं। तुम मुझ पर भी

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 47, तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 150
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 14, बिदाया, भाग 3, पृ० 42

तरस खाओ और अपनी जान पर भी और इतना बोझ मुझ पर न डालो कि जिसको मैं न उठा सकूं और न तुम। इसलिए तुम अपनी क़ौम को वह बातें कहनी छोड़ दो जो उनको नागवार लगती हैं। इससे हुज़ूर सल्ल० यह समझे कि आपके बारे में आपके चचा की राय बदल गई है और वह अब आपकी मदद छोड़कर आपको क़ौम के हवाले करने वाले हैं और अब उनका साथ देने की हिम्मत नहीं रही है, इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ मेरे चचा! अगर सूरज मेरे दाहिने हाथ में और चांद मेरे बाएं हाथ में रख दिया जाए, तो भी मैं इस काम को छोड़ने वाला नहीं हूं। (मैं इस काम में लगा रहूंगा) यहां तक कि अल्लाह इस काम को ग़ालिब कर दें या इस काम की कोशिश में मेरी जान चली जाए।

इतना कहकर हुज़ूर सल्ल० की आंखें डबडबा आईं और आप रो दिए और आप वहां से पीठ फेरकर चल दिए।

जब अबू तालिब ने देखा कि हुज़ूर सल्ल० अपने काम में इतने पक्के हैं (कि इसके लिए जान तक क़ुर्बान करने और चांद-सूरज उठा लेने को तैयार हैं) तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को पुकारा, ऐ मेरे भतीजे!

आप उनकी ओर मुतवज्जह हुए, तो अबू तालिब ने कहा, आप अपना काम करते रहें और जैसे दिल चाहता है करते रहें। अल्लाह की क़सम! मैं किसी वजह से भी तुम्हारा कभी साथ नहीं छोड़ूंगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब अबू तालिब का इंतिक़ाल हुआ तो क़ुरैश का एक कमीना आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने आया, और उसने आप पर मिट्टी डाली। आप अपने घर वापस चले गए। आपकी एक बेटी आकर आपके चेहरे से मिट्टी साफ़ करने लगी और रोने लगी।

आपने फ़रमाया, ऐ मेरी बेटी! मत रो, क्योंकि अल्लाह तुम्हारे बाप की ज़रूर हिफ़ाज़त करने वाले हैं और आप फ़रमा रहे थे कि अबू तालिब के इंतिक़ाल तक क़ुरैश मेरे साथ इतनी नागवारी का मामला

नहीं कर रहे थे। अब ये शुरू हो गए हैं।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब अबू तालिब का इंतिक़ाल हो गया तो क़ुरैश के लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ तुर्शरूई और सख़्ती के साथ पेश आने लगे। आपने फ़रमाया, ऐ मेरे चचा! आपकी कमी बहुत जल्द महसूस होने लगी।[2]

हज़रत हारिस बिन हारिस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने अपने बाप से पूछा कि यह मज्मा कैसा है?

मेरे बाप ने कहा, ये लोग अपने एक बेदीन आदमी पर जमा हैं। चुनांचे हम अपनी सवारी से उतरे तो देखा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों को अल्लाह को एक मान लेने और उस पर ईमान लाने की दावत दे रहे थे और लोग आपकी दावत का इंकार कर रहे थे और आपको तरह-तरह की तक्लीफ़ें दे रहे थे, यहां तक कि आधा दिन बीत गया और लोग आपके पास से चले गए, तो एक औरत पानी का बरतन और रूमाल लिए हुए आई, जिसका सीना खुला हुआ था। आपने उस औरत से बरतन लेकर पानी पिया और वुज़ू किया, फिर उस औरत की तरफ़ सर उठा कर कहा, ऐ मेरी बेटी! अपने सीने को ढांप ले और अपने बाप के बारे में कोई ख़ौफ़ और ख़तरा महसूस न कर।

हमने पूछा, यह औरत कौन है?

लोगों ने बताया, यह उनकी बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा हैं।[3]

हज़रत मुनीब अज़्दी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जाहिलियत के ज़माने में देखा था कि आप फ़रमा रहे थे, 'ऐ लोगो! ला इला-ह इल्लल्लाहु' कह लो, कामियाब हो जाओगे, तो मैंने देखा कि इनमें से कोई तो आपके चेहरे पर थूक रहा

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 134
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 308
3. हैसमी, भाग 6, पृ० 21

है और कोई आप पर मिट्टी डाल रहा है और कोई आपको गालियां दे रहा है। (और यों ही होता रहा) यहां तक कि आधा दिन गुज़र गया।

फिर एक लड़की पानी का प्याला लेकर आई जिससे आपने अपने चेहरे और दोनों हाथों को धोया और कहा, ऐ मेरी बेटी! न तो अपने बाप के अचानक क़त्ल होने का ख़तरा महसूस करो और न किसी क़िस्म की ज़िल्लत का।

मैंने पूछा, यह लड़की कौन है?

लोगों ने यह बताया कि हुज़ूर सल्ल० की बेटी ज़ैनब रज़ि० हैं। वह एक बहुत ख़ूबसूरत बच्ची थीं।[1]

हज़रत उर्वः रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत इब्नुल आस रज़ि० से पूछा कि आप मुझे बताएं कि मुश्रिकों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सबसे ज़्यादा कौन-सी तक्लीफ़ पहुंचाई?

उन्होंने कहा, एक बार हुज़ूर सल्ल० काबे के हतीम में नमाज़ पढ़ रहे थे कि इतने में उक़बा बिन अबी मुऐत आया और उसने अपना कपड़ा हुज़ूर की गरदन में डालकर ज़ोर से आपका गला घोंटा। हज़रत अबूबक्र आए और उक़बा को कंधे से पकड़कर हुज़ूर सल्ल० से पीछे हटाया और यह कहा—

أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ

'क्या मारे डालते हो एक मर्द को इस बात पर कि कहता है मेरा रब अल्लाह है और लाया तुम्हारे पास खुली निशानियां तुम्हारे रब की।'[2]

हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने सिर्फ़ एक ही दिन देखा कि क़ुरैश काबा के साए में बैठे हुए हुज़ूर सल्ल० को क़त्ल करने का मश्विरा दे रहे हैं। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ रहे थे।

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 21
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 46

चुनांचे उक़बा बिन अबी मुऐत खड़ा होकर आपकी तरफ़ बढ़ा और आपकी गरदन में अपनी चादर डालकर अपने आपको इस ज़ोर से खींचा कि हुज़ूर सल्ल० घुटनों के बल ज़मीन पर गिर गए। लोगों में एक शोर मच गया। सबने यह समझा कि आप क़त्ल कर दिए गए हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० दौड़ते हुए आए और उन्होंने पीछे से आपकी दोनों बग़लों में हाथ डालकर आपको उठाया, और वह यह कहते जा रहे थे, क्या मारे डालते हो एक मर्द को इस बात पर कि कहता है मेरा रब अल्लाह है।

फिर कुफ़्फ़ार आपके पास से चले गए। हुज़ूर सल्ल० ने खड़े होकर नमाज़ पूरी फ़रमाई। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो कुफ़्फ़ार काबे के साए में बैठे हुए थे। आप उनके पास से गुज़रे। आपने फ़रमाया—

'ऐ क़ुरैश के लोगो! सुन लो, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है! मुझे तुम्हारी तरफ़ तुम्हें ज़िब्ह करने के लिए भेजा गया है (यानी न मानने वाले हमारे हाथों आख़िर क़त्ल होंगे) और आपने अपने हाथ को अपने हलक़ पर फेरकर ज़िब्ह होने की तरफ़ इशारा किया।

तो आपसे अबू जह्ल ने कहा, आप तो नादान नहीं हैं। (इसलिए ऐसी सख़्त बात न कहें, बरदाश्त से काम लें।)

आपने उससे फ़रमाया, तू भी उनमें से है। (जो आख़िर क़त्ल होंगे।)[1]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० से पूछा कि आपने क़ुरैश को अपनी दुश्मनी ज़ाहिर करते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सबसे ज़्यादा तक्लीफ़ पहुंचाते हुए जो देखा, वह क्या है?

उन्होंने कहा, एक बार क़ुरैश के सरदार हतीम में जमा थे। मैं भी वहां मौजूद था। वे आपस में कहने लगे कि इस आदमी की ओर से हमें जितना सहना पड़ा है, हमें इतना कभी नहीं सहना पड़ा। यह हमें

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 217, हैसमी, भाग 6, पृ० 16, दलाइलुन्नुबूवः पृ० 67

मूर्ख कहता है और हमारे पुरखों को बुरा-भला कहता है और हमारे दीन में ऐब निकालता है और हमारी जमाअत के टुकड़े-टुकड़े कर रहा है और हमारे माबूदों को गालियां देता है। हमने उसकी तरफ़ से बहुत बरदाश्त कर लिया है।

वे लोग इस तरह की बातें कर ही रहे थे कि सामने से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चलते हुए तशरीफ़ लाए। आपने हजरे अस्वद को चूमा और बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हुए उनके पास से गुज़रे। उन्होंने आपकी कुछ बातें नक़ल करके आपको ताना दिया।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने इसका असर आपके मुबारक चेहरे पर महसूस किया। आप उनके सामने से आगे चले गए। जब आप उनके पासे से दोबारा गुज़रने लगे तो उन्होंने वैसी ही बातें कहकर आपको फिर ताना दिया, जिसका असर मैंने आपके मुबारक चेहरे पर महसूस किया।

जब आप उनके पास से तीसरी बार गुज़रने लगे तो उन्होंने फिर वैसी ही बातें कहकर आपको ताना दिया। आपने कहा, ऐ क़ुरैश के लोगो ! क्या तुम सुन रहे हो ? क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, मैं तो तुम लोगों को ज़िब्ह करने के लिए ही आया हूं। (यानी जो ईमान न लाएगा, वह आख़िर क़त्ल होगा।)

आपकी इस बात की उन पर ऐसी हैबत छा गई कि वि सब लोग एकदम सहम गए, यहां तक कि इससे पहले जो आप पर सख़्ती करने के बारे में सबसे ज़्यादा ज़ोर लगा रहा था, वह भी आपसे आजिज़ी और ख़ुशामद से बात करके आपको ठंडा करने लग गया और यों कहने लग गया—

'ऐ अबुल क़ासिम ! आप भलाई के साथ वापस तशरीफ़ ले जाएं। अल्लाह की क़सम ! आप तो नादान आदमी नहीं हैं, (इसलिए ऐसी सख़्त बात न कहें, बरदाश्त से काम लें।) आप वापस तशरीफ़ ले गए।

अगले दिन वे लोग फिर हतीम में जमा हुए। मैं भी उनके साथ था। वे एक दूसरे से कहने लगे कि इनकी ओर से जो तक्लीफ़ें पेश आ

रही हैं उनका तुमने उनसे तज़्किरा किया और तुम जो उनके साथ मामला कर रहे हो, उसका तुमने उनसे ज़िक्र किया। (इसके जवाब में) जब उन्होंने तुमको ऐसी बात साफ़-साफ़ कह दी जो तुम्हें बुरी लगी, तो तुमने उनको छोड़ दिया। (उनके साथ कुछ नहीं किया, कुछ करना चाहिए था)।

वे आपस में ये बातें कर ही रहे थे कि इतने में हुज़ूर सल्ल० सामने से तशरीफ़ ले आए, सब एकदम आपकी तरफ़ झपटे और आपको चारों ओर से घेर लिया और कहने लगे, तुम्हीं हो जो यों कहते हो? और यों कहते हो? और हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से उन्हें जो बातें पहुंचती रहती थीं कि हुज़ूर सल्ल० उनके माबूदों के और उनके दीन के ऐब गिना रहे हैं, वे सब उन्होंने कह डालीं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, मैंने ये सब बातें कहीं हैं। तो मैंने देखा कि उनमें से एक आदमी ने आपका गरेबान पकड़ लिया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० आपको बचाने के लिए खड़े हो गए और रोते हुए कहने लगे—

اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ

'क्या मार डालते हो एक मर्द को इस बात पर कि कहता है मेरा रब अल्लाह है?'

फिर ये लोग हुज़ूर सल्ल० के पास से चले गए। क़ुरैश के हुज़ूर सल्ल० को तक्लीफ़ पहुंचाने का सबसे ज़्यादा सख़्त वाक़िया जो मैंने देखा है, वह यह है।[1]

हज़रत अस्मा रज़ि० से लोगों ने पूछा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुश्रिकों की ओर से जो तक्लीफ़ें उठानी पड़ीं, तुमने उनमें से ज़्यादा सख़्त तक्लीफ़ कौन सी देखी?

उन्होंने कहा, मुश्रिक मस्जिदे हराम में बैठे हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का और आप उनके माबूदों के बारे में जो फ़रमाते थे, उसका तज़्किरा कर रहे थे कि इतने में हुज़ूर सल्ल० सामने से

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 16, बिदाया, भाग 3, पृ० 46

तशरीफ़ लाए। वे सब एकदम खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० पर टूट पड़े। चीख़ व पुकार की आवाज़ हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तक पहुंची। लोगों ने उनसे कहा, अपने हज़रत को बचा लो।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० हमारे पास से उठ कर चल पड़े। उनकी चार ज़ुल्फ़ें थीं और वह यह कहते जा रहे थे, तुम्हारा नाश हो। क्या मारे डालते हो एक मर्द को इस बात पर कि कहता है मेरा रब अल्लाह है और लाया है तुम्हारे पास खुली निशानियां तुम्हारे रब की।

तो वे हुज़ूर सल्ल० को छोड़कर हज़रत अबूबक्र रज़ि० पर टूट पड़े। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० हमारे पास वापस आए (और काफ़िरों ने आपको इतना मारा था कि) जिस ज़ुल्फ़ को भी पकड़ते, वह हाथ में आ जाती। (यानी सर के बाल चोटों की वजह से झड़ने लग गए थे) और वह फ़रमा रहे थे—

'तू बहुत बरकत वाला है ऐ बड़ाई और अज़्मत वाले।'[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार काफ़िरों ने हुज़ूर सल्ल० को इतना मारा था कि आप बेहोश हो गए थे, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० खड़े होकर ऊंची आवाज़ से कहने लगे, तुम्हारा नाश हो, क्या मारे डालते हो एक मर्द को इस बात पर कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है।

लोगों ने पूछा, यह कौन है?

काफ़िरों ने कहा, पागल अबूबक्र है।[2]

हज़रत अली रज़ि० एक दिन लोगों से बयान कर रहे थे। उन्होंने फ़रमाया, ऐ लोगो! बताओ, लोगों में सबसे ज़्यादा बहादुर कौन है?

लोगों ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा कि जो भी मेरे मुक़ाबले में आया, तो मैं

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 17, इस्तीआब भाग 2, पृ० 247, हुलीया, भाग 1, पृ० 31
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 17, हाकिम, भाग 3, पृ० 67

उस पर ग़ालिब हुआ। फिर भी सबसे बहादुर तो अबूबक्र हैं। हम लोगों ने (ग़ज़वा बद्र के मौक़े पर) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए छप्पर बनाया था। फिर हमने कहा कि कौन हुज़ूर सल्ल० के साथ रहेगा ताकि कोई मुश्रिक हुज़ूर (पर हमले) का इरादा न कर सके? अल्लाह की क़सम! हममें से कोई भी हुज़ूर सल्ल० के क़रीब न जा सका, बस एक अबूबक्र रज़ि० ने उसकी हिम्मत की और वह नंगी तलवार लिए हुए हुज़ूर सल्ल० के सिरहाने खड़े रहे। जो काफ़िर हुज़ूर सल्ल० की ओर आने का इरादा करता, यह उस पर झपटते। तो यह हैं लोगों में सबसे बहादुर।

मैंने एक बार देखा कि क़ुरैश ने हुज़ूर सल्ल० को चारों ओर से पकड़ रखा था। कोई आप पर नाराज़ हो रहा था, कोई आपको झिंझोड़ रहा था और वे यह कह रहे थे कि तुमने तमाम ख़ुदाओं का एक ख़ुदा बना दिया। अल्लाह की क़सम! उस दिन भी हज़रत अबूबक्र रज़ि० के अलावा हम में से और कोई हुज़ूर सल्ल० के क़रीब न जा सका। यह आगे बढ़े, किसी को मारते थे, किसी से लड़ते थे, किसी को झिंझोड़ते थे और कहते जाते थे, तुम्हारा नाश हो, क्या मारे डालते हो एक मर्द को इस बात पर कि वह कहता है मेरा रब अल्लाह है।

इतना कहने के बाद हज़रत अली रज़ि० ने जो चादर ओढ़ रखी थी, वह ऊपर उठाई और रोने लगे, (और इतना रोए कि) उनकी दाढ़ी तर हो गई, फिर कहा, मैं तुमसे अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं कि आले फ़िरऔन का मोमिन बेहतर है, (जिनका क़ुरआन में ज़िक्र है) या अबूबक्र? तमाम लोग ख़ामोश रहे।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! सारी ज़मीन आले फ़िरऔन के मोमिनों से भर जाए तो उन (की ज़िंदगी भर के अमल) से हज़रत अबूबक्र रज़ि० की एक घड़ी ज़्यादा क़ीमती है। आले फ़िरऔन का वह मोमिन तो अपना ईमान छिपा रहा था और यह अपने ईमान का एलान कर रहे थे।[1]

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 271, हैसमी, भाग 9, पृ० 47

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिदे हराम में तशरीफ़ फ़रमा थे और अबू जह्ल बिन हिशाम, शैबा बिन रबीआ, उत्बा बिन रबीआ, उक़्बा बिन अबी मुऐत, उमैया बिन ख़लफ़ और दो और आदमी कुल सात काफ़िर हतीम में बैठे हुए थे और हुज़ूर सल्ल० नमाज़ पढ़ रहे थे और नमाज़ में लम्बे-लम्बे सज्दे कर रहे थे।

अबू जह्ल ने कहा, तुममें से कौन ऐसा है जो फ़्लां जगह से जहां फ़्लां क़बीले ने जानवर ज़िब्ह कर रखा है उसकी ओझड़ी हमारे पास ले आए, फिर हम वह ओझड़ी मुहम्मद सल्ल० के ऊपर डाल दें। उनमें से सबसे बदबख़्त उक़्बा बिन अबी मुऐत गया और उसने वह ओझड़ी लाकर हुज़ूर सल्ल० के कंधों पर डाल दी, जबकि हुज़ूर सल्ल० सज्दे में थे।

मैं वहां खड़ा था, मुझमें बोलने की भी हिम्मत नहीं थी। मैं तो अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकता था। मैं वहां से जाने लगा कि इतने में आपकी साहबज़ादी ने यह ख़बर सुनी, वह दौड़ी हुई आई और आपके कंधों से ओझड़ी को उन्होंने उतारा, फिर क़ुरैश की तरफ़ मुतवज्जह करके उनको बुरा-भला कहने लग गईं। काफ़िरों ने उनको कुछ जवाब न दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने अपनी आदत के मुताबिक़ सज्दा पूरा करके सर उठाया। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो तीन बार यह बददुआ की, ऐ अल्लाह! तू क़ुरैश की पकड़ फ़रमा। उत्बा, उक़्बा, अबू जह्ल और शैबा की पकड़ फ़रमा। फिर आप मस्जिदे हराम से बाहर तशरीफ़ ले गए।

रास्ते में आपको अबुलबख़्तरी बग़ल में कूड़ा दबाए हुए मिला। उसने हुज़ूर सल्ल० का चेहरा परेशान देखकर पूछा कि आपका क्या हुआ?

आपने फ़रमाया, मुझे जाने दो।

उसने कहा, ख़ुदा जानता है, मैं आपको उस वक़्त तक नहीं छोड़ूंगा जब तक कि आप मुझे न बता दें कि आपको क्या पेश आया है?

आपको ज़रूर कोई बड़ी तक्लीफ़ पहुंची है।

जब आपने देखा कि यह तो मुझे बताए बग़ैर न छोड़ेगा, तो आपने उसको सारा वाक़िया बता दिया कि अबू जह्ल के कहने पर आप पर ओझड़ी डाली गई।

अबुल बख़्तरी ने कहा, आओ मस्जिद चलें। हुज़ूर सल्ल० और अबुल बख़्तरी चले और मस्जिद में दाख़िल हुए। फिर अबुल बख़्तरी अबू जह्ल की ओर मुतवज्जह होकर बोला, ऐ अबुल हकम! क्या तुम्हारे ही कहने की वजह से मुहम्मद (सल्ल०) पर ओझड़ी डाली गई है?

उसने कहा, हां।

अबुल बख़्तरी ने कूड़ा उठा कर उसके सर पर मारा। काफ़िरों में आपस में हाथापाई होने लगी। अबू जह्ल चिल्लाया, तुम लोगों का नाश हो। तुम्हारी इस हाथापाई से मुहम्मद का फ़ायदा हो रहा है। मुहम्मद तो यह चाहते हैं कि हमारे बीच दुश्मनी पैदा कर दें और वह और उनके साथी बचे रहें।[1]

बुख़ारी और मुस्लिम और तिर्मिज़ी वग़ैरह ने अबुल बख़्तरी वाले क़िस्से को मुख़्तसर नक़ल किया और सहीह बुख़ारी में यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ओझड़ी डालने के बाद वे लोग ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे और हंसी के मारे एक-दूसरे पर गिर रहे थे।

इमाम अहमद की रिवायत में यह है कि हज़रत अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि मैंने उन सातों काफ़िरों को देखा कि ये सारे के सारे बद्र की लड़ाई के दिन क़त्ल किए गए।[2]

हज़रत याक़ूब बिन उत्बा रह० कहते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ा पहाड़ी पर तशरीफ़ ले जा रहे थे कि अचानक सामने से आकर अबू जह्ल ने आपका रास्ता रोक लिया और अपको बहुत तक्लीफ़ पहुंचाई।

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 18, दलाइलुन्नुबूव: पृ० 90
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 44

हज़रत हमज़ा रज़ि० शिकारी आदमी थे और उस दिन वह शिकार करने गए थे और हुज़ूर सल्ल० के साथ अबू जह्ल ने जो कुछ किया, वह हज़रत हमज़ा की बीवी ने देख लिया था। चुनांचे जब हज़रत हमज़ा (शिकार से) वापस आए तो उनकी बीवी ने उनसे कहा, ऐ अबू अम्मारा! जो कुछ अबू जह्ल ने (आज) तुम्हारे भतीजे के साथ किया है, अगर तुम उसे देख लेते (तो न जाने उसके साथ क्या करते, यह सुनकर) हज़रत हमज़ा को बड़ा ग़ुस्सा आया।

चुनांचे वह घर में दाख़िल होने से पहले ही अपनी गरदन में कमान लटकाए हुए इसी तरह चल दिए और मस्जिद (हराम) में दाख़िल हुए, वहां उन्होंने अबू जह्ल को क़ुरैश की एक मज्लिस में बैठे हुए पाया। उन्होंने बग़ैर कुछ कहे अबू जह्ल के सर पर ज़ोर से कमान मारी और उसका सर ज़ख़्मी कर दिया।

क़ुरैश के कुछ लोग खड़े होकर हज़रत हमज़ा को अबू जह्ल से रोकने लगे। हज़रत हमज़ा ने कहा, (आज से) मेरा भी वही दीन है जो मुहम्मद सल्ल० का दीन है। मैं गवाही देता हूं कि वह अल्लाह के रसूल हैं। अल्लाह की क़सम! मैं अपनी बात से नहीं फिरूंगा। अगर तुम (अपनी बात में) सच्चे हो, तो मुझे इससे रोक कर देख लो।

हज़रत हमज़ा रज़ि० के मुसलमान होने से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों को बहुत ताक़त मिली और मुसलमान अपने काम में और पक्के हो गए और अब क़ुरैश डरने लगे, क्योंकि उन्हें मालूम था कि अब हज़रत हमज़ा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ज़रूर हिफ़ाज़त करेंगे।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन काब क़ुरज़ी रह० मुरसलन रिवायत करते हैं कि एक दिन हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी तीरंदाज़ी से वापस आए, तो उनको एक औरत मिली, जिसने उनसे कहा, ऐ अबू अम्मारा! तुम्हारे भतीजे को अबू जह्ल बिन हिशाम से कितनी तक्लीफ़ उठानी पड़ी। उसने बुरा-भला कहा, उनको तक्लीफ़ पहुंचाई और यह किया

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 267

और वह किया।

हज़रत हमज़ा रज़ि० ने पूछा, क्या किसी ने ऐसा करते हुए देखा?

उसने कहा, हां, अल्लाह की क़सम! बहुत से लोग देख रहे थे।

हज़रत हमज़ा वहां से चल दिए और सफ़ा और मर्वः के पास कुरैश की उस मज्लिस में पहुंचे, जहां अबू जहल बैठा हुआ था। अपनी कमान पर टेक लगाकर कहने लगे, मैंने ऐसे तीर और ऐसे तीर चलाए और यह किया और वह किया। फिर उन्होंने दोनों हाथों से कमान पकड़कर अबू जहल के कानों के दर्मियान सर पर इस ज़ोर से मारी कि कमान टूट गई और कहा कि यह तो कमान की मार थी, इसके बाद तलवार की होगी। मैं गवाही देता हूं कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और वे अल्लाह के पास से हक़ लेकर आए हैं।

लोगों ने कहा, ऐ अबू अम्मारा! वह हमारे माबूदों को बुरा-भला कहते हैं और यह काम तो ऐसा है कि अगर तुम भी करो तो हम तुम्हें न रहने दें, हालांकि तुम उनसे अफ़ज़ल हो और ऐ अबू अम्मारा! तुम तो अख़्लाक़ के बुरे न थे।[1]

हज़रत अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन मस्जिद (हराम) में (बैठा हुआ) था कि इतने में अबू जहल सामने से आया और कहने लगा कि मैंने अल्लाह के लिए नज़्र मानी है कि अगर मुहम्मद को सज्दा करते हुए देख लूंगा तो उनकी गरदन को पांव के नीचे रौंद डालूंगा।

मैं वहां से हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ चल दिया और जाकर मैंने उन्हें अबू जहल की बात बताई। आप वहां से ग़ुस्से में निकले, यहां तक कि मस्जिदे हराम पहुंच गए और मस्जिद में दाख़िल होने की आपको इतनी जल्दी थी कि दरवाज़े के बजाए दीवार फलांग का अन्दर आए।

मैंने कहा, आज का दिन तो बहुत बुरा होगा। मैंने अपनी लुंगी को मज़बूत बांधा और हुज़ूर सल्ल० के पीछे हो लिया। आपने अन्दर जाकर यह पढ़ना शुरू किया—

اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ ۞ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۞

पढ़ते-पढ़ते जब आप इस आयत पर पहुंचे जिसमें अबू जह्ल का तज़्किरा है—

كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۞ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۞

तो एक आदमी ने अबू जह्ल से कहा, ऐ अबुल हकम ! यह मुहम्मद मस्जिद में हैं।

उसने कहा, क्या तुम वह (मंज़र) नहीं देख रहे हो जो मैं देख रहा हूं ? अल्लाह की क़सम ! आसमान का किनारा मुझ पर बन्द हो चुका है। जब हुज़ूर सल्ल० सूरः के आख़िर पर पहुंचे तो आपने सज्दा फ़रमाया।[1]

हज़रत बर्रा बिन्ते अबी तजरात फ़रमाती हैं कि एक दिन अबू जह्ल और उसके साथ कुछ काफ़िरों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रास्ता रोका और आपको बहुत तक्लीफ़ पहुंचाई, तो हज़रत तुलैब बिन उमैर रज़ि० अबू जह्ल की ओर बढ़े और उसे मारा जिससे उसका सर घायल हो गया। लोगों ने हज़रत तुलैब को पकड़ लिया। अबू लह्ब तुलैब की मदद के लिए खड़ा हुआ।

(हज़रत तुलैब की मां) हज़रत अरवा रज़ि० को जब इस वाक़िए की ख़बर लगी, तो उन्होंने कहा कि तुलैब की ज़िंदगी का बेहतरीन दिन वह है, जिस दिन उसने अपने ममेरे भाई (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मदद की।

लोगों ने अबू लहब से कहा, (तुम्हारी बहन) अरवा बेदीन हो गई है। अबू लहब हज़रत अरवा के पास गया और उन पर नाराज़ होने लगा, तो उन्होंने कहा, तुम भी अपने भतीजे (मुहम्मद सल्ल०) की हिमायत में खड़े हो जाओ, क्योंकि अगर वह ग़ालिब आ गए तो तुम्हें अख़्तियार होगा, वरना तुम्हें अपने भतीजे के बारे में माज़ूर समझा जाएगा।

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 43, हैसमी, भाग 8, पृ० 227, हाकिम, भाग 3, पृ० 325

अबू लहब ने कहा, क्या हम तमाम अरबों (से लड़ने) की ताक़त रखते हैं? और वह तो एक नया दीन लेकर आया है।[1]

हज़रत क़तादा मुरसलन बयान करते हैं कि उतैबा बिन अबी लहब की शादी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० से हुई और हज़रत रुक़ैया रज़ि० उतैबा के भाई उत्बा बिन अबी लहब के निकाह में थीं। अभी उनकी रुख़्सती नहीं हुई थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूवत का ज़हूर हुआ। जब सूरः 'तब्बत यदा अबी ल-हब' नाज़िल हुई तो अबू लहब ने अपने दोनों बेटों उतैबा और उत्बा से कहा, मेरा तुम दोनों से कोई ताल्लुक़ नहीं है, अगर तुम मुहम्मद (सल्ल०) की बेटियों को तलाक़ न दोगे और उतैबा और उत्बा दोनों की मां बिन्त हर्ब बिन उमैया ने भी, जिसे क़ुरआन में 'हम्मा लतल हतब' कहा गया है, ऐ मेरे बेटो! इन दोनों को तलाक़ दे दो, क्योंकि ये दोनों बे-दीन हो गई हैं। चुनांचे इन दोनों ने तलाक़ दे दी।

जब उतैबा ने हज़रत उम्मे कुलसूम को तलाक़ दे दी तो वह हुज़ूर सल्ल० के पास आया और कहने लगा, मैंने तुम्हारे दीन का इंकार किया और तुम्हारी बेटी को तलाक़ दे दी है, ताकि तुम कभी मेरे पास न आओ और न मैं तुम्हारे पास आऊं। फिर उसने आप पर हमला करके आपकी कमीज़ को फाड़ दिया। वह मुल्क शाम की ओर तिजारत के लिए जाने वाला था।

आपने फ़रमाया, मैं अल्लाह से सवाल करता हूं कि वह तुझ पर अपना कोई शेर मुसल्लत कर दे। चुनांचे वह क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िले के साथ गया। जब ये लोग ज़रक़ा नामी जगह पर पहुंचे तो रात को वहां ठहर गए। एक शेर ने उस रात उस क़ाफ़िले का चक्कर लगाया

उतैबा कहने लगा, हाय, मेरी मां की हलाकत। यह शेर तो मुझे ज़रूर खा जाएगा, जैसा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा था। मुझे इब्ने अबी कबशा (यह नाम काफ़िरों ने हुज़ूर सल्ल० का रखा हुआ

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 227

था) ने मार डाला, जो कि मक्का में है और मैं शाम में हूं। चुनांचे उस शेर ने सारे क़ाफ़िले में से सिर्फ़ उतैबा पर हमला किया और उसका गोश्त नोच डाला और उसे मार डाला।

ज़ुहैर बिन अला कहते हैं कि हमें हिशाम बिन उर्वः ने अपने बाप से यों बयान किया है कि वह शेर उस रात उस क़ाफ़िले का चक्कर लगा कर वापस चला गया। क़ाफ़िले वालों ने उतैबा को अपने दर्मियान लिटाया। चुनांचे वह शेर दोबारा आया और सबको फांदता हुआ उतैबा तक पहुंचा और उसके सर को चबा डाला।

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने पहले हज़रत रुक़ैया रज़ि० से शादी की, फिर (उनकी वफ़ात के बाद) हज़रत उम्मे कुलसूम से की।[1]

हज़रत रबीआ बिन उबैद देली रज़ि० ने फ़रमाया, मैं तुम लोगों को यह कहते हुए बहुत सुनता हूं कि क़ुरैश अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत गालियां दिया करते थे और तक्लीफ़ पहुंचाया करते थे। मैं उन वाक़िओं का ज़्यादा से ज़्यादा देखने वाला हूं। हुज़ूर सल्ल० का घर अबू लहब और उक़्बा बिन अबी मुऐत के घर के बीच में था। जब आप अपने घर वापस आते तो दरवाज़े पर ओझड़ी, ख़ून और गन्दगी पाते। आप अपनी कमान के किनारों से इन सब चीज़ों को हटाते जाते और फ़रमाते, ऐ क़ुरैश के लोगो! यह पड़ोसी के साथ बहुत बुरा सुलूक है।[2]

हज़रत उर्वः रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत आइशा रज़ि० ने उनसे बयान फ़रमाया कि उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से पूछा कि उहुद की लड़ाई के दिन से भी ज़्यादा सख़्त दिन आप पर कोई आया है?

आपने फ़रमाया कि मुझे तुम्हारी क़ौम की ओर से बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ें उठानी पड़ीं और उनकी ओर से मुझे सबसे ज़्यादा तक्लीफ़

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 18
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 21

अक़बा (ताइफ़) के दिन उठानी पड़ी। मैंने (ताइफ़ वालों के सरदार) इब्ने अब्द या लैल बिन अब्द कुलाल के सामने अपने आपको पेश किया, (कि मुझ पर ईमान लाओ और मेरी नुसरत करो और मुझे अपने यहां ठहरा कर दावत का काम आज़ादी से करने दो) लेकिन उसने मेरी बात न मानी। मैं (ताइफ़ से) बड़ा ग़मगीन और परेशान होकर अपने रास्ते पर (वापस) चल पड़ा। (मैं यों ही ग़मगीन और परेशान चलता रहा)। क़र्ने सआलिब नामी जगह पर पहुंच कर (मेरे इस ग़म और परेशानी में) कुछ कमी आई, तो मैंने अपना सर उठाया तो देखा कि एक बादल मुझ पर साया किए हुए है। मैंने ग़ौर से देखा तो उसमें हज़रत जिब्रील अलै० थे।

उन्होंने मुझे आवाज़ दी और कहा कि अल्लाह ने आपकी क़ौम की वे बातें जो आपसे हुईं, सुनीं और उनके जवाब भी सुने और एक फ़रिश्ते को जिससे मुताल्लिक़ पहाड़ों की ख़िदमत है, आपके पास भेजा है कि आप उन कुफ़्फ़ार के बारे में, जो चाहें उसे हुक्म दें।

इसके बाद पहाड़ों के फ़रिश्ते ने मुझे आवाज़ देकर सलाम किया और अर्ज़ किया, ऐ मुहम्मद! आपने जो हज़रत जिब्रील से सुना है, वह बिल्कुल ठीक है। आप क्या चाहते हैं? अगर आप इर्शाद फ़रमा दें, तो मैं (मक्का के) दोनों पहाड़ों (अबू क़बीस और अहमर) को उन पर मिला दूं, (जिससे ये सब बीच में कुचल जाएं।)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं, बल्कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह उनकी पुश्तों में ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो एक अल्लाह की इबादत करेंगे और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करेंगे।[1]

हज़रत इब्ने शहाब बयान करते हैं कि जब अबू तालिब का इंतिक़ाल हुआ तो हुज़ूर सल्ल० यह उम्मीद लेकर तायफ़ तशरीफ़ ले गए कि वहां वाले आपको अपने यहां ठहरा लेंगे। चुनांचे आप क़बीला सक़ीफ़ के तीन आदमियों के पास तशरीफ़ ले गए जो उस क़बीले के

1. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 458

सरदार थे और आपस में भाई-भाई थे और उनके नाम अब्द या लैल और हबीब और मसऊद थे। ये अम्र के बेटे थे। आपने अपने आपको उन पर पेश फ़रमाया और उन लोगों से अपनी क़ौम की नाक़द्री और बेहुर्मती की शिकायत की, लेकिन उन लोगों ने आपको बहुत बुरा जवाब दिया।[1]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि अबू तालिब का इंतिक़ाल हो गया और (कुफ़्फ़ार कुरैश की ओर से) हुज़ूर सल्ल० पर तक्लीफ़ें और सख़्तियां और बढ़ गईं। आप क़बीला सक़ीफ़ के पास इस उम्मीद पर तशरीफ़ ले गए कि वे आपको अपने यहां ठहरा लेंगे और आपकी मदद करेंगे। आपने देखा कि क़बीला सक़ीफ़ के तीन सरदार हैं जोकि आपस में भाई हैं अब्द या लैल बिन अम्र और हबीब बिन अम्र और मसऊद बिन अम्र! आपने अपने आपको उन पर पेश किया और उन लोगों से तक्लीफ़ों की और अपनी क़ौम की बेहुर्मती करने की शिकायत की।

इनमें से एक ने कहा कि अगर अल्लाह ने आपको कुछ देकर भेजा हो तो मैं काबा के परदों की चोरी करूं (यानी अल्लाह ने आपको कुछ देकर नहीं भेजा) और दूसरे ने कहा कि इस मज्लिस के बाद मैं आपसे कभी भी कोई बात नहीं करूंगा, क्योंकि अगर आप वाक़ई रसूल हैं तो आपका दर्जा इससे बहुत ऊंचा है कि मुझ जैसा आपसे बात करे और तीसरे ने कहा, (रसूल बनाने के लिए आप ही रह गए थे?) क्या अल्लाह आपके अलावा किसी और को रसूल नहीं बना सकते थे? और आपने इनसे जो बातें कीं, उसे उन्होंने सारे क़बीलों में फैला दी और वे सब जमा होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मज़ाक़ उड़ाने लगे और आपके रास्ते पर दो सफ़ें बनाकर बैठ गए और उन्होंने अपने हाथों में पत्थर ले लिए और आप जो क़दम भी उठाते या रखते, उसे पत्थर मारते, और आपका मज़ाक़ भी उड़ाते जाते।

जब आप उनकी सफ़ों से आगे निकल गए और उन काफ़िरों से छुटकारा पाया और आपके दोनों मुबारक क़दम से ख़ून बह रहा था, तो आप उन

1. फ़त्हुल बारी, भाग 6, पृ० 198

लोगों के एक अंगूरों के बाग़ में चले गए और एक अंगूर की बेल के नीचे साए में बैठ गए। आप बहुत ग़मगीन, रंजीदा और दुखी थे और आपके दोनों क़दमों से ख़ून बह रहा था, उसी बाग़ में उत्बा बिन रबीआ और शैबा बिन रबीआ काफ़िर भी थे। जब आपने इन दोनों को देखा तो उनके पास जाना पसन्द न फ़रमाया, क्योंकि आप जानते थे कि ये दोनों अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मन हैं, हालांकि आप सख़्त तक्लीफ़ और परेशानी में थे।

इन दोनों ने अपने ग़ुलाम अद्दास को अंगूर देकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भेजा। वह ईसाई थे और नीनवा के रहने वाले थे। अद्दास ने आकर हुज़ूर सल्ल० के सामने अंगूर रख दिए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (अंगूर खाने के लिए) बिस्मिल्लाह पढ़ी, इससे अद्दास को बड़ा ताज्जुब हुआ। आपने उनसे पूछा, तुम कहां के रहने वाले हो?

उन्होंने कहा, मैं नीनवा का रहने वाला हूं।

आपने फ़रमाया, तुम उस भले और नेक आदमी के शहर के रहने वाले हो, जिनका नाम हज़रत यूनुस बिन मत्ता अलैहिस्सलाम था।

अद्दास ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि आपको कैसे पता चला कि हज़रत यूनुस बिन मत्ता कौन हैं?

आपको हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम के जितने हालात मालूम थे, वह अद्दास को बताए, और आपकी मुबारक आदत यह थी कि किसी इंसान का दर्जा उससे कम नहीं समझते थे कि उसे अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाएं, (यानी छोटे-बड़े हर एक को दावत दिया करते थे)

हज़रत अद्दास ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे हज़रत यूनुस बिन मत्ता अलै० के बारे में कुछ और बताएं।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० पर हज़रत यूनुस बिन मत्ता के बारे में जितनी वह्य उतरी थी, वह सब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि ने अद्दास को सुना दी। इस पर वह हुज़ूर सल्ल० के सामने सज्दे में गिर गए, और आपके क़दमों को चूमने लग गए, जिनमें से ख़ून बह रहा था।

जब उत्बा और उसके भाई शैबा ने अपने ग़ुलाम को यह करते हुए

देखा तो दोनों भौंचक रह गए।

जब अद्दास इन दोनों के पास से वापस आए तो इन दोनों ने उनसे कहा, तुमको क्या हुआ कि तुमने मुहम्मद सल्ल० को सज्दा भी किया और उनके क़दमों को भी चूमा और हमने तुमको हममें से किसी के साथ ऐसा करते हुए नहीं देखा।

हज़रत अद्दास ने कहा, यह एक भले आदमी हैं और इन्होंने मुझे ऐसी बातें बताई हैं जो मुझे उस रसूल के बारे में मालूम थीं जिनको अल्लाह ने हमारी ओर भेजा था, जिनको हज़रत यूनुस बिन मत्ता अलैहिस्सलाम कहा जाता है और उन्होंने मुझे बताया कि वह अल्लाह के रसूल हैं। इस पर वे दोनों हंस पड़े और कहने लगे, अरे! यह आदमी तुम्हें तुम्हारी ईसाइयत से न हटा दे। यह आदमी बहुत धोखा देता है। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का वापस तशरीफ़ ले आए।[1]

हज़रत मूसा बिन उक़्बा की रिवायत में यह है कि ताइफ़ वाले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रास्ते पर दो सफ़ें बनाकर (दाएं-बाएं) हुज़ूर सल्ल० (को तक्लीफ़ पहुंचाने) के लिए बैठ गए। जब आप वहां से गुज़रे तो जो क़दम भी आप उठाते या रखते, वह उस पर पत्थर मारते, यहां तक कि आपको लहूलुहान कर दिया। जब आपने उनसे छुटकारा पाया तो आपके दोनों क़दमों से ख़ून बह रहा था।

और इब्ने इस्हाक़ की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सक़ीफ़ की भलाई से ना-उम्मीद होकर जब उनके पास से खड़े हो गए, तो उनसे आपने फ़रमाया, तुमने जो कुछ करना था, कर लिया (कि मेरी दावत को क़ुबूल नहीं किया। इतना तो कहो कि तुम मेरी बात छिपा कर रखोगे, क्योंकि आप यह नहीं चाहते थे कि आपकी क़ौम को तायफ़ वालों ने आपके साथ जो कुछ किया है, वह मालूम हो, क्योंकि इससे वह हुज़ूर सल्ल० के ख़िलाफ़ और ज़्यादा जरी हो जाएंगे। लेकिन उन्होंने ऐसा न किया और अपने नादान लड़कों और ग़ुलामों को

1. दलाइलुन्नुबूवः, पृ० 103

आपके ख़िलाफ़ भड़काया, जिस पर वे आपको बुरा-भला कहने लगे और आपके ख़िलाफ़ शोर मचाने लगे, यहां तक कि आपके ख़िलाफ़ लोगों का मज्मा जमा हो गया और उत्बा बिन रबीआ और शैबा बिन रबीआ के एक बाग़ में पनाह लेने पर आपको मजबूर कर दिया गया। उस वक़्त वे दोनों इस बाग़ में थे। सक़ीफ़ के जितने लोग आपके पीछे लगे हुए थे, वे वापस चले गए।

आप अंगूर की एक बेल के नीचे बैठ गए। रबीआ के ये दोनों बेटे आपको देख रहे थे और ताइफ़ के नादान लोगों ने आपको जो तक्लीफ़ पहुंचाई, उसे भी उन्होंने देखा।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि मुझसे यह भी बयान किया गया है कि जब आप क़बीला बनू जुम्ह की एक औरत से मिले, तो आपने उससे फ़रमाया कि हमें तुम्हारी ससुराल वालों से कितनी तक्लीफ़ उठानी पड़ी।

जब आपको (ताइफ़ वालों की ओर से) कुछ इत्मीनान हुआ तो आपने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! तुझ ही से शिकायत करता हूं, मैं अपनी कमज़ोरी और बेकसी और लोगों में ज़िल्लत और रुसवाई को। ऐ अरहमुर्राहमीन! तो ही कमज़ोरों का रब है और तू ही मेरा परवरदिगार है, तू मुझे किसके हवाले करता है? किसी अजनबी बेगाने के, जो मुझे देखकर तुर्शरू होता है और मुंह चिड़ाता है या किसी दुश्मन के जिसको तूने मुझ पर क़ाबू दे दिया? ऐ अल्लाह! अगर तू मुझसे नाराज़ नहीं है, तो मुझे किसी की भी परवाह नहीं। तेरी हिफ़ाज़त मुझे काफ़ी है। मैं तेरे चेहरे के उस नूर के तुफ़ैल जिससे तमाम अंधेरियां रोशन हो गईं और जिससे दुनिया और आख़िरत के सारे काम दुरुस्त हो जाते हैं, इस बात से पनाह मांगता हूं कि मुझ पर तेरा ग़ुस्सा हो या तू मुझसे नाराज़ हो, तेरी नाराज़ी का उस वक़्त तक दूर करना ज़रूरी है जब तक तू राज़ी न हो, न तेरे सिवा कोई ताक़त है, न क़ूवत।

जब उत्बा बिन रबीआ और शैबा बिन रबीआ ने हुज़ूर सल्ल० को इस हाल में देखा तो रिश्तेदारी का जज़्बा उनके दिल में उभर आया और उन्होंने अपने ईसाई ग़ुलाम को बुलाया, जिसका नाम अद्दास था और

उससे कहा कि अंगूरों का यह गुच्छा लो और इस बड़ी प्लेट में रखकर उस आदमी के पास ले जाओ और उससे कहो कि वह यह अंगूर खा ले।

चुनांचे अद्दास वह अंगूर लेकर गए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि के सामने जाकर रख दिए और आपसे अर्ज़ किया कि खा लें।

जब हुज़ूर सल्ल० ने अंगूरों की तरफ़ हाथ बढ़ाया तो आपने बिस्मिल्लाह पढ़ी और अंगूरों को खाने लगे। अद्दास ने हुज़ूर सल्ल० के चेहरे को ग़ौर से देखकर कहा, अल्लाह की क़सम! इस इलाक़े वाले (खाने के वक़्त) यों नहीं कहते।

हुज़ूर सल्ल० ने उससे पूछा, तुम कौन-से इलाक़े के हो? और तुम्हारा दीन क्या है?

उसने कहा, मैं ईसाई हूं और नीनवा का रहने वाला हूं।

आपने फ़रमाया, तुम तो नेक आदमी यूनुस बिन मत्ता की बस्ती के रहने वाले हो।

अद्दास ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, आपको यूनुस बिन मत्ता का पता कैसे चला?

आपने फ़रमाया, वह मेरे भाई थे और नबी थे और मैं भी नबी हूं। अद्दास हुज़ूर सल्ल० के सामने पूरे झुक गए और आपके सर और हाथों और क़दमों को चूमने लगे।

(यह मंज़र देखकर) रबीआ के दोनों बेटे आपस में एक दूसरे से कहने लगे, अरे, इन्होंने तो तुम्हारे ग़ुलाम को बिगाड़ दिया।

जब हज़रत अद्दास उन दोनों के पास वापस आए, तो दोनों ने उनसे कहा, ऐ अद्दास! तेरा नाश हो, तुम्हें क्या हुआ? तुम उस आदमी के सर और हाथों और क़दमों को चूम रहे थे।

हज़रत अद्दास ने कहा, ऐ मेरे आक़ा! धरती पर इनसे बेहतर कोई नहीं है, मुझे इन्होंने ऐसी बात बताई है, जिसे नबी के अलावा कोई नहीं जान सकता।

दोनों ने हज़रत अद्दास से कहा, तेरा नाश हो, यह आदमी कहीं तुम्हें

तुम्हारे दीन से न हटा दे, क्योंकि तुम्हारा दीन उसके दीन से बेहतर है।[1]

हज़रत सुलैमान तैमी ने अपनी सीरत की किताब में यह बयान किया है कि हज़रत अद्दास ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया था कि मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।[2]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तुम मुझको और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उस वक़्त देखतीं, जब हम दोनों ग़ार (सौर) पर चढ़े थे, (तो अजब मंज़र देखती) हुज़ूर सल्ल० के दोनों क़दमों से ख़ून टपक रहा था और मेरे पांव (सुन्न होकर) पथरा गए थे।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि (हुज़ूर सल्ल० के क़दमों में से ख़ून टपकने की वजह यह है कि) हुज़ूर सल्ल० नंगे पैर चलने के आदी नहीं थे (और इस मौक़े पर नंगे पांव चलना पड़ा था।)[3]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि उहुद की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्ल० का (दाहिना निचला चौभड़) दांत शहीद हो गया था और आपका मुबारक सर घायल हो गया था। आप अपने मुबारक चेहरे से ख़ून पोंछते जाते और फ़रमाते जाते कि वह क़ौम कैसे कामियाब होगी जिन्होंने अपने नबी के सर को घायल कर दिया और उसका अगला दांत शहीद कर दिया, हालांकि वह उनको अल्लाह की ओर दावत दे रहे थे, इस पर यह आयत उतरी—

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ

'तेरा अख़्तियार कुछ नहीं, या इनको तौबा देवे अल्लाह या इनको अज़ाब करे कि वे नाहक़ पर हैं।'[4]

हज़रत अबू सईद रज़ि० फ़रमाते हैं कि उहुद की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्ल० का मुबारक चेहरा ज़ख़्मी हो गया। सामने से हज़रत

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 135-136
2. इसाबा, भाग 2, पृ० 466
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 329
4. बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी

मालिक बिन सिनान रज़ि० आए और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के घाव को चूसा और आपके ख़ून को निगल गए। आपने फ़रमाया, जो ऐसा आदमी देखना चाहता है कि जिसके ख़ून में मेरा ख़ून मिल गया है, वह मालिक बिन सिनान को देख ले।[1]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० जब उहुद की लड़ाई का ज़िक्र फ़रमाते, तो यह इर्शाद फ़रमाते कि यह दिन सारे का सारा हज़रत तलहा रज़ि० के हिसाब में है, फिर (तफ़्सील से) बयान फ़रमाते हैं कि लड़ाई के मैदान से मुंह मोड़ने वालों में सबसे पहले वापस लौटने वाला मैं था, तो मैंने देखा कि एक आदमी हुज़ूर सल्ल० की हिफ़ाज़त के लिए बड़े ज़ोर व शोर से लड़ाई लड़ रहा है।

मैंने अपने दिल में कहा कि ख़ुदा करे यह हज़रत तलहा हों, इसलिए कि जो सवाब मुझसे छूटना था वह तो छूट गया। अब मुझे ज़्यादा पसन्द यह है कि यह सवाब मेरी क़ौम के किसी आदमी को मिले (और हज़रत तलहा मेरी क़ौम के आदमी थे) और मेरे और मुश्रिकों के दर्मियान एक आदमी और था, जिसे मैं पहचान नहीं रहा था और मैं उस आदमी के मुक़ाबले में हुज़ूर सल्ल० से ज़्यादा क़रीब था, लेकिन वह मुझसे ज़्यादा तेज़ चल रहा था, तो अचानक क्या देखता हूं कि वह अबू उबैदा बिन जर्राह हैं।

हम दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचे, तो हमने देखा कि आपका अगला दांत शहीद हो चुका है, आपका मुबारक चेहरा ज़ख़्मी है और ख़ूद की दो कड़ियां आपके मुबारक गाल में घुस गई हैं। आपने हमसे फ़रमाया कि अपने साथी तलहा की ख़बर लो, जो कि ज़्यादा ख़ून निकलने की वजह से कमज़ोर हो चुके थे। (हुज़ूर सल्ल० को ज़ख़्मी हालत में देखकर) हम लोग आपके इस फ़रमान की तरफ़ तवज्जोह न कर सके। (हम बहुत परेशान हो गए थे।)

मैं हुज़ूर सल्ल० के चेहरे से कड़ियां निकालने के लिए आगे बढ़ा तो हज़रत उबैदा ने मुझे अपने हक़ की क़सम देकर कहा कि (यह

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 47

सआदत लेने के लिए) मुझे छोड़ दो। मैंने यह मौक़ा उनके लिए छोड़ दिया। उन्होंने हाथ से कड़ियां निकालना पसन्द न किया कि इससे हुज़ूर सल्ल० को तक्लीफ़ होगी, बल्कि दांतों से पकड़कर एक कड़ी निकाली। कड़ी के साथ उनका सामने का एक दांत भी निकलकर गिर गया। जो उन्होंने किया, इसी तरह करने के लिए मैं आगे बढ़ा। उन्होंने फिर मुझे अपने हक़ की क़सम देकर कहा (यह सआदत लेने के लिए) मुझे छोड़ दो और उन्होंने पहली बार की तरह दांतों से पकड़ कर कड़ी को निकाला। इस बार कड़ी के साथ उनका दूसरा दांत निकलकर गिर गया। दांतों के टूटने के बावजूद हज़्रत अबू उबैदा लोगों में बड़े ख़ूबसूरत नज़र आते थे। हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत से फ़ारिग़ होकर हम लोग हज़रत तलहा के पास आए। वह एक गढ़े में पड़े हुए थे और उनके जिस्म पर नेज़े और तीर और तलवार के सत्तर से ज़्यादा घाव थे और उनकी उंगली भी कट गई थी। हमने उनकी देखभाल की।[1]

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 29, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 298, कंज़, भाग 5, पृ० 27

सहाबा किराम रज़ि० का अल्लाह की तरफ़ दावत देने की वजह से मशक़्क़तों और तक्लीफ़ों का बरदाश्त करना

हज़रत अबूबक्र रज़ि० का मशक़्क़तें बरदाश्त करना

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मर्द सहाबा रज़ि० की तायदाद अड़तीस हो गई तो वे एक बार इकट्ठा हुए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से इस बात का इसरार किया कि अब खुलकर इस्लाम की दावत दी जाए। आपने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र! अभी हम लोग थोड़े हैं, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० इसरार करते रहे, जिस पर हुज़ूर सल्ल० ने खुल्लम खुल्ला दावत देने की इजाज़त दे दी।

चुनांचे मुसलमान मस्जिदे (हराम) के अलग-अलग हिस्सों में बिखर गए और हर आदमी अपने क़बीले में जाकर बैठ गया और हज़रत अबूबक्र रज़ि० लोगों में बयान करने के लिए खड़े हो गए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठे हुए थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० इस्लाम में सबसे पहले बयान करने वाले हैं जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ (खुल्लम खुल्ला खड़े होकर) दावत दी, तो मुश्रिक हज़रत अबूबक्र और मुसलमानों पर टूट पड़े और मस्जिद (हराम) के अलग-अलग हिस्सो में मुसलमानों को ख़ूब मारा गया और हज़रत अबूबक्र को तो ख़ूब मारा भी गया और पांव तले रौंदा भी गया।

उत्बा बिन रबीआ फ़ासिक़ हज़रत अबूबक्र के क़रीब आकर उनको कई तले वाले दो जूतों से मारने लगा, जिनको उनके चेहरे पर टेढ़ा करके मारता था और हज़रत अबूबक्र के पेट पर कूदता भी था। (ज़्यादा मार खाने की वजह से इतनी सूजन आ गई थी) कि उनका चेहरा और नाक पहचाना नहीं जा रहा था। (हज़रत अबूबक्र के क़बीला) बनू तैम वाले दौड़ते हुए आए और हज़रत अबूबक्र से मुश्रिकों को हटाया और उनको

एक कपड़े में डालकर उनके घर ले गए और उन्हें हज़रत अबूबक्र के मर जाने में कोई शक नहीं था।

फिर क़बीला बनू तैम ने मस्जिद (हराम) में वापस आकर कहा कि अल्लाह की क़सम! अगर अबूबक्र मर गए तो हम (उनके बदले में) उत्बा बिन रबीआ को मार डालेंगे। फिर क़बीला वाले हज़रत अबूबक्र के पास वापस आए। (हज़रत अबूबक्र के वालिद) अबू क़ुहाफ़ा और बनू तैम वाले उनसे बात करने की कोशिश करते रहे, (लेकिन वह बेहोश थे। उन्होंने सारा दिन कोई जवाब न दिया) तो दिन के आख़िर में (होश आने पर) हज़रत अबूबक्र ने बात की, तो यह कहा कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का क्या हुआ? तो वे लोग हज़रत अबूबक्र रज़ि० को बुरा-भला कहने लगे और उन्हें मलामत करने लगे और उठकर चल दिए और उनकी मां उम्मे ख़ैर से कह गए कि उनका ध्यान रखें और उन्हें कुछ खिला-पिला दें।

जब वे लोग चले गए और उनकी मां अकेली रह गईं, तो वह (खाने-पीने के लिए) इसरार करने लगीं, मगर हज़रत अबूबक्र रज़ि० यह पूछते रहे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० का क्या हुआ?

उनकी मां ने कहा, अल्लाह की क़सम! मुझे तुम्हारे हज़रत की कोई ख़बर नहीं। तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि आप उम्मे जमील बिन्त ख़त्ताब के पास जाएं और उनसे हुज़ूर सल्ल० के बारे में पूछ कर आएं। चुनांचे वह उम्मे जमील के पास गईं और उनसे कहा कि अबूबक्र तुमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के बारे में पूछ रहे हैं।

उम्मे जमील ने कहा, मैं न तो अबूबक्र को जानती हूं और न मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह को। हां, अगर तुम कहो तो मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे बेटे के पास चली चलती हूं।

उन्होंने कहा, ठीक है। चुनांचे हज़रत उम्मे जमील उनके साथ उनके घर आईं, तो देखा कि हज़रत अबूबक्र ज़मीन पर लेटे हुए हैं। (उनमें बैठने की भी शक्ति नहीं है) और सख़्त बीमार हैं। हज़रत उम्मे जमील उनके क़रीब जाकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं और उन्होंने कहा, अल्लाह की

क़सम ! आपको जिन लोगों ने तक्लीफ़ पहुंचाई है, वे बड़े फ़ासिक़ और काफ़िर लोग हैं और मुझे यक़ीन है कि अल्लाह उनसे आपका बदला ज़रूर लेगा।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या बना?

हज़रत उम्मे जमील ने कहा, यह आपकी मां सुन रही हैं।

हज़रत अबूबक्र ने कहा, इनसे तुम्हें कोई ख़तरा नहीं हैं

हज़रत उम्मे जमील ने कहा कि हुज़ूर सल्ल० ठीक-ठाक हैं।

हज़रत अबूबक्र ने पूछा कि हुज़ूर सल्ल० कहां हैं?

उन्होंने कहा कि दारे अरक़म में। (हज़रत अरक़म के घर में) तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम ! जब तक मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ख़ुद न हाज़िर हो जाऊं, उस वक़्त तक कुछ न खाऊंगा न पियूंगा।

हज़रत उम्मे ख़ैर और उम्मे जमील दोनों ठहरी रहीं, यहां तक कि (काफ़ी रात हो गई और) लोगों का चलना-फिरना बन्द हो गया। फिर ये दोनों हज़रत अबूबक्र को सहारा देते हुए लेकर चलीं, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच गईं। हुज़ूर सल्ल० अबूबक्र को देखकर उन पर झुक गए और उनका बोसा लिया और सारे मुसलमान भी उन पर झुक गए और उनकी ओर मुतवज्जह हो गए और उनकी यह हालत देखकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इंतिहाई रिक़्क़त तारी हो गई।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, मुझे और तो कोई तक्लीफ़ नहीं है, बस उस फ़ासिक़ ने मेरे चेहरे को बड़ी तक्लीफ़ पहुंचाई है और यह मेरी मां हैं जो अपने बेटे के साथ अच्छा सुलूक करती हैं और आप बहुत बरकत वाले हैं। आप मेरी मां को अल्लाह की ओर दावत दें और उनके लिए अल्लाह से दुआ करें, शायद अल्लाह उनको आपके ज़रिए आग से बचा दे।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए दुआ फ़रमाई और उनको अल्लाह की दावत दी और वह मुसलमान हो गईं और सहाबा किराम हुज़ूर सल्ल० के साथ उस घर में ठहरे रहे और उनकी तायदाद 39 थी। जिस दिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० को मारा गया, उस दिन हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० मुसलमान हुए थे और हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब या अबू जहल बिन हिशाम (की हिदायत) के लिए दुआ मांगी थी जो हज़रत उमर के हक़ में क़ुबूल हुई। आपने बुध के दिन दुआ की थी और हज़रत उमर जुमेरात को मुसलमान हुए थे। (उनके मुसलमान होने पर) हुज़ूर सल्ल० और घर में मौजूद सहाबा ने इस ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहा, जिसकी आवाज़ मक्का के ऊपर वाले हिस्से में भी सुनाई दी।

हज़रत अरक़म रज़ि० के बाप अंधे काफ़िर थे, वह यह कहते हुए बाहर आए कि ऐ अल्लाह! मेरे बेटे और अपने छोटे-से ग़ुलाम अरक़म की मग़फ़िरत फ़रमा, क्योंकि वह काफ़िर हो गया (यानी उन्होंने इस्लाम का नया दीन अख़्तियार कर लिया है)

हज़रत उमर रज़ि० ने खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हम अपना दीन क्यों छिपाएं, जबकि हम हक़ पर हैं और इन काफ़िरों का दीन खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर हो, जबकि वे नाहक़ पर हैं।

आपने फ़रमाया, ऐ उमर! हम थोड़े हैं, हमें जो तक्लीफ़ उठानी पड़ी है, वह तुमने देख ही ली है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, उस ज़ात की क़सम! जिसने आप को हक़ देकर भेजा है, मैं जितनी मज्लिसों में कुफ़्र की हालत में बैठा हूं, मैं उन तमाम मज्लिसों में जाकर ईमान को ज़ाहिर करूंगा। चुनांचे वह (दारे अरक़म से) बाहर निकले और बैतुल्लाह का तवाफ़ किया, फिर क़ुरैश के पास से गुज़रे जो उनका इंतिज़ार कर रहे थे।

अबू जहल बिन हिशाम ने (देखते ही) कहा, फ़्लां आदमी कह रहा था कि तुम बेदीन हो गए हो।

हज़रत उमर ने फ़रमाया---

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०

मुश्रिक (यह सुनकर) हज़रत उमर की तरफ़ झपटे। हज़रत उमर रज़ि० ने हमला करके उत्बा को नीचे गिरा लिया और उस पर घुटने टेक कर बैठ गये और उसे मारने लगे और अपनी उंगली उसकी दोनों आंखों में ठूंस दी। उत्बा चीख़ने लगा, लोग परे हट गए, फिर हज़रत उमर रज़ि० खड़े हो गए। जब भी कोई सूरमा आपके क़रीब आने लगता, तो आप क़रीब आने वालों में से सबसे ज़्यादा इज़्ज़तदार आदमी को पकड़ लेते (और उसकी खूब पिटाई करते), यहां तक कि सब लोग (हज़रत उमर से) आजिज़ आ गए और वह जिन मज्लिसों में बैठा करते थे, उन तमाम मज्लिसों में जाकर उन्होंने ईमान का एलान किया और यों कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब आकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस आए और अर्ज़ किया कि मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, अब आपके लिए कोई ख़तरा नहीं है। अल्लाह की क़सम ! मैं जितनी मज्लिसों में कुफ़्र की हालत में बैठा करता था, मैं उन तमाम मज्लिसों में बे-ख़ौफ़ व ख़तर अपने ईमान का एलान करके आया हूं।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और आपके आगे-आगे हज़रत उमर और हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब थे, यहां तक कि आपने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और इत्मीनान से ज़ुहर की नमाज़ अदा फ़रमाई। फिर हज़रत उमर रज़ि० के साथ दारे अरक़म वापस तशरीफ़ लाए। इसके बाद हज़रत उमर अकेले वापस चले गए और उनके बाद हुज़ूर सल्ल० भी वापस तशरीफ़ ले गए।

सही बात यह है कि हज़रत उमर रज़ि० नबी सल्ल० की बेसत के छः साल बाद उस वक़्त मुसलमान हुए थे, जबकि सहाबा किराम हिजरत फ़रमा कर हब्शा जा चुके थे।[1]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, जब से मैंने होश संभाला है,

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 30, इसाबा, भाग 4, पृ० 447

मां-बाप को इसी दीन इस्लाम पर पाया और हर दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह और शाम दोनों वक़्त हमारे यहां तशरीफ़ लाया करते थे। जब मुसलमानों पर बहुत ज़्यादा ज़ुल्म होने लगा, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० हब्शा की धरती की ओर हिजरत करने के इरादे से चल पड़े। जब आप बर्कुल ग़िमाद पहुंचे, तो वहां क़बीला क़ारा के सरदार इब्ने दग़िना से मुलाक़ात हुई। उसने पूछा, ऐ अबूबक्र! कहां का इरादा है?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मुझे मेरी क़ौम ने निकाल दिया है। अब मेरा इरादा है कि मैं ज़मीन घूम-घाम लूं और अपने रब की इबादत करूं।

इब्ने दग़िना ने कहा, तुम्हारे जैसे आदमी को न ख़ुद निकलना चाहिए और न उसको निकालना चाहिए, क्योंकि नायाब चीज़ें हासिल करके लोगों को देते हो और रिश्तों को जोड़ते हो, ज़रूरतमंदों का बोझ उठाते हो और मेहमानों का सत्कार करते हो और मुसीबतों में मदद करते हो। मैं तुम्हें पनाह देता हूं तुम वापस चलो और अपने शहर में अपने रब की इबादत करो। चुनांचे हज़रत अबूबक्र वापस आ गए और इब्ने दग़िना भी आपके साथ आया और शाम के वक़्त इब्ने दग़िना ने क़ुरैश के सरदारों के पास चक्कर लगाया और उनसे कहा कि अबूबक्र जैसे आदमी को न ख़ुद (मक्का से) जाना चाहिए और न किसी को उनको निकालना चाहिए। क्या तुम ऐसे आदमी को निकालते हो जो नायाब चीज़ें हासिल करके लोगों को देता है और रिश्ते-नाते जोड़ता है और ज़रूरतमंदों का बोझ उठाता है और मेहमानों का सत्कार करता है और मुसीबतों में मदद करता है।

क़ुरैश इब्ने दग़िना को पनाह देने का इंकार न कर सके और उन्होंने इब्ने दग़िना से कहा कि अबूबक्र से कह दो कि वह अपने रब की इबादत अपने घर में करें, वहां ही नमाज़ पढ़ा करें और जितना चाहें क़ुरआन शरीफ पढ़ें और एलानिया इबादत करके ऊंची आवाज़ से क़ुरआन पढ़कर हमें तक्लीफ़ न पहुंचाएं, क्योंकि हमें डर है कि वह हमारी औरतों और बच्चों को फ़ित्ना में डाल देंगे।

इब्ने दग़िना ने यह बात हज़रत अबूबक्र रज़ि० को कह दी। कुछ अर्से तक तो हज़रत अबूबक्र ऐसे ही करते रहे कि अपने घर में ही अपने रब की इबादत करते और अपनी नमाज़ में आवाज़ ऊंची न करते और अपने घर के अलावा कहीं भी ऊंची आवाज़ से कुरआन न पढ़ते।

फिर हज़रत अबूबक्र को ख़्याल आया तो उन्होंने अपने घर के सेहन में एक मस्जिद बना ली और उसमें नमाज़ पढ़ने लगे और कुरआन ऊंची आवाज़ से पढ़ने लगे, तो मुश्रिकों की औरतें और बच्चे हज़रत अबूबक्र पर टूट पड़े। वे उन्हें देख-देखकर हैरान होते, क्योंकि हज़रत अबूबक्र रज़ि० बहुत ज़्यादा रोने वाले आदमी थे। जब वह कुरआन पढ़ा करते तो उन्हें अपनी आंखों पर क़ाबू न रहता (और बे-अख़्तियार रोने लग जाते) तो इससे कुरैश के मुश्रिक सरदार घबरा गए। उन्होंने इब्ने दग़िना के पास आदमी भेजा।

चुनांचे इब्ने दग़िना उनके पास आए तो कुरैश के मुश्रिकों ने उनसे कहा, हमने अबूबक्र को इस शर्त पर तुम्हारी पनाह में दिया था कि वह अपने घर में अपने रब की इबादत करेंगे, उन्होंने इस शर्त की ख़िलाफ़वर्ज़ी की है और अपने घर के सेहन में एक मस्जिद बना ली है जिसमें एलानिया नमाज़ पढ़ते हैं और कुरआन ऊंची आवाज़ से पढ़ते हैं। हमें डर है कि वह हमारी औरतों और बच्चों को फ़िले में डाल देंगे। आप उनको ऐसा करने से रोक दें। अगर वह अपने घर में अपने रब की इबादत करना चाहें, तो ठीक है और अगर वह एलानिया सबके सामने इबादत करने पर इसरार करें तो आप उनसे कहें कि वह आपकी पनाह आपको वापस कर दें, क्योंकि हम नहीं चाहते कि हम आपके अह्द को तोड़ें और यों एलानिया ऊंची आवाज़ से कुरआन पढ़ने की हम अबूबक्र को इजाज़त नहीं दे सकते हैं।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि इब्ने दग़िना हज़रत अबूबक्र के पास आए और उनसे कहा कि जिस शर्त पर मैंने तुमको अपनी पनाह में लिया था वह शर्त तुम्हें मालूम है, या तो आप वह शर्त पूरी करें या मेरी पनाह मुझे वापस कर दें, क्योंकि मैं यह नहीं चाहता कि अरब के लोग यह सुनें कि मैंने जिस आदमी को पनाह दी थी, वह

पनाह तोड़ दी गई।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैं तुम्हारी पनाह को वापस करता हूं और अल्लाह की पनाह पर राज़ी हूं। आगे हिजरत के बारे में लम्बी हदीस ज़िक्र की है।[1]

इब्ने इस्हाक़ ने इस हदीस को इस तरह रिवायत किया है कि हज़रत अबूबक्र हिजरत के इरादे से (मक्का से) रवाना हुए। एक या दो दिन सफ़र किया ही था कि उनकी इब्ने दग़िना से मुलाक़ात हुई और वह उन दिनों अहाबीश (क़ारा क़बीले के अलग-अलग ख़ानदानों) के सरदार थे। उन्होंने पूछा, ऐ अबूबक्र ! कहां जा रहे हो ?

उन्होंने कहा, मेरी क़ौम ने मुझे निकाल दिया, मुझे बहुत तक्लीफ़ पहुंचाई और उन्होंने मेरे लिए (मक्का में ज़िंदगी गुज़ारना) तंग कर दिया।

इब्ने दग़िना ने कहा, क्यों ? अल्लाह की क़सम ! तुम सारे ख़ानदान की ज़ीनत हो, तुम मुसीबतों में मुसीबत के मारे हुओं की मदद करते हो और भले काम करते हो और नायाब क़ीमती चीज़ें हासिल करके दूसरों को देते हो। तुम (मक्का) वापस चलो, (आज से) तुम मेरी पनाह में हो।

चुनांचे हज़रत अबूबक्र इब्ने दग़िना के साथ साथ (मक्का) वापस आ गए और वहां इब्ने दग़िना ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के साथ खड़े होकर एलान किया, ऐ क़ुरैश के लोगो ! मैंने (अबूबक्र) बिन अबी क़हाफ़ा को पनाह दे दी। इसलिए अब हर एक उनसे अच्छा ही सुलूक करे।

चुनांचे मुश्रिकों ने हज़रत अबूबक्र को तक्लीफ़ पहुंचानी छोड़ दी और इस रिवायत के आख़िर में यह है कि इब्ने दग़िना ने कहा, ऐ अबूबक्र ! मैंने तुमको इसलिए पनाह नहीं दी थी कि तुम अपनी क़ौम को तक्लीफ़ पहुंचाओ और तुम जिस जगह (यानी घर का सेहन जहां आजकल) इबादत करते हो उसे वे नापसन्द करते हैं और उन्हें इस वजह

1. बुख़ारी, पृ० 552

से तुम्हारी तरफ़ से तक्लीफ़ पहुंच रही है। इसलिए तुम अपने घर के अन्दर रहो और वहां जो चाहो करो।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, क्या मैं तुम्हारी पनाह तुम्हें वापस कर दूं? और अल्लाह की पनाह पर राज़ी हो जाऊं?

इब्ने दग़िना ने कहा, आप मुझे मेरी पनाह वापस कर दें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैंने तुम्हारी पनाह तुम्हें वापस कर दी।

चुनांचे इब्ने दग़िना खड़े हुए और उन्होंने एलान किया, ऐ कुरैश के लोगो! इब्ने अबी कुहाफ़ा ने मेरी पनाह मुझे वापस कर दी है। अब तुम अपने इस साथी के साथ जो चाहो करो।[1]

इब्ने इस्हाक़ ने ही हज़रत क़ासिम से इस तरह रिवायत किया है कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० इब्ने दग़िना की पनाह से बाहर आ गए तो वह काबे की ओर जा रहे थे कि उन्हें रास्ते में कुरैश का एक बेवक़ूफ़ मिला, जिसने उसके सर पर मिट्टी डाली।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास से वलीद बिन मुग़ीरह या आस बिन वाइल गुज़रा, उससे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, तुम देख नहीं रहे हो कि यह बेवक़ूफ़ मेरे साथ क्या कर रहा है?

उसने कहा, यह तो तुम ख़ुद अपने साथ कर रहे हो।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मेरे रब! तू कितना हलीम (सहनशील) है।[2] ऐ मेरे रब! तू कतना हलीम है! ऐ मेरे रब! तू कितना हलीम है।

पीछे हज़रत असमा रज़ि० की हदीस गुज़र चुकी है कि चीख़ व पुकार की आवाज़ हज़रत अबूबक्र रज़ि० तक पहुंची। लोगों ने उनसे कहा, अपने हज़रत को बचा लो। हज़रत अबूबक्र हमारे पास से उठकर चले गए। उनकी चार ज़ुल्फ़ें थीं और वह यह कहते जा रहे थे कि

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 94
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 95

तुम्हारा नाश हो, क्या मारे डालते हो एक मर्द को इस पर कि कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और तुम्हारे पास लाया है खुली निशानियां तुम्हारे रब की।

वे हुज़ूर सल्ल० को छोड़कर हज़रत अबूबक्र रज़ि० पर टूट पड़े। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० हमारे पास वापस आए (और काफ़िरों ने आपको इतना मारा था कि) जिस ज़ुल्फ़ को भी पकड़ते, वह हाथ में आ जाती (यानी सर के बाल चोटों की वजह से झड़ने लग गए थे) और वह फ़रमा रहे थे—

تَبَارَكْتَ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

'तबारक-त या ज़ल जलालि वल इक्रामि०

(तू बहुत बरकत वाला है, ऐ बड़ाई और अज़्मत वाले !)

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का मशक़्क़तें बरदाश्त करना

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ि० इस्लाम लाए, तो उन्होंने पूछा कि क़ुरैश में सबसे ज़्यादा बातों को नक़ल करने वाला कौन है? उन्हें बताया गया कि जमील बिन मामर जुमही है। चुनांचे हज़रत उमर सुबह को उनके पास गए।

हज़रत अब्दुल्लाह (इब्ने उमर) रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं भी हज़रत उमर के पीछे-पीछे गया। मैं यह देखना चाहता था कि वह क्या करते हैं? मैं बच्चा तो ज़रूर था, लेकिन जिस चीज़ को देख लेता था, उसे समझ लेता था।

हज़रत उमर रज़ि० ने जमील के पास जाकर उससे कहा, ऐ जमील ! क्या तुम्हें मालूम है कि मैं मुसलमान हो गया हूं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन में दाख़िल हो गया हूं?

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि (यह सुनकर) जमील ने हज़रत उमर रज़ि० को कुछ जवाब न दिया, बल्कि खड़े होकर अपनी चादर घसीटते हुए चल दिया। हज़रत उमर रज़ि० उसके पीछे चल दिए

और मैं हज़रत उमर रज़ि० के पीछे, यहां तक कि जमील ने मस्जिदे हराम के दरवाज़े पर खड़े होकर ज़ोर से पुकार कर कहा, ऐ क़ुरैश के लोगो! ग़ौर से सुनो, ख़त्ताब का बेटा उमर बेदीन हो गया है। क़ुरैश काबा के इर्द-गिर्द अपनी-अपनी मज्लिसों में बैठे हुए थे। हज़रत उमर रज़ि० ने जमील के पीछे से कहा, यह तो ग़लत कहता है, मैं तो मुसलमान हुआ हूं और कलिमा शहादत—

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

पढ़ा है। यह सुनते ही सब लोग हज़रत उमर रज़ि० की तरफ़ झपटे। वे सब हज़रत उमर रज़ि० से लड़ते रहे, यहां तक सूरज सिरों पर आ गया और हज़रत उमर रज़ि० थक कर बैठ गए।

वे सब मुश्रिक हज़रत उमर रज़ि० के सर पर खड़े थे और हज़रत उमर रज़ि० फ़रमा रहे थे कि जो तुम्हारा दिल चाहता है, कर लो। मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं कि हम (मुसलमान) तीन सौ हो गए तो या तो तुम (मक्का) हमारे लिए छोड़कर चले जाओगे या हम तुम्हारे लिए छोड़कर चले जाएंगे।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि यों अभी हो ही रहा था कि क़ुरैश का एक बूढ़ा आदमी सामने से आया जो यमनी चादर और धारीदार कुरता पहने हुए था। वह उनके पास आकर खड़ा हो गया और उसने पूछा, तुम लोगों को क्या हुआ?

लोगों ने कहा, उमर बेदीन हो गया है।

उस बूढ़े ने कहा, अरे छोड़ो। एक आदमी ने अपने लिए एक बात पसन्द की है, तुम उससे क्या चाहते हो? क्या तुम समझते हो कि क़बीला बनू अदी अपने आदमी (हज़रत उमर) को ऐसे ही तुम्हारे हवाले कर देंगे? इस आदमी को छोड़ दो और चले जाओ।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! उस बड़े मियां के कहते ही वे लोग हज़रत उमर रज़ि० से ऐसे छट गए, जैसे कि उनके ऊपर से कोई चादर उतार ली गई हो। जब मेरे वालिद हिजरत करके मदीना चले गए, तो मैंने उनसे पूछा, ऐ अब्बा जान! जिस दिन

आप इस्लाम लाए थे और मक्का के काफ़िर आपसे लड़ रहे थे तो एक आदमी ने आकर उन लोगों को डांटा था, जिस पर लोग सब आपको छोड़कर चले गए थे, वह आदमी कौन था?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे! वह आस बिन वाइल सहमी थे।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० घर में ख़ौफ़ खाए बैठे हुए थे कि इतने में आस बिन वाइल सहमी अबू अम्र उनके पास आया। वह यमनी चादर ओढ़े हुए था और ऐसी कमीज़ पहने हुए था, जिसके पल्ले रेशम के साथ सिले हुए थे। यह अबू अम्र बनू सह्म क़बीला के थे और ये लोग जाहिलियत के ज़माने में हमारे दोस्त थे। उसने हज़रत उमर रज़ि० से पूछा, तुम्हें क्या हुआ?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि तुम्हारी क़ौम कह रही है कि अगर मैं मुसलमान हो गया तो मुझे क़त्ल कर देंगे, तो उसने कहा, (मैंने तुम्हें अमन दे दिया) अब तुम्हें कोई कुछ नहीं कह सकता।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि उसके इस कहने के बाद मुझे इत्मीनान हो गया और मैं महफ़ूज़ हो गया। आस घर से बाहर निकला तो देखा कि सारी घाटी लोगों से भरी हुई है। उसने पूछा, तुम लोग कहां जा रहे हो?

उन्होंने कहा, हम ख़त्ताब के उस बेटे (उमर) के पास जा रहे हैं जो बेदीन हो गया है, तो आस ने कहा, नहीं, उसे कोई कुछ नहीं कह सकता। (यह सुनकर) वे तमाम लोग वापस चले गए।[2]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० का मशक़्क़तें बरदाश्त करना

हज़रत मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी कहते हैं कि जब हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० मुसलमान हुए तो उनको उनके चचा हकम

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 82
2. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 545

बिन अबुल आस बिन उमैया ने पकड़ कर रस्सी में मज़बूती से बांध दिया और कहा कि तुम अपने बाप-दादों के दीन को छोड़कर एक नए दीन को अख़्तियार करते हो? और अल्लाह की क़सम! जब तक तुम इस दीन को नहीं छोड़ोगे, मैं उस वक़्त तक तुम्हें बिल्कुल नहीं खोलूंगा।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैं इस दीन को कभी नहीं छोड़ूंगा। जब हकम ने देखा कि हज़रत उस्मान अपने दीन पर बड़े पक्के हैं, तो उनको छोड़ दिया।[1]

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना

हज़रत मसऊद बिन हिराश रज़ि० कहते हैं कि हम सफ़ा और मर्वः के दर्मियान सई कर रहे थे कि हमने देखा कि एक नवजवान आदमी के हाथ गरदन के साथ बंधे हुए हैं और लोगों का एक बड़ा मज्मा उसके पीछे-पीछे चल रहा है। मैंने पूछा, इस नवजवान को क्या हुआ?

लोगों ने बताया कि यह तलहा बिन उबैदुल्लाह हैं जो बेदीन हो गए हैं और हज़रत तलहा के पीछे-पीछे एक औरत थी, जो बड़े गुस्से से बोल रही थी और उनको बुरा-भला कह रही थी। मैंने पूछा, यह औरत कौन है? लोगों ने बताया, यह उनकी मां साबा बिन्त हज़रमी हैं।[2]

हज़रत इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन तलहा कहते हैं कि हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० ने मुझे बताया कि मैं बुसरा के बाज़ार और मेले में मौजूद था, तो वहां एक पादरी अपने गिरजाघर के बालाख़ाने में रहता था।

उसने कहा कि इस बाज़ार और मेला वालों से पूछो कि क्या इनमें कोई हरम का रहने वाला है?

मैंने कहा, हां, मैं हूं।

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 37
2. इसाबा, भाग 3, पृ० 410

उसने पूछा कि क्या अहमद (सल्ल०) ज़ाहिर हो गए हैं?

मैंने कहा, अहमद कौन?

उसने कहा, अब्दुल्लाह बिन मुत्तलिब के बेटे। यह वह महीना है जिसमें वे ज़ाहिर होंगे और वह आख़िरी नबी हैं। हरम (मक्का) में वह ज़ाहिर होंगे और वह हिजरत करके ऐसी जगह जाएंगे जहां खजूरों के बाग़ होंगे, पथरीली और बंजर ज़मीन होगी। कहीं ऐसा न हो कि लोग उनकी पैरवी कर लें और तुम उनसे पीछे रह जाओ।

हज़रत तलहा फ़रमाते हैं कि उसकी बात मेरे दिल को लगी और मैं वहां से तेज़ी से चला, और मक्का पहुंच गया और मैंने पूछा, क्या कोई नई बात पेश आई है?

उन्होंने कहा, हां, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्ल०), जो अमीन के लक़ब (उपाधि) से मशहूर हैं, उन्होंने नुबूवत का दावा किया है और इब्ने अबी क़ुहाफ़ा ने उनकी पैरवी की है। चुनांचे मैं हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास गया और मैंने कहा, क्या आपने उस आदमी की पैरवी की है?

उन्होंने कहा, हां, तुम भी उनकी ख़िदमत में जाओ और इनकी पैरवी कर लो, क्योंकि वह हक़ की दावत देते हैं।

हज़रत तलहा ने हज़रत अबूबक्र को उस पादरी की बात बताई। हज़रत अबूबक्र रज़ि० हज़रत तलहा रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले गए। वहां हज़रत तलहा मुसलमान हो गए और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को पादरी की बात बताई, जिससे हुज़ूर सल्ल० को बड़ी ख़ुशी हुई।

जब हज़रत अबूबक्र और हज़रत तलहा दोनों मुसलमान हो गए तो इन दोनों को नौफ़ल बिन ख़ुवैलद बिन अदवीया ने पकड़कर एक रस्सी में बांध दिया और बनू तैम ने इन दोनों को न बचाया।

नौफुल बिन ख़ुवैलद को क़ुरैश का मुशीर कहा जाता था। (एक रस्सी में बांधे जाने की वजह से) हज़रत अबूबक्र और हज़रत तलहा को क़रीनैन (यानी दो साथी) कहा जाता है।

इमाम बैहक़ी की रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! हमें इब्ने अदवीया के शर से बचा।[1]

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना

हज़रत अबुल अस्वद कहते हैं कि हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० आठ साल की उम्र में मुसलमान हुए और अठारह साल की उम्र में उन्होंने हिजरत की। उनके चचा उनको चटाई में लपेट देते और उनको आग की धूनी देते और कहते, कुफ़्र की तरफ़ लौट आओ। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं, मैं कभी काफ़िर न बनूंगा।[2]

हज़रत हफ़्स बिन ख़ालिद कहते हैं कि मौसिल से एक बड़ी उम्र के बुज़ुर्ग हमारे पास आए और उन्होंने हमें बताया कि मैं एक सफ़र में हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० के साथ था। एक चटयल मैदान में उनको नहाने की ज़रूरत पेश आ गई, जहां न पानी था, न घास और न कोई इंसान।

उन्होंने कहा (मेरे नहाने के लिए) ज़रा परदे का इन्तिज़ाम कर दो। मैंने उनके लिए परदे का इन्तिज़ाम किया, (नहाने के दौरान) अचानक मेरी निगाह उनके जिस्म पर पड़ गई तो मैंने देखा कि उनके सारे जिस्म पर तलवार के घावों के निशान हैं।

मैंने उनसे कहा, मैंने आपके जिस्म पर इतने घावों के निशान देखे हैं कि इतने मैंने किसी के जिस्म पर नहीं देखे हैं।

हज़रत ज़ुबैर ने कहा, क्या तुमने देख लिया ?

मैंने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! इनमें से हर घाव हुज़ूर

1. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 369, बिदाया, भाग 3, पृ० 29
2. हुलीया भाग 1, पृ० 9, मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 9, पृ० 151, मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 360

सल्ल० के साथ में लगा है और अल्लाह के रास्ते में लगा है।[1]

हज़रत अली बिन ज़ैद कहते हैं कि जिस आदमी ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को देखा, उसने मुझे बताया कि उनके सीने पर आंख की तरह नेज़े और तीर के घावों के निशान थे।[2]

अल्लाह के रसूल सल्ल० के मुअज़्ज़िन हज़रत बिलाल बिन रिबाह रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि सबसे पहले इस्लाम को ज़ाहिर करने वाले सात आदमी हैं—

1. हुज़ूर सल्ल०, 2. हज़रत अबूबक्र रज़ि०, 3. हज़रत अम्मार रज़ि०, 4. उनकी मां हज़रत सुमैया रज़ि०, 5. हज़रत सुहैब रज़ि०, 6. हज़रत बिलाल रज़ि० और 7. हज़रत मिक़्दाद रज़ि०,

अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० की हिफ़ाज़त उनके चचा के ज़रिए से की और हज़रत अबूबक्र की हिफ़ाज़त उनकी क़ौम के ज़रिए से की, बाक़ी तमाम आदमियों को मुश्रिकों ने पकड़कर लोहे की ज़िरहें पहनाईं और उन्हें सख़्त धूप में डाल दिया, जिससे वे ज़िरहें बहुत गर्म हो गईं और हज़रत बिलाल रज़ि० के अलावा बाक़ी सब ने मजबूर होकर इन मुश्रिकों की बात मान ली, लेकिन हज़रत बिलाल को अल्लाह के दीन के बारे में अपनी जान की कोई परवाह न थी और न उनकी क़ौम के यहां उनकी कोई हैसियत थी। चुनांचे मुश्रिकों ने हज़रत बिलाल को पकड़ कर लड़कों के हवाले कर दिया, जो उन्हें मक्का की गलियों में चक्कर देते फिरते और वह अहद-अहद करते रहते, (यानी माबूद एक ही है)[3]

---

1. तबरानी व हाकिम, भाग 3, पृ० 360, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 70, हैसमी, भाग 9, पृ० 150
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 90
3. बिदाया, भाग 3, पृ० 28, हाकिम, भाग 3, पृ० 284, हुलीया, भाग 1, पृ० 49, कंज़, भाग 7, पृ० 14, इस्तीआब, भाग 1, पृ० 141

हज़रत मुजाहिद की हदीस में इस तरह है कि बाक़ी लोगों को मुश्रिकों ने लोहे की ज़िरहें पहनाकर कड़ी धूप में डाल दिया, जिससे वे ज़िरहें सख़्त गर्म हो गईं और लोहे की गर्मी और धूप की गर्मी की वजह से इन लोगों को बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ हुई। शाम को अबू जह्ल नेज़ा लिए हुए इन लोगों के पास आया और इन्हें गालियां देने लगा और इन्हें धमकी देने लगा।[1]

हज़रत मुजाहिद की एक हदीस में यों है कि मुश्रिक हज़रत बिलाल के गले में रस्सी डालकर मक्का के दोनों अख़्शबीन पहाड़ों के दर्मियान लिए फिरते।[2]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि० बनू जुमह क़बीला की एक औरत के ग़ुलाम थे और मुश्रिक उनको मक्का की तपती हुई रेत पर लिटा कर तक्लीफ़ पहुंचाते और उनके सीने पर पत्थर रख देते ताकि उनकी कमर गर्म रहे और ये तंग आकर मुश्रिक हो जाएं, लेकिन वह अह्द-अह्द कहते रहे। वरक़ा (बिन नौफ़ल बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा हज़रत ख़दीजा रज़ि० के चचेरे भाई) इस हाल में उनके पास से गुज़रते और कहते, ऐ बिलाल! अह्द-अह्द यानी हां वाक़ई माबूद एक ही है (और मुश्रिकों से कहते) अल्लाह की क़सम! अगर तुमने उनको क़त्ल कर दिया तो मैं उनकी क़ब्र को बरकत और रहमत की जगह बनाऊंगा।[3]

हज़रत उर्वः रज़ि० फ़रमाते हैं कि वरक़ा बिन नौफ़ुल हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रते और मुश्रिक उन्हें तक्लीफ़ पहुंचा रहे होते और हज़रत बिलाल अहद-अहद कह रहे होते, यानी माबूद एक ही है तो वरक़ा कहते, वाक़ई माबूद एक ही है और ऐ बिलाल! वह माबूद अल्लाह है। फिर वरक़ा बिन नौफ़ुल उमैया बिन ख़लफ़ की ओर मुतवज्जह होते, जोकि हज़रत बिलाल को तक्लीफ़ें पहुंचा रहा होता था,

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 140
2. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 166
3. इसाबा, भाग 3, पृ० 634

तो वरक़ा कहते हैं, मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं, अगर तुमने उसे क़त्ल कर दिया, तो मैं उनकी क़ब्र को बरकत और रहमते ख़ुदावन्दी की जगह बनाऊंगा।

एक दिन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का हज़रत बिलाल पर गुज़र हुआ और वे मुश्रिक उसको तक्लीफ़ें पहुंचा रहे थे तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उमैया से कहा, अरे, क्या तुम इस मिस्कीन के बारे में अल्लाह से नहीं डरते हो? कब तक (इनको यों सज़ा देते रहोगे)?

उमैया ने कहा, तुमने ही तो इनको बिगाड़ा है, अब तुम ही इनको इन तक्लीफ़ों से छुड़ाओ।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, अच्छा, मैं इन्हें छुड़ाने के लिए तैयार हूं। मेरे पास एक काला ग़ुलाम है जो इनसे ज़्यादा मज़बूत और ताक़तवर है और वह तुम्हारे दीन पर है, वह ग़ुलाम तुम्हें हज़रत बिलाल के बदले में देता हूं।

उमैया ने कहा, मुझे क़ुबूल है।

हज़रत अबूबक्र ने कहा, वह मैंने तुम्हें दे दिया।

हज़रत अबूबक्र ने अपना ग़ुलाम देकर हज़रत बिलाल को ले लिया और उन्हें आज़ाद कर दिया। मक्का से हिजरत करने से पहले हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इस्लाम की वजह से हज़रत बिलाल के अलावा छः और ग़ुलामों को आज़ाद किया था।[1]

इब्ने इस्हाक़ से रिवायत है कि जब दोपहर को तेज़ गर्मी हो जाती तो उमैया हज़रत बिलाल रज़ि० को लेकर बाहर निकलता और मक्का की पथरीली ज़मीन पर उनको कमर के बल लिटा देता, फिर वह कहता कि एक बड़ा पत्थर उनके सीने पर रख दिया जाए। चुनांचे एक बड़ा पत्थर उनके सीने पर रख दिया जाता, फिर हज़रत बिलाल रज़ि० से कहता, तुम ऐसे ही (इन तक्लीफ़ों में पड़े) रहोगे, यहां तक कि या तो तुम मर जाओ या मुहम्मद का इंकार करके लात और उज़्ज़ा की इबादत शुरू कर दो, लेकिन हज़रत बिलाल इन तमाम तक्लीफ़ों के बावजूद

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 148

अहद-अहद कहते रहते कि माबूद तो एक ही है।

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० ने ये कुछ पद (शेर) कहे हैं जिनमें उन्होंने हज़रत बिलाल और उनके साथियों के तक्लीफ़ें उठाने और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के हज़रत बिलाल को आज़ाद करने का ज़िक्र किया है। हज़रत अबूबक्र का लक़ब अतीक़ था यानी दोज़ख़ से आज़ाद। (हुज़ूर सल्ल० ने उनको यह लक़ब दिया था, या उनकी मां ने उनका यह नाम रखा था)—

جَزَى اللّٰهُ خَيْرًا عَنْ بِلَالٍ وَّصَحْبِهٖ   عَتِيْقًا وَّاَخْزٰى فَاكِهًا وَّاَبَا جَهْلِ

'अल्लाह हज़रत बिलाल और उनके साथियों की तरफ़ से अतीक़ (हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०) को भला बदला अता फ़रमाए और फ़ाकेह और अबू जह्ल को रुसवा करे।'

عَشِيَّةَ هَمَّا فِيْ بِلَالٍ بِسُوْءَةٍ   وَلَمْ يَحْذَرَا مَا يَحْذَرُ الْمَرْءُ ذُو الْعَقْلِ

'मैं उस शाम को नहीं भूलूंगा, जिस शाम को ये दोनों हज़रत बिलाल को सख़्त तक्लीफ़ देना चाहते थे और अक़्लमंद आदमी जिस तक्लीफ़ देने से बचता है ये दोनों उससे बचना नहीं चाहते थे।'

بِتَوْحِيْدِهٖ رَبَّ الْاَنَامِ وَقَوْلِهٖ   شَهِدْتُّ بِاَنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ عَلٰى مَهْلِ

'वे दोनों हज़रत बिलाल को इस वजह से तक्लीफ़ें देना चाहते थे, क्योंकि हज़रत बिलाल लोगों का एक ख़ुदा मानते थे और कहते थे कि मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह मेरा रब है और उस पर मेरा दिल मुतमइन है।'

فَاِنْ يَّقْتُلُوْنِيْ يَقْتُلُوْنِيْ فَلَمْ اَكُنْ   لِاُشْرِكَ بِالرَّحْمٰنِ مِنْ خِيْفَةِ الْقَتْلِ

'अगर ये मुझे मारना चाहते हैं, तो ज़रूर मार दें। मैं क़त्ल के डर से रहमान के साथ किसी को शरीक नहीं कर सकता हूं।'

فَيَا رَبَّ اِبْرَاهِيْمَ وَالْعَبْدِ يُوْنُسٍ   وَمُوْسٰى وَعِيْسٰى نَجِّنِيْ ثُمَّ لَا تُبْلِ

لِمَنْ ظَلَّ يَهْوَى الْغَيَّ مِنْ اٰلِ غَالِبٍ   عَلٰى غَيْرِ بِرٍّ كَانَ مِنْهُ وَلَا عَدْلِ

'ऐ इब्राहीम और यूनुस और मूसा और ईसा अलै० के रब! मुझे नजात अता फ़रमा और फिर मुझे आले ग़ालिब के उन लोगों के ज़रिए आज़माइश में न डाल, जो गुमराह होना चाहते हैं और न वे नेक हैं और

बिन यासिर थे और मलऊन अबू जह्ल ने हज़रत सुमैया की शर्मगाह में नेज़ा मारा, जिससे वह शहीद हो गईं और हज़रत यासिर भी इन्हीं तक्लीफ़ों में इन्तिक़ाल फ़रमा गए। और हज़रत अब्दुल्लाह को भी तीर मारा गया, जिससे वे गिर गए।[1]

इमाम अहमद की रिवायत हज़रत मुजाहिद से नक़ल की गई है कि इस्लाम में शहादत का दर्जा सबसे पहले हज़रत अम्मार रज़ि० की मां हज़रत सुमैया को मिला, जिनकी शर्मगाह में अबू जह्ल ने नेज़ा मारा था।[2]

हज़रत अबू उबैदा बिन मुहम्मद बिन अम्मार बयान करते हैं कि मुश्रिकों ने हज़रत अम्मार को पकड़ कर इतनी तक्लीफ़ें पहुंचाईं कि आख़िर (उनको अपनी जान बचाने के लिए) हुज़ूर सल्ल० की शान में गुस्ताख़ाना बोल बोलने पड़े और मुश्रिकों के माबूदों की तारीफ़ करनी पड़ी।

जब वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए तो उनसे हुज़ूर सल्ल० ने पूछा कि तुम पर क्या गुज़री?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! बहुत बुरा हुआ। मुझे इतनी तक्लीफ़ पहुंचाई गई कि आख़िर मुझे मजबूर होकर आपके सिलसिले में गुस्ताख़ी करनी पड़ी और उनके माबूदों की तारीफ़ करनी पड़ी।

आपने फ़रमाया, तुम अपने दिल को कैसा पाते हो?

उन्होंने कहा, मैं अपने दिल को ईमान पर मुतमइन पाता हूं।

आपने फरमाया, फिर तो अगर वे दोबारा तुम्हें ऐसी सख़्त तक्लीफ़ें पहुंचाएं तो तुम भी दोबारा (जान बचाने के लिए) वैसे ही कर लेना, जैसे पहले किया।[3]

अबू उबैद ने हज़रत मुहम्मद (बिन अम्मार) से नक़ल किया है कि

---

1. इसाबा, भाग 3, पृ० 647
2. बिदाया, भाग 2, पृ० 59
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 140, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 178

बिन यासिर थे और मलऊन अबू जह्ल ने हज़रत सुमैया की शर्मगाह में नेज़ा मारा, जिससे वह शहीद हो गईं और हज़रत यासिर भी इन्हीं तक्लीफ़ों में इन्तिक़ाल फ़रमा गए। और हज़रत अब्दुल्लाह को भी तीर मारा गया, जिससे वे गिर गए।[1]

इमाम अहमद की रिवायत हज़रत मुजाहिद से नक़ल की गई है कि इस्लाम में शहादत का दर्जा सबसे पहले हज़रत अम्मार रज़ि० की मां हज़रत सुमैया को मिला, जिनकी शर्मगाह में अबू जह्ल ने नेज़ा मारा था।[2]

हज़रत अबू उबैदा बिन मुहम्मद बिन अम्मार बयान करते हैं कि मुश्रिकों ने हज़रत अम्मार को पकड़ कर इतनी तक्लीफ़ें पहुंचाईं कि आख़िर (उनको अपनी जान बचाने के लिए) हुज़ूर सल्ल० की शान में गुस्ताख़ाना बोल बोलने पड़े और मुश्रिकों के माबूदों की तारीफ़ करनी पड़ी।

जब वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए तो उनसे हुज़ूर सल्ल० ने पूछा कि तुम पर क्या गुज़री?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! बहुत बुरा हुआ। मुझे इतनी तक्लीफ़ पहुंचाई गई कि आख़िर मुझे मजबूर होकर आपके सिलसिले में गुस्ताख़ी करनी पड़ी और उनके माबूदों की तारीफ़ करनी पड़ी।

आपने फ़रमाया, तुम अपने दिल को कैसा पाते हो?

उन्होंने कहा, मैं अपने दिल को ईमान पर मुतमइन पाता हूं।

आपने फरमाया, फिर तो अगर वे दोबारा तुम्हें ऐसी सख़्त तक्लीफ़ें पहुंचाएं तो तुम भी दोबारा (जान बचाने के लिए) वैसे ही कर लेना, जैसे पहले किया।[3]

अबू उबैद ने हज़रत मुहम्मद (बिन अम्मार) से नक़ल किया है कि

---

1. इसाबा, भाग 3, पृ० 647
2. बिदाया, भाग 2, पृ० 59
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 140, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 178

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई। हज़रत अम्मार रो रहे थे। हुज़ूर सल्ल० उनकी आंखों से आंसू पोंछने लगे और आप फ़रमा रहे थे कि कुफ़्फ़ार ने तुमको पकड़ कर पानी में इतने ग़ोते दिए कि तुमको फ़्लां-फ़्लां (ना ज़ेबा और गुस्ताख़ी की) बातें कहनी पड़ीं। (जब तुम्हारा दिल मुतमइन था तो इन बातों के कहने में कोई हरज नहीं) अगर वे दोबारा ऐसी हरकत करें तो तुम दोबारा उनके सामने इसी तरह कह देना।

हज़रत अम्र बिन मैमून कहते हैं कि मुश्रिकों ने हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० को आग में जलाया था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास से गुज़रे और आप उनके सर पर अपना हाथ फेर रहे थे और फ़रमा रहे थे कि ऐ आग! तू अम्मार के लिए ठंडी और सलामती वाली हो जा, जैसे तू हज़रत इब्राहीम अलै० के लिए हो गई थी। (ऐ अम्मार!) तुम्हें एक बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी (यानी तुम शहादत पाओगे)[1]

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना

हज़रत शाबी कहते हैं कि एक दिन हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त रज़ि० हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गए। हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी ख़ास मस्नद पर बिठाकर फ़रमाया कि एक आदमी के अलावा इस धरती का कोई आदमी इस मस्नद पर बैठने का तुमसे ज़्यादा हक़दार नहीं है।

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने पूछा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! वह एक आदमी कौन है?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, वह हज़रत बिलाल हैं।

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने कहा, नहीं, वह मुझसे ज़्यादा हक़दार नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने मुझसे ज़्यादा तक्लीफ़ें नहीं उठाई हैं, क्योंकि मुश्रिकों

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 177

में हज़रत बिलाल रज़ि० से ताल्लुक़ रखने वाले ऐसे लोग थे, जिनकी वजह से अल्लाह उनको बचा लेते थे। मेरा तो उनमें कोई भी ऐसा नहीं था, जिसकी वजह से अल्लाह मुझे बचाते। मैंने अपना यह हाल देखा है कि एक दिन मुश्रिकों ने मुझे पकड़ा और आग जला कर उसमें मुझे डाल दिया। फिर एक आदमी ने अपना पांव मेरे सीने पर रखा और मैं उस ज़मीन से सिर्फ़ अपनी कमर के ज़रिए ही ख़ुद को बचा सका।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि फिर हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने अपनी कमर खोलकर दिखाई, जिस पर बर्स के दाग़ जैसे निशान पड़े हुए थे।[1]

हज़रत शाबी कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० से उन तक्लीफ़ों के बारे में पूछा, जो उनको मुश्रिकों की ओर से उठानी पड़ीं। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप मेरी पीठ को देखें।

(इसे देखकर) हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैंने तो ऐसी कमर कभी नहीं देखी!

हज़रत ख़ब्बाब ने बताया कि मुश्रिकों ने मेरे लिए आग जलाई (और मुझे उसमें डाला) और उस आग को मेरी कमर की चर्बी ने ही बुझाई।[2]

अबू लैला किन्दी बयान करते हैं कि हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा क़रीब आ जाओ। हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० के अलावा कोई भी इस जगह बैठने का तुमसे ज़्यादा हक़दार नहीं है, तो हज़रत ख़ब्बाब हज़रत उमर रज़ि० को अपनी कमर के वे निशान दिखाने लगे जो उनको मुश्रिकों के अज़ाब से पहुंचे थे।[3]

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं एक लोहार आदमी था और

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 117, कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 31
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 144
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 71

आस बिन वाइल के ज़िम्मे मेरा कुछ क़र्ज़ा था। मैंने उसके पास जाकर अपने क़र्ज़े का तक़ाज़ा किया, तो आस ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें तुम्हारा क़र्ज़ा तब वापस करूंगा, जब तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इंकार कर दोगे।

मैंने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! अगर तुम मरकर दोबारा ज़िंदा भी हो जाओ, तो भी मुहम्मद का इंकार नहीं करूंगा।

इस पर आस ने कहा, जब मैं मरकर दोबारा उठाया जाऊंगा, वहां तुम मेरे पास आना, वहां मेरे पास बहुत सारा माल और औलाद होगी। वहां मैं तुम्हें तुम्हारा क़र्ज़ा दे दूंगा, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी।

أَفَرَءَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ۝ —— وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۝

'भला तूने देखा उसको जो मुन्किर हुआ हमारी आयतों से और कहा, मुझको मिलकर रहेगा माल और औलाद, क्या झांक आया है ग़ैब को या ले रखा है रहमान से अहद, यह नहीं, हम लिख रखेंगे जो वह कहता है और बढ़ाते जाएंगे उसको अज़ाब में लम्बा और हम ले लेंगे, उसके मरने पर जो कुछ वह बतला रहा है और आएगा हमारे पास अकेला।'[1]

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप काबा के साए में चादर की टेक लगाए हुए बैठे हुए थे और उन दिनों हमें मुश्रिकों की ओर से बहुत सख़्ती उठानी पड़ी थी। मैंने अर्ज़ किया, क्या आप अल्लाह से दुआ नहीं फ़रमाते?

आप एकदम सीधे बैठ गए और मुबारक चेहरा लाल हो गया और आपने फ़रमाया, तुमसे पहले ऐसे लोग हुए हैं कि लोहे की कंघियों से उनका गोश्त और पट्ठा सब नोच लिया गया और हड्डियों के सिवा कुछ न छोड़ा गया, लेकिन इतनी सख़्त तक्लीफ़ भी उनको उनके दीन से हटा न सकती थी और अल्लाह इस दीन को ज़रूर पूरा करके रहेंगे, यहां तक कि सवार सन्आ से हज़रमौत तक जाएगा और उसको किसी दुश्मन का डर न होगा सिवाए अल्लाह के और सिवाए भेड़िए के अपनी बकरियों

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 59, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 116,

पर, लेकिन तुम जल्दी चाहते हो?[1]

हज़रत अबूज़र रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अबूज़र रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० की बेसत की ख़बर हुई, तो उन्होंने अपने भाई से कहा, तुम उस घाटी (मक्का) को जाओ और जो आदमी यह कहता है कि वह नबी है और उसके पास आसमान से ख़बर आती है, उसके हालात मालूम करो, उसकी बातें सुनो और फिर मुझे आकर बताओ। चुनांचे उनके भाई मक्का हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए। आपकी बातें सुनीं। फिर हज़रत अबूज़र को वापस आकर बताया कि मैंने उन्हें देखा कि वह उम्दा अख़्लाक़ अख़्तियार करने का हुक्म दे रहे थे और उन्होंने ऐसा कलाम सुनाया जो शेर (पद) नहीं था।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, तुम्हारी बातों से मेरी तसल्ली नहीं हुई, जो मैं मालूम करना चाहता था, वह मैं मालूम न कर सका। चुनांचे उन्होंने रास्ते का सामान लिया और पानी का मश्केज़ा भी सवारी पर रखा (और चल पड़े), यहां तक कि मक्का पहुंच गए और मस्जिदे हराम में आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तलाश करने लगे।

यह हुज़ूर सल्ल० को पहचानते नहीं थे और लोगों से हुज़ूर सल्ल० के बारे में पूछना उन्होंने (हालात की वजह से) मुनासिब न समझा, यहां तक कि रात आ गई तो ये वहीं लेट गए, तो इनको हज़रत अली रज़ि० ने देखा और वह समझ गए कि यह परदेसी मुसाफ़िर हैं।

हज़रत अबूज़र हज़रत अली रज़ि० को देखकर उनके पीछे हो लिए। (हजरत अली रज़ि० ने उनकी मेज़बानी की) लेकिन दोनों में से किसी ने दूसरे से कुछ न पूछा और यों ही सुबह हो गई। वह अपना मश्केज़ा और ज़ादे सफ़र लेकर फिर मस्जिदे हराम आ गए और सारा दिन वहां ही रहे। हुज़ूर सल्ल० ने उनको न देखा, यहां तक कि शाम हो गई।

1. ऐनी, भाग 7, पृ० 558, हाकिम, भाग 3, पृ० 383

यह अपने लेटने की जगह वापस आए। हज़रत अली रज़ि० का उनके पास से गुज़र हुआ। उन्होंने कहा, क्या इस आदमी के लिए इस बात का वक़्त नहीं आया कि अपना ठिकाना जान ले? हज़रत अली रज़ि० ने उनको उठाया और उनको अपने साथ ले गए, लेकिन दोनों में से किसी ने भी दूसरे से कुछ न पूछा, यहां तक कि तीसरा दिन हो गया और फिर हज़रत अली ने पहले दिन की तरह किया और यह उनके साथ चले गए।

फिर हज़रत अली रज़ि० ने उनसे कहा, क्या तुम मुझे बताते नहीं हो कि तुम यहां किस लिए आए हो?

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, मैं इस शर्त पर बताऊंगा कि तुम मुझे अह्द व पैमान दो कि तुम मुझे ठीक-ठीक बताओगे। हज़रत अली ने वायदा फ़रमाया, तो हज़रत अबूज़र ने उनको अपने आने का मक़सद बताया।

हज़रत अली ने कहा कि यह बात हक़ है और वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। जब सुबह हो तो तुम मेरे पीछे चलना। अगर मैं ऐसी कोई चीज़ देखूंगा जिससे मुझे तुम्हारे बारे में ख़तरा होगा तो मैं पेशाब करने के बहाने रुक जाऊंगा (तुम चलते रहना), अगर मैं चलता रहा तो तुम मेरे पीछे चलते रहना और जिस घर में मैं दाख़िल हूं, उसमें तुम भी दाख़िल हो जाना। चुनांचे ऐसे ही हुआ। यह हज़रत अली के पीछे चलते रहे, यहां तक कि हज़रत अली हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हो गए और यह भी उनके साथ ख़िदमत में हाज़िर हो गए। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की बात सुनी और उसी जगह मुसलमान हो गए।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, अपनी क़ौम के पास वापस चले जाओ और उन्हें सारी बात बताओ (और तुम वहां ही रहो), यहां तक कि मैं तुम्हें हुक्म भेजूं।

हज़रत अबूज़र ने कहा कि उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं तौहीद के उस कलिमे का काफ़िरों के बीच में पूरे ज़ोर से

एलान करूंगा। चुनांचे वहां से चलकर मस्जिदे हराम आए और ऊंची आवाज़ से पुकार कर कहा—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللهِ

अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह०

यह सुनकर मुश्रिक खड़े हुए और उनको इतना मारा कि उनको लिटा दिया। इतने में हज़रत अब्बास आ गए और वह (उनको बचाने के लिए) उन पर लेट गए और उन्होंने कहा, तुम्हारा नाश हो, क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि यह क़बीला ग़िफ़ार का आदमी है और शाम देश का तुम्हारा तिजारती रास्ता उसी क़बीले के पास से गुज़रता है और हज़रत अब्बास ने उनको काफ़िरों से छुड़ा लिया।

अगले दिन हज़रत अबूज़र ने फिर वैसे ही किया। चुनांचे फिर काफ़िरों ने उन पर हमला किया और उनको मारा और फिर हज़रत अब्बास (बचाने के लिए) उन पर लेट गए।[1]

इमाम बुख़ारी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत में यों नक़ल किया है कि उन्होंने एलान किया, ऐ क़ुरैश के लोगो ! सुन लो—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

इन्नी अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०

काफ़िरों ने कहा, पकड़ो इस बेदीन को। चुनांचे वे सब खड़े होकर मुझे मारने लगे। और मुझे इतना मारा कि मैं मरने के क़रीब हो गया। हज़रत अब्बास मेरी मदद को आए और मेरे ऊपर लेट गए और काफ़िरों की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, तुम्हारा नाश हो। तुम ग़िफ़ार के आदमी को मारने लगे, हालांकि तुम्हारी तिजारत का रास्ता और तुम्हारी गुज़रगाह ग़िफ़ार के पास से है। चुनांचे लोग मुझे छोड़कर पीछे हट गए।

जब अगला दिन हुआ तो मैंने ऊंची आवाज़ से पहले दिन की तरह

1. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 544

फिर कलिमा शहादत (काफ़िरों के बीच में) पढ़ा। फिर काफ़िरों ने कहा, पकड़ो इस बेदीन को। चुनांचे उस दिन भी मेरे साथ वही सुलूक हुआ जो इससे पहले दिन हुआ था और फिर हज़रत अब्बास मेरी मदद को आए और मुझ पर लेट गए और काफ़िरों से वही बात कही, जो उन्होंने पहले दिन कही थी।[1]

इमाम मुस्लिम ने हज़रत अबूज़र रज़ि० के इस्लाम लाने का क़िस्सा और तरह से बयान किया है जिसमें यह है कि मेरा भाई गया और वह मक्का पहुंचा, फिर मुझसे वापस आकर कहा कि मैं मक्का गया था, वहां मैंने एक आदमी देखा, जिसे लोग बेदीन कहते थे। उनकी शक्ल व सूरत आपसे बहुत ज़्यादा मिलती-जुलती है।

हज़रत अबूज़र फ़रमाते हैं, फिर मैं मक्का गया, वहां मैंने एक आदमी को देखा जो उनका नाम ले रहा था। मैंने पूछा, वह बेदीन आदमी कहां है?

यह सुनकर वह आदमी मेरे बारे में चीख़-चीख़कर कहने लगा, यह बेदीन है, यह बेदीन है। लोगों ने मुझे पत्थरों से इतना मारा कि मैं पत्थर के लाल बुत की तरह से हो गया। (जाहिलियत के ज़माने में काफ़िर जानवर ज़िब्ह करके बुतों पर ख़ून डाला करते थे। मैं उस बुत की तरह लहूलुहान हो गया) चुनांचे मैं काबा और उसके पर्दों के दर्मियान छिप गया और पन्द्रह दिन-रात उसमें यों ही छिपा रहा। मेरे पास आबे ज़मज़म के अलावा खाने-पीने की कोई चीज़ नहीं थी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ि० मस्जिदे हराम में (एक दिन) आए, मेरी उनसे मुलाक़ात हुई और अल्लाह की क़सम! सबसे पहले मैंने आपको इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ सलाम किया और मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! अस्सलामु अलैक।

आपने फ़रमाया, व अलैकस्सलामु व रहमतुल्लाहि० तुम कौन हो?

मैंने कहा, बनू ग़िफ़ार का एक आदमी हूं।

आपके साथी (हज़रत अबूबक्र) ने कहा, मुझे आज रात इनको

1. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 500

अपना मेहमान बनाने की इजाज़त दे दें। चुनांचे वह मुझे अपने घर ले गए जो मक्का के निचले हिस्से में था। उन्होंने मुझे कुछ मुट्ठी किशमिश ला कर दी। फिर मैं अपने भाई के पास आया और मैंने उसे बताया कि मैं मुसलमान हो गया हूं।

उसने कहा, मैं भी तुम्हारे दीन पर हूं।

फिर हम दोनों अपनी मां के पास गए। उन्होंने भी यही कहा कि मैं तुम दोनों के दीन पर हूं, फिर मैंने अपनी क़ौम को जाकर दावत दी। उनमें से कुछ लोगों ने मेरी ताबेदारी की (और वे मुसलमान हो गए।)[1]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं मक्का में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ठहर गया। आपने मुझे इस्लाम सिखाया और मैंने कुछ कुरआन भी पढ़ लिया। फिर मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अपने दीन का एलान करना चाहता हूं।

आपने फ़रमाया, मुझे तुम्हारे बारे में ख़तरा है कि तुमको क़त्ल कर दिया जाएगा।

मैंने कहा, चाहे मुझे क़त्ल कर दिया जाए, लेकिन मैं यह काम ज़रूर करूंगा। आप ख़ामोश हो गए।

मस्जिदे हराम में कुरैश हलक़े लगा कर बैठे हुए बातें कर रहे थे, मैंने वहां जाकर ज़ोर से कहा,

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

'अशहदु अलला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदर रसूलुल्लाह०'

यह सुनते ही वे तमाम हलक़े टूट गए और वे लोग खड़े होकर मुझे मारने लगे और मुझे लाल बुत बनाकर छोड़ा और उनका यह ख़्याल था कि वे मुझे क़त्ल कर चुके हैं। जब मुझे कुछ सुकून हुआ, तो मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया।

आपने मेरा यह हाल देखकर फ़रमाया कि क्या मैंने तुमको मना नहीं किया था?

---

1. मुस्लिम

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह मेरे दिल की चाहत थी, जिसे मैंने पूरा कर लिया है। मैं हुज़ूर सल्ल० के पास ठहर गया। फिर अपने फ़रमाया, अपनी क़ौम में चले जाओ और जब तुम्हें हमारे ग़लबे की ख़बर मिले तो मेरे पास आ जाना।[1]

एक रिवायत में हज़रत अबूज़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं मक्का गया तो घाटी (मक्का) के तमाम लोग मुझ पर हड्डियां और ढेले लेकर टूट पड़े और मुझे इतना मारा कि मैं बेहोश होकर गिर गया। जब मुझे होश आया और मैं उठा तो मैंने देखा कि मैं पत्थर के लाल बुत की तरह से (लहूलुहान) हूं।[2]

हज़रत सईद बिन ज़ैद और उनकी बीवी हज़रत उमर की बहन हज़रत फ़ातिमा का सख़्तियां बरदाश्त करना

हज़रत क़ैस बयान करते हैं कि मैंने हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल रज़ि० को मस्जिद कूफ़ा में यह कहते हुए सुना कि मैंने अपने आपको इस हाल में देखा है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने (इस्लाम लाने से पहले) मुझे इस्लाम लाने की वजह से बांध रखा था।[3]

बुख़ारी में हज़रत क़ैस की एक रिवायत में यह भी है कि अगर तुम मुझे उस वक़्त देखते जिस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान नहीं हुए थे और उन्होंने मुझे और अपनी बहन को बांध रखा था।[4]

हज़रत अनस रज़ि० बयान करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० गरदन में तलवार लटकाए हुए घर से बाहर निकले। उन्हें बनू ज़ोहरा का एक आदमी मिला। उसने कहा, ऐ उमर ! कहां का इरादा है?

हज़रत उमर ने कहा, मेरा इरादा है कि (नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक) मैं मुहम्मद (सल्ल०) को क़त्ल कर दूं।

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 158
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 159
3. बुख़ारी, जिल्द 1, पृ० 545
4. बुख़ारी, जिल्द 1, पृ० 546

उसने कहा, अगर तुम मुहम्मद को क़त्ल कर दोगे तो बनू हाशिम और बनू ज़ोहरा से कैसे बचोगे?

हज़रत उमर ने उससे कहा, मेरा ख़्याल यह है कि तू भी बेदीन हो चुका है और जिस दीन पर तू था, उसको तू छोड़ चुका है।

उसने कहा, क्या मैं तुमको इससे भी ज़्यादा अजीब बात न बताऊं?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, वह क्या है?

उसने कहा, तुम्हारी बहन और बहनोई दोनों बेदीन हो चुके हैं और जिस दीन पर तुम हो, उसको वे दोनों छोड़ चुके हैं।

यह सुनकर हज़रत उमर ग़ुस्से में भर गए और (अपनी बहन के घर को) चल दिए। जब वह बहन और बहनोई के घर पहुंचे तो वहां मुहाजिरों में से हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० बैठे हुए थे। जब हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने हज़रत उमर की आहट सुनी, तो वह घर के अन्दर छिप गए।

हज़रत उमर ने घर में दाख़िल होते ही कहा कि यह पस्त आवाज़ क्या थी, जो मैंने तुम्हारे पास से सुनी। वे लोग सूरः ताहा पढ़ रहे थे। उन दोनों के कहा, हम आपस में बात कर रहे थे और कुछ नहीं था।

हज़रत उमर ने कहा, शायद तुम दोनों भी (उस नबी की तरफ़) माइल हो गए हो? तो उनके बहनोई ने उनसे कहा, ऐ उमर! अगर हक़ तुम्हारे दीन के अलावा किसी और दीन में हो, तो फिर तुम्हारा क्या ख़्याल है?

यह सुनते ही हज़रत उमर अपने बहनोई पर झपटे और उनको बहुत बुरी तरह से रौंदा, उनकी बहन उनको अपने ख़ाविंद से हटाने के लिए आईं, तो अपनी बहन को हज़रत उमर ने इस ज़ोर से मारा कि उनके चेहरे से ख़ून निकल आया।

उनकी बहन को भी ग़ुस्सा आ गया। उन्होंने ग़ुस्से से कहा, ऐ उमर! अगर हक़ तुम्हारे दीन के अलावा किसी और दीन में हो तो फिर? और उन्होंने (ऊंची आवाज़ से) कलिमा शहादत—

اشهد ان لا اله الا الله و اشهد ان محمدا رسول الله

अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मद-र्रसूलुल्लाह० पढ़ा। जब हज़रत उमर मायूस हो गए तो कहा, मुझे भी वह किताब दो जो तुम्हारे पास है, ताकि मैं उसे पढ़ूं और हज़रत उमर किताब पढ़ लिया करते थे।

उनकी बहन ने कहा, तुम नापाक हो और इस किताब को पाक आदमी हाथ लगा सकते हैं। इसलिए खड़े होकर या तो गुस्ल करो या वुज़ू।

हज़रत उमर ने खड़े होकर वुज़ू किया। फिर हज़रत उमर ने उस किताब को लेकर सूरः ताहा को पढ़ना शुरू किया, यहां तक कि इस आयत तक पहुंच गए—

إِنَّنِيٓ أَنَا ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدْنِى وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِذِكْرِيٓ

तो हज़रत उमर ने कहा कि मुझे बताओ कि मुहम्मद कहां हैं?

जब हज़रत ख़ब्बाब ने हज़रत उमर की यह बात सुनी तो वह घर के अन्दर से बाहर आए और कहा कि ऐ उमर! तुम्हें ख़ुशख़बरी हो। हुज़ूर सल्ल० ने जुमेरात की रात में यह दुआ मांगी थी कि ऐ अल्लाह! इस्लाम को उमर बिन ख़त्ताब या अम्र बिन हिशाम (अबू जहल) के (मुसलमान होने के) ज़रिए से इज़्ज़त अता फ़रमा। मुझे उम्मीद है कि हुज़ूर सल्ल० की यह दुआ तुम्हारे हक़ में क़ुबूल हुई है।

उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० उस घर में थे जो सफ़ा पहाड़ के दामन में था। हज़रत उमर यहां से चलकर उस घर (दारे अरक़म) में पहुंचे। उस वक़्त घर के दरवाज़े पर हज़रत हमज़ा और हज़रत तलहा रज़ि० और हुज़ूर सल्ल० के कुछ सहाबा मौजूद थे।

जब हज़रत हमज़ा ने देखा कि उनके साथी हज़रत उमर के आने से ख़ौफ़ महसूस कर रहे हैं, तो उन्होंने कहा, हां! यह उमर है। अगर अल्लाह ने उनके साथ भलाई का इरादा क्या है, तो यह मुसलमान होकर हुज़ूर सल्ल० की पैरवी कर लेंगे और अगर अल्लाह का इसके अलावा किसी और बात का इरादा है तो उनको क़त्ल करना हमारे लिए आसान बात है।

उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० घर के अन्दर थे और आप पर वह्य उतर रही थी। चुनांचे (वह्य आने के बाद) हुज़ूर सल्ल० बाहर हज़रत उमर के पास तशरीफ़ लाए और उनके गरेबान और तलवार के परतले को पकड़ कर फ़रमाया, क्या तुम बाज़ आने वाले नहीं हो, ऐ उमर! (इसी का इन्तिज़ार कर रहे हो) अल्लाह तुम पर वही ज़िल्लत और सज़ा नाज़िल कर दे, जो उसने वलीद बिन मुग़ीरह पर नाज़िल की है। ऐ अल्लाह! यह उमर बिन ख़त्ताब हैं। ऐ अल्लाह! उमर बिन ख़त्ताब के ज़रिए दीन को इज़्ज़त अता फ़रमा।

हज़रत उमर ने कहा, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के रसूल हैं और वह मुसलमान हो गए। (मुसलमान होने के बाद) उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आप बाहर (मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ने के लिए) तशरीफ़ ले चलें।[1]

हज़रत सौबान रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! उमर बिन ख़त्ताब के ज़रिए दीन को इज़्ज़त अता फ़रमा, उस रात के शुरू के हिस्से में हज़रत उमर की बहन—

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ

पढ़ रही थीं। हज़रत उमर रज़ि० ने उनको इतना मारा कि उन्हें यह गुमान हुआ कि उन्होंने अपनी बहन को क़त्ल कर डाला है। जब सुबह तहज्जुद के वक़्त हज़रत उमर उठे तो उन्होंने अपनी बहन की आवाज़ सुनी जो कि—

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ

पढ़ रही थीं, तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! न तो यह शेर है और न यह समझ में न आने वाला पस्त कलाम है। चुनांचे वह वहां से चलकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उन्होंने दरवाज़े पर हज़रत बिलाल रज़ि० को पाया। उन्होंने दरवाज़े को खटखटाया (या धक्का दिया)

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 191, ऐनी, भाग 8, पृ० 68, बिदाया, भाग 3, पृ० 81

हज़रत बिलाल रज़ि० ने पूछा, यह कौन है?

हज़रत उमर ने कहा, उमर बिन ख़त्ताब!

हज़रत बिलाल ने कहा, ज़रा ठहरो, मैं तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० से इजाज़त ले लूं।

हज़रत बिलाल ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! उमर दरवाज़े पर हैं।

आपने फ़रमाया, अगर अल्लाह का उमर के साथ ख़ैर का इरादा है, तो वह उसे दीन में दाख़िल कर देंगे। आपने हज़रत बिलाल रज़ि० से कहा, दरवाज़ा खोल दो। (उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया। हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ ले लाए) और हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० को दोनों बाज़ुओं से पकड़ पर ज़ोर से हिलाया और फ़रमाया, तुम क्या चाहते हो? तुम किस लिए आए हो?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप किस चीज़ की दावत देते हैं, वह मेरे सामने पेश करें।

आपने फ़रमाया, तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह वह्दहू ला शरीका लहू के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० उसी जगह मुसलमान हो गए और अर्ज़ किया, (ऐ अल्लाह के रसूल!) बाहर तशरीफ़ ले चलें।[1]

हज़रत उमर के ग़ुलाम असलम रज़ि० बयान करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने फ़रमाया, क्या तुम चाहते हो कि मैं तुमको अपने इस्लाम लाने का शुरू का क़िस्सा बयान करूं?

हमने कहा, जी हां।

उन्होंने फ़रमाया, मैं लोगों में से सबसे ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० पर सख़्ती करने वाला था। एक बार मैं सख़्त गर्म दिन में मक्का के एक रास्ते पर चला जा रहा था कि मुझे क़ुरैश के एक आदमी ने देख लिया और उसने मुझसे पूछा, ऐ ख़त्ताब के बेटे! कहां जा रहे हो?

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 62

मैंने कहा उस आदमी (यानी हुज़ूर सल्ल०) के पास (क़त्ल करने की नीयत से) जाने का इरादा है।

उस आदमी ने कहा कि (मुहम्मद की) यह बात तो तुम्हारे घर में दाख़िल हो चुकी है और तुम यह कह रहे हो।

मैंने कहा, यह कैसे?

उसने कहा, तुम्हारी बहन उस आदमी के पास जा चुकी हैं (और उनके दीन में दाख़िल हो चुकी हैं)

चुनांचे मैं गुस्से में भरा हुआ वापस लौटा और मैंने बहन का दरवाज़ा खटखटाया।

हुज़ूर सल्ल० की यह मुबारक आदत थी कि जब कोई ऐसा आदमी मुसलमान होता, जिसके पास कुछ न होता, तो ऐसे एक या दो आदमी ऐसे आदमी के हवाले कर देते जो उनका ख़र्च बरदाश्त कर ले।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा रज़ि० में से दो आदमी मेरे बहनोई के हवाले कर रखे थे। जब मैंने दरवाज़ा खटखटाया, तो उन्होंने अन्दर से कहा, कौन है?

मैंने कहा, उमर बिन ख़त्ताब! वे लोग अपने हाथ में किताब (यानी क़ुरआन) लिए हुए पढ़ रहे थे, जब उन्होंने मेरी आवाज़ सुनी तो खड़े होकर घर में छिप गए और वह सहीफ़ा (ग्रन्थ) वहीं रह गया। जब बहन ने दरवाज़ा खोला, तो मैंने कहा, ओ अपनी जान की दुश्मन! तू बेदीन हो गई है और एक चीज़ उठाकर मैंने उसके सर पर मार दी।

मेरी बहन रोने लगी और उसने कहा, ऐ ख़त्ताब के बेटे! जो तुझे करना है, कर ले। मैं तो मुसलमान हो चुकी हूं।

चुनांचे मैं अन्दर गया और तख़्त पर बैठ गया तो मैंने देखा कि दरवाज़े के बीच में एक सहीफ़ा पड़ा हुआ है। मैंने कहा, यह सहीफ़ा यहां कैसा?

तो मेरी बहन ने मुझसे कहा, ऐ ख़त्ताब के बेटे! अपने से इसे दूर रखो, क्योंकि तुम पाकी का गुस्ल नहीं करते हो और पाकी हासिल नहीं करते हो, और इसे सिर्फ़ पाक लोग हाथ लगा सकते हैं।

लेकिन मैं आग्रह करता रहा। आखिर मेरी बहन ने मुझे वह सहीफ़ा दे दिया। इसके बाद मुस्नद बज़्ज़ार में हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम लाने और उसके बाद उनके साथ पेश आने वाली घटनाओं का तफ़सीली ज़िक्र है।[1]

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि० ने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा तो तक्लीफ़ें उठा रहे हैं और वे ख़ुद वलीद बिन मुग़ीरह की अमान में आराम से रह रहे हैं तो उन्होंने (अपने दिल में) कहा, कि अल्लाह की क़सम ! मैं एक मुश्रिक आदमी की पनाह में आराम से रहूं और मेरे साथी और मेरे दीन वाले वह तक्लीफ़ और कष्ट उठाते रहें, जो मैं नहीं उठा रहा हूं। यह तो मेरी बहुत बड़ी कमी है।

चुनांचे वह वलीद बिन मुग़ीरह के पास गए और उससे कहा, ऐ अबू अब्दे शम्स ! तुमने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दिखाई। मैं तुम्हारी पनाह तुमको वापस करता हूं।

उसने कहा, ऐ मेरे भतीजे ! क्यों ? शायद मेरी क़ौम के किसी आदमी ने तुमको कोई तक्लीफ़ पहुंचाई है।

हज़रत उस्मान ने कहा, नहीं, लेकिन मैं अल्लाह की पनाह पर राज़ी हूं और इसके अलावा किसी और से पनाह नहीं लेना चाहता हूं।

वलीद ने कहा, तुम मस्जिद चलो और वहां सबके सामने मेरी पनाह एलान करके वापस करो, जैसे कि मैंने तुमको सबके सामने एलान करके अपनी पनाह में लिया था। चुनांचे वहां से निकलकर दोनों मस्जिद (काबा) गए। वहां लोगों से वलीद ने कहा, यह उस्मान हैं। मेरी पनाह मुझे वापस करने आए हैं।

फिर हज़रत उस्मान ने लोगों से कहा, यह सच कह रहे हैं। मैंने

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 64

इनको इंतिहाई वफ़ादार और अच्छा पनाह देने वाला पाया है, लेकिन अब मैं यह चाहता हूं कि अल्लाह के अलावा और किसी से पनाह न लूं। इसलिए मैंने उनकी पनाह उनको वापस कर दी है।

फिर हज़रत उस्मान वहां से वापस आ रहे थे कि (अरब के मशहूर शायर, कवि) लबीद बिन रबीआ बिन मालिक बिन किलाब क़ैसी क़ुरैश की एक मज्लिस में अपन शेर (पद) सुना रहे थे, तो हज़रत उस्मान भी उस मज्लिस में जाकर बैठ गए। लबीद ने यह शेर पढ़ा—

اَلَا كُلُّ شَيْءٍ مَّا خَلَا اللّٰهَ بَاطِلُ

'अल्लाह के अलावा हर चीज़ बातिल और बेकार हैं।'

हज़रत उस्मान ने तारीफ़ करते हुए कहा, तुमने ठीक कहा। फिर उसने दूसरी लाइन पढ़ी—

وَكُلُّ نَعِيْمٍ لَّا مَحَالَةَ زَائِلُ

'और हर नेमत ज़रूर ही (एक न एक दिन) ख़त्म हो जाएगी।' इस पर हज़रत उस्मान ने कहा, तुमने ग़लत कहा, जन्नत की नेमतें कभी ख़त्म न होंगी।

हज़रत उस्मान की यह बात सुनकर लबीद बिन रबीआ ने कहा, ऐ क़ुरैश के लोगो! तुम्हारी मज्लिस में बैठने वाले को कभी तक्लीफ़ नहीं पहुंचाई जाती थी। यह नई बात कब से तुममें पैदा हो गई? (यानी पहले तो कभी भी कोई मेरे शेर पर एतराज़ नहीं किया करता था, आज यह मेरे शेर को ग़लत कहने वाला कहां से आ गया है?)

तो लोगों में से एक आदमी ने कहा कि यह एक बेवक़ूफ़ आदमी है, बल्कि इसके साथ कुछ और भी बेवक़ूफ़ आदमी हैं, जिन्होंने हमारे दीन से अलगाव अपना लिया है, इसलिए तुम इसकी बातों से नाराज़ मत हो।

हज़रत उस्मान ने उस आदमी की बात का जवाब दिया, जिससे दोनों में बात बढ़ गई, तो उस आदमी ने खड़े होकर हज़रत उस्मान की आंख पर इस ज़ोर का थप्पड़ मारा कि उनकी आंख काली हो गई और वलीद बिन मुग़ीरह क़रीब ही था और जो कुछ हज़रत उस्मान के साथ

हुआ उसे देख रहा था। उसने कहा, ऐ मेरे भतीजे ! अल्लाह की क़सम ! (अगर तुम मेरी पनाह में रहते तो) तुम्हारी आंख को यह तक्लीफ़ कभी न पहुंचती। तुम तो एक महफ़ूज़ ज़िम्मेदारी में थे।

हज़रत उस्मान ने कहा, ऐ अबू अब्द शम्स ! हां तुम्हारी बात ठीक है, लेकिन अल्लाह की क़सम ! मेरा दिल चाह रहा है कि अल्लाह के दीन की वजह से मेरी तन्दुरुस्त आंख को भी वही तक्लीफ़ पहुंचे जो दूसरी को पहुंची है और मैं उस ज़ात की पनाह में हूं (जो बहुत इज़्ज़त वाले और बड़ी क़ुदरत वाले हैं।)

हज़रत उस्मान ने अपनी मुसीबत की मारी आंख के बारे में ये शेर कहे—

فَإِنْ تَكُ عَيْنِي فِي رِضَى الرَّبِّ نَالَهَا   يَدَا مُلْحِدٍ فِي الدِّيْنِ لَيْسَ بِمُهْتَدِ

'अगर मेरी आंख को अल्लाह की रज़ामंदी में एक मुलहिद, बेदीन और गुमराह इंसान के हाथों तक्लीफ़ पहुंची है (तो क्या हुआ ?)'

فَقَدْ عَوَّضَ الرَّحْمٰنُ مِنْهَا ثَوَابَهُ   وَمَنْ يُرْضِهِ الرَّحْمٰنُ يَا قَوْمِ يَسْعَدِ

'रहमान ने उस आंख के बदले में अपना सवाब अता फ़रमाया है और जिसे रहमान राज़ी करे, ऐ क़ौम ! वह बड़ा ख़ुशक़िस्मत है।'

فَإِنِّيْ وَإِنْ قُلْتُمْ غَوِيٌّ مُّضَلَّلٌ   سَفِيْهٌ عَلَى دِيْنِ الرَّسُوْلِ مُحَمَّدِ

'तुम अगरचे मेरे बारे में कहते हो कि मैं बहका हुआ, गुमराह किया हुआ और बेवक़ूफ़ हूं, लेकिन मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के दीन पर हूं।'

أُرِيْدُ بِذَاكَ اللّٰهَ وَالْحَقُّ دِيْنُنَا   عَلَى رَغْمِ مَنْ يَّبْغِيْ عَلَيْنَا وَيَعْتَدِيْ

'उससे मैंने अल्लाह (की रज़ामंदी) का इरादा किया है और हमारा दीन बिल्कुल हक़ है और यह बात मैं साफ़ कह रहा हूं, चाहे यह बात उस आदमी को कितनी बुरी लगे जो हम पर ज़ुल्म और ज़्यादती करता है।'

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन की आंख को जो तक्लीफ़ पहुंची, उसके बारे में हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० ने यह शेर कहे—

أَمِنْ تَذَكُّرِ دَهْرٍ غَيْرِ مَأْمُوْنٍ   أَصْبَحْتَ مُكْتَئِبًا تَبْكِيْ كَمَحْزُوْنٍ

'जो ज़माना अम्न वाला नहीं था, क्या तुम उसको याद करके रंजीदा हो रहे हो और ग़मगीन आदमी की तरह रो रहे हो।'

أَمِنْ تَذَكُّرِ أَقْوَامٍ ذَوِي سَفَهٍ ۝ يَغْشَوْنَ بِالظُّلْمِ مَنْ يَدْعُو إِلَى الدِّيْنِ

'क्या तुम उन बेवक़ूफ़ लोगों को याद करके रो रहे हो जो दीन की दावत देने वालों पर ज़ुल्म ढाते थे।'

لَا يَنْتَهُوْنَ عَنِ الْفَحْشَاءِ مَا سَلِمُوْا ۝ وَالْغَدْرُ فِيْهِمْ سَبِيْلٌ غَيْرُ مَأْمُوْنِ

'ये लोग जब तक सही सालिम रहें, फ़ह्श कामों से नहीं रुकते हैं और उन लोगों में ग़द्दारी की सिफ़त तो ग़ैर-महफ़ूज़ रास्ता है।'

أَلَا تَرَوْنَ أَقَلَّ اللّٰهُ خَيْرَهُمُ ۝ أَنَّا غَضِبْنَا لِعُثْمَانَ بْنِ مَظْعُوْنِ

'अल्लाह उनकी ख़ैर को कम कर दे। क्या तुम देखते नहीं हो कि हम उस्मान बिन मज़ऊन की वजह से ग़ुस्से में आए हैं।'

إِذْ يَلْطِمُوْنَ وَلَا يَخْشَوْنَ مُقْلَتَهُ ۝ طَعْنًا دِرَاكًا وَّضَرْبًا غَيْرَ مَأْفُوْنِ

'जबकि वे लोग उस्मान की आंख को निडर होकर थप्पड़ मार रहे थे, लगातार चौके मारते रहे और मारने में कोई कमी न थी।'

فَسَوْفَ يَجْزِيْهِمُ إِنْ لَّمْ يَمُتْ عَجَلًا ۝ كَيْلًا بِكَيْلٍ جَزَاءً غَيْرَ مَغْبُوْنِ

'अगर उस्मान जल्दी न भी मरे, तो भी अल्लाह उन लोगों को बराबर-बराबर पूरा-पूरा बदला देगा, जिसमें कोई घाटा न होगा।'[1]

इब्ने इस्हाक़ की रिवायत में यह भी है कि वलीद ने हज़रत उस्मान रज़ि॰ से कहा, ऐ मेरे भतीजे! अपनी पिछली पनाह में वापस आ जाओ।

उन्होंने कहा, नहीं।[2]

हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि॰ का सख़्तियां बरदाश्त करना

हज़रत मुहम्मद अब्दरी अपने बाप से नक़ल करते हैं कि हज़रत

1. हुलीया, भाग 1, पृ॰ 103
2. बिदाया, भाग 3, पृ॰ 93, हैसमी, भाग 6, पृ॰ 34

मुस्अब बिन उमैर रज़ि० मक्का के सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत नवजवान और भरपूर जवानी वाले इंसान थे और मक्का के जवानों में उनके सर के बाल सबसे ज़्यादा उम्दा थे। उनके मां-बाप उनसे बहुत मुहब्बत करते थे। उनकी मां बहुत ज़्यादा मालदार थीं। वह उनको सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत और सबसे ज़्यादा बारीक़ कपड़ा पहनाती थीं, और यह मक्का वालों में सबसे ज़्यादा इत्र इस्तेमाल करने वाले थे और यह हज़रमौत के बने हुए ख़ास जूते पहनते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनका तज़्किरा करते हुए फ़रमाते कि मक्का में मुस्अब बिन उमैर से ज़्यादा अच्छे बाल वाला और उनसे बारीक जोड़े वाला और उनसे ज़्यादा नाज़ व नेमत में पला हुआ कोई नहीं देखा।

उनको यह ख़बर पहुंची कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दारे अरक़म बिन अबी अरक़म में इस्लाम की दावत दे रहे हैं। यह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हो गए और उन्होंने हुज़ुर सल्ल० की तस्दीक़ की।

वहां से बाहर आए तो अपनी मां और क़ौम के डर से अपने इस्लाम को छिपाए रखा और छिप-छिपकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आते जाते रहते। एक दिन उनको उस्मान बिन तलहा ने नमाज़ पढ़ते हुए देख लिया और उसने जाकर उनकी मां और क़ौम को बता दिया।

उन लोगों ने उनको पकड़ कर क़ैद कर दिया। चुनांचे यह बराबर क़ैद में रहे, यहां तक कि पहली हिजरत के मौक़े पर हब्शा चले गए। फिर जब वहां से मुसलमान वापस आए, तो यह भी वापस आ गए। वापसी में उनका हाल बिल्कुल बदला हुआ था। बड़ी ख़स्ता हालत थी। (वह नाज़ व नेमत का असर ख़त्म हो चुका था)

यह देखकर उनकी मां ने उनको बुरा-भला कहना और मलामत करना छोड़ दिया।[1]

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 82

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना

हज़रत अबू राफ़ेअ बयान करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने रूम देश की ओर एक फ़ौज भेजी, जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा नामी एक सहाबी भी थे रज़ियल्लाहु अन्हु।

उनको रूमियों ने गिरफ़्तार कर लिया और फिर उनको अपने बादशाह के पास ले गए। (जिसका लक़ब ताग़िया था) और उसे बताया कि यह मुहम्मद सल्ल० के सहाबा में से हैं तो ताग़िया ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा से कहा, क्या तुम इसके लिए तैयार हो कि तुम (इस्लाम छोड़कर) ईसाई बन जाओ और मैं तुम्हें अपने मुल्क और सलतनत में शरीक कर लूं? (यानी आधा मुल्क मैं तुम्हें दे दूंगा)

हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया, अगर तुम मुझे मुहम्मद सल्ल० के दीन को पलक झपकने जितनी देर के लिए छोड़ देने पर अपना सारा मुल्क भी दे दो और अरबों का मुल्क भी दे दो, तो मैं फिर भी तैयार नहीं हूं।

तो उस ताग़िया ने कहा, फिर तो मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा।

उन्होंने कहा, तुम जो चाहे करो। चुनांचे उसके हुक्म देने पर उनको सूली पर लटका दिया गया। उसने तीरंदाज़ों से कहा कि इस तरह इन पर तीर चलाओ कि इनके हाथों और पैरों के पास से तीर गुज़रें (जिससे ये मरने न पाएं और डर जाएं) चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया। अब बादशाह ने उन पर ईसाई धर्म को फिर पेश किया, लेकिन यह इंकार करते रहे।

फिर उसके हुक्म देने पर उनको सूली से उतारा गया। फिर उस बादशाह ने एक देग मंगवाई, जिसमें पानी डालकर उसके नीचे आग जलाई गई और वह पानी गर्म होकर खौलने लगा। फिर उसने दो मुसलमान क़ैदी बुलवाए और उनमें से एक मुसलमान को (ज़िंदा ही) उस खौलती हुई देग में डाल दिया गया। (यह ख़ौफ़नाक मंज़र हज़रत

अब्दुल्लाह को दिखाकर) उस बादशाह ने उन पर फिर ईसाई धर्म पेश किया, लेकिन उन्होंने फिर इंकार किया।

अब बादशाह ने हुक्म दिया कि उनको (ज़िंदा) देग में डाल दिया जाए। अब सिपाही उनको (देग की तरफ़) ले जाने लगे, तो यह रो पड़े।

बादशाह को बताया गया कि अब तो वह रो पड़े हैं। वह समझा कि अब यह (मौत से) घबरा गए हैं। चुनांचे उसने कहा, उन्हें मेरे पास ले आओ। चुनांचे उनको वापस लाया गया। अब बादशाह ने फिर उन पर ईसाई धर्म को पेश किया। उन्होंने फिर इंकार किया।

इस पर बादशाह ने कहा कि अच्छा तुम क्यों रोए थे?

उन्होंने फ़रमाया, मैं इसलिए रोया था कि मैंने अपने दिल में कहा कि तुझे अब इस देग में डाला जाएगा और तू ख़त्म हो जाएगा। मैं तो यह चाहता हूं कि मेरे जिस्म में जितने बाल हैं, उतनी मेरे पास जानें हों और हर जान को अल्लाह के दीन की वजह से इस देग में डाला जाए। (मैं तो इस वजह से रो रहा था कि मेरे पास बस एक ही जान है।)

इस ताग़िया बादशाह ने (उनके इस जवाब से प्रभावित होकर) कहा, क्या हो सकता है कि तुम मेरे सर का बोसा ले लो और मैं तुम्हें छोड़ दूं?

तो हज़रत अब्दुल्लाह ने उससे कहा कि मेरे साथ बाक़ी तमाम मुसलमान क़ैदियों को भी छोड़ दोगे?

बादशाह ने कहा, हां, बाक़ी तमाम मुसलमान क़ैदियों को भी छोड़ दूंगा। हज़रत अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि मैंने अपने दिल में कहा, यह अल्लाह के दुश्मनों में से एक दुश्मन है। मैं इसके सर का बोसा लूंगा। यह मुझे और तमाम मुसलमान क़ैदियों को छोड़ देगा। (इससे तो सारे मुसलमानों का फ़ायदा हो जाएगा), मेरा दिल तो इस काम को नहीं चाह रहा है, लेकिन मैं मुसलमानों के फ़ायदे के लिए कर लेता हूं।) चलो, इसमें कोई हरज नहीं है।

चुनांचे बादशाह के क़रीब जाकर उन्होंने उसके सर का बोसा लिया। बादशाह ने सारे क़ैदी उनके हवाले कर दिए। यह उन सबको लेकर हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में हाजिर हुए और हज़रत उमर

रज़ि० को सारे हालात बताए। तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि हर मुसलमान पर ज़रूरी है कि वह अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा के सर का बोसा ले और सबसे पहले मैं लेता हूं।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने खड़े होकर उनके सर का बोसा लिया (ताकि अल्लाह के दुश्मन के चूमने की जो नागवारी हज़रत अब्दुल्लाह के दिल में थी, वह दूर हो जाए।)[1]

हुज़ूर सल्ल० के आम सहाबा किराम रज़ि० का सख़्तियां बरदाश्त करना

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से पूछा कि क्या मुश्रिक हुज़ूर सल्ल० के सहाबा को इतनी ज़्यादा तक्लीफ़ें पहुंचाते थे जिनकी वजह से सहाबा दीन के छोड़ने में माज़ूर क़रार दिए जाते थे ?

उन्होंने कहा, हां, अल्लाह की क़सम ! वे मुश्रिक मुसलमानों को ज़्यादा मारते भी और उनको भूखा और प्यासा भी रखते, यहां तक कि कमज़ोरी की वजह से मुसलमान सीधा न बैठ सकते और जो शिर्क भरे कलिमे वे मुसलमानों से कहलवाना चाहते, मुसलमान (मजबूर होकर जान बचाने के लिए) कह देते। वे मुश्रिक किसी मुसलमान से यों कहते कि लात व उज़्ज़ा भी अल्लाह के अलावा माबूद हैं या नहीं ?

वह मुसलमान कह देता, हां हैं। और गन्दगी का कीड़ा उनके पास से गुज़रता, तो वह किसी मुसलमान से कहते कि क्या अल्लाह के अलावा यह कीड़ा तेरा माबूद है या नहीं ? वह मुसलमान कह देता, हां, है।

चूंकि वे मुश्रिक मुसलमानों को बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ें पहुंचाते थे, इस वजह से मुसलमान अपनी जान बचाने के लिए यह कह दिया करते थे।[2]

हज़रत उबई बिन काब रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा मदीना आए और अंसार ने उनको अपने यहां रहने की

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 62, इसाबा, भाग 2, पृ० 297
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 59

जगह दी, तो सारे अरब वालों ने उन पर एक कमान से तीर चलाए (यानी सारे अरब के लोग उनके दुश्मन हो गए) तो मुसलमानों को रात भी हथियार लगाकर गुज़ारनी पड़ती और दिन को भी हर वक़्त हथियार लगाने पड़ते। मुसलमान आपस में एक दूसरे से कहते कि क्या हमारी ज़िंदगी में ऐसा वक़्त भी आएगा कि हम अम्न और इत्मीनान से रात गुज़ार दें और हमें अल्लाह के अलावा किसी का डर न हो? इस पर यह आयत उतरी—

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ

'वायदा कर लिया अल्लाह ने उन लोगों से जो तुममें ईमान लाए हैं और कहते हैं, उन्होंने नेक काम किए, अलबत्ता पीछे हाकिम कर देगा उनको मुल्क में।'[1]

और तबरानी में यह रिवायत इस तरह है कि हज़रत उबई बिन काब रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा मदीना आए और अंसार ने उनको अपने यहां रहने की जगह दी, तो तमाम अरब के लोगों ने उन पर एक ही कमान से तीर चलाए। (यानी सारे अरब वाले उनके दुश्मन हो गए) इस पर यह आयत उतरी[2]—

لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ

हज़रत अबू मूसा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग एक ग़ज़वे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ गए। (सवारियां इतनी कम थीं कि) हम छः आदमियों को सिर्फ़ एक ऊंट मिला, जिस पर हम बारी-बारी सवार होते थे। (पथरीली ज़मीन पर नंगे पांव चलने की वजह से) हमारे पैरों में छाले पड़ गए और हमारे पांव घिस गए और मेरे दोनों पैरों में भी छाले पड़ गए और मेरे नाख़ून झड़ गए, तो हम अपने पैरों पर पट्टियां बांधते थे। इसीलिए इस ग़ज़वे का नाम ज़ातुर्रिक़ाअ रखा गया, क्योंकि हमने अपने पैरों पर पट्टियां बांधी थीं।[3]

1. कंज़, भाग 1, पृ० 259
2. हैसमी भाग 7, पृ० 23
3. कंज़, भाग 2, पृ० 310

अबू नुऐम ने इस हदीस को रिवायत किया है और उसमें यह भी है कि अबू बुर्दा रावी कहते हैं कि इस हदीस को बयान करने के बाद हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं इस हदीस को बयान नहीं करना चाहता था यानी उन्होंने अपने इस अमल को ज़ाहिर करना पसन्द न फ़रमाया और यह फ़रमाया कि अल्लाह ही इसका बदला देंगे (क्योंकि अफ़ज़ल यही है कि अपने नेक अमल को लोगों से छिपा कर रखे। अलबत्ता अगर कोई दीनी मस्लहत हो तो फिर लोगों को बताए।[1]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 260

अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ दावत देने की वजह से भूख बरदाश्त करना

हुज़ूर सल्ल० का भूख बरदाश्त करना

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० फ़रमाते हैं क्या यह बात नहीं है कि तुम जितना चाहते हो, खाते-पीते हो? (यानी अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ खाते-पीते हो) मैंने तुम्हारे नबी करीम सल्ल० को इस हाल में देखा है कि उनको रद्दी और ख़राब खजूर इतनी भी नहीं मिलती थी कि जिससे वे अपन पेट भर लें।[1]

इमाम मुस्लिम ने हज़रत नोमान रज़ि० से रिवायत की है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों से (उनके ज़माने में) जो दुन्यवी जीतें उन्हें मिलीं, उनका ज़िक्र किया और फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को इस हाल में देखा है कि आपका सारा दिन भूख की बेचैनी में गुज़र जाता था, आपको इतनी-सी रद्दी खजूर भी नहीं मिलती थी, जिस्से आप अपना पेट भर लें।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं देख रहा हूं कि आप बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे हैं। आपको क्या हुआ? (क्योंकि अफ़ज़ल यह है कि नमाज़ खड़े होकर पढ़ी जाए और आप हमेशा अफ़ज़ल पर अमल करते हैं।)

आपने फ़रमाया, भूख की वजह से। यह सुनकर मैं रो पड़ा।

आपने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह! मत रो, क्योंकि जो आदमी दुनिया में सवाब की नीयत से भूख को बरदाश्त करेगा, क़ियामत के दिन उसके साथ हिसाब में सख़्ती नहीं की जाएगी।[3]

---

1. मुस्लिम, तिर्मिज़ी
2. तर्ग़ीब भाग 5, पृ० 154, कंज़, भाग 4, पृ० 40
3. कंज़, भाग 4, पृ० 41

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत अबूबक्र के घर वालों ने एक रात हमारे यहां बकरी की एक टांग भेजी। मैंने उस टांग को पकड़ा और हुज़ूर सल्ल० ने उसके टुकड़े किए या हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० ने पकड़ा और मैंने टुकड़े किए।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत आइशा रज़ि० जिससे भी यह हदीस फ़रमातीं,उससे यह भी फ़रमातीं कि यह काम चिराग़ के बग़ैर हुआ।[1]

तबरानी की रिवायत में यह भी है कि रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ि० से पूछा, ऐ उम्मुल मोमिनीन! (क्या यह काम) चिराग़ की रोशनी में हुआ था? उन्होंने कहा, अगर हमारे पास चिराग़ जलाने के लिए तेल होता तो हम उसे खा लेते।[2]

अबू याला ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर वालों पर कई चांद ऐसे गुज़र जाते थे कि न किसी घर में चिराग़ जलाया जाता और न आग। अगर उन्हें तेल मिल जाता तो उसे अपने जिस्म पर लगा लेते और अगर चर्बी मिल जाती तो उसे खा लेते।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर वालों पर एक चांद गुज़र जाता, फिर दूसरा चांद गुज़र जाता और हुज़ूर सल्ल० के किसी भी घर में कुछ आग न जलाई जाती, न रोटी के लिए और न सालन के लिए।

लोगों ने पूछा, ऐ अबू हुरैरह! फिर वह किस चीज़ पर गुज़ारा किया करते थे? फ़रमाया, दो काली चीज़ों पर यानी खजूर और पानी पर। हां, हुज़ूर सल्ल० के पड़ोसी अंसार थे, अल्लाह उन्हें बेहतरीन बदला दे, उनके पास दूध वाले जानवर होते थे, जिनका कुछ दूध वे हुज़ूर सल्ल० के घर वालों को भेज दिया करते थे।[4]

हज़रत उर्वः फ़रमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाया करती थीं, ऐ मेरे भांजे! अल्लाह की क़सम! हम एक चांद देखते, फिर दूसरा, फिर तीसरा। दो महीनों में तीन चांद देख लेते और हुज़ूर सल्ल० के घरों में

---

1. मुस्नद अहमद, 2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 155, कंज़, भाग 4, पृ० 38
3. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 154, हैसमी, भाग 10, पृ० 325, 4. हैसमी, भाग 10, पृ० 315

बिल्कुल आग न जलाई जाती।

मैंने कहा, ऐ ख़ाला जान ! फिर आप लोगों का गुज़ारा कैसे होता था ?

उन्होंने फ़रमाया, दो काली चीज़ों पर, खजूर और पानी पर। अलबत्ता हुज़ूर सल्ल० के पड़ोसी अंसार थे जिनके पास दूध वाले जानवर थे। वह उनका दूध हुज़ूर सल्ल० के पास भेज दिया करते, जो हुज़ूर सल्ल० हमें पिला दिया करते।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हम चालीस-चालीस दिन इस तरह गुज़ार लिया करती थीं कि हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में न आग जलातीं और न कुछ और। मैंने कहा, आप लोग किसी चीज़ पर गुज़ारा करते ? उन्होंने कहा, दो काली चीज़ों पर यानी खजूर और पानी पर और यह भी जब मयस्सर आ जाएं।[2]

हज़रत मसरूक़ कहते हैं कि मैं हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने मेरे लिए खाना मंगाया और फ़रमाया, मैं जब भी पेट भर लेती हूं और रोना चाहूं तो रो सकती हूं।

मैंने कहा, क्यों ? उन्होंने फ़रमाया, मुझे वह हाल याद आ जाता, जिस हाल पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दुनिया को छोड़ा था। अल्लाह की क़सम ! आपने कभी भी एक दिन में रोटी गोश्त दो बार पेट भरकर नहीं खाया।[3]

हज़रत इब्ने जरीर ने रिवायत किया है कि हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मदीना आने से लेकर इंतिक़ाल के वक़्त तक भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन दिन लगातार गेहूं की रोटी पेट भर कर नहीं खाई।

इब्ने जरीर ने ही हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत किया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर वालों ने हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल तक कभी भी दो दिन लगातार जौ की रोटी पेट भरकर नहीं खाई।

इब्ने जरीर ही ने हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत किया है कि

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 155, मज्मा, भाग 10, पृ० 315,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 38 3. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 148

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया और आपको दो काली चीज़ें यानी खजूर और पानी पेट भरकर नहीं मिलीं ।[1]

बैहक़ी की रिवायत में यह है कि हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी भी तीन दिन तक बराबर पेट भर कर नहीं खाया। अगर हम चाहते तो हम भी पेट भरकर खाते, लेकिन आप दूसरों को खिला दिया करते ।[2]

हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० अपनी जान से लोगों की मदद किया करते थे, यहां तक कि अपनी लुंगी में चमड़े का पैवन्द लगा लिया करते और आपने इंतिकाल तक कभी तीन दिन तक सुबह और शाम का खाना लगातार नहीं खाया ।[3]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने कभी मेज़ पर नहीं खाया और आपने कभी बारीक चपाती नहीं खाई, यहां तक कि आपका इंतिक़ाल हो गया और एक रिवायत में है कि आपने अपनी आंखों से कभी भी भुनी हुई बकरी नहीं देखी ।[4]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० और आपके घर वाले लगातार कई रातें भूखे ही गुज़ार देते। उन्हें रात का खाना न मिलता था और उनकी रोटी भी अक्सर जौ की होती थी ।[5]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कुछ लोगों के पास से गुज़रे, जिनके सामने भुनी हुई बकरी रखी हुई थी। उन लोगों ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० को बुलाया। उन्होंने खाने से इंकार कर दिया और फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० दुनिया से इस हाल में तशरीफ़ ले गए कि आपने कभी पेट भर कर जौ की रोटी नहीं खाई थी ।[6]

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 38
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 149
3. इब्ने अबिद-दुन्या
4. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 153
5. तिर्मिज़ी,
6. तिर्मिज़ी, बुख़ारी, तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 148, 151

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को जौ की रोटी का एक टुकड़ा पेश किया। आपने फ़रमाया, वह पहला खाना है जिसे तुम्हारे बाप तीन दिन के बाद खा रहे हैं।

तबरानी की रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह क्या है?

हज़रत फ़ातिमा ने अर्ज़ किया, यह टिकिया मैंने पकाई थी। मुझे यह अच्छा न लगा कि मैं उसे अकेले ही खा लूं, इसलिए मैं आपके पास यह टुकड़ा ले आई। फिर आपने वह इर्शाद फ़रमाया जो पहले गुज़रा है।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गर्म खाना लाया गया। आपने उसे खाया और खाने से फ़ारिग़ होकर आपने फ़रमाया, अल-हम्दु लिल्लाह! मेरे पेट में इतने दिनों से गर्म खाना नहीं गया था।[2]

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने बेसत से लेकर इंतिक़ाल तक कभी मैदा नहीं देखा।

हज़रत सह्ल से पूछा गया कि क्या हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में आप लोगों के पास छलनी होती थी?

तो उन्होंने कहा कि हुज़ूर सल्ल० ने अपनी बेसत से लेकर इंतिक़ाल तक कभी छलनी नहीं देखी थी।

तो उनसे पूछा गया कि आप लोग जौ का आटा बग़ैर छाने हुए कैसे खा लेते थे?

उन्होंने कहा कि हम जौ को पीस कर उस पर फूंक मारते। जो उड़ना होता, वह उड़ जाता, बाक़ी को हम गूंध लेते।[3]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 312
2. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 149
3. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 153

सल्लम के दस्तरख़्वान पर थोड़ी बहुत भी जौ की रोटी नहीं बचती थी।

तबरानी की एक रिवायत में यह है कि कभी ऐसा नहीं हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने से दस्तरख़्वान उठाया गया हो और उस पर खाना बचा हुआ हो।[1]

हज़रत अबू तलहा रज़ि० फ़रमाते हैं, हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भूख की शिकायत की और (भूख की वजह से हम लोगों ने अपने पेट पर एक-एक पत्थर बांध रखा था, चुनांचे) हमने कपड़ा हटा कर अपना-अपना पेट दिखाया, तो हर एक के पेट पर एक-एक पत्थर बंधा हुआ था, तो हुज़ूर सल्ल० ने अपने मुबारक पेट से कपड़ा हटाया तो आपके पेट पर दो पत्थर बंधे हुए थे।[2]

हज़रत इब्ने बुजैर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के सहाबा में से हैं। वह फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्ल० को सख़्त भूख लगी। हुज़ूर सल्ल० ने एक पत्थर उठा कर अपने पेट पर बांध लिया। फिर आपने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, बहुत से लोग दुनिया में ख़ूब खाना खा रहे हैं और अच्छी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, लेकिन ये लोग क़ियामत के दिन भूखे और नंगे होंगे, ग़ौर से सुनो, बहुत से लोग (दुनिया में अपनी ख़्वाहिशों पर चलकर ज़ाहिर में) अपना इकराम कर रहे हैं, लेकिन (हक़ीक़त में) वे अपनी तौहीन कर रहे हैं (कि क़ियामत के दिन वह रुसवा और ज़लील होंगे) ग़ौर से सुनो! बहुत से लोग (दुनिया में अल्लाह के हुक्मों पर चल कर ज़ाहिर में) अपनी तौहीन कर रहे हैं, लेकिन (हक़ीक़त में) वे अपना इकराम कर रहे हैं (कि क़ियामत के दिन उनको राहत और इज़्ज़त मिलेगी)।[3]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल० के (जाने के बाद) इस उम्मत में सबसे पहले जो मुसीबत पैदा हुई, वह पेट भरना है, क्योंकि जब कोई क़ौम पेट भरकर खाती है तो उनके बदन मोटे हो जाते

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 151, हैसमी, भाग 10, पृ० 313
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 156
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 422, इसाबा, भाग 2, पृ० 486

हैं और उनके दिल कमज़ोर हो जाते हैं और उनकी ख़्वाहिशें बेक़ाबू हो जाती हैं।[1]

हुज़ूर सल्ल० और आपके घर वालों और हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० की भूख

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० दोपहर के वक़्त सख़्त गर्मी में घर से मस्जिद की ओर चले।

हज़रत उमर रज़ि० ने सुना तो कहा, ऐ अबूबक्र! उस वक़्त आप घर से बाहर क्यों आए?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, सिर्फ़ इस वजह से आया हूं कि सख़्त भूख लगी हुई है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं भी सिर्फ़ इसी वजह से आया हूं। अभी ये दोनों आपस में बात कर ही रहे थे कि अचानक हुज़ूर सल्ल० घर से निकलकर इन दोनों के पास तशरीफ़ ले आए।

आपने पूछा, इस वक़्त तुम दोनों घर से बाहर क्यों आए?

दोनों ने कहा कि अल्लाह की क़सम! हम सिर्फ़ इस वजह से आए हैं कि हमें सख़्त भूख लगी हुई है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। मैं भी सिर्फ़ इसी वजह से घर से बाहर आया हूं। चलो तुम दोनों खड़े हो जाओ। चुनांचे ये तीनों तशरीफ़ ले गए और हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० के दरवाज़े पर पहुंच गए।

हज़रत अबू अय्यूब हुज़ूर सल्ल० के लिए खाना या दूध बचाकर रखा करते थे। उस दिन हुज़ूर सल्ल० को उनके यहां आने में देर हो गई और जिस वक़्त रोज़ाना आया करते थे, उस वक़्त न आ सके, तो हज़रत अबू अय्यूब वह खाना अपने घर वालों को खिला कर अपने खजूरों के बाग़ में काम करने चले गए थे।

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 420

जब ये लोग उनके दरवाज़े पर पहुंचे, तो उनकी बीवी ने बाहर निकल कर इन लोगों का स्वागत किया और कहा ख़ुश आमदीद हो, अल्लाह के नबी सल्ल० और उनके साथ आने वालों को।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, अबू अय्यूब कहां हैं?

हज़रत अबू अय्यूब अपने बाग़ में काम कर रहे थे। वहां से उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की आवाज़ को सुना तो दौड़ते हुए आए और कहा, ख़ुश आमदीद अल्लाह के नबी सल्ल० और उनके साथ आने वालों को। ऐ अल्लाह के नबी! यह वह वक़्त नहीं है, जिसमें आप आया करते थे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम ठीक कहते हो। चुनांचे वह गए और खजूर का एक गुच्छा तोड़ कर लाए, जिसमें कच्ची, पक्की और गद्दर, तीनों क़िस्म की खजूरें थीं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह तुमने क्या किया? हमारे लिए चुनकर सिर्फ़ सूखी खजूर लाते।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरा दिल यह चाहा कि आप कच्ची, पक्की और गद्दर तीनों क़िस्म की खजूरें खाएं और अभी आपके लिए मैं कोई जानवर भी ज़िब्ह करूंगा।

आपने फ़रमाया, अगर तुम ज़िब्ह करना ही चाहते हो तो दूध वाला जानवर ज़िब्ह न करना।

हज़रत अबू अय्यूब ने साल या साल से कम उम्र की बकरी का बच्चा ज़िब्ह किया और अपनी बीवी से कहा कि तुम हमारे लिए आटा गूंध कर रोटी पकाओ, क्योंकि तुम रोटी पकाना अच्छी तरह जानती हो। हज़रत अबू अय्यूब ने बकरी के उस बच्चे के आधे गोश्त का सालन बनाया और आधे को भून लिया। जब खाना तैयार हो गया और नबी करीम सल्ल० और आपके साथियों के सामने रखा गया तो आपने थोड़ा सा गोश्त रोटी पर रखकर हज़रत अबू अय्यूब से कहा, इसे हज़रत फ़ातिमा के पास पहुंचा दो, क्योंकि बहुत दिनों से उन्हें ऐसा खाना नहीं मिला है।

हज़रत अबू अय्यूब वह लेकर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के पास गए।

जब ये लोग खा चुके और सेर हो गए तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, रोटी और गोश्त और सूखी खजूर, तर खजूर और गद्दर खजूर और यह कहकर आपकी आंखों में आंसू आ गए और फिर यह फ़रमाया, क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, यही वे नेमतें हैं जिनके बारे में तुमसे क़ियामत के दिन पूछा जाएगा।

यह बात आपके सहाबा को बड़ी भारी मालूम हुई, तो आपने फ़रमाया, लेकिन जब तुम्हें ऐसा खाना मिले और तुम उसकी ओर हाथ बढ़ाने लगो तो बिस्मिल्लाह पढ़ा करो और जब तुम सेर हो जाओ, तो यह दुआ पढ़ो—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هُوَ اَشْبَعَنَا وَ اَنْعَمَ عَلَیْنَا فَاَفْضَلَ.

'अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हु-व अश बअना व अन-अ-म अलैना फ़-अफ़-ज़-ल'

तर्जुमा—'तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें सेर किया और हम पर इनाम फ़रमाया और हमें ख़ूब दिया।' तो यह दुआ उस खाने का बदला हो जाएगी (और अब इस खाने के बारे में क़ियामत के दिन सवाल नहीं किया जाएगा।)

जब आप वहां से उठे, तो हज़रत अबू अय्यूब को फ़रमाया कि कल हमारे पास आना। आपकी आदत यह थी कि जो भी आपके साथ भलाई करता, आप उसे उसका बदला देना पसन्द फ़रमाते।

हज़रत अबू अय्यूब ने हुज़ूर सल्ल० की यह बात न सुनी तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे कहा कि हुज़ूर सल्ल० तुम्हें कल अपने पास आने का हुक्म दे रहे हैं। चुनांचे वह अगले दिन हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए।

हुज़ूर सल्ल० ने उनको अपनी बांदी दे दी और फ़रमाया, ऐ अबू अय्यूब ! इसके साथ अच्छा सुलूक करना, क्योंकि यह जब तक हमारे पास रही है, हमने इसमें ख़ैर ही ख़ैर देखी है।

हज़रत अबू अय्यूब जब इस बांदी को हुज़ूर सल्ल० के यहां से ले आए, तो फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० की इस वसीयत की सबसे बेहतर

शक्ल यह है कि मैं उसे आज़ाद कर दूं। चुनांचे उसे आज़ाद कर दिया।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को फ़रमाते हुए सुना कि एक दिन हुज़ूर सल्ल० दोपहर के वक़्त घर से बाहर तशरीफ़ लाए, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० को आपने मस्जिद में पाया, तो आपने फ़रमाया, तुम इस वक़्त घर से बाहर क्यों आए?

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जिस वजह से आप आए हैं। फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० आ गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ इब्ने ख़त्ताब ! तुम घर से बाहर क्यों आए?

उन्होंने अर्ज़ किया, जिस वजह से आप दोनों आए हैं। फिर हज़रत उमर रज़ि० भी बैठ गए और हुज़ूर सल्ल० इन दोनों से बात करने लग गए।

फिर आपने फ़रमाया, क्या तुम दोनों में इतनी हिम्मत है कि खजूरों के उस बाग़ तक चले चलो। वहां तुम्हें खाना और पानी और साया मिल जाएगा। फिर आपने फ़रमाया, आओ, अबुल हैसम बिन तैहान अंसारी के घर चलते हैं। इसके बाद आगे लम्बी हदीस ज़िक्र की है।[2]

हाफ़िज़ मुंज़री ने भाग 5 पृ० 167 पर फ़रमाया है कि ज़ाहिर में यह क़िस्सा एक बार हज़रत अबुल हैसम के साथ पेश आया है और एक बार हज़रत अबू अय्यूब अंसारी के साथ।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० एक दिन उनके पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, मेरे दोनों बेटे हसन और हुसैन कहां हैं?

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा कि सुबह को हमारे घर में चखने के लिए भी कोई चीज़ न थी तो हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मैं इन दोनों को अपने साथ ले जाता हूं। क्योंकि मुझे डर है कि ये दोनों तुम्हारे पास (भूख की वजह से) रोते रहेंगे और तुम्हारे पास कोई चीज़ नहीं, चुनांचे वे

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 431
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 40

फ़्लां यहूदी के यहां (मज़दूरी के लिए) गए हैं।

हुज़ूर सल्ल० उनके पास तशरीफ़ ले गए। (आप जब वहां पहुंचे तो) देखा कि दोनों बच्चे एक हौज़ में खेल रहे हैं और उन दोनों के सामने कुछ खजूरें रखी हुई हैं। आपने फ़रमाया ऐ अली ! क्या गर्मी तेज़ होने से पहले तुम मेरे दोनों बेटों को घर नहीं वापस ले जा सकते ?

उन्होंने कहा, आज सुबह हमारे घर में कोई चीज़ नहीं थी, ऐ अल्लाह के रसूल ! आप थोड़ी देर तशरीफ़ रखें। मैं फ़ातिमा के लिए भी कुछ खजूरें जमा कर लूं। हुज़ूर सल्ल० वहां बैठ गए। थोड़ी देर में हज़रत फ़ातिमा के लिए भी कुछ खजूरें जमा हो गईं। हज़रत अली रज़ि० ने इन खजूरों को एक कपड़े में बांध लिया, फिर वह हुज़ूर सल्ल० के पास आए। फिर हुज़ूर सल्ल० ने एक बच्चे को उठाया, दूसरे को हज़रत अली रज़ि० ने उठाया, यहां तक कि दोनों को घर वापस ले आए।[1]

हज़रत अता रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे यह ख़बर पहुंची कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि कई दिन ऐसे गुज़रे कि न हमारे पास कोई चीज़ थी और न हुज़ूर सल्ल० के पास। मैं (घर से) बाहर निकला, तो मुझे रास्ते में एक दीनार पड़ा हुआ मिला। थोड़ी देर तो मैं सोचता रहा कि उठाऊं या न उठाऊं, लेकिन आख़िरकार मैंने उसे उठा लिया, क्योंकि (कई दिन के उपवास की वजह से) हम बड़ी मशक़्क़त में थे।

मैं उसे लेकर एक दुकान पर गया और उसका आटा ख़रीद कर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के पास लाया और मैंने कहा, इसे गूंध कर रोटी पकाओ। चुनांचे वह आटा गूंधने लगीं। (भूख की वजह से) उनकी कमज़ोरी का हाल यह था कि उनकी पेशानी के बाल (आटे के) बरतन से टकरा रहे थे।

फिर उन्होंने रोटी पकाई, फिर मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर सारा क़िस्सा सुनाया। आपने फ़रमाया, तुम इसे खा लो, क्योंकि यह वह रोज़ी है जो अल्लाह ने

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 171, हैसमी, भाग 10, पृ० 316

तुमको (ग़ैबी ख़ज़ाने से) अता फ़रमाई है।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन काब क़ुरज़ी बयान करते हैं कि हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने अपने आपको हुज़ूर सल्ल० के साथ इस हाल में देखा है कि मैं भूख की वजह से अपने पेट पर पत्थर बांधे हुए था और आज मेरा यह हाल है कि मेरे माल की ज़कात चालीस दीनार तक पहुंच गई है और एक रिवायत में यह है कि आज मेरी ज़कात चालीस हज़ार है।[2]

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० फ़रमाती हैं कि उनसे हुज़ूर सल्ल० ने (भूख की वजह से परेशान देखकर) फ़रमाया, तुम सब्र से काम लो, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद सल्ल० के घराने में सात दिन से कोई चीज़ नहीं है और तीन दिन तो उनकी किसी हांडी के नीचे आग नहीं जली है। अल्लाह की क़सम! अगर मैं अल्लाह से यह सवाल करूं कि वह तिहामा के तमाम पहाड़ों को सोने का बना दे, तो यक़ीनन अल्लाह ज़रूर बना देंगे।[3]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० की भूख

हज़रत साद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के साथ मक्का में हम लोगों ने बड़ी तंगी से और बड़ी तक्लीफ़ों के साथ ज़िंदगी गुज़ारी है। जब तक्लीफ़ें आने लगीं तो हमने उन पर सब्र किया और हमें तंगी और तक्लीफ़ बरदाश्त करने की आदत पड़ गई और हमने ख़ुशी-ख़ुशी उन पर सब्र किया।

मैंने अपने आपको हुज़ूर सल्ल० के साथ मक्का में इस हाल में देखा है कि मैं एक रात पेशाब करने निकला। जहां मैं पेशाब कर रहा था, वहां से मैंने किसी चीज़ की खड़खड़ाहट की आवाज़ सुनी। मैंने ग़ौर से देखा तो वह ऊंट की खाल का एक टुकड़ा था, जिसे मैंने उठा लिया, फिर उसे धोकर जलाया, फिर उसे दो पत्थरों के बीच रखकर पीस

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 328, अबू दाऊद, भाग 1, पृ० 240
2. मजमउज़ ज़वाइद, भाग 9, पृ० 123
3. कंज़, भाग 4, पृ० 42

कर पावडर सा बना दिया। फिर उसे फांक कर मैंने पानी पी लिया और मैंने तीन दिन इसी पर गुज़ारे।[1]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अरबों में सबसे पहले मैंने अल्लाह के रास्ते में तीर चलाया है। हम लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ ग़ज़्वों में जाया करते थे। हमारा खाना सिर्फ़ बबूल और कीकर के पत्ते हुआ करते थे, जिसका नतीजा यह हुआ कि हम लोग बकरियों की तरह मेंगनियां किया करते थे, जो अलग-अलग होतीं। (सूखे होने की वजह से) उनमें चिपकाहट न होती।[2]

हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद और उनके दो साथियों की भूख

हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार मैं और मेरे दो साथी इस हाल में आए कि भूख और फ़क्र व फ़ाक़ा की वजह से हमारे कानों की सुनने की ताक़त और आंखों की देखने की ताक़त बिल्कुल खत्म होने लगी थी। हम लोग अपने आपको हुज़ूर सल्ल० के सहाबा पर पेश करने लगे (कि हमें अपने यहां से ले जाकर खिलाएं-पिलाएं) लेकिन हमें किसी ने क़ुबूल न किया। (इसलिए कि हम सबका हाल एक जैसा था) यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० हमें अपने घर ले आए।

आपके घरवालों की सिर्फ़ तीन बकरियां थीं, जिनका वे दूध निकाला करते थे। आप हमारे दर्मियान दूध तक़्सीम किया करते थे और हम लोग हुज़ूर सल्ल० का हिस्सा उठा कर रख दिया करते थे। आप जब तशरीफ़ लाते, तो इतनी आवाज़ से सलाम करते कि जागने वाला सुन ले और सोने वाले की आंख न खुले। एक दिन मुझे शैतान ने कहा कि क्या ही अच्छी बात हो, अगर तुम (हुज़ूर के हिस्से का) यह घूंट भर (दूध भी) पी लो, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० अंसार के पास चले

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 93
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 179, हुलीया, भाग 1, पृ० 18, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 99

जाएंगे, तो वह हुज़ूर सल्ल० का कुछ न कुछ सत्कार कर ही देंगे।

शैतान मेरे पीछे पड़ा रहा, यहां तक कि मैंने हुज़ूर सल्ल० के हिस्से का दूध पी लिया। जब मैं पी चुका तो शैतान मुझे शर्मिन्दा करने लगा और कहने लगा, यह तुमने क्या किया? मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आएंगे और जब अपने हिस्से का दूध न पाएंगे, तो तेरे लिए बद-दुआ करेंगे तो तू बर्बाद हो जाएगा।

मेरे दोनों साथी तो अपने हिस्से का दूध पीकर सो गए और मुझे नींद न आई, मैंने एक चादर ओढ़ी हुई थी, (जो इतनी छोटी थी कि) अगर मैं उससे सर ढकता, तो पैर खुल जाता और पैर ढकता तो सर खुल जाता।

इतने में हुज़ूर सल्ल० अपने मामूल के मुताबिक़ तशरीफ़ लाए और कुछ देर आपने नमाज़ पढ़ी। फिर आपने अपने पीने के बरतन पर नज़र डाली। जब आपको उसमें कुछ नज़र न आया, तो आपने अपने हाथ उठाए। मैंने अपने दिल में कहा कि अब हुज़ूर सल्ल० मेरे लिए बद-दुआ करेंगे और मैं बरबाद हो जाऊंगा। लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! जो मुझे खिलाए, तू उसे खिला और जो मुझे पिलाए, तू उसे पिला।

यह सुनते ही (उम्मीद के ख़िलाफ़ हुज़ूर सल्ल० के दुआ करने से मुतास्सिर होकर) मैंने छुरी उठाई और अपनी चादर ली और बकरियों की तरफ़ चला और उनको टटोलने लगा कि उनमें से कौन-सी मोटी है, ताकि मैं उसे हुज़ूर सल्ल० के लिए ज़िब्ह करूं, लेकिन मैं यह देखकर हैरान हो गया था कि तमाम बकरियों के थन दूध से भरे हुए थे, (हालांकि थोड़ी देर पहले उनका दूध निकाला था) हुज़ूर सल्ल० के घरवाले जिस बरतन में दूध निकालना पसन्द करते थे, मैंने वह बरतन लिया और मैंने उसमें इतना दूध निकाला कि उसके ऊपर झाग आ गई।

फिर मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर वह दूध पेश किया, आपने उसे पिया और फिर मुझे दिया। मैंने उसमें से पिया, मैंने फिर आपको पेश किया। आपने उसमें से फिर पिया, फिर

मुझे दे दिया। मैंने उसमें से दोबारा पिया (चूंकि यह सब मेरी उम्मीद के ख़िलाफ़ हुआ था, इसलिए मुझे बहुत ज़्यादा ख़ुशी हुई।) और फिर मैं (ख़ुशी के मारे) हंसने लगा और मैं हंसी के मारे लोट-पोट हो गया और ज़मीन की ओर झुक गया।

आपने मुझे फ़रमाया, ऐ मिक़्दाद! यह तेरी हरकतों में से एक हरकत है, तो मैंने जो कुछ किया था, वह मैं आपको सुनाने लगा। (सुनकर) आपने फ़रमाया। यह (आदत के ख़िलाफ़ उस वक़्त बकरियों से दूध मिल जाना तो) सिर्फ़ अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से ही हुआ है। अगर तुम अपने दोनों साथियों को भी उठा लेते और वह भी इस दूध में से कुछ पी लेते (तो यह ज़्यादा अच्छा था)।

मैंने अर्ज़ किया, क़सम है उस ज़ात की, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है। जब आपने यह दूध पिया और आपका बचा हुआ दूध मुझे मिल गया तो अब मुझे किसी की परवाह नहीं है, किसी को मिले या न मिले।[1] (यह उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के तबर्रुक के मिल जाने पर ख़ुशी ज़ाहिर करने के लिए कहा है।)

अबू नुऐम ने तारिक़ के ज़रिए से यह रिवायत यों बयान की है कि हज़रत मिक़्दाद रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हम लोग मदीना पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० ने हमें दस-दस करके हर घर पर बांट दिया। मैं उन दस मुसलमानों में से था जो हुज़ूर सल्ल० के हिस्से में आए थे और हमारे पास सिर्फ़ एक बकरी थी, जिसका दूध हम आपस में बांट लिया करते थे।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की भूख

हज़रत मुजाहिद बयान करते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाया करते थे कि (अल्लाह की क़सम) मैं भूख की वजह से अपने जिगर को ज़मीन से चिमटा दिया करता था और भूख की वजह से

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 173
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 174

अपने पेट पर पत्थर बांध लिया करता था। एक दिन मैं उस रास्ते पर बैठ गया जिस रास्ते से ये लोग आते जाते थे।

चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० वहां से गुज़रे। मैंने उनसे किताबुल्लाह की एक आयत के बारे में पूछा। मैंने तो सिर्फ़ इसलिए पूछा था ताकि यह मुझे अपने साथ घर ले जाएं, लेकिन उन्होंने ऐसा न किया। (शायद उनका ज़ेहन इस तरफ़ न गया हो या उनको अपने घर का हाल मालूम हो कि वहां भी कुछ नहीं है)

फिर हज़रत उमर रज़ि० वहां से गुज़रे। मैंने उनसे भी अल्लाह की किताब की एक आयत के बारे में पूछा। मैंने तो सिर्फ़ इसलिए पूछा था ताकि वह मुझे अपने साथ अपने घर ले जाएं, लेकिन उन्होंने ऐसा न किया।

इतने में हज़रत अबुल क़ासिम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वहां से गुज़र हुआ। आपने मेरे चेहरे का मुरझाया हाल देखकर मेरे दिल की बात पहचान ली और फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह रज़ि० !

मैंने कहा, हाज़िर हूं ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !

आपने फ़रमाया, मेरे साथ आओ। (मैं साथ हो लिया। हुज़ूर सल्ल० घर तशरीफ़ ले गए।) मैंने घर में अन्दर आने की इजाज़त चाही। आपने मुझे इजाज़त दे दी। मैंने घर में दूध का एक प्याला रखा हुआ पाया। आपने (अपने घरवालों से) पूछा, यह दूध तुम्हारे पास कहां से आया है?

उन्होंने बताया कि फ़्लां ने (या कहा फ़्लां के घरवालों ने) हमें हदिया में भेजा है।

आपने फ़रमाया, ऐ अबूहुर ! (हुज़ूर सल्ल० ने प्यार व मुहब्बत की वजह से उनके नाम अबू हुरैरह को छोटा करके अबूहुर कर दिया।)

मैंने कहा, हाज़िर हूं ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !

आपने फ़रमाया, जाओ सुफ़्फ़ा वालों को मेरे पास बुला लाओ।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि अहले सुफ़्फ़ा इस्लाम के मेहमान थे, जिनका न कोई घर था और न उनके पास माल था। जब

हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में कहीं से हदिया आता तो ख़ुद भी इस्तेमाल करते और अहले सुफ़्फ़ा को भी दे देते और जब आपके पास सदक़ा आता, तो ख़ुद इस्तेमाल न फ़रमाते, बल्कि वह सारे का सारा अह्ले सुफ़्फ़ा को भेज देते और उसमें से ख़ुद कुछ न इस्तेमाल फ़रमाते।

अह्ले सुफ़्फ़ा को बुलाने से मुझे बड़ी परेशानी हुई, क्योंकि मुझे उम्मीद थी कि इस दूध में से मुझे इतना मिल जाएगा कि जिससे बाक़ी एक दिन रात आसानी से गुज़र जाएगा और फिर मैं ही क़ासिद बनकर जा रहा हूं। जब वे लोग आएंगे तो मैं ही उनको (दूध पीने को) दूंगा, तो मेरे लिए तो दूध कुछ नहीं बचेगा, लेकिन अल्लाह और उसके रसूल की माने बग़ैर चारा भी नहीं था। चुनांचे मैं गया और उनको बुला लाया।

उन्होंने आकर (हुज़ूर सल्ल० से अन्दर आने की) इजाज़त मांगी। आपने उनको इजाज़त दी। वे घर के अंदर आकर अपनी जगहों पर बैठ गए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अबूहुर! (यह प्याला) लो और उनको देना शुरू करो। मैंने प्याला लेकर उनको देना शुरू किया। हर आदमी प्याला लेता और इतना पीता कि जी भर जाता। फिर मुझे प्याला वापस करता, यहां तक कि मैंने सबको पिला दिया और यह प्याला मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश किया।

आपने प्याला अपने मुबारक हाथ में लिया और अभी उसमें दूध बाक़ी था। फिर आपने अपना सर उठाया और मुझे देखकर मुस्कराए और फ़रमाया, ऐ अबूहुर!

मैंने कहा, हाज़िर हूं ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०!

आपने फ़रमाया, बस मैं और तुम बाक़ी रह गए।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपने सच फ़रमाया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लो अब तुम बैठ जाओ और तुम पियो। चुनांचे मैं बैठ गया और मैंने ख़ूब दूध पिया।

आपने फ़रमाया, और पियो, मैंने और पिया। आप मुझसे बार-बार फ़रमाते रहे कि और पियो और मैं और पीता रहा, यहां तक कि मैंने

कहा, क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको हक़ देकर भेजा है। अब मैं अपने में इस दूध के लिए कोई रास्ता नहीं पाता हूं, यानी और दूध पीने की गुंजाइश नहीं है।

आपने फ़रमाया, अच्छा प्याला मुझे दे दो। मैंने आपको प्याला दिया। आपने वह बचा हुआ दूध पी लिया।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार मुझ पर तीन दिन ऐसे गुज़रे कि मुझे खाने को कुछ न मिला। मैं घर से सुफ़्फ़ा जाने के इरादे से चला, लेकिन मैं (रास्ते में कमज़ोरी की वजह से) गिरने लगा, मुझे (देखकर) बच्चे कहते कि अबू हुरैरह को जुनून हो गया है। मैं पुकार कर कहता, नहीं, तुम मजनून हो, यहां तक कि हम सुफ़्फ़ा पहुंच गए।

वहां मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में दो प्याले सरीद लाया गया है और आपने अह्ले सुफ़्फ़ा को बुला रखा था और वे सरीद खा रहे हैं। मैं गरदन ऊंची करके देखने लगा, ताकि हुज़ूर सल्ल० मुझे बुला लें (मैं इस कोशिश में था) कि अह्ले सुफ़्फ़ा (खाने से फ़ारिग़ होकर) खड़े हो गए और प्याले के किनारों में थोड़ा सा खाना बचा हुआ था, इस सबको हुज़ूर सल्ल० ने जमा फ़रमाया, तो एक लुक़्मा बन गया, जिसे आपने अपनी उंगलियों पर रखकर मुझसे फ़रमाया, बिस्मिल्लाह पढ़कर खाओ। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं उस लुक़्मे में से खाता रहा यहां तक कि मेरा पेट भर गया (और लुक़्मा ख़त्म न हुआ।)[2]

हज़रत इब्ने सीरीन रह० बयान करते हैं कि हम लोग हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० के पास (बैठे हुए) थे। आपने कत्तान के गेरुवे रंग के दो कपड़े पहने हुए थे। (कत्तान अलसी का पौधा है जिससे कपड़े तैयार होते हैं) आपने कत्तान के एक कपड़े में नाक साफ़ करके कहा, वाह! वाह! आज अबू हुरैरह कत्तान के कपड़े में नाक साफ़ कर रहा है, हालांकि मैंने अपने आपको इस हाल में देखा है कि मैं हुज़ूर सल्ल० के

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 101
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 176

मिंबर और हज़रत आइशा रज़ि० के हुजरे के बीच बेहोश पड़ा रहता था। गुज़रने वाले मुझे मजनून समझकर अपने पांव से मेरी गरदन दबाते थे। (उस ज़माने में जुनून का इलाज गरदन को पांव से दबाने से किया जाता था) हालांकि यह जुनून का असर नहीं था, बल्कि मैं भूख की ज़्यादती की वजह से बेहोश हो जाता था।[1]

इब्ने साद की रिवायत में यह भी है कि मैंने अपने आपको इस हाल में देखा है कि मैं अफ़्फ़ान के बेटे और ग़ज़वान की बेटी के यहां मज़दूरी पर काम किया करता था और मेरी मज़दूरी यह थी कि मुझे खाना मिलेगा और (सफ़र में) अपनी बारी पर सवार होने का मौक़ा मिलेगा। जब वे लोग सवार हो जाते थे तो मैं सवारी को पीछे से हांकता और जब वे कहीं ठहरते तो मैं उनकी ख़िदमत करता।

एक दिन ग़ज़वान की बेटी ने मुझसे कहा, तुम नंगे पांव सवारी के पास आया करो और खड़े-खड़े उस पर सवार हुआ करो। (यानी हम तुम्हारी वजह से देर नहीं कर सकते, न इसका इन्तिज़ार कर सकते हैं कि तुम पास आकर जूती उतारो और फिर सवार हो, और न तुम्हें सवार करने के लिए सवारी को बिठा सकते हैं और अब अल्लाह ने ग़ज़वान की बेटी से मेरी शादी करा दी है, तो मैंने भी उसको (मज़ाक़ के तौर पर उसकी बात याद कराते हुए) कहा, तू नंगे पांव सवारी के पास आया कर और खड़े-खड़े उस पर सवार हुआ कर।

इससे पहले इब्ने साद ने सलीम बिन हय्यान से यह रिवायत की है कि वह फ़रमाते हैं कि मैंने अपने बाप से सुना, वह फ़रमा रहे थे कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० को फ़रमाते हुए सुना कि मैंने यतीमी की हालत में परवरिश पाई और मिस्कीनी की हालत में हिजरत की और मैं बुसरा बिन्त ग़ज़वान के यहां मज़दूरी पर काम करता था, जिसके बदले में मुझे खाना और बारी पर सवारी पर सवार होना मिलता था। वे लोग जब कहीं उतरते, तो मैं उनकी खिदमत करता और जब वे सवार हो जाते तो हुदी पढ़ता। फिर अल्लाह ने बुसरा से ही मेरी शादी करा दी। तमाम

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 397, हुलीया, भाग 1, पृ० 378, इब्ने साद भाग 4, पृ० 53

तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने दीन को तमाम कामों के ठीक होने का ज़रिया बनाया और अबू हुरैरह रज़ि० को इमाम बनाया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ फ़रमाते हैं, मैं हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० के साथ मदीना में एक साल रहा। एक दिन हम लोग हज़रत आइशा रज़ि० के हुजरे के पास बैठ हुए थे। आपने मुझसे कहा कि हम लोगों ने अपने आपको इस हाल में देखा है कि हमारे कपड़े सिर्फ़ खुरदरी और मोटी चादरें हुआ करते थे और कई-कई दिन बीत जाते थे और हमें इतना भी खाना नहीं मिलता था कि जिससे हम अपनी कमर सीधी कर सकें और हमारा पेट अन्दर से पिचका हुआ होता था। उस पर पत्थर रखकर हम उसे कपड़े से बांध लिया करते थे, ताकि हमारी कमर सीधी रहे।[1]

इमाम अहमद रह० हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया क नबी करीम सल्ल० के ज़माने में हमारा खाना सिर्फ़ खजूर और पानी था। अल्लाह की क़सम! हमें तुम्हारी यह गन्दुम नज़र भी नहीं आती थी और हमें पता भी नहीं था कि यह गन्दुम क्या चीज़ होती है? और हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में हमारा यह नाथ देहातों वाली ऊनी चादर था।[2]

हज़रत अस्मा बिन्त अबी बक्र रज़ि० की भूख

हज़रत अस्मा बिन्त अबी बक्र रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने बनू नज़ीर के इलाक़े में हज़रत अबू सलमा और हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को एक ज़मीन जागीर के तौर पर दी।

एक बार मैं उस ज़मीन में थी और (मेरे ख़ाविंद) हज़रत ज़ुबैर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के साथ सफ़र में गए हुए थे और हमारा पड़ोसी एक यहूदी था। उसने एक बकरी ज़िब्ह की, जिसका गोश्त पकाया गया और उसकी ख़ुशबू मुझे आने लगी। (उसकी ख़ुशबू सूंघने से) मेरे दिल में

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 177, हैसमी, भाग 10, पृ० 321
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 321

(गोश्त खाने की) ऐसी ज़बरदस्त ख़्वाहिश पैदा हुई कि इससे पहले ऐसी ख़्वाहिश कभी पैदा नहीं हुई थी और मैं अपनी बेटी ख़दीजा के साथ उम्मीद से थी।

मुझसे सब्र न हो सका और मैं उस यहूदी की बीवी के पास आग लेने इस ख़्याल से गई कि वह मुझको कुछ गोश्त खिला देगी, हालांकि मुझे आग की कोई ज़रूरत न थी। जब मैंने वहां जाकर ख़ुशबू सूंघी और अपनी आंखों से गोश्त देख लिया तो गोश्त की ख़्वाहिश और बढ़ गई, तो जो आग मैं उससे लेकर अपने घर आई थी, उसे बुझा दिया और फिर दोबारा मैं उसके घर आग लेने गई और फिर तीसरी बार गई। (यह यहूदी औरत हर बार मुझे आग दे देती और गोश्त न देती)

चुनांचे मैं बैठ कर रोने लगी और अल्लाह से दुआ करने लगी कि इतने में उसका शौहर आ गया और उसने पूछा, क्या तुम्हारे पास कोई आया था?

उसकी बीवी ने कहा, हां, यह अरबी औरत आग लेने आई थी।

तो उस यहूदी ने कहा, जब तक तुम इस गोश्त में से कुछ उस अरबी औरत के पास भेज नहीं दोगी, उस वक़्त तक मैं इस गोश्त में से कुछ नहीं खाऊंगा। चुनांचे उसने चुल्लू भर गोश्त का सालन भेजा, तो उस वक़्त धरती पर उससे ज़्यादा पसन्दीदा खाना मेरे लिए और कोई न था।[1]

नबी करीम सल्ल० के आम सहाबा किराम रज़ि० की भूख

नबी करीम सल्ल० के सहाबी हज़रत अबू जिहाद से उनके बेटे ने कहा, ऐ अब्बा जान! आप लोगों ने हुज़ूर सल्ल० को देखा और उनकी सोहबत में रहे। अल्लाह की क़सम! अगर मैं हुज़ूर सल्ल० को देख लेता तो मैं यह करता और वह करता।

तो उनसे उनके वालिद अबू जिहाद ने कहा, अल्लाह से डरो और सीधे-सीधे चलते रहे। क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 284, हैसमी, भाग 8, पृ० 166

है, हम लोगों ने ग़ज़वा ख़ंदक़ की रात अपना यह हाल देखा कि आप यह फ़रमा रहे थे कि जो जाकर इन (दुश्मनों) की ख़बर लेकर हमारे पास आएगा, अल्लाह क़ियामत के दिन उसे मेरा साथी बना देंगे।

चूंकि मुसलमानों को भूख बहुत ज़्यादा लगी हुई थी और सर्दी बहुत ज़्यादा पड़ रही थी, इसलिए इस काम के लिए कोई भी खड़ा न हुआ, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० ने तीसरी बार नाम लेकर पुकारा, ऐ हुज़ैफ़ा![1] आगे सर्दी बरदाश्त करने के बाब में हज़रत हुज़ैफ़ा की लम्बी हदीस इसी मतलब के साथ आएगी।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा के चेहरों में भूख की निशानी देखकर फ़रमाया, तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, बहुत जल्द तुम पर ऐसा ज़माना आएगा कि तुम्हें सुबह को भी सरीद का एक प्याला खाने को मिलेगा और इसी तरह शाम को भी।

सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उस वक़्त तो हम बेहतर होंगे?

आपने फ़रमाया, नहीं आज तुम उस दिन से बेहतर हो।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के कुछ सहाबा पर तीन दिन बराबर ऐसे गुज़र जाते कि उन्हें खाने की कोई चीज़ न मिलती, तो वे खाल को भून कर उसे खा लिया करते और जब कोई चीज़ न मिलती तो पत्थर लेकर पेट पर बांध लेते।[3]

हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० जब लोगों को नमाज़ पढ़ाते तो बहुत-से सुफ़्फ़ा वाले भूख की कमज़ोरी की वजह से नमाज़ में गिर जाते और उन्हें देखकर देहाती लोग कहते कि इनको जुनून हो गया है। जब हुज़ूर सल्ल० नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाते कि (इस भूख पर) तुम्हें अल्लाह के यहां बदला मिलेगा। अगर यह तुम्हें मालूम हो जाए, तो तुम यह चाहने

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 35
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 422
3. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 179

लगो कि यह फ़क्र व फ़ाक़ा और बढ़ जाए।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के सात-सात सहाबा रज़ि० सिर्फ़ एक खजूर चूस कर गुज़ारा करते और गिरे हुए पत्ते खाया करते थे, जिसकी वजह से उनके जबड़े सूज जाते थे।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्ल० के सात सहाबा को तेज़ भूख लगी, हुज़ूर सल्ल० ने मुझे सात खजूरें दीं। हर आदमी के लिए एक खजूर।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन मुझे तेज़ भूख लगी। भूख की वजह से मैं घर से मस्जिद की ओर चला। मुझे हुज़ूर सल्ल० के कुछ सहाबा मिले। उन्होंने कहा, ऐ अबू हुरैरह! इस वक़्त तुम किस वजह से बाहर आए हो?

मैंने कहा, सिर्फ़ भूख की वजह से।

उन्होंने कहा, हम भी अल्लाह की क़सम! सिर्फ़ भूख की वजह से बाहर आए हैं। हम वहां से उठे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए। आपने फ़रमाया, तुम लोग इस वक़्त किस लिए आए हो?

हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! भूख की वजह से। हुज़ूर सल्ल० ने एक तबाक़ मंगवाया, जिसमें खजूरें थीं। आपने हर आदमी को दो-दो खजूरें दीं और फ़रमाया कि ये दो खजूरें खा लो और ऊपर से पानी पी लो। इनशाअल्लाह! ये आज के दिन के लिए काफ़ी हो जाएंगी।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने एक खजूर खाली और दूसरी खजूर अपनी लुंगी में रख ली। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह! तुमने यह खजूर क्यों रखी है?

मैंने कहा, मैंने अपनी मां के लिए रखी है।

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 176, हुलीया, भाग 1, पृ० 339
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 322
3. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 178

आपने फ़रमाया, तुम इसे खा लो। हम तुम्हें तुम्हारी मां के लिए दो खजूरें और दे देंगे। चुनांचे आपने मां के लिए दो खजूरें और दीं।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ख़ंदक़ की तरफ़ तशरीफ़ ले गए तो मुहाजिरीन और अंसार सुबह-सुबह सख़्त सर्दी में ख़ंदक़ खोद रहे थे और उनके पास ग़ुलाम नहीं थे जो उनको यह काम कर देते। हुज़ूर सल्ल० ने उनकी थकन और भूख को देखकर यह फ़रमाया—

اَللّٰهُمَّ اِنَّ الْعَيْشَ عَيْشُ الْاٰخِرَهْ   وَاغْفِرِ الْاَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَهْ

'ऐ अल्लाह! असल ज़िंदगी तो आख़िरत की ज़िंदगी है, इसलिए आप अंसार और मुहाजिरीन की मग़फ़िरत फ़रमा दें।'

सहाबा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० के जवाब में यह शेर (पद) पढ़ा—

نَحْنُ الَّذِيْنَ بَايَعُوْا مُحَمَّدًا   عَلَى الْجِهَادِ مَا بَقِيْنَا اَبَدًا

'हमने मुहम्मद सल्ल० से इस बात पर बैअत की है कि जब तक दुनिया में रहेंगे, जिहाद करते रहेंगे।'[2]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुहाजिरीन और अंसार मदीना के आस-पास ख़ंदक़ खोद रहे थे और अपनी कमर पर मिट्टी उठा कर बाहर ला रहे थे और यह कहते जाते थे—

نَحْنُ الَّذِيْنَ بَايَعُوْا مُحَمَّدًا   عَلَى الْاِسْلَامِ مَا بَقِيْنَا اَبَدًا

'हम लोगों ने मुहम्मद सल्ल० पर इसलिए बैअत की है कि जब तक दुनिया में रहेंगे इस्लाम पर चलते रहेंगे।'

हुज़ूर सल्ल० उनके जवाब में यह फ़रमाते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنَّهٗ لَا خَيْرَ اِلَّا خَيْرُ الْاٰخِرَهْ   فَبَارِكْ فِي الْاَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَهْ

'ऐ अल्लाह! असल भलाई तो आख़िरत की भलाई है। इसलिए मुहाजिरीन और अंसार में बरकत अता फ़रमा।'

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि दो मुट्ठी जौ उस पिघली हुई

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 329
2. बुख़ारी,

चर्बी में इन लोगों के लिए तैयार कए जाते, जिसका मज़ा बदला हुआ होता और फिर उनके सामने रख दिए जाते और ये लोग भूखे होते (इसलिए खा जाते), हालांकि यह खाना बदमज़ा, हलक़ में अटकने वाला और कुछ बदबूदार होता।[1]

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम ग़ज़वा ख़ंदक़ के दिन (ख़ंदक़) खोद रहे थे कि एक कड़ी और बड़ी चट्टान सामने आ गई। सहाबा ने हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में आकर अर्ज़ किया कि ख़ंदक़ में एक कड़ी चट्टान सामने आ गई है, (जिस पर कुदाल असर ही नहीं करती)।

आपने फ़रमाया, अच्छा, मैं ख़ुद (ख़ंदक़ में) उतरता हूं। फिर आप खड़े हुए और आपके पेट पर एक पत्थर बंधा हुआ था और हम सब ने तीन दिन से कोई चीज़ न चखी थी।[2] आगे लम्बी हदीस ज़िक्र की है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि० ने एक ख़ंदक़ खोदी और उन्होंने भूख की वजह से अपने पेट पर पत्थर बांधे हुए थे।[3] आगे लम्बी हदीस ज़िक्र की है। इन दोनों हदीसों को हम सहाबा किराम की ग़ैबी ताईद के बाब में ज़िक्र करेंगे और इब्ने अबी शैबा ने हज़रत जाबिर की इसी हदीस का ज़िक्र किया है और उसके आख़िर में यह है कि उन्होंने मुझे बताया कि उस दिन सहाबा किराम की तायदाद आठ सौ थी।[4]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ अपने बाप हज़रत आमिर रज़ि० से नक़ल करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी-कभी हमें सरीया में (जिहाद के लिए) भेज देते और हमारा रास्ते का सामान सिर्फ़ खजूर की एक ज़ंबील होती और पहले हमारा अमीर एक-एक मुट्ठी खजूर हम लोगों में बांट देता, फिर आख़िर में एक-एक खजूर

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 95
2. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 588, बिदाया, भाग 4, पृ० 97
3. बिदाया, भाग 4, पृ० 100
4. बिदाया, भाग 4, पृ० 98

बांटता, मैंने अपने बाप से कहा कि एक खजूर क्या काम देती थी?

उन्होंने कहा, ऐ बेटे! यह न कहो। जब हमें एक खजूर भी मिलनी बन्द हो गई, तब हमें एक खजूर की ज़रूरत का अन्दाज़ा हुआ।[1]

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने एक बार हमें कुरैश की एक तिजारती क़ाफ़िले के मुक़ाबले के लिए भेजा और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० को हमारा अमीर बनाया और आपने हमें खजूरों की एक ज़ंबील तोशे के तौर पर दिया। आपको इस ज़ंबील के अलावा हमारे लिए और कोई तोशा न मिला। चुनांचे हज़रत अबू उबैदा हमें एक-एक खजूर देते।

हज़रत जाबिर के शागिर्द कहते हैं कि मैंने कहा कि आप लोग एक खजूर का क्या किया करते थे?

उन्होंने कहा, हम एक खजूर को ऐसे चूसते थे, जैसे बच्चा (दूध) चूसता है और ऊपर से हम पानी पी लिया करते थे। तो वह एक खजूर हमें सुबह से रात तक के लिए काफ़ी हो जाती थी। हम अपनी लाठियों से पत्ते झाड़ते और उन्हें पानी में भिगोकर खा लिया करते। आगे पूरी हदीस का ज़िक्र किया है।[2]

इमाम मालिक और बुख़ारी व मुस्लिम और दूसरे लोगों ने इस हदीस को रिवायत किया है और उनकी रिवायत में यह है कि इस सफ़र में सहाबा किराम की तायदाद तीन सौ थी।

तबरानी ने अपनी रिवायत में छः सौ से कुछ ज़्यादा की तायदाद लिखी है।[3]

इमाम मालिक की रिवायत में यह है कि हज़रत जाबिर के शागिर्द कहते हैं कि मैंने पूछा, एक खजूर क्या काम देती होगी?

उन्होंने फ़रमाया कि जब वह भी ख़त्म हो गई, तो हमें उसकी क़द्र मालूम हुई।

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 179, हैसमी, भाग 10, पृ० 319
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 276
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 322

हज़रत अबू ख़ुनैस ग़िफ़ारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि वह ग़ज़वा तिहामा में हुज़ूर सल्ल० के साथ थे। जब हम उस्फ़ान पहुंचे तो सहाबा ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! भूख ने हमें कमज़ोर कर दिया, आप हमें इजाज़त दें, हम सवारी के जानवर (ज़िब्ह करके) खा लें।

आपने फ़रमाया, बहुत अच्छा, (खा लो) फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को इस बात का पता चला। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी ! यह आपने क्या किया ? आपने लोगों को सवारी के जानवर ज़िब्ह करने का हुक्म दे दिया (इस तरह तो सवारियां ख़त्म हो जाएंगी) तो लोग फिर किस पर सवार होंगे ?

आपने फ़रमाया, ऐ इब्ने ख़त्ताब ! फिर तुम्हारी क्या राय है ?

उन्होंने कहा कि मेरी राय यह है कि आप लोगों से यह कहें कि उनके तोशे में जितना बचा हुआ है, वह सब आपकी ख़िदमत में ले आएं। फिर आप इस सारे को एक बरतन में जमा करें और आप फिर मुसलमानों के लिए अल्लाह से (बरकत की) दुआ करें। चुनांचे आपने लोगों को इसका हुक्म दिया।

सबने अपने बचे हुए तोशे को एक बरतन में डाल दिया, फिर आपने मुसलमानों के लिए दुआ फ़रमाई, फिर आपने फ़रमाया, तुम अपने-अपने बरतन ले आओ। चुनांचे हर आदमी ने उसमें से अपना बरतन भर लिया। आगे पूरी हदीस को ज़िक्र किया है।[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग एक ग़ज़वा में हुज़ूर सल्ल० के साथ थे। हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! दुश्मन सामने आ गया है (इनके पास खाने का ख़ूब सामान है, इस वजह से) उनके पेट तो भरे हुए हैं और हम लोग भूखे हैं।

इस पर अंसार ने कहा, क्या हम अपने ऊंट ज़िब्ह करके लोगों को न खिला दें ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिसके पास जो कुछ बचा हुआ खाना है,

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 303

वह उसे ले आए। चुनांचे लोग लाने लगे, कोई एक मुद्द आता, कोई साअ लाता, (एक मुद्द 14 छटांक का होता है और एक साअ 3½ सेर का) कोई कम लाता, कोई ज़्यादा, तो सारी फ़ौज से बीस साअ से कुछ ज़्यादा खाने का सामान जमा हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने उसके एक तरफ़ बैठ कर बरकत की दुआ फ़रमाई, फिर आपने फ़रमाया कि (इसमें से आराम से) लेते जाओ और लूटमार न मचाओ।

चुनांचे हर आदमी अपनी ज़ंबील में और अपनी बोरी में डालकर ले जाने लगा और उन्होंने अपने तमाम बरतन भर लिए, यहां तक कि कुछ लोगों ने तो अपनी आस्तीन में गिरह लगाकर उसमें भर लिया; (इस ज़माने में आस्तीन बड़ी होती थी) जब सब ले जा चुकते तो खाना ज्यों का त्यों उसी तरह था, (इसमें कोई कमी न आई थी) फिर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और मैं अल्लाह का रसूल हूं। जो बन्दा भी सच्चे दिल से इस कलिमे को पढ़ेगा, और उसे लेकर अल्लाह के यहां हाज़िर होगा, अल्लाह आग की गर्मी से उसे ज़रूर बचाएंगे।[1]

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमारे क़बीले की एक औरत अपने खेत में चुक़न्दर लगाया करती थीं। जब जुमा का दिन आता तो वह चुक़न्दर की जड़ें निकाल कर एक हांडी में डाल देती और फिर एक मुट्ठी जौ पीस कर उसमें डाल देती तो चुक़न्दर की जड़ें गोश्त वाली हड्डी का काम देतीं। हम जुमा की नमाज़ पढ़कर उस औरत के पास जाते और उसे सलाम करते। वह औरत यह खाना हमारे सामने रखती। हमें उसके इस खाने की वजह से जुमा के दिन का बड़ा शौक़ होता।

और एक रिवायत में यह है कि उसमें चर्बी और चिकनाई बिल्कुल न होती और हमें जुमा के दिन की बड़ी ख़ुशी होती।[2]

हज़रत इब्ने अबी औफ़ा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमने हुज़ूर सल्ल० के

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 304
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 173

साथ सात ग़ज़्वे ऐसे किए जिनमें हम टिड्डी खाया करते थे।[1]

हज़रत अबू बरज़ा रज़ि० फ़रमाते हैं, हम एक ग़ज़्वे में थे। हमारा कुछ मुश्रिकों से मुक़ाबला हुआ। हमने उनको हरा दिया, वे सब वहां से भाग गए। हमने उनकी जगह पर क़ब्ज़ा कर लिया तो वहां राख पर रोटी पकाने के तंदूर भी थे। हम उनके तंदूर की पकी हुई रोटियां खाने लगे। हमने जाहिलियत में यह सुना था कि जो (गन्दुम की) रोटी खाएगा, वह मोटा हो जाएगा। चुनांचे जब हमने ये रोटियां खा लीं तो हम में से हर आदमी अपने बाज़ुओं को देखने लगा कि क्या वह मोटा हो गया है?[2]

इमाम हैसमी ने फ़रमाया है कि एक रिवायत में यह है कि हम लोग ग़ज़्वा ख़ैबर के दिन हुज़ूर सल्ल० के साथ थे। हमारा दुश्मन मैदा की रोटियां छोड़कर भाग गया।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हमने ख़ैबर जीत लिया तो कुछ यहूदियों के पास से हमारा गुज़र हुआ जो अपने तन्दूर की राख में रोटियां पका रहे थे। हमने उनको वहां से भगाया। वे रोटियां छोड़कर भाग गए। फिर हमने उन रोटियों को आपस में बांटा। मुझे भी रोटी का एक टुकड़ा मिला, जिसका कुछ हिस्सा जला हुआ था। मैंने यह सुन रखा था कि जो (गन्दुम यानी गेहूं की) रोटी खाएगा, वह मोटा हो जाएगा। चुनांचे रोटी खाकर मैं अपने बाज़ुओं को देखने लगा कि क्या मैं मोटा हो गया हूं।[4]

अल्लाह की ओर बुलाने की वजह से सख़्त प्यास बरदाश्त करना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से लोगों ने अर्ज़ किया कि हमें मुश्किल घड़ी (इससे मुराद ग़ज़्वा

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 36, हुलीया भाग 7, पृ० 242
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 177
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 324
4. हुलीया, भाग 6, पृ० 317

तबूक है) का कुछ हाल बताएं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हम लोग कड़ी गर्मी में ग़ज़्वा तबूक के लिए निकले। एक जगह पहुंचकर हमें इतनी तेज़ प्यास लगी कि हम समझने लगे कि हमारी गरदनें टूट जाएंगी। (यानी हम मर जाएंगे) हम में से कुछ का तो यह हाल था कि वह कजावा की खोज में जाता, तो वापसी में उसका इतना बुरा हाल हो जाता कि वह यों समझने लगता कि उसकी गरदन टूट जाएगी और कुछ लोगों ने अपने ऊंट ज़िब्ह किए और उसकी ओझड़ी में से फूस निकाल कर उसे निचोड़ा और उसे पिया और उस बाक़ी फूस को अपने पेट और जिगर पर रख लिया (ताकि बाहर से कुछ ठंडक अन्दर पहुंच जाए)।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह का आम तरीक़ा यह है कि आपकी दुआ को ज़रूर कुबूल फ़रमाते हैं। इसलिए आप हमारे लिए दुआ फरमाएं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम चाहते हो कि मैं दुआ करूं ?

उन्होंने कहा, जी हां। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने अपने दोनों हाथ आसमान की ओर उठाए (और अल्लाह से दुआ मांगी) और अभी हाथ नीचे नहीं किए थे कि आसमान से बादल आ गए। पहले बूंदा बांदी हुई, फिर मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। सहाबा किराम रज़ि० ने जितने बरतन साथ थे, वे सारे भर लिए। फिर (बारिश बन्द होने के बाद) हम देखने गए (कि कहां तक वर्षा हुई है) तो देखा कि जहां तक लश्कर था, सिर्फ़ वहां तक बारिश हुई है। फ़ौज के बाहर बारिश नहीं हुई।[1]

हज़रत हबीब बिन अबी साबित रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत हारिस बिन हिशाम, और हज़रत इक्रिमा बिन अबी जह्ल और हज़रत अय्याश बिन अबी रबीआ रज़ि० यर्मूक की लड़ाई के दिन (लड़ाई के लिए) निकले (और इतना लड़े कि) घावों से चूर होकर गिर पड़े। हज़रत हारिस बिन हिशाम ने पीने के लिए पानी मांगा (जब उनके पास पानी आ गया

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 9, इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 396, हैसमी, भाग 6, पृ० 194

तो) हज़रत इक्रिमा ने उनको देखा (तो पानी लाने वाले से) हज़रत हारिस ने कहा, यह पानी इक्रिमा को दे दो।

अभी हज़रत इक्रिमा ने पानी लिया ही था कि उनकी ओर हज़रत अय्याश ने देखा, तो हज़रत इक्रिमा ने कहा, यह पानी अय्याश को दे दो। अभी पानी हज़रत अय्याश तक पहुंचा नहीं था कि उनकी रूह परवाज़ कर गई। फिर पानी लेकर हज़रत इक्रिमा और हज़रत हारिस के पास गए तो इन दोनों का भी इन्तिक़ाल हो चुका था।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़ीया रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू अम्र अंसारी बद्र की लड़ाई में और दूसरी अक़बा की बैअत में और उहुद की लड़ाई में शरीक हुए थे। मैंने उनको (लड़ाई के एक मैदान में) देखा कि उन्होंने रोज़ा रखा हुआ है और वह प्यास से बेचैन हो रहे हैं और वह अपने ग़ुलाम से कह रहे हैं, तेरा भला हो, मुझे ढाल दे दो। ग़ुलाम ने उनको ढाल दी। फिर उन्होंने तीर फेंका, (जिसे कमज़ोरी की वजह से) ज़ोर से न फेंक सके और तीन तीर चलाए, फिर फ़रमाया, मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि जिसने अल्लाह के रास्ते में तीर चलाया वह तीर निशाने तक पहुंचे या न पहुंचे, तीर उसके लिए क़ियामत के दिन नूर होगा। चुनांचे सूरज डूबने से पहले वह शहीद हो गए।[2]

एक रिवायत में है कि उन्होंने ग़ुलाम से कहा, मुझ पर पानी छिड़को। चुनांचे उसने उन पर पानी छिड़का।

अल्लाह की ओर दावत देने की वजह से सख़्त सर्दी बरदाश्त करना

हज़रत अबू रैहाना रज़ि० फ़रमाते हैं कि वह एक ग़ज़वे में हुज़ूर सल्ल० के साथ थे, फ़रमाते हैं कि एक रात हम लोग एक ऊंची जगह

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 310, मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 242, इस्तीआब, भाग 3, पृ०150
2. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 404, हाकिम, भाग 3, पृ० 395

ठहरे, वहां इतनी कड़ी सर्दी पड़ी कि मैंने देखा कि लोग गढ़ा खोद कर उसमें बैठ गए और अपने ऊपर अपनी ढाल डाल ली।

जब हुज़ूर सल्ल० ने यह हालत देखी तो आपने फ़रमाया, आज रात हमारा पहरा कौन देगा? मैं उसके लिए ऐसी दुआ करूंगा जो उसके हक़ में ज़रूर क़ुबूल होगी।

एक अंसारी ने खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं (पहरा दूंगा)

आपने फ़रमाया, तुम कौन हो?

उसने कहा, फ़्लां।

आपने फ़रमाया, क़रीब आ जाओ। चुनांचे वह अंसारी क़रीब आए। हुज़ूर सल्ल० ने उनके कपड़े का एक किनारा पकड़कर दुआ करनी शुरू की। जब मैंने (वह दुआ) सुनी तो मैंने कहा, मैं भी तैयार हूं।

आपने फ़रमाया, तुम कौन हो?

मैंने कहा, अबू रैहाना।

आपने मेरे लिए भी दुआ फ़रमाई, लेकिन मेरे साथी से कम। फिर आपने फ़रमाया, जो आंख अल्लाह के रास्ते में पहरा दे, उस आंख पर आग हराम कर दी गई है।[1] और इसी बाब से मुताल्लिक़ हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० की हदीस भी है जो बहुत जल्द आ रही है।

अल्लाह की ओर दावत देने की वजह से कपड़ों की कमी बरदाश्त करना

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत हमज़ा रज़ि० को इस हाल में देखा कि हमें उनके कफ़न के लिए एक चादर के अलावा और कोई कपड़ा न मिला (और वह भी इतनी छोटी थी) कि जब हम उससे उनके पांव ढकते तो उनका सर खुल जाता, और जब सर ढकते तो पांव खुल जाते। आख़िर हमने चादर से उनके सर को ढक

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 156, हैसमी, भाग 5, पृ० 287, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 149

दिया और उनके पैरों पर इज़्ख़िर घास डाल दी।[1]

हज़रत शिफ़ा बिन्त अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं एक बार हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में कुछ मांगने के लिए आई तो आप (देने से) माज़रत करने लगे कि (आपके पास कुछ था ही नहीं) और मैं (ताल्लुक की वजह से) आपसे कुछ नाराज़ होने लगी। इतने में नमाज़ का वक़्त आ गया, मैं वहां से निकलकर अपनी बेटी के पास गई जो शुरहबील बिन हसना रज़ि० के निकाह में थी। मैंने शुरहबील को घर में पाया। मैंने कहा, नमाज़ का वक़्त हो गया है और तुम अभी तक घर में हो और मैं उसे मलामत करने लगी।

उसने कहा, ऐ ख़ाला जान! आप मुझे मलामत न करें। मेरे पास एक ही कपड़ा था जिसे हुज़ूर सल्ल० उधार ले गए हैं, तो मैंने कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, मैं आज आपसे नाराज़ हो रही थी और आपकी यह हालत है (कि कपड़ा भी दूसरे से मांग कर पहना हुआ है) और मुझे मालूम नहीं।

फिर हज़रत शुरहबील ने कहा, वह भी एक ऐसी क़मीज थी, जिसमें हमने पैवंद लगा रखा था।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्ल० बैठे हुए थे और आपके पास हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० भी थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने एक चोगा पहना हुआ था, जिसके गरेबान में अपने सीने पर (बदन के बजाए) कांटे लगा रखे थे कि इतने में हज़रत जिब्रील अलै० तशरीफ़ लाए और हुज़ूर सल्ल० को अल्लाह का सलाम पहुंचाया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या बात है कि मैं देख रहा हूं कि हज़रत अबूबक्र ने चोगा पहन रखा है, जिसके गरेबान में (बदन के बजाए) कांटे लगा रखे थे?

आपने फ़रमाया, ऐ जिब्रील! अबूबक्र ने अपना सारा माल मक्का

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 170
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 396, कंज़, भाग 4, पृ० 41, इसाबा, भाग 4, पृ० 342, इसाबा, भाग 2, पृ० 171, मुस्तदरक भाग 4, पृ० 58

की जीत से पहले ही मुझ पर (यानी मेरे दीन पर) ख़र्च कर दिया। अब उनके पास इतना भी नहीं बचा कि वे बटन लगा सकें।

हज़रत जिब्रील ने कहा, आप अबूबक्र को अल्लाह का सलाम पहुंचा दें और उनसे फ़रमाएं, कि तुम्हारा रब तुमसे पूछ रहा है कि तुम अपने इस फ़क्र में मुझसे राज़ी हो या नाराज़?

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ अबूबक्र ! यह जिब्रील हैं जो तुम्हें अल्लाह का सलाम कह रहे हैं और अल्लाह पूछ रहे हैं कि तुम अपने इस फ़क्र में मुझसे राज़ी हो या नाराज़?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० यह सुनकर रो पड़े और कहने लगे, क्या मैं अपने रब से नाराज़ हो सकता हूं? मैं अपने रब से (इस हाल में भी) राज़ी हूं। मैं अपने रब से राज़ी हूं।[1]

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने मुहम्मद सल्ल० की बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से शादी की और (तंगदस्ती की वजह से यह हाल था कि) मेरे और उनके पास मेंढे की खाल के अलावा और कोई बिस्तर न था, जिस पर रात को हम सो जाते थे और दिन में हम उस पर पानी लादने वाले ऊंट को चारा खिलाते थे और हज़रत फ़ातिमा के अलावा मेरे पास कोई ख़ादिम भी नहीं था।[2]

हज़रत अबू बुरदा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझसे मेरे वालिद (हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि०) ने कहा, अगर तुम हमें बारिश होने के बाद हुज़ूर सल्ल० के पास देखते तो तुम्हें हमारे कपड़ों की बू भेड़ जैसी लगती, (क्योंकि हमारे अक्सर कपड़े भेड़ की ऊन के होते थे।)[3]

इब्ने साद इस हदीस को हज़रत अबू बुरदा रज़ि० से इस तरह नक़ल करते हैं कि हज़रत अबू बुरदा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझसे मेरे बाप हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने फ़रपाया, ऐ मेरे बेटे ! अगर तुम हमें बारिश होने के बाद हुज़ूर सल्ल० के साथ देखते तो तुम हमारे ऊनी कपड़ों से

---

1. हुलीया, भाग 7, पृ० 105, कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 353
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 133
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 394

भेड़ जैसी बू महसूस करते।[1]

इसी तरह तबरानी ने हज़रत अबू मूसा अशअरी से यह हदीस रिवायत की है और उसमें और आगे का मज़्मून यह भी है कि हमारे कपड़े ऊन के होते थे और खाने के लिए सिर्फ़ दो काली चीज़ें होती थीं, यानी खजूर और पानी।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने सत्तर अहले सुफ़्फ़ा को इस हाल में देखा है कि इनमें से किसी के पास भी बड़ी चादर न थी, या तो लुंगी थी या कम्बल था (या छोटी चादर थी), जिसे उन्होंने अपनी गरदन में बांध रखा था, किसी की लुंगी आधी पिंडुली तक होती और किसी के टख़ने के क़रीब तक और वह लुंगी को हाथ से पकड़ कर रखते, ताकि उनका सतर नज़र न आ जाए।[3]

हज़रत वासिला बिन असक़अ रज़ि० फ़रमाते हैं, मैं अह्ले सुफ़्फ़ा में से था। हम में से किसी के पास भी पूरे कपड़े नहीं थे और हमारे जिस्मों पर मैल और ग़ुबार इतना होता था कि जब हमें पसीना आता था, तो सारे जिस्म पर मैल और गुबार की धारियां पड़ जाती थीं।[4]

हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िदमत में एक आदमी आया और हज़रत आइशा के पास उनकी एक बांदी बैठी हुई थी, जिसने पांच दिरहम वाली क़मीज़ पहन रखी थी। हज़रत आइशा ने उस आदमी से कहा, ज़रा मेरी इस बांदी की ओर नज़र उठा कर देखो कि यह इस क़मीज़ को घर में भी पहनने के लिए राज़ी नहीं, हालांकि हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में मेरे पास ऐसी ही एक क़मीज़ थी, तो मदीना में जिस औरत को भी (शादी के लिए) सजाया जाता था, वह आदमी भेजकर मुझसे यह क़मीज़ उधार ले लिया करती थी।[5]

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 80
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 325
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 397, हुलीया भाग 1, पृ० 341
4. अबू नुऐम,
5. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 165

अल्लाह की ओर दावत देने की वजह से बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ बरदाश्त करना

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० के भतीजे हज़रत अब्दुल अज़ीज़ कहते हैं कि एक बार हज़रत हुज़ैफ़ा ने उन लड़ाइयों का ज़िक्र किया, जिनमें मुसलमान हुज़ूर सल्ल० के साथ शरीक थे, तो पास बैठने वालों ने कहा, अगर हम इन लड़ाइयों में शरीक होते, तो हम यह करते और वह करते।

हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहा, इसकी तमन्ना न करो। हमने अपने आपको लैलतुल अहज़ाब में (ग़ज़वा ख़ंदक़ के मौक़े पर) इस हाल में देखा है कि हम लोग सफ़ें बनाए बैठे हुए थे और अबू सुफ़ियान और उसके साथ के तमाम गिरोह मदीना से बाहर हमारे ऊपर (चढ़ाई किए हुए) थे और बनू क़ुरैज़ा के यहूदी हमारे नीचे मदीना के अन्दर थे, जिनसे हमें अपने घरवालों के बारे में सख़्त ख़तरा था (कि वह हमारे घरवालों को अकेले देखकर मार न दें)

लैलतुल अहज़ाब से ज़्यादा अंधेरे वाली और ज़्यादा आंधी वाली रात हमने कभी नहीं देखी थी। इतनी तेज़ हवा थी कि उसमें से बिजली की गरज की तरह आवाज़ आ रही थी और अंधेरा इतना ज़्यादा था कि किसी को अपने हाथ की उंगली नज़र न आती थी।

मुनाफ़िक़ हुज़ूर सल्ल० से (मदीना जाने की) इजाज़त मांगने लगे और कहने लगे, हमारे घर खुले पड़े हैं। (यानी ग़ैर महफ़ूज़ हैं) हालांकि वह खुले पड़े हुए नहीं थे। आपसे जो भी इजाज़त मांगता, आप उसे इजाज़त देते। इजाज़त मिलने पर वे चुपके-चुपके खिसकते जा रहे थे।

हमारी तायदाद लगभग तीन सौ थी। हुज़ूर सल्ल० हम में से एक-एक आदमी के पास तशरीफ़ लाए, यहां तक कि आप मेरे पास तशरीफ़ लाए और मेरे पास न दुश्मन से बचने का कोई सामान था और न सर्दी से बचने का। सिर्फ़ मेरी बीवी की एक ऊनी चादर थी, जो मुश्किल से मेरे घुटने तक पहुंचती थी, इससे आगे नहीं जाती थी।

जब आप मेरे पास तशरीफ़ लाए, तो मैं घुटनों के बल बैठा हुआ

था। आपने फ़रमाया, यह कौन है?

मैंने कहा, हुज़ैफ़ा।

आपने फ़रमाया, हुज़ैफ़ा?

चूंकि मैं खड़ा नहीं होना चाहता था, इस वजह से मैं ज़मीन से चिमट गया और मैंने कहा, जी हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फिर आख़िर मैं (हुज़ूर सल्ल० को अपने पास खड़ा देखकर) खड़ा हो ही गया।

आपने फ़रमाया, दुश्मन में कोई बात होनेवाली है, तुम जाकर उनकी ख़बर लेकर मेरे पास आओ। फ़रमाते हैं, उस वक़्त मुझे सबसे ज़्यादा डर लग रहा था और सबसे ज़्यादा सर्दी लग रही थी, (लेकिन इर्शाद के पूरा करने में) मैं चल पड़ा, आपने मेरे लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! इसकी आगे से, पीछे से, दाएं से, बाएं से, ऊपर से, नीचे से, हर ओर से हिफ़ाज़त फ़रमा। अल्लाह की क़सम ! मुझको जितना डर लग रहा था और जितनी सर्दी लग रही थी, वह सब (आपके दुआ फ़रमाते ही) एकदम ख़त्म हो गई और मुझे न डर महसूस हो रहा था और न सर्दी।

जब मैं वहां से चलने लगा, तो आपने फ़रमाया, ऐ हुज़ैफ़ा ! मेरे पास वापस आने तक उनमें कोई हरकत न करना।

हज़रत हुज़ैफ़ा फ़रमाते हैं, मैं चल दिया। जब मैं दुश्मनों की फ़ौज के क़रीब पहुंचा, तो मुझे आग की रोशनी नज़र आई और एक काला भारी भरकम आदमी आग पर हाथ सेंक कर अपने पहलू पर फेर रहा था और कह रहा था। (यहां से) भाग चलो, भाग चलो, मैं इससे पहले अबू सुफ़ियान को पहचानता नहीं था। (मेरे दिल में ख़्याल आया कि मौक़ा अच्छा है, मैं इसे निमटाता चलूं, इसलिए) मैंने अपने तिरकश में से सफ़ेद पर वाला तीर निकालकर कमान में रख लिया, ताकि आग की रोशनी में उस पर तीर चला दूं।

लेकिन मुझे हुज़ूर सल्ल० का फ़रमान याद आ गया कि मेरे पास वापस आने तक कोई हरकत न करना, इसलिए मैं रुक गया और तीर

तिरकश में वापस रख लिया, फिर मैं हिम्मत करके फ़ौज के अन्दर घुस गया, तो लोगों में से मेरे सबसे ज़्यादा क़रीब बनू आमिर थे।

वह कह रहे थे आले आमिर ! भाग चलो, भाग चलो, अब यहां तुम्हारे ठहरने की गुंजाइश नहीं है और उनकी फ़ौज में तेज़ आंधी चल रही थी जो उनकी फ़ौज से एक बालिश्त बाहर नहीं थी। अल्लाह की क़सम ! मैं ख़ुद पत्थरों की आवाज़ सुन रहा था, जिन्हें हवा उड़ाकर उनके कजावों और बिस्तरों पर फेंक रही थी, फिर मैं हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ वापस चल पड़ा।

अभी मैंने आधा रास्ता या उसके क़रीब तै किया था कि मुझे लगभग बीस घुड़सवार बांधे हुए मिले। उन्होंने कहा, अपने मालिक से कह देना कि अल्लाह ने उनके दुश्मनों का ख़ुद इन्तिज़ाम कर दिया है। (यानी कुफ़्फ़ार को आंधी भेजकर भागने पर मजबूर कर दिया है) जब मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस गया तो आप एक छोटी सी चादर ओढ़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे। अल्लाह की क़सम ! वापस पहुंचते ही सर्दी भी वापस आ गई और मैं सर्दी के मारे कांपने लगा।

हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ की हालत में मेरी ओर इशारा किया। मैं आपके क़रीब चला गया। आपने चादर का एक किनारा मुझ पर डाल दिया। आपकी यह आदत थी कि जब भी कोई घबराहट की बात पेश आती, तो आप नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो जाया करते थे।

मैंने (नमाज़ के बाद) आपको दुश्मनों की सारी बात बताई और मैंने आपको बताया कि मैं उन्हें इस हाल में छोड़कर आया हूं कि वे सब कूच कर रहे हैं। इस पर अल्लाह ने ये आयतें उतारीं—

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا۔

وَكَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ۞

'ऐ ईमान वालो ! याद करो एहसान अल्लाह का अपने ऊपर। जब चढ़ आईं फ़ौजें तुम पर, फिर भेज दी हमने उन पर हवा और वे फ़ौजें जो तुमने नहीं देखीं।' से लेकर 'और अपने ऊपर ले ली अल्लाह ने

मुसलमानों की लड़ाई और है अल्लाह ज़ोरावर और ज़बरदस्त' तक।[1]

हज़रत यज़ीद तैमी फ़रमाते हैं कि हम हज़रत हुज़ैफ़ा के पास थे, तो उनसे एक आदमी ने कहा कि अगर मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० को पा लेता, तो मैं आपके साथ रहकर (काफ़िरों से) ख़ूब लड़ाई करता और उसी में जान क़ुरबान कर देता।

तो उससे हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहा, तू ऐसे कर सकता था? लैलतुल अहज़ाब में हम लोगों ने अपने आपको हुज़ूर सल्ल० के साथ इस हाल में देखा है कि उस रात बहुत तेज़ हवा चल रही थी और सख़्त सर्दी पड़ रही थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या कोई ऐसा आदमी है जो मेरे पास दुश्मनों की ख़बर लेकर आए, वह क़ियामत के दिन मेरे साथ होगा?

फिर आगे हज़रत अब्दुल अज़ीज़ की पिछली हदीस जैसी हदीस थोड़ी-सी ज़िक्र की है और इस हदीस में यह भी है कि मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस आया और वापस आते ही सर्दी लगने लग गई और मुझ पर कपकपी छा गई। मैंने आपको (दुश्मनों के तमाम हालात) बताए। आप जो चोग़ा पहन कर नमाज़ पढ़ रहे थे, उसका एक किनारा मेरे ऊपर डाल दिया। मैं सुबह तक सोता रहा। जब सुबह हुई, तो आपने फ़रमाया, ऐ सोने वाले! उठ![2]

इब्ने इस्हाक़ ने इस हदीस को मुहम्मद बिन काब क़ुरज़ी से मुन्क़तअन नक़ल किया है और उसमें ये शब्द हैं, कौन आदमी ऐसा है जो खड़ा होकर देख आए कि दुश्मन क्या कर रहा है? और फिर हमारे पास वापस आए।

आपने जाने वाले के लिए वापस आने की शर्त लगाई (कि उसे ज़रूर वापस आना होगा) मैं अल्लाह से दुआ करूंगा कि वह जन्नत में मेरा साथी बन जाए। (लेकिन) सख़्त ख़ौफ़ और सख़्त भूख और सख़्त सर्दी की वजह से कोई भी न खड़ा हुआ।

---

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 148, बिदाया, भाग 4, पृ० 114, कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 279
2. मुस्लिम.

अल्लाह की ओर बुलाने की वजह से घावों और बीमारियों को सहन करना

हज़रत अबुस्साइब रज़ि० फ़रमाते हैं कि बनू अब्दुल अशहल के एक आदमी ने कहा कि मैं और मेरा भाई ग़ज़वा उहुद में शरीक हुए। हम दोनों (वहां से) घायल होकर वापस हुए। जब हुज़ूर सल्ल० के मुनादी ने दुश्मन का पीछा करने के लिए एलान किया तो मैंने अपने भाई से कहा या मेरे भाई ने मुझसे कहा, क्या हम इस ग़ज़वे में हुज़ूर सल्ल० के साथ जाने से रह जाएंगे? (नहीं, बल्कि ज़रूर साथ जाएंगे) अल्लाह की क़सम! हमारे पास सवार होने के लिए कोई सवारी न थी और हम दोनों भाई बहुत ज़्यादा घायल और बीमार थे।

बहरहाल हम दोनों हुज़ूर सल्ल० के साथ चल दिए। मैं अपने भाई से कम घायल था। जब चलते-चलते मेरा भाई हिम्मत हार जाता, तो मैं कुछ देर के लिए उसे उठा लेता, फिर कुछ देर वह पैदल चलता। (हम दोनों इस तरह चलते रहे और मैं भाई को बार-बार उठाता रहा) यहां तक कि हम भी वहां पहुंच गए, जहां बाक़ी मुसलमान पहुंचे थे।[1]

इब्ने साद ने वाक़दी से इस तरह नक़ल किया है कि अब्दुल्लाह बिन सह्ल और उनके भाई राफ़ेअ बिन सह्ल रज़ि० दोनों घायल हालत में एक दूसरे को उठाते हुए हमरउल असद पहाड़ी तक पहुंचे और इन दोनों के पास कोई सवारी न थी।[2]

बनू सलिमा के कुछ उम्र वाले बुज़ुर्ग लोग फ़रमाते हैं कि हज़रत अम्र बिन जमूह रज़ि० बहुत ज़्यादा लंगड़े थे और उनके शेर जैसे चार जवान बेटे थे, जो हुज़ूर सल्ल० के पास तमाम लड़ाइयों में शरीक होते। जब उहुद का मौक़ा आया तो उन्होंने अपने बाप को (लड़ाई की शिर्कत से) रोकना चाहा और कहा, अल्लाह ने आपको माज़ूर क़रार दिया है।

उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि मेरे बेटे

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 49
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 21

मुझे इस लड़ाई में आपके साथ जाने से रोकना चाहते हैं। अल्लाह की क़सम! मैं यह चाहता हूं कि मैं अपने इस लंगड़ेपन के साथ जन्नत में चलूं-फिरूं, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने तुमको माज़ूर क़रार दिया है, इसलिए जिहाद में जाना तुम्हारे ज़िम्मे नहीं है और उनके बेटों से फ़रमाया, तुम इनको जिहाद में जाने से मत रोको। हो सकता है अल्लाह इनको शहादत नसीब फ़रमा दे। चुनांचे वह ग़ज़वा उहुद में हुज़ूर सल्ल० के साथ शरीक हुए और शहादत का दर्जा पाया।[1]

हज़रत अबू क़तादा उहुद की लड़ाई में शरीक हुए थे। वह फ़रमाते हैं कि हज़रत अम्र बिन जमूह रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप मुझे यह बताएं, अगर मैं अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता हुआ शहीद हो जाऊं, तो मेरा यह लंगड़ा पांव वहां ठीक हो जाएगा? और क्या मैं जन्नत में उस पांव से चल-फिर सकूंगा? हज़रत अम्र पांव से लंगड़े थे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, (तुम्हारा पांव जन्नत में ठीक हो जाएगा)

चुनांचे उहुद की लड़ाई के दिन वह, और उनका भतीजा और उनका एक गुलाम शहीद हुए। हुज़ूर सल्ल० का उन पर गुज़र हुआ तो आपने फ़रमाया कि मैं देख रहा हूं कि अम्र बिन जमूह का लंगड़ा पांव ठीक हो गया है और वह उससे जन्नत में चल रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया कि इन तीनों को एक क़ब्र में दफ़न किया जाए। चुनांचे तीनों एक क़ब्र में दफ़न किए गए।[2]

हज़रत यह्या बिन अब्दुल हमीद की दादी बयान करती हैं कि हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ि० को छाती में एक तीर लगा।

अम्र बिन मरज़ूक़ रिवायत करने वाले कहते हैं कि यह मुझे मालूम नहीं कि मेरे उस्ताद ने किस दिन का नाम लिया था, उहुद की लड़ाई का या हुनैन की लड़ाई का? (बहरहाल इन दोनों में से एक दिन लगा)

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 37
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 315, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 24

उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरा यह तीर निकाल दें।

आपने फ़रमाया, ऐ राफ़ेअ ! अगर तुम चाहो तो तीर और फल दोनों निकाल दूं और अगर तुम चाहो तो तीर निकाल दूं और फल रहने दूं और क़ियामत के दिन तुम्हारे लिए गवाही दूं कि तुम शहीद हो।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! तीर निकाल दें और फल रहने दें और क़ियामत के दिन मेरे लिए गवाही दें कि मैं शहीद हूं। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने ऐसे ही किया और हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज (काफ़ी अर्से तक) ज़िंदा रहे, यहां तक कि हज़रत मुआविया की ख़िलाफ़त के ज़माने में उनका घाव फिर हरा हो गया और अस्र के बाद उनका इंतिक़ाल हुआ।

इस रिवायत में इसी तरह है, लेकिन सही यह है कि उनका इंतिक़ाल हज़रत मुआविया की ख़िलाफ़त के बाद हुआ।[1]

इसाबा में लिखा है कि हो सकता है कि घाव के हरा होने और उनके इंतिक़ाल के दर्मियान काफ़ी अर्सा गुज़रा हो।[2] और हदीसें इन्शाअल्लाह सब्र के बाब में आएंगी।

---

1. बिदाया, बैहक़ी
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 496, भाग 4, पृ० 474, भाग 1, पृ० 469

हिजरत का बाब

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने किस तरह अपने प्यारे वतनों को छोड़ा, हालांकि वतन का छोड़ना इंसान के लिए बड़ा मुश्किल काम है और उन्होंने वतन भी इस तरह छोड़ा कि फिर मौत तक अपने वतन को वापस न गए और यह वतन छोड़ना किस तरह उनको दुनिया और दुनिया की पूंजी से ज़्यादा प्रिय हो गया था और दीन को किस तरह दुनिया पर मुक़द्दम किया और न दुनिया के ज़ाया होने की परवाह की और न उसके फ़ना होने पर तवज्जोह दी और वे किस तरह अपने दीन को फ़ित्ने से बचाने के लिए एक इलाक़े से दूसरे इलाक़े की तरफ़ भागे फिरते थे। (उनकी हालत ऐसी थी कि) गोया कि वे आख़िरत ही के लिए पैदा किए गए हैं और वे सिर्फ़ आख़िरत ही की फ़िक्र करने वाले हैं। चुनांचे (इसके नतीजे में) ऐसा नज़र आता था कि दुनिया सिर्फ़ उन्हीं के लिए पैदा की गई है।

नबी करीम सल्ल० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० की हिजरत

हज़रत उर्व: से मुरसलन नक़ल किया गया है कि हुज़ूर सल्ल० हज के बाद ज़िलहिज्जा के बाक़ी दिन और मुहर्रम और सफ़र मक्का में ठहरे रहे और जब कुरैश के मुश्रिकों को इस बात का यक़ीन हो गया कि हुज़ूर सल्ल० यहां से जाने वाले हैं और अल्लाह ने आपके लिए मदीना में ठिकाना और हिफ़ाज़त की जगह बना दी है और उन्हें मालूम हो गया कि अंसार मुसलमान हो गए हैं और मुहाजिरीन उनके पास जा रहे हैं तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के ख़िलाफ़ इंतिहाई क़दम उठाने का फ़ैसला कर लिया और यह तै कर लिया कि वे हुज़ूर सल्ल० को पकड़कर रहेंगे। फिर (नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक) या तो उनको क़त्ल कर देंगे या क़ैद कर लेंगे।

उम्र बिन ख़ालिद रिवायत करने वाले को शक है कि क़ैद करने का ज़िक्र है या ज़मीन पर घसीटने का। (ज़ाहिर में तो क़ैद करने का ज़िक्र है) या आपको मक्का से निकाल देंगे या आपको बांध रखेंगे।

अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० को उनकी इस साज़िश से ख़बरदार कर दिया और यह आयत उतारी—

وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۚ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۚ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ

'और जब फ़रेब करते थे काफ़िर कि तुझको क़ैद कर दें या मार डालें या निकाल दें और वे भी दाव करते थे और अल्लाह भी दाव करता था और अल्लाह का दांव सबसे बेहतर है।'

जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबूबक्र रज़ि० के घर तशरीफ़ ले गए, उस दिन आपको यह ख़बर लगी कि आप रात को जब अपने बिस्तर पर लेट जाएंगे तो वे काफ़िर रात को आप पर हमला कर देंगे।

चुनांचे रात के अंधेरे में आप और हज़रत अबूबक्र रज़ि० मक्का से निकल कर सौर ग़ार में तशरीफ़ ले गए और यह भी वही ग़ार (गुफ़ा) है

जिसका अल्लाह ने कुरआन मजीद में ज़िक्र किया है और हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के बिस्तर पर आकर लेट गए। ताकि जासूसों को हुज़ूर सल्ल० के जाने का पता न चले (और वे यह समझते रहें कि हुज़ूर सल्ल० ही लेटे हुए हैं) और कुरैश मुश्रिक सारी रात इधर-उधर फिरते रहे और मश्विरे करते रहे कि बिस्तर पर लेटे हुए आदमी को एकदम पकड़ लेंगे। वे यों ही मश्विरे करते रहे और कोई फ़ैसला न कर सके और बातों ही बातों में सुबह हो गई।

जब सुबह हुई तो उन्होंने देखा कि हज़रत अली रज़ि० बिस्तर से उठ रहे हैं। मुश्रिकों ने उनसे हुज़ूर सल्ल० के बारे में पूछा, तो हज़रत अली रज़ि० ने बताया कि उन्हें हुज़ूर सल्ल० के बारे में कुछ ख़बर नहीं है। उस वक़्त उन्हें पता चला कि हुज़ूर सल्ल० तो जा चुके।

आपकी खोज में वे मुश्रिक सवार होकर चल पड़े और आस-पास के चश्मे वालों को पैग़ाम भेजा कि वह हुज़ूर सल्ल० को गिरफ़्तार कर लें, उन्हें बड़ा इनाम मिलेगा और वे खोजते हुए उस ग़ार तक पहुंच गए जिसमें हुज़ूर सल्ल० और अबूबक्र रज़ि० थे, यहां तक कि वे ग़ार के ऊपर भी चढ़ गए और हुज़ूर सल्ल० ने उनकी आवाज़ें भी सुन लीं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० तो उस वक़्त बहुत डर गए और उन पर डर और दुख छा गया, तो उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया—

لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا

'ग़म न करो, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है।' और आपने दुआ मांगी। चुनांचे अल्लाह की ओर से फ़ौरन आप पर सुकून छा गया (जैसे कि कुरआन मजीद में है)

فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

'फिर अल्लाह ने उतारा अपनी ओर से उस पर सुकून और उसकी मदद को वे फ़ौजें भेजीं कि तुमने नहीं देखीं और नीचे डाली बात काफ़िरों की और अल्लाह की बात हमेशा ऊपर है और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला।'

हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास कुछ दूध वाली बकरियां थीं जो रोज़ाना शाम को उनके और उनके घरवालों के पास मक्का आ जाती थीं (और यह उनका दूध पी लिया करते थे) हज़रत अबूबक्र रज़ि० के गुलाम हज़रत आमिर बिन फुहैरा रज़ि० बड़े अमानतदार, दयानतदार और बड़े पक्के मुसलमान थे। उन्हें हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने (किसी रहबर को उजरत पर लेने के लिए) भेजा।

चुनांचे उन्होंने अबू अब्द बिन अदी का एक आदमी उजरत पर ले लिया, जिसे इब्नुल उरैक़ित कहा जाता था जो कि क़ुरैश के बनू सह्म यानी बनू आस बिन वाइल का मित्र था। यह अदवी आदमी उस वक़्त मुश्रिक था और वह रास्ता बताने का काम करता था। उन दिनों वह हमारी सवारियां लेकर छिपा रहा। शाम के वक़्त, मक्का के तमाम हालात लेकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र रज़ि० इन दोनों के पास आते और हज़रत आमिर बिन फुहैरा हर रात बकरियां लेकर आते। ये लोग उनका दूध निकालकर पी लेते और ज़िब्ह करके गोश्त खा लेते।

फिर सुबह-सुबह हज़रत आमिर बकरियां लेकर लोगों के चरवाहों में जा मिलते और उनका किसी को पता न चलता, यहां तक कि जब इन लोगों के बारे में शोर व गुल बन्द हो गया और हज़रत आमिर बिन फुहैरा ने आकर इन लोगों को बताया कि इनके बारे में लोग ख़ामोश हो गए हैं तो हज़रत आमिर बिन फुहैरा और इब्ने उरैक़ित उन लोगों की दो ऊंटनियां लेकर आ गए और ये लोग ग़ार में दो रात और दो दिन गुज़ार चुके थे।

फिर ये लोग वहां से चले और उनके साथ हज़रत आमिर बिन फुहैरा थे जो उन लोगों की ऊंटनियों को हांकते और उनकी ख़िदमत करते और उनकी (अलग-अलग कामों में) मदद करते। हज़रत अबूबक्र रज़ि० उनको अपने पीछे बारी-बारी बिठा लेते। हज़रत आमिर बिन फुहैरा और बनू अदी के क़बीले का रास्ता बताने वाले के अलावा और कोई इन लोगों के साथ न था।[1]

1. हैसमी, भाग 6 पृ० 52

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबूबक्र रज़ि० के घर रोज़ाना सुबह या शाम किसी एक वक़्त ज़रूर तशरीफ़ लाते। चुनांचे जिस दिन अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० को हिजरत करने की और क़ौम के बीच में से मक्का से चले जाने की इजाज़त दी, उस दिन आप ठीक दोपहर के वक़्त हमारे यहां तशरीफ़ लाए। उस वक़्त आप पहले कभी तशरीफ़ नहीं लाया करते थे।

जब आपको हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने देखा, तो उन्होंने कहा, ज़रूर कोई नई बात पेश आई है, जिसकी वजह से हुज़ूर सल्ल० इस वक़्त (आदत के ख़िलाफ़) तशरीफ़ लाए हैं। जब हुज़ूर सल्ल० अन्दर आ गए तो आपको जगह देने के लिए हज़रत अबूबक्र रज़ि० अपनी चारपाई से ज़रा परे हट गए और हुज़ूर सल्ल० बैठ गए।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास उस वक़्त मैं और मेरी बहन अस्मा बिन्त अबूबक्र के अलावा और कोई भी नहीं था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो तुम्हारे पास बैठे हुए हैं, उन्हें बाहर भेज दो।

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये दोनों तो मेरी बेटियां हैं, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, इनके यहां रहने में कोई हरज नहीं है।

आपने फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे चले जाने और हिजरत करने की इजाज़त दे दी है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं (हिजरत के इस सफ़र में) आपके साथ जाना चाहता हूं।

आपने फ़रमाया, तुम भी साथ चलो।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह की क़सम ! मुझे मालूम नहीं था कि इंसान ख़ुशी की वजह से भी रोया करता है। उस दिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० को रोते देखकर यह पता चला। फिर उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी ! ये दो सवारियां मैंने इस वक़्त के लिए तैयार कर रखी थीं।

इन लोगों ने अब्दुल्लाह बिन उरैक़ित को रास्ता बताने के लिए

उजरत पर लिया। यह क़बीला बनू दुइल बिन बक्र का था और इसकी मां बनू सह्म बिन अम्र में से थी और यह मुश्रिक था और उसे अपनी दोनों सवारियां दे दीं और जो वक़्त उससे मुक़र्रर किया था, उस वक़्त तक वह इन दोनों सवारियों को चराता रहा।[1]

अल्लामा बग़वी ने एक अच्छी इस्नाद के ज़रिए हज़रत आइशा से इसी हदीस का कुछ हिस्सा नक़ल किया है और उसमें यह मज़्मून है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया कि साथ रहने की दरख़्वास्त है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मंज़ूर है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मेरे पास दो सवारियां हैं जिनको छः महीने से इस वक़्त के लिए घास खिला रहा हूं। आप इनमें से एक ले लें।

आपने फ़रमाया, मैं वैसे नहीं लूंगा, बल्कि उसे ख़रीदूंगा। चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० ने वह सवारी ख़रीदी। फिर वे दोनों वहां से चले और ग़ार में जाकर ठहर गए। आगे और हदीस ज़िक्र की है।[2]

हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में रोज़ाना हमारे पास दो बार तशरीफ़ लाते थे। एक दिन आप ठीक दोपहर के वक़्त तशरीफ़ लाए। मैंने कहा, ऐ अब्बा जान! यह अल्लाह के रसूल सल्ल० हैं। मेरे मां-बाप क़ुर्बान हों, इस वक़्त किसी ख़ास बात की वजह से तशरीफ़ लाए हैं।

(हज़रत अबूबक्र रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के पास गए) हुज़ूर सल्ल० न फ़रमाया, क्या तुम्हें मालूम हो गया है कि अल्लाह ने मुझे यहां से चले जाने की इजाज़त दे दी है?

हज़रत अबूबक्र ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आपके साथ चलना चाहता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ठीक है तुम मेरे साथ चलो।

---

1. इब्ने इस्हाक़
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 334

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मेरे पास दो सवारियां हैं, जिन्हें मैं इतने अर्से से आज के इन्तिज़ार में घास खिला रहा हूं। इनमें से आप एक ले लें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं क़ीमत देकर लूंगा।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, मेरे मां-बाप आप पर कुर्बान हों, अगर आप इसी में ख़ुश हैं, तो क़ीमत देकर ले लें।

हज़रत अस्मा फ़रमाती हैं कि हमने इन दोनों के लिए सफ़र का खाना तैयार किया और अपने कमरबंद फाड़ कर दो टुकड़े किए और एक टुकड़े से सफ़र के सामान को बांध दिया।

फिर वे दोनों चले और सौर पहाड़ के ग़ार में जा ठहरे। जब वे दोनों उस ग़ार तक पहुंचे, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० हुज़ूर से पहले उस ग़ार के अन्दर गए और हर सूराख़ में उंगली डाल कर देखा कि कहीं इसमें कोई पीड़ा पहुंचाने वाला जानवर तो नहीं है (जो हुज़ूर सल्ल० को तक्लीफ़ पहुंचाए)?

जब कुफ़्फ़ार को ये दोनों (मक्का में) न मिले, तो वे उनकी खोज में चल पड़े और हुज़ूर सल्ल० को ढूंढकर लाने वालों के लिए सौ ऊंटनियों का इनाम मुक़र्रर किया और मक्का के पहाड़ों पर फिरते-फिरते उस पहाड़ पर पहुंच गए जहां ये दोनों थे। उनमें से एक आदमी ग़ार की तरफ़ मुंह किए हुए था। उसके बारे में हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह आदमी तो हमें देख रहा है।

आपने फ़रमाया, हरगिज़ नहीं। फ़रिश्ते हमें अपने परों से छिपाए हुए हैं। चुनांचे वह आदमी बैठकर ग़ार की तरफ़ मुंह करके पेशाब करने लगा, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर यह हमें देख रहा होता, तो ऐसे न करता। वे दोनों वहां तीन रात रहे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० के ग़ुलाम हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा शाम के वक़्त हज़रत अबूबक्र रज़ि० की बकरियां ले आते और आख़िर रात में उनके पास से बकरियां लेकर चले जाते और चरागाह में जाकर चरवाहों के साथ मिल जाते। शाम को चरवाहों के साथ वापस आते, (लेकिन)

धीरे-धीरे चलते (और पीछे रह जाते) जब रात का अंधेरा हो जाता तो अपनी बकरियां लेकर इन दोनों के पास पहुंच जाते। चरवाहे यह समझते कि वह उन्हीं के साथ हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ि० दिन को मक्का में रहकर हालात मालूम करते रहते और जब रात का अंधेरा होता तो वह इन दोनों को जाकर सारे हालात बता देते और फिर आख़िर रात में इन दोनों के पास से चल पड़ते और सुबह को मक्का पहुंच जाते।

(तीन रातों के बाद) ये दोनों ग़ार से निकले और समुद्र तट का रास्ता अख़्तियार किया। कभी हज़रत अबूबक्र रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के आगे चलने लगते। जब उनको पीछे से किसी के आने का ख़तरा होता तो आपके पीछे चलने लगते। सारे सफ़र में (कभी आगे, कभी पीछे) चलते रहे।

चूंकि हज़रत अबूबक्र रज़ि० लोगों में मशहूर थे, इस वजह से रास्ते में उन्हें कोई (पहचानने वाला) मिलता और यह पूछता कि यह तुम्हारे साथ कौन हैं? तो आप कहते, यह रास्ता दिखाने वाला है, जो मुझे रास्ता दिखा रहा है। उनका मतलब यह होता कि मुझे दीन का रास्ता दिखा रहा है और दूसरा यह समझता कि उन्हें सफ़र का रास्ता दिखा रहा है।

जब ये लोग क़ुदैद की आबादी पर पहुंचे, जो उनके रास्ते में पड़ती थी, तो एक आदमी ने बनू मुदलिज के पास आकर बताया कि मैंने समुद्र की ओर जाते हुए दो सवारों को देखा है और मेरा ख़्याल यह है कि ये क़ुरैश के वही दो आदमी हैं, जिन्हें तुम ढूंढ रहे हो।

तो सुराक़ा बिन मालिक ने कहा, ये दो सवार तो उन लोगों में से हैं जिनको हमने लोगों के किसी काम के लिए भेजा है। (सुराक़ा समझ तो गए कि यह हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबूबक्र हैं, लेकिन लोगों से छिपाने के लिए यह कह दिया।) फिर सुराक़ा ने अपनी बांदी को बुलाकर उसके कान में यह कहा कि वह उनका घोड़ा (आबादी से) बाहर ले जाए। फिर वह इन दोनों की खोज में चल पड़े।

सुराक़ा कहते हैं कि मैं इन दोनों के क़रीब पहुंचा और फिर उन्होंने

अपना क़िस्सा बयान किया जैसा कि आगे आएगा।[1]

हज़रत इब्ने सीरीन कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में कुछ लोगों का ज़िक्र हुआ और लोगों ने ऐसी बातें कहीं, जिससे यह लग रहा था कि वे लोग हज़रत उमर रज़ि० को हज़रत अबूबक्र रज़ि० से अफ़ज़ल समझते हैं।

जब हज़रत उमर रज़ि० को यह बात मालूम हुई, तो आपने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! अबूबक्र की एक रात उमर के सारे ख़ानदान (की ज़िंदगी) से बेहतर है और अबूबक्र रज़ि० का एक दिन उमर रज़ि० के सारे ख़ानदान (की ज़िंदगी) से बेहतर है। जिस रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर से निकल कर ग़ार तशरीफ़ ले गए थे और आपके साथ हज़रत अबूबक्र रज़ि० भी थे। हज़रत अबूबक्र कुछ देर हुज़ूर सल्ल० के आगे चलते और कुछ देर पीछे।

हुज़ूर सल्ल० इस बात को समझ गए और आपने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र ! तुम्हें क्या हुआ, कुछ देर मेरे पीछे चलते हो और कुछ देर मेरे आगे ?

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब मुझे ख़्याल आता है कि पीछे से कोई खोजने वाला न आ जाए, तो मैं पीछे चलने लगता हूं और फिर मुझे ख़्याल आता है कि आगे कोई घात में न बैठा हो, तो मैं आगे चलने लगता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र ! अगर ख़ुदा न करे कोई हादसा पेश आए तो क्या तुम यह पसन्द करते हो कि वह मेरे बजाए तुम्हें पेश आए ?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, यही बात है। जब ये दोनों ग़ार तक पहुंचे तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप ज़रा यहां ही ठहरें, मैं आपके लिए ग़ार को साफ़ कर लूं। चुनांचे हज़रत अबूबक्र ने अन्दर जाकर ग़ार को साफ़ किया, फिर बाहर आए तो ख़्याल आया कि उन्होंने सूराख़ तो अभी साफ़ नहीं किए, तो उन्होंने अर्ज़

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 54

किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अभी आप ज़रा और ठहरें, मैं सूराख़ भी साफ़ कर लूं। चुनांचे अन्दर जाकर ग़ार को अच्छी तरह साफ़ किया, फिर आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अन्दर तशरीफ़ ले आएं। आप अंदर तशरीफ़ ले गए।

फिर हज़रत उमर ने कहा, क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। (हज़रत अबूबक्र की) यह एक रात उमर के पूरे ख़ानदान से बेहतर है।[1]

हज़रत हसन बसरी रह० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ग़ार में तशरीफ़ ले गए और क़ुरैश भी हुज़ूर सल्ल० को ढूंढते हुए वहां पहुंच गए, लेकिन जब उन्होंने ग़ार के मुंह पर मकड़ी का जाला तना हुआ देखा, तो कहने लगे, इस ग़ार के अन्दर कोई नहीं गया। हुज़ूर सल्ल० खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे और हज़रत अबूबक्र रज़ि० पहरा दे रहे थे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, यह आपकी क़ौम आपको ढूंढ रही है। अल्लाह की क़सम ! मुझे तो अपनी जान का कोई ग़म नहीं है, लेकिन मुझे तो इस बात का ग़म है कि मुझे आपके बारे में कोई नागवार बात न देखनी पड़े।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे कहा, ऐ अबूबक्र ! मत डरो, बेशक अल्लाह हमारे साथ है।[2]

इमाम अहमद ने हज़रत अनस से रिवायत किया है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनसे यह बयान किया कि जब हम ग़ार में थे, तो मैंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, अगर इन काफ़िरों में से कोई अपने पैरों की ओर नज़र डालेगा, तो वह हमें अपने क़दमों के नीचे देख लेगा।

आपने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र ! तुम्हारा उन दो आदमियों के बारे में क्या ख़्याल है, जिसका तीसरा अल्लाह है।[3]

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 180, कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 348, भाग 8, पृ० 335
2. अबूबक्र क़ाज़ी,
3. बिदाया, भाग 3, पृ० 180, 182, कंज़, भाग 8, पृ० 329

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने (मेरे बाप) हज़रत आज़िब रज़ि० से तेरह दिरहम में एक ज़ीन ख़रीदी। हज़रत अबूबक्र ने हज़रत आज़िब से कहा कि (अपने बेटे) बरा से कहो कि वह यह ज़ीन मेरे घर पहुंचा दे।

हज़रत आज़िब ने कहा, पहले आप हमें यह बताएं कि जब हुज़ूर सल्ल० (मक्का से) हिजरत के लिए चले थे और आप उनके साथ थे तो आपने क्या किया था? फिर मैं बरा से कहूंगा।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, हम (ग़ार से) शुरू रात में निकले और सारी रात चलते रहे, फिर अगले सारे दिन तेज़ी से चलते रहे, फिर अगली रात चलते रहे, यहां तक कि उससे अगला दिन हो गया और दोपहर हो गई और गर्मी तेज़ हो गई, फिर मैंने अपनी नज़र दौड़ाई कि कहीं कोई साया नज़र आ जाए जहां हम ठहर जाएं तो मुझे एक चट्टान नज़र आई। मैं जल्दी से वहां गया तो वहां अभी कुछ साया बाक़ी था। मैंने इस जगह को हुज़ूर सल्ल० के लिए बराबर किया और आपके लिए एक पोस्तीन बिछा दी और मैंने अर्ज़ किया—

'ऐ अल्लाह के रसूल! ज़रा लेट जाएं, चुनांचे आप लेट गए। फिर मैं निकल कर देखने लगा कि कोई खोजने वाला इधर तो नहीं आ रहा, तो मुझे बकरियों का एक चरवाहा नज़र आया। मैंने कहा ऐ लड़के! तुम किसके चरवाहे हो?

उसने क़ुरैश के एक आदमी का नाम लिया, जिसे मैंने पहचान लिया। मैंने उससे पूछा, क्या तुम्हारी बकरियों में दूध है?

उसने कहा, है।

मैंने कहा, कुछ दूध निकाल कर मुझे दे सकते हो? (यानी क्या तुम्हें यों दूध निकालने की इजाज़त है?)

उसने कहा, हां, दे सकता हूं। मेरे कहने पर उसने एक बकरी की टांगें बांधी। फिर उसने उसके थन से धूल साफ़ किया, अपने हाथों को धोया। मेरे पास एक बरतन था जिसके मुंह पर कपड़ा बंधा हुआ था, उसने मुझे थोड़ा-सा दूध निकालकर दिया। मैंने प्याले में पानी डाला,

जिससे नीचे तक का हिस्सा ठंडा हो गया।

फिर मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया, तो आप जाग चुके थे। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! दूध पी लें। आपने इतना पिया कि मैं ख़ुश हो गया, फिर मैंने कहा, चलने का वक़्त हो गया है। चुनांचे हम वहां से चल पड़े। मक्का वाले हमें खोज रहे थे। सुराक़ा बिन मालिक बिन जोसम के अलावा और कोई हम तक न पहुंच सका। यह अपने घोड़े पर सवार था। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह ढूंढने वाला हम तक पहुंच गया?

आपने फ़रमाया, ग़म न करो, बेशक अल्लाह हमारे साथ है।

फिर जब वह सुराक़ा हमारे और क़रीब आ गया, यहां तक कि एक या दो या तीन नेज़ों तक की दूरी रह गई, तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह ढूंढने वाला हमारे बिल्कुल क़रीब आ गया है और मैं रो पड़ा।

आपने फ़रमाया, क्यों रोते हो?

मैंने कहा, मैं अपनी वजह से नहीं रो रहा हूं। बल्कि आपकी वजह से रो रहा हूं।

आपने उसके लिए यह बद-दुआ की, ऐ अल्लाह ! आप हमें उससे जैसे चाहें बचा लें। तो एकदम उसके घोड़े के पांव पेट तक सख़्त ज़मीन में धंस गए और वह अपने घोड़े से कूदा और कहा, ऐ मुहम्मद ! मुझे यक़ीन है कि यह आपका काम है। आप अल्लाह से दुआ करें कि मैं जिस मुसीबत में गिरफ़्तार हो गया हूं, वह मुझे उससे निकाल दे। अल्लाह की क़सम ! मुझे पीछे जितने ढूंढने वाले मिलेंगे, उन सबको आपके बारे में भ्रम में डाल दूंगा (और आपके पीछे किसी को नहीं आने दूंगा) और यह मेरा तिरकश है। आप इसमें से एक तीर ले लें। फ़्लां जगह आप मेरे ऊंटों और बकरियों के पास से गुज़रेंगे। (आप यह तीर दिखाकर) जितनी बकरियों की आपको ज़रूरत हो, ले लें।

आपने फ़रमाया, मुझे उनकी ज़रूरत नहीं है। फिर आपने उसके लिए दुआ फ़रमाई। वह इस मुसीबत से ख़लासी पाकर अपने साथियों के पास वापस चला गया। फिर हुज़ूर सल्ल० वहां से चल दिए और मैं

आपके साथ था, यहां तक कि हम मदीना पहुंच गए।

लोगों ने आपका स्वागत किया। लोग रास्ते के दोनों तरफ़ छतों पर चढ़ गए और रास्ते में ख़ादिम और बच्चे दौड़े फिर रहे थे और कह रहे थे, अल्लाहु अक्बर ! अल्लाह के रसूल सल्ल० आ गए। मदीना के लोग आपस में झगड़ने लगे किसके मेहमान बनें ?

तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आज रात तो मैं अब्दुल मुत्तलिब के मामूं बनू नज्जार के यहां ठहरूंगा। इस तरह मैं इनका सम्मान करना चाहता हूं। (चुनांचे आप वहां ठहरे) जब सुबह हुई तो आपको (अल्लाह की ओर से जहां ठहरने का हुक्म मिला, वहां तशरीफ़ ले गए।[1]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि० मुसलमानों के एक तिजारती क़ाफ़िले के साथ मुल्क शाम से वापस आ रहे थे कि रास्ते में उनसे हुज़ूर सल्ल० से मुलाक़ात हुई। हज़रत ज़ुबैर ने हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० को सफ़ेद कपड़े पहनाए और मदीने में मुसलमानों ने हुज़ूर सल्ल० के मक्का से रवाना होने की ख़बर सुन ली थी। मदीने के मुसलमान रोज़ाना सुबह को हर्रा तक आपके स्वागत के लिए आते और आपका इन्तिज़ार करते और जब दोपहर को गर्मी तेज़ हो जाती, तो मदीना वापस चले जाते।

एक दिन बहुत देर इन्तिज़ार करके मुसलमान वापस हुए। जब ये लोग अपने घरों को पहुंचे तो एक यहूदी एक क़िले पर किसी चीज़ को देखने के लिए चढ़ा। उसकी नज़र हुज़ूर सल्ल० पर और आपके साथियों पर पड़ी, जो कि सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे और इन लोगों के आने की वजह से सराब हटता जा रहा था (गर्मी की वजह से रेगिस्तान में जो रेत पानी की तरह नज़र आती है, उसे सराब कहते हैं)।

उस यहूदी से न रहा गया, उसने ऊंची आवाज़ से कहा, ऐ अरब वालो ! यह तुम्हारे आदमी हैं, जिनका तुम इन्तिज़ार कर रहे थे, तो मुसलमान हथियारों की तरफ़ लपके। (उस ज़माने में स्वागत के लिए हथियार भी लगाए जाते थे) और (हथियार लगाकर) मुसलमानों ने हर्रा

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 187-188, इब्ने साद भाग 3, पृ० 80, कंज़, भाग 8, पृ० 330

नामी जगह पर जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्वागत किया।

आप इन सबको लेकर हर्रा की दाहिनी ओर मुड़ गए और बनू अम्र बिन औफ़ के यहां जाकर ठहरे। वह पीर का दिन (सोमवार) और रबीउल अव्वल का महीना था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० तो लोगों के स्वागत में खड़े हो गए। हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश बैठे हुए थे तो अंसार में से जिन लोगों ने हुज़ूर सल्ल० को अब तक नहीं देखा था, वे आ-आकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० को सलाम करने लगे, यहां तक कि जब हुज़ूर सल्ल० पर धूप आई तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० आकर अपनी चादर से आप पर साया करने लगे, तब लोगों को हुज़ूर सल्ल० का पता चला।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दस रातों से ज़्यादा बनू अम्र बिन औफ़ के यहां ठहरे और आपने वहां उस मस्जिद की बुनियाद रखी, जिसके बारे में क़ुरआन मजीद में है—

لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى

'अलबत्ता वह मस्जिद जिसकी बुनियाद रखी गई परहेज़गारी पर।'

और उसमें हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ पढ़ी, फिर आप अपनी सवारी पर सवार होकर चल पड़े और लोग भी आपके साथ चल रहे थे, यहां तक कि आपकी ऊंटनी मदीने में उस जगह जाकर बैठ गई, जहां मस्जिदे नबवी है और उन दिनों वहां मुसलमान मर्द नमाज़ पढ़ा करते थे और वह जगह दो यतीम लड़कों (हज़रत सुहैल और हज़रत सह्ल रज़ि०) की थी, जहां खजूरें सुखाया करते थे। ये दोनों हज़रत असअद बिन ज़ुरारह की परवरिश में थे।

जब आपकी ऊंटनी बैठ गई, तो आपने फ़रमाया कि इनशाअल्लाह यही हमारे ठहरने की जगह है। फिर आपने उन दोनों बच्चों को बुलाया और मस्जिद बनाने के लिए उनसे उस जगह का सौदा करना चाहा, तो उन बच्चों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इन्हें (हम बेचना नहीं चाहते हैं, बल्कि) हम यह ज़मीन आपको हदिया (भेंट) कर देते हैं।

आपने उन बच्चों से यह ज़मीन हदिया के तौर पर लेने से इंकार

कर दिया और उनसे वह जगह ख़रीदी, (क्योंकि नाबालिग़ होने की वजह से वह हदिया नहीं कर सकते थे) फिर उस जगह आपने मस्जिद बनाई। हुज़ूर सल्ल० भी सहाबा के साथ मस्जिद तामीर करने के लिए कच्ची ईंटें उठाने लगे और आप ईंटें उठाते हुए ये शेर (पद) पढ़ रहे थे—

هٰذَا الْحِمَالُ لَا حِمَالُ خَيْبَرْ   هٰذَا أَبَرُّ رَبَّنَا وَأَطْهَرْ

'ये उठाई जाने वाली ईंटें ख़ैबर में उठाई जाने वाली खजूर और किशमिश की तरह नहीं हैं। ऐ हमारे रब! बल्कि ये तो उनसे ज़्यादा भली और उनसे ज़्यादा पाक हैं।'

और यह शेर भी पढ़ रहे थे—

اَللّٰهُمَّ إِنَّ الْأَجْرَ أَجْرُ الْآخِرَةْ   فَارْحَمِ الْأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةْ

'ऐ अल्लाह! असल अज्र व सवाब तो आख़िरत का अज्र व सवाब है। तू अंसार और मुहाजिरीन पर रहम फ़रमा।'

फिर आपने एक मुसलमान का शेर पढ़ा, लेकिन उस मुसलमान का नाम मुझे नहीं बताया गया।

इब्ने शिहाब कहते हैं, हमें हदीसों में यह कहीं नहीं मिला कि हुज़ूर सल्ल० ने इन शेरों के अलावा और किसी का पूरा शेर पढ़ा हो।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं भी बच्चों के साथ दौड़ा फिर रहा था। सब लोग कह रहे थे कि मुहम्मद (सल्ल०) आ गए। मैं दौड़ा तो फिर रहा था, लेकिन नज़र कुछ नहीं आ रहा था, यहां तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथी हज़रत अबूबक्र रज़ि० दोनों तशरीफ़ ले आए और मदीना की एक ग़ैर-आबाद जगह में आकर बैठ गए।

फिर उन्होंने एक देहाती आदमी को भेजा जो अंसार को इन दोनों लोगों (के आने) की ख़बर कर दे। चुनांचे लगभग पांच सौ अंसार इन लोगों के स्वागत के लिए निकले और इन दोनों की ख़िदमत में पहुंचकर इन लोगों ने अर्ज़ किया, आप दोनों तशरीफ़ ले चलें। आप दोनों अम्न

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 186

में हैं और आप दोनों की बात मानी जाएगी।

आप और आपके साथी हज़रत अबूबक्र इन स्वागत करने वालों के दर्मियान चल रहे थे। तमाम मदीना वाले स्वागत के लिए निकल आए, यहां तक कि कुंवारी लड़कियां घरों की छतों पर एक दूसरे से आगे बढ़-बढ़कर हुज़ूर सल्ल० को देख रही थीं और एक दूसरे से पूछ रही थीं कि इनमें हुज़ूर सल्ल० कौन-से हैं? इनमें हुज़ूर सल्ल० कौन से हैं? इस जैसा मंज़र हमने कभी नहीं देखा।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उस दिन भी देखा है जिस दिन आप मदीना तशरीफ़ लाए थे और उस दिन भी देखा था जिस दिन आपका इंतिक़ाल हुआ था। इन दो दिनों जैसा कोई दिन मैंने नहीं देखा।[1]

हज़रत इब्ने आइशा रह० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो औरतें और बच्चे ये शेर ख़ुशी में पढ़ रहे थे—

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعٍ

'वदाअ की घाटियों से चौदहवीं का चांद हम पर निकला। जब तक कोई भी अल्लाह की दावत देता रहेगा, हम पर शुक्र वाजिब रहेगा।[2]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० और सहाबा किराम की हिजरत

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से सबसे पहले हमारे पास (मदीना में) हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० और इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० आए। ये दोनों हमें क़ुरआन पढ़ाने लगे। फिर हज़रत अम्मार, हज़रत बिलाल और हज़रत साद रज़ि० आए। फिर उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० बीस सहाबा के

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 197
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 197

साथ आए, फिर हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए और मैंने मदीना वालों को हुज़ूर सल्ल० के तशरीफ़ लाने पर जितना ख़ुश होते हुए देखा, उतना किसी चीज़ पर ख़ुश होते हुए नहीं देखा। मैं आपके तशरीफ़ लाने से पहले बड़ी सूरतों में से 'सब्बि हिस-म रब्बिकल आला' पढ़ चुका था।[1]

हज़रत बरा रज़ि० फ़रमाते हैं, मुहाजिरीन में से सबसे पहले हमारे पास बनू अब्दुद्दार क़बीले के हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० आए, फिर बनू फ़ह्र के नाबीना इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० आए। फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० बीस सवारों के साथ आए। हमने उनसे पूछा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० का क्या हुआ?

हज़रत उमर ने कहा, वह मेरे पीछे तशरीफ़ ला रहे हैं। फिर हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० उनके साथ थे।

हज़रत बरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० के तशरीफ़ लाने से पहले कई बड़ी सूरतें पढ़ चुका था।[2]

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब मैंने हज़रत अय्याश बिन अबी रबीआ और हज़रत हिशाम बिन आस रज़ि० से मदीना हिजरत करने का इरादा ज़ाहिर किया, तो हमने सर्फ़ नामी जगह से ऊपर की ओर बनू ग़िफ़ार के हौज़ के किनारे तनाज़िब घाटी में जमा होना तै किया और हमने कहा कि हममें से जो भी सुबह को वहां पहुंचा हुआ न होगा (तो हम समझ लेंगे कि) उसे रोक लिया गया है। इसलिए उसके बाक़ी दोनों साथी चले जाएं (और उसका इन्तिज़ार न करें)।

चुनांचे मैं और हज़रत अय्याश तो सुबह तनाज़िब पहुंच गए और हज़रत हिशाम को हमारे पास आने से रोक लिया गया और (काफ़िरों की ओर से) उनको आज़माइश में डाला गया और वह आज़माइश में पड़ गए यानी इस्लाम से फिर गए। जब हम मदीना आए तो हम क़ुबा में बनू अम्र बिन औफ़ के यहां ठहरे। हज़रत अय्याश, अबू जह्ल बिन हिशाम और हारिस बिन हिशाम के चचेरे भाई और मां शरीक भाई थे

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 331
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 188

अबू जह्ल और हारिस हज़रत अय्याश (को वापस ले जाने) के लिए मदीना आए।

अल्लाह के रसूल सल्ल० अभी मक्का ही में थे। इन दोनों ने हज़रत अय्याश से बात की और उनसे कहा कि तुम्हारी मां ने नज़्र मानी है कि जब तक वह तुम्हें देख न लेगी, न वह सर में कंघी करेगी और न धूप से साए में जाएगी। (मां का यह हाल सुनकर) उनका दिल नर्म पड़ गया।

मैंने उनसे कहा, अल्लाह की क़सम ! ये लोग तुमको तुम्हारे दीन से हटाना चाहते हैं। इनसे चौकन्ने रहो। अल्लाह की क़सम ! जब जुएं तुम्हारी मां को तंग करेंगी, तो वह ज़रूर कंघी कर लेंगी और जब मक्का की गर्मी उनको सताएगी, तो वह ख़ुद साए में चली जाएंगी।

इस पर हज़रत अय्याश ने कहा, मैं अपनी मां की नज़्र भी पूरी कर आता हूं और मेरा वहां कुछ माल है, वह भी मैं ले आता हूं।

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम ! तुम्हें ख़ूब मालूम है। मैं क़ुरैश के बड़े मालदारों में से हूं, तुम उनके साथ मत जाओ। मैं तुम्हें अपना आधा माल दे देता हूं, लेकिन उन्होंने मेरी बात न मानी और उन दोनों के साथ जाने पर इसरार करते रहे।

जब उन्होंने उनके साथ जाने की ठान ही ली, तो मैंने उनसे कहा, तुमने जो करना था, वह कर लिया। (और उनके साथ जाने का इरादा कर ही लिया) तो मेरी यह ऊंटनी ले लो, यह बड़ी उम्दा नस्ल की और मान कर चलने वाली है। तुम इसकी पीठ पर बैठे रहना। अगर तुम्हें इन दोनों की किसी बात से शक हो, तो इस पर भाग कर अपनी जान बचा लेना। चुनांचे वह उस ऊंटनी पर सवार होकर इन दोनों के साथ चल पड़े।

रास्ते में एक जगह अबू जह्ल ने उनसे कहा, ऐ मेरे भाई ! अल्लाह की क़सम ! मेरा यह ऊंट सुस्त पड़ गया है। क्या तुम मुझे अपनी इस ऊंटनी पर पीछे नहीं बिठा लेते ?

हज़रत अय्याश ने कहा, हां, ज़रूर और उन्होंने अपनी ऊंटनी नीचे

बिठा ली और इन दोनों ने भी अपने ऊंट बिठा लिए, ताकि अबू जह्ल उनकी ऊंटनी पर सवार हो जाए।

जैसे ही वह ज़मीन पर उतरे, तो ये दोनों हज़रत अय्याश पर झपटे और उन्हें रस्सी से अच्छी तरह बांध लिया और उन्हें मक्का ले गए और इस्लाम से हटाने के लिए उन पर बड़ा ज़ोर डाला। आख़िर वह इस्लाम को छोड़ गए। हम यह कहा करते थे कि जो मुसलमान इस्लाम को छोड़कर कुफ़्र में चला जाएगा, फिर अल्लाह उसकी तौबा कुबूल नहीं करेंगे और इस्लाम छोड़कर चले जाने वाले भी यही समझते थे, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० मदीना तशरीफ़ ले आए और अल्लाह ने यह आयतें उतारीं—

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝

तर्जुमा—कह दे ऐ बन्दे मेरे, जिन्होंने कि ज़्यादती की है अपनी जान पर, आस मत तोड़ो अल्लाह की मेहरबानी से। बेशक अल्लाह बख़्शता है सब गुनाह। वह जो है, वही है गुनाह माफ़ करने वाला मेहरबान और रुजू हो जाओ अपने रब की ओर और उसकी हुक्मबरदारी करो, पहले इससे कि आए तुम पर अज़ाब, फिर कोई तुम्हारी मदद को न आएगा और चलो बेहतर बात पर जो उतरी तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब से, पहले इससे कि पहुंचे तुम पर अजाब अचानक और तुमको ख़बर न हो।'

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने ये आयतें लिखकर हज़रत हिशाम बिन आस के पास भेज दीं। हज़रत हिशाम कहते हैं कि जब ये आयतें मेरे पास पहुंचीं, तो मैं उनको ज़ीतुवा जगह पर पढ़ने लगा। और (उनके मानी और मतलब को समझने के लिए) उसको ऊपर नीचे देखने लगा, लेकिन मुझे उनका मतलब समझ में नहीं आया, यहां तक कि मैंने दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! ये आयतें मुझे समझा दे।

फिर अल्लाह ने मेरे दिल में यह मतलब डाला कि ये आयतें हमारे बारे में नाज़िल हुई हैं, हम जो अपने दिलों में सोचा करते थे और सहाबा जो हमारे बारे में कहा करते थे कि जो इस्लाम को छोड़कर कुफ़्र में चला जाएगा, फिर अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल नहीं करेगा। (अब अल्लाह ने ये आयतें उतार कर बताया है कि तौबा क़ुबूल हो जाएगी। जब यह मतलब मेरी समझ में आ गया और मुझे अपनी तौबा क़ुबूल होने की बात मालूम हो गई, तो मैं अपने ऊंट के पास आया और उस पर सवार होकर मदीना हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हो गया।[1]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० की हिजरत

हज़रत क़तादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि सबसे पहले अल्लाह के लिए जिसने अपने बाल-बच्चों के साथ हिजरत की, वह हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० हैं।

मैंने हज़रत नज़्र बिन आस को यह फ़रमाते हुए सुना कि मैंने हज़रत अबू हमज़ा यानी अनस रज़ि० को फ़रमाते हुए सुना कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० हिजरत करके हब्शा चले गए और उनके साथ उनकी बीवी हज़रत रुक़ैया रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की साहबज़ादी भी थीं। हुज़ूर सल्ल० के पास इन दोनों की ख़ैर-ख़बर आने में देर हो गई, फिर क़ुरैश की एक औरत आई और उसने कहा, ऐ मुहम्मद! मैंने तुम्हारे दामाद को देखा था और उनके साथ उनकी बीवी भी थीं।

आपने फ़रमाया, तुमने इन दोनों को किस हाल में देखा?

उस औरत ने कहा, मैंने उनको देखा कि उन्होंने अपनी बीवी को एक कमज़ोर से गधे पर सवार कर रखा था और ख़ुद उसको पीछे से हांक रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह इन दोनों के साथ रहे। हज़रत

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 172, इसाबा, भाग 3, पृ० 604, हैसमी, भाग 6, पृ० 61, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 13, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 194, कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 262, मजमा, भाग 6, पृ० 62

उस्मान हज़रत लूत अलै० के बाद पहले आदमी हैं जिन्होंने अपने बीवी-बच्चों के साथ हिजरत की है।[1]

तबरानी ने हज़रत अनस रज़ि० से इसी हदीस के मानी वाली हदीस रिवायत की है और उसमें यह भी है कि उनके बारे में हुज़ूर सल्ल० को कोई ख़बर न मिली। हुज़ूर सल्ल० घर से बाहर तशरीफ़ लाकर उनके बारे में लोगों से ख़ैर-ख़बर पूछा करते। आपको उनके बारे में किसी ख़बर के मिलने का बड़ा इन्तिज़ार था। आख़िर एक औरत आई और उसने आपको उनके बारे में बताया।[2]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० की हिजरत

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं, जब अल्लाह के रसूल सल्ल० हिजरत फ़रमा कर मदीना तशरीफ़ ले जाने लगे, तो आपने मुझसे फ़रमाया कि मैं आपके बाद ठहर कर लोगों की जो अमानतें हुज़ूर सल्ल० के पास थीं, वे लोगों को पहुंचा दूं। (चूंकि लोग आपके पास अमानत रखते थे) इसी वजह से आपको अमानतदार कहा जाता था। मैं (आपके बाद) तीन दिन वहीं रहा। मैं घर से बाहर एलानिया लोगों में चलता-फिरता था। एक दिन भी छिपकर नहीं बैठा, फिर मैं मक्का से निकल कर हुज़ूर सल्ल० वाले रास्ते पर चल दिया, यहां तक कि जब बनू अम्र बिन औफ़ के यहां पहुंचा तो हुज़ूर सल्ल० अभी वहीं ठहरे हुए थे। मैं कुलसूम बिन हिदम के यहां ठहरा और हुज़ूर सल्ल० भी वहां ही ठहरे हुए थे।[3]

हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० और सहाबा किराम रज़ि० का पहले हब्शा, फिर मदीना हिजरत करना

हज़रत मुहम्मद बिन हातिब रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैंने सपने में एक खजूरों

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 66, इसाबा, भाग 4, पृ० 305
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 81
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 335

वाली धरती देखी है, तुम लोग वहां चले जाओ। चुनांचे हज़रत हातिब और हज़रत जाफ़र रज़ि० समुद्र के रास्ते से रवाना हुए।

हज़रत मुहम्मद फ़रमाते हैं कि मैं उसी कश्ती में पैदा हुआ, (जिसमें ये लोग रवाना हुए थे)[1] हज़रत उमैर बिन इस्हाक़ फ़रमाते हैं कि हज़रत जाफ़र रज़ि० ने (हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में) अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे इजाज़त दें कि मैं किसी ऐसे भू-भाग में चला जाऊं, जहां मैं बे-ख़ौफ़ व ख़तर अल्लाह की इबादत कर सकूं। हुज़ूर सल्ल० ने आपको इजाज़त दे दी और वह नजाशी के पास चले गए। फिर उन्होंने पूरी हदीस ज़िक्र की जैसे कि बहुत जल्द आएगी।[2]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब मक्का की धरती (मुसलमानों पर) तंग हो गई और अल्लाह के रसूल सल्ल० के सहाबा को तरह-तरह से सताया गया और उनको बड़ी आज़माइशों में डाला गया और उन्होंने देखा कि दीन की वजह से उन पर आज़माइशें और मुसीबतें आ रही हैं और यह भी देख लिया कि हुज़ूर सल्ल० उनको इन आज़माइशों और मुसीबतों से बचा नहीं सकते हैं और ख़ुद हुज़ूर सल्ल० अपनी क़ौम और अपने चचा की वजह से हिफ़ाज़त में हैं जिसकी वजह से हुज़ूर सल्ल० को कोई नागवार बात पेश नहीं आती है और न आपको सहाबा वाली तक्लीफ़ें पहुंचती हैं, तो हुज़ूर ने अपने सहाबा से फ़रमाया कि हब्शा देश में एक ऐसा बादशाह है, जिसके यहां किसी पर ज़ुल्म नहीं होता है, इसलिए तुम उसके देश में जाओ, यहां तक कि अल्लाह तुम्हें इस तंगी से निजात दे और जिन मुसीबतों में तुम फंसे हो, उनसे निकलने का रास्ता बना दे।

चुनांचे हम लोग जमाअतें बनकर हब्शा जाने लगे और वहां जाकर हम इकट्ठे हो गए, हम वहां रहने लगे। बड़ा अच्छा इलाक़ा था। वहां के लोग बेहतरीन पड़ोसी थे। हम इत्मीनान से अपने दीन पर चलने लगे। वहां हमें किसी क़िस्म के ज़ुल्म का अंदेशा न था।

1. मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 6, पृ० 27
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 29

जब कुरैश ने यह देखा कि हमें रहने को एक इलाक़ा मिल गया है, जहां हम अम्न से रह रहे हैं, तो उन्हें यह बहुत बुरा लगा और उन्हें हम पर बड़ा गुस्सा आया और उन्होंने जमा होकर यह फ़ैसला किया कि वे हमारे बारे में नजाशी के पास एक वफ़्द भेजेंगे जो हमें नजाशी के मुल्क से निकाल कर उनके पास (मक्का) वापस ले आए।

चुनांचे उन्होंने अम्र बिन आस और अब्दुल्लाह बिन रबीआ को वफ़्द के तौर पर भेजना तै किया और नजाशी और उसके जरनैलों के लिए बहुत से तोहफ़े जमा किए और उनमें से हर एक के लिए अलग-अलग तोहफ़ा तैयार किया और उन दोनों से कहा कि सहाबा के बारे में बात करने से पहले हर जनरल को उसका तोहफ़ा दे देना। फिर नजाशी को उसके तोहफ़े देना और कोशिश करना कि सहाबा से नजाशी की बात न होने पाए और पहले ही वे उनको तुम्हारे हवाले कर दे।

चुनांचे वे दोनों हब्शा के नजाशी के यहां गए और हर जनरल को उसका तोहफ़ा दिया, फिर उन्होंने हर जनरल से यह बात की हम अपने मूर्खों की वजह से इस बादशाह के पास आए हैं। ये मूर्ख अपनी क़ौम का दीन छोड़ चुके हैं और तुम्हारे दीन में दाख़िल नहीं हुए हैं, तो उनकी क़ौम ने हमें इसलिए भेजा है, ताकि बादशाह उन लोगों को उनकी क़ौम के पास वापस भिजवा दे। जब हम बादशाह से यह बात करें तो तुम सब उसे ऐसा करने का (यानी वापस भेजने का) मश्विरा देना।

सबने ने कहा, हम ऐसा ही करेंगे।

फिर उन्होंने जाकर नजाशी को तोहफ़े दिए और मक्का वाले उसे जो तोहफ़े भेजते थे, उनमें से उसे सबसे ज़्यादा पसन्द रंगी हुई खाल थी। जब वे उसे तोहफ़े दे चुके तो उन्होंने नजाशी से कहा कि ऐ बादशाह! हमारे कुछ बेवक़ूफ़ नवजवानों ने अपनी क़ौम का दीन छोड़ दिया है और आपके दीन में भी दाख़िल नहीं हुए हैं और एक नया गढ़ा हुआ दीन उन्होंने अपना लिया है, जिसे हम नहीं जानते हैं और अब उन्होंने तुम्हारे मुल्क में पनाह ले ली है और आपकी ख़िदमत में उनके

बारे में बात करने के लिए उनके ख़ानदान, उनके मां-बाप, उनके चचा और उनकी क़ौम ने हम लोगों को भेजा है, ताकि उनको उनकी क़ौम के पास वापस भेज दें, क्योंकि उनकी क़ौम वाले उनको आपसे ज़्यादा जानते हैं और ये लोग आपके दीन में कभी भी दाख़िल नहीं होंगे कि आप इस वजह से उनकी हिमायत और हिफ़ाज़त करें।

(यह सुनकर) नजाशी को गुस्सा आ गया और उसने कहा, अल्लाह की क़सम ! नहीं, ऐसा नहीं हो सकता और जब तक मैं उनको बुलाकर उनसे बात न कर लूं और उनके मामले में ग़ौर न कर लूं, उस वक़्त तक मैं उन्हें वापस नहीं कर सकता हूं (क्योंकि) उन्होंने मेरे मुल्क में आकर पनाह ली है और किसी और का पड़ोस अख़्तियार करने के बजाए उन्होंने मेरा पड़ोस अख़्तियार किया है। अगर वे ऐसे ही निकले जैसे उनकी क़ौम वाले कह रहे हैं तो मैं उन्हें उनकी क़ौम के पास वापस भेज दूंगा और अगर वे ऐसे न हुए, तो मैं उनकी हर तरह हिफ़ाज़त करूंगा और उनके और उनकी क़ौम के दर्मियान नहीं पडूंगा और (उनको वापस भेजकर) उनकी क़ौम की आंखें ठंडी नहीं करूंगा, (चुनांचे नजाशी ने मुसलमानों को बुला लिया।)

जब मुसलमान उसके पास आए, तो उन्होंने उसे सलाम किया और उसे सज्दा न किया तो उसने कहा, ऐ (हिजरत करने वाली) जमाअत ! तुम लोग मुझे यह बताओ कि जिस तरह तुम्हारी क़ौम के आदमियों ने आकर (सज्दा करके) मुझे सलाम किया, तुम लोगों ने इस तरह मुझे सलाम नहीं किया और यह भी बताओ कि तुम हज़रत ईसा अलै० के बारे में क्या कहते हो? और तुम्हारा दीन क्या है? क्या तुम ईसाई हो?

मुसलमानों ने कहा, नहीं।

नजाशी ने कहा, क्या तुम यहूदी हो?

उन्होंने कहा, नहीं।

उसने कहा, क्या तुम अपने क़ौम के दीन पर हो?

उन्होंने कहा, नहीं।

उसने कहा, फिर तुम्हारा दीन क्या है?

उन्होंने कहा, इस्लाम।

उसने कहा, इस्लाम क्या है?

उन्होंने कहा, हम अल्लाह की इबादत करते हैं। उसके साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं ठहराते हैं।

उसने कहा, यह दीन तुम्हारे पास कौन लाया?

उन्होंने कहा, यह दीन हमारे पास हम में ही का एक आदमी लेकर आया है, जिसे हम अच्छी तरह जानते हैं, उसके वंश-परिवार को भी हम ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं। उन्हें अल्लाह ने हमारी ओर ऐसे ही भेजा है, जैसे अल्लाह ने और रसूलों को हमसे पहलों की ओर भेजा। उन्होंने हमें नेकी और सदक़ा करने का, वायदा पूरा करने का, अमानत अदा करने का हुक्म दिया। बुतों की इबादत से उन्होंने हमें रोका और एक अल्लाह, जिसका कोई शरीक नहीं की इबादत का हुक्म हमें दिया। हमने उन्हें सच्चा मान लिया और अल्लाह के कलाम को पहचान लिया। हमें यक़ीन है कि वे जो कुछ लाए हैं, वह सब अल्लाह के पास से आया है।

हमारे इन कामों की वजह से हमारी क़ौम हमारी दुश्मन हो गई और उस सच्चे नबी की दुश्मन बन गई और उन्होंने उनको झुठलाया और उनको क़त्ल करना चाहा और हमसे बुतों की इबादत कराना चाहा। हम अपने दीन और अपनी जान को लेकर अपनी क़ौम से भाग कर आपके पास आए हैं।

नजाशी ने कहा, अल्लाह की क़सम! यह भी उसी नूर से निकला है, जिससे मूसा अलै० का दीन निकला था।

हज़रत जाफ़र रज़ि० ने फ़रमाया, बाक़ी रही सलाम करने की बात, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें बताया कि जन्नत वालों का सलाम 'अस्सलामु अलैकुम' है। आपने हमें उसी का हुक्म दिया है। चुनांचे हमने आपको वैसे ही सलाम किया, जैसे हम आपस में करते हैं। जहां तक हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहि० का ताल्लुक़ है तो वह उसके बन्दे और रसूल हैं और वह अल्लाह का वह कलिमा है, जिसको अल्लाह ने मरयम की ओर इलक़ा फ़रमाया था और

अल्लाह की (पैदा की हुई) रूह हैं और वह उस कुंवारी औरत के बेटे हैं जो अलग-थलग रहने वाली थी।

नजाशी ने एक तिनका उठा कर कहा, अल्लाह की क़सम! तुमने जो कुछ बताया है हज़रत ईसा बिन मरयम अलै० उससे इतने भी (यानी उस तिनके के बराबर भी) ज़्यादा नहीं हैं।

यह सुनकर हब्शा के इज़्ज़तदार सरदारों ने कहा, अल्लाह की क़सम, अगर हब्शा के लोगों ने (तुम्हारी इस बात को) सुन लिया, तो वह तुम्हें (बादशाहत से) हटा देंगे।

उसने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं हज़रत ईसा अलै० के बारे में कभी भी इसके अलावा और कुछ नहीं कहूंगा। जब अल्लाह ने मेरा मुल्क मुझे वापस किया था, तो अल्लाह ने मेरे बारे में लोगों की बात नहीं मानी थी, तो अब मैं अल्लाह के दीन के बारे में उन लोगों की बात क्यों मानूं। ऐसे काम से अल्लाह की पनाह।[1]

इमाम अहमद ने हुज़ूर सल्ल० की मोहतरम बीवी उम्मे सलमा रज़ि० से लम्बी हदीस नक़ल की है। उसमें यह मज़्मून भी है कि नजाशी ने अल्लाह के रसूल सल्ल० के सहाबा के पास आदमी भेजकर उनको बुलाया। जब उसका दूत मुसलमानों के पास आया, तो वे सब जमा होकर एक दूसरे से मश्विरा करने लगे कि जब तुम उस नजाशी के पास जाओगे, तो उस आदमी यानी हज़रत ईसा अलै० के बारे में क्या कहोगे?

तो उन्होंने कहा, हम वही कहेंगे जो हुज़ूर सल्ल० ने हमें सिखाया और जिसका हुज़ूर सल्ल० ने हमें हुक्म दिया, फिर जो चाहे हो। जब ये लोग नजाशी के पास गए तो उसने अपने बड़े पादरियों को बुला रखा था और वे अपनी किताबें खोल कर नजाशी के चारों ओर बैठे हुए थे। नजाशी ने इन लोगों से पूछा, यह दीन क्या है, जिसकी वजह से तुमने अपनी क़ौम को छोड़ दिया और न मेरे दीन में दाख़िल हुए और न मौजूदा दीनों में से किसी दीन में?

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 72

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि नजाशी से बात करने वाले हज़रत जाफ़र रज़ि० थे, उन्होंने फ़रमाया, ऐ बादशाह! हम लोग जाहिल थे, बुतों को पूजते थे, मुरदार खाते थे, बेहयाई के काम करते थे और रिश्ते-नातों को तोड़ते थे, पड़ोसी से बुरा सुलूक करते थे, हमारा ताक़तवर कमज़ोर को खा जाता था। हम इस हाल में थे कि अल्लाह ने हममें से एक आदमी को रसूल बनाकर हमारे पास भेजा, जिसके हसब व नसब को, सच्चाई और अमानतदारी को, उसकी पाकदामनी को, हम पहले से जानते थे, उन्होंने हमें अल्लाह की ओर बुलाया कि हम उसे एक मानें और उसी की इबादत करें। हम और हमारे बाप-दादा अल्लाह के अलावा जिन पत्थरों और बुतों की इबादत करते थे, हम उन्हें छोड़ दें और उन्होंने हमें सच बोलने, अमानत अदा करने, रिश्ते-नाते जोड़ने, पड़ोसी से अच्छा व्यवहार करने, हराम कामों और नाहक़ के ख़ून बहाने से रुक जाने का हुक्म दिया और हमें बेहयाई के कामों से, झूठी गवाही देने से, यतीम का माल खा जाने से और पाकदामन औरत पर तोहमत लगाने से रोका और हमें इस बात का हुक्म दिया कि उस अल्लाह की इबादत करें और उनके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराएं, नमाज़ क़ायम करें, और ज़कात दें। इस तरह हज़रत जाफ़र ने दीन के और हुक्मों का भी ज़िक्र किया। हमने उनकी तस्दीक़ की और उन पर ईमान लाए और जो कुछ वह लेकर आए, उसमें (उसे पूरा करने में) उनकी पैरवी की।

चुनांचे हमने एक अल्लाह की इबादत शुरू कर दी कि उसके साथ किसी चीज़ को भी शरीक नहीं ठहराते हैं और अल्लाह ने हम पर जो कुछ हराम किया, हमने उसे हराम किया और उसने जो हमारे लिए हलाल किया, हमने उसे हलाल समझा। हमारी क़ौम ने हम पर ज़ुल्म शुरू कर दिया, उन्होंने हमें तरह-तरह के अज़ाब दिए और हमें प्यारे दीन से हटाने के लिए बड़ी आज़माइशों में डाला, ताकि हम अल्लाह की इबादत छोड़कर दोबारा बुतों की इबादत शुरू कर दें और जिन बुरे कामों को हम पहले हलाल समझते थे अब फिर उन कामों को हलाल समझने लगें। जब उन्होंने हमें बहुत दबाया और हम पर बड़े ज़ुल्म ढाए और हमें

मशक़्क़तें उठानी पड़ीं और दीन पर अमल करने में वे लोग रुकावट बन गए, तो ऐ बादशाह! हम आपके मुल्क में आ गए, और दूसरों को छोड़कर आपको चुना और आपके पड़ोस में रहना पसन्द किया और हमें उम्मीद है कि आपके यहां हम पर ज़ुल्म नहीं होगा।

नजाशी ने कहा, तुम्हारे नबी जो कलाम अल्लाह के यहां से लेकर आए हैं, क्या तुम्हें उसमें से कुछ याद है?

हज़रत जाफ़र रज़ि० ने कहा, हां, याद है।

नजाशी ने उनसे कहा, पढ़कर सुनाओ।

उन्होंने का-हा-या-ऐन-स्वाद (सूरः मरयम) की शुरू की आयतें पढ़कर सुनाईं। यह सुनकर नजाशी इतना रोया कि उसकी दाढ़ी तर हो गई।

हज़रत जाफ़र की तिलावत सुनकर नजाशी के बड़े पादरी भी इतने रोए कि उनकी किताबें गीली हो गईं। फिर नजाशी ने कहा कि यह कलाम और वह कलाम जो मूसा अलै० लेकर आए थे, दोनों एक ही नूर से निकले हुए हैं और (क़ुरैश के दोनों दूतों से) नजाशी ने कहा, तुम दोनों यहां से चले जाओ। मैं इन लोगों को तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता, बल्कि इसे सोच भी नहीं सकता।

जब वे दोनों नजाशी के दरबार से बाहर गए तो अम्र बिन आस ने (अपने साथी से) कहा, (आज तो बात हो चुकी) अल्लाह की क़सम! मैं कल नजाशी के पास जाकर इन मुसलमानों का ऐसा ऐब बयान करूंगा जिससे मुसलमानों की जमाअत की जड़ कट जाएगी।

उन दोनों में से अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ हमारे बारे में ज़्यादा एहतियात करने वाले और नर्म थे, इसलिए उसने कहा, ऐसा न करो, क्योंकि अगरचे ये हमारे विरोधी हैं, लेकिन हैं तो हमारे रिश्तेदार।

अम्र बिन आस ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं तो नजाशी को ज़रूर बताऊंगा कि ये मुसलमान हज़रत ईसा बिन मरयम को (अल्लाह का) बन्दा समझते हैं। चुनांचे अगले दिन हज़रत अम्र बिन आस ने नजाशी के यहां जाकर कहा, ऐ बादशाह! ये मुसलमान हज़रत ईसा बिन

मरयम अलै० के बारे में (गुस्ताख़ी की) बहुत बड़ी बात कहते हैं। आप आदमी भेजकर उनको बुलाएं और उनसे पूछें कि वह हज़रत ईसा अलै० के बारे में क्या कहते हैं?

चुनांचे नजाशी ने मुसलमानों के पास आदमी भेजा कि बादशाह मुसलमानों से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में पूछना चाहता है।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं, ऐसी परेशानी हम पर कभी नहीं आई थी। चुनांचे सारे मुसलमान जमा हुए और वे एक दूसरे से कहने लगे, जब नजाशी तुमसे हज़रत ईसा अलै० के बारे में पूछेगा तो तुम उनके बारे में क्या कहोगे? तो मुसलमानों ने तै किया कि अल्लाह की क़सम! हम वही कहेंगे जो अल्लाह ने उनके बारे में फ़रमाया है और जो हमारे नबी सल्ल० हमारे पास लेकर आए हैं। (हम तो सच्ची बात बताएंगे, चाहे जो कुछ हो जाए)

चुनांचे जब मुसलमान नजाशी के पास गए तो उसने उनसे कहा, तुम लोग हज़रत ईसा बिन मरयम अलै० के बारे में क्या कहते हो?

हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० ने नजाशी को यह जवाब दिया कि हम उनके बारे में वही कहते हैं जो हमारे नबी हमारे पास लेकर आए। वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल और उसकी (पैदा की हुई) रूह हैं और वह अल्लाह का वह कलिमा हैं जिसका अल्लाह ने कुंवारी और मर्दों से अलग-थलग रहने वाली मरयम की तरफ़ इलक़ा फ़रमाया था।

नजाशी ने अपना हाथ ज़मीन की तरफ़ बढ़ाया और एक तिनका उठा कर कहने लगा, अल्लाह की क़सम! तुमने जो कहा है, हज़रत ईसा अलै० उससे इस तिनके के बराबर भी बढ़े हुए नहीं हैं। (यह सुनकर) नजाशी के चारों ओर बैठे हुए उसके कमांडर गुस्से में बड़बड़ाने लगे।

नजाशी ने कहा, चाहे तुम कितना बड़बड़ाओ, अल्लाह की क़सम! (बात तो यही है और फिर मुसलमानों से कहा) तुम जाओ, तुम्हें हमारे देश में हर तरह का अम्न है, जो तुम्हें गाली देगा, उसे जुर्माना देना पड़ेगा, जो तुम्हें गाली देगा, उसे जुर्माना देना पड़ेगा, जो तुम्हें गाली देगा, उसे

जुर्माना देना पड़ेगा। मुझे यह बात हरगिज़ पसन्द नहीं है कि मैं तुममें से एक आदमी को भी (ज़रा भी) तक्लीफ़ पहुंचाऊं और मुझे सोने का एक पहाड़ मिल जाए (और अपने आदमियों से कहा) इन दोनों के तोहफ़े इन्हें वापस कर दो, मुझे इनकी ज़रूरत नहीं है। अल्लाह की क़सम ! जब अल्लाह ने मेरा देश मुझे वापस किया था, तो उसने मुझसे कोई रिश्वत न ली थी, तो मैं अल्लाह के मामले में कैसे रिश्वत ले लूं और अल्लाह ने मेरे बारे में लोगों की बात नहीं मानी थी, तो मैं अब अल्लाह के बारे में लोगों की बात क्यों मानूं ?

चुनांचे (क़ुरैश) के दोनों दूत अपने तोहफ़े लेकर ज़लील व ख़्वार होकर उसके दरबार से बाहर आए और हम लोग उसके यहां इत्मीनान से रहने लगे। इलाक़ा बेहतरीन था और वहां के लोग अच्छे पड़ोसी थे। नजाशी के हालात ठीक चल रहे थे कि अचानक एक दुश्मन ने उससे देश छीनने के लिए उस पर चढ़ाई कर दी। अल्लाह की क़सम ! उस वक़्त जितना हमें ग़म हुआ, उससे ज़्यादा ग़म भी हमें कभी नहीं हुआ और वह इस डर की वजह से कि यह दुश्मन कहीं नजाशी पर ग़ालिब न आ जाए, तो फिर ऐसा आदमी बादशाह बन जाएगा जो हमारे हक़ों को बिल्कुल न पहचानता होगा। नजाशी तो हमारे हक़ ख़ूब पहचानता है।

चुनांचे नजाशी (दुश्मन के मुक़ाबले के लिए) चल पड़ा। उसके और दुश्मन के दर्मियान नील नदी पड़ती थी। (नजाशी ने अपनी फ़ौज लेकर नील नदी पार किया, और वहां लड़ाई का मोर्चा क़ायम हुआ। हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० ने आपस में कहा, कौन आदमी ऐसा है, जो इस लड़ाई का हाल अपनी आंखों से जाकर देखे और फिर हमें आकर सारी ख़बर बता दे ?

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० ने फ़रमाया, मैं तैयार हूं।

लोगों ने कहा, हां, तुम ठीक हो और वह सहाबा में सबसे कम उम्र थे। चुनांचे मुसलमानों ने (नील नदी पार करने के लिए) एक मशक में हवा भरकर उनको दी। उन्होंने अपने सीने से वह मशक बांध ली और उस पर तैरते हुए नील नदी के किनारे पर पहुंच गए, जहां लड़ाई हो रही

थी, फिर कुछ देर वह चले और फिर वह फ़ौज के पास पहुंच गए और हम लोगों ने नजाशी के लिए अल्लाह से दुआ की कि अल्लाह इसे दुश्मन पर ग़ालिब फ़रमाए और पूरे देश में इसकी हुकूमत को मज़बूत करे।

हम लोग दुआ मांगते रहे और लड़ाई का नतीजा मालूम करने के इन्तिज़ार में थे कि अचानक हज़रत ज़ुबैर सामने से दौड़ते हुए नज़र आए जोकि कपड़ा हिला कर यह कह रहे थे कि तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, नजाशी कामियाब हो गया है और अल्लाह ने उसके दुश्मन को हलाक कर दिया और इसकी हुकूमत को उसके मुल्क में मज़बूत कर दिया।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मुझे याद नहीं कि हमें कभी इतनी ख़ुशी हुई हो जितनी हमें इस ख़बर से हुई। नजाशी भी वापस आ गया। अल्लाह ने उसका दुश्मन हलाक कर दिया था और उसकी हुकूमत को मुल्क में मज़बूत कर दिया और हब्शा की हुकूमत उसके हक़ में मज़बूत हो गई थी। चुनांचे हम उसके पास बड़े आराम और इत्मीनान से रहे। फिर हम लोग मक्का हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस आ गए।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमें नजाशी के यहां भेजा। हम लगभग 80 मर्द थे, जिनमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रज जाफ़र, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उरफ़ुता, हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन, और हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन भी थे। ये लोग नजाशी के यहां पहुंच गए। क़ुरैश ने अम्र बिन आस और उमारा बिन वलीद को तोहफ़े देकर भेजा। जब ये दोनों नजाशी के दरबार में पहुंचे, तो दोनों ने उसे सज्दा किया और फिर जल्दी से बढ़कर उसके दाएं-बाएं बैठ गए और उससे कहा कि हमारे कुछ चचेरे भाई हमें और हमारे दीन को छोड़कर तुम्हारे देश में आ गए हैं।

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 27, हुलीया, भाग 1, पृ० 115, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 9, सियर भाग 9, पृ० 144

नजाशी ने कहा, वे कहां हैं?

दोनों ने कहा, वे यहां तुम्हारे मुल्क में (फ़्लां जगह) हैं, आदमी भेजकर इनको बुला लो। चुनांचे नजाशी ने मुसलमानों के पास बुलाने के लिए आदमी भेजा।

हज़रत जाफ़र रज़ि० ने (अपने साथियों से) कहा, आज मैं तुम्हारी ओर से (बादशाह के सामने) बात करूंगा, चुनांचे सारे मुसलमान हज़रत जाफ़र के पीछे चल पड़े। हज़रत जाफ़र रज़ि० ने (दरबार में पहुंचकर) सलाम किया और सज्दा नहीं किया।

लोगों ने उनसे कहा, तुम्हें क्या हुआ? तुम बादशाह को सज्दा नहीं करते हो?

उन्होंने कहा, हम सिर्फ़ अल्लाह को सज्दा करते हैं, उसके अलावा किसी को नहीं करते।

नजाशी ने कहा, यह क्या बात है?

हज़रत जाफ़र ने फ़रमाया कि अल्लाह ने हमारी ओर एक रसूल भेजा, जिसने हमें हुक्म दिया कि हम अल्लाह के अलावा किसी को सज्दा न करें और उसने हमें नमाज़ और ज़कात का हुक्म भी दिया।

अम्र बिन आस ने नजाशी से कहा, ये लोग हज़रत ईसा बिन मरयम अलै० के बारे में आपके विरोधी हैं। तो नजाशी ने (हज़रत जाफ़र से) कहा, तुम लोग हज़रत ईसा बिन मरयम और उनकी मां के बारे में क्या कहते हो?

हज़रत जाफ़र ने कहा, हम भी वही कहते हैं, जो उनके बारे में अल्लाह ने कहा। वह अल्लाह की (पैदा की हुई) रूह और उसका वे कलिमा हैं जिनको अल्लाह ने कुंवारी और मर्दों से अलग-थलग करने वाली उस औरत की तरफ़ इलक़ा फ़रमाया था, जिसने किसी बशर ने हाथ नहीं लगाया और न (हज़रत ईसा की पैदाइश से) उनका कुंवारपन ख़त्म हुआ।

नजाशी ने ज़मीन से एक तिनका उठाकर कहा, ऐ हब्शा वालो! ऐ ईसाई मज़हब के उलेमा और पादरियो! ऐ सन्यास अपनाने वालो! हम

हज़रत ईसा अलै० के बारे में जो कहते हैं ये मुसलमान, इससे इस तिनके के बराबर भी ज़्यादा नहीं कहते हैं। (और फिर मुसलमानों से नजाशी ने कहा) स्वागत हो तुम्हें और उस ज़ाते अक़्दस को, जिसके पास से तुम आए हो और मैं गवाही देता हूं कि वह अल्लाह के रसूल हैं और यह वही हैं जिनका ज़िक्र हम इंजील में पाते हैं और ये वही रसूल हैं जिनकी हज़रत ईसा बिन मरयम अलै० ने बशारत दी थी। तुम (मेरे देश में) जहां चाहो, रहो। अल्लाह की क़सम! अगर बादशाही की ज़िम्मेदारी मुझ पर न होती, तो मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर होकर ख़ुद उनके दोनों जूते उठाता और फिर नजाशी ने हुक्म दिया, तो (क़ुरैश के) इन दोनों (दूतों) के तोहफ़े वापस कर दिए गए, फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद जल्दी से (मदीना को) गए, यहां तक कि बद्र में शरीक हो गए।[1]

हज़रत अबू मूसा रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें इस बात का हुक्म दिया कि हम हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० के साथ नजाशी के पास चले जाएं।

जब क़ुरैश को नजाशी के पास हमारे चले जाने की ख़बर हुई तो उन्होंने अम्र बिन आस और उमारा बिन वलीद को दूत बनाकर भेजा। फिर उन्होंने हज़रत इब्ने मसऊद की पिछली हदीस जैसा विषय बताया और इस हदीस में यह विषय भी है (कि नजाशी ने कहा) अगर बादशाही की मुझ पर ज़िम्मेदारी न होती तो मैं उनकी (हुज़ूर सल्ल० की) ख़िदमत में हाज़िर होकर उनकी जूतियों को चूमता (और मुसलमानों से कहा) तुम मेरे देश में जितना चाहो, रहो और उसने हमारे लिए खाने और कपड़े का हुक्म दिया।[2]

हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़ुरैश ने अम्र बिन आस और उमारा बिन वलीद को अबू सुफ़ियान की ओर से तोहफ़ा देकर नजाशी के पास भेजा और हम लोग उन दिनों नजाशी के देश में थे। उन्होंने नजाशी से कहा कि हमारे कुछ घटिया और बेवक़ूफ़

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 69, फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 130, हैसमी, भाग 6, पृ० 24
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 31, हुलीया, भाग 1, पृ० 114, बिदाया, भाग 3, पृ० 71

लोग आपके यहां आ गए हैं, वे आप हमें दे दें।

नजाशी ने कहा, जब तक मैं उनकी बात सुन न लूं, उनको तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता हूं। चुनांचे आदमी भेजकर हमें बुलाया। (हम लोग उसके दरबार में आए) तो उसने हमसे कहा, ये लोग (अम्र बिन आस और उमारा बिन वलीद) क्या कह रहे हैं?

हमने कहा, ये लोग बुतों की इबादत करते हैं और अल्लाह ने हमारी ओर एक रसूल भेजा, हम उस पर ईमान ले आए और उसकी तस्दीक़ की।

नजाशी ने उनसे पूछा कि क्या ये लोग तुम्हारे ग़ुलाम (दास) हैं?

उन्होंने कहा, नहीं।

फिर उसने कहा, कया इन पर तुम्हारा कुछ क़र्ज़ है?

उन्होंने कहा, नहीं, तो नजाशी ने कहा, तुम लोग इनका रास्ता छोड़ दो। चुनांचे हम लोग नजाशी के दरबार से बाहर आ गए। तो अम्र बिन आस ने कहा, हज़रत ईसा के बारे में तुम जो कहते हो, ये लोग इसके अलावा कुछ और कहते हैं।

नजाशी ने कहा, अगर इन्होंने हज़रत ईसा अलै० के बारे में वह न कहा, जो मैं कहता हूं तो मैं उनको अपने मुल्क में एक मिनट भी नहीं रहने दूंगा। और उसने हमारे पास बुलाने के लिए आदमी भेजा। यह उसका दोबारा बुलाना हमारे लिए पहली बार के बुलाने के मुक़ाबले में ज़्यादा परेशानी की वजह बना।

(हम दोबारा उसके पास गए) उसने कहा, तुम्हारे हज़रत हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम के बारे में क्या कहते हैं?

हमने कहा, वह कहते हैं कि वह यानी हज़रत ईसा अल्लाह (की पैदा की हुई) रूह हैं और वह अल्लाह का वह कलिमा हैं जिसे अल्लाह ने कुंवारी और मर्दों से अलग-थलग रहने वाली औरत (यानी हज़रत मरयम अलै०) की ओर इलक़ा फ़रमाया था।

हज़रत जाफ़र फ़रमाते हैं कि नजाशी ने दूत भेजकर कहा कि फ़्लां-फ़्लां बड़े पादरी और फ़्लां-फ़्लां राहिब (सन्यासी) को मेरे पास

बुलाकर ले आओ। चुनांचे इनमें से कुछ लोग नजाशी के पास आ गए।

नजाशी ने इन (पादरियों और राहिबों) से कहा, तुम लोग हज़रत ईसा बिन मरयम के बारे में क्या कहते हो?

उन्होंने जवाब दिया, आप हममें सबसे बड़े विद्वान हैं। आप क्या कहते हैं?

नजाशी ने ज़मीन से कोई छोटी-सी चीज़ उठाकर कहा कि हज़रत ईसा अलै० के बारे में इन मुसलमानों ने जो कुछ कहा है, हज़रत ईसा इससे इस छोटी-सी चीज़ के बराबर भी बढ़े हुए नहीं हैं। फिर नजाशी ने (मुसलमानों से) कहा, क्या तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंचाता है?

उन्होंने कहा, हां (चुनांचे नजाशी के कहने पर उसके) मुनादी ने यह एलान किया कि जो इन (मुसलमानों) में से किसी को तक्लीफ़ पहुंचाए, उसे चार दिरहम का जुर्माना कर दो। फिर नजाशी ने मुसलमानों से पूछा कि इतना जुर्माना तुम्हें काफ़ी है।

हमने कहा, नहीं। चुनांचे उन्होंने जुर्माना दोगुना यानी आठ दिरहम कर दिया।

जब हुज़ूर सल्ल० हिजरत फ़रमा कर मदीना तशरीफ़ ले गए और आपका वहां ग़लबा हो गया, तो हमने नजाशी से कहा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ग़ालिब आ गए हैं और हिजरत फ़रमा कर मदीना तशरीफ़ ले गए हैं और जिन काफ़िरों के (सताने के) बारे में हम आपको बताया करते थे, हुज़ूर सल्ल० ने उन सबको क़त्ल कर दिया है। इसलिए अब हम हुज़ूर सल्ल० के पास जाना चाहते हैं। आप हमें वापस जाने की इजाज़त दे दें।

उसने कहा, ठीक है। उसने हमें सवारियां भी दीं और सफ़र में खाने-पीने का सामान भी। फिर कहा, अपने हज़रत को यह सब कुछ बता देना जो मैंने आप लोगों के साथ किया है और यह मेरा नुमाइंदा तुम्हारे साथ जाएगा और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं और

उनकी ख़िदमत में अर्ज़ करना कि वह मेरे लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें।

हज़रत जाफ़र फ़रमाते हैं कि हम वहां से चले और फिर मदीना पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० ने मेरा स्वागत किया और मुझे अपने गले लगाया और फ़रमाया कि मैं नहीं कह सकता कि मुझे ख़ैबर-विजय से ज़्यादा ख़ुशी है या जाफ़र के वापस आने की? और हज़रत जाफ़र की वापसी ख़ैबर-विजय के मौक़े पर हुई थी। फिर हुज़ूर सल्ल० बैठ गए तो नजाशी के दूत ने कहा, यह हज़रत जाफ़र हैं, आप उनसे पूछ लें कि हमारे बादशाह ने उनके साथ क्या सुलूक किया? तो हज़रत जाफ़र ने कहा, जी हां। इसने हमारे साथ यह किया और यह किया और वापसी पर हमें सवारियां दीं और सफ़र में खाने-पीने का सामान भी और उसने शहादत का कलिमा भी पढ़ा था कि अल्लाह के साथ कोई माबूद नहीं है और आप अल्लाह के रसूल हैं और मुझसे कहा था कि हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ करना कि वह मेरे लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने खड़े होकर वुज़ू फ़रमाया और फिर तीन बार यह दुआ फ़रमाई—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلنَّجَاشِىْ

'अल्लाहुम-मग़्फ़िर लिनजाशी' (ऐ अल्लाह! नजाशी की मग़्फ़िरत फ़रमा)

तमाम मुसलमानों ने इस दुआ पर आमीन कही। फिर हज़रत जाफ़र फ़रमाते हैं कि मैंने उस दूत से कहा कि तुम वापस जाओ और तुमने हुज़ूर सल्ल० को जो कुछ करते हुए देखा है, वह अपने बादशाह को बता देना।[1]

हज़रत उम्मे अब्दुल्लाह बिन अबी हसमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह की क़सम! हम लोग हब्शा जाने की तैयारी कर रहे थे और (मेरे शौहर) हज़रत आमिर हमारी किसी ज़रूरत की वजह से गए हुए थे कि अचानक सामने से हज़रत उमर रज़ि० आए। वह मेरे पास आकर खड़े हो गए। वह अभी तक मुश्रिक ही थे और हमें उनकी ओर से बड़ी तक्लीफ़ें और सख़्तियां उठानी पड़ती थीं।

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 71, हैसमी भाग 6, पृ० 29

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ उम्मे अब्दुल्लाह ! क्या तुम लोग जा रहे हो ?

हज़रत उम्मे अब्दुल्लाह ने कहा, हां, जब तुम हमें सताते हो और हर वक़्त हमें दबाते हो तो अब हम जा रहे हैं और अल्लाह की जमीन में कहीं रहेंगे ? यहां तक कि अल्लाह इन मुसीबतों से निकलने की कोई शक्ल पैदा फ़रमा दे।

हज़रत उमर ने कहा, अल्लाह तुम्हारे साथ रहे।

हज़रत उम्मे अब्दुल्लाह फ़रमाती हैं, हज़रत उमर रज़ि० पर कुछ ऐसी रिक़्क़त पैदा हुई जो मैंने उनमें इससे पहले कभी नहीं देखी थी और फिर हज़रत उमर वापस चले गए और मेरे ख़्याल में यों हमारे वतन छोड़कर चले जाने का उन्हें बड़ा ग़म हो रहा था।

फिर हज़रत आमिर रज़ि० हमारी वह ज़रूरत पूरी करके आए तो मैंने कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह ! अगर तुम ज़रा पहले आ जाते तो देखते कि हमारे जाने की वजह से हज़रत उमर पर कैसी रिक़्क़त छाई हुई थी और वे कैसे दुखी थे।

हज़रत आमिर ने कहा, क्या तुम्हें इनके इस्लाम लाने की कुछ उम्मीद हो गई है ?

हज़रत उम्मे अब्दुल्लाह ने कहा, हां।

हज़रत आमिर ने कहा कि जब तक ख़त्ताब का गधा मुसलमान नहीं होगा, यह आदमी जिसे तुमने देखा है यानी उमर मुसलमान नहीं होगा (यानी जैसे गधे का इस्लाम नामुम्किन है, ऐसे ही उमर का इस्लाम लाना नामुम्किन है)

हज़रत उम्मे अब्दुल्लाह फ़रमाती हैं कि हज़रत आमिर चूंकि देख रहे थे कि उमर इस्लाम के ख़िलाफ़ बहुत सख़्त दिल है, इस वजह से उन्होंने उनके इस्लाम से मायूस होकर यह बात कही थी।[1]

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 79, इसाबा, भाग 4, पृ० 400, हैसमी, भाग 6, पृ० 24, मुस्तदरक, भाग 4, पृ० 58

उम्मे अब्दुल्लाह का नाम लैला है। हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस और उनके भाई हज़रत अम्र रज़ि० दोनों उन सहाबा में से हैं जो हिजरत करके हब्शा गए थे।

हज़रत ख़ालिद बयान करते हैं कि बद्र की लड़ाई के एक साल बाद जब हब्शा के ये मुहाजिरीन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में वापस आए और हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस के क़रीब पहुंचे, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनका स्वागत फ़रमाया। बद्र की लड़ाई में शरीक न होने का इन लोगों को बड़ा ग़म था।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, तुम किस बात का ग़म करते हो? और इन लोगों की तो एक ही हिजरत हुई और तुम्हारी तो दो हिजरतें हुई हैं। एक बार तो तुम हब्शा के बादशाह के पास हिजरत करके गए और दोबारा तुम उसके पास से मेरे पास हिजरत करके आए हो।[1]

हज़रत अबू मूसा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग यमन में थे कि हमें हुज़ूर सल्ल० के मदीना हिजरत करने की ख़बर मिली। चुनांचे मैं और मेरे दो भाई हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ हिजरत के इरादे से चले। मैं सबसे छोटा था। उनमें से एक हज़रत अबू बुरदा और दूसरे हज़रत अबू रुह्म थे।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत अबू मूसा ने या तो यह फ़रमाया कि हम अपनी क़ौम के पचास से कुछ ऊपर आदमियों में थे या यह फ़रमाया कि हम तिरपन आदमियों में थे या यह फ़रमाया कि हम बावन आदमियों में थे। हम एक कश्ती पर सवार हुए। इस कश्ती ने हमें नजाशी के पास हब्शा पहुंचा दिया।

वहां हमें हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ि० मिले, हम उनके साथ वहां ठहर गए, यहां तक कि हम इकट्ठे ही मदीना आए। जब हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप ख़ैबर पर विजय पा चुके थे। हम कश्ती वालों को बहुत से लोग कहा करते थे कि हिजरत में तुमसे आगे निकल गए, (यानी हम हिजरत करके पहले मदीना आए, तुम मदीना बहुत देर से पहुंचे।)

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 333

हज़रत अस्मा बिन्त उमैस रज़ि० भी हमारे साथ आने वालों में से थीं, वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवी हज़रत हफ़सा रज़ि० से मिलने गईं। हज़रत अस्मा मुसलमानों के साथ हिजरत करके हब्शा गई थीं।

इतने में हज़रत उमर रज़ि० हज़रत हफ़सा के पास आए। हज़रत अस्मा वहां ही थीं। जब हज़रत उमर ने हज़रत अस्मा को देखा तो पूछा, यह कौन है?

हज़रत हफ़सा ने कहा, यह अस्मा बिन्त उमैस है।

हज़रत उमर ने कहा, यह वही हब्शा वाली हैं? यह वही समुन्द्र का सफ़र करने वाली है?

हज़रत अस्मा ने कहा, जी हां, वही है।

हज़रत उमर ने कहा, हम हिजरत में तुमसे आगे निकल गए। इसलिए हम तुमसे ज़्यादा अल्लाह के रसूल सल्ल० के हक़दार हैं। हज़रत अस्मा को गुस्सा आ गया, कहने लगीं, ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। अल्लाह की क़सम! आप लोग तो हुज़ूर सल्ल० के साथ थे। आप लोगों में से जिसे भूख लगती, उसे हुज़ूर सल्ल० खिलाते, और जिसे न आता, उसे आप सिखा देते। हम लोग हब्शा में ऐसे भू-भाग में थे, जहां के लोग दीन से दूर और दीन से बुग़्ज़ रखने वाले थे और हमें यह सब कुछ अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की वजह से बरदाश्त करना पड़ा। अल्लाह की क़सम! मैं उस वक़्त तक कुछ न खाऊंगी और न कुछ पियूंगी, जब तक तुमने जो कुछ कहा है, वह हुज़ूर सल्ल० को बताकर पूछ न लूं और अल्लाह की क़सम! न मैं झूठ बोलूंगी और न मैं इधर-उधर की बातें करूंगी और न मैं अपनी तरफ़ से बात बढ़ाऊंगी।

जब हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए तो हज़रत अस्मा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! हज़रत उमर ने ऐसे और ऐसे कहा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, फिर तुमने उनको क्या जवाब दिया?

मैंने कहा कि जवाब में मैंने यह और यह कहा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह तुमसे ज़्यादा हक़दार नहीं हैं? उमर

और उनके साथियों की एक हिजरत है और तुम कश्ती वालों की दो हिजरतें हैं।

हज़रत अस्मा फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू मूसा और कश्ती वालों को मैंने देखा कि वे जमाअतें बन-बनकर मेरे पास आते और मुझसे यह हदीसे नबवी पूछते और हुज़ूर सल्ल० ने उनके बारे में जो यह फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई थी, उनको इससे ज़्यादा न किसी चीज़ से ख़ुशी थी और न उनके नज़दीक इससे ज़्यादा कोई चीज़ बड़ी थी।

हज़रत अस्मा कहती हैं कि मैंने हज़रत अबू मूसा को देखा कि वह (ख़ुशी की वजह से) बार-बार मुझसे यह हदीस सुनते।

हज़रत अबू मूसा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अशअरी साथी जब रात को कुरआन पढ़ते हैं, तो मैं उनकी आवाज़ को पहचान लेता हूं और रात को उनके कुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनकर उनकी क़ियामगाहों को मालूम कर लेता हूं। चाहे मैंने दिन में उनकी क़ियामगाहें न देखी हों कि कहां हैं?

इन अशअरी साथियों में से हज़रत हकीम भी हैं। (यह इतने बहादुर थे कि) जब उनका दुश्मन से सामना होता (और वे भागना चाहते) तो (लड़ने पर तैयार करने के लिए) उनसे कहते कि मेरे साथी कह रहे हैं कि तुम उनका इन्तिज़ार कर लो, (अभी मत जाओ) या मुसलमानों के घुड़सवारों से कहते कि मेरे साथी कह रहे हैं कि तुम उनका इन्तिज़ार करो (इकट्ठे मिलकर दुश्मन पर हमला करेंगे।)[1]

हज़रत शाबी कहते हैं कि हज़रत अस्मा बिन्त उमैस रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! कुछ लोग हम पर फ़ख़ करते हैं और वे यह कहते हैं कि हम अव्वल मुहाजिरों में से नहीं हैं?

आपने फ़रमाया नहीं, बल्कि तुम्हारी दो हिजरतें हैं, पहले हिजरत करके हब्शा गए और फिर हिजरत करके (मदीना) आए।[2]

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 205
2. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 341, कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 18, भाग 8, पृ० 333

हज़रत अबू सलमा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० की मदीना को हिजरत

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं, जब हज़रत अबू सलमा रज़ि० ने मदीना जाने का पक्का इरादा कर लिया, तो उन्होंने मेरे लिए अपने ऊंट पर कजावा बांधा, फिर मुझे उस पर सवार कराया और मेरे बेटे सलमा बिन अबी सलमा को मेरी गोदी में मेरे साथ बिठा दिया। फिर वह अपने ऊंट को आगे से पकड़ कर मुझे ले चले। जब (मेरे क़बीले) बनू मुग़ीरह के आदमियों ने उनको (यों जाते हुए) देखा तो उनकी तरफ़ खड़े हुए और कहा कि तुम्हारी जान पर हमारा ज़ोर नहीं चलता (अपने बारे में तुम अपनी मर्ज़ी चलाते हो, हमारी नहीं मानते) लेकिन हम अपनी इस लड़की को कैसे तुम पर छोड़ दें कि तुम उसे दुनिया भर में लिए फिरो।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० कहती हैं कि मेरे क़बीले वालों ने यह कहकर ऊंट की नकेल हज़रत सलमा के हाथ से छीन ली और मुझे उनसे छुड़ा कर ले गए। इस पर हज़रत अबू सलमा के क़बीला बनू अब्दुल असद को ग़ुस्सा आया और उन्होंने कहा कि जब तुमने अपनी लड़की (उम्मे सलमा) को हमारे आदमी (अबू सलमा) से छीन ली है तो हम अपना बेटा (सलमा) तुम्हारी लड़की के पास नहीं रहने देंगे। तो मेरे बेटे (सलमा) पर उनकी आपस में खींचा-तानी शुरू हो गई, यहां तक कि उन्होंने उसका बाज़ू उतार दिया और बनू अब्दुल असद उसे लेकर चले गए। मुझे बनू मुग़ीरा ने अपने यहां रोक लिया। मेरे ख़ाविंद अबू सलमा मदीना चले गए। इस तरह मैं, मेरा बेटा और मेरे ख़ाविंद हम तीनों एक दूसरे से जुदा हो गए।

मैं हर सुबह बाहर अबतह मैदान में जाकर बैठ जाती थी और शाम तक वहां रोती रहती थी। यों लगभग एक साल बीत गया, यहां तक कि एक दिन क़बीला बनू मुग़ीरह का एक आदमी मेरे पास से गुज़रा। वह मेरा चचेरा भाई था। मेरी हालत देखकर उसे मुझ पर तरस आ गया, तो उसने बनू मुग़ीरह से कहा, क्या तुम उस मिस्कीन औरत को जाने नहीं

देते? तुम लोगों ने उसे उसके बेटे और उसके ख़ाविंद तीनों को अलग-थलग कर रखा है। इस पर बनू मुग़ीरह ने मुझसे कहा, अगर तुम चाहती हो तो अपने ख़ाविंद के पास चली जाओ।

फ़रमाती हैं कि इस बार बनू अब्दुल असद ने मेरा बेटा मुझे वापस कर दिया। मैंने अपने ऊंट पर कजावा बांधा, फिर मैंने अपने बेटे को अपनी गोद में बिठाया, फिर मैं मदीना अपने शौहर के पास जाने के लिए चल पड़ी और मेरे साथ अल्लाह का कोई बन्दा नहीं था। जब मैं तनओम पहुंची, तो तुझे वहां बनू अब्दुद्दार के हज़रत उस्मान बिन तलहा बिन अबी तलहा रज़ि० मिले। उन्होंने कहा, ऐ बिन्त अबी उमैया! कहां जा रही हो?

मैंने कहा, अपने शौहर के पास मदीना जाना चाहती हूं।

उन्होंने कहा, क्या तुम्हारे साथ कोई है?

मेरे अल्लाह और मेरे इस बेटे के अलावा कोई मेरे साथ नहीं है।

वह कहने लगे, अल्लाह की क़सम! तुम्हें तो (यों अकेला) नहीं छोड़ा जा सकता। चुनांचे उन्होंने ऊंट की नकेल पकड़ी और मेरे साथ चल पड़े और मेरे ऊंट को ख़ूब तेज़ चलाया। अल्लाह की क़सम! मैं अरब के किसी आदमी के साथ नहीं रही, जो उनसे ज़्यादा शरीफ़ और अच्छे अख़्लाक़ वाला हो। जब वह मंज़िल पर पहुंचते तो मेरे ऊंट को बिठा कर ख़ुद पीछे हट जाते और जब मैं ऊंट से उतर जाती तो मेरे ऊंट को लेकर पीछे चले जाते और उसका कजावा उतार कर उसे किसी पेड़ से बांध देते, फिर एक तरफ़ को किसी पेड़ के नीचे जाकर लेट जाते। जब चलने का वक़्त क़रीब आता तो मेरे ऊंट पर कजावा बांध कर आगे मेरे पास लाकर उसे बिठा देते और ख़ुद पीछे चले जाते और मुझसे कहते, इस पर सवार हो जाओ और जब मैं सवार होकर अपने ऊंट पर ठीक तरह बैठ जाती, तो अगली मंज़िल तक मेरे ऊंट की नकेल आगे से पकड़ कर चलते रहते। उन्होंने सारे सफ़र में मेरे साथ यही तरीक़ा रखा, यहां तक कि मदीना पहुंचा दिया।

जब क़ुबा में बनू अम्र बिन औफ़ की आबादी पर उनकी नज़र पड़ी,

तो मुझसे कहा तुम्हारा शौहर इस बस्ती में है, तुम इसमें दाख़िल हो जाओ, अल्लाह तुम्हें बरकत दे। हज़रत अबू सलमा वहीं ठहरे हुए थे। फिर वहां से वह मक्का वापस चले गए।

हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाया करती थीं कि अबू सलमा के घराने ने जितनी मुसीबतें बरदाश्त की हैं, मेरे ख़्याल में और किसी घराने ने इतनी मुसीबतें नहीं बरदाश्त की हैं और मैंने हज़रत उस्मान बिन तलहा से ज़्यादा शरीफ़ और अच्छे अख़्लाक़ वाला सफ़र का साथी नहीं देखा और हज़रत उस्मान बिन तलहा बिन अबी तलहा अब्दरी रज़ि० हुदैबिया के समझौते के बाद मुसलमान हुए और उन्होंने और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने इकट्ठा हिजरत की।[1]

हज़रत सुहैब बिन सिनान रज़ि० की हिजरत

हज़रत सुहैब रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे तुम्हारी हिजरत की जगह दिखाई गई है, वह जगह दो पथरीले मैदानों के दर्मियान एक शोरेली ज़मीन है और वह जगह हजर है या यसरिब है और फिर हुज़ूर सल्ल० मदीना तशरीफ़ ले गए और आपके साथ हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। मेरा इरादा भी आपके साथ जाने का था, लेकिन मुझे कुरैश के कुछ नवजवानों ने रोक लिया। मैं उस रात खड़ा रहा, बिल्कुल नहीं बैठा।

(वे पहरा दे रहे थे, मुझे खड़ा देखकर) वे कहने लगे, अल्लाह ने उसे पेट की बीमारी में डालकर तुम्हें बे-फ़िक्र कर दिया है। (यह अब कहीं जा नहीं सकता, इसलिए अब इसके पहरा देने की ज़रूरत नहीं है) हालांकि मुझे कोई तक्लीफ़ नहीं थी। चुनांचे वे सब सो गए, मैं वहां से निकल पड़ा।

अभी मैं चला ही था कि इनमें से कुछ लोग मुझ तक पहुंच गए। ये लोग मुझे वापस ले जाना चाहते थे, मैंने उनसे कहा, मैं तुम्हें कुछ ऊक़िया सोना दे देता हूं तुम मेरा रास्ता छोड़ दो और इस वायदे को पूरा कर दो।

1 बिदाया, भाग 3, पृ० 169

चुनांचे मैं उनके पीछे चलता हुआ मक्का पहुंचा और मैंने उनसे कहा कि दरवाज़े की दहलेज़ के नीचे खोदो, वहां वह सोना रखा हुआ है और फ़्लानी औरत के पास जाओ और उससे (मेरे) दो जोड़े ले लो।

फिर मैं वहां से रवाना होकर क़ुबा हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। अभी आप क़ुबा से चले नहीं थे। जब मुझे देखा तो फ़रमाया, ऐ अबू यह्या! (तुम्हारी) तिजारत में बड़ा नफ़ा हुआ (कि सोना और कपड़े देकर तुमने हिजरत की सआदत हासिल की)

मैंने अर्ज़ किया, मुझसे पहले तो आपके पास कोई आया नहीं, इसलिए हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने ही आपको इस वाक़िए की ख़बर दी है।[1]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत सुहैब रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ हिजरत के इरादे से चल पड़े, तो क़ुरैश के मुश्रिकों की एक जमाअत ने उनका पीछा किया। (जब वह उनके क़रीब पहुंच गए तो) उन्होंने सवारी से उतर कर अपना तरकश संभाला और कहा, ऐ क़ुरैश के लोगो! तुम्हें मालूम है कि मैं तुममें सबसे ज़्यादा तीरंदाज़ हूं। अल्लाह की क़सम! जब मैं तुमको अपने तरकश के तमाम तीरों से निशाना बना लूंगा, फिर तुम मुझ तक पहुंच सकोगे। फिर (जब तीर ख़त्म हो जाएंगे तो) जब तक मेरे हाथ में तलवार रही, मैं तुम पर तलवार से हमले करता हूंगा, इसके बाद तुम जो चाहे कर लेना और अगर तुम कहो तो मैं मक्का में अपने माल का तुमको पता बता दूं (वह तुम ले लो) और तुम मेरा रास्ता छोड़ दो।

उन्होंने कहा, ठीक है। चुनांचे इस पर उनका समझौता हो गया। उन्होंने उनको अपने माल का पता बता दिया। इस पर अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० पर यह आयत उतारी—

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ

'और लोगों में एक आदमी वह है कि बेचता है अपनी जान को अल्लाह की रिज़ा हासिल करने में' यह आयत आख़िर तक उतरी।

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 173, हैसमी, भाग 6, पृ० 60, हुलीया, भाग 1, पृ० 152

जब हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत सुहैब को देखा तो फ़रमाया, (तुम्हारी) तिजारत में बड़ा नफ़ा हुआ। ऐ अबू यह्या! तिजारत में बड़ा नफ़ा हुआ ऐ अबू यह्या! और उनको यह आयत पढ़कर सुनाई।[1]

हज़रत इक्रिमा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत सुहैब रज़ि० जब हिजरत के इरादे से चले तो मक्का वालों ने उनका पीछा किया तो उन्होंने अपना तरकश निकाला और उसमें से चालीस तीर निकालकर कहा, जब मैं तुममें से हर आदमी के जिस्म में एक तीर घुसा दूंगा और (तीरों के ख़त्म होने पर) तलवार से तुम लोगों का मुक़ाबला कर लूंगा, फिर तुम मुझ तक पहुंच सकोगे और तुम जानते हो कि मैं (बड़ा बहादुर) मर्द हूं। या यों करो कि) मैं मक्का में दो बांदियां छोड़कर आया हूं, वह तुम लोग ले लो (और मुझे जाने दो)।[2]

हज़रत अनस रज़ि० भी ऐसी रिवायत बयान करते हैं और उसमें यह मज़्मून भी है कि (हज़रत सुहैब के इस क़िस्से के बाद) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आयत उतरी—

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ

जब हुज़ूर सल्ल० ने उनको देखा तो फ़रमाया, ऐ अबू यह्या! तिजारत में बड़ा नफ़ा हुआ और आपने उनको यही आयत पढ़कर सुनाई।[3]

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब मैंने मक्का से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ हिजरत करने का इरादा किया, तो मुझसे क़ुरैश ने कहा, जब तुम (रूम से) हमारे पास आए थे, तो तुम्हारे पास कुछ माल न था और अब तुम इतना माल लेकर (मक्का से) जा रहे हो, अल्लाह की क़सम! यह कभी नहीं हो सकेगा, तो मैंने उनसे कहा, अच्छा यह बताओ, अगर मैं तुम्हें अपना माल दे दूं तो फिर क्या

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 162, कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 237, इस्तीआब, भाग 2, पृ० 180
2. मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 398
3. इसाबा, भाग 2, पृ० 195

तुम मुझे छोड़ दोगे?

उन्होंने कहा, हां। चुनांचे मैंने उनको अपना माल दे दिया। उन्होंने मुझे छोड़ दिया। मैं वहां से चल कर मदीना पहुंच गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सारी बात पहुंच गई, तो आपने दो बार फ़रमाया, सुहैब बहुत नफ़ा में रहा। सुहैब बहुत नफ़ा में रहा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की हिजरत

हज़रत मुहम्मद बिन ज़ैद रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० जब अपने (मक्का वाले) उस मकान के पास से गुज़रते जिससे हिजरत करके (मदीना) गए थे, तो अपनी दोनों आंखों को बन्द कर लेते और न उसे देखते और न कभी उसमें ठहरते।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन ज़ैद बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रह० फ़रमाते हैं कि जब भी हज़रत इब्ने उमर रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र करते तो रो पड़ते और जब भी अपने (मक्का वाले) मकान के पास से गुज़रते तो अपनी दोनों आंखें बन्द कर लेते।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ि० की हिजरत

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ि० (मक्का से) हिजरत करने वालों में सबसे आख़िरी आदमी थे। (सही यह है कि यह क़िस्सा हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ि० का नहीं है, बल्कि उनके भाई हज़रत अब्द बिन जह्श का है, जैसा कि आगे आ रहा है) यह ना-बीना हो चुके थे। जब इन्होंने हिजरत का पक्का इरादा कर लिया, तो उनकी बीवी, जो अबू सुफ़ियान बिन हर्ब बिन उमैया की बेटी थीं, उसको यह बात नागवार गुज़री और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श को यह मश्विरा दिया कि वह हुज़ूर सल्ल० के अलावा किसी और के पास हिजरत करके जाएं, (लेकिन उन्होंने यह

1. इब्ने कसीर, भाग 1, पृ० 247, इब्ने साद भाग 3, पृ० 162
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 303
3. इसाबा, भाग 2, पृ० 249

मश्विरा क़ुबूल न किया और वह अपने बाल-बच्चों और माल को लेकर क़ुरैश से छिपकर के हिजरत करके मदीना हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हो गए। (उनकी हिजरत से उनके ससुर अबू सुफ़ियान बिन हर्ब को बड़ा ग़ुस्सा आया और अबू सुफ़ियान ने तुरन्त जाकर उनके मकान को बेच डाला जो मक्का में था।

इसके बाद अबू जह्ल बिन हिशाम, उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और हुवैतिब बिन अब्दुल उज़्ज़ा उस मकान के पास से गुज़रे। उस मकान में उस वक़्त नमक वग़ैरह लगाकर खालें रखी हुई थीं (ताकि उनकी बदबू ख़त्म हो जाए।) यह देखकर उत्बा की आंखों में आंसू आ गए और उसने यह शेर (पद) पढ़ा—

وَكُلُّ دَارٍ وَّاِنْ طَالَتْ سَلَامَتُهَا   يَوْمًا سَتُدْرِكُهَا النَّكْبَاءُ وَالْحُوْبُ

'हर घर को एक दिन वीरान और फ़ना होना है, चाहे कितना ही लम्बा अर्सा वह सही-सालिम रहे।'

अबू जह्ल ने हज़रत अब्बास की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, हमारे लिए ये सारी मुसीबतें (ऐ बनू हाशिम!) तुमने खड़ी की हैं। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का विजय के दिन मक्का में दाख़िल हुए, तो हज़रत अबू अहमद (अब्द बिन जह्श) खड़े होकर अपने घर की मांग करने लगे।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० को फ़रमाया, वह खड़े होकर अबू अहमद को एक ओर ले गए और उन्हें आख़िरत में लेने की तर्ग़ीब दी। चुनांचे हज़रत अबू अहमद ने अपने घर की मांग छोड़ दी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० मक्का विजय के दिन अपने हाथ का सहारा लिए हुए बैठे हुए थे और हज़रत अबू अहमद (मक्का से मुहब्बत ज़ाहिर करने के लिए) यह शेर (पद) पढ़ रहे थे—

حَبَّذَا مَكَّةُ مِنْ وَّادِیْ   بِهَا اَمْشِیْ بِلَا هَادِیْ

'मक्का की घाटी कितनी प्यारी है, जिसमें मैं रहबर के बग़ैर ही चल-फिर लेता हूं।'

بِهَا يَكْثُرُ عُوَّادِي بِهَا تُرْكَزُ أَوْتَادِي

'बीमारी की शक्ल में मेरा पूछना करने वाले बहुत हैं। इसमें मेरी बड़ाई के बहुत से खूंटे गड़े हुए हैं।'[1]

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद मुहाजिरीन में से सबसे पहले आमिर बिन रबीआ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि० मदीना आए। हज़रत अब्दुल्लाह अपने बाल-बच्चों और अपने भाई हज़रत अब्द अबू अहमद को भी साथ लाए।

हज़रत अबू अहमद अंधे थे, लेकिन मक्का में ऊपर नीचे (हर जगह) बग़ैर रहबर (गाइड) के चल-फिर लेते थे और वह शायर भी थे। हज़रत फ़ारिआ बिन्त अबू सुफ़ियान बिन हर्ब उनके निकाह में थीं। हजरत उमैमा बिन्त अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम रज़ि० उनकी मां थीं। ख़ानदान बनू जहश के घर को (हिजरत कर जाने की वजह से) ताला लग गया था। उत्बा उसके पास से गुज़रा। इसके बाद रिवायत करने वाले ने पिछले क़िस्से जैसा क़िस्सा बयान किया है...।'

इसलिए देखने में या तो इस हदीस में अबू अहमद का ज़िक्र रह गया है या लफ़्ज़ अब्दुल्लाह ग़लती से लिखा गया है और सही अब्द बिन जहश है, क्योंकि अब्द बिन जहश तो अंधे थे, उनके भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश अंधे नहीं थे और इन्हीं हज़रत अबू अहमद बिन जहश ने अपने ख़ानदान की हिजरत के बारे में नीचे लिखे शेर कहे हैं[2]—

وَلَمَّا رَأَتْنِي أُمُّ أَحْمَدَ غَادِيًا بِذِمَّةِ مَنْ أَخْشَى بِغَيْبٍ وَأَرْهَبُ

'और जब (मेरी बीवी) उम्मे अहमद ने देखा कि मैं उस ज़ात के भरोसे पर (हिजरत करके) जाने वाला हूं, जिससे मैं देखे बग़ैर डरता हूं।'

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 64
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 101

تَقُوْلُ وَاِمَّا كُنْتَ لَابُدَّ فَاعِلًا ... فَيَمِّمْ بِنَا الْبُلْدَانَ وَلْتَنْأَ يَثْرِبُ

'तो कहने लगी, अगर तुम्हें हिजरत ही करनी है, तो हमें किसी और शहर में ले जाओ और यसरिब दूर ही रहे (वहां न ले जाओ)'

فَقُلْتُ لَهَا مَا يَثْرِبُ بِمَظِنَّةٍ ... وَمَا يَشَأِ الرَّحْمٰنُ فَالْعَبْدُ يَرْكَبُ

'मैंने उससे कहा, यसरिब कोई बुरी जगह तो नहीं है और रहमान जो चाहता है, बन्दा वही करता है।'

اِلَى اللّٰهِ وَجْهِىْ وَالرَّسُوْلِ وَمَنْ يُّقِمْ ... اِلَى اللّٰهِ يَوْمًا وَّجْهَهٗ لَا يُخَيَّبُ

'मेरा रुख़ अल्लाह और रसूल की ओर है और जो एक दिन भी अपना रुख़ अल्लाह की ओर करेगा, वह कभी महरूम नहीं रहेगा।'

فَكَمْ قَدْ تَرَكْنَا مِنْ حَمِيْمٍ مُّنَاصِحٍ ... وَنَاصِحَةٍ تَبْكِىْ بِدَمْعٍ وَّتَنْدُبُ

'हमने कितने पक्के और सच्चे दोस्त छोड़ दिए और कितनी भला चाहने वाली और नसीहत करने वाली औरतें आंसू बहाती, नौहा करती छोड़ दीं।'

تَرٰى اَنَّ وَتْرًا نَأْيُنَا عَنْ بِلَادِنَا ... وَنَحْنُ نَرٰى اَنَّ الرَّغَائِبَ نَطْلُبُ

'वे भला चाहने वाली औरतें यह समझती हैं कि वतन से दूरी हमारी हलाकत की वजह है और हम समझते हैं कि हम बड़े बदले वाले पसन्दीदा अमल को खोजने जा रहे हैं।'

دَعَوْتُ بَنِىْ غَنْمٍ لِّحَقْنِ دِمَائِهِمْ ... وَلِلْحَقِّ لَمَّا لَاحَ لِلنَّاسِ مَلْحَبُ

'जब लोगों के लिए हक़ का साफ़ रास्ता ज़ाहिर हो गया, तो मैंने बनू ग़नम को उनके अपने ख़ून की हिफ़ाज़त की और हक़ की दावत दी।'

اَجَابُوْا بِحَمْدِ اللّٰهِ لَمَّا دَعَاهُمْ ... اِلَى الْحَقِّ دَاعٍ وَّالنَّجَاحِ فَاَوْعَبُوْا

'जब उनको दावत देनेवाले ने हक़ और कामियाबी की दावत दी, तो अलहम्दु लिल्लाह वे सब मान गए और फिर वे सबके सब ग़ज़्वे के लिए निकल पड़े।'

وَكُنَّا وَاَصْحَابًا لَّنَا فَارَقُوا الْهُدٰى ... اَعَانُوْا عَلَيْنَا بِالسِّلَاحِ وَاَجْلَبُوْا

كَفَوْجَيْنِ اَمَّا مِنْهُمَا فَمُوَفَّقٌ ... عَلَى الْحَقِّ مَهْدِىٌّ وَّفَوْجٌ مُّعَذَّبُ

'हमारे कुछ साथियों ने हिदायत को छोड़ दिया और उन्होंने इकट्ठे होकर हथियारों से हम पर हमला कर दिया। हमारी और उनकी मिसाल दो फ़ौजों जैसी है, जिसमें से एक फ़ौज को हक़ की तौफ़ीक़ मिली हुई है और वे हिदायत पाए हुए हैं और दूसरी फ़ौज पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल हुआ है।'

طَغَوْا وَتَمَنَّوْا كِذْبَةً وَأَزَلَّهُمْ   عَنِ الْحَقِّ إِبْلِيْسُ فَخَابُوْا وَخُيِّبُوْا

'उन्होंने सरकशी अख़्तियार की और ग़लत बातों की तमन्ना की और इबलीस ने उनको हक़ से फिसला दिया, चुनांचे वह नाकाम हुए और महरूम कर दिए गए।'

وَرُعْنَا إِلَى قَوْلِ النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ   فَطَابَ وُلَاةُ الْحَقِّ مِنَّا وَطُيِّبُوْا

'और हमने हज़रत नबी करीम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात की तरफ़ रुजू किया (और उसे मान लिया) और हममें से जो हक़ के मददगार बने, वे ख़ुद भी बड़े उम्दा हैं और उनको (अल्लाह की ओर से) बड़ा उम्दा और पाकीज़ा बनाया गया है।'

نَمُتُّ بِأَرْحَامٍ إِلَيْهِمْ قَرِيْبَةٍ   وَلَا قُرْبَ بِالْأَرْحَامِ إِذْ لَا تَقَرُّبُ

'हम क़रीब की रिश्तेदारियों को वास्ता बनाकर उनके क़रीब होना चाहते हैं और जब रिश्तेदारियों का लिहाज़ न रखा जाए, तो उनसे क़ुर्ब हासिल नहीं होता है।'

فَأَيُّ ابْنِ أُخْتٍ بَعْدَنَا يَأْمَنَنَّكُمْ   وَأَيَّةُ صِهْرٍ بَعْدَ صِهْرِيْ تُرَاقَبُ

'इसलिए हमारे बाद कौन-सा भांजा तुमसे बच सकेगा और मेरी दामादी के बाद कौन-सी दामादी का ख़्याल रखा जा सकेगा?'

سَتَعْلَمُ يَوْمًا أَيُّنَا إِذْ تَزَايَلُوْا   وَزُيِّلَ أَمْرُ النَّاسِ لِلْحَقِّ أَصْوَبُ

'जिस दिन लोग अलग-अलग हो जाएंगे (मोमिन एक तरफ़ और काफ़िर एक तरफ़) और लोगों की बात को अलग-अलग कर दिया जाएगा। (हर एक के हक़ पर या बातिल पर होने को साफ़ कर दिया जाएगा) उस दिन तुम जान लोगे कि हममें से कौन हक़ को सही तौर से अपनाने वाला है।'

हज़रत ज़मरा बिन अबुलईस या इब्नुल ईस रज़ि० की हिजरत

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब यह आयत उतरी—

لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ

'बराबर नहीं हैं बैठ रहने वाले मुसलमान जिनको कोई उज्र नहीं और वे मुसलमान जो लड़ने वाले हैं, अल्लाह की राह में अपने माल से और जान से।'

मक्का के मिस्कीन मुसलमानों ने इस आयत से यह समझा कि उनको मक्का में रहने की इजाज़त है (गो जिहाद में जाना अफ़ज़ल है) फिर यह आयत उतरी—

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

'वे लोग कि जिनकी जान निकालते हैं फ़रिश्ते, इस हालत में कि वे बुरा कर रहे हैं अपना, कहते हैं उनसे फ़रिश्ते तुम किस हाल में थे?'

वे कहते हैं कि हम थे बेबस इस मुल्क में।

कहते हैं फ़रिश्ते, क्या न थी अल्लाह की ज़मीन फैली हुई, जो चले जाते वतन छोड़कर वहां। सवालियों का ठिकाना है दोज़ख़ और वे बहुत बुरी जगह पहुंचे।

इस पर उन मिस्कीन मुसलमानों ने कहा कि इस आयत ने तो हिला कर रख दिया।

(इस आयत से यह मालूम होता है कि हिजरत करना ज़रूरी है) फिर यह आयत उतरी—

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ
لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا

'मगर जो हैं बेबस मर्दों और औरतों और बच्चों में से जो नहीं कर सकते कोई तदबीर और न जानते हैं कहीं का रास्ता।' (इस आयत से मालूम हुआ कि जो मुसलमान माज़ूर हैं, उन पर हिजरत फ़र्ज़ नहीं है

और मक्का में रहने की उनको इजाज़त है।)

हज़रत ज़मरा बिन औस रज़ि० क़बीला बनू लैस के थे और यह अंधे थे और मालदार भी थे, इस आयत के उतरने पर उन्होंने कहा कि अगरचे मेरी निगाह चली गई है, लेकिन हिजरत के लिए मैं तदबीर कर सकता हूं, क्योंकि मेरे पास माल और गुलाम हैं, इसलिए मुझे सवारी पर बिठा दो।

चुनांचे उन्हें सवारी पर बिठाया गया, वह बीमार थे, धीरे-धीरे रवाना हुए और तनओम पहुंचकर उनका इंतिक़ाल हो गया। चुनांचे मस्जिद तनओम के पास उनको दफ़न किया गया, तो ख़ास उन्हीं के बारे में यह आयत उतरी—

وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

'और जो कोई निकले अपने घर से हिजरत करके अल्लाह और रसूल की तरफ़ फिर आ पकड़े उसको मौत, तो मुक़र्रर हो चुका उसका सवाब अल्लाह के यहां और है अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान।'[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत ज़मरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अपने घर से जब हिजरत के लिए चलने लगे, तो अपने घरवालों से कहा कि मुझे सवारी पर बिठा दो और मुश्रिकों की ज़मीन से निकालकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर रवाना कर दो।

चुनांचे यह रवाना हुए, लेकिन हुज़ूर सल्ल० तक पहुंचने से पहले ही रास्ते में उनका इन्तिक़ाल हो गया, जिस पर यह आयत आई—

وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ
فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

हज़रत वासिला बिन असक़अ रज़ि० की हिजरत

हज़रत वासिला बिन असक़अ रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं अपने घर से इस्लाम के इरादे से चला, फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप नमाज़ में थे। मैं भी आख़िरी सफ़ में खड़ा हो गया और मैंने उन मुसलमानों की तरह नमाज़ पढ़ी।

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 212

जब हुज़ूर सल्ल० नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आख़िरी सफ़ में मेरे पास तशरीफ़ लाए, तो फ़रमाया, तुम किस काम के लिए आए हो?

मैंने कहा, मुसलमान होने के लिए।

आपने फ़रमाया, यह तुम्हारे लिए बेहतर है। फिर आपने पूछा कि क्या तुम हिजरत करोगे?

मैंने अर्ज़ किया, जी हां।

आपने पूछा, कौन-सी हिजरत करोगे, हिजरत बादी या हिजरत बात्ती।

मैंने अर्ज़ किया, कौन-सी हिजरत बेहतर है?

आपने फ़रमाया, हिजरत बात्ती। फिर आपने बताया हिजरत बात्ती यह है कि तुम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ (यहां मदीना में) ही रहने लग जाओ और हिजरत बादी यह है कि तुम अपने गांव वापस चले जाओ और आपने फ़रमाया, तुम्हें हर हाल में इताअत करनी होगी, तंगी में भी और आसानी में भी, दिल चाहे या न चाहे और चाहे तुम पर दूसरों को तर्जीह दी जाए। (फिर भी तुम इताअत करोगे)

मैंने कहा, बहुत अच्छा (ज़रूर करूंगा)

फिर आपने (बैअत फ़रमाने के लिए) अपना मुबारक हाथ बढ़ाया और मैंने भी अपना हाथ बढ़ाया। जब आपने देखा कि मैं अपने लिए किसी क़िस्म की रियायत नहीं तलब कर रहा हूं तो आपने ख़ुद फ़रमाया, जहां तक तुमसे हो सके।

मैंने कहा, जहां तक मुझसे हो सके। फिर आपने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया (और बैअत फ़रमा लिया।)।1

क़बीला बनू असलम की हिजरत

हज़रत इयास बिन सलमा बिन अकवअ रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़बीला बनू असलम के लोग एक दर्द के शिकार हो गए। हुज़ूर

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 10

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ बनू असलम ! तुम लोग देहात में चले जाओ।[1]

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम इसे पसन्द नहीं करते हैं कि हम उलटे पांव देहात को वापस चले जाएं।

आपने फ़रमाया, तुम हमारे देहात वाले हो और हम तुम्हारे शहर वाले हैं। जब तुम हमें बुलाओगे तो हम तुम्हारी बात मानेंगे और जब हम तुम्हें बुलाएं तो तुम हमारी बात मानना। अब तुम जहां भी रहो, मुहाजिर ही गिने जाओगे।[2]

हज़रत जुनादा बिन अबी उमैया रज़ि० की हिजरत

हज़रत जुनादा बिन अबी उमैया अज़्दी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में हिजरत की। फिर हमारा हिजरत के बारे में मतभेद हो गया। कुछ लोग कहने लगे कि हिजरत ख़त्म हो गई और कुछ लोग कहने लगे, नहीं, अभी ख़त्म नहीं हुई। चुनांचे मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर इसके बारे में पूछा, तो आपने फ़रमाया, जब तक कुफ़्फ़ार से जिहाद बाक़ी रहेगा, हिजरत ख़त्म नहीं होगी।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सादी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं बनू साद बिन बक्र के सात या आठ आदमियों के वफ़्द के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैं उनमें सबसे कम उम्र था।

उन लोगों ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपनी ज़रूरत की बातें पूछ लीं और मुझे अपनी सवारियों में (सामान के पास) छोड़ गए थे।

फिर मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 333
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 142
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 331

अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे मेरी ज़रूरत की बात बताएं।

आपने फ़रमाया, तुम्हारी ज़रूरत की बात क्या है ?

मैंने कहा, कुछ लोग कहते हैं कि हिजरत ख़त्म हो गई है।

आपने फ़रमाया, तुम सबसे उम्दा ज़रूरत वाले हो या फ़रमाया कि तुम्हारी ज़रूरत उनकी ज़रूरतों से ज़्यादा बेहतर है। जब तक कुफ़्फ़ार से जिहाद का सिलसिला होगा, हिजरत ख़त्म नहीं होगी।[1]

हज़रत सफ़वान बिन उमैया और दूसरे सहाबा से हिजरत के बारे में जो कहा गया, उसका बयान

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत सफ़वान बिन उमैया रज़ि० मक्का के ऊपरी हिस्से में थे। उनसे किसी ने कहा कि जिसने हिजरत न की, उसका कोई दीन नहीं है (उसका दीन पूरा नहीं, बल्कि अधूरा है।) तो उन्होंने कहा, जब तक मदीना न हो आऊं, अपने घर नहीं जाऊंगा।

चुनांचे वह मदीना पहुंचे और हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के यहां ठहरे। फिर यह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू वह्ब ! तुम किस लिए आए हो ?

हज़रत सफ़वान ने कहा, मुझसे यह कहा गया है कि जो आदमी हिजरत न करे, उसका दीन में कोई हिस्सा नहीं है।

आपने फ़रमाया, ऐ अबू वह्ब ! तुम मक्का के पथरीले मैदानों में वापस जाओ और अपने घरों में रहो। अब (मक्का से मदीना की) हिजरत तो ख़त्म हो गई, लेकिन जिहाद और नीयत (जिहाद की) बाक़ी है। इसलिए जब तुम लोगों से (अल्लाह की राह में) निकलने की मांग की जाए, तो तुम निकल जाया करो।[2]

हज़रत ताऊस रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत सफ़वान बिन उमैया रज़ि० से कहा गया कि जिसकी हिजरत नहीं है, वह हलाक व बर्बाद हो

1. कंज़, भाग 2, पृ० 333, इसाबा, भाग 2, पृ० 319
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 333, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 17

गया, तो हज़रत सफ़वान ने क़सम खाई कि जब तक वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हो नहीं आएंगे, वह अपना सर नहीं धोएंगे। चुनांचे वह अपनी सवारी पर सवार होकर चल पड़े। जब मदीना पहुंचे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मस्जिद के दरवाज़े पर पाया तो उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझसे यह कहा गया है कि जिसने हिजरत की, वह हलाक हो गया, तो मैंने क़सम खाई कि जब तक आपकी ख़िदमत में हाज़िर न हो जाऊंगा, उस वक़्त तक मैं अपना सर नहीं धोऊंगा।

आपने फ़रमाया, सफ़वान ने इस्लाम के बारे में सुना और उसके दीन होने पर दिल से राज़ी है। हिजरत तो मक्का जीतने के बाद ख़त्म हो गई है, लेकिन अब जिहाद और (जिहाद की) नीयत बाक़ी है और जब तुमसे (अल्लाह की राह में) निकल जाने की मांग की जाए, तो तुम निकल जाया करो।[1]

हज़रत सालेह बिन बसीर बिन फ़ुदैक रह० बयान करते हैं कि उनके दादा हज़रत फ़ुदैक रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! लोग यह कहते हैं कि जिसने हिजरत न की, वह हलाक हो गया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ फ़ुदैक ! नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और बुराई छोड़ दो और अपनी क़ौम की धरती में जहां चाहे रहो, तुम मुहाजिर समझे जाओगे। (क्योंकि हिजरत का हुक्म ख़त्म हो गया है और दूसरे हुक्म बाक़ी हैं, इसलिए उन्हें पूरा करो।)[2]

हज़रत अता बिन अबी रबाह रह० फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उबैद बिन उमैर लैसी के साथ हज़रत आइशा रज़ि० की मुलाक़ात के लिए गया। हमने आपसे हिजरत के बारे में पूछा।

आपने फ़रमाया, आज हिजरत (का हुक्म बाक़ी) नहीं है। (हिजरत का हुक्म उस वक़्त था) जब मुसलमान को अपने दीन के बारे में

1. कंज़, भाग 3, पृ० 84
2. कंज़, भाग 8, पृ० 331, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 17

आज़माइश का डर होता था कि कहीं सख़्त तक्लीफ़ों की वजह से छोड़ना न पड़ जाए।)

चुनांचे मुसलमान अपने दीन को लेकर अल्लाह और रसूल सल्ल० की तरफ़ भागता था। आज तो अल्लाह ने इस्लाम को ग़ालिब कर दिया। आज मुसलमान जहां चाहे अपने रब की इबादत कर सकता है, अलबत्ता जिहाद और (जिहाद की) नीयत बाक़ी है।[1]

---

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 17

औरतों और बच्चों की हिजरत

नबी करीम सल्ल० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के घरवालों की हिजरत

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजरत फ़रमाई तो आप हमें और अपनी बेटियों को पीछे (मक्का में) छोड़ गए थे। जब आपको (मदीना में) क़रार हासिल हो गया तो आपने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को भेजा और उनके साथ अपने गुलाम हज़रत अबू राफ़े रज़ि० को भेजा और उन दोनों को दो ऊंट और हज़रत अबूबक्र रज़ि० से लेकर पांच सौ दिरहम इसलिए दिए थे कि ज़रूरत पड़े तो इनसे और सवारी के जानवर ख़रीद लें और उन दोनों के साथ हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अब्दुल्लाह बिन उरैक़ित को दो या तीन ऊंट देकर भेजा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ि० को यह ख़त लिखा कि मेरी मां उम्मे रूमान रज़ि० को और मुझे और मेरी बहन हज़रत अस्मा रज़ि० जोकि हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की बीवी थी, उनको इन सवारियों पर बिठाकर रवाना कर दे।

ये तीनों हज़रात (मदीना से) इकट्ठे रवाना हुए और जब ये हज़रात कुदैद पहुंचे तो हज़रत ज़ैद बिन हारिसा ने इन पांच सौ दिरहम के तीन ऊंट ख़रीदे, फिर ये सब इकट्ठे मक्का में दाख़िल हुए। इनको हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० से मुलाक़ात हुई, वह भी हिजरत करना चाहते थे, चुनांचे ये सब इकट्ठे (मक्का से) रवाना हुए।

हज़रत ज़ैद और हज़रत राफ़ेअ, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत उम्मे कुलसूम और हज़रत सौदा बिन्त रबीआ रज़ि० को लेकर चले और हज़रत ज़ैद ने हज़रत उम्मे ऐमन और हज़रत उसामा रज़ि० को भी एक ऊंट पर सवार किया।

जब हम बैदा नामी जगह पर पहुंचे तो मेरा ऊंट बिदक गया। मैं हौदज में थी और मेरे साथ मेरी मां भी उस हौदज में थीं। मेरी मां कहने लगीं, हाय बेटी! हाय दुल्हन! (क्योंकि हुज़ूर सल्ल० से हज़रत आइशा

रज़ि० का निकाह हिजरत से पहले हो चुका था।) आखिर हमारा ऊंट पकड़ा गया और उस वक़्त वह हरशा घाटी पार कर चुका था। बहरहाल अल्लाह ने (हमें) बचा लिया।

फिर हम मदीना पहुंच गए। मैं हज़रत अबूबक्र रज़ि० के यहां उतरी और हुज़ूर सल्ल० के घरवाले हुज़ूर सल्ल० के यहां ठहरे। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल०अपनी मस्जिद बना रहे थे और मस्जिद के चारों ओर घर तैयार कर रहे थे। फिर इन घरों में अपने घरवालों को ठहराया। फिर कुछ दिन हम ठहरे रहे। आगे लम्बी हदीस हज़रत आइशा रज़ि० की रुख़्सती के बारे में ज़िक्र की है।[1]

हैसमी ने इस हदीस में हज़रत आइशा रज़ि० से यह नक़ल किया है कि हम हिजरत करके चले। रास्ते में एक दुश्वार गुज़ार (ख़तरनाक) घाटी से जब हमारा गुज़र होने लगा तो जिस ऊंट पर मैं थी, वह बहुत बुरी तरह बिदका। अल्लाह की क़सम! मैं अपनी मां की यह बात न भूलूंगी कि वह कह रही थीं, हाय, छोटी-सी दुल्हन! और वह ऊंट बिदकता ही चला गया।

इतने में मैंने सुना, कोई कह रहा था, उसकी नकेल फेंक दो, तो मैंने फेंक दी। वह वहीं खड़े होकर चक्कर खाने लगा, गोया उसके नीचे कोई इंसान (उसे पकड़े हुए) खड़ा है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं (हिजरत की) तैयारी कर रही थी कि मुझसे हिन्द बिन्त उत्बा मिली। और वह कहने लगी, ऐ मुहम्मद (सल्ल०) की बेटी! (तुम्हारा क्या ख़्याल है) क्या मुझे यह ख़बर नहीं पहुंची कि तुम अपने बाप के पास जाना चाहती हो?

मैंने कहा, मेरा तो ऐसा इरादा नहीं है।

उसने कहा, ऐ मेरे चचा की बेटी! ऐसा न करो। अगर तुम्हें अपने सफ़र के लिए किसी सामान की ज़रूरत है या अपने बाप तक पहुंचने के

1. इस्तीआब, भाग 4, पृ० 450, इसाबा, भाग 4, पृ० 450, मजमउज़्ज़वाइद भाग 9, पृ० 227

लिए कुछ माल की ज़रूरत है तो मैं तुम्हारी यह ज़रूरत पूरी कर सकती हूं। मुझसे मत छिपाओ, क्योंकि मर्दों का जो आपस में झगड़ा है, वह औरतों के बीच नहीं है।

हज़रत ज़ैनब फ़रमाती हैं कि मेरा ख़्याल यह है कि उन्होंने ये सारी बातें करने के लिए कही थी, लेकिन मैं उससे डर गई, इसलिए मैंने उनके सामने हिजरत के इरादे का इंकार ही किया।

हज़रत इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि हज़रत ज़ैनब (हिजरत की) तैयारी करती रहीं। जब वह इस तैयारी से फ़ारिग़ हुईं तो उनके देवर किनाना बिन रबीअ उनके पास एक ऊंट लाए। यह उस ऊंट पर सवार हो गईं। किनाना ने अपनी कमान और तरकश ली और दिन की रोशनी में उनके ऊंट को आगे से पकड़ कर ले चले और यह अपने हौदज में बैठी हुई थीं।

क़ुरैश के लोगों में (उनके जाने की चर्चा हुई)। चुनांचे वे लोग उनकी खोज में निकल पड़े। और ज़ीत्वा नामी जगह पर उन्हें पा लिया। और हब्बार बिन अस्वद फ़हरी सबसे पहले उन तक पहुंचा। हब्बार ने हज़रत ज़ैनब को नेज़े से डराया। वह हौदज में थीं।

लोग कहते हैं कि वह उम्मीद से थीं, चुनांचे उनका हमल गिर गया। उनके देवर किनाना ने घुटनों के बल बैठकर अपने तिरकश में से सारे तीर निकाल कर सामने डाल दिए और फिर कहा, तुममें से जो आदमी भी मेरे क़रीब आएगा, मैं उसमें एक तीर ज़रूर घुसा दूंगा। चुनांचे वे लोग उनसे पीछे हट गए।

अबू सुफ़ियान क़ुरैश के बड़े लोगों को लेकर आए और उन्होंने कहा, ऐ आदमी! ज़रा अपनी तीरंदाज़ी रोको, हम तुमसे बात करना चाहते हैं। चुनांचे वह रुक गए। अबू सुफ़ियान आगे आकर उनके पास खड़े हुए और कहा, तुमने ठीक नहीं किया कि तुम इस औरत को एलानिया सबके सामने से लेकर चले हो और तुम जानते ही हो कि (इनके बाप) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की वजह से हमें कितनी मुसीबतें और तक्लीफ़ें उठानी पड़ी हैं। जब तुम उनकी बेटी को

एलानिया तमाम लोगों के सामने हमारे बीच से लेकर जाओगे तो लोग यह समझेंगे कि यह सब हमारी ज़िल्लत और कमज़ोरी की वजह से हुआ है (कि उनके बेटी सबके सामने यों चली गई है) और मेरी ज़िंदगी की क़सम ! हमें इनको इनके बाप से रोकने की कोई ज़रूरत नहीं है और न हम इनसे कोई बदला लेना चाहते हैं। इसलिए अब तो तुम इस औरत को वापस ले जाओ, यहां तक कि जब यह शोर व शग़ब ठंडा पड़ जाए और लोग यों कहने लगें कि हमने उनकी बेटी को वापस कराया है, तो फिर चुपके से इसे ले जाना और इसके बाप के पास पहुंचा देना। चुनांचे किनाना ने ऐसा ही किया।[1]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब को लेकर एक आदमी (मक्का से) चला। क़ुरैश के दो आदमी पीछे से उन तक जा पहुंचे। इन दोनों ने उस पर एक हमला किया और उस पर ग़ालिब आ गए।

चुनांचे हज़रत ज़ैनब को उन दोनों ने धक्का दिया, जिससे वह पत्थर पर गिर गईं। (वह उम्मीद से थीं) उनका हमल गिर गया और ख़ून बहने लगा और लोग इनको अबू सुफ़ियान के पास ले गए। वहां बनी हाशिम की औरतें (हज़रत ज़ैनब की यह ख़बर सुनकर) आईं तो अबू सुफ़ियान ने उनको उन औरतों के हवाले किया। फिर इसके कुछ अर्से के बाद यह हिजरत करके (मदीना) आईं और ये बराबर बीमार रहीं, यहां तक कि इसी बीमारी में इनका इंतिक़ाल हो गया। सब मुसलमान इन्हें शहीद समझते थे।[2]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्यारी बीवी हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मक्का से मदीना तशरीफ़ लाए तो आपकी बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ि० मक्का से किनाना या इब्ने किनाना के साथ रवाना हुईं। मक्का वाले उनकी खोज में निकल पड़े।

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 330
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 216

चुनांचे हब्बार बिन अस्वद उन तक पहुंच गया और अपना नेज़ा उनके ऊंट को मारता रहा, यहां तक कि उनको नीचे गिरा दिया, जिससे उनका हमल गिर गया। उन्होंने सब्र व तहम्मुल से काम लिया और उन्हें उठाकर लाया गया।

बनू हाशिम और बनू उमैया में उनके बारे में आपस में झगड़ा हो गया। बनू उमैया कहते थे कि हम इनके ज़्यादा हक़दार हैं, क्योंकि वह उनके चचेरे भाई हज़रत अबुल आस के निकाह में थीं। आख़िर यह हिन्द बिन्त उत्बा बिन रबीआ के पास रहती थीं और वह उनसे कहा करती थीं कि यह सब तुम्हारे बाप (यानी हुज़ूर सल्ल०) की वजह से हुआ है।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा को फ़रमाया, क्या तुम (मक्का) जाकर ज़ैनब को ले नहीं आते?

उन्होंने कहा, ज़रूर, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !

आपने फ़रमाया, तुम मेरी अंगूठी लो। यह उनको (निशानी के तौर पर) दे देना। हज़रत ज़ैद (मदीना से) चल दिए और (हज़रत ज़ैनब तक चुपके से बात पहुंचाने की) अलग-अलग तदबीरें करते रहे। चुनांचे उनकी एक चरवाहे से मुलाक़ात हुई। उससे पूछा कि तुम किसके चरवाहे हो?

उसने कहा, अबुल आस का।

हज़रत ज़ैद ने पूछा, ये बकरियां किसकी हैं?

उसने कहा, ज़ैनब बिन्त मुहम्मद (सल्ल०) की हैं। हज़रत ज़ैद (उसे मानूस करने के लिए) कुछ देर उसके साथ चलते रहे, फिर उससे कहा, क्या यह हो सकता है कि तुमको मैं कोई चीज़ दूं, वह तुम हज़रत ज़ैनब को पहुंचा दो और उसका किसी से ज़िक्र न करो?

उसने कहा, हां। चुनांचे उसे वह अंगूठी दे दी, जिसे हज़रत ज़ैनब ने पहचान लिया। उन्होंने चरवाहे से पूछा, तुम्हें यह अंगूठी किसने दी?

उसने कहा, एक आदमी ने।

हज़रत ज़ैनब ने कहा, उस आदमी को तुमने कहां छोड़ा?

उसने कहा, फ़्लां जगह। फिर हज़रत ज़ैनब चुप हो गईं। जब रात हुई तो चुपके से हज़रत ज़ैद की तरफ़ चल पड़ीं, जब यह उनके पास पहुंचीं तो उनसे हज़रत ज़ैद ने कहा, तुम मेरे आगे ऊंट पर सवार हो जाओ।

उन्होंने कहा, तुम मेरे आगे सवार हो जाओ। चुनांचे आगे हज़रत ज़ैद सवार हुए और यह उनके पीछे बैठीं। (उस वक़्त तक परदा फ़र्ज़ नहीं हुआ था) और मदीना पहुंच गईं। हुज़ूर सल्ल० उनके बारे में फ़रमाया करते थे कि मेरी बेटियों में से यह सबसे अच्छी बेटी है, जिसे मेरी वजह से बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ उठानी पड़ी।

जब यह हदीस हज़रत अली बिन हुसैन तक पहुंची तो वह हज़रत उर्व: के पास आए और पूछा, वह कौन-सी हदीस है जिसके बारे में मुझे ख़बर मिली है कि तुम उसे बयान करके हज़रत फ़ातिमा रज़ि० का दर्जा कम कर देते हो?

हज़रत उर्व: ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मुझे यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं है कि जो कुछ पूरब और पश्चिम के बीच है, वह सब मुझे मिल जाए और मैं (उसके बदले में) हज़रत फ़ातिमा का ज़रा सा भी दर्जा कम कर दूं। बहरहाल मैं आज के बाद यह हदीस कभी बयान नहीं करूंगा।[1]

हज़रत दुर्रा बिन्त अबू लहब रज़ि० की हिजरत

हज़रत इब्ने उमर, हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत दुर्रा बिन्त अबू लहब रज़ि० हिजरत करके (मदीना) आईं और हज़रत राफ़ेअ बिन मुअल्ला ज़ुरक़ी रज़ि० के घर में ठहरीं। क़बीला बनू ज़ुरैक़ की जो औरतें उनके पास आकर बैठीं उन्होंने उनसे कहा तुम उसी अबू लहब की बेटी हो जिसके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया है—

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 213

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۝

'टूट गए हाथ अबू लहब के और टूट गया वह आप। काम न आया उसको माल उसका और न जो उसने कमाया।' इसलिए तुम्हारी हिजरत तुम्हारे काम न आएगी।

हज़रत दुर्रा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर उन औरतों की शिकायत की और जो उन्होंने कहा था, वह आपको बताया।

हुज़ूर सल्ल० ने उनको तसल्ली दी और फ़रमाया, बैठ जाओ। फिर लोगों को ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई और मिंबर पर थोड़ी देर बैठे और फ़रमाया, क्या बात है कि मुझे मेरे ख़ानदान वालों के बारे में तक्लीफ़ पहुंचाई जा रही है। अल्लाह की क़सम! मेरी शफ़ाअत क़ियामत के दिन हा और हकम और सुदा और सलहब क़बीलों को भी नसीब होगी (तो मेरे ख़ानदान को तो सबसे पहले नसीब होगी)[1]

पीछे हज़रत अबू सलमा की हिजरत के बयान में हज़रत उम्मे सलमा की हिजरत का, इसी तरह हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब और सहाबा किराम की हब्शा को हिजरत करने के बयान में हज़रत अस्मा बिन्त उमैस और उम्मे अब्दुल्लाह लैला बिन्त अबी हसमा की हिजरत का बयान गुज़र चुका है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० और दूसरे बच्चों की हिजरत

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग सन् 05 हि० में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हम लोग ग़ज़्वा अहज़ाब के साथ क़ुरैश के साथ निकले थे। मैं अपने भाई फ़ज़्ल के साथ था और हमारे साथ हमारे ग़ुलाम हज़रत अबू राफ़ेअ भी थे। जब हम अरज पहुंचे तो हम लोग रास्ता भूल गए और रकूबा घाटी के बजाए हम जसजासा चले गए, यहां तक कि हम क़बीला बनू अम्र

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 257

बिन औफ़ के यहां आ निकले और फिर मदीना पहुंच गए और हमने हुज़ूर सल्ल० को ख़ंदक़ में पाया। उस वक़्त मेरी उम्र आठ साल थी और मेरे भाई की उम्र तेरह साल थी।[1]

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 64

नुसरत का बाब

सहाबा किराम को दीने मतीन और सीधे रास्ते की नुसरत (मदद) करना किस तरह हर चीज़ से ज़्यादा महबूब था और दुनिया की इज़्ज़त पर उनमें से कोई इतना फ़ख़्र नहीं करता था (जितना कि वे उस नुसरत पर फ़ख़्र करते थेऔर किस तरह से उन्होंने दीन की नुसरत की वजह से दुनिया की लज़्ज़तों को छोड़ा? गोया कि उन्होंने यह सब कुछ अल्लाह की रिज़ा हासिल करने और उसके रसूल सल्ल० के हुक्म पर चलने के लिए किया।

हज़रात अंसार रज़ि० की दीन की नुसरत की शुरूआत

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल० हर साल अपने आपको अरब के क़बीलों पर पेश फ़रमाते कि वे हुज़ूर सल्ल० को अपनी क़ौम में ले जाकर ठहराएं ताकि आप अल्लाह का कलाम और पैग़ाम पहुंचा सकें और उन्हें (इसके बदले में) जन्नत मिलेगी। लेकिन अरब का कोई क़बीला भी आपकी इस बात को नहीं मानता था, यहां तक कि जब अल्लाह का यह इरादा हुआ कि अपने दीन को ग़ालिब फ़रमा दें और अपने नबी सल्ल० की मदद फ़रमा दें और अपने वायदे को पूरा फ़रमा दें तो अल्लाह आपको अंसार के इस क़बीले के पास ले आए और उन्होंने आपकी दावत को क़ुबूल कर लिया और अल्लाह ने उनके वतन को अपने नबी सल्ल० के लिए हिजरत की जगह बना दी।[1]

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० मक्का में हज के मौसम में अपने आपको अरब के एक-एक क़बीले पर पेश फ़रमाते, लेकिन कोई भी आपकी बात न मानता, यहां तक कि अल्लाह अंसार के इस क़बीले को (हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में) ले आए, क्योंकि अल्लाह ने यह सआदत और शराफ़त उनके लिए मुक़द्दर फ़रमा रखी थी। चुनांचे इन लोगों ने आपको ठिकाना दिया और आपकी नुसरत की। अल्लाह ही उनको अपने नबी की तरफ़ से बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाए।[2]

जमउल फ़वाइद में हज़रत उमर रज़ि० की इस हदीस में यह बढ़ा हुआ है (कि हज़रत उमर फ़रमाते हैं) कि अल्लाह की क़सम! हमने अंसार से जो वायदा किया था, वह हमने पूरा नहीं किया। हमने उनसे कहा था कि हम लोग अमीर होंगे और तुम लोग वज़ीर। अगर मैं इस साल के आख़िर तक ज़िंदा रहा तो मेरा हर गवर्नर अंसारी ही होगा।[3]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज के मौसम में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने आपको लोगों पर पेश

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 45
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 134
3. जमउल फ़वाइद, भाग 3, पृ० 30, मजमउज़्ज़वाइद, भाग 6, पृ० 42

फ़रमाते थे और उनसे कहते थे, है कोई ऐसा आदमी जो मुझे अपनी क़ौम में ले जाए? क्योंकि क़ुरैश ने मुझे अपने रब का कलाम पहुंचाने से रोक दिया है।

चुनांचे एक बार हमदान क़बीले का एक आदमी आपकी ख़िदमत में आया। आपने उससे पूछा, तुम कौन-से क़बीले के हो?

उसने कहा, हमदान का।

आपने फ़रमाया, क्या तुम्हारी क़ौम के पास हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम है?

उसने कहा, जी हां। फिर उस आदमी को यह ख़तरा हुआ कि (वह तो हुज़ूर को साथ ले जाने का और उनकी हिफ़ाज़त का वायदा कर ले और) क़ौम वाले उसके इस वायदे को न मानें, चुनांचे उसने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर कहा कि मैं अभी तो जाकर अपनी क़ौम को बताऊंगा और अगले साल आपके पास आऊंगा। (फिर आपको बताऊंगा।)

आपने फ़रमाया, अच्छा और अंसार का वफ़्द रजब में आया।[1]

पीछे नुसरत पर बैअत के बाब में इमाम अहमद की रिवायत से हज़रत जाबिर रज़ि० की हदीस गुज़र चुकी है कि हुज़ूर सल्ल० ने मक्का में दस साल इस तरह गुज़ारे कि आम लोगों के पास हज के मौक़े पर उनकी क़ियामगाहों में उकाज़ और मजन्ना के बाज़ारों में जाया करते थे और उनसे फ़रमाते, कौन मुझे ठिकाना देगा और कौन मेरी मदद करेगा, ताकि मैं अपने रब का पैग़ाम पहुंचा सकूं और उसे (उसके बदले में) जन्नत मिलेगी।

चुनांचे आपको कोई ऐसा आदमी न मिलता, जो आपको ठिकाना दे और आपकी मदद करे (बल्कि आपकी मुख़ालफ़त इस हद तक फैल गई थी) कि कोई आदमी यमन या मुज़र से (मक्का के लिए) रवाना होने लगता तो उसकी क़ौम के लोग और उसके रिश्तेदार उसके पास आकर उसे कहते कि क़ुरैश के नवजवान से बचकर रहना, कहीं वह तुम्हें फ़ित्ने

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 35, फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 156

में न डाल दे और आप लोगों को क़ियामगाहों के दर्मियान में से गुज़रते, तो लोग आपकी तरफ़ उंगलियों से इशारा करते, यहां तक कि अल्लाह ने यसरिब से हमें आपके पास भेज दिया।

हम आपको ठिकाना देने के लिए तैयार हो गए और हमने आपकी तस्दीक़ की। फिर हमारे आदमी एक-एक करके हुज़ूर सल्ल० के पास जाते रहे और आप पर ईमान लाते रहे और आप उनको क़ुरआन सिखाते रहे। वहां से वह आदमी मुसलमान होकर अपने घर वापस आता तो उसके इस्लाम की वजह से उसके घरवाले मुसलमान हो जाते, यहां तक कि अंसार के हर मुहल्ले में मुसलमानों की एक जमाअत ऐसी तैयार हो गई, जो अपने इस्लाम को ज़ाहिर करती थी। फिर उन सबने मिलकर मश्विरा किया और हमने कहा कि कब तक हम हुज़ूर सल्ल० को ऐसे ही छोड़ रखें कि आप यों ही लोगों में फिरते रहें और मक्के के पहाड़ों में आपको धुत्कारा जाता रहे और आपको डराया जाता रहे।

चुनांचे हमारे सत्तर आदमी गए और हज के मौसम में हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हमने आपसे शाबे अक़बा में मिलना तै किया। चुनांचे हम वहां एक-एक, दो-दो आदमी होकर सब इकट्ठे हो गए और हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम आपसे किस चीज़ पर बैअत करें? आगे पूरी हदीस ज़िक्र की है।[1]

हज़रत उर्वः रह० फ़रमाते हैं कि जब हज का ज़माना आया तो अंसार के कुछ लोग हज के लिए गए। चुनांचे बनू माज़िन बिन नज्जार के हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा और हज़रत असअद बिन ज़ुरारह और बनू ज़ुरैक़ के हज़रत राफ़ेअ बिन मालिक और हज़रत ज़कवान बिन अब्दुल क़ैस और बनू अब्दुल अशहल के अबुल हैसम बिन तैहान और बनू अम्र बिन औफ़ के हज़रत उऐम बिन साइदा रज़ि० हज के लिए गए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास तशरीफ़ लाए और उनको बताया कि अल्लाह ने उन्हें नुबूवत और शराफ़त से नवाज़ा है और उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया। जब उन्होंने आपकी बात सुनी तो

1. हाकिम, भाग 2, पृ० 625

सब ख़ामोश हो गए और उनके दिल आपकी दावत पर मुतमइन हो गए और चूंकि उन्होंने अहले किताब से आपकी खूबियों और आपकी दावत के बारे में सुन रखा था, इसलिए वे सुनते ही आपको पहचान गए और आपकी तस्दीक़ की और आप पर ईमान लाए और ये लोग ख़ैर को आम करने का ज़रिया बने।

फिर उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप जानते ही हैं कि हमारे यहां औस व ख़ज़रज में क़त्ल व ग़ारत का सिलसिला चल रहा है और हम उस चीज़ को पसन्द करते हैं जिसके ज़रिए अल्लाह आपके काम को सही रुख़ पर ले आए (यानी हम आपको अपने यहां ले जाना और आपकी नुसरत करना चाहते हैं) और हम अल्लाह के लिए और आपके लिए हर तरह की मेहनत करने को तैयार हैं और जो आपकी राय है, हम भी आपको उसी का मश्विरा देते हैं, लेकिन अभी आप अल्लाह के भरोसे पर (यहां मक्का में ही) ठहरे रहें। इतने में हम अपनी क़ौम के पास वापस जाकर उनको आपकी बात बताएंगे और उनको अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) की दावत देंगे। हो सकता है अल्लाह हमारी आपस में सुलह करा दे और हमारा आपस में जोड़ पैदा कर दे, क्योंकि आजकल तो हम एक दूसरे से दूर हैं और हमारे आपस में बुग़्ज़ व अदावत है। अगर आज आप हमारे यहां तशरीफ़ ले आते हैं और अभी हमारी आपस में सुलह न हुई हो तो हम सब आप पर जुड़ नहीं सकेंगे और एक जमाअत नहीं बन सकेंगे। हम अगले साल हज (के ज़माने में आपसे मिलने) का वायदा करते हैं। हुज़ूर सल्ल० को उनकी यह बात पसन्द आई।

वे लोग अपनी क़ौम के पास वापस गए और अपनी क़ौम को चुपके-चुपके दावत देने लगे और उनको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़बर दी और अल्लाह ने जो पैग़ाम देकर हुज़ूर सल्ल० को भेजा है और क़ुरआन सुनाकर हुज़ूर सल्ल० ने जिसकी दावत दी है, वह सब अपनी क़ौम को बताया।

(इन लोगों की मेहनत और दावत का नतीजा यह हुआ कि) अंसार के हर मुहल्ले में कुछ न कुछ लोग मुसलमान ज़रूर हो चुके थे। आगे

वैसी हदीस ज़िक्र की है जैसी हदीस हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० के दावत देने के बाब में गुज़र चुकी है।[1]

हज़रत यह्या बिन सईद रह० फ़रमाते हैं कि मैंने अंसार की एक बुढ़िया को यह कहते हुए सुना कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० को देखा कि वह हज़रत सिरमा बिन क़ैस रज़ि० के पास इन शेरों (पदों) को सीखने के लिए बार-बार जाते थे—

ثَوٰى فِيْ قُرَيْشٍ بِضْعَ عَشَرَةَ حِجَّةً   يُذَكِّرُ لَوْ اَلْقٰى صَدِيْقًا مُّوَاتِيًا

'आप कुरैश में दस साल से ज़्यादा ठहरे रहे और इस सारे अर्से में आप नसीहत और तबलीग़ फ़रमाते रहे (और आप यह चाहते थे कि) कोई मुवाफ़क़त करने वाला दोस्त आपको मिल जाए।'

وَيَعْرِضُ فِيْ اَهْلِ الْمَوَاسِمِ نَفْسَهٗ   فَلَمْ يَرَ مَنْ يُّؤْوِيْ وَلَمْ يَرَ دَاعِيًا

'और आप हज पर आनेवालों पर अपने आपको पेश फ़रमाते थे, लेकिन न आपको ठिकाना देनेवाला नज़र आता और न अपने यहां आने की दावत देनेवाला।'

فَلَمَّا اَتَانَا وَاسْتَقَرَّتْ بِهِ النَّوٰى   وَاَصْبَحَ مَسْرُوْرًا بِطَيْبَةَ رَاضِيًا

'जब आप हमारे पास तशरीफ़ लाए और आप वहां ठहर गए और तैबा में बड़े ख़ुश और राज़ी हो गए।'

وَاَصْبَحَ مَا يَخْشٰى ظُلَامَةَ ظَالِمٍ   بَعِيْدٍ وَّمَا يَخْشٰى مِنَ النَّاسِ بَاغِيًا

'और आपको न किसी दौर के ज़ालिम से किसी चीज़ को ज़ुल्म के साथ ले लेने का ख़तरा रहा और न लोगों से बग़ावत का ख़तरा।'

بَذَلْنَا لَهُ الْاَمْوَالَ مِنْ جُلِّ مَالِنَا   وَاَنْفُسَنَا عِنْدَ الْوَغٰى وَالتَّاَسِّيَا

'तो हमने (दुश्मनों से) लड़ाई के वक़्त और (मुहाजिर मुसलमानों की) ग़म-ख़्वारी के वक़्त अपनी जान व माल का बड़ा हिस्सा ख़र्च कर दिया।'

نُعَادِي الَّذِيْ عَادٰى مِنَ النَّاسِ كُلِّهِمْ   بِحَقٍّ وَّاِنْ كَانَ الْحَبِيْبَ الْمُوَاتِيَا

'और हुज़ूर सल्ल० तमाम लोगों में से जिससे दुश्मनी रखेंगे, हम

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 42

भी उससे पक्की दुश्मनी रखेंगे, चाहे वह आदमी हमारा महबूब और मुवाफ़िक़ ही क्यों न हो।'

وَنَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ لَاشَئَ غَيْرُهٗ وَاَنَّ كِتَابَ اللّٰهِ اَصْبَحَ هَادِيًا

'और हमें यक़ीन है कि अल्लाह के अलावा कोई चीज़ (माबूद) नहीं है और अल्लाह की किताब हमें सही रास्ता दिखाने वाली है।'[1]

हज़रात मुहाजिरीन और अंसार रज़ि० का आपस में भाईचारा

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० जब मदीना आए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनमें और हज़रत साद बिन रबीअ रज़ि० में भाईचारा करा दिया। हज़रत साद ने हज़रत अब्दुर्रहमान से कहा, ऐ मेरे भाई ! मैं मदीने में सबसे ज़्यादा माल वाला हूं। तुम देखकर (अपनी पसन्द का) मेरा आधा माल ले लो और मेरी दो बीवियां हैं, तुम देख लो, इनमें से जो भी तुम्हें पसन्द आए, मैं उसे तलाक़ दे दूंगा, (तुम उससे शादी कर लेना)।

तो अब्दुर्रहमान ने कहा, तुम्हारे घरवालों में और तुम्हारे माल में अल्लाह बरकत फ़रमाए। मुझे तो बाज़ार का रास्ता बता दो। चुनांचे उन्होंने बाज़ार का रास्ता बता दिया। हज़रत अब्दुर्रहमान ने बाज़ार में जाकर ख़रीदना-बेचना शुरू कर दिया, जिसमें उनको नफ़ा हुआ।

चुनांचे वह कुछ पनीर और घी लेकर आए। कुछ दिनों वह यों ही तिजारत करते रहे। इसके बाद एक दिन आए तो उन (के कपड़ों) पर ज़ाफ़रान लगा हुआ था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या बात है ?

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने एक औरत से शादी कर ली है। (उस ज़माने में शादी के मौक़े पर ज़ाफ़रान लगाने का चलन था)

आपने फ़रमाया, तुमने उसको कितना मह्र दिया है ?

1. हाकिम, भाग 2, पृ० 625

उन्होंने कहा, एक गुठली के बराबर सोना।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वलीमा करो, चाहे एक ही बकरी हो। हज़रत अब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि (मेरी तिजारत में बरकत का यह हाल था कि) अगर मैं कोई पत्थर भी उठाता, तो मुझे उससे सोना और चांदी हासिल होने की उम्मीद हो जाती थी।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, मुहाजिरीन जब मदीना आए तो शुरू में अंसारी का वारिस मुहाजिर होता था, उसके रिश्तेदार वारिस नहीं होते थे, और यह उस भाईचारा की वजह से था, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनमें कराया था। जब यह आयत उतरी—

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ

तो फिर मुहाजिर का (भाई बनाने के ज़रिए) अंसारी का वारिस बनना मंसूख़ हो गया।[2]

इस रिवायत में तो यही है कि हलीफ़ (मित्र) की मीरास इस आयत से मंसूख़ हुई, लेकिन अगली रिवायत से मालूम होता है कि इस मीरास को मंसूख़ करने वाली आयत

وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ

है। हाफ़िज़ इब्ने हजर कहते हैं, यह रिवायत ज़्यादा भरोसे की है और यह भी हो सकता है कि इस मीरास का मंसूख़ होना, दो बार में हुआ हो कि शुरू में तो सिर्फ़ भाईचारा वाला ही वारिस होता हो और रिश्तेदार वारिस न होता हो। जब 'वलि कुल्लिन ज-अलना मवालि-य' वाली आयत उतरी तो भाईचारा करने के साथ रिश्तेदार भी वारिस होने लग गए।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत का यही मतलब लिया जाएगा। फिर सूरः अहज़ाब की आयत—

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 228, इसाबा, भाग 2, पृ० 26, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 89
2. बुख़ारी

وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ

के नाज़िल होने पर भाईचारा करने का वारिस होना मंसूख़ हो गया और मीरास सिर्फ़ रिश्तेदारों के लिए हो गई और भाईचारा वाले के लिए सिर्फ़ यह रह गया कि अंसारी उसकी मदद करेगा और उसको कुछ दिया करेगा। इस तरह तमाम हदीसों का मतलब अपनी-अपनी जगह ठीक हो जाता है।[1]

ताबिईन की एक जमाअत बयान करती है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो आपने मुहाजिरीन का आपस में भी भाईचारा कराया और मुहाजिरीन और अंसार का भी आपस में भाईचारा कराया कि वे एक दूसरे की ग़मख़्वारी करेंगे।

चुनांचे वे एक दूसरे के वारिस बनते थे और ये नब्बे थे, कुछ मुहाजिरीन में से कुछ अंसार में से और कुछ कहते हैं कि ये सौ आदमी थे और जब 'उलुल अरहाम' वाली आयत उतरी तो इस भाईचारा की वजह से उनमें आपस में जो विरासत चल रही थी, वह ख़त्म हो गई।[2]

अंसार का मुहाजिरीन के लिए माली ईसार

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि अंसार ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि (हमारे) खजूरों के बाग़ हमारे और हमारे (मुहाजिर) भाइयों के बीच बांट दें।

आपने फ़रमाया, नहीं, बल्कि (इन बाग़ों में) मेहनत तो सारी तुम करो, हम (मुहाजिरीन) फल में तुम्हारे शरीक हो जाएंगे।

अंसार ने कहा, 'समिअ-ना व अतअ-ना' यानी 'हमने आपकी बात दिल से सुनी और उसे हमने मान लिया। जैसे आप कहेंगे, वैसे करेंगे।'

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन असलम रह० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने अंसार से फ़रमाया, तुम्हारे (मुहाजिर) भाई अपने माल और औलाद छोड़कर तुम्हारे पास आए हैं।

---

1. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 91
2. फ़त्ह, भाग 7, पृ० 19

अंसार ने कहा, हम अपने माल ज़मीन व बाग़ अपने और मुहाजिर भाइयों में बांट लेते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसके अलावा कुछ और भी तो हो सकता है।

अंसार ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वह क्या ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ये मुहाजिरीन खेती-बाड़ी का काम नहीं जानते हैं, इसलिए खेती का काम तो सारा तुम करो और फल में तुम उनको शरीक कर लो।

अंसार ने कहा, ठीक है।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुहाजिरीन ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जिस क़ौम के पास हम लोग आए हैं, हमने इन जैसी अच्छी क़ौम नहीं देखी है कि उनके पास थोड़ा-सा माल भी हो, तो बहुत अच्छे तरीक़े से हमदर्दी और ग़मख़्वारी करते हैं और अगर ज़्यादा माल हो तो ख़ूब ज़्यादा ख़र्च करते हैं और (वे खेती-बाड़ी और बाग़ों को संभालने की) मेहनत तो सारी वे ख़ुद करते हैं, हमें मेहनत नहीं करने देते हैं और फल में हमें वह अपना शरीक कर लेते हैं। हमें तो यह ख़तरा हो रहा है कि वे सारा सवाब ले जाएंगे।

आपने फ़रमाया, नहीं (वे सारा सवाब नहीं ले जा सकते) जब तक तुम उनकी तारीफ़ करते रहोगे और उनके लिए अल्लाह से दुआ करते रहोगे।[2]

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि अंसार जब अपनी खजूरें (पेड़ों से) काट लेते, तो अपनी खजूरों के दो हिस्से बना लेते, जिनमें से एक हिस्सा दूसरे से कम होता और दोनों में से जो हिस्सा कम होता, उसके साथ खजूर की शाखाएं मिला देते (ताकि ज़्यादा मालूम हों) और फिर मुहाजिर मुसलमानों से कहते कि इन दोनों हिस्सों में जो चाहे ले लो, तो (ईसार के जज़्बे से) वे बग़ैर शाख़ों वाला हिस्सा ले लेते जो देखने में

1. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 312, बिदाया, भाग 3, पृ० 338
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 228, कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 136

कम नज़र आता, लेकिन हक़ीक़त में वह ज़्यादा होता था, इस तरह अंसार को शाखों वाला हिस्सा मिल जाता, जो देखने में ज़्यादा नज़र आता और हक़ीक़त में कम होता था।

ख़ैबर की जीत तक इन लोगों का आपस में यही (ईसार वाला) मामूल रहा। जब ख़ैबर जीत लिया तो हुज़ूर सल्ल० ने अंसार से फ़रमाया, तुम्हारे ऊपर जो हमारी नुसरत का हक़ था, वह तुमने पूरा-पूरा अदा कर दिया। अब अगर तुम चाहो तो तुम यों कर लो कि अपना ख़ैबर का हिस्सा तुम ख़ुशी-ख़ुशी मुहाजिरीन को दे दो और (मदीना के बाग़ों के) सारे फल तुम ख़ुद रख लिया करो (और मुहाजिरीन को अब उनमें से कुछ न दिया करो, यों मदीने का सारा फल तुम्हारा हो जाएगा और ख़ैबर का सारा फल मुहाजिरीन का हो जाएगा)

अंसार ने कहा, (हमें मंजूर है) आपने हमारे ज़िम्मे अपने कई काम लगाए थे और हमारी यह बात आपने अपने ज़िम्मे ली थी कि हमें (इसके बदले में) जन्नत मिलेगी, तो जो काम आपने हमारे ज़िम्मे लगाए थे, वह हमने सारे कर दिए। अब हम चाहते है कि हमारी चीज़ हमें मिल जाए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह जन्नत तुम्हें ज़रूर मिलेगी।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अंसार को बुलाया, ताकि उनको बहरैन की ज़मीन दे दें तो अंसार ने कहा कि हम बहरैन की ज़मीन तब लेंगे जब आप उतनी ही ज़मीन हमारे मुहाजिर भाइयों को भी दें।

आपने फ़रमाया कि अगर तुम उनके बग़ैर नहीं लेना चाहते हो, तो फिर हमेशा सब्र से काम लेना, यहां तक कि तुम (क़ियामत के दिन हौज़े कैसर पर) मुझसे आ मिलो, क्योंकि (मेरे बाद) तुम पर दूसरों को तर्जीह दी जाएगी।[2]

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 40
2. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 535

इस्लाम के ताल्लुक़ात को मज़बूत करने के लिए किस तरह अंसार रज़ि० ने जाहिलियत के ताल्लुक़ात को क़ुरबान कर दिया

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कौन है जो काब बिन अशरफ़ का काम तमाम कर दे, क्योंकि उसने अल्लाह और उसके रसूल को बहुत तक्लीफ़ पहुंचाई है?

तो हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० ने खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप चाहते हैं कि मैं उसे क़त्ल कर दूं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां।

उन्होंने कहा कि मस्लहतन कुछ कहने की मुझे इजाज़त दे दें।

आपने फ़रमाया, ठीक है, तुम कह सकते हो।

चुनांचे हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा (कुछ साथियों को लेकर) काब बिन अशरफ़ के पास गए और उससे कहा, इस आदमी (यानी हुज़ूर सल्ल०) ने हमसे सदक़े की मांग की है और मुश्किल और दुश्वार काम हमारे ज़िम्मे लगा-लगाकर हमें थका दिया है। मैं तुम्हारे पास क़र्ज़ा लेने आया हूं।

उसने कहा, अभी तो वह और काम तुम्हारे ज़िम्मे लगाएगा। अल्लाह की क़सम ! एक न एक दिन तुम उससे ज़रूर उकता जाओगे।

हज़रत मुहम्मद ने कहा, अभी तो हम उनकी पैरवी शुरू कर चुके हैं, इसलिए अभी हम उनको (जल्दी) छोड़ना नहीं चाहते हैं। देखते हैं आख़िर उनका अंजाम क्या होता है? हम चाहते हैं कि आप हमें एक वसक़ या दो वसक़ ग़ल्ला उधार दे दें। (एक वसक़ साठ साअ का होता है और एक साअ साढ़े तीन सेर का)

काब ने कहा, हां, मैं उधार देने को तैयार हूं, लेकिन तुम मेरे पास कोई चीज़ रेहन रखो।

इन लोगों ने कहा, तुम रेहन में कौन-सी चीज़ चाहते हो?

उसने कहा, तुम अपनी औरतें मेरे पास रेहन रख दो।

इन लोगों ने कहा, तुम तो अरब में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत आदमी हो, हम तुम्हारे पास अपनी औरतें कैसे रेहन रख दें?

उसने कहा, अच्छा, फिर अपने बेटे मेरे पास रेहन रख दो।

इन लोगों ने कहा, हम अपने बेटे तुम्हारे पास कैसे रेहन रख दें, फिर तो लोग उन्हें ताने दिया करेंगे कि यह वही तो है जिसे एक-दो वसक़ ग़ल्ले के बदले में रेहन रखा गया था। यह हमारे लिए बड़े शर्म की बात है। हां, हम तुम्हारे पास हथियार रेहन रख देते हैं। हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा ने उसे हथियार लेकर रात को आने का वायदा कर लिया।

चुनांचे काब के दूध शरीक भाई हज़रत अबू नाइला को साथ लेकर हज़रत मुहम्मद रात को काब के पास आए। काब ने इन लोगों को क़िले में बुलाया। ये क़िले में गए। वह उनके पास उतर कर आने लगा तो उसकी बीवी ने उससे कहा, इस वक़्त तुम बाहर कहां जा रहे हो?

उसने कहा, यह मुहम्मद बिन मस्लमा और मेरे भाई अबू नाइला आए हैं।

उसकी बीवी ने कहा, मैं तो ऐसी आवाज़ सुन रही हूं, जिससे ख़ून टपकता हुआ महसूस हो रहा है।

उसने कहा, यह तो मेरे भाई मुहम्मद बिन मस्लमा और मेरे दूध शरीक भाई अबू नाइला हैं। बहादुर आदमी को अगर रात के वक़्त भी मुक़ाबले के लिए बुलाया जाए, तो वह रात को भी ज़रूर निकल आता है।

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा ने अपने साथ दो तीन और आदमियों को भी दाख़िल कर लिया और उनसे कहा, मैं इसके बालों को पकड़ कर सूंघने लग जाऊंगा और तुम्हें भी सुंघाऊंगा। जब तुम देखो कि मैंने उसका सर अच्छी तरह पकड़ लिया है तो तुम उस पर तलवार से वार कर देना। काब मोतियों से जड़ी हुई एक पेटी पहने हुए नीचे उतर कर इन लोगो के पास आया और उससे इत्र की ख़ुशबू महक रही थी।

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा ने कहा, आज जैसी अच्छी ख़ुशबू मैंने कभी नहीं देखी।

उसने कहा, मेरे पास अरब की सबसे ज़्यादा ख़ुशबू लगाने वाली बड़ी ख़ूबसूरत औरत है।

हज़रत मुहम्मद ने कहा, क्या आप मुझे इस बात की इजाज़त देते हैं कि मैं आपका सर सूंघ लूं?

काब ने कहा, ज़रूर।

चुनांचे हज़रत मुहम्मद ने ख़ुद सूंघा और अपने साथियों को सुंघाया। फिर काब से कहा, क्या दोबारा इजाज़त है?

उसने कहा, ज़रूर।

जब हज़रत मुहम्मद ने उसका सर मज़बूती से पकड़ लिया तो साथियों से कहा, पकड़ो, उन्होंने इसे क़त्ल कर दिया। फिर इन लोगों ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस आकर सारा वाक़िया सुनाया।

हज़रत उर्व: रज़ि० की रिवायत में यह है कि जब इन लोगों ने वाक़िया सुनाया, तो हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाह का शुक्र अदा किया।

इब्ने साद की रिवायत में यह है कि ये लोग जब बक़ीअ ग़रक़द (मदीना के मशहूर क़ब्रस्तान) के क़रीब पहुंचे, तो ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस रात खड़े होकर नमाज़ पढ़ते रहे। जब आपने उनकी तक्बीर की आवाज़ सुनी तो आपने भी अल्लाहु अक्बर कहा और आप समझ गए कि इन लोगों ने उसे क़त्ल कर दिया है।

फिर ये लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने फ़रमाया, ये चेहरे कामियाब हो गए। इन लागों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! और आपका चेहरा मुबारक भी (कामियाब हुआ) और इन लोगों ने काब का सर आपके सामने डाल दिया। हुज़ूर सल्ल० ने इसके क़त्ल हो जाने पर अल्लाह का शुक्र अदा किया।

हज़रत इक्रिमा की मुर्सल रिवायत में यह है कि (इस क़त्ल से) तमाम यहूदी डर गए और घबरा गए। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर कहा कि हमारा सरदार धोखे से क़त्ल कर दिया गया है। हुज़ूर सल्ल० ने उनको उसकी नापाक हरकतें याद दिलाईं कि कैसे वह इस्लाम के ख़िलाफ़ लोगों को उभारता था और मुसलमानों को कष्ट पहुंचाया करता था। (यह सुनकर) वे यहूदी डर गए और कुछ न बोले।[1]

इब्ने इस्हाक़ ने ज़िक्र किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी तरफ़ से काब बिन अशरफ़ को क़त्ल करने के लिए कौन तैयार है?

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं इसकी ज़िम्मेदारी उठाता हूं, मैं उसे क़त्ल करूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम यह काम कर सकते हो तो ज़रूर करो।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद वापस चले गए और खाना-पीना छोड़ दिया। बस इतना खाते-पीते थे कि जान बची रहे।

यह बात हुज़ूर सल्ल० को बताई गई। आपने उन्हें बुलाकर फ़रमाया, तुमने खाना-पीना क्यों छोड़ दिया है?

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैंने आपके सामने एक बात कही है, पता नहीं, मैं उसे पूरा कर सकूंगा या नहीं? (इस चिन्ता में मैंने खाना-पीना छोड़ दिया है।)

आपने फ़रमाया, तुम्हारे ज़िम्मे तो मेहनत और कोशिश करना ही है।

इब्ने इस्हाक़ ने हज़रत अब्बास रज़ि० की रिवायत में यह भी नक़ल किया है (कि हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा जब अपने साथियों को लेकर चले, तो) हुज़ूर सल्ल० भी उन लोगों के साथ बक़ीउल ग़रक़द तक

1. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 239

पैदल तशरीफ़ ले गए, फिर आपने उनको रवाना फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह का नाम लेकर चलो। ऐ अल्लाह! इनकी मदद फ़रमा।[1]

अबू राफ़ेअ सल्लाम बिन अबुल हुक़ैक़ का क़त्ल

हज़रत अब्दुल्लाह बिन काब बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० (के दीन के फैलने और तरक़्क़ी पाने) के लिए जिन फ़ायदेमंद शक्लों और हालतों को वजूद बख़्शा, उनमें से एक बात यह थी कि अंसार के दोनों क़बीलों औस और ख़ज़रज का हुज़ूर सल्ल० की नुसरत में और उनके काम करने में एक दूसरे से हर वक़्त ऐसा मुक़ाबला लगा रहता था जैसे कि दो पहलवानों में हुआ करता है।

क़बीला औस वाले जब कोई ऐसा काम कर लेते जिससे हुज़ूर सल्ल० (के दीन को और हुज़ूर सल्ल० वाली मेहनत) को फ़ायदा होता तो क़बीला ख़ज़रज वाले कहते, तुम यह काम करके हुज़ूर सल्ल० के यहां फ़ज़ीलत में हमसे आगे नहीं निकल सकते हो और जब तक वैसा ही काम न कर लेते, वे लोग चैन से न बैठते और जब क़बीला ख़ज़रज वाले कोई ऐसा काम कर लेते तो क़बीला औस वाले यही बात कहते।

चुनांचे जब क़बीला औस (के एक सहाबी हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि०) ने काब बिन अशरफ़ को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दुश्मनी रखने की वजह से क़त्ल कर दिया, तो क़बीला ख़ज़रज ने कहा, अल्लाह की क़सम! तुम यह कारनामा करके फ़ज़ीलत में कभी भी हमसे आगे नहीं बढ़ सकते हो और फिर उन्होंने सोचा कि कौन-सा आदमी हुज़ूर सल्ल० से दुश्मनी रखने में काब बिन अशरफ़ जैसा है।

वे आख़िर में इस नतीजे पर पहुंचे कि ख़ैबर का इब्ने अबुल हुक़ैक़ दुश्मनी में काब जैसा है। चुनांचे इन लोगों ने उसे क़त्ल करने की हुज़ूर सल्ल० से इजाज़त मांगी।

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 7, फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 237

हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें इजाज़त दे दी तो क़बीला ख़ज़रज में से बनू सलमा के पांच आदमी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अुतैक, हज़रत मसऊद बिन सिनान, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस, हज़रत अबू क़तादा, हज़रत हारिस बिन रिबआी, और हज़रत ख़ुज़ाआी बिन अस्वद रज़ियल्लाहु अन्हुम (ख़ैबर जाने के लिए) तैयार हुए। हुज़ूर सल्ल० ने अब्दुल्लाह बिन उतैक को उनका अमीर बनाया और उन्हें किसी बच्चे या औरत को क़त्ल करने से मना फ़रमाया।

चुनांचे वे लोग (मदीना से) रवाना हुए और ख़ैबर पहुंचकर वे लोग रात के वक़्त इब्ने अबुल हुक़ैक़ के घर गए और घर के हर कमरे को बाहर से बन्द कर दिया, ताकि किसी कमरे में से अन्दर वाले बाहर न आ सकें। इब्ने अबुल हुक़ैक़ अपने कोठे पर था, वहां तक जाने के लिए खजूर से बनी हुई एक सीढ़ी लगी थी। चुनांचे ये लोग उस सीढ़ी से चढ़कर उसके दरवाज़े पर पहुंच गए और अन्दर आने की इजाज़त चाही।

उसकी बीवी निकलकर बाहर आई और कहने लगी, तुम लोग कौन हो?

इन लोगों ने कहा, हम अरब के लोग हैं और ग़ल्ले की खोज में आए हैं।

उसने कहा, अबू राफ़ेअ यह है जिससे तुम मिलना चाहते हो, अन्दर आ जाओ। फ़रमाते हैं कि जब हम अन्दर चले गए, तो हमने अन्दर से कमरा बन्द कर लिया, ताकि उस तक पहुंचने में कोई रोक ही न बन सके। (यह देखकर) उसकी बीवी शोर मचाकर हमारी ख़बर करने लगी। अबू राफ़ेअ अपने बिस्तर पर था। हम तलवारें लेकर उस पर तेज़ी से झपटे। अल्लाह की क़सम! रात के अंधेरे में हमें इसका पता सिर्फ़ उसकी सफ़ेदी से ही चला, ऐसा सफ़ेद था, जैसे कि मिस्री सफ़ेद चादर पड़ी हो।

जब उसकी बीवी हमारे बारे में शोर मचाकर बताने लगी, तो हमारे एक साथी ने (क़त्ल करने के लिए) उस पर तलवार उठा ली, लेकिन फिर

उसे याद आया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (बच्चे और औरत को क़त्ल करने से) मना फ़रमाया था, इस वजह से उसने तलवार रोक ली। अगर हुज़ूर सल्ल० ने हमें मना न फ़रमाया होता, तो हम रात ही को उससे निमट लेते।

जब हम लोगों ने तलवारों से उस पर हमला किया (लेकिन उसका काम तमाम न हुआ) तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस ने तलवार की नोक उसके पेट पर रखकर तलवार पर अपना सारा वज़न डाल दिया जिससे तलवार पार हो गई। अब राफ़ेअ बस-बस ही कहता रहा।

इसके बाद हम लोग वहां से बाहर आए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उतैक की निगाह कमज़ोर थी, वह सीढ़ी से गिर गए, जिससे उनके हाथ में बुरी तरह मोच आ गई। हम उन्हें वहां से उठा कर यहूदियों के चश्मों से बहने वाली एक नहर के पास लाए और उसमें दाख़िल हो गए।

इधर वे लोग आग जला कर हर ओर हमारी खोज में दौड़ पड़े, आख़िर नाउम्मीद होकर उसके पास वापस गए और उसको (अबू राफ़ेअ को) सबने घेर लिया। उस वक़्त उसकी जान निकल रही थी। हमने आपस में कहा, हमें कैसे पता चलेगा कि अल्लाह का दुश्मन मर गया?

हममें से एक साथी ने कहा कि मैं जाकर देख आता हूं। चुनांचे वह गए, और आम लोगों में शामिल हो गए। वह फ़रमाते हैं कि वहां जाकर मैंने देखा कि अबू राफ़ेअ की बीवी और बहुत से यहूदी उसके आस-पास जमा हैं। उसकी बीवी के हाथ में चिराग़ है और वह उसके चेहरे को देख रही है और वह उनको बता रही है और कह रही है कि अल्लाह की क़सम! आवाज़ तो मैंने इब्ने उतैक की सुनी थी, लेकिन फिर मैंने अपने आपको झुठलाया और मैंने कहा, इब्ने उतैक यहां इस इलाक़े में कहां?

फिर उसने आगे बढ़कर उसके चेहरे को ग़ौर से देखा और फिर कहा, यहूदियों के माबूद की क़सम! यह तो मर चुका है।

मैंने इससे ज़्यादा लज़्ज़तदार बात कभी नहीं सुनी। फ़रमाते हैं हमारा साथी हमारे पास वापस आया और उसने हमें (उसकी मौत) की

ख़बर दी। हम अपने साथी को उठा कर चले और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अल्लाह के दुश्मन को क़त्ल कर देने की ख़बर दी।

हुज़ूर सल्ल० के सामने हम में मतभेद हो गया कि किसने क़त्ल किया है? हर एक कहने लगा कि उसने क़त्ल किया है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमया, अपनी तलवारें लाओ। हम अपनी तलवारें लाए। आपने उन्हें देखकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस की तलवार के बारे में कहा कि इसने क़त्ल किया है, क्योंकि मैं इसमें खाने का असर देख रहा हूं। (यह तलवार उसके मेदे में से गुज़री है।)[1]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू राफ़ेअ यहूदी (को क़त्ल करने के लिए उसके यहां) कुछ अंसार को भेजा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उतैक रज़ि० को उनका अमीर बनाया।

अबू राफ़ेअ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बड़ी पीड़ा पहुंचाता था और आपके विरोधियों की माली (मदद) किया करता था और वह हिजाज़ की धरती पर (ख़ैबर में) अपने क़िले में रहा करता था।

ये लोग सूरज डूबने के बाद ख़ैबर के क़रीब पहुंचे। लोग (चरागाहों से) अपने जानवर वापस ला चुके थे। हज़रत अब्दुल्लाह ने (अपने साथियों से) कहा कि तुम यहां बैठे रहो और मैं जाता हूं और दरबान से कोई ऐसी तदबीर करता हूं जिससे मैं (क़िले के अन्दर) दाख़िल हो जाऊंगा।

चुनांचे यह गए और दरवाज़े के क़रीब जाकर अपना कपड़ा अपने ऊपर डालकर इस तरह बैठ गए कि जैसे कि यह ज़रूरत पूरी करने के लिए बैठे हों। सब लोग अन्दर जा चुके थे, तो उनको दरबान ने आवाज़ देकर कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे! अगर तुम्हें अन्दर आना है, तो आ जाओ, मैं दरवाजा बन्द करना चाहता हूं। मैं अन्दर दाख़िल होकर छिप

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 137, सीरत इब्ने हिशाम, भाग 2, पृ० 190

गया। जब सब लोग अन्दर आ गए तो उसने दरवाज़ा बन्द करके चाबियां कील पर लटका दीं। मैंने खड़े होकर चाबियां लीं और दरवाज़ा खोल दिया।

अबू राफ़ेअ के पास रात को क़िस्से-कहानियां हुआ करती थीं और वह अपने कोठे में था। जब क़िस्से-कहानियां सुनाने वाले लोग उसके पास से चले गए तो मैंने कोठे पर चढ़ना शुरू किया। जब भी मैं कोई दरवाज़ा खोलता, तो मैं अन्दर से उसे बन्द कर लेता और मैंने कहा, अगर लोगों को मेरा पता भी चल गया तो मैं उनके आने से पहले उसे क़त्ल कर लूंगा।

जब मैं उसके पास पहुंचा, तो वह अंधेरे कमरे में अपने घरवालों के साथ था। मुझे पता नहीं चल रहा था कि वह कमरे में किस जगह है, इसलिए मैंने उसे आवाज़ दी, ऐ अबू राफ़ेअ !

उसने कहा, यह कौन है ?

मैं आवाज़ की तरफ़ बढ़ा और मैंने उस पर तलवार का एक वार किया, लेकिन मैं चूंकि घबराया हुआ था, इस वजह से उसका काम तमाम न कर सका और उसने शोर मचाया, तो मैं कमरे से बाहर निकलकर थोड़ी देर खड़ा रहा। फिर मैं अन्दर उसकी ओर गया और मैंने कहा, ऐ अबू राफ़ेअ ! यह शोर कैसा था ?

उसने कहा, तेरी मां का नाश हो, कमरे में कोई आदमी है, जिसने मुझे अभी तलवार मारी थी। यह सुनकर मैंने उसको ज़ोर से तलवार मारी जिससे वह घायल तो हो गया, लेकिन मरा नहीं। मैंने तलवार की नोक उसके पेट पर रखकर इस ज़ोर से उसे दबाया कि उकी कमर तक पहुंच गई। तब मैं समझा कि मैंने इसका काम तमाम कर दिया, फिर मैं दरवाज़ा खोलता हुआ वापस चला, यहां तक कि अबू राफ़ेअ की सीढ़ी तक पहुंच गया, (और मैं सीढ़ी से नीचे उतरने लगा, एक जगह पहुंचकर) मैं समझा कि सीढ़ी ख़त्म हो गई है और मैं ज़मीन तक पहुंच गया हूं। (इस ख़्याल से मैंने क़दम आगे बढ़ाया) तो मैं चांदनी रात में गिर गया और मेरी पिंडुली टूट गई, जिसे मैंने पगड़ी से बांधा और मैं

चल दिया, यहां तक कि मैं दरवाज़े पर जाकर बैठ गया।

मैंने दिल में कहा, आज रात मैं यहां से बाहर नहीं जाऊंगा, जब तक मुझे पता न चल जाए कि मैंने उसे क़त्ल कर दिया है या नहीं?

सुबह जब मुर्ग़ा बोला तो एक आदमी ने क़िले की दीवार पर चढ़कर यह एलान किया कि हिजाज़ का व्यापारी अबू राफ़ेअ मर गया है। फिर मैं वहां से अपने साथियों के पास पहुंचा और मैंने उनसे कहा, जल्दी चलो, अल्लाह ने अबू राफ़ेअ को क़त्ल कर दिया है। (चुनांचे हम वहां से मदीना के लिए रवाना हुए) मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर सारा वाक़िआ सुनाया।

आपने फ़रमाया, अपना पांव फैलाओ। मैंने फैला दिया। आपने उस पर अपना मुबारक हाथ फेरा। मुबारक हाथ फेरते ही मेरा पांव एकदम ऐसे ठीक हो गया जैसे उसे कुछ हुआ ही न हो।[1]

बुख़ारी की एक रिवायत में यह है कि हज़रत उबई बिन काब रज़ि० फ़रमाते हैं कि ये लोग जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचे तो उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० मिंबर पर तशरीफ़ रखते थे। (उनको देखकर) आपने फरमाया, ये चेहरे कामियाब हो गए।

इन लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपका चेहरा भी कामियाब हो गया।

आपने फ़रमाया, क्या तुम उसे क़त्ल कर आए हो?

इन लोगों ने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, ज़रा मुझे तलवार दो। आपने तलवार को (लेकर उसे) सौंता और आपने फ़रमाया, हां, इस तलवार की धार पर उसके खाने का असर है।[2]

इब्ने शैबा यहूदी का क़त्ल

हज़रत मुहय्यिसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल

1. बुख़ारी,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 137

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिस यहूदी पर तुम क़ाबू पा लो, उसे क़त्ल कर दो। चुनांचे इब्ने शैबा एक यहूदी ताजिर था, जिसका मुसलमानों से मेल-जोल था और उसके उनसे तिजारती ताल्लुक़ात थे। हज़रत मुहय्यिसा ने उस पर हमला करके उसे क़त्ल कर डाला।

उनके बड़े भाई हज़रत हुवैयिसा उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे। हज़रत हुवैयिसा इब्ने शैबा को क़त्ल करने की वजह से हज़रत मुहय्यिसा को मारते जाते थे और कहते थे कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! तूने उसे क़त्ल कर दिया, हालांकि अल्लाह की क़सम! तेरे पेट की बहुत सी चर्बी उसके माल से बनी है।

हज़रत मुहय्यिसा कहते हैं कि मैंने कहा अल्लाह की क़सम! अगर हुज़ूर सल्ल० मुझे तुम्हारे क़त्ल करने का हुक्म देते, तो मैं तुम्हारी गरदन भी उड़ा देता। अल्लाह की क़सम! इसी बात से हज़रत हुवय्यिसा के इस्लाम की शुरूआत हुई। (भाई की इस बात का उनके दिल पर बड़ा असर पड़ा)

हज़रत हुवय्यिसा ने कहा, अल्लाह की क़सम! अगर मुहम्मद (सल्ल०) तुम्हें मेरे क़त्ल का हुक्म दे दें, तो क्या तुम मुझे ज़रूर क़त्ल कर दोगे?

हज़रत मुहय्यिसा ने कहा, हां, अल्लाह की क़सम!

तो हज़रत हुवय्यिसा ने कहा, अल्लाह की क़सम! जिस दीन ने तुझको यहां तक पहुंचा दिया है, वह तो अजीब दीन है?[1]

इब्ने इस्हाक़ ने भी इस जैसी हदीस बयान की है, जिसमें यह है कि हज़रत मुहय्यिसा फ़रमाते हैं कि मैंने कहा, मुझे इस (इब्ने शैबा) के क़त्ल करने का उस ज़ात ने हुक्म दिया है कि अगर वह मुझे तुम्हारे क़त्ल करने का हुक्म दे, तो मैं तुम्हारी गरदन भी उड़ा दूं। चुनांचे हज़रत हुवय्यिसा रज़ि० आख़िर में मुसलमान हो गए।[2]

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 98।
2. अबू दाऊद,

ग़ज़वा बनी क़ैनुक़ाअ और ग़ज़वा बनू नज़ीर और ग़ज़वा बनू क़ुरैज़ा और इन ग़ज़वों में अंसार सहाबियों के कारनामे

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० ने बद्र में क़ुरैश को हराया तो आपने बनू क़ैनुक़ाअ के बाज़ार में यहूदियों को जमा करके फ़रमाया, ऐ यहूदियो ! तुम इससे पहले इस्लाम ले आओ कि तुम्हें ऐसी हार का मुंह देखना पड़े, जैसी हार क़ुरैश को बद्र की लड़ाई के दिन खानी पड़ी।

यहूदियों ने कहा, क़ुरैश लड़ना नहीं जानते थे। अगर आप हमसे लड़ेंगे, तो आपको पता चल जाएगा कि हम (बहादुर और लड़ने वाले) मर्द हैं। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

قُلْ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ —— لِأُولِي الْأَبْصَارِ ۝

'कह दे काफ़िरों को कि अब तुम मग़लूब होगे और हांके जाओगे दोज़ख़ की तरफ़ और क्या बुरा ठिकाना है। अभी गुज़र चुका है तुम्हारे सामने एक नमूना, दो फ़ौजों में, जिनमें मुक़ाबला हुआ, एक फ़ौज है कि लड़ती है अल्लाह की राह में और दूसरी फ़ौज काफ़िरों की है। देखते हैं ये उनको अपने से दोगुनी, खुली आंखों से और अल्लाह ज़ोर देता है अपनी मदद का जिसको चाहे, इसी में इबरत है देखने वालों को।'[1]

अबू दाऊद की रिवायत में यह है कि यहूदियों ने कहा, ऐ मुहम्मद (सल्ल०) ! क़ुरैश के कुछ नातर्जुबेकार, लड़ाई से अनजान, लोगों को क़त्ल करके आप धोखे में न रहें। अगर आपने हमसे लड़ाई की तो आपको पता चल जाएगा कि हम कैसे ज़बरदस्त और बहादुर लोग हैं। और आपको हम जैसों से कभी पाला नहीं पड़ा।[2]

हज़रत ज़ोहरी फ़रमाते हैं कि जब बद्र की लड़ाई में कुफ़्फ़ार को हार का मुंह देखना पड़ा, तो मुसलमानों ने अपने यहूदी दोस्तों से

1. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 334
2. अबू दाऊद, भाग 4, पृ० 141

कहा, इस्लाम ले आओ, कहीं अल्लाह तुम पर बद्र जैसा दिन न ले आए।

मालिक बिन सैफ़ (यहूदी) ने कहा, क़ुरैश जैसी एक लड़ाई से अनजान जमात को हरा कर क्या तुम धोखे में पड़ गए हो? अगर हमने तुम्हारे ख़िलाफ़ अपनी सारी ताक़त लगाने का पक्का इरादा कर लिया, तो तुम्हारे अन्दर हमसे लड़ने की कुछ ताक़त नहीं रहेगी।

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे कुछ यहूदी दोस्त ऐसे हैं जो बड़े ताक़तवर और बहुत ज़्यादा हथियार वाले और बड़ी शान व शौकत वाले हैं, (लेकिन इसके बावजूद) मैं यहूदियों की दोस्ती छोड़कर अल्लाह और उसके रसूल की दोस्ती अख़्तियार करता हूं। अब अल्लाह और उसके रसूल के सिवा मेरा कोई दोस्त नहीं है।

इस पर अब्दुल्लाह बिन उबई (बिन सलूल मुनाफ़िक़) ने कहा, मैं तो यहूदियों की दोस्ती नहीं छोड़ सकता, मुझे तो उनकी ज़रूरत है।

हुज़ूर सल्ल० ने (अब्दुल्लाह बिन उबई) से फ़रमाया, ऐ अबुल हुबाब ! (यह अब्दुल्लाह बिन उबई का उपनाम है) तुमने उबादा बिन सामित की ज़िद में आकर यहूदियों की दोस्ती अख़्तियार की है, वह तुम्हें मुबारक हो। उबादा को इसकी ज़रूरत नहीं है।

अब्दुल्लाह बिन उबई ने कहा, मुझे यह सूरतेहाल मंजूर है। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

يَآاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَ النَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ

—————— وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۔

'ऐ ईमाने वालो ! मत बनाओ यहूदियों और ईसाइयों को दोस्त' से लेकर 'अल्लाह तुझको बचा लेगा लोगों से' तक।[1]

हजरत उबादा बिन सामित रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब बनू क़ैनुक़ाअ ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लड़ाई शुरू की तो अब्दुल्लाह

1. इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 69

बिन उबई मुनाफ़िक़ ने उनका साथ दिया और उनकी हिमायत में खड़ा हो गया।

बनू औफ़ के हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० भी अब्दुल्लाह बिन उबई की तरह बनू क़ैनुक़ाअ के मित्र थे। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर बनू क़ैनुक़ाअ की दोस्ती और समझौते को छोड़कर अल्लाह और उसके रसूल की दोस्ती अख़्तियार करने का इज़्हार किया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों को दोस्त बनाता हूं और इन कुफ़्फ़ार के समझौते और दोस्ती से अलग होने का इज़्हार करता हूं।

चुनांचे हज़रत उबादा और अब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में सूरः माइदा की नीचे लिखी आयतें उतरीं—

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۔

——— وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝

'ऐ ईमान वालो ! मत बनाओ यहूदियों और ईसाइसों को दोस्त। वे आपस में दोस्त हैं एक दूसरे के' से लेकर 'और जो कोई दोस्त रखे अल्लाह को और उसके रसूल को और ईमान वालों को, तो अल्लाह की जमाअत ही सब पर ग़ालिब है' तक।[1]

बनू नज़ीर का वाक़िआ

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई से पहले कुरैश कुफ़्फ़ार ने अब्दुल्लाह बिन उबई वग़ैरह बुतों को पूजने वालों के नाम ख़त लिखा, जिसमें कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा को अपने यहां ठहराने पर धमकी दी और उन्हें यह डरावा दिया कि वे तमाम अरबों को लेकर उन पर हमला कर देंगे, इस पर इब्ने उबई और उनके साथियों ने मुसलमानों से लड़ने का इरादा कर लिया।

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 4

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० (को जब इसका पता चला तो आप) उनके पास तशरीफ़ ले गए और उनसे फ़रमाया कि जैसा फ़रेब तुम्हें क़ुरैश ने दिया है, ऐसा किसी ने तुम्हें न दिया होगा। वे तुम्हें आपस में लड़ाना चाहते हैं (क्योंकि मुसलमानों में तुम्हारे भाई और बेटे भी हैं।)

जब उन्होंने यह सुना तो समझ गए कि आप सही कह रहे हैं और वे सब बिखर गए (और हुज़ूर सल्ल० और मुसलमानों से लड़ाई लड़ने का इरादा छोड़ दिया) जब ग़ज़वा बद्र हुआ तो इसके बाद क़ुरैश ने यहूदियों को ख़त लिखा कि तुम तो हथियारों और क़िलों वाले हो, (हुज़ूर सल्ल० और मुसलमानों को क़त्ल कर दो) और उसमें उनको ख़ूब धमकाया।

चुनांचे इस पर बनू नज़ीर मुसलमानों से ग़द्दारी पर तैयार हो गए और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह पैग़ाम भेजा कि आप अपने तीन साथियों के साथ तशरीफ़ लाएं, हमारे तीन उलेमा आपसे मुलाक़ात करेंगे (और आपसे बातचीत करेंगे)। अगर ये तीनों आप पर ईमान ले आए तो हम भी आपकी पैरवी कर लेंगे।

चुनांचे आप इसके लिए तैयार हो गए। इन तीनों यहूदियों ने अपनी चादरों में ख़ंजर छिपा लिए (कि बात करते-करते एकदम हुज़ूर सल्ल० पर हमला कर देंगे।)

बनू नज़ीर की एक औरत का भाई मुसलमान हो चुका था और अंसार में शामिल था। उस औरत ने अपने इस भाई को पैग़ाम भेजकर बनू नज़ीर की इस चाल से बाख़बर कर दिया। उसके भाई ने हुज़ूर सल्ल० के वहां पहुंचने से पहले ही यह सारी बात आपको बता दी। आप (रास्ते से ही) वापस आ गए और सुबह-सुबह ही फ़ौज की टुकड़ी लेकर उनका उसी दिन घेराव कर लिया और अगले दिन सुबह को बनू क़ुरैज़ा का जाकर घेराव किया। लेकिन उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से समझौता कर लिया।

इनसे फ़ारिग़ होकर हुज़ूर सल्ल० फिर बनू नज़ीर के पास वापस आए। (ये समझौते पर तैयार न हुए) तो हुज़ूर सल्ल० ने उनसे लड़ाई की। आख़िर उन्होंने देश-निकाले पर हुज़ूर सल्ल० से समझौता कर

लिया और यह बात भी तै पाई कि हथियार के अलावा जितना सामान वे अपने ऊंटों पर लाद सकते हैं, वे सारा ले जाएंगे।

चुनांचे उन्होंने हर चीज़ लादनी शुरू की, यहां तक कि अपने घरों के दरवाज़े भी लादे। चुनांचे वे अपने हाथों से अपने घरों को वीरान कर रहे थे और इनको गिरा रहे थे और जो लकड़ी पसन्द कर रहे थे, उसे लाद रहे थे। यह शाम की तरफ़ उनका पहला देश-निकाला था।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू नज़ीर का घेराव लगातार जारी रखा, यहां तक कि वे तंग आ गए और हुज़ूर सल्ल० की तमाम बातें उन्होंने मान लीं और हुज़ूर सल्ल० ने उनसे इस बात पर समझौता कर लिया कि उनको क़त्ल नहीं किया जाएगा और वे अपने इलाक़े और वतन को छोड़कर (बलक़ा और उमान के क़रीब) शाम देश में अज़रिआत नामी जगह पर जा बसेंगे और आपने उनमें से हर तीन आदमियों को एक ऊंट और एक मश्क ले जाने की इजाज़त दी।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० फ़रमाते हैं कि उनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू नज़ीर की ओर भेजा था और उनसे फ़रमाया था कि बनू नज़ीर को देश निकाला देने के लिए तीन दिन की मोहलत बता दें।[3]

इब्ने साद ने बयान किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू नज़ीर के पास हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० को यह पैग़ाम देकर भेजा था कि तुम मेरे शहर से निकल जाओ और जब तुमने मेरे साथ ग़द्दारी का इरादा कर लिया तो अब तक तुम मेरे साथ नहीं रह सकते हो और मैं तुम्हें (यहां से जाने के लिए) दस दिन की मोहलत देता हूं।[4]

---

1. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 232, बज़्लुल मज्हूद, भाग 4, पृ० 142
2. बैहक़ी,
3. इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 333
4. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 233

बनू क़ुरैज़ा का वाक़िआ

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि ग़ज़वा ख़ंदक़ के दिन मैं बाहर निकली और मैं लोगों के पीछे चल रही थी कि इतने में मैंने अपने पीछे ज़मीन पर पैरों की चाप सुनी। मैंने देखा कि हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० और उनके भतीजे हज़रत हारिस बिन औस रज़ि० चले आ रहे हैं और हज़रत साद ने ढाल उठा रखी थी। मैं ज़मीन पर बैठ गई।

चुनांचे हज़रत साद गुज़रे और उन्होंने लोहे की ज़िरह (कवच) पहन रखी थी, (क़द के लम्बे होने की वजह से) उनके जिस्म का कुछ हिस्सा उस ज़िरह में से ज़ाहिर हो रहा था। मुझे ख़तरा हुआ कि उनके जिस्म के खुले हुए हिस्से पर दुश्मन वार न कर दे।

हज़रत साद भारी-भरकम और बड़े क़दावर इंसान थे। वह यह शेर पढ़ते जा रहे थे—

لَبِّثْ قَلِيلًا يُدْرِكِ الْهَيْجَا حَمَلْ   مَا أَحْسَنَ الْمَوْتَ إِذَا حَانَ الْأَجَلْ

'ज़रा थोड़ी देर ठहर जाता कि हमल (नामी आदमी) भी लड़ाई में पहुंच जाए, और जब मौत का वक़्त आ जाए, तो वह कितनी सुन्दर मालूम होती है। फिर मैं खड़ी हुई और एक बाग़ में दाख़िल हुई। वहां देखा तो कुछ मुसलमान वहां बैठे हुए थे जिनमें हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० भी थे और उनमें एक मुसलमान ख़ूद पहने हुए भी थे। (मुझे देखकर) हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम क्यों आई हो ? अल्लाह की क़सम ! तुम बड़ी हिम्मत वाली हो। तुम्हें इस बात का ख़तरा नहीं है कि कोई मुसीबत आ जाए या हार हो जाए और भगदड़ मच जाए। (तुम्हें इस लड़ाई के दौरान घर में रहना चाहिए था, बाहर नहीं निकलना चाहिए था)।

हज़रत उमर रज़ि० मुझे मलामत करते रहे, यहां तक कि मेरा दिल चाहने लगा कि ज़मीन फट जाए और मैं उसके अंदर चली जाऊं। इतने में ख़ूद वाले आदमी ने अपना ख़ूद सर से उठाया तो वह हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० थे। उन्होंने कहा, ऐ उमर ! तुम्हारा भला हो, आज

तो तुमने हद कर दी। (इस बेचारी को) बहुत कुछ कह डाला। हम लोग हार कर या भाग कर अल्लाह के अलावा और कहां जा सकते हैं?

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं (कि मुझे जिसका अंदेशा था, वह हुआ) कि कुरैश के इब्नुल अरिक़ा नामी एक आदमी ने हज़रत साद को तीर मारा और कहा, ले मेरा तीर और मैं इब्नुल अरिक़ा हूं। चुनांचे उसका एक तीर बाज़ू की नस पर आकर लगा, जिससे वह नस कट गयी।

हज़रत साद ने अल्लाह से दुआ की कि जब तक मेरी आंखें बनू क़ुरैज़ा के (अंजाम के) बारे में ठंडी न हो जाएं, उस वक़्त तक मुझे मौत न दे।

बनू क़ुरैज़ा हज़रत साद की जाहिलियत में दोस्त और मित्र थे। चुनांचे (उनकी दुआ की वजह से) उनके घाव से ख़ून निकलना बंद हो गया और अल्लाह ने मुश्रिकों पर ज़ोरदार आंधी भेजी और अल्लाह की मदद ऐसी आई कि मुसलमानों को लड़ना न पड़ा और अल्लाह बड़े ताक़तवर और ग़ालिब हैं।

चुनांचे अबू सुफ़ियान और उसके साथी तिहामा और उऐना बिन बद्र और उसके साथी नज्द चले गए और बनू क़ुरैज़ा वापस आकर अपने क़िलों में बन्द हो गए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना वापस तशरीफ़ ले आए और आपके हुक्म देने पर हज़रत साद के लिए मस्जिद में चमड़े का ख़ेमा लगाया गया।

फिर हज़रत जिब्रील अलै० तशरीफ़ लाए और उनके दांत गंदे थे। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, क्या आपने हथियार रख दिए? नहीं! अल्लाह की क़सम! फ़रिश्तों ने तो अभी तक हथियार नहीं रखे हैं। आप बनू क़ुरैज़ा की ओर चलें और उनसे लड़ें।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने अपने हथियार पहन लिए और लोगों में कूच का एलान कराया कि चलो। बनू ग़नम मस्जिद के पड़ोसी थे, उसके आस-पास रहते थे। आप उनके पास से गुज़रे तो उनसे पूछा, अभी तुम्हारे पास से कौन गुज़र कर गया है?

उन्होंने कहा, हमारे पास से हज़रत दिह्या कलबी रज़ि० गुज़र कर गए हैं। (हज़रत जिब्रील अलै० कई बार हज़रत दिह्या की शक्ल में आया करते थे। इसलिए) हज़रत जिब्रील की दाढ़ी और उमर और चेहरा सब कुछ हज़रत दिह्या कलबी जैसा होता था।

हुज़ूर सल्ल० ने जाकर बनू कुरैज़ा का पच्चीस दिन घेराव किया। कड़े घेराव की वजह से जब बनू कुरैज़ा तंग आ गए और उनकी मुसीबत और परेशानी बहुत ज़्यादा हो गई, तो उनसे कहा गया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ैसला कुबूल कर लो। उन्होंने अबू लबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर से मश्विरा किया।

अबू लबाबा ने उन्हें इशारे से बता दिया कि तुम ज़िब्ह कर दिए जाओगे।

आख़िर बनू कुरैज़ा ने कहा कि हमें अपने बारे में साद बिन मुआज़ का फ़ैसला मंज़ूर है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, चलो अच्छा है, तुम साद बिन मुआज़ के फ़ैसले को मान लो। चुनांचे हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० को एक गधे पर सवार करा कर लाया गया। जिस पर खजूर की छाल का पालान रखा हुआ था। (रास्ते में) उनकी क़ौम ने उनको हर तरह से घेरा हुआ था और सब उनसे (बनू कुरैज़ा की सिफ़ारिश करते हुए) कह रहे थे कि यह तुम्हारे मित्र और दोस्त हैं और मुसीबत में काम आनेवाले हैं और उन्हें तुम ख़ुद अच्छी तरह जानते हो?

हज़रत साद (सब की सुनते रहे और ख़ामोश रहे और उन्हों) ने उनकी किसी बात का कोई जवाब न दिया और उनकी ओर मुतवज्जह हुए। जब बनू कुरैज़ा के मुहल्ले के क़रीब पहुंचे तो अपनी क़ौम की ओर मुतवज्जह होकर उनसे कहा कि मेरे लिए अब इस बात का वक़्त आ चुका है कि मैं अल्लाह के बारे में किसी की मलामत की परवाह न करूं।

हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू सईद रज़ि० ने बयान किया जब हज़रत साद सामने से ज़ाहिर हुए तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया,

खड़े होकर अपने सरदार को (एहतियात से) सवारी से उतारो।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि हमारे सरदार तो अल्लाह हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इन्हें उतारो। चुनांचे सहाबा रज़ि० ने उनको उतारा। (हुज़ूर सल्ल० ने यह सारा इंतिज़ाम उनके घायल होने की वजह से करवाया।) आपने फ़रमाया, बनू क़ुरैज़ा के बारे में अपना फ़ैसला सुना दो।

हज़रत साद रज़ि० ने फ़रमाया, इनके बारे में मैं यह फ़ैसला करता हूं कि (इन्होंने बड़ी ग़द्दारी की है, इसलिए) इनमें जो मर्द लड़ाई के क़ाबिल है, उन्हें क़त्ल कर दिया जाए, और इनके बच्चों को क़ैद कर दिया जाए और इनका माल (मुसलमानों में) बांट दिया जाए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने इनके बारे में अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० वाला फ़ैसला किया है। फिर हज़रत साद रज़ि० ने दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! अगर तूने अपने नबी सल्ल० के लिए क़ुरैश से कोई लड़ाई बाक़ी रखी है, तो मुझे उस (में शिर्कत) के लिए बाक़ी रख और अगर तूने अपने नबी और क़ुरैश के दर्मियान लड़ाई का सिलसिला ख़त्म कर दिया है, तो मुझे उठा ले।

यह दुआ करते ही उनके घाव से फिर ख़ून बहने लगा, हालांकि यह घाव बिल्कुल ठीक हो चुका था। कान की बाली की तरह छोटा-सा निशान नज़र आता था और हुज़ूर सल्ल० ने जो ख़ेमा उनको लगाकर दिया था, यह उसमें वापस आ गए।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं (कि कुछ दिनों के बाद उनका इंतिक़ाल हो गया और) इंतिक़ाल के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र और रहज़रत उमर रज़ि० उनके पास मौजूद थे (और ये सब रो रहे थे) उस ज़ात की क़सम ! जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद सल्ल० की जान है, मैं अपने हुजरे में थी और हज़रत अबूबक्र और हज़्रत उमर रज़ि० के रोने की आवाज़ों को अलग-अलग पहचान रही थी और हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० आपस में बड़े नर्मदिल थे, जैसाकि अल्लाह ने उनके बारे में (क़ुरआन में) फ़रमाया है—

हज़रत अलक़मा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अम्मा जान ! (ग़म के ऐसे मौक़े पर) हुज़ूर सल्ल० क्या करते थे ?

उन्होंने कहा, आपकी आंखों में आंसू तो नहीं आते थे, लेकिन जब किसी के बारे में बड़ा ग़म होता तो आप अपनी मुबारक दाढ़ी को पकड़ लिया करते थे।[1] (अक्सर तो यही हालत होती थी, लेकिन कभी आंसू भी आ जाते थे)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० का इंतिक़ाल हुआ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी रोए और आपके सहाबा भी रोए, हालांकि आपकी आम आदत यह थी कि जब आपको बहुत ज़्यादा रंज होता, आप अपनी दाढ़ी को पकड़ लिया करते थे और मैं उस वक़्त अपने वालिद के रोने की आवाज़ को और हज़रत उमर के रोने की आवाज़ को अलग-अलग पहचान रही थी।[2]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल० हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० के जनाज़े से वापस तशरीफ़ लाए तो आपके आंसू आपकी दाढ़ी पर बह रहे थे।[3]

अंसार सहाबियों रज़ि० का दीनी इज़्ज़त पर फ़ख़्र करना

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार क़बीला औस और क़बीला ख़ज़रज एक दूसरे पर फख़्र करने लगे। औस ने कहा, हममें से वे सहाबी हैं जिनको फ़रिश्तों ने ग़ुस्ल दिया था। वह हज़रत हंज़ला बिन राहिब हैं और हममें से वे सहाबी भी हैं जिनकी (मौत की) वजह से अर्श भी हिल गया था और वह हज़रत साद बिन मुआज़ हैं। और हममें से वे सहाबी भी हैं जिनकी (लाश की) हिफ़ाज़त शहद की मक्खियों के एक झुंड ने की थी और वह हज़रत आसिम बिन साबित बिन अबी अफ़लह

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 123, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 3, हैसमी, भाग 6, पृ० 138, इसाबा, भाग 1, पृ० 274, कंज़, भाग 7, पृ० 41
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 9 पृ० 42
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 309

रज़ि० हैं और हममें से वे भी हैं जिनकी अकेले की गवाही को दो आदमियों की गवाही के बराबर क़रार दी गई और वह हज़रत ख़ुज़ैमा बिन साबित रज़ि० हैं।

(इस पर) क़बीला ख़ज़रज ने कहा, हममें से चार आदमी ऐसे हैं, जिन्होंने हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में मुकम्मल क़ुरआन हिफ़्ज़ करने की सआदत हासिल की, जो उनके अलावा और किसी को हासिल न हो सकी और वे (चार लोग) ये हैं—हज़रत ज़ैद बिन साबित, हज़रत उबई बिन काब, हज़रत मुआज़ बिन जबल और हज़रत अबू ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन।[1]

अंसार सहाबियों का दुनियावी लज़्ज़तों और फ़ानी सामान से सब्र करना और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से राज़ी होना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रबाह रज़ि० फ़रमाते हैं, रमज़ान के महीने में कुछ वफ़्द हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में आए। इन वफ़्दों में मैं भी था और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० भी थे। हम लोग एक दूसरे के लिए खाना तैयार किया करते थे और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने हमारी बहुत दावतें कीं।

हाशिम रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने हमें अपनी क़ियामगाह पर बहुत ज़्यादा बुलाया। एक बार मैंने (अपने दिल में) कहा, क्या मैं खाना तैयार करके इन सबको अपनी क़ियामगाह की दावत न दूं? चुनांचे मैंने खाना तैयार कराया।

इशा में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मेरी मुलाक़ात हुई, तो मैंने उनसे कहा, आज रात खाने की दावत मेरे यहां है।

उन्होंने कहा, क्या आज तुम मुझ पर सबक़त ले गए?

मैंने कहा, जी हां। मैंने सबको अपने यहां बुलाया। वे सब मेरे यहां आए तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अंसार के लोगो! क्या

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 41, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 139

मैं तुम्हें तुम्हारा ही क़िस्सा न बताऊं? फिर उन्होंने मक्का-जीत का क़िस्सा ज़िक्र करते हुए कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और आप मक्का में (फ़ातिहाना) दाख़िल हुए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़ौज के एक हिस्से पर हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को और दूसरे हिस्से पर हज़रत ख़ालिद रज़ि० को अमीर बनाकर भेजा और ग़ैर-मुसल्लह मुसलमानों पर हज़रत उबैदा रज़ि० को मुक़र्रर फ़रमाया। यह घाटी के बीच वाले हिस्से से गये और हुज़ूर सल्ल० अपनी फ़ौज में थे।

कुरैश ने अलग-अलग क़बीलों के आदमी इकट्ठे कर रखे थे और उन्होंने कहा, हम इनको आगे रखेंगे। अगर इनको कुछ ग़लबा मिल गया, तो हम इनके साथ होंगे और अगर वे हार गए तो हुज़ूर सल्ल० हमसे जो मांग करेंगे, उसे पूरा कर देंगे। हुज़ूर सल्ल० ने नज़र उठाई। मैं आपको नज़र आया।

आपने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह!

मैंने कहा, हाज़िर हूं ऐ अल्लाह के रसूल!

आपने फ़रमाया, जाओ मेरे लिए अंसार को बुला लाओ, लेकिन उनके साथ कोई और ग़ैर-अंसारी न आए।

मैं सबको बुला लाया, वे सब आ गए और हुज़ूर सल्ल० के आस-पास जमा हो गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम कुरैश के अलग-अलग क़बीलों के मिले-जुले और उनके ताबेदार लोग देख रहे हो? फिर आपने अपना एक हाथ दूसरे हाथ पर मार कर कहा, इन सबको अच्छी तरह से (खेती की तरह) काट डालो और सफ़ा पहाड़ी पर मुझसे मिलो।

हज़रत अबू हुरैरह फ़रमाते हैं, हम चले (और कुरैश के इन अलग-अलग क़बीलों के लोगों का यह हाल था) कि हममें से हर एक आदमी उन लोगों में से जितने चाहे उनको क़त्ल कर ले। उनमें से कोई भी हमारी तरफ़ कोई हथियार नहीं उठा सकता था।

हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! (आज

तो) क़ुरैश की जमाअत फ़ना हो जाएगी। आज के बाद क़ुरैश बाक़ी नहीं रहेंगे। आपने फ़रमाया, जो अपना दरवाज़ा बन्द कर लेगा, उसे अम्न है और जो अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हो जाएगा, उसे अम्न है।

चुनांचे लोगों ने अपने दरवाज़े बन्द कर लिए (मक्का जीते जाने के बाद)। हुज़ूर सल्ल० हजरे अस्वद के पास तशरीफ़ ले गए और उसे चूमा, फिर बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। आपके हाथ में एक कमान थी, जिसे आपने किनारे से पकड़ रखा था। तवाफ़ करते हुए आपका गुज़र एक बुत के पास से हुआ, जो बैतुल्लाह के पहलू में रखा हुआ था जिसकी मक्का के कुफ़्फ़ार इबादत किया करते थे, आप उसकी आंख में कमान मारते जाते थे और फ़रमाते जाते थे—

جَآءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا۝

'हक़ आ गया और बातिल मिट गया। बातिल है ही मिटने वाली चीज़।'

फिर आप सफ़ा पहाड़ी पर तशरीफ़ लाए और उस पर उस जगह तक चढ़े जहां से बैतुल्लाह नज़र आने लगा। फिर आप हाथ उठाकर कुछ देर तक ज़िक्र व दुआ में लगे रहे और अंसार उस वक़्त नीचे खड़े हुए थे। वे एक दूसरे से कहने लगे कि इन हज़रत पर तो अपनी बस्ती की मुहब्बत और अपने ख़ानदान की शफ़क़त ग़ालिब आ गई है (तभी तो इन मक्का वालों के हज़ार कष्ट पहुंचाने के बावजूद इन्हें क़त्ल नहीं किया, शायद अब मदीना छोड़कर यह मक्का रहने लग जाएं) इतने में आप पर वह्य उतरने लगी और आप पर वह्य उतरना हमसे छिपा नहीं रहता था और जब वह्य उतरने लगती थी, तो ख़त्म होने तक हममें से कोई आपकी ओर निगाह उठाकर नहीं देख सकता था।

जब वह्य का उतरना ख़त्म हो गया तो आपने अपना मुबारक सर उठाया और फ़रमाया, ऐ अंसार के लोगो! क्या तुमने यह कहा है कि इन हज़रत पर अपनी बस्ती की मुहब्बत और अपने ख़ानदान की शफ़क़त ग़ालिब आ गई है?

अंसार ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हमने यह कहा है।

आपने फ़रमाया, फिर मेरा क्या नाम रखा जाएगा ? बेशक मैं तो अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूं। (मैं तो वही करूंगा जो अल्लाह मुझसे फ़रमाएंगे। अपनी मर्ज़ी से मैं कुछ नहीं करता हूं।) मैंने अल्लाह की निस्बत पर तुम्हारी ओर हिजरत की है। अब ज़िंदगी तुम्हारे साथ गुज़ारूंगा और तुम्हारे यहां ही मरूंगा। (चुनांचे ऐसा ही हुआ)

इस पर अंसार (ख़ुशी से रोते हुए) आपकी तरफ़ लपके और कहने लगे, अल्लाह की क़सम ! हमने यह बात सिर्फ़ इसलिए कही थी ताकि अल्लाह और उसके रसूल हमारे ही रहें। (हमें छोड़कर कहीं और न चले जाएं, हमने तो यह बात सिर्फ़ अल्लाह और रसूल की इंतिहाई मुहब्बत की वजह से कही थी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह और उसका रसूल तुम्हें सच्चा समझते हैं और तुम लोगों का उज़्र क़ुबूल करते हैं (कि तुमने बहुत ज़्यादा मुहब्बत की वजह से यह कहा।)[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुनैन की लड़ाई के दिन हवाज़िन और ग़तफ़ान वग़ैरह कुफ़्फ़ार के क़बीले अपने जानवर और बच्चों को भी साथ लेकर आए थे। (यह उस समय का चलन था कि जो लोग लड़ाई के मैदान में जमे रहने और न भागने का पक्का इरादा करके आते, वे अपना सब कुछ साथ लेकर लड़ाई के मैदान में आते कि मर जाएंगे, लेकिन वापस नहीं जाएंगे।) और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दस हज़ार मुसलमान भी थे और मक्का के वे लोग भी थे, जिनको आपने माफ़ी दे दी थी और बावजूद उन पर क़ाबू पा लेने के उन्हें क़त्ल नहीं किया था, जिन्हें तुलक़ा (यानी आज़ाद किए हुए लोग) कहा जाता था।

जब लड़ाई शुरू हुई, तो ये सभी लड़ाई का मैदान छोड़कर भाग गए और हुज़ूर सल्ल० अकेले रह गए। (दुश्मन की ओर बढ़ते हुए जहां आप थे, वहां उस वक़्त आप अकेले रह गए थे) तो फिर आपने उस दिन दो आवाज़ें अलग-अलग लगाईं।

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 307, कंज़, भाग 7, पृ० 135

पहले आपने दाहिनी तरफ़ मुतवज्जह होकर आवाज़ दी, ऐ अंसार के लोगो ! तो अंसार ने कहा, हाज़िर हूं ऐ अल्लाह के रसूल ! आप ख़ुश रहें, हम आपके साथ हैं।

फिर बाईं तरफ़ मुतवज्जह होकर आपने आवाज़ दी, ऐ अंसार के लोगो ! तो अंसार ने कहा, हाजिर हूं ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप ख़ुश रहें, हम आपके साथ हैं। आप सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे। आपने उससे नीचे उतर कर फ़रमाया, मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूं।

फिर मुश्रिकों को हार का मुंह देखना पड़ा और उस दिन हुज़ूर सल्ल० को बहुत ज़्यादा ग़नीमत का माल मिला, जिसे आपने मुहाजिरीन और तुलक़ा (नव मुस्लिम आज़ाद किए हुए मक्का के लोगों) में बांट दिया और उसमें से अंसार को कुछ न दिया। इस पर अंसार (के कुछ लोगों) ने कहा, जब कोई कठिन घड़ी आती है, तो हमें बुलाया जाता है और जब ग़नीमत का माल बांटने का वक़्त आता है, तो वह दूसरों को दे दिया जाता है।

किसी तरह यह बात हुज़ूर सल्ल० तक पहुंच गई, तो आपने उनको एक ख़ेमे में जमा फ़रमाया और उनसे फ़रमाया, ऐ अंसार के लोगो ! वह क्या बात है, जो मुझ तक पहुंची है ? सब ख़ामोश रहे।

फिर आपने फ़रमाया, ऐ अंसार के लोगो ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि लोग तो दुनिया को लेकर जाएं और तुम लोग अपने घरों को अल्लाह के रसूल को लेकर जाओ ?

अंसार ने कहा, हम बिल्कुल राज़ी हैं।

फिर आपने फ़रमाया, अगर लोग एक घाटी में चलें और अंसार किसी और घाटी में चलें, तो मैं अंसार वाली घाटी में चलूंगा।

हिशाम रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने (हज़रत अनस से) कहा, ऐ अबू हमज़ा ! (यह हज़रत अनस का उपनाम है) क्या आप उस मौक़े पर वहां मौजूद थे ?

उन्होंने कहा, मैं वहां से कहां ग़ायब हो सकता था ?

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुनैन की लड़ाई में ग़नीमत का बहुत सा माल मिला और आपने ग़नीमत का यह सब माल क़ुरैश और अरब के नव-मुस्लिमों में दिल रखने के लिए बांट दिया और अंसार को उसमें से कुछ न मिला, तो अंसार को यह बात महसूस हुई, यहां तक कि उनमें से कुछ लोगों की ज़ुबान से यह निकल गया कि अल्लाह की क़सम ! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो अपनी क़ौम से जा मिले (और अब यह यहीं मक्का में ठहर जाएंगे और मदीना वापस नहीं जाएंगे) तो हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क़बीला अंसार अपने जी में आपके बारे में कुछ पा रहे हैं ?

आपने फ़रमाया, क्यों ?

उन्होंने कहा, वह इस वजह से नाराज़ हैं कि आपने सारा ग़नीमत का माल अपनी क़ौम में और बाक़ी अरब लोगों में बांट दिया और अंसार को उसमें से कुछ न मिला।

आपने फ़रमाया, ऐ साद ! तुम्हारा इस बारे में क्या ख़्याल है ?

उन्होंने कहा, मैं भी अपनी क़ौम का एक आदमी हूं। (जो उनका ख़्याल है, वही मेरा)

आपने फ़रमाया, अपनी क़ौम को मेरे लिए इस अहाते में जमा कर लो और जब वे जमा हो जाएं तो मुझे ख़बर कर देना। हज़रत साद ने बाहर अंसार में एलान कर दिया। और सबको इस अहाते में जमा कर लिया। कुछ मुहाजिरीन आए तो उनको भी (अन्दर आने की) इजाज़त दे दी और कुछ और आए तो हज़रत साद ने उनको वापस कर दिया।

जब सारे अंसार वहां जमा हो गए तो हज़रत साद ने हुज़ूर की ख़िदमत में जाकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! आपने मुझे जहां जमा करने का हुक्म दिया था, क़बीला अंसार वहां जमा हो चुका है। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० वहां तशरीफ़ ले गए और उनमें बयान फ़रमाने के लिए खड़े हो गए।

पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, ऐ अंसार के लोगो ! क्या यह बात नहीं है कि मैं जब तुम्हारे पास गया था, तो तुम सब गुमराह थे, फ़िर अल्लाह ने तुम्हें हिदायत दे दी और तुम सब फ़क़ीर थे, अल्लाह ने तुम्हें ग़नी कर दिया और तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन थे, अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में उलफ़त पैदा कर दी ?

अंसार ने कहा, जी हां, बिल्कुल ऐसे ही हुआ।

फिर आपने फ़रमाया, ऐ अंसार के लोगो ! तुम जवाब क्यों नहीं देते हो ?

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम क्या कहें ? और हम क्या जवाब दें ? सारा एहसान तो अल्लाह और उसके रसूल का है।

आपने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! अगर तुम चाहो, तो यह कह सकते हो और (इस कहने में) तुम सच्चे होगे और सच्चे माने जाओगे। यानी अल्लाह और रसूल भी तुम्हें सच्चे समझेंगे) कि आप हमारे पास तशरीफ़ लाए तो आपको लोगों ने अपने यहां से निकाला हुआ था, हमने आपको ठिकाना दिया और आप फ़क़ीर थे, हमने आपसे माली हमदर्दी की और आप डरे हुए थे, हमने आपको अम्न दिया और आप बे-यार व मददगार थे, हमने आपकी नुसरत की।

इस पर अंसार ने कहा, यह सारा एहसान अल्लाह और उसके रसूल का है।

फिर आपने कहा, तुम घास-फूस की तरह जल्द ख़त्म हो जानेवाली इस दुनिया की वजह से अपने दिलों में मुझसे नाराज़ हो गए हो। वह तो मैंने ग़नीमत का माल देकर उन लोगों का दिल रखा है, जो अभी मुसलमान हुए हैं और मैंने तुम्हें इस्लाम की इस नेमत के हवाले किया है, जो अल्लाह ने तुम्हारी क़िस्मत में लिखी (कि तुम ग़नीमत का माल न मिलने के बावजूद इस्लाम की नेमत पर अल्लाह और रसूल से राज़ी रहोगे) ऐ अंसार के लोगो ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तमाम लोग तो बकरियां और ऊंट लेकर अपने घरों को जाएं और तुम

लोग अल्लाह के रसूल को लेकर अपने घरों को जाओ। क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर लोग एक घाटी में चलें और अंसार दूसरी घाटी में चलें, तो मैं अंसार की घाटी में चलूंगा। अगर हिजरत (की फ़ज़ीलत) न होती, तो मैं भी अंसार में का एक आदमी होता। ऐ अल्लाह! अंसार पर, अंसार के बेटों पर, अंसार के बेटों के बेटों पर रहम फ़रमा।

(यह सुनकर) तमाम अंसार रोने लगे और इतना रोए कि दाढ़ियां तर हो गईं और उन्होंने कहा, हम अल्लाह के रब होने पर और अल्लाह के रसूल के माल बांटने पर राज़ी हैं। चुनांचे आप वापस (अपनी क़ियामगाह पर) तशरीफ़ ले गए और अंसार सहाबा भी।[1]

हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अक़्दस सल्ल० ने हुनैन की लड़ाई में हवाज़िन के माले ग़नीमत को एहसान के तौर पर क़ुरैश वग़ैरह (नव-मुस्लिम लोगों) में बांट दिया, तो इस पर अंसार नाराज़ हो गए। जब हुज़ूर सल्ल० ने यह ख़बर सुनी तो आप उनके ख़ेमों में उनके पास तशरीफ़ ले गए और फिर आपने फ़रमाया, यहां जो भी अंसार में से है, वह हुज़ूर सल्ल० की क़ियामगाह पर चला जाए।

(चुनांचे वे सब वहां चले गए), तो हुज़ूर सल्ल० उनके पास तशरीफ़ लाए, पहले अल्लाह का गुणगान किया, फिर फ़रमाया,

ऐ अंसार के लोगो! मैंने यह माले ग़नीमत तुम्हें नहीं दिया, बल्कि दिल रखने की वजह से कुछ (नव-मुस्लिम) लोगों को दे दिया, ताकि वे आगे जिहाद में मेरे साथ शरीक हुआ करें और अल्लाह उनके दिलों में इस्लाम को (पूरे तौर से) दाख़िल फ़रमा दे। तुम लोगों ने इस बारे में कुछ बात कही है, जो मुझे पहुंची है।

फिर आपने फ़रमाया, ऐ अंसार के लोगो! क्या अल्लाह ने तुम पर एहसान नहीं किया कि तुमको ईमान की नेमत अता फ़रमाई और ख़ास

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 358, हैसमी, भाग 10, पृ० 30, कंज़, भाग 7, पृ० 135, बिदाया, भाग 4, पृ० 358, कंज़, भाग 7, पृ० 126

इज़्ज़त अता फ़रमाई और तुम्हारा बेहतरीन और बहुत ख़ूबसूरत नाम रखा (यानी अल्लाह और उसके रसूल के अंसार (और मददगार) अगर हिजरत न होती तो मैं भी अंसार में का एक आदमी होता। अगर लोग एक घाटी में चलें और तुम दूसरी घाटी में, तो मैं तुम्हारी घाटी में चलूंगा। क्या तुम लोग इस बात पर राज़ी नहीं हो कि लोग बकरियां और जानवर और ऊंट लेकर जाएं और तुम अल्लाह के रसूल को लेकर जाओ ?

जब अंसार ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह बात सुनी, तो उन्होंने कहा, (इस बांट पर) हम बिल्कुल राज़ी हैं।

आपने फ़रमाया, मैंने जो कहा है, इसके जवाब में तुम भी कुछ कहो।

अंसार ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने हमें अंधेरे में पाया, अल्लाह ने आपके ज़रिए से हमें रोशनी की ओर निकाला और आपने हमें आग के गढ़े के किनारे पर पाया, अल्लाह ने आपके ज़रिए से हमें (उस गढ़े में गिरने से) बचाया और आपने गुमराह पाया। अल्लाह ने आपके ज़रिए से हमें हिदायत दी। हम अल्लाह के रब होने और इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद सल्ल० के नबी होने पर राज़ी हैं। ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम खुले दिल से कह रहे हैं कि आप जो चाहें करें।

आपने फ़रमाया,

अल्लाह की क़सम ! अगर तुम इसके अलावा कुछ और जवाब में कहते तो मैं कहता तुमने ठीक कहा है। अगर तुम यह कहते कि क्या यह बात नहीं है कि आप हमारे पास तशरीफ़ लाए तो लोगों ने आपको अपने यहां से निकाला हुआ था, हमने आपको ठिकाना दिया और लोगों ने आपको झुठला रखा था, हमने आपकी तस्दीक़ की और आप बे यार व मददगार थे, हमने आपकी मदद की और आपकी जिस दावत को लोगों ने ठुकरा दिया था, हमने उसे क़ुबूल किया। अगर तुम ये बातें जवाब में कहते, तो ठीक कहते।

अंसार ने कहा, नहीं, बल्कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० का एहसान है और उसके रसूल का हम पर और दूसरों पर फ़ज़्ल व एहसान

है। यह कहकर अंसार रो पड़े और बहुत ज़्यादा रोए और उनके साथ हुज़ूर सल्ल० भी रोने लगे।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० को हवाज़िन के माल ग़नीमत के तौर पर अता फ़रमाए और आप कुछ लोगों को सौ-सौ ऊंट देने लगे, तो अंसार के कुछ लोगों ने कहा, अल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मग़फ़िरत फ़रमाए कि आप क़ुरैश को दे रहे हैं और हमें छोड़े जा रहे हैं, हालांकि हवाज़िन का ख़ून अभी भी हमारी तलवारों से टपक रहा है। (जिहाद में जान तो सारी हमने लगाई और दे रहे हैं दूसरों को) किसी तरह से यह बात हुज़ूर सल्ल० को मालूम हो गई।

आपने आदमी भेजकर अंसार को चमड़े के एक ख़ेमे में जमा किया और आपने दूसरों को उनके साथ न बैठने दिया। जब सब जमा हो गए तो आपने खड़े होकर फ़रमाया, वह क्या बात है जो मुझे तुम्हारी ओर से पहुंची है?

तो समझदार अंसार ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारे बड़ों ने कुछ नहीं कहा, अलबत्ता हमारे कुछ नव-उम्र लोगों ने कहा है कि अल्लाह अल्लाह के रसूल सल्ल० की मग़फ़िरत फ़रमाए कि क़ुरैश को दे रहे हैं और हमें छोड़े जा रहे हैं। हालांकि उनका ख़ून (यानी क़ुरैश का ख़ून) अभी भी हमारी तलवारों से टपक रहा है।

आपने फ़रमाया, अभी अभी तो लोग कुफ़्र से इस्लाम में आए हैं, मैंने उनको ग़नीमत का यह माल दिल रखने के लिए दिया है। क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि लोग माल लेकर जाएं और तुम नबी (करीम सल्ल०) को लेकर अपने घरों को जाओ? अल्लाह की क़सम ! तुम (नबी को) जिस ज़ाते अक़्दस को लेकर अपने घरों को वापस जा रहे हो, वह उस (ग़नीमत के माल) से (हज़ार दर्जा) बेहतर है, जिसे वे लोग लेकर वापस जा रहे हैं।

अंसार ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! हम बिल्कुल राज़ी हैं।

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 31

फिर आपने उनसे फ़रमाया, तुम (मेरे बाद) इस बात को पाओगे कि दूसरों को तुम पर (सरदारी और दूसरे मामलों में) बहुत ज़्यादा तर्जीह दी जाएगी, तुम अल्लाह और उसके रसूल से मिलने तक (यानी मौत तक सब्र से काम लेना, मैं (कौसर के) हौज़ पर (तुम्हारे इन्तिज़ार में) रहूंगा। हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं, लेकिन अंसार सब्र न कर सके।[1]

इमाम अहमद ने हज़रत अनस की हदीस में यह मज़्मून भी बयान किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (अंसार से) फ़रमाया, तुम मेरे लिए अन्दर का कपड़ा हो और बाक़ी लोग बाहर का। क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि लोग तो बकरियां और ऊंट लेकर जाएं और तुम अपने रसूल को अपने इलाक़े में लेकर जाओ?

अंसार ने कहा, हम बिल्कुल राज़ी हैं।

आपने फ़रमाया, अंसार तो मेरे लिए मेदे की तरह हैं और ख़ास कपड़ों के संदूक़ की तरह से हैं, यानी मेरा उनसे ख़ास ताल्लुक़ है (अगर लोग एक घाटी में चलें और अंसार दूसरी घाटी में चलें, तो मैं अंसार की घाटी में चलूंगा। अगर हिजरत न होती तो मैं भी अंसार में का एक आदमी होता।[2]

अंसार सहाबा रज़ि० की ख़ूबियां

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के पास बहरैन से माल आया, जिसके बारे में मुहाजिरीन और अंसार ने एक दूसरे से सुना। ये लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में तशरीफ़ ले गए। आगे लम्बी हदीस है, जिसमें यह है कि आपने अंसार से फ़रमाया, जहां तक मुझे मालूम है, तुम लोग जब जान लगाने का वक़्त आता है, तो ख़ूब ज़्यादा हो जाते हो और जब कुछ मिलने का वक़्त आता है, तो बहुत कम हो जाते हो, (इस मौक़े पर पीछे हट जाते हो।)[3]

---

1. बुख़ारी,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 356
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 136

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू तलहा रज़ि० से फ़रमाया, अपनी क़ौम को मेरा सलाम कहना और उन्हें बता देना कि जहां तक मुझे मालूम है, वे लोग बड़े पाकदामन और सब्र करने वाले हैं।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस बीमारी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इंतिक़ाल फ़रमाया, मैं और हज़रत अबू तलहा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, अपनी क़ौम (अंसार) को मेरा सलाम कहना, क्योंकि वे लोग बड़े पाकदामन और सब्र करने वाले हैं।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन शद्दाद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गए और वह हज़रत साद की ज़िंदगी का आख़िरी वक़्त था।

आपने फ़रमाया, ऐ अपनी क़ौम के सरदार! अल्लाह तुम्हें बेहतरीन बदला दे, तुमने अल्लाह से जो वायदा किया था, उसे पूरा कर दिया और अल्लाह ने तुमसे जो वायदा किया है, अल्लाह उसे ज़रूर पूरा फ़रमाएंगे।[3]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि कोई औरत अंसार के दो घरों के दर्मियान रहे या अपने मां-बाप के दर्मियान, उसमें कोई फ़र्क़ नहीं है, इसका कोई नुक़्सान न होगा। (यानी अंसार बड़े अख़्लाक़ वाले हैं, अजनबी औरत के साथ मां-बाप जैसा मामला करते हैं।[4]

अंसार सहाबियों का इकराम और ख़िदमत

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए और हुज़ूर सल्ल० ग़ल्ला बांट रहे थे,

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 41
2. कंज़, भाग 7, पृ० 136, हाकिम, भाग 4, पृ० 79
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 9
4. हैसमी, भाग 10, पृ० 40

तो हज़रत उसैद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से अंसार के बनू ज़फ़र के एक घरवालों का तज़्किरा किया कि वे हाजतमंद हैं और इस घर में अक्सर औरतें हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, ऐ उसैद ! तुमने हमें छोड़े रखा, यहां तक कि जो कुछ हमारे हाथ में था, वह सब ख़त्म हो गया। (यानी अब कुछ नहीं रहा, तुमने देर से आकर बताया।) जब तुम सुनो कि कुछ हमारे पास आया है, तो मुझे इन घरवालों को याद दिला देना।

चुनांचे इसके बाद ख़ैबर से जौ और खजूरें हुज़ूर सल्ल० के पास आई, जिन्हें आपने लोगों में बांटा और अंसार में भी बांटा और उन्हें ख़ूब दिया और उन घरवालों में भी बांटा और उन्हें तो और ज़्यादा दिया। तो हज़रत उसैद बिन हुज़ैर ने शुक्रिया अदा करते हुए कहा, ऐ अल्लाह के नबी ! अल्लाह और अच्छा बदला दे या भला बदला दे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम अंसार की जमाअत को भी अल्लाह बेहतर बदला दे या फ़रमाया भला बदला दे। जहां तक मुझे मालूम है, तुम लोग बड़े पाकदामन और सब्र करने वाले हो, लेकिन तुम देखोगे कि ख़िलाफ़त के मामले में और (मालों और ओहदों की) बांट में तुम पर दूसरों को तर्जीह दी जाएगी। तुम सब्र करते रहना, यहां तक कि हौज़ पर आकर मुझसे मिल लेना।[1]

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरी क़ौम के दो घरों वाले मेरे पास आए। एक घरवाले बनू ज़फ़र के थे और दूसरे घरवाले बनू मुआविया के थे और उन्होंने कहा कि आप हमारे बारे में अल्लाह के रसूल सल्ल० से बात करें कि हममें कुछ बांट दें। या यह कहा कि वह हमें दें या इस जैसी और बात कही।

चुनांचे मैंने हुज़ूर सल्ल० से बात की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, मैं हर घरवालों को बांटते वक़्त कुछ न कुछ ज़रूर दूंगा। (अभी तो इतना ही देने के लिए है) अल्लाह ने अगर हमें और दे दिया तो हम उनको और देंगे।

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 135, मुस्तदरक, भाग 4, पृ० 79

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह आपको भला बदला दे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें भी अल्लाह भला बदला दे, क्योंकि जहां तक मुझे मालूम है, तुम लोग बड़े पाकदामन और सब्र करने वाले हो, लेकिन मेरे बाद तुम देखोगे कि दूसरों को तर्जीह दी जाएगी।

फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में लोगों में जोड़े बांटे, तो एक जोड़ा हज़रत उमर रज़ि० ने मेरे पास भी भेजा जो मुझे छोटा नज़र आया। मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि मेरे पास से एक कुरैशी नवजवान गुज़रा जिस पर इन जोड़ों में से एक जोड़ा था, (जो इतना बड़ा था कि) वह उसे ज़मीन में घसीटता हुआ जा रहा था। मुझे हुज़ूर सल्ल० की यह बात याद आ गई कि मेरे बाद तुम देखोगे कि दूसरों को तर्जीह दी जाएगी तो मैंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने सच फ़रमाया।

एक आदमी ने जाकर हज़रत उमर रज़ि० को मेरा यह जुम्ला बता दिया। हज़रत उमर रज़ि० (मेरे पास) आए। मैं उस वक़्त नमाज़ पढ़ रहा था। उन्होंने आकर कहा, ऐ उसैद ! नमाज़ पूरी कर लो। चुनांचे जब मैंने नमाज़ पूरी कर ली, तो उन्होंने कहा, तुमने कैसे कहा? मैंने उन्हें सारी बात बताई।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, (यह जोड़ा बड़ा था) मैंने यह जोड़ा फ़्लां (अंसारी) सहाबी के पास भेजा था जो बद्र और उहुद की लड़ाइयों में और अक़बा की बैअत में शरीक हुए थे (चूंकि उनकी दीनी बड़ाई ज़्यादा थी, इसलिए मैंने उनको तुमसे बड़ा जोड़ा दिया था। इस जवान ने जाकर उन अंसारी सहाबी से यह जोड़ा ख़रीद लिया और उसे पहन लिया, (मैंने इस कुरैशी जवान को नहीं दिया) क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि (अंसार पर दूसरों को तर्जीह देने की) यह बात मेरे ज़माने में होगी?

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह की क़सम ! मेरा भी यही ख़्याल था कि यह बात आपके ज़माने में नहीं होगी।[1]

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 33

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद की ओर चला तो मैंने एक क़ुरैशी आदमी को देखा, जिस पर एक जोड़ा था। मैंने उससे पूछा, तुम्हें यह जोड़ा किसने दिया?

उसने कहा, अमीरुल मोमिनीन ने।

मैं कुछ और आगे गया तो एक और क़ुरैशी आदमी को देखा, जिस पर एक जोड़ा था। मैंने उससे पूछा, तुम्हें यह जोड़ा किसने दिया?

उसने कहा, अमीरुल मोमिनीन ने।

फिर मैं कुछ आगे गया, तो मुझे फ़्लां बिन फ़्लां अंसारी मिला। उसने पहले दानों जोड़ों से कम दर्जे का जोड़ा पहन रखा था। मैंने कहा, तुम्हें जोड़ा किसने दिया?

उसने कहा, अमीरुल मोमिनीन ने।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा, इसके बाद मस्जिद में गए और उन्होंने ज़ोर से कहा, अल्लाहु अक्बर! अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने सच कहा। अल्लाहु अक्बर! अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने सच कहा।

हज़रत उमर रज़ि० ने उनकी आवाज़ सुन ली, तो उनके पास पैग़ाम भेजा कि मेरे पास आओ।

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा ने कहा, मैं दो रक्अत नमाज़ पढ़कर आता हूं। हज़रत उमर रज़ि० ने दोबारा क़ासिद भेज दिया कि हज़रत उमर क़सम दे रहे हैं कि तुम अभी आओ। हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा ने कहा, मैं भी अपने आपको क़सम देता हूं कि जब तक दो रक्अत नमाज़ नहीं पढ़ लूंगा, मैं उनके पास नहीं जाऊंगा और यह कहकर नमाज़ शुरू कर दी। हज़रत उमर रज़ि० आए और उनके पहलू में बैठ गए।

जब वह अपनी नमाज़ पूरी कर चुके, तो उनसे हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि मुझे यह बताओ कि तुमने अल्लाह के रसूल सल्ल० की नमाज़ पढ़ने की जगह में यानी उनकी मस्जिद में ये जुम्ले ज़ोर से क्यों कहे कि अल्लाहु अक्बर! अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने सच फ़रमाया?

उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं मस्जिद को आ रहा था कि रास्ते में फ़्लां बिन फ़्लां क़ुरैशी मिला। उसने एक जोड़ा पहना हुआ था। मैंने कहा, तुम्हें यह जोड़ा किसने दिया ?

उसने कहा, अमीरुल मोमिनीन ने !

मैं कुछ आगे बढ़ा, तो मुझे फ़्लां बिन फ़्लां क़ुरैशी मिला। उसने भी एक जोड़ा पहने हुए था। मैंने कहा, तुम्हें यह जोड़ा किसने दिया ?

उसने कहा, अमीरुल मोमिनीन ने !

फिर मैं आगे गया, तो मुझे फ़्लां बिन फ़्लां अंसारी मिला। उसने पहले दोनों जोड़ों से कम दर्जे का जोड़ा पहन रखा था। मैंने कहा, तुम्हें यह जोड़ा किसने दिया ?

उसने कहा, अमीरुल मोमिनीन ने और हुज़ूर सल्ल० ने (हम अंसार से) फ़रमाया था कि तुम मेरे बाद देखोगे कि दूसरों को तुम पर तर्जीह दी जाएगी। ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं यह नहीं पसन्द करता था कि यह काम तुम्हारे हाथों से हो।

हज़रत उमर रज़ि० रो पड़े और कहा इस बार के लिए तो मैं अल्लाह से माफ़ी मांगता हूं, आगे ऐसे नहीं करूंगा। फ़रमाते हैं कि इसके बाद कभी यह बात देखने में नहीं आई कि हज़रत उमर रज़ि० ने क़ुरैश के किसी आदमी को अंसार के किसी आदमी पर तर्जीह दी हो।[1]

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उनके पास उनके बेटे भी थे। उन्होंने हाज़िर होकर सलाम किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यहां और यहां और उन्हें अपनी दाहिनी ओर बिठाया और फ़रमाया, ख़ुश आमदीद हो अंसार को, ख़ुश आमदीद हो अंसार को, (और हुज़ूर सल्ल० के इकराम में) हज़रत साद ने अपना बेटा हुज़ूर सल्ल० के सामने खड़ा कर दिया।

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 330

आपने उससे फ़रमाया, यहां बैठ जाओ। वह बैठ गया। फिर आपने फ़रमाया, क़रीब आ जाओ। वह क़रीब आ गया और उसने हुज़ूर सल्ल० के दोनों हाथों और मुबारक क़दम का बोसा लिया।

हुज़ूर सल्ल० ने (ख़ुश होकर) फ़रमाया, मैं अंसार में से हूं और मैं अंसार की औलाद में से हूं।

हज़रत साद रज़ि० ने कहा, अल्लाह आपका ऐसे इकराम फ़रमाए जैसे आपने हमारा इकराम किया।

आपने फ़रमाया, अल्लाह ने मेरे इकराम से पहले आप लोगों का इकराम फ़रमाया है। तुम मेरे बाद देखोगे कि दूसरों को तुम पर तर्जीह दी जाएगी। तुम सब्र करते रहना, यहां तक कि हौज़ पर आकर मुझसे मिल लेना।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत जरीर रज़ि० एक सफ़र में मेरे साथ थे और मेरी बहुत ख़िदमत करते थे, तो उन्होंने कहा कि मैंने अंसार को हुज़ूर सल्ल० के साथ (इकराम और मुहब्बत का) ख़ास मामला करते हुए देखा है, इसलिए मैं अंसार में से जिसे भी देखता हूं उसकी ज़रूर ख़िदमत करता हूं।[2]

हज़रत हबीब बिन अबी साबित कहते हैं कि हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० हज़रत मुआविया रज़ि० के पास गए और उनसे अपने क़र्ज़े की शिकायत की (कि क़र्ज़ा अदा करने के लिए कुछ दे दें) लेकिन हज़रत अबू अय्यूब ने हज़रत मुआविया से (मदद का) वह रुख़ न देखा, जिसे वह चाहते थे, बल्कि (बे-रुख़ी का) वह अन्दाज़ देखा जो उन्हें पसन्द न था, तो उन्होंने कहा, मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि (ऐ अंसार !) तुम मेरे बाद देखोगे कि दूसरों को तुम पर तर्जीह दी जाएगी।

हज़रत मुआविया ने कहा, फिर हुज़ूर सल्ल० ने तुमसे क्या कहा था?

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 134, मीज़ान, भाग 2, पृ० 3
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 136

उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था कि सब्र करना।

हज़रत मुआविया ने कहा, तो फिर सब्र करो।

हज़रत अबू अय्यूब ने कहा, अल्लाह की क़सम! आज के बाद तुमसे कभी कोई चीज़ नहीं मांगूंगा। फिर हज़रत अय्यूब बसरा गए और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० के यहां ठहरे।

उन्होंने हज़रत अबू अय्यूब को अपना मकान ख़ाली करके दे दिया और कहा, मैं तुम्हारे साथ वैसा ही मामला करूंगा, जैसा तुमने हुज़ूर सल्ल० के साथ किया था। चुनांचे अपने घरवालों से बाहर निकल आने को कहा। वे सब घर से बाहर आ गए और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने उनसे कहा कि घर में जितना सामान है, वह भी सारा आपका है और इन्हें चालीस हज़ार और बीस ग़ुलाम भी ज़्यादा दिए।[1]

तबरानी की रिवायत में आख़िर में इस तरह है कि हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० बसरा हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० के पास आए। उन्हें हज़रत अली रज़ि० ने बसरा का गवर्नर मुक़र्रर कर रखा था। उन्होंने कहा, ऐ अबू अय्यूब! मैं यह चाहता हूं कि मैं अपने इस मकान से बाहर आ जाऊं और यह आपको दे दूं, जैसा आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए किया था। चुनांचे उन्होंने अपने घरवालों से कहा, वे सब घर से बाहर आ गए और घर के अन्दर जितना सामान था, वह सारा उनको दे दिया।

जब हज़रत अबू अय्यूब वहां से जाने लगे, तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने उनसे पूछा, आपको कितनी ज़रूरत है?

उन्होंने कहा, मेरा मुक़र्रर किया हुआ वज़ीफ़ा और आठ ग़ुलाम जो कि मेरी ज़मीन में काम कर सकें। हज़रत अबू अय्यूब का वज़ीफ़ा चार हज़ार था। हज़रत इब्ने अब्बास ने उसे पांच गुना कर दिया। चुनांचे उनको बीस हज़ार और चालीस ग़ुलाम दिए।[2]

हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम अंसार को

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 97
2. मज्मा, भाग 9, पृ० 323, हाकिम भाग 3, पृ० 461

हज़रत उमर या हज़रत उस्मान रज़ि० से एक ज़रूरी काम था। रिवायत करने वाले इब्ने अबिज़्ज़िनाद को शक हुआ है कि हज़रत उमर का नाम लिया था या हज़रत उस्मान का। हम लोग हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० को और हुज़ूर सल्ल० के कुछ सहाबा को (सिफ़ारिश के लिए) साथ लेकर गए।

चुनांचे (हमारी सिफ़ारिश के लिए) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने भी बातें कीं और बाक़ी सहाबा रज़ि० ने भी की और इन सबने अंसार का और उनके मनाक़िब और फ़ज़ाइल का ख़ूब ज़िक्र किया, लेकिन वाली ने (क़ुबूल करने से) उज़्र कर दिया।

हज़रत हस्सान फ़रमाते हैं कि हम जिस काम के लिए गए, वह बहुत अहम था। हमें इसकी शदीद ज़रूरत थी, वह वाली इन लोगों से अपनी बात को बार-बार दोहराते रहे, यहां तक कि सहाबा रज़ि० तो उन्हें माज़ूर समझकर वहां से (ना उम्मीद होकर) खड़े हो गए, लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने फ़रमाया, नहीं, अल्लाह की क़सम! फिर तो अंसार का कोई मर्तबा और दर्जा न हुआ। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की नुसरत की और ठिकाना दिया और फिर उनके फ़ज़ाइल ज़िक्र करने लग गए और (हज़रत हस्सान की ओर इशारा करते हुए) यह भी कहा, यह हुज़ूर सल्ल० के शाइर हैं जो हुज़ूर सल्ल० की ओर से हिफ़ाज़त किया करते थे।

ग़रज़ यह कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० वाली के सामने जामेअ और दलील भरा काम पेश करते रहे और वाली की हर दलील का जवाब देते रहे। आख़िर वाली ने जब कोई चारा न देखा तो हमारा काम कर दिया। अल्लाह ने हमारी ज़रूरत उनकी ज़ोरदार बातों के ज़रिए से पूरी कर दी।

हम वहां से बाहर आए। मैंने हज़रत अब्दुल्लाह का हाथ पकड़ रखा था। मैं उनकी तारीफ़ कर रहा था और उनके लिए दुआ कर रहा था, फिर मैं मस्जिद में उन सहाबा रज़ि० के पास से गुज़रा जो हज़रत अब्दुल्लाह के साथ (वाली के पास) गए थे, लेकिन उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह जितना ज़ोर नहीं लगाया था।

मैंने ऊंची आवाज़ में इस तरह कहा कि ये लोग भी सुन लें कि इब्ने अब्बास रज़ि० को हमारे साथ आप लोगों से ज़्यादा लगाव और ताल्लुक़ है। (आज हमारे हक़ में ये ज़्यादा बेहतर हुए।)

उन्होंने कहा, बेशक। फिर मैंने हज़रत अब्दुल्लाह से कहा, ये नुबूवत के बाक़ी असरात हैं और अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विरासत है जिसके ये तुमसे ज़्यादा हक़दार हैं। फिर मैंने हज़रत अब्दुल्लाह की तारीफ़ में ये शेर कहे—

إِذَا قَالَ لَمْ يَتْرُكْ مَقَالًا لِقَائِلٍ بِمُلْتَقِطَاتٍ لَا تَرَى بَيْنَهَا فَضْلًا

'वह (इब्ने अब्बास रज़ि०) जब बात करते हैं तो ऐसी जामे और ज़ोरदार बात करते हैं, जिसमें तुम्हें कोई बेकार और ज़्यादा बात नज़र न आएगी और वे किसी के लिए और ज़्यादा बात करने की गुंजाइश नहीं छोड़ते हैं।'

كَفَى وَشَفَى مَا فِي الصُّدُورِ فَلَمْ يَدَعْ لِذِي إِرْبَةٍ فِي الْقَوْلِ جِدًّا وَّلَا هَزْلًا

'उनकी बातें तमाम पहलुओं के लिए काफ़ी होती हैं और सबके दिल उससे मुतमइन हो जाते हैं। ज़रूरतमंद के लिए ज़्यादा किसी क़िस्म की बात करने की गुंजाइश नहीं छोड़ते हैं।'

سَمَوْتَ إِلَى الْعُلْيَا بِغَيْرِ مَشَقَّةٍ فَنِلْتَ ذُرَاهَا لَا دَنِيًّا وَّلَا وَغْلًا

'ऐ इब्ने अब्बास ! आप ऊपर उठकर बिना मशक़्क़त के ऊंचे रुत्बे पर पहुंच गए और उसकी इंतिहाई बुलन्दी पर पहुंच गए। आप न कमीने हैं और न कमज़ोर ![1]

तबरानी की रिवायत में यह है कि हज़रत हस्सान ने कहा कि यह (इब्ने अब्बास अंसार के लिए) इस (शफ़क़त के जज़्बे) के तुमसे ज़्यादा हक़दार हैं और अल्लाह की क़सम ! यह तो नुबूवत के बाक़ी असरात हैं और अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विरासत है और उनकी ख़ानदानी असल और उनकी तबियत की उम्दगी, इन तमाम बातों में उनकी रहबरी करती है।

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 544

लोगों ने कहा, ऐ हस्सान ! तनिक थोड़ी बात करो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, हां, ये लोग ठीक कह रहे हैं। तो हज़रत हस्सान हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की तारीफ़ में ये शेर पढ़ने लगे—

إِذَا مَا ابْنُ عَبَّاسٍ بَدَا لَكَ وَجْهُهُ   رَأَيْتَ لَهُ فِي كُلِّ مَجْمَعَةٍ فَضْلًا

'जब इब्ने अब्बास का चेहरा तुम्हारे सामने ज़ाहिर होगा, तो तुम हर मज्मे में उसके लिए फ़ज़ीलत देखोगे', फिर पिछले ज़िक्र किए गए तीन शेर को याद दिलाया, और उसके बाद इस शेर का इज़ाफ़ा किया—

خُلِقْتَ حَلِيفًا لِلْمُرُوءَةِ وَالنَّدَى   بَلِيغًا وَلَمْ تُخْلَقْ كَهَامًا وَلَا خَالًا

'तुम मुरव्वत और सख़ावत के हलीफ़ बनाकर और फ़सीह व बलीग़ बनाकर पैदा किए गए हो और तुम फ़ूहड़-सुस्त और बेकार नहीं पैदा किए गए।'

इस पर उस वाली ने कहा, अल्लाह की क़सम ! उसने सुस्त कहकर मुझे ही मुराद लिया है, किसी और को मुराद नहीं लिया और अल्लाह ही मेरे और उसके बीच फ़ैसला करेंगे।

अंसार सहाबा रज़ि० के लिए दुआएं

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि ऊंटों के ज़रिए पानी खींचना और ऊंटों पर पानी लादकर लाना अंसार के लिए बड़ी मशक़्क़त का ज़रिया बना, तो वे हुज़ूर सल्ल० के पास यह दरख़्वास्त पेश करने के लिए जमा हुए कि हुज़ूर सल्ल० और उन्हें पानी के लिए एक नहर खोद दें, जिसमें सारे साल ख़ूब पानी बहता रहे।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, ख़ुशआमदीद हो अंसार को, ख़ुशआमदीद हो आंसर को, ख़ुशआमदीद हो अंसार को, आज तुम मुझसे जो चीज़ भी मांगोगे, वह मैं तुम्हें ज़रूर दूंगा और आज मैं अल्लाह से तुम्हारे लिए जो चीज़ भी मांगूंगा, अल्लाह मुझे वह चीज़ ज़रूर दे देगा।

इस पर अंसार ने एक दूसरे से कहा कि इस मौक़े को ग़नीमत

समझो, (नहर वग़ैरह को तो छोड़ो) और हुज़ूर सल्ल० से मग़फ़िरत की दुआ करवा लो।

चुनांचे अंसार ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप हमारे लिए मग़फ़िरत की दुआ फ़रमा दें।

आपने दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! अंसार के लिए और अंसार के बेटों के लिए और अंसार के बेटों के बेटों के लिए मग़फ़िरत फ़रमा और एक रिवायत में यह भी है कि अंसार की बीवियों की भी मग़फ़िरत फ़रमा।[1]

हज़रत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! अंसार की और उनकी औलाद की और उनकी औलाद की औलाद की और उनके पड़ोसियों की मग़फ़िरत फ़रमा।[2]

हज़रत औफ़ अंसारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! अंसार की और अंसार के बेटों की और अंसार के ग़ुलामों (या पड़ोसियों) की मग़फ़िरत फ़रमा।[3]

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि ईमान यमन वालों का है और ईमान क़बीला क़हतान में है (क़हतान यमन के एक बादशाह हैं, तमाम अंसार और यमन वालों का नसब उनसे जा मिलता है) और दिल की सख़्ती अदनान की औलाद में है और हिमयर क़बीला अरब का सर और अरब के सरदार हैं और मज़हिज क़बीला अरब के सर और उनके बचाव का सामान हैं और अज़्द क़बीला अरब का कंधा और उनका सर हैं। (कंधे की तरह तमाम अहम कामों का बोझ उठाते हैं।) और हमदान क़बीला अरब का कंधा और अरब की चोटी है। ऐ अल्लाह ! अंसार को इज़्ज़त अता फ़रमा, जिनके ज़रिए से अल्लाह ने

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 40
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 40
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 41

दीन को क़ायम फ़रमाया और जिन्होंने मुझे ठिकाना दिया और मेरी नुसरत की और मेरी हिमायत की और ये दुनिया में मेरे साथी हैं और आख़िरत में मेरी जमाअत हैं और ये लोग मेरी उम्मत में से जन्नत में सबसे पहले दाख़िल होंगे।[1]

हज़रत उस्मान बिन मुहम्मद बिन ज़ुबैरी कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक ख़ुत्बे में फ़रमाया कि हमारी और अंसार की मिसाल ऐसी है जैसे कि इस शायर ने इन शेरों में कहा है—

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا جَعْفَرًا حِيْنَ أَشْرَفَتْ   بِنَا نَعْلُنَا لِلْوَاطِئِيْنَ فَزَلَّتِ

'अल्लाह हमारी ओर से जाफ़र को भला बदला दे। इन लोगों ने उस वक़्त हमारी मदद की, जब हमारी जूतियों ने फिसल कर हमें रौंदने वालों के सामने ला डाला था।'

أَبَوْا أَنْ يَّمَلُّوْنَا وَلَوْ أَنَّ أُمَّنَا   تُلَاقِيْ الَّذِيْ يَلْقَوْنَ مِنَّا لَمَلَّتِ

'वे लोग हमसे बिल्कुल न उकताए। उन लोगों ने हमारी वजह से जो तक्लीफ़ें उठाईं, अगर हमारी मां को यह उठानी पड़ जातीं, तो वह भी (हमसे) उकता जाती।'[2]

ख़िलाफ़त के बारे में अंसार का ईसार

हज़रत हुमैद बिन अब्दुर्रहमान हिमयरी कहते हैं कि जिस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ, उस वक़्त हज़रत अबूबक्र रज़ि० मदीना के आख़िरी किनारे में (अपने घर गए हुए) थे। चुनांचे वह आए और हुज़ूर सल्ल० के चमकदार चेहरे से चादर हटा कर कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, आप ज़िंदगी में भी और वफ़ात के बाद भी क्या ही अच्छे और पाक हैं। काबा के रब की क़सम! मुहम्मद सल्ल० दुनिया से तशरीफ़ ले जा चुके।

(अंसार के सक़ीफ़ा बनू साइदा में ख़िलाफ़त के बारे में मश्विरे के लिए जमा होते ही सूचना मिलने पर) हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 41
2. कंज़, भाग 7, पृ० 134

रज़ि० तेज़ी से चले। वहां पहुंचकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने बातें कीं। अंसार के बारे में क़ुरआन में जो कुछ उतरा था और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके बारे में जो कुछ फ़रमाया था, वह सब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने ज़िक्र कर दिया और यह भी फ़रमाया कि मुझे अच्छी तरह मालूम है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर लोग एक घाटी में चलें और अंसार दूसरी घाटी में चलें, तो मैं अंसार की घाटी में चलूंगा और ऐ साद! तुम्हें भी यह मालूम है कि एक बार तुम बैठे हुए थे और तुम्हारी मौजूदगी में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था कि क़ुरैश इस अम्र (ख़िलाफ़त) के वाली होंगे। नेक लोग क़ुरैश के नेक आदमियों के आधीन होंगे और बुरे लोग क़ुरैश के बुरे आदमियों के ताबे होंगे।

हज़रत साद रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कहा, आपने सच फ़रमाया, इसलिए हम लोग वज़ीर (यानी आप लोगों के मददगार) होंगे और आप लोग अमीर।[1]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया तो (सक़ीफ़ा बनू साइदा में अंसार जमा हुए और) अंसार के लोग खड़े होकर अपनी-अपनी राय ज़ाहिर करने लगे। चुनांचे उनमें से एक आदमी ने कहा, ऐ मुहाजिरों की जमाअत! जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुममें से किसी को अमीर बनाते तो उसके साथ हमारा एक आदमी ज़रूर लगा देते। इसलिए हमारा ख़्याल यह है कि ख़िलाफ़त के इस अम्र के वाली दो आदमी हों। एक आदमी आप लोगों में से हो और दूसरा हममें से हो (यानी दो आदमी ख़लीफ़ा होने चाहिएं, एक मुहाजिरी और दूसरा अंसारी) और अंसार में से जो भी राय देने के लिए खड़ा हुआ, उसने यही कहा।

फिर हज़त ज़ैद बिन साबित रज़ि० ने खड़े होकर कहा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० मुहाजिरीन में से थे, इसलिए अब इमाम भी मुहाजिरीन में से होना चाहिए और हम लोग उसके मददगार होंगे, जैसा कि हम

1. कंज़, भाग 3, पृ० 137, हैसमी, भाग 5, पृ० 191

लोग हुज़ूर सल्ल० के मददगार थे।

इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने खड़े होकर कहा, ऐ अंसार के लोगो! अल्लाह तुम्हें भला बदला अता फ़रमाए और तुम्हारे इस बोलने वाले के क़दम को जमाए रखे। अल्लाह की क़सम! अगर तुम इसके अलावा कुछ और करते, तो हमारी तुमसे सुलह न होती।

फिर हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० का हाथ पकड़कर कहा, यही तुम्हारे ख़लीफ़ा हैं, इनसे बैअत हो जाओ।[1]

हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद रह० फ़रमाते हैं कि जब नबी करीम सल्ल० का इंतिक़ाल हुआ, तो अंसार हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के पास जमा हुए। फिर हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० भी इन लोगों के पास आ गए।

चुनांचे हज़रत हुबाब बिन मुन्ज़िर रज़ि०, जो कि बदरी सहाबी हैं, उन्होंने खड़े होकर कहा कि एक अमीर हममें से हो और एक अमीर तुममें से हो। अल्लाह की क़सम! (ऐ मुहाजिरों की जमाअत!) हम इस इमारत (अमीर बनने) में तुमसे जलते नहीं, लेकिन हमें इस बात का ख़तरा है कि कहीं यह इमारत उन लोगों के हाथ में न आ जाए जिनके बाप और भाइयों को हमने (अलग-अलग लड़ाइयों में) क़त्ल किया है, (और वे लोग अमीर बनकर हमसे इंतिक़ाम लेने लग जाएं।)

तो उनसे हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि जब ऐसा हो तो तुम्हें (उनके मुक़ाबले में) मर जाना चाहिए।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने बातें कीं और फ़रमाया, हम अमीर हों और तुम वज़ीर (अमीर के मददगार) और यह इमारत हमारे और तुम्हारे बीच बिल्कुल दो बराबर हिस्सों में हो जैसे कि खजूर का पत्ता बिल्कुल दो बराबर हिस्सों में बंट जाता है।

चुनांचे हज़रत बशीर बिन साद अबुन-नोमान रज़ि० ने लोगों में सबसे पहले (हज़रत अबूबक्र रज़ि०) से बैअत की।

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 151, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 143, कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 131, हैसमी, भाग 5, पृ० 183, कंज़, भाग 3, पृ० 140

जब तमाम लोग हज़रत अबूबक्र (के ख़लीफ़ा बनने) पर सहमत हो गए, तो उन्होंने लोगों को कुछ माल बांटे और उन्होंने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० के ज़रिए बनू अदी बिन नज्जार की एक बुढ़िया के पास उसका हिस्सा भेजा।

उसने पूछा यह क्या है?

हज़रत ज़ैद ने कहा, हज़रत अबूबक्र ने (माल बांटा है और उसमें से) औरतों को भी इतना हिस्सा दिया है।

उस बुढ़िया ने कहा, क्या तुम्हें इस बात का डर है कि मैं जिस दीन पर क़ायम हूं उसे छोड़ दूंगी?

उन्होंने कहा, नहीं।

इस पर उस बुढ़िया ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं इसमें से कुछ नहीं लूंगी। चुनांचे हज़रत ज़ैद ने वापस आकर हज़रत अबूबक्र को इस बुढ़िया की सारी बात बताई तो हज़रत अबूबक्र ने कहा, हम भी उस बुढ़िया को जो दे चुके हैं, उसमें से कुछ नहीं लेंगे।[1]

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 130

जिहाद का बाब

किस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया करते थे और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत के लिए हर हाल में निकला करते थे, चाहे हलके हों या बोझल, दिल चाहे या न चाहे और तंगी और फ़राख़ी और सर्दी और गर्मी हर ज़माने में उसके लिए तैयार रहते थे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जिहाद में जान लगाना और माल ख़र्च करने के लिए तर्ग़ीब देना

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग मदीना में थे कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मुझे ख़बर मिली है कि अबू सुफ़ियान का तिजारती क़ाफ़िला (शाम की ओर से बहुत-सा माल लेकर) आ रहा है। क्या आप लोग चाहते हैं कि हम लोग उस क़ाफ़िले का मुक़ाबला करने के लिए (मदीना से) निकलें? शायद अल्लाह उस क़ाफ़िले का सारा सामान हमें ग़नीमत के माल के तौर पर दे दे।

हमने कहा, जी हां, (हम निकलना चाहते हैं) चुनांचे आप तशरीफ़ ले चले और हम भी (आपके साथ) निकले।

जब एक या दो दिन चल चुके, तो आपने हमसे फ़रमाया, क़ुरैश को तुम्हारे निकलने की ख़बर हो गई है। (और वे तुमसे लड़ने के लिए तैयार होकर आ गए हैं) तो क़ुरैश की इस फ़ौज (से लड़ने) के बारे में तुम लोगों की क्या राय है?

हमने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! हममें उनसे लड़ने की ताक़त नहीं है, हमारा तो तिजारती क़ाफ़िले से मुक़ाबले का इरादा था।

आपने फ़िर फ़रमाया, क़ुरैश की उस फ़ौज (से लड़ने) के बारे में तुम लोगों की क्या राय है?

हमने वही जवाब दिया। फिर हज़रत मिक़्दाद बिन अम्र रज़ि० न खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम आपसे इस मौक़े पर वह नहीं कहेंगे जो (ऐसे ही मौक़े पर) मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम ने उनसे कहा था कि तू जा और तेरा रब और तुम दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं।)

हज़रत अबू अय्यूब कहते हैं कि (हज़रत मिक़्दाद के इस ईमान बढ़ाने वाले जवाब पर) हम अंसार को तमन्ना हुई कि हम भी हज़रत मिक़्दाद जैसा जवाब देते, जो बहुत ज़्यादा माल मिलने से ज़्यादा महबूब होता। चुनांचे इस बारे में अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम पर ये आयतें उतारीं—

كَمَآ أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَـٰرِهُونَ ۝

'जैसे निकाला तुझको तेरे रब ने तेरे घर से हक़ काम के वास्ते और एक जमाअत ईमान वालों की राज़ी न थी।'[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बदर जाने के बारे में मश्विरा लिया, जिस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपनी राय पेश की।

आपने सहाबा रज़ि० से दोबारा राय ली, तो हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी राय पेश की।

आपने फिर सहाबा रज़ि० से राय ली, इस पर एक अंसारी ने कहा, ऐ अंसार के लोगो ! अल्लाह के रसूल सल्ल० तुम लोगों से राय लेना चाहते हैं।

इस पर एक अंसारी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! (अगर आप बद्र जाना ही चाहते हैं तो) हम आपको वैसा जवाब नहीं देंगे जैसा जवाब मूसा अलैहि० को बनू इस्राईल ने दिया था कि (ऐ मूसा) तू जा और तेरा रब और तुम दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं, बल्कि हम तो यह अर्ज़ करेंगे कि क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, अगर (यमन की) बस्ती बर्कल ग़िमाद तक का भी (लम्बा) सफ़र करें तो भी हम आपका साथ देंगे।[2]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अबू सुफ़ियान के (तिजारती क़ाफ़िले के मुल्क शाम से) आने की ख़बर मिली तो आपने सहाबा रज़ि० से मश्विरा किया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कुछ मश्विरा दिया, आपने उनसे मुंह फेर लिया। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने अपना मश्विरा दिया, आपने भी उनसे मुंह फेर लिया।

इस पर हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० ने कहा कि हुज़ूर सल्ल०

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 263, मज्मउज़्ज़वाइद भाग 6, पृ० 73, भाग 6, पृ० 78
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 263

हमारी राय लेना चाहते हैं। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर आप हमें इस बात का हुक्म दें कि हम अपनी सवारियां समुद्रों में डाल दें तो हम उनको समुद्रों में डाल देंगे और अगर आप हमें इस बात का हुक्म दें कि हम बर्कुल ग़िमाद तक अपनी सवारियों पर सफ़र करें, तो हम ऐसा ज़रूर करेंगे। (इस पर ख़ुश होकर) हुज़ूर सल्ल० ने लोगों को (इस क़ाफ़िले के मुक़ाबले के लिए चलने का) हुक्म दिया।[1]

हज़रत अलक़मा बिन वक़्क़ास लैसी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० बदर के लिए रवाना हुए। जब आप रौहा नामी जगह पर पहुंचे, तो आपने लोगों से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि तुम्हारी क्या राय है?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमें यह ख़बर मिली है कि वे (कुफ़्फ़ार) बहुत हथियार लेकर बड़ी तायदाद में आए हैं।

आपने फिर लोगों से मुख़ातब होकर फ़रमाया, तुम लोगों की क्या राय है? तो हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० जैसी बात कही।

आपने फिर लोगों से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि तुम लोगों की क्या राय है?

इस पर हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप हमारी राय लेना चाहते हैं? उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको यह शरफ़ बख़्शा और आप पर किताब उतारी, न तो मैं कभी उस रास्ते पर चला हूं और न मुझे इसका कुछ इल्म है, लेकिन अगर आप यमन के बर्कुल ग़िमाद तक जाएंगे, तो हम भी आपके साथ-साथ वहां तक जाएंगे और हम उन लोगों की तरह से नहीं होंगे, जिन्होंने मूसा अलैहि० से कह दिया था—

فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ○

'आप जाएं और आपका रब भी जाए, आप दोनों लड़ाई करें। हम तो यहां बैठे हैं।'

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 263, कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 273

बल्कि हम तो यह कहते हैं कि—

فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ ۝

'आप भी जाएं और आपका रब भी जाए, आप दोनों लड़ाई करें और हम भी आपके साथ-साथ हैं।' हो सकता है कि आप तो किसी और काम के इरादे से चले हों और अब कुछ और काम कराना चाहते हों यानी आप तो अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले के मुक़ाबले के इरादे से चले थे, लेकिन अब अल्लाह चाहते हैं कि काफ़िरों की उस फ़ौज से लड़ा जाए जो अल्लाह कराना चाहता है। आप इसे देखें और उसे करें, इसलिए अब (हमारी ओर से आपको हर तरह का पूरा अख़्तियार है, अब) आप जिससे ताल्लुक़ात बनाएं और जिससे चाहें ताल्लुक़ात ख़त्म कर दें और जिससे चाहें दुश्मनी रखें और जिससे चाहें सुलह कर लें और हमारा जितना माल चाहें, ले लें।

चुनांचे हज़रत साद रज़ि० के इस जवाब पर क़ुरआन की आयतें उतरीं—

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۖ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَارِهُونَ ۝

'जैसे निकाला तुझको तेरे रब ने तेरे घर से हक़ काम के वास्ते और एक जमाअत ईमान वालों की राज़ी न थी।'[1]

अमवी ने अपनी मग़ाज़ी में इस हदीस का ज़िक्र किया है और उसमें यह मज़्मून और भी है कि आप हमारा जितना माल चाहें ले लें और जितना चाहें हमें दे दें और जो आप हमसे लेंगे, वह हमें इससे ज़्यादा महबूब होगा जो आप हमारे पास छोड़ देंगे और आप जो हुक्म देंगे, हमारा मामला उस हुक्म के ताबे होगा। अल्लाह की क़सम! अगर आप गुमदान के बर्क तक चलते-चलते पहुंच जाएं तो हम भी आपके साथ वहां तक जाएंगे।

इसको इब्ने इस्हाक़ ने इस तरह बयान किया है कि हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! ऐसा मालूम होता है कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप हमारी राय लेना चाहते हैं।

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 264

आपने फ़रमाया, हां।

हज़रत साद ने कहा, हम आप पर ईमान ला चुके हैं और आपकी तस्दीक़ कर चुके हैं और गवाही दे चुके हैं कि आप जो कुछ लेकर आए हैं, वह हक़ है और हमने इस बात पर आपको अह्द व पैमान दिया है कि हम आपकी हर बात सुनेंगे और मानेंगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने जिस चीज़ का इरादा किया है, उसे कर गुज़रें, हम आपके साथ हैं। उस ज़ात की क़सम ! जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, अगर आप हमें समुन्दर के सामने ले जाएं और आप समुन्दर में घुस जाएं, तो हम भी आपके साथ समुन्दर में घुस जाएंगे। हमारा एक आदमी भी पीछे नहीं रहेगा। अगर कल आप हमें साथ लेकर हमारे दुश्मन से लड़ें तो हमें यह बिल्कुल नागवार न होगा, हम बड़े जमकर लड़ने वाले हैं और बड़ी बहादुरी से दुश्मन का मुक़ाबला करते हैं। हो सकता है कि कल को अल्लाह हमारे हाथों आपको कोई ऐसा कारनामा दिखाए जिससे आपकी आंखें ठंडी हो जाएं। अल्लाह बरकत अता फ़रमाए, आप तशरीफ़ ले चलें।

हज़रत साद रज़ि० के इस जवाब से हुज़ूर सल्ल० बहुत ज़्यादा ख़ुश हुए और आपकी तबियत में इससे बड़ी निशात पैदा हुई। फिर आपने फ़रमाया, चलो और तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, क्योंकि अल्लाह ने मुझसे इन दो जमाअतों (क़ाफ़िला अबू सुफ़ियान और कुफ़्फ़ार की फ़ौज) में से एक जमाअत (पर ग़लबा देने) का वायदा फ़रमाया है, अल्लाह की क़सम ! मुझे इस वक़्त वे जगहें नज़र आ रही हैं जहां कल ये काफ़िर (क़त्ल होकर) गिरेंगे।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत बसबस रज़ि० को जासूसी के लिए भेजा कि देखकर आएं कि अबू सुफ़ियान का क़ाफ़िला क्या कर रहा है?

चुनांचे वह (हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में) वापस आए और उस वक़्त घर में मेरे और हुज़ूर सल्ल० के अलावा और कोई न था।

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 262

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत अनस रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को जिन कुछ औरतों के बारे में बताया कि वे भी घर में मौजूद थीं, मैं उनको नहीं जानता। हज़रत बसबस ने हुज़ूर सल्ल० को तमाम हालात बताए।

हुज़ूर सल्ल० ने घर से बाहर तशरीफ़ लाकर (सहाबा से) फ़रमाया, हम एक क़ाफ़िले को खोजना चाहते हैं, इसलिए जिसकी सवारी मौजूद है, वह तो उस पर सवार होकर हमारे साथ चल पड़े। कुछ लोग हाज़िर होकर इजाज़त लेने लगे कि हमारी सवारियां मदीना के ऊपरी हिस्से में हैं, हम वहां से सवारियां ले आते हैं।

आपने फ़रमाया 'नहीं', जिसकी सवारी यहां मौजूद हो, वह ही हमारे साथ चले। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा रज़ि० चले और मुश्रिकों से पहले बदर पहुंच गए और मुश्रिक भी आ गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जब तक मैं कोई काम न कर लूं, उस वक़्त तक तुममें से कोई भी वह काम न करे।

चुनांचे मुश्रिक बिल्कुल क़रीब आए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उठो और ऐसी जन्नत की ओर बढ़ो, जिसकी चौड़ाई आसमान और ज़मीन के बराबर है।

हज़रत उमैर बिन हुमाम अंसारी रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ऐसी जन्नत जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है?

आपने फ़रमाया, हां।

हज़रत उमैर रज़ि० ने कहा, वाह वाह !

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम वाह-वाह क्यों कह रहे हो?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह की क़सम ! सिर्फ़ इस उम्मीद पर कह रहा हूं कि मैं भी जन्नत वालों में से हो जाऊं।

आपने फ़रमाया, तुम जन्नत वालों में से हो। फिर वह आदमी अपनी झोली में से खजूरें निकालकर खाने लगे। फिर कहने लगे, इन खजूरों के खाने तक मैं ज़िंदा रहूं, यह तो बड़ी लंबी ज़िंदगी है। यह

कहकर उन खजूरों को फेंक दिया और शहीद होने तक काफ़िरों से लड़ते रहे।[1] رَحِمَہُ اللّٰہ

इब्ने इस्हाक़ की रिवायत में इस तरह है कि फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (मक्का के कुफ़्फ़ार के आने की ख़बर सुनने के बाद) लोगों के पास बाहर तशरीफ़ लाए, और लोगों को तर्ग़ीब देते हुए फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, आज जो इन काफ़िरों से लड़ेगा और सब्र करते हुए अल्लाह से सवाब की उम्मीद में आगे बढ़ते हुए शहीद होगा और पीठ नहीं फेरेगा, अल्लाह उसे ज़रूर जन्नत में दाख़िल कर देंगे।

बनू सलिमा के हज़रत उमैर बिन हुमाम रज़ि० के हाथ में खजूरें थीं, जिन्हें वह खा रहे थे, यह सुनकर उन्होंने कहा, वाह! वाह! क्या मेरे और जन्नत में दाख़िल होने के दर्मियान सिर्फ़ यही चीज़ रोक है कि ये (काफ़िर) लोग मुझे क़त्ल कर दें। यह कहकर खजूरें हाथ से फेंक दीं और तलवार लेकर काफ़िरों से लड़ना शुरू किया, यहां तक कि शहीद हो गए।

इब्ने जरीर ने यह भी ज़िक्र किया है कि हज़रत उमैर रज़ि० काफ़िरों से लड़ते हुए ये शेर (पद) पढ़ रहे थे—

رَكْضًا إِلَى اللّٰهِ بِغَيْرِ زَادِ إِلَّا التُّقَى وَعَمَلِ الْمَعَادِ
وَالصَّبْرِ فِي اللّٰهِ عَلَى الْجِهَادِ وَكُلُّ زَادٍ عُرْضَةُ النَّفَادِ
غَيْرَ التُّقَى وَالْبِرِّ وَالرَّشَادِ

'मैं (ज़ाहिरी) तोशा लिए बग़ैर अल्लाह की ओर दौड़ रहा हूं, अलबत्ता तक़्वा और आख़िरत वाले अमल और जिहाद में अल्लाह के लिए सब्र करने का तोशा ज़रूर साथ है और तक़्वा और नेकी और हिदायत के अलावा हर तोशा ज़रूर ख़त्म हो जाएगा।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि तायफ़ से वापस आने के छः माह बाद मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। फिर अल्लाह

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 277, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 99, हाकिम, भाग 3, पृ० 426
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 277

ने आपको तबूक की लड़ाई का हुक्म दिया। यह वह लड़ाई है जिसे अल्लाह ने कुरआन में 'साअतुल उसर:' (तंगी की घड़ी) के नाम के साथ ज़िक्र किया है।

यह लड़ाई कड़ी गर्मी में हुई थी, उस वक़्त मुनाफ़िक़ों का ज़ोर भी बढ़ रहा था, और सुफ़्फ़ा वालों की तायदाद भी बढ़ रही थी। सुफ़्फ़ा एक चबूतरे का नाम है, जिसपर फ़क़्र व फ़ाक़ा वाले मुसलमान जमा रहते थे। उनके पास हुज़ूर सल्ल० और मुसलमानों का सदक़ा आया करता था। जब किसी लड़ाई में जाने का मौक़ा आता, तो मुसलमान उनके पास आकर तौफ़ीक़ के मुताबिक़ एक या ज़्यादा आदमियों को अपने साथ ले जाते और उनको खाना भी ख़ूब खिलाते और उनको लड़ाई का सामान भी देते।

ये लोग भी मुसलमानों के साथ लड़ाई में शरीक होते और मुसलमान भी इन लोगों पर सवाब लेने की नीयत से ख़र्च किया करते। चुनांचे (तबूक की लड़ाई के इस मौक़े पर) हुज़ूर सल्ल० ने मुसलमानों को सवाब लेने की नीयत से अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का हुक्म दिया। चुनांचे मुसलमानों ने सवाब की नीयत से ख़ूब ख़र्च किया और कुछ (मुनाफ़िक़) लोगों ने भी ख़र्च किया, लेकिन उनकी नीयत सवाब लेने की नहीं थी (बल्कि दिखाने और ख़ुद को मुसलमान ज़ाहिर करने की थी) और बहुत से ग़रीब मुसलमानों के लिए सवारी का इन्तिज़ाम हो गया, लेकिन फिर भी बहुत-से मुसलमान (सवारी के बग़ैर) रह गए।

उस दिन सबसे ज़्यादा माल हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने ख़र्च किया, चुनांचे उन्होंने दो सौ ऊक़िया चांदी यानी आठ हज़ार दिरहम अल्लाह के रास्ते में दिए और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने एक सौ ऊक़िया चांदी यानी चार दिरहम दिए और हज़रत आसिम अंसारी रज़ि० ने नव्वे (लगभग पौने पांच सौ मन) खजूर दी।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे ख़्याल में हज़रत अब्दुर्रहमान (इतना ज़्यादा ख़र्च करके) गुनाहगार हो गए हैं, क्योंकि उन्होंने अपने घरवालों के लिए कुछ नहीं छोड़ा है। चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे पूछा कि

तुमने अपने घरवालों के लिए कुछ छोड़ा है?

उन्होंने कहा, जी हां। जितना मैं लाया हूं, उससे ज़्यादा और उससे अच्छा (छोड़कर आया हूं)

आपने फ़रमाया, कितना?

उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल ने जिस रोज़ी और भलाई का वायदा किया है, वह छोड़कर आया हूं।

हज़रत अबू अक़ील नामी अंसारी सहाबी ने एक साअ (साढ़े तीन सेर) खजूर लाकर दी और मुनाफ़िक़ों ने जब मुसलमानों के इस तरह ख़र्च करते देखा, तो एक दूसरे को आंख से इशारे करने लगे। जब कोई ज़्यादा लाता तो आंख से इशारे करके कहते कि यह रियाकार है (दिखाने के लिए ज़्यादा लाया है) और जब कोई अपनी ताक़त के मुताबिक़ थोड़ी खजूरें लाता, तो कहते कि जो लाया है, इसका तो यह ख़ुद ही ज़्यादा मुहताज है।

चुनांचे जब हज़रत अबू अक़ील एक साअ खजूर लाए, तो उन्होंने कहा कि मैं आज सारी रात दो साअ खजूर मज़दूरी के बदले में पानी खींचता रहा हूं। अल्लाह की क़सम! इन दो साअ के अलावा मेरे पास कुछ नहीं था। वह उज़्र भी बयान कर रहे थे और (कम ख़र्च करने पर) शरमा भी रहे थे और इन दो साअ में से एक साअ यहां लाया हूं और दूसरा साअ अपने घरवालों के लिए छोड़ आया हूं।

इस पर मुनाफ़िक़ों ने कहा, इसे तो अपने एक साअ खजूरों की दूसरों से ज़्यादा ज़रूरत है और मुनाफ़िक़ीन इस तरह आंखों से इशारे और ज़ुबान से ऐसी बातें भी करते जाते थे और उनके मालदार और ग़रीब सब इस इन्तिज़ार में थे कि इन सदक़ों में से उन्हें भी कुछ मिल जाए।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रवानगी का वक़्त क़रीब आ गया, तो मुनाफ़िक़ बहुत ज़्यादा इजाज़त मांगने लगे और उन्होंने गर्मी की भी शिकायत की और यह भी कहा कि अगर वे इस सफ़र में गए तो उन्हें आज़माइश में पड़ जाने का ख़तरा है और अपनी झूठी बातों पर अल्लाह की क़सम भी खाते थे। हुज़ूर सल्ल० उनको

इजाज़त देते रहे। आपको मालूम नहीं था कि उनके दिलों में क्या है?

उनमें से एक गिरोह ने मस्जिदे निफ़ाक़ भी बनाई, जिसमें बैठकर वह अबू आमिर फ़ासिक़ और किनाना बिन अब्द यालैल और अलक़मा बिन उलासा आमिरी का इन्तिज़ार कर रहे थे। अबू आमिर हिरक़्ल के पास गया हुआ था। (अबू आमिर हिरक़्ल को हुज़ूर सल्ल० के ख़िलाफ़ फ़ौजकशी पर तैयार करने के लिए गया था और यह मस्जिद मुसलमानों के ख़िलाफ़ मश्विरे करने के लिए बनाई थी।) और इन्हीं के बारे में सूरः बरात थोड़ी-थोड़ी उतरी थी और उसमें एक ऐसी आयत उतरी, जिसके बाद किसी के लिए जिहाद से रह जाने की गुंजाइश नहीं थी।

जब अल्लाह ने आयत उतारी कि 'तुम हल्के हो या भारी, हर हाल में अल्लाह की राह में निकलो' तो मुख़्लिस और पक्के मुसलमान जो कमज़ोर और बीमार और ग़रीब थे, उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर शिकायत की, अब तो इस ग़ज़वे में न जाने की कोई गुंजाइश न रही और मुनाफ़िक़ों के बहुत से गुनाह अभी तक छिपे हुए थे, जो बाद में ज़ाहिर हुए और बहुत से (मुनाफ़िक़) लोग इस लड़ाई में न गए, न उन्हें (ख़ुदा पर) यक़ीन था और न किसी क़िस्म की बीमारी थी।

यह सूरः बड़ी तफ़्सील के साथ आप पर उतर रही थी और आपका साथ देनेवालों का सारा हाल बता रही थी, यहां तक कि आप तबूक पहुंच गये और वहां से हज़रत अलक़मा बिन मुजज़्ज़िज़ मुदलजी रज़ि० के फ़लस्तीन और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को दूमतुल जन्दल हुज़ूर सल्ल० ने भेजा।

और (हज़रत ख़ालिद से) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम जल्दी जाओ, तुम (दूमतुल जन्दल के बादशाह को) बाहर निकलकर शिकार करता हुआ पाओगे, तो उसे पकड़ लेना। चुनांचे ऐसा ही हुआ। हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने उसे पाया और पकड़ लिया।

जब (मुसलमानों की तरफ़ से) कोई तक्लीफ़ और मशक़्क़त की ख़बर आती तो मुनाफ़िक़ मदीना में लोगों को ख़ूब परेशान करते। चुनांचे उन्हें जब यह ख़बर मिलती कि मुसलमानों को बड़ी मशक़्क़त

और मुजाहदा बरदाश्त करना पड़ा तो एक दूसरे को ख़ुशख़बरी देते और बहुत ख़ुश होते और कहते, हमें यह तो पहले से मालूम था (कि इस सफ़र में बड़ी मशक़्क़त उठानी पड़ेगी) और इसी वजह से हम इस सफ़र में जाने से रोक भी रहे थे और जब उन्हें मुसलमानों की ख़ैरियत और सलामती की ख़बर मिलती, तो बड़े दुखी हो जाते।

मुनाफ़िक़ों के जितने दुश्मन मदीना में मौजूद थे, उन सबको मुनाफ़िक़ों को इस दिली कैफ़ीयत यानी निफ़ाक़ और मुसलमानों से कदूरत का अच्छी तरह से पता चल गया और हर देहाती और ग़ैर-देहाती मुनाफ़िक़ कोई न कोई ख़ुफ़िया तौर पर नापाक हरकत कर रहा था।

आख़िर यह सब कुछ खुलकर सामने आ गया और हर माज़ूर और बीमार मुसलमान की हालत यह थी कि वह इस इन्तिज़ार में था कि अल्लाह जो आयतें अपनी किताब में उतार रहे हैं, उन आयतों में (मदीना में रहने की इजाज़त की) गुंजाइश वाली आयत भी नाज़िल हो जाए।

सूरः बरात थोड़ी-थोड़ी उतरती रही (और उसमें ऐसे मज़्मून (विषय) उतरते रहे जिनकी वजह से) लोग मुसलमानों के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे और मुसलमान इस बात से डरने लगे कि तौबा के मामले में उनके हर छोटे-बड़े गुनाह के बारे में इस सूरः में ज़रूर कोई न कोई सज़ा उतरेगी, यहां तक कि सूर: बरात पूरी हो गई और अमल करने वाले हर कारकुन (मुसलमान और मुनाफ़िक़) के बारे में इस सूर: में साफ़ कर दिया गया कि वह हिदायत पर है या गुमराही पर है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र बिन हज़्म कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० की आदत यह थी कि लड़ाई में जिस तरफ़ जाने का इरादा होता (उसे न ज़ाहिर करते), बल्कि ऐसा अन्दाज़ अख़्तियार करते, जिससे किसी और तरफ़ जाने का इरादा होता हो, लेकिन तबूक की लड़ाई में (आपने यह अन्दाज़ न अख़्तियार किया, बल्कि) साफ़ तौर से फ़रमाया, ऐ लोगो! इस बार रूम वालों से लड़ने का इरादा है। चुनांचे आपने

1. इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 105, कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 249

अपना इरादा साफ़-साफ़ ज़ाहिर फ़रमा दिया।

उस वक़्त लोग बड़े ग़रीब थे, गर्मी सख़्त पड़ रही थी, और सारे इलाक़े में अकाल पड़ा हुआ था और फल पक चुके थे और लोग (तैयार फलों को काटने के लिए) अपने बाग़ों में (और गर्मी की तेज़ी से बचने के लिए) अपनी सायादार जगहों में रहना चाहते थे और इन जगहों को छोड़कर (गर्मी में सफ़र पर) जाना बिल्कुल पसन्द नहीं था।

इस लड़ाई की तैयारी फ़रमाते हुए हुज़ूर सल्ल० ने एक दिन जद बिन क़ैस (मुनाफ़िक़) को कहा, ऐ जद! बनू असफ़र (रूमियों) से लड़ने का तुम्हारा भी ख़्याल है?

उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप मुझे (यहां रहने की) इजाज़त दे दें और मुझे आज़माइश में न डालें। मेरी क़ौम को यह बात मालूम है कि मुझसे ज़्यादा औरतों से असर लेनेवाला कोई नहीं है। मुझे डर है कि बनू अस्फ़र (रूमियों) की औरतों को देखकर मैं कहीं फ़िल्ने में न पड़ जाऊं। ऐ अल्लाह के रसूल! आप मुझे इजाज़त दे दें।

आपने उससे मुंह फेरते हुए फ़रमाया, हां, इजाज़त है। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ۭ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ۭ

'कुछ उनमें कहते हैं, मुझको छूट दे दे और गुमराही में न डाल। सुनता है, वे तो गुमराही में पड़ चुके हैं।' इस आयत का मतलब यह है कि रूमियों की औरतों के फ़िल्ने से डरकर यह मदीना रहना चाहता है और हुज़ूर सल० के साथ जाना नहीं चाहता है। यह मदीना में उस वक़्त रह जाना और हुज़ूर सल्ल० के साथ न जाना खुद बड़ा फ़िल्ना और ज़बरदस्त गुमराही है, जिसमें वह फंस चुका है।

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝

'और बेशक दोज़ख़ घेर रही है काफ़िरों को।' यहां काफ़िर से वे मुनाफ़िक़ मुराद हैं जो बहाना बनाकर पीछे रह जाना चाहते थे। एक मुनाफ़िक़ ने कहा—

لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ

'मत कूच करो गर्मी में'। इस पर यह आयत उतरी—

قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا ۚ لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝

'तू कह, दोज़ख की आग सख़्त गर्म है अगर उनको समझ होती।'

फिर हुज़ूर सल्ल० अपने सफ़र की ज़ोर-शोर से तैयारी करने लगे और लोगों को अल्लाह के रास्ते में जान देने को कहा और मालदारों को अल्लाह के रास्ते में सवारियां देने और ख़ूब ख़र्च करने पर उभारा।

चुनांचे मालदार लोगों ने सवाब लेने के शौक़ में ख़ूब सवारियां दीं और इस लड़ाई में हज़रत उस्मान रज़ि० ने इतना ज़्यादा ख़र्च किया कि उनसे ज़्यादा कोई न कर सकता और दो सौ ऊंट सवारी के लिए दिए।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्ल० ने तबूक की लड़ाई के लिए जाने का इरादा फ़रमाया, तो जद बिन क़ैस से कहा, बनू असफ़र (रूमियों) से लड़ने के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है?

उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं तो बहुत सी औरतों वाला हूं। (इनके बग़ैर नहीं रह सकता हूं) मैं तो रूमियों की औरतों को देखकर फ़िल्ने में पड़ जाऊंगा। क्या आप मुझे यहां रह जाने की इजाज़त दे देंगे? मुझे (साथ ले जाकर) फ़िल्ने में न डालें। चुनांचे अल्लाह ने यह आयत उतारी[2]—

وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ ائْذَن لِّي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ

इब्ने असाकर ने बयान किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अलग-अलग क़बीलों और मक्का वालों की ओर आदमी भेजे जो उनसे दुश्मन के मुक़ाबले में जाने की मांग करें।

चुनांचे हज़रत बुरैदा बिन हुसैब रज़ि० को क़बीला अस्लम की ओर भेजा और उनसे फ़रमाया, फ़ुरअ बस्ती तक पहुंच जाना और हज़रत अबू रूहम ग़िफ़ारी रज़ि० को उनकी क़ौम की ओर भेजा और उनसे फ़रमाया कि अपनी क़ौम को उनके इलाक़े में जमा कर लें और हज़रत अबू

1. इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 108, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 33, बिदाया, भाग 5, पृ० 3
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 30

वाक़िद लैसी रज़ि० अपनी क़ौम की ओर गए और हज़रत अबू जाद ज़ुमरी रज़ि० समुद्र के तट पर अपनी क़ौम की ओर गए और हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत राफ़ेअ बिन मकीस और हज़रत जुन्दुब बिन मकीस रज़ि० को क़बीला जुहैना की ओर भेजा और हज़रत नुऐम बिन मसऊद रज़ि० को क़बीला अशजअ की ओर भेजा और हुज़ूर सल्ल० ने क़बीला बनू काब बिन अम्र में हज़रत बुदैल बिन वरक़ा और हज़रत अम्र बिन सालिम और हज़रत बिश्र बिन सुफ़ियान रज़ि० की जमाअत को भेजा और क़बीला सुलैम की ओर कुछ सहाबा रज़ि० को भेजा, जिनमें हज़रत अब्बास बिन मिरदास रज़ि० भी थे।

हुज़ूर सल्ल० ने मुसलमानों को जिहाद में जाने पर ख़ूब-ख़ूब उभारा और उन्हें (अल्लाह के रास्ते में) माल ख़र्च करने का हुक्म दिया।

चुनांचे सहाबियों रज़ि० ने भी बहुत दिल खोलकर ख़ूब ख़र्च किया और सबसे पहले हज़रत अबूबक्र रज़ि० लाए और वह अपना सारा माल लाए थे, जो कि चार हज़ार दिरहम का था, तो उनसे हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने अपने घरवालों के लिए कुछ छोड़ा है?

तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, हां, अल्लाह और उसके रसूल को (घर छोड़कर आया हूं।) फिर हज़रत उमर रज़ि० अपना आधा माल लेकर आए। उनसे हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या तुमने अपने घरवालों के लिए कुछ छोड़ा है?

उन्होंने अर्ज़ किया कि जितना लाया हूं, उसका आधा (छोड़कर आया हूं लेकिन दूसरी रिवायत में यह है कि जितना लाया हूं, उतना ही छोड़कर आया हूं।) हज़रत अबूबक्र रज़ि० जो माल लेकर आए, जब उसकी ख़बर हज़रत उमर को मिली तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि जब भी किसी नेकी में हमारा आपस में मुक़ाबला हुआ तो हमेशा हज़रत अबूबक्र रज़ि० इस नेकी में मुझसे आगे निकले हैं।

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० भी बहुत-सा माल हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लेकर आए और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की

ख़िदमत में दो सौ ऊक़िया चांदी यानी आठ हज़ार दिरहम लाए और हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० भी बहुत सारा माल लाए और इसी तरह हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० भी और हज़रत आसिम बिन अदी रज़ि० ने नब्बे वसक़ (लगभग पौने पांच मन) खजूर दी और हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने तिहाई फ़ौज का पूरा सामान दिया और सहाबा में से सबसे ज़्यादा उन्होंने ख़र्च किया, यहां तक कि तिहाई फ़ौज के लिए तमाम ज़रूरी सामान दिया—यहां तक कि यह कहा गया कि अब उनको किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं है, यहां तक कि मश्कीज़ों की सिलाई के लिए मोटी सुई का भी इन्तिज़ाम किया।

चुनांचे यह बताया जाता है कि उस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि इसके बाद उस्मान कुछ भी कर लें, उनका कोई नुक़्सान न होगा। मालदारों ने माल ख़र्च करने की नेकी में ख़ूब ज़ौक़-शौक़ से हिस्सा लिया और उन्होंने यह सब कुछ सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ा और सवाब हासिल करने के शौक़ में किया और जो लोग इन मालदारों से माल में कम थे, उन्होंने भी अपने से ज़्यादा कम माल वालों की ख़ूब मदद की और उनकी ताक़त का ज़रिया बने, यहां तक कि कुछ अपना ऊंट लाकर एक दो आदमियों को दे देते कि तुम दोनों इस पर बारी-बारी सवार होते रहना और दूसरा आदमी कुछ ख़र्च लाता और इस ग़ज़वा में जाने वाले को दे देता, यहां तक कि औरतें भी अपनी ताक़त और हिम्मत के मुताबिक़ इन निकलने वालों की मदद कर रही थीं।

चुनांचे हज़रत उम्मे सिनान अस्लमीया रज़ि० कहती हैं कि मैंने देखा कि हज़रत आइशा रज़ि० के घर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने एक कपड़ा बिछा हुआ है, जिस पर कंगन, बाज़ूबन्द, पाज़ेब, बालियां, अंगूठियां और बहुत से ज़ेवर रखे हुए हैं और इस लड़ाई की तैयारी के लिए औरतों ने जाने वालों की मदद के लिए जो ज़ेवर भेजे थे, उनसे वह कपड़ा भरा हुआ था।

लोग उन दिनों बड़ी तंगी में थे और उस वक़्त फल बिल्कुल पक चुके थे और साएदार जगहें बड़ी पसन्दीदा हो गई थीं। लोग घरों में

रहना चाहते थे और इन हालात की बुनियाद पर घरों से जाने पर बिल्कुल राज़ी नहीं थे और हुज़ूर सल्ल० ने और ज़्यादा ज़ोर-शोर से तैयारी शुरू फ़रमा दी और सनीयतुल वदाअ में जाकर आपने अपनी फ़ौज का पड़ाव डाल दिया।

लोगों की तायदाद बहुत ज़्यादा थी। किसी एक रजिस्टर में सबके नाम आ नहीं सकते थे और जो भी इस लड़ाई से ग़ायब होना चाहता था, उसे मालूम था कि उसके ग़ायब होने का उस वक़्त तक किसी को पता नहीं चलेगा, जब तक कि उसके बारे में अल्लाह की ओर से वह्य नाज़िल न हो।

चुनांचे जब हुज़ूर सल्ल० ने सफ़र शुरू करने का पक्का इरादा कर लिया, तो आपने मदीना में हज़रत सिबाअ बिन उरफ़ुत रज़ि० को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया। कुछ लोग कहते हैं कि आपने हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० को ख़लीफ़ा बनाया था और हुज़ूर सल्ल० ने यह भी फ़रमाया कि जूते ज़्यादा मिक़्दार में साथ लेकर चलो, क्योंकि जब तक आदमी जूती पहने रहता है, वह गोया कि सवार ही रहता है।

जब हुज़ूर सल्ल० ने सफ़र शुरू फ़रमा दिया तो इब्ने उबई (मुनाफ़िक़) और दूसरे मुनाफ़िक़ों को लेकर पीछे रह गया और यों कहने लगा कि मुहम्मद सल्ल० बनू असफ़र रूमियों से लड़ना चाहते हैं, हालांकि मुसलमानों की बुरी हालत हो रही है और गर्मी कड़ी पड़ रही है और यह सफ़र बहुत दूर का है और मुक़ाबला भी ऐसी फ़ौज से है, जिनसे लड़ने की हुज़ूर सल्ल० में ताक़त नहीं है। क्या मुहम्मद यह समझते हैं कि बनू असफ़र रूमियों से लड़ना खेल है?

और उसके मुनाफ़िक़ साथियों ने भी इसी तरह की बातें की हैं और हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा रज़ि० के बारे में परेशानी में डालने वाली ख़बरें फैलाने के लिए उसने यह कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं तो देख रहा हूं कि हुज़ूर सल्ल० के तमाम सहाबा कल को रस्सियों में बंधे हुए होंगे।

जब हुज़ूर सल्ल० ने सनीयतुल वदाअ से सफ़र शुरू फ़रमाया और

छोटे और बड़े झंडों को लहराया, तो छोटे झंडों में से सबसे बड़ा झंडा हज़रत अबूबक्र रज़ि० को और बड़े झंडों में से सबसे बड़ा झंडा हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को दिया और क़बीला औस का झंडा हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु को और क़बीला ख़ज़रज का झंडा हज़रत अबू दुजाना रज़ि० को दिया।

कुछ लोग कहते हैं कि ख़ज़रज का झंडा हज़रत हबाब बिन मुन्ज़िर रज़ि० को दिया, हुज़ूर सल्ल० के साथ तीस हज़ार की फ़ौज थी और दस हज़ार घोड़े थे। हुज़ूर सल्ल० ने अंसार के हर ख़ानदान को हुक्म दिया कि अपने छोटे और बड़े झंडे ले लें और अरब के दूसरे क़बीलों के भी अपने-अपने छोटे और बड़े झंडे थे।[1]

हुज़ूर सल्ल० का अपने मरज़ुल वफ़ात में हज़रत उसामा रज़ि० (की फ़ौज) को भेजने का एहतिमाम फ़रमाना और फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० का अपनी ख़िलाफ़त के शुरू के ज़माने में उनको भेजने का ज़्यादा एहतिमाम फ़रमाना

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें (फ़लस्तीन की) जगह उबना वालों पर सुबह-सुबह हमला कर देने और उनके घरों को जला देने का हुक्म दिया।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उसामा से फ़रमाया, अल्लाह का नाम लेकर चलो। चुनांचे हज़रत उसामा (हुज़ूर सल्ल० के दिए हुए) अपने झंडे को लहराते हुए बाहर निकले और वह झंडा उन्होंने हज़रत बुरैदा बिन हुसैब अस्लमी रज़ि० को दिया। वह उसे लेकर हज़रत उसामा के घर आए। और हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर हज़रत उसामा ने जुरुफ़ नामी जगह पर पड़ाव डाला और उन्होंने अपनी फ़ौज वहां ठहराई, जहां आज सक़ाया सुलैमान बना हुआ है।

लोग निकल-निकलकर वहां आने लगे, जो अपनी ज़रूरतों से

1. इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 110

फ़ारिग़ हो जाता, वह अपनी फ़ौज की उस ठहरने की जगह को आ जाता और जो फ़ारिग़ न होता, वह अपनी ज़रूरतों को पूरा करने में लगा रहता।

शुरू के मुहाजिरों में से हर आदमी इस ग़ज़्वा में शरीक हुआ। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब, हज़रत अबू उबैदा, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास, हज़रत अबुल आवर सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल रज़ि० और दूसरे मुहाजिरीन और अंसार भी बहुत सारे थे। हज़रत क़तादा बिन नोमान और हज़रत सलमा बिन अस्लम बिन हरीश रज़ि० वग़ैरह, कुछ मुहाजिरों ने जिनमें हज़रत अय्याश बिन अबी रबीआ रज़ि० पेश पेश थे और बड़े ज़ोरों में थे, कहा, इस लड़के (उसामा) को शुरू के मुहाजिरों का अमीर बनाया जा रहा है, चुनांचे इस बारे में बड़ी चर्चाएं हुईं।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने जब इस तरह की कुछ बात सुनी, तो उन्होंने बोलने वाले का तुरन्त खंडन किया और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर ये सारी बातें बता दीं, जिस पर हुज़ूर सल्ल० को बड़ा ग़ुस्सा आया। आपने (बीमारी की वजह से) अपने सर पर पट्टी बांध रखी थी और चादर ओढ़ रखी थी।

(चुनांचे आप अपने घर से बाहर तशरीफ़ लाए) फिर आप मिंबर पर आए और अल्लाह की हम्द व सना बयान की। फिर आपने फ़रमाया, ऐ लोगो! मैंने उसामा को जो अमीर बनाया है, इस बारे में आप लोगों में से कुछ लोगों की ओर से कुछ बात पहुंची है, वह क्या बात है? अल्लाह की क़सम! आज तुमने मेरे उसामा को अमीर बनाने के बारे में एतराज़ किया है, तो इससे पहले उसके वालिद (हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को मेरे अमीर बनाने के बारे में एतराज़ कर चुके हो, हालांकि अल्लाह की क़सम! वह अमीर बनने के क़ाबिल था और अब उनके बाद उनका बेटा अमीर बनने के क़ाबिल है और जैसे वह (हज़रत उसामा के वालिद) मुझे सबसे ज़्यादा महबूब थे, ऐसे ही यह (उसामा) लोगों में सबसे ज़्यादा महबूब है और ये दोनों (बाप-बेटे) हर भलाई के काम के बिल्कुल मुनासिब हैं। तुम इस (उसामा) के बारे में मेरी ओर से ख़ैर और

भले की वसीयत क़ुबूल करो, क्योंकि वह तुम्हारे पसंदीदा और चुने हुए लोगों में से है।

फिर हुज़ूर सल्ल० मिंबर से नीचे तशरीफ़ लाए और अपने घर तशरीफ़ ले गए। यह शनिवार का दिन था और रबीउल अव्वल की दस तारीख़ थी।

हज़रत उसामा रज़ि० के साथ जाने वाले मुसलमान हुज़ूर सल्ल० से विदाई मुलाक़ात के लिए आने लगे। इनमें हज़रत उमर बिन ख़त्ताब भी थे। हुज़ूर सल्ल० (हर एक से) यही फ़रमाते जाते थे कि उसामा की फ़ौज रवाना करो।

(हज़रत उसामा रज़ि० की मां) हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अपने सेहतमंद होने तक उसामा को अपनी इसी छावनी (जुरूफ़) में ही रहने दें (और अभी उनको रवाना न करें) अगर वह इसी हालत में चले गए, तो वे कुछ कर नहीं सकेंगे। (उनकी सारी तवज्जोह आपकी बीमारी का हाल मालूम करने की तरफ़ लगी रहेगी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (उनको भी यही) फ़रमाया, उसामा की फ़ौज रवाना करो।

चुनांचे तमाम लोग (जुरूफ़ की) छावनी को चले गए और सबने वहां इतवार की रात गुज़ारी। इतवार के दिन हज़रत उसामा (मिज़ाज पूछने के लिए) हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में मदीना आए और हुज़ूर सल्ल० की तबियत बड़ी निढाल थी और आप पर ग़शी छाई हुई थी। यह वही दिन है जिसमें घरवालों ने हुज़ूर सल्ल० को दवा पिलाई थी।

जब हज़रत उसामा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए, तो उनकी आंखों में से आंसू बह रहे थे और आपके पास हज़रत अब्बास रज़ियल्लहु अन्हु थे और पाक बीवियां आपके चारों ओर थीं। हज़रत उसामा रज़ि० ने झुक कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बोसा लिया। हुज़ूर सल्ल० बोल नहीं सकते थे। आप अपने दोनों हाथ उठाकर हज़रत उसामा रज़ि० पर रख रहे थे।

हज़रत उसामा रज़ि० फ़रमाते हैं, मैं समझ गया कि हुज़ूर सल्ल० मेरे लिए दुआ फ़रमा रहे हैं। मैं वहां से अपनी फ़ौज की क़ियामगाह को वापस आ गया। पीर के दिन हुज़ूर सल्ल० को कुछ फ़ायदा नज़र आया। हज़रत उसामा रज़ि० अपनी फ़ौज की क़ियामगाह से फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में सुबह को हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, अल्लाह (तुम्हारे सफ़र में) बरकत फ़रमाए, तुम रवाना हो जाओ।

चुनांचे हज़रत उसामा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० से विदा हुए। हुज़ूर सल्ल० को उस वक़्त फ़ायदा था और आपके आराम की ख़ुशी में पाक बीवियां एक दूसरे को कंघी करने लगीं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह का एहसान है, आज आपको फ़ायदा है। आज (मेरी बीवी) बिन्ते ख़ारजा का दिन है। मुझे (उसके यहां जाने की) इजाज़त दे दें।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको इजाज़त दे दी। चुनांचे वे मदीना के क़रीब के सुख महल्ले में (अपने घर) चले गए।

हज़रत उसामा सवार होकर अपनी फ़ौज की क़ियामगाह को चले और अपने साथियों में एलान कर दिया कि वहां सब पहुंच जाएं। फ़ौज की क़ियामगाह में पहुंचकर हज़रत उसामा सवारी से उतरे और लोगों को कूच का हुक्म दिया। दिन चढ़ चुका था। हज़रत उसामा रज़ि० सवार होकर जुरूफ़ से रवाना होना चाहते थे कि उनके पास उनकी मां हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि० का क़ासिद पहुंचा कि हुज़ूर सल्ल० दुनिया से तशरीफ़ ले जा रहे हैं।

हज़रत उसामा रज़ि० मदीना को चल पड़े। उनके साथ हज़रत उमर और हज़रत अबू उबैदा रज़ि० भी थे। जब ये लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० के आख़िरी लम्हे थे। हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल बारह रबीउल अव्वल पीर के दिन ज़वाल के क़रीब हुआ। जुरूफ़ में जितने मुसलमान (जाने के लिए तैयार होकर) ठहरे हुए थे, वे

सब मदीना आ गए।

हज़रत बुरैदा बिन हुसैब ने हज़रत उसामा का झंडा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े के क़रीब ज़मीन में गाड़ दिया। जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० की बैअत हो गई तो उन्होंने हज़रत बुरैदा को हुक्म दिया कि वह झंडा हज़रत उसामा के घर ले जाएं और जब तक हज़रत उसामा मुसलमानों को लेकर ग़ज़वे में न चले जाएं, इस झंडे को न खोलें।

हज़रत बुरैदा कहते हैं कि मैं झंडा लेकर हज़रत उसामा रज़ि० के घर गया, फिर उस झंडे को लेकर शामदेश को हज़रत उसामा के साथ गया। फिर मैं उसे लेकर (शाम से) हज़रत उसामा के घर वापस आया और वह झंडा उसी तरह उनके घर में यों ही बंधा रहा, यहां तक कि उनका इंतिक़ाल हो गया।

जब अरबों को हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल की ख़बर मिली और बहुत से अरब इस्लाम से फिर गए, तो हज़रत अबूबक्र ने हज़रत उसामा से कहा, तुम्हें हुज़ूर सल्ल० ने जहां जाने का हुक्म दिया तुम (अपनी फ़ौज लेकर) वहां चले जाओ।

चुनांचे लोग फिर (मदीने से) निकलने लगे और अपनी पहली जगह जाकर पड़ाव डालने लगे और हज़रत बुरैदा भी झंडा लेकर आए और पहली क़ियामगाह पर पहुंच गए।

हज़रत अबूबक्र का हज़रत उसामा की फ़ौज को भेजना बड़े-बड़े शुरू के मुहाजिरों को बहुत शाक़ गुज़रा। चुनांचे हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत उबैदा, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल के ख़लीफ़ा! हर तरफ़ अरब के लोग आपकी इताअत को छोड़ बैठे हैं। (इन हालात में) आप इस फैली हुई बड़ी फ़ौज को भेजकर और अपने से जुदा करके कुछ नहीं कर सकेंगे। (आप इस फ़ौज को यहां ही रखें) और इनसे इस्लाम से अलग होने वालों के फ़ित्ले को ख़त्म करने का काम लें। इनको मुर्तद्दीन

(इस्लाम से अलग होने वालों) से मुक़ाबला के लिए भेजें और दूसरी बात यह है कि हमें मदीने पर अचानक हमले का ख़तरा है।

और यहां (मुसलमानों की) औरतें और बच्चे हैं। अभी आप रूम की लड़ाई को रहने दें। जब इस्लाम अपनी पहली हालत पर आकर मज़बूत हो जाए और मुर्तद्दीन या तो इस्लाम में वापस आ जाएं जिससे अब वे निकल गए हैं या तलवार से उनका ख़ात्मा हो जाए तो आप हज़रत उसामा को (रूम) भेज दें। हमें पूरा इत्मीनान है कि रूमी (इस वक़्त) हमारी ओर नहीं आ रहे। (इसलिए उनको रोकने के लिए हज़रत उसामा रज़ि० की फ़ौज को अभी भेजने की ज़रूरत नहीं है)

जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनकी पूरी बात सुन ली तो फ़रमाया, क्या तुममें कोई कुछ और कहना चाहता है?

उन्होंने कहा, नहीं। आपने हमारी बात अच्छी तरह सुन ली है।

आपने कहा, उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर मुझे इस बात का यक़ीन हो जाए कि (अगर मैं इस फ़ौज को भेजूंगा तो) दरिंदे मुझे मदीना में आकर खा जाएंगे, तो मैं इस फ़ौज को ज़रूर भेजूंगा। (और ख़लीफ़ा बनने के बाद मैं सबसे पहले यही काम करना चाहता हूं।) इससे पहले मैं कोई और काम नहीं करना चाहता हूं और (इस फ़ौज को जाने से) कैसे (रोका जा सकता है,) जबकि हुज़ूर सल्ल० पर आसमान से वह्य उतरती थी और आप फ़रमाते थे कि उसामा रज़ि० की फ़ौज को रवाना करो। हां, एक बात है जो मैं उसामा रज़ि० से करना चाहता हूं कि उमर (न जाएं और) हमारे पास रह जाएं, क्योंकि हमारा उनके बग़ैर काम नहीं चल सकता, हमें उनकी यहां ज़रूरत है। अल्लाह की क़सम! मुझे मालूम नहीं है कि वह ऐसा करेंगे या नहीं। अगर उन्होंने ऐसा न किया तो अल्लाह की क़सम! मैं उनको मजबूर नहीं करूंगा।

आने वाले लोग समझ गए कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उसामा रज़ि० की फ़ौज को भेजने का पक्का इरादा कर रखा है और हज़रत अबूबक्र रज़ि० चलकर हज़रत उसामा रज़ि० से मिलने उनके घर

गए और हज़रत उमर को (मदीना में) छोड़ जाने के बारे में उनसे बात की, जिस पर वह राज़ी हो गए।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनसे यह भी कहा कि क्या आपने (उमर को यहां रहने की) ख़ुशी-ख़ुशी इजाज़त दी है?

हज़रत उसामा रज़ि० ने कहा, जी हां।

बाहर आकर अपने एलान करने वाले को हुक्म दिया कि वह यह एलान कर दे कि मेरी ओर से इस बात की पूरी ताकीद है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में जो भी हज़रत उसामा के साथ उनकी इस फ़ौज में जाने के लिए तैयार हो गया था, अब वह हरगिज़ उस फ़ौज से पीछे न रहे। (ज़रूर साथ जाए) और उनमें से जो उस फ़ौज के साथ न गया और वह मेरे पास लाया गया, तो मैं उसको यह सज़ा दूंगा कि उसे पैदल चलकर उस फ़ौज में शामिल होना होगा और जिन मुहाजिर सहाबा ने हज़रत उसामा रज़ि० की इमारत (सरदारी) के बारे में बात की थी, उन्हें बुलाया, उन पर सख़्ती की और उनके (इस फ़ौज के साथ) जाने को ज़रूरी क़रार दिया।

चुनांचे एक भी इंसान फ़ौज से पीछे न रहा और हज़रत अबूबक्र, हज़रत उसामा और मुसलमानों को विदा करने के लिए निकले। इस फ़ौज की तायदाद तीन हज़ार थी और उनमें एक हज़ार घोड़े थे।

जब हज़रत उसामा रज़ि० अपने साथियों को लेकर अपनी सवारी पर जुरूफ़ से सवार हुए तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० थोड़ी देर हज़रत उसामा रज़ि० के साथ चले, फिर (मुसाफ़िर के विदा करने की दुआ पढ़ी)

أَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكُمْ وَاَمَانَتَكُمْ وَخَوَاتِيْمَ اَعْمَالِكُمْ.

'अस्तौदिउल्ला-ह दी-न-क व अमा-न-त-क व ख़वाती-म आमालिक०'

और फ़रमाया (इस सफ़र में जाने का तुम्हें हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया था। तुम हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद की वजह से जाओ, न मैंने तुमको इसका हुक्म दिया है और मैं तुम्हें इससे रोक सकता हूं। हुज़ूर सल्ल० जिस काम का हुक्म दे गए थे, मैं तो वह काम पूरा करा रहा हूं।

फिर हज़रत उसामा रज़ि० तेज़ी से रवाना हुए और उनका ऐसे इलाक़ों से गुज़र हुआ जो सुकून से भरे हुए थे और वहां के लोग मुर्तद नहीं हुए थे जैसे क़ुज़ाआ के जुहैना वग़ैरह क़बीले।

जब हज़रत उसामा रज़ि० वादी क़ुरा पहुंचे तो उन्होंने बनू उज़रा के हुरैस नामी आदमी को अपना जासूस बनाकर आगे भेजा जो अपनी सवारी पर सवार होकर हज़रत उसामा रज़ि० से पहले रवाना हुआ और चलते-चलते (चाहा गया शहर) उब्ना तक पहुंच गया। उसने वहां के हालात को ध्यान से देखा और (फ़ौज के लिए) मुनासिब रास्ता खोजा, फिर वह तेज़ी से वापस लौटा और उब्ना से दो रातों की दूरी से पहले वह हज़रत उसामा रज़ि० के पास पहुंच गया और उसने उन्हें बताया कि लोग बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं। (उन्हें मुसलमानों की फ़ौज के आने की कोई ख़बर नहीं है) और उनकी फ़ौज भी जमा नहीं हुई और उन्हें मश्विरा दिया कि अब (फ़ौज को लेकर) तेज़ी से चलें, ताकि उनकी फ़ौजों के जमा होने से पहले ही उन पर अचानक हमला किया जा सके।[1]

हज़रत हसन बिन अबुल हसन रह० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इंतिक़ाल से पहले मदीना और उसके पास-पड़ोस के लोगों पर एक फ़ौज तैयार की, जिनमें हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० भी थे और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० को इस फ़ौज का अमीर (सरदार) बनाया।

इन लोगों ने अभी खंदक़ भी पार नहीं की थी कि हुज़ूर सल्ल० का इंतिकाल हो गया। हज़रत उसामा रज़ि० लोगों को लेकर ठहर गए और हज़रत उमर रज़ि० से कहा कि आप अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा के पास वापस जाएं और उनसे (हमारे लिए वापस आने की) इजाज़त लें कि वह मुझे इजाज़त दें, तो सब लोग मदीना वापस चले जाएं, क्योंकि मेरे साथ बड़े-बड़े सहाबा किराम रज़ि० फ़ौज में हैं और मुझे ख़तरा है कि कहीं मुश्रिक ख़लीफ़ा पर और हुज़ूर

1. इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 130, कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 312, फ़त्हुल बारी, भाग 8, पृ० 107

सल्ल० के घरवालों और मुसलमानों के घरवालों पर अचानक हमला न कर दें।

और अंसार ने कहा, अगर हज़रत अबूबक्र रज़ि० हमारे जाने ही का फ़ैसला करें तो उनको हमारी ओर से यह पैग़ाम देकर मांग करें कि वह हमारा अमीर ऐसे आदमी को बना दें जो उम्र में हज़रत उसामा रज़ि० से बड़ा हो। चुनांचे हज़रत उमर उसामा रज़ि० का यह पैग़ाम लेकर गए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० को जाकर हज़रत उसामा रज़ि० की सारी बात बता दी।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया कि अगर कुत्ते और भेड़िए मुझे उचक लें (मुझे मदीने से उठाकर ले जाएं या मुझे फाड़ डालें,) तो भी मैं हुज़ूर सल्ल० के फ़ैसले को वापस नहीं ले सकता हूं।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मुझे अंसार ने कहा था कि मैं आपको उनका यह पैग़ाम पहुंचा दूं कि वह यह चाहते हैं कि आप उनका अमीर ऐसे आदमी को बना दें, जो उम्र में हज़रत उसामा रज़ि० से बड़ा हो।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० बैठे हुए थे। यह सुनकर एकदम झपटे और हज़रत उमर रज़ि० की दाढ़ी पकड़कर कहा कि ऐ इब्ने ख़त्ताब ! तेरी मां तुझे गुम करे (यानी तुम मर जाओ) हुज़ूर सल्ल० ने तो उनको अमीर बनाया है और तुम मुझे कह रहे हो कि मैं उनको इमारत से हटा दूं। हज़रत उमर रज़ि० वहां से निकलकर लोगों के पास आए।

लोगों ने उनसे पूछा कि आप क्या कर आए?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, चलो अपना सफ़र शुरू करो। तुम्हारी माएं तुम्हें गुम करें, आज तो मुझे तुम्हारी वजह से ख़लीफ़ा की ओर से बहुत कुछ बरदाश्त करना पड़ा।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ख़ुद उन लोगों के पास आए और उन लोगों को ख़ूब हिम्मत दिलाई और उनको इसी तरह विदा किया कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ख़ुद पैदल चल रहे थे और हज़रत उसामा रज़ि० सवार थे और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० हज़रत अबूबक्र

रज़ि० की सवारी की लगाम पकड़कर चल रहे थे।

हज़रत उसामा रज़ि० ने कहा, ऐ रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ा! या तो आप भी सवार हो जाएं या फिर मैं भी नीचे उतरकर पैदल चलता हूं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! न तुम उतरोगे और अल्लाह की क़सम! न मैं सवार हूंगा। इसमें क्या हरज है कि मैं थोड़ी देर अपने पांव अल्लाह के रास्ते में धूल में सान लूं, क्योंकि ग़ाज़ी जो क़दम भी उठाता है, उसके लिए हर क़दम पर सात सौ नेकियां लिखी जाती हैं और उसके सात सौ दर्जे बुलन्द किए जाते हैं और उसके सात सौ गुनाह मिटा दिए जाते हैं।

जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० उनको विदा करके वापस आने लगे, तो उन्होंने हज़रत उसामा रज़ि० से कहा, अगर आप मुनासिब समझो तो हज़रत उमर को मेरी मदद के लिए यहां छोड़ जाओ। चुनांचे हज़रत उसामा रज़ि० ने हज़रत उमर को मदीना हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास रह जाने की इजाज़त दे दी।[1]

हज़रत उर्वः रज़ि० फ़रमाते हैं, जब सहाबा (हज़रत अबूबक्र रज़ि० की) बैअत से फ़ारिग़ हो गए और सब पूरी तरह मुतमइन हो गए, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उसामा रज़ि० को फ़रमाया, तुम्हें हुज़ूर सल्ल० ने जहां जाने का हुक्म दिया था, तुम वहां चले जाओ।

कुछ मुहाजिरीन और अंसार ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बातें कीं और कहा आप हज़रत उसामा रज़ि० और उनकी फ़ौज को रोक लें, क्योंकि हमें डर है कि हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात की ख़बर सुनकर तमाम अरब हम पर टूट पड़ेंगे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० तमाम सहाबा रज़ि० में मामले के एतबार से सबसे ज़्यादा समझदार और मज़बूत थे। उन्होंने कहा, क्या मैं उस फ़ौज के रोक लूं जिसे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने भेजा था? अगर मैं ऐसा करूं तो यह मेरी भारी जुर्रात होगी। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े

1. इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 117, कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 314, बिदाया, भाग 6, पृ० 305

में मेरी जान है, सारे अरब मुझ पर टूट पड़ें, यह बात मुझे इस बात से ज़्यादा पसंद है कि मैं उस फ़ौज को जाने से रोक दूं जिसे हुज़ूर सल्ल० ने रवाना फ़रमाया था। ऐ उसामा रज़ि० ! तुम अपनी फ़ौज को लेकर वहां जाओ जहां जाने का तुम्हें हुक्म हुआ था और फ़लस्तीन के जिस इलाक़े में जाकर लड़ने का हुज़ूर सल्ल० ने तुम्हें हुक्म दिया था, वहां जाकर मूता वालों से लड़ो। तुम जिन्हें यहां छोड़कर जा रहे हो, अल्लाह उनके लिए काफ़ी है, लेकिन अगर तुम मुनासिब समझो तो हज़रत उमर को यहां रहने की इजाज़त दे दो। मैं उनसे मश्विरा लेता रहूंगा और मदद लेता रहूंगा, क्योंकि उनकी राय बड़ी अच्छी होती है और वह इस्लाम का बड़ा भला चाहने वाले हैं।

चुनांचे हज़रत उसामा रज़ि० ने इजाज़त दे दी। इसी बीच अक्सर अरब और पूरब के अक्सर लोग, और ग़तफ़ान क़बीला वाले, और बनू असद क़बीला वाले और अक्सर क़बीला अशजअ वाले अपने दीन को छोड़ गए अलबत्ता क़बीला बून तै इस्लाम को थामे रहे। अक्सर सहाबा रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कहा, हज़रत उसामा रज़ि० और उनकी फ़ौज को रोक लो। क़बीला ग़तफ़ान और बाक़ी अरब के जो लोग मुर्तद हो गए हैं, उनको, उनके फ़िले को ख़त्म करने के लिए भेज दो।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उसामा और उनकी फ़ौज को रोकने से इंकार कर दिया और सहाबा से कहा, तुम जानते हो कि हुज़ूर सल्ल० के ज़माने से यह चलन चला आ रहा है कि जिन मामलों में न तो हुज़ूर सल्ल० की सुन्नत हमें मालूम हो और उनके बारे में क़ुरआन में न कोई साफ़ हुक्म आया हो, तो उन मामलों के बारे में हम लोग मश्विरा किया करते थे। तुम लोगों ने अपना मश्विरा दे दिया, अब मैं तुम्हें अपना मश्विरा देता हूं। जो तुम्हें बेहतर नज़र आए, उसे तुम अख़्तियार कर लो, क्योंकि अल्लाह तुम्हें हरगिज़ गुमराही पर इकट्ठा नहीं होने देंगे। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मेरे ख़्याल में सबसे बेहतर शक्ल यह है कि हुज़ूर सल्ल० को जो आदमी ज़कात में जानवरों के साथ रस्सी दिया करता था अब वह (जानवर तो दे, लेकिन) रस्सी न दे,

तो भी उसके साथ जिहाद किया जाए।

तमाम मुसलमानों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की राय को क़ुबूल किया और सबने देख लिया कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० की राय उनकी राय से बेहतर है।

चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० को वहां भेजा, जहां जाने का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें हुक्म दिया था। इस ग़ज़वे के बारे में हज़रत अबूबक्र ने बिल्कुल सही फ़ैसला किया था। अल्लाह ने हज़रत उसामा रज़ि० और उनकी फ़ौज को ख़ूब माले ग़नीमत दिया और उन्हें सही-सालिम उस ग़ज़वे से वापस फ़रमाया।

जब हज़रत उसामा रज़ि० रवाना हुए तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० (मुर्तद लोगों के मुक़ाबले के लिए) मुहाजिरीन और अंसार की एक जमाअत को लेकर चले। सारे देहाती अरब अपने बाल-बच्चों को लेकर भाग गए तो उन्होंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बात की और कहा कि अब आप मदीना बच्चों और औरतों के पास वापस चलें और अपने साथियों में से एक आदमी को फ़ौज का अमीर (सरदार) बना दें और अपनी ज़िम्मेदारी उसके सुपुर्द कर दें।

मुसलमान हज़रत अबूबक्र रज़ि० को कहते रहे, यहां तक कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० मदीना वापसी के लिए तैयार हो गए और फ़ौज का हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को अमीर बना दिया और उनसे फ़रमाया कि अरब के लोग जब मुसलमान हो जाएं और ज़कात देने लग जाएं, फिर तुममें से जो वापस आना चाहे, वह वापस आ जाए। इसके बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० मदीना वापस हुए।[1]

हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत हो गई और अंसार ने ख़िलाफ़त के जिस मामले के बारे में इख़्तिलाफ़ किया था, वे सब इस पर सहमत हो गए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया कि हज़रत उसामा रज़ि० की

1. इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 118, कंज़, भाग 5, पृ० 314

फ़ौज (की रवानगी) का काम मुकम्मल हो जाना चाहिए।

अरब के लोग मुर्तद हो गए, कोई सारा क़बीला मुर्तद हो गया, किसी क़बीले के कुछ लोग मुर्तद हो गए और निफ़ाक़ ज़ाहिर हो गया और यहूदी मत और ईसाईमत सर उठाकर देखने लगा और चूंकि मुसलमानों के नबी का अभी इन्तिक़ाल हुआ था, और उनकी तायदाद कम थी और उनके दुश्मन की तायदाद ज़्यादा थी, इस वजह से मुसलमानों की हालत उस बकरी जैसी थी जो सर्दी की रात में बारिश में भीग गई हो, तो लोगों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कहा कि ले-देकर बस यही मुसलमान हैं और जैसे कि आप देख रहे हैं, अरबों ने आपकी इताअत छोड़ दी है, इसलिए आपके लिए मुनासिब नहीं है कि मुसलमानों की इस जमाअत (उसामा रज़ि० की फ़ौज) को अपने से जुदा करके भेज दें।

तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर मुझे यह यक़ीन हो जाए कि दरिंदे मुझे उठाकर ले जाएंगे, तो भी मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ उसामा रज़ि० की फ़ौज को ज़रूर रवाना करूंगा और आबादी में मेरे सिवा कोई भी बाक़ी न रहे तो भी मैं इस फ़ौज को रवाना करके रहूंगा।[1]

हज़रत क़ासिम और हज़रत अमरः रिवायत करते हैं कि हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया कि जब हुज़ूर सल्ल० का विसाल हुआ तो सारे ही अरब मुर्तद हो गए और निफ़ाक़ सर उठाकर देखने लगा। अल्लाह की क़सम ! मेरे बाप पर (उस वक़्त) ऐसी मुसीबत पड़ी थी कि अगर वह मज़बूत पहाड़ों पर पड़ती, तो वह उनको भी टुकड़े-टुकड़े कर देती और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा की हालत ऐसी हो गई थी, जैसे वह बकरी जो रात के अंधेरे में बारिश में भीग रही है और दरिंदों से भरे हुए इलाक़े में हैरान व परेशान हो। अल्लाह की क़सम ! (इस मौक़े पर) जिस बात में भी सहाबा का इख़्तिलाफ़ होता,

1. बिदाया, भाग, पृ० 304

मेरे बाप इसके बिगाड़ को ख़त्म करते और उसकी लगाम को थाम कर मुनासिब फ़ैसला कर देते, जिससे सारा इख़्तिलाफ़ ख़त्म हो जाता।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि उस अल्लाह की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं है। अगर (हुज़ूर सल्ल० के बाद) हज़रत अबूबक्र रज़ि० ख़लीफ़ा न बनाए जाते तो अल्लाह की इबादत (दुनिया में) न होती।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने दोबारा यह बात फ़रमाई और फिर तीसरी बार फ़रमाई, तो लोगों ने उनसे कहा, ऐ अबू हुरैरह! (ऐसी बात कहने से) आप रुक न जाएं।

उन्होंने फ़रमाया, (मैं यह बात इस वजह से कह रहा हूं) कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सात सौ आदमियों की फ़ौज देकर हज़रत उसामा रज़ि० को मुल्क शाम रवाना फ़रमाया। (मशहूर रिवायत तीन हज़ार की है, इसलिए ज़ाहिरी तौर पर यह सात सौ की फ़ौज क़ुरैश में से होगी)

जब हज़रत उसामा रज़ि० ज़ीख़शब नामी जगह पर (मदीना से बाहर) पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० का विसाल हो गया और मदीना के चारों ओर के अरब मुर्तद हो गए, तो हुज़ूर सल्ल० के सहाबा ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास जमा होकर कहा, ऐ अबूबक्र! इस फ़ौज को वापस बुला लें। आप उनको रूम भेज रहे हैं, हालांकि मदीना के आस-पास के अरब मुर्तद हो रहे हैं।

तो उन्होंने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके अलावा कोई माबूद नहीं, अगर कुत्ते हुज़ूर सल्ल० की पाक बीवियों की टांगों को घसीटते फिरें, तो भी मैं इस फ़ौज को वापस नहीं बुलाऊंगा, जिसे हुज़ूर सल्ल० ने रवाना किया है और मैं उस झंडे को नहीं खोल सकता हूं जिसे हुज़ूर सल्ल० ने बांधा है।

चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उसामा रज़ि० की फ़ौज रवाना फ़रमाई (और उसे वापस न बुलाया) जिसका नतीजा यह निकला

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 50

कि यह फ़ौज जिस क़बीले के पास से गुज़रती, जिसका मुर्तद होने का इरादा होता, उस क़बीले वाले कहते, अगर मुसलमानों की (बड़ी) ताक़त न होती तो उनके पास से इतनी बड़ी फ़ौज निकलकर न आती। अभी हम इन मुसलमानों को (इनके हाल पर) छोड़ देते हैं। इनको रूमियों से लड़ने दो, (फिर देखेंगे)।

चुनांचे इस फ़ौज ने रूमियों से लड़ाई की और उनको हराया और उन्हें क़त्ल किया और सही-सालिम वापस आ गई। और यों (रास्ते के) तमाम अरब क़बीले इस्लाम पर जमे रहे॥1

हज़रत सैफ़ रिवायत करते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० हज़रत ख़ालिद रज़ि० के शाम रवाना होने के बाद बीमार पड़ गए और कुछ महीनों बाद उसी बीमारी में उनका इंतिक़ाल हो गया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० के इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब आ चुका था और वह हज़रत उमर रज़ि० के लिए ख़िलाफ़त तै कर चुके थे कि इतने में (शाम देश से) हज़रत मुसन्ना रज़ि० आए और उन्होंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को तमाम हालात बताए, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, उमर को मेरे पास बुला लाओ। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० आ गए।

आपने उनसे फ़रमाया, ऐ उमर रज़ि० ! जो मैं तुम्हें कह रहा हूं, मुझे ध्यान से सुनो और फिर उस पर अमल करो। मेरा अन्दाज़ा यह है कि आज मैं इन्तिक़ाल कर जाऊंगा, और यह पीर का दिन था। अगर मैं अभी मर जाऊं तो शाम से पहले-पहले लोगों को हज़रत मुसन्ना के साथ (शाम देश) जाने के लिए उभारना और उन्हें तैयार कर लेना और अगर मैं रात तक ज़िंदा रहूं और रात को मेरा इंतिक़ाल हो तो सुबह होने से पहले-पहले लोगों को हज़रत मुसन्ना के साथ (शाम देश) जाने के लिए उभारना और तैयार कर लेना और कोई भी मुसीबत चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, तुम्हें तुम्हारे दीनी काम से और तुम्हारे रब की वसीयत से रोक न सके। तुमने मुझे देखा है कि मैंने हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल के मौक़े पर क्या किया था? हालांकि इतनी बड़ी मुसीबत

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 305, कंज़, भाग 3, पृ० 129, मुख़्तसर, भाग 1, पृ० 124

इंसानों पर कभी नहीं आई थी। अल्लाह की क़सम ! अगर मैं अल्लाह और उसके रसूल की बात से ज़रा भी पीछे हट जाता, तो अल्लाह हमारी मदद छोड़ देते और हमें सज़ा देते और सारा मदीना आग में जल जाता।[1]

हज़रत अबूबक्र रज़ि० का मुर्तद लोगों से और ज़कात मना करने वालों से लड़ाई का एहतिमाम करना

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ तो मदीना में निफ़ाक़ सर उठाकर देखने लगा और अरब के लोग मुर्तद होने लगे, और अजम के लोग डराने-धमकाने लगे और उन्होंने आपस में निहावन्द में जमा होने का समझौता कर लिया और यह कहा कि यह आदमी मर गया है, जिसकी वजह से अरबों की मदद हो रही थी।

चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुहाजिरीन और अंसार को जमा करके फ़रमाया, अरबों ने ज़कात की बकरियां और ऊंट रोक लिए हैं और अपने दीन से मुंह मोड़ गए हैं। इन अजम वालों ने तुमसे लड़ने के लिए निहावन्द में इकट्ठा होना आपस में तै कर लिया है और वे यों समझते हैं कि जिस पाक हस्ती की वजह से तुम्हारी मदद की जा रही थी, वह दुनिया से रुख़्सत हो गई। अब आप लोग मुझे मश्विरा दें (कि अब हमें क्या करना चाहिए), क्योंकि मैं भी तुममें का एक आदमी हूं और इस आज़माइश का तुममें सबसे ज़्यादा बोझ मुझ पर है।

चुनांचे वे लोग बहुत देर गरदन झुकाकर सोचते रहे, फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० बोले कि अल्लाह की क़सम ! ऐ रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ा ! मेरा ख़्याल यह है कि आप अरबों से नमाज़ क़ुबूल कर लें और ज़कात को उन पर छोड़ दें, क्योंकि वे अभी जाहिलियत छोड़कर आए हैं। इस्लाम ने उनको अभी पूरी तरह तैयार नहीं किया (उनकी दीनी तर्बियत का पूरा मौक़ा नहीं मिल सका), फिर या तो अल्लाह उन्हें

1. तबरी, भाग 4, पृ० 53

ख़ैर की तरफ़ वापस ले आएंगे या अल्लाह इस्लाम को इज़्ज़त फ़रमाएंगे तो हममें उनसे लड़ने की ताक़त पैदा हो जाएगी। इन बाक़ी मुहाजिरीन और अंसार में तमाम अरब और अजम से लड़ने की ताक़त नहीं है।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उस्मान रज़ि० की ओर मुतवज्जह होकर फ़रमाया, तो उन्होंने भी ऐसा ही फ़रमाया और हज़रत अली रज़ि० ने भी ऐसा ही फ़रमाया। मुहाजिर सहाबा ने भी ऐसी ही राय दी। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अंसार सहाबियों की ओर तवज्जोह की, तो उन्होंने भी यही राय दी।

यह देखकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० मिंबर पर तशरीफ ले गए और अल्लाह की हम्द व सना बयान की और फिर फ़रमाया, जब अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी बनाकर भेजा तो उस वक़्त हक़ बहुत कम और बेसहारा था और इस्लाम बिल्कुल अनजाना और ठुकराया हुआ था, उसकी रस्सी कमज़ोर हो चुकी थी, उसके मानने वाले बहुत कम थे। इन सबको अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० के ज़रिए से जमा फ़रमाया और उनको बाक़ी रहने वाली सबसे अफ़ज़ल उम्मत बनाया। अल्लाह की क़सम! मैं अल्लाह की बात को लेकर खड़ा रहूंगा और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता रहूंगा, यहां तक कि अल्लाह अपने वायदे को पूरा फ़रमा दे और अपने अह्द को हमारे लिए वफ़ा फ़रमा दे। चुनांचे हममें से जो मारा जाएगा, वह शहीद होकर जन्नत में जाएगा और हममें से जो बाक़ी रहेगा, वह अल्लाह की ज़मीन में अल्लाह का ख़लीफ़ा बनकर और अल्लाह की इबादत का वारिस बनकर रहेगा। अल्लाह ने हक़ को मज़बूत फ़रमाया। अल्लाह ने फ़रमाया है और उनके फ़रमान के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता है—

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ

'वायदा कर लिया अल्लाह ने उन लोगों से, जो तुममें ईमान लाए हैं और किए हैं उन्होंने नेक काम, अलबत्ता पीछे हाकिम कर देगा उनको मुल्क में, जैसा हाकिम किया था, उनसे अगलों को।'

अल्लाह की क़सम ! अगर ये लोग मुझे वह रस्सी देने से इंकार कर दें जिसे वह हुज़ूर सल्ल० को दिया करते थे और फिर पेड़ और पत्थर और तमाम इंसान और जिन्न उनके साथ मिलकर मुक़ाबले पर आ जाएं, तो भी मैं उनसे जिहाद करूंगा, यहां तक कि मेरी रूह अल्लाह से जा मिले। अल्लाह ने ऐसे नहीं किया कि पहले नमाज़ और ज़कात को अलग-अलग कर दिया हो, फिर इन दोनों को इकट्ठा कर दिया हो। (इसलिए मैं यह कैसे कर सकता हूं कि अरब के लोग सिर्फ़ नमाज़ पढ़ें और ज़कात न दें और मैं इन्हें कुछ न कहूं)।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाहु अक्बर कहा और फ़रमाया कि जब अल्लाह ने अबूबक्र के दिल में इस (ज़कात से मना करने वालों) से लड़ाई का पक्का इरादा पैदा फ़रमा दिया है, तो अब मुझे भी यक़ीन हो गया है कि यही हक़ है।[1]

हज़रत सालेह बिन कैसान रह० फ़रमाते हैं कि (हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल के बाद) जब इर्तिदाद (इस्लाम से फिर जाना) फैलने लगा, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने खड़े होकर अल्लाह की हम्द व सना बयान फ़रमाई और फिर फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हिदायत दी और वही काफ़ी हो गया। (किसी और से हिदायत लेने की ज़रूरत नहीं) और जिसने इतना दिया कि किसी से लेने की ज़रूरत न रही, ग़नी बना दिया।

अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को इस हालत में नबी बनाकर भेजा था कि (अल्लाह वाला) इल्म बेसहारा था और इस्लाम अजनबी और ठुकराया हुआ था, उसकी रस्सी कमज़ोर हो चुकी थी और इस्लाम का ज़माना पुराना हो चुका था। (अब उसका नाम लेनेवाला कोई न था) और इस्लाम वाले इस्लाम से भटक चुके थे और अल्लाह ने उन्हें जो भी ख़ैर दी थी, वह उनकी किसी ख़ूबी की वजह से नहीं दी थी और चूंकि उनके पास (बुराइयां ही बुराइयां) और शर ही शर था। इस वजह से अल्लाह ने उनसे बुरे हालात को नहीं हटाया था और उन्होंने अल्लाह की

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 142

किताब को बदल दिया और उसमें बहुत सी बाहर की बातें शामिल कर दी थीं और अनपढ़ अरब अल्लाह से बिल्कुल बेताल्लुक़ थे, न वे अल्लाह की इबादत करते थे और न उससे दुआ करते थे। वे सबसे ज़्यादा तंग रोज़ी वाले थे और उनका दीन सबसे ज़्यादा गुमराही वाला था। वे सख़्त और बेकार ज़मीन के रहने वाले थे। (ये हालात थे और) हुज़ूर सल्ल० के साथ सहाबा रज़ि० की एक जमाअत थी, जिनको अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० की बरकत से जमा फ़रमा दिया और उनको सबसे अफ़ज़ल उम्मत बना दिया और उनकी पैरवी करने वालों के ज़रिए अल्लाह ने उनकी मदद फ़रमाई और दूसरों पर उनको ग़ालिब फ़रमाया, यहां तक कि अल्लाह ने अपने नबी सल्ल० को अपने यहां बुला लिया और अब उन अरबों पर शैतान उसी जगह सवार होना चाहता है, जहां से अल्लाह ने उसे उतारा था। वह उनके हाथ पकड़कर उन्हें हलाक करना चाहता है और यह आयत पढ़ी—

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ أَفَإِن مَّاتَ أَوْ
قُتِلَ انقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ ۚ وَمَن يَنقَلِبْ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ فَلَن يَضُرَّ
اللَّهَ شَيْئًا ۗ وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۝

'और मुहम्मद (सल्ल०) तो एक रसूल हैं, हो चुके इससे पहले बहुत रसूल। फिर क्या अगर वह मर गया या मारा गया, तो तुम फिर जाओगे उलटे पांव और जो कोई फिर जाएगा, उलटे पांव, तो हरगिज़ न बिगाड़ेगा अल्लाह का कुछ और अल्लाह सवाब देगा शुक्रगुज़ारों को।'

तुम्हारे आस-पास के अरबों ने ज़कात की बकरियां और ऊंट देने से इंकार कर दिया है। अगरचे ये लोग आज अपने पहले दीन की ओर वापस चले गए हैं, लेकिन पहले भी उनका अपने दीन की ओर झुकाव इतना ही था जितना कि आज है और आज अगरचे तुम अपने नबी की बरकतों से महरूम हो चुके हो, लेकिन तुम अपने दीन पर उतने ही पक्के हो, जितने कि तुम (उनकी मौजूदगी में) पक्के थे, (पहले कोई आज से ज़्यादा पक्के नहीं थे और अगरचे तुम्हारे नबी चले गए, लेकिन) वह तुम्हें उस अल्लाह के हवाले करके गए हैं जो हर तरह किफ़ायत फ़रमाने

वाले हैं और वह सबसे पहले थे, जिन्होंने हुज़ूर सल्ल० को (शरीअत से) बेख़बर पाया, तो हुज़ूर सल्ल० को (शरीअत का) रास्ता दिखाया और जिन्होंने हुज़ूर सल्ल० को नादार पाया, सो मालदार बना दिया और तुम लोग आग के गढ़े के किनारे पर थे, उसने तुम्हें उस (में गिरने) से बचा लिया। अल्लाह की क़सम ! मैं अल्लाह के लिए लड़ूंगा और इस लड़ने को हरगिज़ न छोड़ूंगा, यहां तक कि अल्लाह अपने वायदे को पूरा कर दे और हमसे अपने अह्द को वफ़ा कर दे। हममें से जो मारा जाएगा, वह शहीद और जन्नती होगा, और हममें से जो बाक़ी रहेगा, वह अल्लाह का ख़लीफ़ा बनकर उसकी ज़मीन में उसका वारिस होगा। अल्लाह ने हक़ को मज़बूत फ़रमाया। अल्लाह के फ़रमान के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता और उनका फ़रमान यह है—

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا

यह फ़रमाकर मिंबर से नीचे उतर आए।[1]

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब अरब के लोग मुर्तद हो गए और तमाम मुहाजिर सहाबा की एक ही राय थी और मैं भी उस राय में उनके साथ था (कि ज़कात से मना करने वालों से लड़ाई न लड़ी जाए), तो हमने अर्ज़ किया, ऐ रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ा ! आप लोगों को छोड़ दें कि वे नमाज़ पढ़ते रहें और ज़कात न दें। (आप उनसे लड़ें नहीं) क्योंकि जब ईमान उनके दिलों में दाख़िल हो जाएगा, तो वे ज़कात का भी इक़रार कर लेंगे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम ! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जिस चीज़ पर हुज़ूर सल्ल० ने लड़ाई लड़ी है, मैं उसे छोड़ दूं, इससे ज़्यादा मुझे यह महबूब है कि मैं आसमान से (ज़मीन पर) गिर पड़ूं, इसलिए मैं तो इस चीज़ पर ज़रूर लड़ाई लड़ूंगा।

चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने (ज़कात न देने पर) अरबों से लड़ाई लड़ी, यहां तक कि वे पूरे इस्लाम की ओर वापस आ गए।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े

1. कंज़, भाग 3, पृ० 142, बिदाया, भाग 6, पृ० 316, कंज़, भाग 3, पृ० 141

में मेरी जान है, अबूबक्र का यह एक दिन उमर के ख़ानदान (की ज़िंदगी भर) के अमल से बेहतर है।[1]

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया, तो अरब के बहुत से लोग मुरतद हो गए और कहने लगे, हम नमाज़ तो पढ़ेंगे, पर ज़कात नहीं देंगे। मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ा! आप लोगों के लिए दिल रखने का मामला करें और उनके साथ नर्मी बरतें, क्योंकि ये लोग वहशी जानवरों की तरह से हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे तो उम्मीद थी कि तुम मेरी मदद करोगे, लेकिन तुम तो मेरी मदद छोड़कर मेरे पास आए हो, तुम जाहिलियत में तो बड़े ज़ोरदार थे, इस्लाम में बड़े बोदे और कमज़ोर हो गए हो। मुझे किस चीज़ का डर है कि मैं मनगढ़त शेर और गढ़े हुए जादू के ज़रिए से इन (ज़कात के इंकारियों) का मन रखूं? अफ़सोस पर अफ़सोस! हुज़ूर सल्ल० इस दुनिया से तशरीफ़ ले गए और और वह्य का सिलसिला ख़त्म हो गया। अल्लाह की क़सम! जब तक मेरे हाथ में तलवार पकड़ने की ताक़त है। मैं उनसे एक रस्सी के रोकने पर भी ज़रूर जिहाद करूंगा।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने उनको अपने से ज़्यादा लागू करने की ताक़त रखने वाला, अपने से ज़्यादा पक्के इरादे वाला पाया और उन्होंने लोगों को काम करने के ऐसे बेहतरीन तरीक़े बताए और उनको इस तरह अदब सिखाया कि जब मैं ख़लीफ़ा बना तो लोगों के बहुत से मुश्किल काम मुझ पर आसान हो गए।[2]

हज़रत ज़ब्बा बिन मुहसन अनज़ी रह० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ि० से अर्ज़ किया कि आप हज़रत अबूबक्र रज़ि० से अफ़ज़ल हैं?

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० रो पड़े और फ़रमाया, अल्लाह की

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 141
2. कंज़, भाग 3, पृ० 300

क़सम ! अबूबक्र की एक रात और उनका एक दिन उमर और उमर के ख़ानदान (की ज़िंदगी भर के अमल) से बेहतर है। क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें उनकी वह रात और उनका वह दिन बता दूं?

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! ज़रूर।

उन्होंने फ़रमाया कि उनकी रात तो वह है जिस रात हुज़ूर सल्ल० मक्का वालों से भाग कर निकले थे और हज़रत अबूबक्र रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के साथ-साथ थे। आगे वह हदीस ज़िक्र की जो हिजरत के बाब में गुज़र चुकी।

फिर फ़रमाया और उनका दिन वह है जिस दिन हुज़ूर सल्ल० का विसाल हुआ और अरब के लोग मुर्तद हो गए। उनमें से कुछ तो कहने लगे, हम नमाज़ तो पढ़ेंगे, लेकिन ज़कात नहीं देंगे और कुछ कहने लगे, हम न नमाज़ पढ़ेंगे और न ज़कात देंगे।

चुनांचे मैं हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में आया और भलाई चाहने वाले जज़्बे में कोई कमी न थी और मैंने कहा, ऐ रसूलुल्लाह सल्ल० के ख़लीफ़ा ! आप लोगों के साथ दिल रखने का मामला करें। आगे पिछली हदीस वाला मज़्मून ज़िक्र किया।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया और आपके बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० ख़लीफ़ा बने और बहुत से अरब काफ़िर हो गए तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अबूबक्र ! आप लोगों से कैसे जंग करते हैं, जबकि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है कि मुझे लोगों से उस वक़्त तक लड़ाई करने का हुक्म दिया गया है, जब तक वे ला इला-ह इल्लल्लाहु न कह लें। चुनांचे जो भी ला इला-ह इल्लल्लाहु पढ़ लेगा, वह मुझसे अपने माल और जान को महफ़ूज कर लेगा। हां इस्लाम के वाजिब हक़ उसके माल और जान से लिए जाएंगे और इसका हिसाब अल्लाह के हवाले होगा (कि वह दिल से मुसलमान हुआ था या नहीं, वह अल्लाह को मालूम है, वही उसके साथ उसके मुताबिक़ मामला फ़रमाएंगे।)

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 348

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, नहीं। जो आदमी नमाज़ और ज़कात में फ़र्क़ करेगा, मैं उससे ज़रूर लड़ूंगा, क्योंकि ज़कात माल का हक़ है। (जैसे कि नमाज़ जान का हक़ है) अल्लाह की क़सम ! अगर ये लोग एक रस्सी हुज़ूर सल्ल० को तो दिया करते थे और अब मुझे नहीं देंगे, तो मैं इस एक रस्सी की वजह से भी उनसे लड़ूंगा (दीन में एक रस्सी के बराबर कमी भी नहीं बरदाश्त कर सकता हूं।)

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह की क़सम ! उनके यह कहते ही मुझे यक़ीन हो गया कि अल्लाह ने (ज़कात मना करने वालों से) लड़ाई लड़ने के बारे में हज़रत अबूबक्र रज़ि० का सीना पूरी तरह खोल रखा है। चुनांचे मुझे भी समझ में आ गया कि यह (लड़ाई लड़ना) ही हक़ है।[1]

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का अल्लाह के रास्ते में फ़ौजों के भेजने का एहतिमाम करना और उनको जिहाद के बारे में उभारना और रूम से जिहाद के बारे में उनका सहाबा रज़ि० से मश्विरा फ़रमाना

हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद रह० ने लम्बी हदीस बयान की है, जिसमें यह भी है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० लोगों में बयान करने के लिए खड़े हुए, तो अल्लाह की हम्द बयान की और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद पढ़ा और फ़िर फ़रमाया कि हर काम के लिए कुछ उसूल और क़ायदे हुआ करते हैं, जो इनकी पाबन्दी करेगा, उसके लिए ये उसूल और क़ायदे काफ़ी होंगे और जो अल्लाह के लिए अमल करेगा, अल्लाह उसकी हर तरह किफ़ायत फ़रमाएंगे। तुम पूरी तरह मेहनत करो और एतदाल से चलो, क्योंकि एतदाल से चलना इंसान को मक़्सूद तक जल्दी पहुंचा देता है। ज़रा ग़ौर से सुनो ! जिसके पास ईमान नहीं है, उसके पास दीन नहीं है और जिसकी नीयत सवाब की नहीं, उसके लिए (अल्लाह की ओर से) कोई अज्र नहीं है और

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 301

जिसकी नीयत (सही) नहीं, उसके अमल का कोई एतबार नहीं। ग़ौर से सुनो, अल्लाह की किताब में जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह का इतना सवाब बताया गया है कि इतने सवाब के लिए तो हर मुसलमान के दिल में जिहाद के लिए वक़्फ़ हो जाने की तमन्ना होनी चाहिए। जिहाद ही वह तिजारत है, जो अल्लाह ने क़ुरआन में बताई है और जिसके ज़रिए अल्लाह ने (मुसलमानों को) रुसवाई से निजात अता फ़रमाई है और जिसके साथ अल्लाह ने दुनिया और आख़िरत के शरफ़ को जोड़ा है।[1]

हज़रत इब्ने इस्हाक़ बिन यसार रह०, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के क़िस्से में बयान करते हैं कि वह जब यमामा की लड़ाई से फ़ारिग़ हो गए और अभी वह यमामा ही में थे, तो उनको हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह ख़त लिखा—

'यह ख़त अल्लाह के बन्दे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा अबूबक्र की ओर से ख़ालिद बिन वलीद और उनके साथ जितने मुहाजिरीन और अंसार और ताबिई लोग हैं, उन सबके नाम है 'सलामुन अलैकुम'। मैं आप लोगों के सामने उस अल्लाह की तारीफ़ करता हूं, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। फिर तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने अपने वायदे को पूरा किया और अपने बन्दे की मदद की और अपने दोस्त को इज़्ज़त दी और अपने दुश्मन को ज़लील किया और अकेला तमाम फ़ौज़ों पर ग़ालिब आ गया, जिस अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है। उसी ने (क़ुरआन में) यह फ़रमाया है—

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا
اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ

'वायदा कर लिया अल्लाह ने उन लोगों से जो तुममें ईमान लाए हैं और किए हैं उन्होंने नेक काम, अलबत्ता पीछे हाकिम कर देगा उनको मुल्क में जैसा हाकिम किया था, उनसे अगलों को और जमा देगा उनके

---

1. इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 133, कंज़, भाग 8, पृ० 207, इब्ने जरीर तबरी भाग 4, पृ० 30

लिए दीन उनका जो पसन्द कर दिया उनके वास्ते।'

और यह अल्लाह का ऐसा वायदा है जिसके ख़िलाफ़ नहीं हो सकता और यह ऐसी बात है जिसमें कोई शक नहीं है और अल्लाह ने मुसलमानों पर जिहाद फ़र्ज़ किया है।

चुनांचे अल्लाह ने फ़रमाया—

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ

'फ़र्ज़ हुई तुम पर लड़ाई और वह बुरी लगती है तुमको।' और आयतें भी लिखीं—

तुम वह मेहनत और अमल अपनाओ, जिनकी वजह से अल्लाह तुम लोगों के लिए अपने वायदे को पूरा फ़रमा दे और अल्लाह ने तुम पर जो जिहाद फ़र्ज़ किया है, उसमें तुम उसकी इताअत करो, चाहे उसके लिए तुम्हें बड़ी मशक़्क़त उठानी पड़े, क्योंकि अल्लाह की ओर से मिलने वाले भारी बदले के मुक़ाबले में ये तमाम मशक़्क़तें और तक्लीफ़ें कुछ भी नहीं हैं। अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए, तुम हलके हो या भारी, हर हाल में अल्लाह के रास्ते में निकलो और अपने माल और जान को लेकर जिहाद करो। इस मज़्मून की सारी आयत लिखी।

सुन लो मैंने ख़ालिद बिन वलीद को इराक़ जाने का हुक्म दिया है और यह कहा है कि जब तक मैं न कहूं, वह इराक़ से कहीं और न जाएं, तुम सब भी उनके साथ इराक़ जाओ, और इसमें सुस्ती बिल्कुल न करो, क्योंकि इस रास्ते से जो भी अच्छी नीयत से और पूरे ज़ौक़-शौक़ से चलेगा, अल्लाह उसे बड़ा बदला देंगे। जब तुम इराक़ पहुंच जाओ तो मेरे हुक्म के आने तक तुम सब भी वहीं रहना। अल्लाह हमारी और तुम्हारी तमाम दुन्यावी और उख़रवी मुहिमों की हर तरह किफ़ायत फ़रमाए। वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू'।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा ख़ुज़ाई रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने रूमियों से लड़ने का इरादा किया तो उन्होंने हज़रत अली, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अब्दुर्रहमान

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 179

बिन औफ़, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास, हज़रत सईद बिन ज़ैद हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह और बदर में शरीक होने वाले और शरीक न होने वाले बड़े-बड़े अंसार और मुहाजिर सहाबा रज़ि० को बुलाया। वे सब हज़रत अबूबक्र रज़ि० की सेवा में हाज़िर हुए और मैं भी उनमें था।

तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की नेमतों की गिनती नहीं की जा सकती। हमारे तमाम काम उसकी नेमतों का मुक़ाबला नहीं कर सकते हैं, इसलिए तमाम तारीफ़ें उसी के लिए हैं। अल्लाह ने तुम्हारे कलिमे को जमा फ़रमा दिया और तुम्हारे भीतर इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया और तुम्हें इस्लाम की हिदायत अता फ़रमाई और शैतान को तुमसे दूर फ़रमा दिया। अब शैतान को न तो इस बात की उम्मीद है कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करोगे और न इस बात की उम्मीद है कि तुम उसके अलावा किसी और को माबूद बनाओगे। चुनांचे आज तमाम अरब एक मां-बाप की औलाद की तरह हैं।

मेरा यह ख़्याल हो रहा है कि मैं मुसलमानों को रूमियों से लड़ने के लिए शाम भेज दूं, ताकि अल्लाह मुसलमानों की ताईद फ़रमाए और अपने कलिमे को बुलन्द फ़रमाए और इसमें मुसलमानों को बहुत बड़ा हिस्सा (शहादत का और अज्र व सवाब का) मिलेगा, क्योंकि इनमें से जो लड़ाई में मारा जाएगा, वह शहीद होकर मरेगा और जो कुछ अल्लाह के यहां है, वह नेक लोगों के लिए बेहतर है और जो ज़िंदा रहेगा, वह दीन की हिफ़ाज़त करते हुए ज़िंदगी गुज़ारेगा और उसे अल्लाह की तरफ़ से मुजाहिदीन का सवाब मिलेगा। यह तो मेरी राय है। अब आपमें से हर आदमी अपनी राय बताए।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने खड़े होकर फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहें किसी ख़ैर के साथ खुसूसियत से नवाज़ दें। अल्लाह की क़सम! जब भी किसी नेकी के काम में हमने एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश की, आप हममें से हमेशा उस नेकी में बढ़ गए। यह अल्लाह की मेहरबानी है, वह

जिसे चाहता है, उसे देते हैं और अल्लाह बड़ी मेहरबानी वाले हैं। मेरे दिल में भी यही ख़्याल आया था और मेरा इरादा था कि मैं आपसे मुलाक़ात करके आपसे उसका ज़िक्र करूं, लेकिन अल्लाह ने यही मुक़द्दर फ़रमा रखा था कि आप ही उसका पहले ज़िक्र करें। आपकी राय बिल्कुल ठीक है, अल्लाह आपको हमेशा रुश्द व हिदायत के रास्ते पर चलाए। आप घुड़सवारों की जमाअतें आगे-पीछे लगातार भेजें और पैदल दस्तों को भी लगातार भेजें, ग़रज़ यह कि फ़ौज के पीछे फ़ौज रवाना फ़रमाएं। अल्लाह अपने दीन की ज़रूर मदद फ़रमाएंगे और इस्लाम और मुसलमानों को ज़रूर इज़्ज़त अता फ़रमाएंगे।

फिर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने खड़े होकर कहा, ऐ रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ा! ये रूमी हैं, और ये बनुल असफ़र हैं। ये तेज़धार वाले लोहे और मज़बूत स्तून की तरह हैं। मैं इसे मुनासिब नहीं समझता हूं कि हम सब इनमें बेसोचे-समझे एकदम घुस जाएं, बल्कि मेरा ख़्याल यह है कि हम घुड़सवारों की एक जमाअत भेजें जो इनके देश के आस-पास अचानक शबख़ूं मारे और फिर आपके पास वापस आ जाए। जब वे इस तरह कई बार कर लेंगे तो इस तरह वे रूमियों का काफ़ी नुक़्सान भी कर चुके होंगे और उनके किनारे के बहुत-से इलाक़ों पर क़ब्ज़ा भी कर लेंगे। इस तरह वे रूमी अपने दुश्मनों यानी मुसलमानों से थक-हार कर बैठ जाएंगे। इसके बाद आप आदमी भेजकर यमन के और क़बीला रबीआ व मुज़र के आख़िरी इलाक़ों के मुसलमानों को अपने यहां जमा करें। इसके बाद अगर आप मुनासिब समझें तो इस फ़ौज को लेकर आप ख़ुद रूमियों पर हमलावर हों या उनको किसी के साथ भेज दें (और ख़ुद मदीना में ठहरे रहें) इसके बाद हज़रत अब्दुर्रहमान ख़ामोश हो गए और बाक़ी लोग भी ख़ामोश रहे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फिर फ़रमाया, आप लोगों की क्या राय है?

इस पर हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने कहा, मेरी राय यह है कि आप इस इस्लाम दीन वालों के बड़े ख़ैरख़ाह हैं और इनके लिए बड़े मेहरबान हैं। जब आपको अपनी राय में आम मुसलमानों के लिए

फ़ायदा नज़र आ रहा है तो आप बे-खटक इस पर पूरी तरह अमल करें। क्योंकि आपके बारे में हममें से किसी को कोई बदगुमानी नहीं है।

इस पर हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत साद, हज़रत अबू उबैदा, हज़रत सईद बिन ज़ैद और जो मुहाजिरीन व अंसार उस मज्लिस में मौजूद थे, उन सबने कहा कि हज़रत उस्मान ठीक फ़रमा रहे हैं। जो आपकी राय है आप उस पर ज़रूर अमल करें, क्योंकि हम न तो आपकी मुख़ालफ़त करते हैं और न आप पर कोई इलज़ाम लगा सकते हैं और इसी तरह की और बातें कहीं।

इन लोगों में हज़रत अली रज़ि० भी मौजूद थे, लेकिन वह ख़ामोश थे। उन्होंने अभी तक कुछ नहीं कहा था, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, ऐ अबुल हसन! तुम्हारी क्या राय है?

उन्होंने कहा, मेरी राय यह है कि आप ख़ुद उनके पास जाएं, चाहे किसी और को उनके पास भेज दें, इनशाअल्लाह कामियाबी आप ही को होगी। आपकी मदद ज़रूर होगी।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह तुम्हें ख़ैर की ख़ुशख़बरी दे। यह तुम्हें कहां से पता चल गया (कि जीतना तो हमें ही है और हमारी मदद ज़रूर होगी?)

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि यह दीन अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आकर रहेगा, यहां तक कि यह दीन मज़बूती से खड़ा हो जाएगा और दीन वालों को ग़लबा मिल जाएगा।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने ताज्जुब से फ़रमाया, सुब्हानल्लाह! यह हदीस कितनी अच्छी है। तुमने यह हदीस सुनाकर मुझे ख़ुश कर दिया। अल्लाह तुम्हें हमेशा ख़ुश रखे।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० लोगों में बयान के लिए खड़े हो गए और अल्लाह की शान के मुनासिब हम्द व सना बयान की और हुज़ूर सल्ल० पर दरूद भेजा। इसके बाद फ़रमाया, ऐ लोगो! अल्लाह ने तुम्हें

इस्लाम की नेमत अता फ़रमाई और जिहाद का हुक्म देकर तुम्हें एज़ाज़ बख़्शा और यह दीन देकर तुम्हें तमाम दीनों पर फ़ज़ीलत अता फ़रमाई। ऐ अल्लाह के बन्दो! शाम में जाकर रूमियों से ग़ज़वा करने के लिए तैयार हो जाओ। मैं तुम्हारे लिए बहुत से अमीर मुक़र्रर करूंगा और उन्हें अलग-अलग झंडे बांधकर दूंगा। तुम अपने रब की इताअत करो और अपने अमीरों की मुख़ालफ़त न करो। नीयत और खाना-पीना ठीक रखो। अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो तक़्वा अख़्तियार करें और हर नेकी को अच्छी तरह करें। (यह तर्ग़ीबी बयान सुनकर) लोग चुप रहे और अल्लाह की क़सम! उन्होंने हज़रत अबूबक्र की दावत को क़ुबूल न किया।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा ऐ मुसलमानों की जमाअत! तुम्हें क्या हो गया है कि तुम लोग रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ा की दावत को क़ुबूल नहीं करते हो? हालांकि उन्होंने तुम्हें उस चीज़ की दावत दी है जिसमें तुम्हारी ज़िंदगी है। अगर बग़ैर मेहनत के ग़नीमत का माल मिलते ही उम्मीद होती या थोड़ा और आसान सफ़र होता, तो तुम जल्दी से क़ुबूल कर लेते। इस मौक़े पर हज़रत उमर रज़ि० ने—

عَرَضًا قَرِيبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا

के लफ़्ज़ इस्तेमाल किए जो क़ुरआन मजीद में अल्लाह ने मुनाफ़िक़ों के लिए इस्तेमाल फ़रमाए हैं।)

इस पर हज़रत अम्र बिन सईद रज़ि० ने खड़े होकर कहा, ऐ इब्नुल ख़त्ताब! क्या तुम हमारे बारे में मुनाफ़िक़ों वाली मिसालें इस्तेमाल करते हो, तुम जो हम पर एतराज़ कर रहे हो कि हमने अबूबक्र रज़ि० की दावत को क़ुबूल नहीं किया? तो तुमने उनकी दावत क़ुबूल करने में पहल क्यों नहीं की?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० को अच्छी तरह से मालूम है कि अगर ये मुझे दावत देते तो मैं ज़रूर क़ुबूल कर लेता और अगर ये मुझे ग़ज़वे में भेजते तो मैं ज़रूर चला जाता।

हज़रत अम्र बिन सईद ने कहा, अगर हम ग़ज़वा में जाएंगे, तो

तुम्हारी वजह से नहीं जाएंगे, हम तो अल्लाह के लिए जाएंगे।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह तुम्हें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, तुमने बहुत अच्छी बात कही।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत अम्र रज़ि० से फ़रमाया, आप बैठ जाएं। अल्लाह आप पर रहम फ़रमाएं। तुमने हज़रत उमर से जो लफ़्ज़ सुने हैं, उससे हज़रत उमर की मुराद किसी मुसलमान को तक्लीफ़ पहुंचाना या डांटना नहीं है, बल्कि उनका मक़्सद यह था कि जो लोग सुस्त होकर ज़मीन से चिमटे जा रहे हैं, उनमें जिहाद के लिए जाने का उभार और शौक़ पैदा हो जाए।

इसके बाद हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ि० ने खड़े होकर कहा, रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ा ठीक कह रहे हैं, ऐ मेरे भाई! (अम्र बिन सईद) तुम बैठ जाओ। चुनांचे वह बैठ गए।

फिर हज़रत ख़ालिद ने कहा, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हिदायत और दीने हक़ देकर भेजा, ताकि इस दीन को तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, अगरचे यह बात मुश्रिकों को नागवार लगे। तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो अपने वायदे को पूरा करने वाला और अपने वायदे को ज़ाहिर और ग़ालिब करने वाला और अपने दुश्मन को हलाक करने वाला है। न हम (आपकी) मुख़ालफ़त करने वाले हैं और न हमारा आपस में किसी से कोई इख़्तिलाफ़ है। आप बड़े भलाई चाहने वाले मेहरबान वाली हैं। आप हमें जब निकलने को कहेंगे, हम उसी वक़्त निकल जाएंगे और जब आप हमें कोई हुक्म देंगे, हम आपके उस हुक्म को मानेंगे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० हज़रत ख़ालिद रज़ि० की इस बात से बड़े ख़ुश हुए, और उनसे फ़रमाया, ऐ भाई और दोस्त! अल्लाह आपको बेहतर बदला दे। तुम अपने शौक़ से मुसलमान हुए, तुमने सवाब की नीयत से हिजरत की, तुम अपना दीन लेकर काफ़िरों से भागे, ताकि अल्लाह और उसके रसूल राज़ी हो जाएं और उनका कलिमा बुलन्द हो

जाए और अब तुम ही लोगों के अमीर होगे। अल्लाह तुम पर रहमत उतारे, तुम चलो, यह कहकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० (मिंबर से) नीचे तशरीफ़ ले आए और हज़रत ख़ालिद बिन सईद ने वापस आकर (सफ़र की) तैयारी शुरू कर दी।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत बिलाल रज़ि० से कहा कि लोगों में एलान कर दो कि ऐ लोगो! शाम में रूमियों से जिहाद के लिए चल पड़ें और लोग यही समझ रहे थे कि उनके अमीर हज़रत ख़ालिद बिन सईद हैं। उनकी इमारत में किसी को शक नहीं था और हज़रत ख़ालिद सबसे पहले फ़ौजी छावनी पहुंच गए, फिर हर दिन दस-बीस, तीस-चालीस, पचास और सौ-सौ होकर लोग छावनी में जमा होते रहे, यहां तक कि काफ़ी बड़ी तायदाद जमा हो गई।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० कुछ सहाबा रज़ि० को साथ लेकर उस फ़ौज के पास तशरीफ़ लाए। उन्हें वहां मुसलमानों की अच्छी तायदाद नज़र आई, लेकिन उन्होंने रूमियों से लड़ाई के लिए उस तायदाद को काफ़ी न समझा और अपने साथियों से फ़रमाया, अगर मैं मुसलमानों की इतनी ही तायदाद से मुक़ाबले के लिए शाम भेज दूं तो इस बारे में आप लोगों की क्या राय है?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं तो बनुल अस्फ़र रूमियों की फ़ौजों के लिए इतनी तायदाद को काफ़ी नहीं समझता हूं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने दूसरे लोगों से पूछा, आप लोगों का इस बारे में क्या ख़्याल है?

उन सबने कहा, हज़रत उमर रज़ि० ने जो कहा, हमारा भी वही ख़्याल है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, क्या मैं यमन वालों को ख़त न लिख दूं, जिसमें हम उन्हें जिहाद की दावत दें और उसके सवाब पर उभारें?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० के तमाम साथियों ने इसे मुनासिब समझा और हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कहा, जी हां, जो आपकी राय है, आप उस पर ज़रूर अमल करें। चुनांचे उन्होंने यह खत लिखा—

अल्लाह के रास्ते में जिहाद पर उभारने के लिए हज़रत अबूबक्र रज़ि० का यमन वालों के नाम ख़त

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा की ओर से यमन के उन तमाम मुसलमानों और ईमान वालों के नाम ख़त, जिनके सामने मेरा यह ख़त पढ़ा जाए, 'सलामुन अलैकुम !

मैं तुम्हारे सामने उस अल्लाह की तारीफ़ करता हूं जिसके सिवा कोई माबूद नहीं है, फिर यह कि अल्लाह ने मुसलमानों पर जिहाद को फ़र्ज़ फ़रमाया और उन्हें हर हाल में निकलने का हुक्म दिया, चाहे हलके हों या भारी और अल्लाह के रास्ते में माल व जान लेकर जिहाद करने का हुक्म दिया। जिहाद एक ज़बरदस्त ख़ुदा का डाला हुआ फ़रीज़ा है, जिसका सवाब अल्लाह के यहां बहुत बड़ा मिलता है। हमने मुसलमानों से कहा कि वे शाम देश में जाकर रूमियों से जिहाद करें। इसके लिए वे जल्दी से तैयार हो गए और इसमें उनकी नीयत बड़ी अच्छी है। (कि वे अल्लाह को राज़ी करने के लिए जा रहे हैं) और (जिहाद के इस सफ़र में जाकर) अल्लाह से सवाब लेने की उनकी नीयत बहुत बड़ी है, तो अल्लाह के बन्दो ! जैसे यहां के मुसलमानों ने जल्दी से तैयारी कर ली, तुम भी (जिहाद के इस सफ़र की) तैयारी जल्दी से कर लो।

लेकिन इस सफ़र में आप लोगों की नीयत ठीक होनी चाहिए। तुम्हें दो ख़ूबियों में से एक ख़ूबी तो ज़रूर मिलेगी, या तो शहादत या जीत और ग़नीमत का माल, क्योंकि अल्लाह अपने बन्दों से इस बात पर राज़ी नहीं हैं कि वे सिर्फ़ बातें करें और अमल न करें। अल्लाह के दुश्मनों से जिहाद किया जाता रहेगा, यहां तक कि वे दीने हक़ को अख़्तियार कर लें और अल्लाह की किताब के फ़ैसले को मान लें। अल्लाह तुम्हारे दीन की हिफ़ाज़त फ़रमाए और तुम्हारे दिलों को हिदायत अता फ़रमाए और तुम्हारे अमल को पाकीज़ा फ़रमाए और जमकर मुक़ाबला करने वाले मुहाजिरों का सवाब तुम्हें अता फ़रमाए।'

और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० को

यह ख़त देकर (यमन) भेजा।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन जुबैर रह० कहते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० हबशा वालों की जमाअत भेजने लगे, तो उनमें खड़े होकर उनके सामने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और फिर उन्हें शाम जाने का हुक्म दिया और उनको ख़ुशख़बरी दी कि अल्लाह शाम देश जीत करके उन्हें देंगे और वे यहां मस्जिद बनाएंगे और यह बात सामने न आए कि तुम वहां खेल-कूद के लिए गए हो। शाम में नेमतों की ज़्यादती है। तुम्हें वहां खाने को खूब मिलेगा, इसलिए घमंड से बचकर रहना (क्योंकि खाने और माल की ज़्यादती से इंसान में अकड़ पैदा हो जाती है) काबा के रब की क़सम! तुममें ज़रूर घमंड पैदा होगा और तुम ज़रूर इतराओगे, ध्यान से सुनो! मैं तुम्हें दस बातों का हुक्म देता हूं। किसी बूढ़े को हरगिज़ क़त्ल न करना। आगे और हदीस ज़िक्र की हैं।[2]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का जिहाद पर और अल्लाह के रास्ते में निकलने पर उभारना और इस बारे में उनका सहाबा रज़ि० से मश्विरा फ़रमाना

हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत मुसन्ना बिन हारिसा रज़ि० ने लोगों से ख़िताब फ़रमाया, ऐ लोगो! फ़ारस की ओर जाने को तुम लोग मुश्किल और भारी काम न समझो। हमने फ़ारस की हरी-भरी धरती पर क़ब्ज़ा कर लिया है और इराक़ के दो टुकड़ों में से बेहतरीन टुकड़ा हमने उनसे ले लिया है और हमने उनसे आधा देश ले लिया है और हमने उनको ख़ूब नुक़सान पहुंचाया है और हमारे आदमी उन पर जरी हो गए हैं और इनशाअल्लाह बाद वाला इलाक़ा भी हमें मिल जाएगा।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने लोगों में खड़े होकर फ़रमाया, हिजाज़

1. इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 126, मुख़्तसर, भाग 2, पृ० 126, कंज़, भाग 3, पृ० 143
2. कंज़, भाग 3, पृ० 143

की धरती तुम्हारे रहने की असल जगह नहीं है, वह तो तुम्हें जहां घास मिलती है, वहां जाकर तुम कुछ दिन रह लेते हो और हिजाज़ वाले उस धरती में इसी तरह भी गुज़ारा कर सकते हैं जो मुहाजिरीन अल्लाह के दीन के लिए एकदम दौड़कर आया करते थे और आज अल्लाह के वायदे से कहां दूर जा पड़े हैं? तुम उस धरती पर जिहाद के लिए चलो, जिसके बारे में अल्लाह ने तुमसे (कुरआन में) वायदा किया है कि वह तुम्हें उस ज़मीन का वारिस बनाएगा, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है—

لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ

'ताकि अल्लाह अपने दीन को तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे।'

और अल्लाह अपने दीन को ज़रूर ग़ालिब करेंगे और अपने मददगार को इज़्ज़त देंगे और अपने दीन वालों को तमाम क़ौमों की मीरास का वारिस बनाएंगे। अल्लाह के नेक बन्दे कहां हैं?

इस दावत पर सबसे पहले हज़रत अबू उबैद बिन मसऊद रज़ि० ने लब्बैक कही, फिर साद बिन उबैद या सलीत बिन क़ैस रज़ि० ने, (यों एक-एक करके बड़ी फ़ौज तैयार हो गई) जब ये तमाम लोग जमा हो गए तो हज़रत उमर रज़ि० से कहा गया कि मुहाजिरीन और अंसार में से किसी पुराने को उनका अमीर बना दें।

फ़रमाया, नहीं, अल्लाह की क़सम! (आज) मैं ऐसे नहीं करूंगा, क्योंकि अल्लाह ने तुम्हें बुलन्दी इस वजह से दी थी कि तुम हर नेकी में आगे निकल जाते थे और दुश्मन की ओर तेज़ी से चलते थे, इसलिए जब तुम बुज़दिल बन गए हो और दुश्मन से मुक़ाबला तुम्हें बुरा लगने लगा है, तो अब तुमसे ज़्यादा अमीर बनने का हक़दार वह आदमी है जो दुश्मन की ओर जाने में बाज़ी ले जाए और जाने की दावत को पहले क़ुबूल कर ले, इसलिए मैं उनका अमीर उसी को बनाऊंगा, जिसने (मेरी दावत पर) सबसे पहले लब्बैक कही थी।

फिर हज़रत अबू उबैद, हज़रत सलीत और हज़रत साद को बुलाकर कहा, तुम दोनों अगर (दावत पर लब्बैक कहने में) अबू उबैद से बाज़ी ले जाते, तो मैं तुम दोनों को अमीर बना देता, पुराने होने की ख़ूबी तो तुम्हें

हासिल है ही, इस तरह तुम्हें इमारत भी मिल जाती।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने उस फ़ौज का अमीर हज़रत अबू उबैद को बनाया और उनसे फ़रमाया, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० की बात ज़रूर सुनना और उनको मश्विरे में शरीक रखना और जब तक पड़ताल करके तसल्ली न कर लो, किसी काम के फ़ैसले में जल्दबाज़ी से काम न लेना, क्योंकि यह लड़ाई है, इसमें वही आदमी ठीक चल सकता है जो संजीदा, धीमा और मौक़ा शनास हो, उसे मालूम हो कि कब दुश्मन पर हमला करना चाहिए और कब रुक जाना चाहिए।[1]

शाबी ने इस हदीस को यों बयान किया है कि हज़रत उमर रज़ि० से कहा गया कि उनका अमीर ऐसे आदमी को बनाएं, जिसे हुज़ूर सल्ल० की (पुरानी) सोहबत हासिल हो।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (पुराने) सहाबियों को फ़ज़ीलत इस वजह से हासिल थी कि वे दुश्मन की ओर तेज़ी से जाते थे और इस्लाम के इंकारियों के लिए काफ़ी हो जाते थे, इसलिए अगर अब कोई और उनकी यह ख़ास ख़ूबी अपना ले और उन जैसे कारनामे अंजाम देने लग जाए और ख़ुद (पुराने) सहाबा ढीले और सुस्त पड़ जाएं, तो हल्के हों या भारी, हर हाल में निकलने वाले (दूसरे लोग) इस इमारत के सहाबा से ज़्यादा हक़दार हो जाएंगे, इसलिए अल्लाह की क़सम ! मैं उनका अमीर उसे बनाऊंगा जिसने दावत पर सबसे पहले लब्बैक कही थी। चुनांचे हज़रत अबू उबैदा को अमीर बनाया और उन्हें अपनी क़ौम के बारे में हिदायतें दीं।[2]

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० बयान करते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ि० को हज़रत अबू उबैद बिन मसऊद रज़ि० के शहीद हो जाने की और फ़ारस वालों के किसरा के ख़ानदान वालों में से किसी एक आदमी पर जमा हो जाने की ख़बर मिली, तो उन्होंने मुहाजिरीन

---

1. तबरी, भाग 4, पृ० 61
2. तबरी, भाग 4, पृ० 61

और अंसार को (जिहाद का) एलान कराया (कि सब मदीना से बाहर सिरार नामी जगह पर जमा हो जाएं) और फिर हज़रत उमर रज़ि० मदीना से चलकर सिरार नामी जगह पर पहुंच गए और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० को अअवस नामी जगह तक जाने के लिए आगे भेज दिया और फ़ौज के दाहिने सिरे पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को और बाएं सिरे पर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० को मुक़र्रर फ़रमाया और हज़रत अली रज़ि० को मदीना में अपना नायब मुक़र्रर फ़रमाया और लोगों से (अपने फ़ारिस जाने के बारे में) मश्विरा फ़रमाया, तमाम लोगों ने फ़ारिस जाने का मश्विरा दिया और सिरार पहुंचने से पहले उन्होंने इस बारे में कोई मश्विरा न किया।

इतने में हज़रत तलहा भी (आवस नामी जगह से) वापस आ गए, फिर शूरा वालों से मश्विरा किया। हज़रत तलहा ने भी आम लोगों की तरह (फ़ारस जाने की) राय दी, लेकिन हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ हज़रत उमर को (फ़ारस जाने से) रोकने वालों में थे।

हज़रत अब्दुर्रहमान कहते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद न उस दिन से पहले और न उस दिन के बाद किसी पर अपने मां-बाप को क़ुरबान करने के लफ़्ज़ कहे (बस उस दिन हज़रत उमर के बारे में ये लफ़्ज़ कहे।)

चुनांचे मैंने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, आप यह काम मेरे हवाले कर दें और ख़ुद (मदीना) ठहर जाएं और फ़ौज को रवाना करें। मैंने (आज तक) यही देखा है कि हमेशा अल्लाह का फ़ैसला आपकी फ़ौजों के हक़ में होता है, लेकिन आपकी फ़ौज का हार जाना ख़ुद आपके हार जाने (की तरह नुक़सानदेह) नहीं है, क्योंकि अगर शुरू ही में आप शहीद हो गए या आप हार गए, तो मुझे डर है कि मुसलमान हमेशा के लिए अल्लाहु अक्बर कहना और ला इला ह इल्लल्लाहु की गवाही देना छोड़ देंगे (उनके हौसले हमेशा के लिए पस्त हो जाएंगे।)

हज़रत उमर ने हज़रत अब्दुर्रहमान के मश्विरे को क़ुबूल फ़रमाया और ख़ुद मदीना ठहर जाने और फ़ौज को रवाना करने का फ़ैसला

फ़रमाया और हज़रत उमर (इमारत के लिए किसी मुनासिब) आदमी को तलाश करने लग गए कि इतने में मश्विरे के तुरन्त बाद हज़रत साद का ख़त आया जो नज्द वालों से सदक़ों के वसूल करने पर लगाए गए थे।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे (अमीर बनाने के लिए) किसी आदमी का मश्विरा दो।

हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, मुझे इमारत के लिए मुनासिब आदमी मिल गया।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, वह कौन?

हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, वह पंजों वाला ताक़तवर शेर साद बिन मालिक हैं। तमाम शूरा वालों ने हज़रत अब्दुर्रहमान की राय से इत्तिफ़ाक़ किया।[1]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० का जिहाद पर उभारना

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत अबू सालेह कहते हैं कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ि० को मिंबर पर यह फ़रमाते हुए सुना, ऐ लोगो! मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक हदीस सुनी थी, लेकिन अब तक आप लोगों से छिपा रखी थी, ताकि (इस हदीस में अल्लाह के रास्ते में जाने की ज़बरदस्त फ़ज़ीलत को सुनकर) आप लोग मुझे छोड़कर न चले जाएं, लेकिन अब मेरा यह ख़्याल हुआ कि वह हदीस आप लोगों को सुना दूं, ताकि हर आदमी अपने लिए उसे अख़्तियार करे जो उसे मुनासिब मालूम हो, (मेरे पास मदीना रहना या अल्लाह की राह में मदीना चले जाना)। मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह की राह में एक दिन सरहद की हिफ़ाज़त के लिए पहरा देना और जगहों के हज़ार दिन से बेहतर है।[2]

हज़रत मुस्अब बिन साबित बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर फ़रमाते हैं

1. तबरी, वही, भाग 4, पृ० 83
2. इमाम अहमद, भाग 1, पृ० 65

कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने अपने मिंबर पर बयान करते हुए फ़रमाया, मैं आज तुम्हें ऐसी हदीस सुनाऊंगा, जिसे मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है और मैंने आज तक तुम्हें इसलिए नहीं सुनाई थी कि मैं चाहता था कि तुम लोग मेरे पास ही रहो, (मुझे छोड़कर चले न जाओ।) मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह के रास्ते में एक रात का पहरा देना उन हज़ार रातों से बेहतर है, जिनमें रात में खड़े होकर अल्लाह की इबादत की जाए और दिन में रोज़ा रखा जाए।[1]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० का जिहाद पर उभारना

हज़रत ज़ैद बिन वह्ब रह० कहते हैं कि हज़रत अली रज़ि० ने लोगों में खड़े होकर फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस ज़ात के लिए हैं कि वह जिसे तोड़े, उसे कोई जोड़ नहीं सकता और जिसे वह जोड़े, उसे सारे तोड़ने वाले मिलकर तोड़ नहीं सकते हैं और अगर अल्लाह चाहते तो उनकी मख़्लूक़ में से दो आदमियों में भी इख़्तिलाफ़ न होता और न ही पूरी उम्मत में किसी बात पर झगड़ा होता और न ही कम दर्जे वाला ज़्यादा दर्जे वाले की फ़ज़ीलत का इंकार करता। तक़्दीर ही ने हमें और उन लोगों को यहां खींचकर इकट्ठा कर दिया है। अल्लाह हमारी हर बात को देखते और सुनते हैं और अगर अल्लाह चाहते तो दुनिया ही में सज़ा जल्द दे देते, जिससे ऐसी तब्दीली आ जाती कि ज़ालिम के ग़लत होने को ज़ाहिर फ़रमा देते और यह खोल देते कि हक़ कहां है? लेकिन अल्लाह ने दुनिया को दारुल अमल (अमल का घर) बनाया है और आख़िरत को हमेशा अपने पास रहने की जगह बनाया है। चुनांचे उसने फ़रमाया है—

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى ۝

'ताकि वह बदला दे बुराई वालों को उनके किए का और बदला दे

1 इमाम अहमद, वही, भाग 1, पृ० 61

भलाई वालों को भलाई से।

ग़ौर से सुनो, कल को तुम्हारा उन लोगों से मुक़ाबला होगा, इसलिए रात को (नमाज़ में) क़ियाम लम्बा करो, कुरआन की ज़्यादा से ज़्यादा तिलावत करो, अल्लाह से मदद और सब्र की तौफ़ीक़ मांगो और उन लोगों से मुक़ाबले में पूरा ज़ोर लगाओ और एहतियात से काम लो और सच्चे और साबित क़दम रहना।

इसके बाद हज़रत अली रज़ि० तशरीफ़ ले गए।[1]

हज़रत अबू उमरा अंसारी वग़ैरह बयान करते हैं कि सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के दिन हज़रत अली रज़ि० ने लोगों को उभारा, तो फ़रमाया, अल्लाह ने तुम लोगों को ऐसी तिजारत बताई है जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से नजात दे और जो तुम्हें ख़ैर के क़रीब कर दे, और वह तिजारत है अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना, अल्लाह उसके बदले में गुनाहों को माफ़ कर देंगे और हमेशा वाले बाग़ में अच्छे-अच्छे महल देंगे। फिर मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि अल्लाह उन लोगों से मुहब्बत करते हैं, जो अल्लाह के रास्ते में सफ़ बनाकर इस तरह लड़ते हैं गोया कि सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। इसलिए तुम अपनी सफ़ें इस तरह सीधी बनाना जैसे कि सीसा पिलाई हुई दीवार होती है और जिन लोगों ने ज़िरह (कवच) पहन रखी है, उन्हें आगे रखना, और जिन्होंने नहीं पहन रखी है, उन्हें पीछे रखना और मज़बूती से जमे रहना।[2]

हज़रत अबू वदाक हमदानी कहते हैं कि हज़रत अली रज़ि० ने (कूफ़ा के क़रीब) नुख़ैला नामी जगह पर पड़ाव डाला और ख़ारिजियों से नाउम्मीद हो गए थे, तो खड़े होकर उन्होंने अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया कि जिसने अल्लाह के रास्ते का जिहाद छोड़ दिया और अल्लाह के दीन में मुदाहनत अख़्तियार की (यानी दुन्यावी

1. तबरी, भाग 4, पृ० 9
2. तबरी, भाग 4, पृ० 11

ग़रज़ों की वजह से दीन में किसी ग़लत बात पर राज़ी हो गया) तो वह हलाकत के किनारे पर पहुंच गया। अल्लाह ही अपनी मेहरबानी से उसे बचाए तो बच सकता है, इसलिए अल्लाह से डरो, उन लोगों से लड़ो, जो अल्लाह से दुश्मनी करते हैं और वे अल्लाह के नूर को बुझाना चाहते हैं और वे ख़ताकार, ज़ालिम और मुजरिम हैं, जो न क़ुरआन को पढ़ने वाले हैं, और न दीन की समझ रखते हैं और न ही उनके पास तफ़्सीर का इल्म (ज्ञान) है और न ही वे इस्लाम में पहल करने की वजह से इस बात (ख़िलाफ़त) के अह्ल हैं। अल्लाह की क़सम ! अगर इनको तुम्हारा वली बना दिया जाए, तो वे तुम्हारे साथ किसरा और हिरक़्ल वाला मामला करेंगे, इसलिए तुम मग़्रिब वालों के अपने दुश्मनों से लड़ने की तैयारी करो। हमने तुम्हारे बसरा वाले भाइयों के पास पैग़ाम भेजा है कि वे तुम्हारे पास आ जाएं, इसलिए जब वे आ जाएं और तुम सब इकट्ठे हो जाओ, तो फिर हम इनशाअल्लाहु (ख़ारिजियों के मुक़ाबले के लिए) निकलेंगे।

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

'व ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहि०'[1]

हज़रत ज़ैद बिन वह्ब रह० बयान करते हैं कि नहरवान की लड़ाई के बाद हज़रत अली रज़ि० ने सबसे पहले बयान में फ़रमाया, ऐ लोगो ! उस दुश्मन की तरफ़ जाने की तैयारी करो, जिससे जिहाद करने में अल्लाह का क़ुर्ब हासिल होगा और अल्लाह के यहां बड़ा दर्जा हासिल होगा और ये लोग हैरान व परेशान हैं, क्योंकि हक़ उन पर वाज़ेह (स्पष्ट) नहीं है। अल्लाह की किताब से हटे हुए हैं और दीन से हटे हुए हैं और सरकशी में सर गरदां हैं और गुमराही के गढ़े में उलटे पड़े हुए हैं। तुम ताक़त के ज़रिए और घोड़ों के ज़रिए, उनके मुक़ाबले की जितनी तैयारी कर सकते हो, ज़रूर करो, अल्लाह पर भरोसा करो, और अल्लाह ही काम बनाने और मदद करने के लिए काफ़ी है।

हज़रत ज़ैद रह० कहते हैं कि लोगों ने न कोई तैयारी की और न

1. तबरी, भाग 4, पृ० 57

निकले, तो हज़रत अली रज़ि० ने उनको कुछ दिनों तक छोड़े रखा, यहां तक कि जब वह उनके कुछ करने से नाउम्मीद हो गए तो उनके सरदारों और बड़ों को बुलाकर उनकी राय मालूम की कि ये लोग देर क्यों कर रहे हैं ?

इनमें से कुछ ने अपने उज़्र, बीमारी वग़ैरह का ज़िक्र किया और कुछ ने अपनी मजबूरियां बताईं। थोड़े ही लोग ख़ुशदिली से जाने के लिए तैयार हुए। चुनांचे हज़रत अली रज़ि० उनमें बयान फ़रमाने के लिए खड़े हुए और फ़रमाया, ऐ अल्लाह के बन्दो ! तुम्हें क्या हो गया कि मैं जब तुम्हें अल्लाह के रास्ते में निकलने का हुक्म देता हूं तो तुम बोझल होकर ज़मीन से लगे जाते हो ? क्या तुम आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी पर और इज़्ज़त के मुक़ाबले में ज़िल्लत और ख़्वारी पर राज़ी हो गए हो ? क्या हुआ ? जब भी तुमसे जिहाद में जाने की मांग करता हूं, तो तुम्हारी आंखें ऐसे घूमने लग जाती हैं, जैसे कि तुम मौत की बेहोशी में हो और ऐसा मालूम होता है जैसे तुम्हारे दिल ऐसे बदहवास हैं कि तुम्हें कुछ समझ नहीं आ रहा है और तुम्हारी आंखें ऐसी अंधी हो गई हैं कि तुम्हें कुछ नज़र नहीं आ रहा है। अल्लाह की क़सम ! जब राहत और आराम का मौक़ा होता है तो तुम शरा जंगल के शेर की तरह बहादुर बन जाते हो, और जब तुम्हें लड़ने के लिए बुलाया जाता है तो तुम मक्कार लोमड़ी बन जाते हो, तुम पर से मेरा भरोसा हमेशा के लिए उठ गया और तुम लोग ऐसे घुड़सवार भी नहीं हो कि तुम्हें लेकर किसी पर हमला कर दिया जाए और तुम ऐसे इज़्ज़त वाले भी नहीं कि तुम्हारी पनाह हासिल की जाए।

अल्लाह की क़सम ! तुम लड़ाई में बहुत कमज़ोर और बिल्कुल बेकार हो और तुम्हारे ख़िलाफ़ दुश्मन की चाल कामियाब हो जाती है और तुम दुश्मन के ख़िलाफ़ कोई चाल नहीं चल सकते हो। तुम्हारे अंग काटे जा रहे हैं और तुम एक दूसरे को बचाते नहीं हो और तुम्हारा दुश्मन सोता नहीं है और तुम ग़फ़लत में बे-ख़बर पड़े हो। लड़ाका (योद्धा) आदमी तो बेदार और समझदार होता है और जो झुककर समझौता करता है वह ज़लील और ख़्वार होता है। आपस में झगड़ने

वाले मग़लूब हो जाते हैं और जो मग़लूब हो जाता है, उसे खूब दबाया जाता है और उसका सब कुछ छीन लिया जाता है।

फिर फ़रमाया, मेरा तुम पर हक़ है और तुम्हारा मुझ पर हक़ है, तुम्हारा हक़ मुझ पर यह है कि जब तक मैं तुम्हारे साथ रहूं, तुम्हारा भला चाहता रहूं और तुम्हारा माले ग़नीमत बढ़ाता रहूं और तुम्हें सिखाता रहूं, ताकि तुम जाहिल न रहो और तुम्हें अदब और अख़्लाक़ सिखाता रहूं ताकि तुम सीख जाओ और मेरा तुम पर हक़ यह है कि तुम मेरी बैअत को पूरा करो, मेरे पीछे और मेरे सामने मेरा भला चाहने वाला बनकर रहो और जब मैं तुम्हें बुलाऊं तो तुम मेरी आवाज़ पर लब्बैक कहो और जब तुमको हुक्म दूं तो तुम उसे पूरा करो और अल्लाह तुम्हारे साथ भलाई का हुक्म फ़रमा रहे हैं, तो उन कामों को छोड़ दो, जो मुझे पसन्द नहीं हैं और उनकी ओर लौट आओ जो मुझे पसन्द हैं, इस तरह जो कुछ चाहते हो, उसे पालोगे और जिन चीज़ों की उम्मीद लगाए बैठे हो, उन्हें हासिल कर लोगे।[1]

हज़रत अब्दुल वाजिद दमिश्क़ी बयान करते हैं कि सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के दिन हौशब हिमयरी ने हज़रत अली को पुकारकर कहा, ऐ अबू तालिब के बेटे! आप हमारे यहां से वापस चले जाएं। हम आपको अपने और आपके ख़ून के बारे में अल्लाह का वास्ता देते हैं (कि आप लड़ाई का इरादा छोड़ दें) हम आपके लिए इराक़ छोड़ देते हैं, आप हमारे लिए शाम छोड़ दें और इस तरह मुसलमानों के ख़ून की हिफ़ाज़त कर लें।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ उम्मे ज़ुलैम के बेटे! ऐसे कहां हो सकता है? अल्लाह की क़सम! अगर मुझे मालूम होता कि अल्लाह के दीन में मुदाहनत करने की गुंजाइश है, तो मैं ज़रूर कर लेता और इस तरह मेरी मुश्किलें आसान हो जातीं, लेकिन अल्लाह इस बात पर राज़ी नहीं हैं कि जब अल्लाह की नाफ़रमानी हो रही हो और क़ुरआन वाले उससे रोकने की और दीन के ग़लबे के लिए जिहाद करने की ताक़त

1. तबरी, भाग 4, पृ० 67

रखते हों और फिर कुरआन वाले ख़ामोश रहें और मुदाहनत से काम लें।'[1]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० का जिहाद पर उभारना

हज़रत मुहम्मद हज़रत तलहा और हज़रत ज़ियाद रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़ादसिया की लड़ाई के दिन हज़रत साद रज़ि० ने बयान फ़रमाया। चुनांचे उन्होंने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और फ़रमाया, अल्लाह हक़ हैं और बादशाही में उनका कोई शरीक नहीं। उनकी किसी बात के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता और अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۝

'और हमने लिख दिया है ज़बूर में नसीहत के पीछे कि आख़िर ज़मीन पर मालिक होंगे मेरे नेक बन्दे।'

यह ज़मीन तुम्हारी मीरास है और तुम्हारे रब ने तुम्हें यह देने का वायदा किया हुआ है और तीन साल से अल्लाह ने तुम्हें इस ज़मीन को इस्तेमाल करने का मौक़ा दिया हुआ है, तुम ख़ुद भी उसमें से खा रहे हो और दूसरों को भी खिला रहे और यहां के रहने वालों को क़त्ल कर रहे हो और उनका माल समेट रहे हो और आज तक उनकी औरतों और बच्चों को क़ैद कर रहे हो।

ग़रज़ यह कि पिछली तमाम लड़ाइयों में तमाम नामवरों ने उनको बड़ा नुक़्सान पहुंचाया है और अब तुम्हारे सामने उनकी यह बहुत बड़ी फ़ौज जमा होकर आ गई है। (इस फ़ौज की तायदाद दो लाख बताई जाती है) और तुम अरब के सरदार और इज़्ज़तदार लोग हो और तुममें से हर एक अपने क़बीले का बेहतरीन आदमी है और तुम्हारे पीछे रह जाने वालों की इज़्ज़त तुमसे ही जुड़ी है। अगर तुम दुनिया की बे-रग़बती और आख़िरत का शौक़ अख़्तियार करो तो अल्लाह तुम्हें दुनिया और आख़िरत दोनों दे देंगे और दुश्मन से लड़ने से मौत क़रीब नहीं आ जाती,

1. इस्तीआब, भाग 1, पृ० 291, हुलीया, भाग 1, पृ० 85

अगर तुम बुज़दिल बन गए और तुमने कमज़ोरी दिखाई तो तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और तुम अपनी आख़िरत बर्बाद कर लोगे।

इनके बाद हज़रत आसिम बिन अम्र रज़ि० ने खड़े होकर कहा, यह इराक़ वह इलाक़ा है कि जिसके रहने वालों को अल्लाह ने तुम्हारे लिए मग़लूब कर दिया है और तीन साल से तुम उनका जितना नुक़्सान कर रहे हो, वह तुम्हारा इतना नहीं कर सके हैं और तुम ही बुलन्द हो और अल्लाह तुम्हारे साथ है। अगर तुम जमे रहे और तुमने अच्छी तरह तलवार और नेज़े को चलाया, तो तुम्हें उनके माल और उनके बीवी-बच्चे और उनके इलाक़े सब कुछ मिल जाएंगे और अगर तुमने कमज़ोरी दिखाई और बुज़दिल बने, अल्लाह तुम्हारी इन बातों से हिफ़ाज़त फ़रमाए, तो इस फ़ौज वाले तुममें से एक को भी इस डर की वजह से ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे कि तुम उन पर दोबारा हमला करके उनको हलाक न कर दो, अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो और पिछली लड़ाइयों को और इन लड़ाइयों में जो कुछ तुम्हें अल्लाह ने दिया है, उसे याद करो। क्या तुम देखते नहीं हो कि तुम्हारे पीछे अरब भू-भाग तो बस बयाबान और चटियल मैदान ही है, न तो इसमें कोई ऐसी साए की जगह है जिसमें पनाह ली जा सके और न कोई ऐसी पनाहगाह है जिसके ज़रिए अपनी हिफ़ाज़त की जा सके। तुम तो अपना मक़्सूद आख़िरत को बनाओ।[1]

सहाबा किराम रज़ि० का जिहाद करने का और अल्लाह के रास्ते में निकलने का शौक़

हज़रत अबू उमामा रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बद्र जाने का इरादा फ़रमाया, तो हज़रत अबू उमामा भी हुज़ूर सल्ल० के साथ जाने के लिए तैयार हो गए, तो उनसे उनके मामूं हज़रत अबू बरदा बिन नियार रज़ि० ने कहा, तुम अपनी मां के पास ठहरो।

1. इब्ने जरीर तबरी, भाग 4, पृ० 44

हज़रत अबू उमामा ने कहा, नहीं, आप अपनी बहन के पास ठहरें।

हुज़ूर सल्ल० के सामने इसका ज़िक्र आया तो आपने हज़रत अबू उमामा रज़ि० को अपनी मां के पास ठहरने का हुक्म दिया और हज़रत अबू बुरदा आपके साथ (बद्र की लड़ाई में) तशरीफ़ ले गए। जब हुज़ूर सल्ल० वापस तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त हज़रत अबू उमामा रज़ि० की मां का इंतिक़ाल हो चुका था। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई।[1]

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तीन बातें न होतीं, तो मैं इस बात की तमन्ना करता कि अल्लाह से जा मिलूं। अल्लाह के रास्ते में पैदल चलना और सज्दे में अल्लाह के सामने मिट्टी में अपना माथा रखना और ऐसे लोगों के पास बैठना, जो अच्छी बातों को ऐसे चुनते हैं, जैसे अच्छी खजूरें चुनी जाती हैं।[2]

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम लोग हज किया करो, क्योंकि यह वह नेक अमल है जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है, लेकिन जिहाद इससे भी अफ़ज़ल है।[3]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, बद्र की लड़ाई के दिन मुझे हुज़ूर सल्ल० के सामने पेश किया गया, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने मुझे छोटा समझकर क़ुबूल न फ़रमाया। उस जैसी सख़्त रात मुझ पर कभी न आई थी। हुज़ूर सल्ल० के क़ुबूल न फ़रमाने की वजह से मुझे बड़ा दुख था और मैं सारी रात जागता रहा और रोता रहा। अगले साल फिर मुझे हुज़ूर सल्ल० के सामने पेश किया गया। आपने मुझे क़ुबूल फ़रमा लिया। मैंने इस पर अल्लाह का शुक्र अदा किया। इस पर एक आदमी ने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! जिस दिन दोनों फ़ौजें मुक़ाबले में आई थीं, (यानी उहुद की लड़ाई के दिन) क्या उस दिन आप लोगों ने पीठें फेरी थीं?

1. हुलीया, भाग 9, पृ० 37
2. कंज़ुल उम्माल
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 288

उन्होंने कहा, हां, लेकिन अल्लाह ने हम सबको माफ़ फ़रमा दिया। इस पर अल्लाह का बड़ा शुक्र है।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं, एक आदमी ने हज़रत उमर रज़ि० के पास आकर कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं जिहाद में जाना चाहता हूं। आप मुझे सवारी दे दें।

हज़रत उमर रज़ि० ने एक आदमी से कहा, इसका हाथ पकड़कर इसे बैतुल माल में ले जाओ। वहां से जो चाहे ले ले। चुनांचे उस आदमी ने बैतुल माल में जाकर देखा कि वहां तो चांदी और सोना रखा हुआ है। उसने कहा यह क्या है? मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है, मैं तो रास्ते का सामान और सवारी लेना चाहता हूं। लोग उसे हज़रत उमर रज़ि० के पास वापस ले आए और उसने जो कहा था, वह हज़रत उमर रज़ि० को बताया तो हज़रत उमर रज़ि० ने हुक्म दिया कि इसे रास्ते का ख़र्च और सवारी दी जाए। (चुनांचे उसे दिया गया तो) हज़रत उमर ने अपने हाथ से उसकी सवारी पर कजावा बांधा। जब यह आदमी उस सवारी पर सवार हो गया तो उसने हाथ उठाया और हज़रत रज़ि० ने उस आदमी के साथ जो अच्छे सुलूक का मामला किया और उसे दिया, उस पर अल्लाह का शुक्र अदा किया और उसकी हम्द व सना बयान की और हज़रत उमर रज़ि० इस तमन्ना में उसके पीछे चलने लगे कि वह हज़रत उमर रज़ि० के लिए दुआ कर दे। जब वह हम्द व सना से फ़ारिग़ हो गया, तो उसने कहा, ऐ अल्लाह! उमर को तू और बेहतर बदला दे।[2]

हज़रत अरतात बिन मुंज़िर कहते हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने एक दिन अपने पास बैठने वालों से फ़रमाया, लोगों में सबसे ज़्यादा अज्र व सवाब वाला कौन है?

लोग नमाज़ और रोज़े का ज़िक्र करने लगे और कहने लगे, अमीरुल मोमिनीन के बाद फ़्लां और फ़्लां (ज़्यादा अज्र व सवाब वाले हैं)

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 231
2. कंज़, भाग 2, पृ० 288

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें वह आदमी न बता दूं जिसका अज्र व सवाब इससे भी ज़्यादा है जिनका तुमने ज़िक्र किया है और अमीरुल मोमिनीन से भी ज़्यादा है?

लोगों ने कहा, ज़रूर बताएं।

आपने फ़रमाया, यह वह एक छोटा-सा आदमी है जो अपने घोड़े की लगाम पकड़कर शाम में पैदल चल रहा है, जो मुसलमानों के इज्तिमाई मर्कज़ (मदीना मुनव्वरा) की हिफ़ाज़त कर रहा है (ताकि शामी फ़ौज मदीना पर हमला करने न जा सके। उसे यह भी पता नहीं है कि क्या उसे कोई दरिंदा फाड़ खाएगा या कोई ज़हरीला जानवर उसे डस लेगा या कोई दुश्मन उस पर क़ाबू पा लेगा। उस आदमी का अज्र व सवाब उन लोगों से भी ज़्यादा है जिनका तुमने ज़िक्र किया है और अमीरुल मोमिनीन से भी ज़्यादा है।[1]

हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत मुआज़ रज़ि० शाम देश की ओर रवाना हो गए तो हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाया करते थे कि हज़रत मुआज़ के शाम जाने से मदीना वालों को फ़िक़्ही मसलों में और फ़त्वा लेने में बड़ी कठिनाई सामने आ रही है, क्योंकि हज़रत मुआज़ मदीना में लोगों को फ़त्वा दिया करते थे। मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से, अल्लाह उन पर रहमत नाज़िल फ़रमाए, यह बात की थी कि वह हज़रत मुआज़ को मदीना में रोक लें, क्योंकि (फ़त्वा में) लोगों को उनकी ज़रूरत है, लेकिन उन्होंने मुझे इंकार कर दिया और फ़रमाया कि एक आदमी उस रास्ते में जाकर शहीद होना चाहता है, तो मैं उसे नहीं रोक सकता हूं, तो मैंने कहा अल्लाह की क़सम! जो आदमी अपने घर में रहकर शहर वालों के बड़े-बड़े (दीनी) काम कर रहा है, वह अगर अपने बिस्तर पर भी मर जाएगा, तो भी वह शहीद होगा।

हज़रत काब बिन मालिक फ़रमाते हैं, हज़रत मुआज़ हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में भी और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के ज़माने में भी मदीना में

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 289

लोगों को फ़त्वा दिया करते थे।[1]

हज़रत नौफ़ल बिन अम्मारा फ़रमाते हैं कि हज़रत हारिस बिन हिशाम और हज़रत सुहैल बिन अम्र रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनके पास बैठ गए और हज़रत उमर रज़ि० उन दोनों के दर्मियान बैठे हुए थे।

शुरू के मुहाजिर सहाबी रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० के पास आने लगे। (उनमें से जब भी कोई आता, तो) हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते, 'ऐ सुहैल ! इधर हो जाओ और ऐ हारिस ! इधर हो जाओ।'

इस तरह हज़रत उमर रज़ि० ने मुहाजिरों को पास बिठा लिया और दोनों को उनसे पीछे कर दिया। फिर अंसार सहाबी हज़रत उमर रज़ि० के पास आने लगे। हज़रत उमर रज़ि० उन दोनों को अंसार से भी पीछे कर देते। होते-होते ये दोनों लोगों के बिल्कुल आख़िर में पहुंच गए।

जब ये दोनों हज़रत उमर रज़ि० के पास से बाहर आए तो हज़रत हारिस बिन हिशाम ने हज़रत सुहैल बिन अम्र से कहा, क्या तुमने नहीं देखा कि हज़रत उमर ने हमारे साथ क्या किया ?

तो हज़रत सुहैल ने उनसे कहा, हम हज़रत उमर रज़ि० को मलामत नहीं कर सकते, हमें तो अपने आपको मलामत करनी चाहिए। उन लोगों को (इस्लाम की) दावत दी गई थी, उन्होंने जल्दी से क़ुबूल कर ली। हमें भी दावत दी गई थी, हमने देर से क़ुबूल की।

जब मुहाजिर और अंसार सहाबी रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० के पास से खड़े होकर बाहर आ गए, तो उन दोनों ने हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में आकर कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आपने आज हमारे साथ जो कुछ किया है, हमने उसे ख़ूब देखा है और हमें यह मालूम है कि हमारे साथ आज जो कुछ हुआ है, यह हमारी अपनी ग़लतियों की वजह से हुआ है, लेकिन क्या ऐसी कोई चीज़ है जिसे करके हम आगे वह क़द्र और इज़्ज़त हासिल कर लें, जो हम अभी तक हासिल नहीं कर सके ?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐसा काम तो बस एक ही है कि तुम

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 87

इधर चले जाओ और हाथ से रूम की सीमा की ओर इशारा फ़रमाया। चुनांचे वे दोनों शाम की ओर चले गए और वहीं इन लोगों का इंतिक़ाल हो गया।[1]

हज़रत हसन रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० के दरवाज़े पर कुछ लोग आए, जिनमें हज़रत सुहैल बिन अम्र, हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब रज़ि० और बहुत से क़ुरैश के बड़े सरदार थे। हज़रत उमर रज़ि० का दरबान बाहर आया और हज़रत सुहैब, हज़रत बिलाल और हज़रत अम्मार रज़ि० जैसे बद्री सहाबा रज़ि० को इजाज़त देने लगा। अल्लाह की क़सम! हज़रत उमर रज़ि० ख़ुद बद्री थे और बद्रियों से बड़ी मुहब्बत करते थे और उनका ख़ास ख़्याल रखने की अपनी साथियों को ताकीद कर रखी थी।

यह देखकर हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, आज जैसा दिन तो मैंने कभी नहीं देखा कि यह दरबान उन ग़ुलामों को इजाज़त दे रहा है और हम बैठे हुए हैं, हमें देखता भी नहीं है।

हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि हज़रत सुहैल बिन अम्र बड़े अच्छे और समझदार आदमी थे। उन्होंने कहा, ऐ लोगो! मैं तुम्हारे चेहरों में नागवारी का असर देख रहा हूं। अगर तुम्हें नाराज़ होना ही है, तो अपने ऊपर नाराज़ हो। उन लोगों को भी दावत दी गई थी और तुम्हें भी दावत दी गई थी। उन्होंने दावत जल्दी मान ली, तुमने देर से मानी। ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम! तुम (अमीरुल मोमिनीन के) उस दरवाज़े में एक दूसरे से ज़्यादा लालच कर रहे हो और यह दरवाज़ा तुम्हारे लिए आज खुला भी नहीं, तो इस दरवाज़े के हाथ में न आने से ज़्यादा सख़्त तो (इस्लामी दावत क़ुबूल कर लेने और दीनी मेहनत में लगने की) फ़ज़ीलत से महरूम होना है। जिस फ़ज़ीलत की वजह से वे तुमसे आगे निकल गए हैं और ये लोग जैसा कि तुम देख रहे हो, तुमसे आगे निकल गए हैं और अल्लाह की क़सम! तुमसे आगे बढ़कर उन्होंने जो दर्जा पा लिया है, अब तुम वह किसी तरह हासिल नहीं कर सकते हो,

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 136, इस्तीआब, भाग 2, पृ० 111

इसलिए अब तुम जिहाद की ओर मुतवज्जह हो जाओ और उसमें बराबर लगे रहो। हो सकता है कि अल्लाह तुम्हें जिहाद और शहादत का दर्जा नसीब फ़रमा दे।

फिर हज़रत सुहैल बिन अम्र कपड़े झाड़ते हुए खड़े हुए और (जिहाद) के लिए शामदेश चले गए।

हज़रत हसन फ़रमाते हैं, हज़रत सुहैल ने सच फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! जो बन्दा अल्लाह की ओर (चलने में) जल्दी करता है, उसे अल्लाह देर करने वाले की तरह नहीं बनाते हैं।[1]

हज़रत अबू साद बिन फ़ुज़ाला रज़ि० एक सहाबी हैं, वह फ़रमाते हैं कि मैं और हज़रत सुहैल बिन अम्र रज़ि० दोनों इकट्ठे शाम गए। मैंने उन्हें यह कहते सुना कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से यह सुना कि ज़िंदगी में से एक घड़ी किसी का अल्लाह के रास्ते में खड़ा होना उसके अपने घरवालों में उम्र भर के अमल से ज़्यादा बेहतर है।

हज़रत सुहैल ने कहा, मैं अब इस्लामी सरहद की हिफ़ाज़त में यहां मरते दम तक लगा रहूंगा और मक्का वापस नहीं जाऊंगा। चुनांचे वह शामदेश ही में ठहरे रहे, यहां तक कि उनका अमवास के प्लेग में इंतिक़ाल हो गया।[2]

हज़रत अबू नौफ़ल बिन अबी अक़रब बयान करते हैं कि हज़रत हारिस बिन हिशाम रज़ि० (शामदेश जाने के लिए) मक्का से रवाना होने लगे तो तमाम मक्का वाले (उनके यों हमेशा के लिए चले जाने की वजह से) बड़े ग़मगीन और परेशान थे। दूध पीने वाले बच्चों के अलावा बाक़ी सब छोटे-बड़े उनको विदा करने उनको साथ मक्का शहर से बाहर आए। जब वह बतहा की ऊंची जगह या उसके क़रीब पहुंचे, तो वह रुक गए और तमाम लोग उनके आस-पास रुक गए और ताम लोग रो रहे थे।

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 282, इस्तीआब, भाग 2, पृ० 110, हैसमी, भाग 8, पृ० 46, इसाबा, भाग 3, पृ० 94
2. इब्ने साद, भाग 5, पृ० 335, इसाबा, भाग 2, पृ० 94, हाकिम, भाग 3, पृ० 282

जब उन्होंने उन लोगों की यह परेशानी देखी तो कहा, ऐ लोगो ! अल्लाह की क़सम ! मैं इस वजह से नहीं जा रहा हूं कि मुझे अपनी जान तुम्हारी जान से ज़्यादा प्यारी है या मैंने तुम्हारे शहर (मक्का) को छोड़कर कोई और शहर अख़्तियार कर लिया है, बल्कि इस वजह से जा रहा हूं कि (इस्लाम लाने और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने की) बात चली थी तो उस वक़्त क़ुरैश के बहुत से ऐसे आदमियों ने निकलने में पहल कर ली, जो न तो क़ुरैश के बड़े लोगों में से थे और न वे क़ुरैश के ऊंचे ख़ानदानों में से थे। (क़ुरैश के बड़े लोग तो हम थे और हमारे ख़ानदान ऊंचे थे) अब हमारी हालत यह हो गई है कि अल्लाह की क़सम ! अगर हम मक्का के पहाड़ों के बराबर सोना अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दें, तो भी हम उनके एक दिन के सवाब को नहीं पा सकते हैं। अल्लाह की क़सम ! अगर वे दुनिया में हमसे आगे निकल गए हैं, तो हम यह चाहते हैं कि कम से कम हम आख़िरत में तो उनके बराबर हो जाएं। अमल करने वाले को (अपने अमल के बारे में) अल्लाह से डरना चाहिए।

चुनांचे वह शामदेश रवाना हो गए और उनके तमाम मुताल्लिक़ लोग भी उनके साथ गए और वहां वे शहीद हो गए। अल्लाह उन पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए।[1]

हज़रत ख़ालिद रज़ि० के ख़ानदान के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत ज़ियाद कहते हैं कि हज़रत ख़ालिद ने अपने इंतिक़ाल के वक़्त फ़रमाया कि जो रात कड़ी सर्दी वाली हो, जिसमें पानी जम जाए और मैं मुहाजिरीन की एक जमाअत के साथ हूं और सुबह दुश्मन पर हमला करूं। धरती पर कोई रात मुझे उस रात से ज़्यादा महबूब नहीं है, इसलिए तुम लोग जिहाद करते रहना।[2]

हज़रत ख़ालिद रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस रात मेरे घर में दुल्हन आए, जिससे मुझे मुहब्बत भी हो और मुझे उससे लड़का होने की बशारत भी उस रात मिल जाए, यह रात मुझे उस रात से ज़्यादा महबूब

1. इस्तीआब, भाग 7, पृ० 310, हाकिम, भाग 3, पृ० 278
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 414

नहीं है, जिस रात में पानी जमा देनेवाली कड़ी सर्दी पड़ रही हो और मैं मुहाजिरीन की एक जमाअत में हूं और सुबह को दुश्मन पर हमला करना हो।[1]

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद (की मश्ग़ूली की वजह से) मैं ज़्यादा क़ुरआन न पढ़ सका।[2]

एक रिवायत में है कि हज़रत ख़ालिद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं जिहाद की वजह से बहुत-सा क़ुरआन नहीं सीख सका।[3]

हज़रत अबू वाइल कहते हैं कि जब हज़रत ख़ालिद रज़ि० के इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने फ़रमाया कि मेरे दिल में तमन्ना थी कि मैं अल्लाह के रास्ते में शहीद हो जाऊं, इसलिए जिन जगहों में जाने से शहादत मिल सकती थी, मैं उन तमाम जगहों में गया, लेकिन मेरे लिए बिस्तर पर मरना ही मुक़द्दर था। लाइला-ह इल्लल्लाहु के बाद मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा उम्मीद वाला अमल यह है कि मैंने एक रात इस हाल में गुज़ारी थी कि सारी रात सुबह तक बारिश होती रही, और मैं सारी रात सर पर ढाल लिए खड़ा रहा और सुबह को काफ़िरों पर हमने अचानक हमला कर दिया, फिर फ़रमाया, जब मैं मर जाऊं, तो मेरे हथियार और घोड़े को ज़रा ख़्याल करके जमा कर लेना और उन्हें अल्लाह के रास्ते में लड़ाई के सामान के तौर पर दे देना। जब उनका इंतिक़ाल हो गया, तो हज़रत उमर रज़ि० उनके जनाज़े के लिए बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि वलीद के ख़ानदान की औरतें हज़रत ख़ालिद के इंतिक़ाल पर आंसू बहा सकती हैं, न तो गरेबान फाड़ें, न चीख़ें-चिल्लाएं।[4]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद, उमर बिन हफ़्स, और हज़रत अम्मार बिन हफ़्स इन सबके मां-बाप इन सबके दादाओं से नक़ल करते

1. मज्मा, भाग 9, पृ० 350
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 350
3. इसाबा भाग 1, पृ० 414
4. इसाबा, भाग 1, पृ० 414, हैसमी, भाग 9, पृ० 350

हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, ऐ रसूलुल्लाह सल्ल० के ख़लीफ़ा ! मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि ईमान वालों का सबसे अफ़ज़ल अमल अल्लाह के रास्ते में जिहाद है, इसलिए मैंने यह इरादा कर लिया है कि मैं मौत तक अल्लाह के रास्ते में रहूंगा।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ बिलाल ! मैं तुम्हें अल्लाह का और अपनी इज़्ज़त का और अपने हक़ का वास्ता देकर कहता हूं कि मेरी उम्र ज़्यादा हो गई है और मेरी ताक़तें कमज़ोर हो गई हैं और मेरे जाने का वक़्त क़रीब आ गया है। (इसलिए तुम न जाओ)।

चुनांचे हज़रत बिलाल रज़ि० रुक गए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के साथ रहते रहे। जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत बिलाल रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से जिहाद में जाने की इजाज़त मांगी।

हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० जैसा जवाब दिया, लेकिन हज़रत बिलाल रज़ि० रुकने के लिए तैयार न हुए, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ बिलाल ! अज़ान के लिए किसे मुक़र्रर करूं ?

हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा, हज़रत साद (क़ुरज़) को, क्योंकि वह हज़रत मुहम्मद सल्ल० के ज़माने में क़ुबा में अज़ान देते रहे हैं। चुनांचे हज़रत उमर ने हज़रत साद को अज़ान के लिए मुक़र्रर फ़रमाया और यह फ़ैसला कर लिया कि इसके बाद उनकी औलाद अज़ान देगी।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी कहते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० का विसाल हो गया, तो हुज़ूर सल्ल० के दफ़न होने से पहले हज़रत बिलाल रज़ि० ने अज़ान दी। जब उन्होंने (अज़ान में) अश्हदु अन-न मुहम्मदर-रसूलुल्लाह कहा, तो मस्जिद में तमाम लोग रो पड़े। जब हुज़ूर सल्ल० दफ़न हो गए, तो उनसे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, अज़ान कहो।

तो हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा, अगर आपने मुझे इसलिए

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 274, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 168

आज़ाद किया था, ताकि मैं आपके साथ (ज़िंदगीभर) रहूं। तो फिर तो ठीक है। (आपके फ़रमाने पर मैं आपके साथ रहा करूंगा और अज़ान देता रहूंगा) लेकिन अगर आपने मुझे अल्लाह के लिए आज़ाद किया था, तो मुझे उस ज़ात के लिए यानी अल्लाह के लिए छोड़ दें, जिसके लिए आपने मुझे आज़ाद किया था।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैंने तो तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए आज़ाद किया था।

हज़रत बिलाल रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० के बाद मैं अब किसी के लिए अज़ान देना नहीं चाहता हूं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, इसका तुम्हें अख़्तियार है। फिर हज़रत बिलाल रज़ि० मदीना ठहर गए।

जब शाम की ओर फ़ौज जाने लगी तो हज़रत बिलाल भी उनके साथ चले गए और शामदेश पहुंच गए।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ि० कहते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० जुमा के दिन मिंबर पर बैठे, तो उनसे हज़रत बिलाल ने कहा, ऐ अबूबक्र !

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, लब्बैक ! हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा, आपने मुझे अल्लाह के लिए आज़ाद किया था या अपने लिए?

हज़रत अबूबक्र ने फ़रमाया, अल्लाह के लिए।

हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा, आप मुझे अल्लाह के रास्ते में जाने की इजाज़त दे दें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उन्हें इजाज़त दे दी। चुनांचे वह मुल्क शाम चले गए और वहां ही उनका इंतिक़ाल हुआ।[1]

हज़रत अबू यज़ीद मक्की कहते हैं कि हज़रत अबू अय्यूब और हज़रत मिक़्दाद रज़ि० फ़रमाया करते थे कि हमें इस बात का हुक्म दिया गया है कि हम हर हाल में (अल्लाह के रास्ते में) निकलें।

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 150

انْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا

'इंफिरू ख़िफ़ाफ़ंव-व सिक़ालन'

वाली आयत की वह यही तफ़्सीर बयान किया करते थे।[1]

हज़रत अबू राशिद हुबरानी रह० कहते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० के घुड़सवार हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ि० से मिला, वह हिम्स में सर्राफ़ के एक संदूक़ पर बैठे हुए थे, चूंकि जिस्म भारी हो चुका था, इसलिए उनका जिस्म ताबूत से बाहर निकला हुआ था (और इस हाल में भी) उनका अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए जाने का इरादा था। मैंने उनसे कहा, अल्लाह ने आपको माज़ूर क़रार दिया है।

उन्होंने फ़रमाया, सूरः बुहूस की आयत—

انْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا

ने हमारे हर तरह के उज़्र ख़त्म कर दिए हैं।[2]

हज़रत जुबैर बिन नुफ़ैर कहते हैं कि हम लोग दमिश्क़ में हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ि० के पास बैठे हुए थे और वह एक संदूक़ पर बैठे हुए थे। संदूक़ की कोई जगह ख़ाली नहीं थी। (उनका जिस्म इतना भारी हो चुका था कि उनके जिस्म से सारा संदूक़ भी भर गया था, बल्कि उनके जिस्म का कुछ हिस्सा संदूक़ से बाहर भी था)

उनसे एक आदमी ने कहा, इस साल आप जिहाद में न जाएं (घर ही में रह जाएं)

उन्होंने फ़रमाया, सूरः बुहूस (यानी सूरः तौबा) हमें ऐसा करने से रोकती है।

अल्लाह ने फ़रमाया है—

انْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا

'मैं तो अपने आपको हल्का ही पाता हूं। (इसलिए जाना ज़रूरी है)'[3]

---

1. हुलीया, भाग 9, पृ० 47
2. हुलीया, भाग 9, पृ० 47
3. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 21

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने सूरः बरात पढ़नी शुरू की, जब अल्लाह के इस क़ौल—

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا

पर पहुंचे, तो फ़रमाया, मुझे तो यही नज़र आ रहा है कि अल्लाह यह चाहते हैं कि हम जवान हों या बूढ़े, दोनों हालतों में (अल्लाह के रास्ते में) निकलें। ऐ मेरे बेटो ! (अल्लाह के रास्ते में जाने के लिए) मुझे तैयार करो। उनके बेटों ने उनसे कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए। आप हुज़ूर सल्ल० के साथ जिहाद में शरीक रहे, यहां तक कि उनकी वफ़ात हो गई और फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० के साथ जिहाद किया, यहां तक कि उनका इंतिक़ाल हो गया और फिर हज़रत उमर रज़ि० के साथ जिहाद किया। (आप तो अल्लाह के रास्ते में बहुत जा चुके हैं। अब आप न जाएं) आप हमें अपनी तरफ़ से जिहाद में जाने दें।

उन्होंने फ़रमाया, नहीं। तुम लोग मुझे (जिहाद में जाने के लिए) तैयार करो। चुनांचे जिहाद में उन्होंने समुद्र का सफ़र किया और समुद्र ही में उनका इंतिक़ाल हो गया और सात दिन के बाद उनके साथियों को एक जज़ीरा (द्वीप) मिला, जिसमें उन्हें दफ़न किया। (इतने दिन गुज़रने के बाद भी) उनके जिस्म में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं पड़ा था (उनका जिस्म गलने से बचा रहा, यह उनकी करामत है)[1]

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रह० बयान करते हैं कि हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के साथ बद्र की लड़ाई में शरीक हुए। इसके बाद वह मुसलमानों की हर लड़ाई में शरीक होते रहे, लेकिन एक साल फ़ौज का अमीर एक नवजवान को बना दिया गया। इस वजह से वह उस साल लड़ाई में न गए, लेकिन इस साल के बाद वह हमेशा अफ़सोस करते रहे और तीन बार फ़रमाया करते कि मुझे इससे क्या ग़रज़ कि मेरा अमीर किसको बनाया गया है? (मेरी ग़रज़ तो मुसलमानों के साथ अल्लाह की राह में जाना है।)

1. इस्तीआब, भाग 1, पृ० 550, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 66, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 21, हाकिम, भाग 3, पृ० 353, मज्मा, भाग 9, पृ० 312

चुनांचे इसके बाद वह एक लड़ाई में गए (जिसमें) वह बीमार हो गए और फ़ौज का अमीर यज़ीद बिन मुआविया था, वह उनके पूछना के लिए उनके पास आया, और उसने पूछा कि आपको किस चीज़ की ज़रूरत है?

उन्होंने फ़रमाया, मुझे इस बात की ज़रूरत है कि जब मैं मर जाऊं, तो मेरी लाश को किसी सवारी पर रख देना और जहां तक हो सके, मुझे दुश्मन के इलाक़े में ले जाना और जब आगे ले जाने का रास्ता न मिले, तो वहां मुझे दफ़न कर देना और वहां से तुम वापस आ जाना, चुनांचे जब उनका इंतिक़ाल हो गया तो यज़ीद ने उनकी लाश को एक सवारी पर रखा और दुश्मन के इलाक़े में लेकर गया और जब आगे ले जाने का रास्ता न मिला तो उनको वहां दफ़न कर दिया और वहां से वापस हो गया और हज़रत अबू अय्यूब फ़रमाया करते थे कि अल्लाह ने फ़रमाया है—

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا

तुम हलके हो या भारी। हर हाल में (अल्लाह की राह में) निकलो। इसलिए मैं अपने आपको हलका पाऊं या बोझल, (मुझे हर हाल में निकलना चाहिए)।[1]

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० हज़रत मुआविया रज़ि० के ज़माने में एक लड़ाई में गए और बीमार हो गए। जब ज़्यादा बीमार हो गए तो अपने साथियों से फ़रमाया कि जब मैं मर जाऊं तो मुझे सवारी पर ले चलना। जब तुम दुश्मन के सामने सफ़ें बांधने लगो तो अपने क़दमों में दफ़न कर देना।

चुनांचे इन लोगों ने ऐसा ही किया। आगे और हदीस भी है।[2]

हज़रत अबू ज़िबयान कहते हैं कि हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० यज़ीद बिन मुआविया के साथ एक लड़ाई में गए। हज़रत अबू अय्यूब ने फ़रमाया, जब मैं मर जाऊं तो मुझे दुश्मन की ज़मीन में ले

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 458, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 49, इसाबा, भाग 1, पृ० 405
2. इस्तीआब, भाग 1, पृ० 404

जाना और जहां तुम दुश्मन से मुक़ाबला करने लगो, वहां मुझे अपने क़दमों के नीचे दफ़्न कर देना। मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि जो इस हाल में मरेगा कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को भी शरीक नहीं कर रहा होगा, तो वह जन्नत में दाख़िल होगा।[1]

इब्ने इस्हाक़ बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के (तबूक की लड़ाई में) तशरीफ़ ले जाने के कुछ दिनों बाद हज़रत अबू ख़ैशमा रज़ि० अपने घर वापस आए। उस दिन सख़्त गर्मी पड़ रही थी। उन्होंने देखा कि उनके बाग़ में उनकी दो बीवियां अपने-अपने छप्पर के अन्दर हैं और हर एक ने अपने-अपने छप्पर में छिड़काव कर रखा है और हर एक ने उनके लिए ठंडा पानी और खाना तैयार कर रखा है।

चुनांचे जब ये अन्दर गए तो छप्पर के दरवाज़े पर खड़े होकर उन्होंने अपनी बीवियों पर और उन तमाम नेमतों पर नज़र डाली जो उनकी बीवियों ने तैयार कर रखी थीं और यों कहा कि हुज़ूर सल्ल० तो धूप में, लू में और सख़्त गर्मी में हों और अबू ख़ैशमा ठंडे साए और तैयार खाने और ख़ूबसूरत बीवियों में हो और अपने माल व सामान में ठहरा हुआ हो। यह हरगिज़ इंसाफ़ की बात नहीं है।

इसके बाद कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं तुम दोनों में से किसी के छप्पर में दाख़िल नहीं हूंगा। मैं तो सीधा हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाऊंगा, तुम दोनों मेरे लिए सफ़र का सामान तैयार कर दो। चुनांचे उन्होंने तैयार कर दिया।

फिर अपनी ऊंटनी के पास आए और इस पर कजावा कसा, फिर हुज़ूर सल्ल० की खोज में चल पड़े और हुज़ूर सल्ल० जब तबूक पहुंचे ही थे, तो यह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच गए।

रास्ते में हज़रत उमैर बिन वह्ब जुमही रज़ि० की उनसे मुलाक़ात हुई थी, वह भी हुज़ूर सल्ल० की खोज में निकले हुए थे। वहां से आगे ये दोनों लोग इकट्ठे चलते रहे। तबूक के क़रीब आकर हज़रत अबू ख़ैशमा ने हज़रत उमैर बिन वह्ब से कहा, मुझसे एक ग़लती हुई है।

1. बिदाया, भाग 8, पृ० 59, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 49

इसलिए मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जल्दी हाज़िर होना चाहता हूं (और चूंकि तुमसे कोई ग़लती नहीं हुई है, इसलिए अगर) तुम ठहरकर आओ तो इसमें कोई हरज नहीं है, (इसलिए मुझे पहले जाने दो)

चुनांचे उन्होंने उसे मंज़ूर कर लिया। जब यह हुज़ूर सल्ल० के क़रीब पहुंचे तो आप तबूक में ठहरे हुए थे, लोगों ने कहा, यह रास्ते में एक सवार आ रहा है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ुदा करे यह अबू ख़ैशमा हो।

सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह की क़सम ! वाक़ई यह अबू ख़ैशमा हैं। जब यह अपनी सवारी बिठा चुके, तो उन्होंने आकर हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, ऐ अबू ख़ैशमा ! तेरा नास हो, फिर उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को सारी बात बताई। हुज़ूर सल्ल० ने उनके बारे में अच्छे कलिमे कहे और उनके लिए भली दुआ फ़रमाई।[1]

हज़रत साद बिन ख़ैशमा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं पीछे रह गया और हुज़ूर सल्ल० के साथ न जा सका, एक दिन मैं बाग़ में आया। मैंने देखा कि छप्पर में पानी छिड़का हुआ है और वहां मेरी बीवी मौजूद है।

मैंने कहा, यह तो इंसाफ़ नहीं है कि हुज़ूर तो लू और गर्म हवा में हों और मैं इस साए और इन नेमतों में। मैं खड़े होकर अपनी ऊंटनी की ओर गया और उस पर कजावे के पीछे सफ़र का सामान बांधा और खजूरों का तोशा लिया।

मेरी बीवी ने पुकारकर पूछा, ऐ अबू ख़ैशमा ! कहां जा रहे हो ?

मैंने कहा हुज़ूर सल्ल० के पास जाने का इरादा है। चुनांचे मैं इस इरादे से चल पड़ा। मैं अभी रास्ते में था कि हज़रत उमैर बिन वह्ब से मुलाक़ात हुई।

मैंने उनसे कहा, तुम बहादुर आदमी हो और मुझे वह जगह मालूम है, हुज़ूर सल्ल० जहां हैं और मैं गुनाहगार आदमी हूं, तुम थोड़ा पीछे हट

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 7

जाओ, ताकि मैं हुज़ूर सल्ल० से तंहाई में मिल लूं। हज़रत उमैर रज़ि० पीछे रह गए।

चुनांचे मैं जब फ़ौज के क़रीब पहुंचा तो लोगों ने मुझे देख लिया और हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ुदा करे यह अबू ख़ैशमा हो।

मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं तो हलाक हो चला था और फिर मैंने अपना सारा क़िस्सा बयान किया। आपने मेरे बारे में कलिमाते ख़ैर फ़रमाए और मेरे लिए दुआ फ़रमाई।[1]

अल्लाह के रास्ते में निकलने और माल ख़र्च करने की ताक़त न रखने पर सहाबा किराम रज़ि० का ग़मगीन होना

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि मुझे यह रिवायत पहुंची है कि हज़रत इब्ने यामीन नसरी रज़ि० की हज़रत अबू लैला और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ि० से मुलाक़ात हुई। वे दोनों रो रहे थे।

इब्ने यामीन ने पूछा, आप दोनों क्यों रो रहे हैं?

उन दोनों ने फ़रमाया कि हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए थे, ताकि आप हमें (अल्लाह के रास्ते में जाने के लिए) सवारी दे दें, लेकिन हमने आपके पास कोई सवारी न पाई, जो आप हमें दे देते और हुज़ूर सल्ल० के साथ जाने के लिए हमारे पास भी कुछ नहीं था। (चूंकि हुज़ूर सल्ल० के साथ जाने के लिए हमारा कोई इंतिज़ाम नहीं हो सका, इस वजह से हम लोग रो रहे हैं)

चुनांचे हज़रत इब्ने यामीन ने इन लोगों को अपनी ऊंटनी दे दी और सफ़र के लिए कुछ खजूरों का तोशा भी दिया। इन दोनों ने इस ऊंटनी पर कजावा कसा और हुज़ूर सल्ल० के साथ गए।

यूनुस बिन बुकैर ने इब्ने इस्हाक़ से रिवायत में यह भी नक़ल किया है कि हज़रत उलबा बिन ज़ैद रज़ि० (का हुज़ूर सल्ल० के साथ जाने

1. मज्मा, भाग 6, पृ० 192, हैसमी, भाग 6, पृ० 193

का कोई इंतिज़ाम न हो सका तो) रात को निकले और काफ़ी देर तक रात में नमाज़ पढ़ते रहे, फिर रो पड़े और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह ! आपने जिहाद में जाने का हुक्म दिया है और उसकी तर्ग़ीब दी है, फिर आपने न मुझे इतना दिया कि मैं इससे जिहाद में जा सकूं और न अपने रसूल को सवारी दी, जो मुझे (जिहाद में जाने के लिए) दे देते।

इसलिए किसी भी मुसलमान ने माल या जान या इज़्ज़त के बारे में मुझ पर ज़ुल्म किया हो, वह माफ़ कर देता हूं और इस माफ़ करने का अज्र व सवाब तमाम मुसलमानों को सदक़ा कर देता हूं और फिर यह सुबह लोगों में जा मिले।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आज रात को सदक़ा करने वाला नहीं है? तो कोई न खड़ा हुआ।

आपने दोबारा फ़रमाया, सदक़ा करने वाला कहां है? खड़ा हो जाए। चुनांचे हज़रत उलबा ने खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० को अपना सारा वाक़िया सुनाया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, उस ज़ात की क़सम ! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम्हारा यह सदक़ा मक़्बूल ख़ैरात में लिखा गया है।[1]

हज़रत अबू अब्स बिन जब्र कहते हैं कि हज़रत उलबा बिन ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० में से हैं। जब हुज़ूर सल्ल० ने सदक़ा करने की तर्ग़ीब दी तो हर आदमी अपनी हैसियत के मुताबिक़ जो उसके पास था, वह लाने लगा।

हज़रत उलबा बिन ज़ैद ने कहा, ऐ अल्लाह ! मेरे पास सदक़ा करने के लिए कुछ भी नहीं है। ऐ अल्लाह ! तेरी मख़्लूक़ में से जिसने भी मेरी आबरू ख़राब की है, मैं उसे सदक़ा करता हूं। (यानी उसे माफ़ करता हूं)

हुज़ूर सल्ल० ने एक मुनादी को हुक्म दिया, जिसने यह एलान किया कि कहां है वह आदमी जिसने पिछली रात अपनी आबरू का

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 5, इसाबा, भाग 3, पृ० 500

सदक़ा किया है? इस पर हज़रत उलबा खड़े हुए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारा सदक़ा क़ुबूल हो गया।[1]

अल्लाह के रास्ते में निकलने में देर करने पर नापसंदीदगी ज़ाहिर

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने मूता लड़ाई के लिए एक जमाअत को भेजा, जिनका अमीर हज़रत ज़ैद को बनाया और फ़रमाया कि अगर हज़रत ज़ैद शहीद हो जाएं, तो हज़रत जाफ़र अमीर होंगे और अगर हज़रत जाफ़र शहीद हो जाएं, तो हज़रत इब्ने रवाहा अमीर होंगे।

हज़रत इब्ने रवाहा ठहर गए और हुज़ूर सल्ल० के साथ जुमा की नमाज़ पढ़ी, हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें देखा, तो फ़रमाया, तुम क्यों ठहर गए और अपनी जमाअत से पीछे रह गए?

उन्होंने कहा, आपके साथ जुमा पढ़ने की वजह से। इस पर आपने फ़रमाया, अल्लाह के रास्ते में एक सुबह या एक शाम लगा देना दुनिया और उसकी चीज़ों से बेहतर है।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि० को एक फ़ौज में भेजा। इस फ़ौज की रवानगी जुमा के दिन हुई तो हज़रत इब्ने रवाहा ने अपने साथियों को आगे भेज दिया और कहा, मैं ज़रा पीछे रुक जाता हूं। हुज़ूर सल्ल० के साथ जुमा पढ़कर फिर उस फ़ौज से जा मिलूंगा।

हुज़ूर सल्ल० जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो उनको देखा। आपने फ़रमाया, तुम अपने साथियों के साथ सुबह क्यों नहीं गए?

उन्होंने कहा, मैंने यह सोचा कि आपके साथ जुमा की नमाज़ पढ़ लूं, फिर अपनी फ़ौज से जा मिलूंगा।

आपने फ़रमाया, जो कुछ ज़मीन में है, अगर तुम वह सारा भी ख़र्च

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 80
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 242, कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 308

कर दो, तो भी तुम उनकी इस सुबह (के सवाब) को नहीं पा सकते हो।[1]

हज़रत मुआज़ बिन अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अक़्दस सल्ल० ने अपने सहाबा रज़ि० को एक लड़ाई में जाने का हुक्म दिया। तो एक आदमी ने अपने घरवालों से कहा, मैं तनिक ठहर जाता हूं, ताकि हुज़ूर सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ लूं। फिर आपको सलाम और आपको विदा कहकर चला जाऊंगा, तो हो सकता है, हुज़ूर सल्ल० मेरे लिए कोई ऐसी दुआ फ़रमा दें जो क़ियामत के दिन पहले से पहुंचकर काम आने वाली चीज़ हो।

जब हुज़ूर सल्ल० नमाज़ पढ़ चुके, तो यह सहाबी आपको सलाम करने के लिए आगे बढ़े। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, क्या तुम जानते हो, तुम्हारे साथी तुमसे कितना आगे निकल गए?

उन्होंने कहा, जी हां। वे लोग आज सुबह गए हैं यानी आधे दिन जितना मुझसे आगे निकले हैं।

आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, वह अज्र व सवाब के एतबार से फ़ज़ीलत में तुमसे इससे भी ज़्यादा आगे निकल गए हैं जितना कि पूरब व पश्चिम के बीच दूरी है।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने एक फ़ौज को जाने का हुक्म दिया। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या हम अभी रात को चले जाएं या फ़रमाएं तो रात यहां ठहरकर सुबह चले जाएं?

आपने फ़रमाया, क्या तुम यह नहीं चाहते हो कि तुम जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में यह रात गुज़ारो।[3]

हज़रत अबू ज़ुरआ बिन अम्र बिन जरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने एक फ़ौज भेजी। इसमें हज़रत मुआज़ बिन जबल

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 242
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 284
3. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 158, हैसमी, पृ० 276

रज़ि० भी थे। जब वह फ़ौज चली गई, तो हज़रत उमर की हज़रत मुआज़ पर निगाह पड़ी। उनसे पूछा, तुम यहां क्यों रुक गए?

उन्होंने कहा, मैंने यह सोचा कि जुमा की नमाज़ पढ़कर फिर चला जाऊंगा,(और फ़ौज को जा मिलूंगा)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुमने हुज़ूर सल्ल० से यह नहीं सुना कि अल्लाह के रास्ते में एक सुबह या एक शाम दुनिया और उसकी चीज़ों से बेहतर है।[1]

अल्लाह के रास्ते में पीछे रह जाने और उसमें कोताही करने पर सज़ा

हज़रत काब बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं तबूक की लड़ाई के अलावा और किसी लड़ाई में हुज़ूर सल्ल० (के साथ जाने) से पीछे नहीं रहा। हां, बद्र की लड़ाई में भी पीछे रह गया था, लेकिन इस लड़ाई में पीछे रह जाने की वजह से अल्लाह ने किसी पर सज़ा नहीं फ़रमाया, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० तो सिर्फ़ अबू सुफ़ियान के तिजारती क़ाफ़िले का मुक़ाबले करने (और उससे तिजारत का माल ले लेने) के इरादे से निकले थे। (लड़ाई करने का इरादा ही नहीं था)

अल्लाह ने मुसलमानों का दुश्मन से अचानक मुक़ाबला करा दिया, पहले से लड़ाई का कोई इरादा और प्रोग्राम नहीं था और मैं अक़बा की इस रात को हुज़ूर सल्ल० के साथ था, जिस रात हुज़ूर सल्ल० से हमने इस्लाम पर चलने का पक्का इरादा किया था और मुझे यह बात पसन्द नहीं है कि अक़बा की यह रात मुझे न मिलती और उसके बदले में बद्र की लड़ाई में मैं शरीक हो जाता, अगरचे लोगों में बद्र की लड़ाई की शोहरत उस रात से ज़्यादा है और (तबूक की लड़ाई में) मेरा क़िस्सा (यानी मेरे शरीक न होने का क़िस्सा) यह है कि तबूक से पहले किसी लड़ाई में मैं इतना ताक़तवर और मालदार नहीं था जितना कि तबूक से पीछे रह जाने के वक़्त था।

---

1. कंज़ुल उम्माल [illegible]

अल्लाह की क़सम ! इससे पहले कभी भी मेरे पास दो ऊंटनियां होने की नौबत नहीं आई थी और इस लड़ाई में मेरे पास दो ऊंटनियां थीं।

और हुज़ूर सल्ल० की आदत यह थी कि जिस ओर की लड़ाई का इरादा होता था, उसका इज़्हार न फ़रमाते, बल्कि हमेशा दूसरी तरफ़ के हालात वग़ैरह मालूम करते, ताकि लोग यह समझें कि दूसरी ओर जाना चाहते हैं, मगर चूंकि इस लड़ाई में गर्मी भी तेज़ थी और सफ़र भी दूर का था और रास्ते में बयाबान और जंगल पड़ते थे और दुश्मन की तायदाद भी बहुत ज़्यादा थी, इसलिए आपने साफ़ एलान फ़रमा दिया (कि तबूक जाना है) ताकि लोग इस सफ़र की पूरी तैयारी कर लें और जहां का आपका इरादा था, वह आपने साफ़ बता दिया।

और हुज़ूर सल्ल० के साथ मुसलमानों की तायदाद भी बहुत थी कि रजिस्टर में उनका नाम लिखना मुश्किल था। (और मज्मा की ज़्यादती की वजह से) कोई आदमी छिपना चाहता कि मैं न जाऊं और किसी को पता न चले, तो यह मुश्किल न था और वह यह समझता कि यह मामला उस वक़्त तक छिपा रहेगा, जब तक अल्लाह उसके बारे में अल्लाह की ओर से वह्य न उतारे।

आप इस लड़ाई में उस वक़्त तशरीफ़ ले गए जबकि फल बिल्कुल पक रहे थे और साए में बैठना हर एक को अच्छा लग रहा था। हुज़ूर सल्ल० और आपके साथ मुसलमान तैयारी कर रहे थे। मैं सुबह जाता ताकि मुसलमानों के साथ मैं भी तैयारी कर लूं, लेकिन जब वापस आता, तो किसी क़िस्म की तैयारी की नौबत न आती और मैं अपने दिल में यह ख़्याल करता कि मुझे कुदरत और वुस्अत हासिल है (जब इरादा करूंगा, तैयार होकर निकल जाऊंगा)

मेरा मामला यों ही लम्बा होता रहा और तैयारी में देर होती रही। लोग ख़ूब ज़ोर-शोर से तैयारी करते रहे और आख़िर हुज़ूर सल्ल० मुसलमानों को साथ लेकर रवाना हो गए और मेरी अभी कुछ भी तैयारी नहीं हुई थी। मैंने अपने दिल में कहा कि मैं एक दो दिन में तैयार हो जाऊंगा और उस फ़ौज से जा मिलूंगा।

चुनांचे फ़ौज के रवाना होने के बाद मैं सुबह तैयार होने गया, लेकिन वापस आया तो किसी क़िस्म की तैयारी नहीं हुई थी। फिर मैं अगली सुबह तैयार होने गया लेकिन वापस आया तो कोई तैयारी न हुई थी। मेरे साथ ऐसे ही होता रहा और मुसलमान बहुत तेजी से इस लड़ाई में चले और आख़िर लड़ाई में शरीक होने का वक़्त मेरे हाथ से निकल गया और मैंने इरादा भी किया कि रवाना हो जाऊं और फ़ौज से जा मिलूं और काश मैं ऐसा कर लेता। लेकिन ऐसा करना मेरे मुक़द्दर में न था।

हुज़ूर सल्ल० के तशरीफ़ ले जाने के बाद जब मैं बाहर निकलकर लोगों में घूमता फिरता तो इस बात से बड़ा दुख होता कि मुझे सिर्फ़ वही नज़र आते जिन पर निफ़ाक़ का धब्बा लगा हुआ होता या जिन कमज़ोरों को अल्लाह ने माज़ूर क़रार दिया हुआ था।

तबूक पहुंचने तक हुज़ूर सल्ल० ने मेरा ज़िक्र न किया। तबूक में पहुंचने के बाद आप एक मज्लिस में बैठे हुए थे। आपने फ़रमाया, काब का क्या हुआ?

बनू सलिमा के एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! माल व जमाल की पकड़ ने उसे रोक दिया।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० ने कहा, तुमने ग़लत बात कही, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह की क़सम ! हम जहां तक समझते हैं, वह भला आदमी है। हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश हो गए।

जब मुझे यह ख़बर मिली कि हुज़ूर सल्ल० वापस तशरीफ़ ला रहे हैं, तो मुझे रंज व ग़म सवार हुआ और बड़ा फ़िक्र हुआ, दिल में झूठे-झूठे उज्र आते थे और मैं कहता था कि कल को कौन-सा उज्र बयान करके मैं हुज़ूर सल्ल० के ग़ुस्से से जान बचा लूं और इस बारे में मैंने अपने घराने के हर समझदार आदमी से मश्विरा लिया।

जब मुझे यह कहा गया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बस आने ही वाले हैं, तो इधर-उधर के सब ग़लत ख़्याल छट गए और मैंने समझ लिया कि झूठ बोलकर मैं अपनी जान नहीं बचा सकता हूं

और मैंने फ़ैसला कर लिया कि हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में सच्ची बात अर्ज़ करूंगा।

चुनांचे आप तशरीफ़ ले आए। जब आप सफ़र से तशरीफ़ लाया करते, तो सबसे पहले मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और दो रक्अत नमाज़ अदा फ़रमाते, फिर लोगों से मिलने के लिए बैठ जाते। चुनांचे आदत के मुताबिक़ नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप जब मस्जिद में बैठ गए तो इस लड़ाई से पीछे रह जाने वाले लोग आपकी ख़िदमत में आए और क़समें खाकर अपने उज़्र बयान करने लगे। उनकी तायदाद अस्सी से ज़्यादा थी। हुज़ूर सल्ल० ने उनके ज़ाहिरे हाल को क़ुबूल फ़रमा लिया और उनको बैअत फ़रमाया, और उनके लिए इस्तग़फ़ार किया और उनके बातिन को अल्लाह के सुपुर्द किया।

चुनांचे मैं भी आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। जब मैंने आपको सलाम किया तो आप नाराज़ी के अन्दाज़ में मुस्कराए, फिर फ़रमाया, आओ। चुनांचे मैं चलकर आपके सामने बैठ गया।

आपने मुझसे फ़रमाया, तुम पीछे क्यों रह गए? क्या तुमने सवारियां नहीं ख़रीद रखी थीं?

मैंने कहा, जी हां, अल्लाह की क़सम! अगर मैं दुनिया वालों में से किसी के पास उस वक़्त होता तो मैं उसके ग़ुस्से से माक़ूल उज़्र के साथ जान बचा लेता, क्योंकि अल्लाह ने मुझे ज़ोरदार बात करने का सलीक़ा दे रखा है, लेकिन अल्लाह की क़सम! मुझे मालूम है कि अगर आज मैं आपसे ग़लतबयानी करके आपको राज़ी कर लूं तो अल्लाह (आपको सही हक़ीक़त बताकर) बहुत जल्द मुझसे नाराज़ कर देंगे और अगर मैं आपसे सच बोल दूंगा, तो अगरचे आप इस वक़्त मुझसे नाराज़ हो जाएंगे, लेकिन मुझे अल्लाह से उम्मीद है कि वह मुझे माफ़ कर देंगे। अल्लाह की क़सम! मुझे कोई उज़्र नहीं था और अल्लाह की क़सम! मैं इस बार जो आपसे पीछे रह गया था, मैं उस वक़्त जितना ताक़तवर और मालदार था, इससे पहले कभी इतना नहीं था।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस आदमी ने सच कहा है और आपने

फ़रमाया, अच्छा, उठ जाओ, तुम्हारा फ़ैसला अब अल्लाह ही ख़ुद करेंगे। चुनांचे मैं वहां से उठा, तो (मेरे क़बीला) बनू सलिमा के बहुत-से लोग एकदम उठे और मेरे पीछे हो लिए और उन्होंने मुझसे से कहा, हमें नहीं मालूम कि तुमने इससे पहले गुनाह किया हो और तुमसे इतना नहीं हो सका कि जैसे और पीछे रह जानेवालों ने उज़्र पेश किए, तुम भी हुज़ूर सल्ल० के सामने उज़्र पेश कर देते, तो हुज़ूर सल्ल० का तुम्हारे लिए इस्तग़फ़ार फ़रमाना तुम्हारे लिए काफ़ी हो जाता।

अल्लाह की क़सम! वे लोग मुझे मलामत करते रहे, यहां तक कि मेरा इरादा हो गया कि मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस जाकर अपनी पहली बात को झुठला दूं, लेकिन मैंने उनसे पूछा, क्या ऐसा मामला मेरे अलावा किसी और के साथ भी पेश आया है?

उन्होंने कहा, हां, और दो आदमियों के साथ भी पेश आया है। उन्होंने भी वही बात कही है, जो तुमने कही है और उनसे भी वही कहा गया है, जो तुमसे कहा गया है।

मैंने पूछा, वे दोनों कौन हैं?

उन्होंने कहा, मुरारह बिन रबीअ अमरी और हिलाल बिन उमैया वाक़िफ़ी। चुनांचे उन्होंने मेरे सामने ऐसे दो आदमियों का नाम लिया जो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे। वे दोनों मेरे शरीके हाल हैं।

जब उन लोगों ने इन दोनों का मेरे सामने नाम लिया, तो मैं वहां से चला गया।

हुज़ूर सल्ल० ने साथ न जाने वालों में से हम तीनों से बात करने से, मुसलमानों को रोक दिया गया। चुनांचे लोगों ने हमसे बोलना छोड़ दिया और सारे लोग हमारे लिए बदल गए, यहां तक कि मुझे ज़मीन बदली हुई नज़र आने लगी कि यह वह ज़मीन नहीं है जिसे मैं पहले से पहचानता हूं।

हमने पचास दिन इसी हाल में गुज़ारे। मेरे दोनों साथी तो आजिज़ बनकर घर बैठ गए और वे रोते रहते थे। मैं इन सबमें जवान और ज़्यादा ताक़तवर था, इसलिए मैं बाहर आता था और मुसलमानों के

साथ नमाज़ में शरीक होता था और बाज़ारों में चलता-फिरता था और कोई मुझसे बात नहीं करता था। मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर आपको सलाम करता। आप नमाज़ के बाद अपनी जगह बैठे हुए होते थे और मैं दिल में कहता था कि मेरे सलाम के जवाब में हुज़ूर सल्ल० के होंठ हिले हैं या नहीं।

फिर मैं आपके क़रीब ही नमाज़ पढ़ने लग जाता और नज़र चुराकर आपको देखता रहता, (कि आप भी मुझे देखते हैं या नहीं।) जब मैं नमाज़ मे मशग़ूल हो जाता, तो आप मुझे देखने लग जाते और जब मैं आपकी तरफ़ मुतवज्जह होता तो दूसरी ओर मुंह फेर लेते।

जब लोगों को इस तरह कतराते हुए-बहुत दिन हो गए, तो (तंग आकर एक दिन) मैं चला और हज़रत अबू क़तादा रज़ि० के बाग़ की दीवार पर चढ़ गया, वह मेरे चचेरे भाई थे और मुझे उनसे सबसे ज़्यादा मुहब्बत थी। मैंने उनको सलाम किया। अल्लाह की क़सम ! उन्होंने मेरे सलाम का जवाब न दिया।

मैंने कहा, ऐ अबू क़तादा ! मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूं, क्या तुम्हें मालूम है कि मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता हूं ?

वह ख़ामोश रहे। मैंने उनको दोबारा अल्लाह का वास्ता देकर पूछा, वह फिर ख़ामोश रहे। जब मैंने उनसे तीसरी बार पूछा, तो उन्होंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं।

यह सुनते ही मेरी आंखों से आंसू निकल आए और वहां से लौट आया। यहां तक कि फिर दीवार पर (वापसी के लिए) चढ़ा। इसी दौरान एक दिन मदीना के बाज़ार में जा रहा था कि एक नबती को जो शामदेश से मदीना ग़ल्ला बेचने आया था यह कहते हुए सुना कि कौन मुझे काब बिन मालिक का पता बताएगा ?

लोग मेरी ओर इशारा करने लगे। वह मेरे पास आया और ग़स्सान के बादशाह का ख़त मुझे दिया, जो एक रेशमी कपड़े में लिपटा हुआ था। उसमें लिखा हुआ था, 'मुझे मालूम हुआ है कि तुम्हारे आक़ा ने तुम

पर ज़ुल्म कर रखा है, अल्लाह तुम्हें ज़िल्लत की जगह न रखे और तुम्हें बर्बाद न करे, तुम हमारे पास आ जाओ, हम तुम्हारा हर तरह ख़्याल करेंगे।'

जब मैंने ख़त पढ़ा, तो मैंने कहा कि यह एक और मुसीबत आ गई (कि मुझे इस्लाम से हटाने की तदबीरें होने लगीं), मैंने इस ख़त को ले जाकर एक तनूर में फूंक दिया।

पचास में से चालीस दिन इसी हाल में गुज़रे कि हुज़ूर सल्ल० का क़ासिद मेरे पास आया और उसने मुझसे कहा, अल्लाह के रसूल सल्ल० तुम्हें हुक्म दे रहे हैं कि तुम अपनी बीवी से अलग हो जाओ।

मैंने कहा, उसे तलाक़ दे दूं या कुछ और करूं?

उसने कहा, नहीं (तलाक़ न दो), बल्कि उससे अलग रहो। उसके क़रीब न जाओ। हुज़ूर सल्ल० ने मेरे दोनों साथियों के पास यही पैग़ाम भेजा। मैंने अपनी बीवी से कहा, तू अपने मैके चली जा। जब तक अल्लाह इसका फ़ैसला न फ़रमाएं, वहीं रहना।

हज़रत हिलाल बिन उमैया की बीवी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! हिलाल बिन उमैया बिल्कुल बूढ़े आदमी हैं, उनका कोई ख़िदमत करने वाला भी नहीं है (अगर मैं उन्हें छोड़कर चली गई तो) वे हलाक हो जाएंगे। क्या आप इसे नागवार समझते हैं कि मैं उनकी ख़िदमत करती रहूं?

आपने फ़रमाया, 'नहीं', बस वे तुम्हारे क़रीब न आएं।

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! इसकी तरफ़ तो उनका झुकाव भी नहीं। जिस दिन से यह घटना घटी है, आज तक उनका वक़्त रोते ही गुज़र रहा है। मुझसे भी मेरे ख़ानदान के कुछ लोगों ने कहा कि जैसे हिलाल बिन उमैया ने अपनी बीवी की ख़िदमत की इजाज़त हुज़ूर सल्ल० से ले ली है, तुम भी अपनी बीवी के बारे में इजाज़त ले लो।

मैंने कहा, नहीं, मैं हुज़ूर सल्ल० से इसकी इजाज़त नहीं लूंगा, क्या पता मैं इसकी इजाज़त लेने जाऊं, तो हुज़ूर सल्ल० क्या फ़रमा दें और मैं जवान आदमी हूं (मैं अपने काम ख़ुद कर सकता हूं)।

इस हाल में दस दिन और गुज़रे हमसे बातचीत छुटे हुए पूरे पचास दिन हो गए, पचासवें दिन की सुबह की नमाज़ पढ़कर मैं अपने एक घर की छत पर बैठा हुआ था और मेरा यह हाल था कि जिसका अल्लाह ने ज़िक्र फ़रमाया है, ज़िंदगी दूभर हो रही थी और कुशादगी के बावजूद ज़मीन मुझ पर तंग हो चुकी थी कि इतने में मैंने एक पुकारने वाले की आवाज़ को सुना जो सला पहाड़ी पर चढ़कर ऊंची आवाज़ से कह रहा था, ऐ काब ! तुम्हें ख़ुशख़बरी हो।

मैं एकदम सज्दे में गिर गया और समझ गया कि कुशादगी आ गई। हुज़ूर सल्ल० ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर लोगों में हमारी तौबा के क़ुबूल होने का एलान फ़रमाया, लोग हमें ख़ुशख़बरी देने के लिए चल पड़े और बहुत से लोगों ने मेरे दोनों साथियों को जाकर ख़ुशख़बरी दी। एक आदमी घोड़ा दौड़ाता हुआ मेरे पास आया। (यह हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० थे)

क़बीला अस्लम के एक आदमी ने तेज़ी से दौड़कर पहाड़ी से आवाज़ दी और आवाज़ घोड़े से पहले पहुंच गई। (यह हज़रत हमज़ा बिन अम्र अस्लमी रज़ि० थे) और जिस आदमी की मैंने आवाज़ सुनी थी, जब वह मुझे ख़ुशख़बरी देने आया, तो मैंने उसे अपने दोनों कपड़े उतारकर (ख़ुशख़बरी देने की ख़ुशी में) दे दिए और अल्लाह की क़सम ! उस वक़्त मेरे पास इनके अलावा और कोई कपड़े नहीं थे।

चुनांचे मैंने किसी से दो कपड़े मांगे और इन्हें पहनकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िरी के लिए चल पड़ा। रास्ते में लोग मुझे गिरोह-दर-गिरोह मिलते और तौबा क़ुबूल होने की मुबारकबाद देते और कहते कि तुम्हें मुबारक हो। अल्लाह ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल फ़रमा ली।

जब मैं मस्जिद में पहुंचा तो हुज़ूर सल्ल० वहां बैठे हुए थे और आपके आस-पास लोग बैठे हुए थे। मुझे देखकर हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० मेरी ओर लपके। उन्होंने मुझसे मुसाफ़ा किया और मुझे मुबारकबाद दी। अल्लाह की क़सम ! मुहाजिरीन में से उनके अलावा और कोई भी मेरी ओर खड़े होकर नहीं आया और हज़रत

तलहा का यह अन्दाज़ मैं कभी नहीं भूल सकता।

जब हुज़ूर सल्ल० को मैंने सलाम किया और ख़ुशी से आपका चेहरा चमक रहा था, तो आपने फ़रमाया कि जबसे तुम पैदा हुए हो, उस वक़्त से लेकर अब तक जो सबसे बेहतरीन दिन तुम्हारे लिए आया है, मैं तुम्हें उसकी ख़ुशख़बरी देता हूं।

मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह आपकी ओर से है या अल्लाह की **ओर** से ?

आपने फ़रमाया, नहीं, बल्कि अल्लाह की ओर से है। जब हुज़ूर सल्ल० ख़ुश होते तो आपका चेहरा चमकने लग जाता था और ऐसा लगता था कि गोया चांद का टुकड़ा है और आपके चेहरे से ही हमें आपकी ख़ुशी का पता चल जाता था।

जब मैं आपके सामने बैठ गया, तो मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरी तौबा की तक्मील यह है कि मेरी सारी जायदाद अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर सदक़ा है, इसमें से अपने पास कुछ नहीं रखूंगा।

आपने फ़रमाया, नहीं, अपने पास भी कुछ रख लो। यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है।

मैंने कहा, मेरा जो हिस्सा ख़ैबर में है, मैं वह अपने पास रख लेता हूं और मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह ने मुझे सच बोलने की वजह से निजात दी है, इसलिए मेरी तौबा की तक्मील यह है कि मैं अह्द करता हूं कि जब तक ज़िंदा रहूंगा, हमेशा सच बोलूंगा। जब से मैंने हुज़ूर सल्ल० के सामने सच बोला है, उस वक़्त से लेकर अब तक मेरे इल्म के मुताबिक़ कोई मुसलमान ऐसा नहीं है जिस पर अल्लाह ने ऐसा बेहतरीन इनाम किया हो जैसा बेहतरीन मुझ पर किया है, और जब से मैंने हुज़ूर सल्ल० से सच बोलने का अह्द किया है, उस दिन से लेकर आज तक मैंने कभी झूठ बोलने का इरादा भी नहीं किया और मुझे उम्मीद है कि आगे भी अल्लाह मुझे झूठ से बचाएंगे और अल्लाह ने अपने रसूल पर इस मौक़े पर ये आयतें उतारीं—

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ —— وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ۝

'अल्लाह मेहरबान हुआ नबी पर और मुहाजिरों और अंसार पर।' से लेकर 'और रहो साथ सच्चों के।' तक

अल्लाह की क़सम! इस्लाम की हिदायत की नेमत के बाद मेरे नज़दीक अल्लाह की सबसे बड़ी नेमत यह नसीब हुई कि मैं हुज़ूर सल्ल० के सामने सच बोला और झूठ नहीं बोला। अगर मैं झूठ बोल देता, तो मैं भी झूठ बोलने वालों की तरह हलाक हो जाता, क्योंकि अल्लाह ने वह्य उतरते वक़्त झूठ बोलने वालों के बारे में बड़ी सख़्त बातें इर्शाद फ़रमाई हैं। अल्लाह ने फ़रमाया—

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ

—— فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ۝

'अब क़समें खाएंगे अल्लाह की तुम्हारे सामने, जब तुम फिरकर जाओगे उनकी तरफ़, ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो, सो तुम दरगुज़र करो, बेशक वे लोग पलीद हैं और उनका ठिकाना दोज़ख़ है। बदला है उनके कामों का। वे लोग क़समें खाएंगे तुम्हारे सामने, ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, सो अगर तुम राज़ी हो गए उनसे, तो अल्लाह राज़ी नहीं होता नाफ़रमान लोगों से।'

हज़रत काब फ़रमाते हैं कि जिन लोगों ने हुज़ूर सल्ल० के सामने झूठी क़समें खाकर अपने झूठे उज़्र पेश किए और हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें क़ुबूल कर लिया और उनको बैअत भी फ़रमाया और हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए इस्तग़फ़ार भी फ़रमाया। हुज़ूर सल्ल० ने हम तीनों का मामला उन लोगों के पीछे डाल दिया, यहां तक कि इस बारे में अल्लाह ही ने फ़ैसला फ़रमाया। इसलिए अल्लाह ने जो यह फ़रमाया है—

وَعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا،

इससे मुराद हम तीनों का लड़ाई से पीछे रह जाना नहीं है, बल्कि इससे मुराद यह है कि जिन लोगों ने हुज़ूर सल्ल० के सामने क़समें खाईं और आपके सामने झूठे उज़्र रखे और हुज़ूर सल्ल० ने उनको क़ुबूल फ़रमा लिया, उनका फ़ैसला तो उसी वक़्त हो गया और हम तीनों के

मामले को हुज़ूर सल्ल० ने पीछे डाल दिया और हमारा फ़ैसला बाद में हुआ।[1]

जिहाद को छोड़कर घर-बार और कारोबार में लग जानेवालों को धमकी

हज़रत अबू इम्रान रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग क़ुस्तुन्तुन्या में थे और मिस्र वालों के अमीर हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ि० थे और शाम वालों के अमीर हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद रज़ि० थे। चुनांचे (क़ुस्तुन्तुन्या) शहर से रूमियों की एक बहुत बड़ी फ़ौज बाहर निकली। हम उनके सामने सफ़ बनाकर खड़े हो गए। एक मुसलमान ने रूमियों पर इस ज़ोर से हमला किया कि वह उनमें घुस गया और फिर उनमें से निकलकर हमारे पास वापस आ गया। यह देखकर लोग चिल्लाए और क़ुरआन मजीद की आयत—

وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ

को सामने रखकर कहने लगे, सुब्हानल्लाह! इस आदमी ने अपने आपको ख़ुद अपने हाथों हलाकत में डाल दिया।

इस पर हुज़ूर सल्ल० के सहाबी हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० खड़े होकर फ़रमाने लगे, ऐ लोगो! तुम इस आयत का यह मतलब समझते हो (कि दुश्मनों में घुस जाना हलाकत है) यह आयत तो हम अंसार के बारे में उतरी थी और इसकी शक्ल यह हुई कि जब अल्लाह ने अपने दीन को इज़्ज़त दे दी और उसके मददगारों की तायदाद बहुत हो गई, तो हम लोगों ने हुज़ूर सल्ल० से छिपकर आपस में यह कहा कि हमारी ज़मीनें ख़राब हो गईं। अब हमें कुछ दिनों लागतार (मदीना में) ठहरकर अपनी ख़राब की हुई ज़मीनों को ठीक कर लेना चाहिए। इस पर अल्लाह ने हमारे इस इरादे को रद्द फ़रमाते हुए यह आयत उतारी—

وَاَنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ

'और ख़र्च करो अल्लाह की राह में और न डालो अपनी जान

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 23, तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 366, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 33

हलाकत में।' इसलिए हलाकत तो इसमें थी कि हम ज़मीनों में ठहरकर उन्हें ठीक करना चाहते थे। चुनांचे हमें अल्लाह के रास्ते में निकलने और लड़ाई में जाने का हुक्म दिया गया और हज़रत अबू अय्यूब अल्लाह के रास्ते में लड़ाई फ़रमाते रहे, यहां तक कि उसी रास्ते में उनका इंतिक़ाल हुआ।[1]

हज़रत अबू इम्रान रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम क़ुस्तुन्तुन्या शहर में दुश्मन से लड़ने गए और जमाअत के अमीर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद बिन वलीद थे और रूमी फ़ौज शहर की दीवार से कमर लगाए हुए खड़ी थी। एक मुसलमान ने दुश्मन पर ज़ोर से हमला किया।

लोगों ने उससे कहा, रुक जाओ, रुक जाओ। ला इला-ह इल्लल्लाह ! यह आदमी अपने हाथों अपने आपको हलाकत में डाल रहा है।

इस पर हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० ने फ़रमाया, यह आयत तो हम अंसार के बारे में उतरी थी। जब अल्लाह ने अपने नबी की मदद फ़रमाई और इस्लाम को ग़ालिब फ़रमा दिया, तो हमने आपस में कहा, आओ हम अपनी ज़मीनों में ठहरकर उन्हें ठीक कर लें, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

وَاَنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ

तो हमारा अपने हाथों ख़ुद को हलाकत में डालने का मतलब यह था कि हम ज़मीनों में ठहरकर उन्हें ठीक करने में लग जाते और अल्लाह के रास्ते के जिहाद को छोड़ देते।

हज़रत अबू इम्रान फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू अय्यूब (ज़िंदगी भर) अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते रहे, यहां तक कि क़ुस्तुन्तुन्या में दफ़न हो गए।[2]

हज़रत अबू इम्रान रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुहाजिरीन में से एक साहब ने क़ुस्तुन्तुन्या में दुश्मन की सफ़ पर ऐसा ज़ोरदार हमला किया कि उसे

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 45
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 99

चीरकर पार चले गए और हमारे साथ हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० भी थे। कुछ लोगों ने कहा कि इस आदमी ने तो अपने आपको अपने हाथों हलाकत में डाल दिया।

इस पर हज़रत अबू अय्यूब ने फ़रमाया, हम इस आयत को (तुम लोगों से) ज़्यादा जानते हैं, क्योंकि यह आयत हमारे बारे में उतरी है। हम हुज़ूर सल्ल० के साथ रहे, हम आपके साथ तमाम लड़ाइयों में शरीक हुए और हमने आपकी भरपूर मदद की। जब इस्लाम फैल गया और ग़ालिब हो गया तो इस्लामी मुहब्बत ज़ाहिर करने के लिए हम अंसार जमा हुए और हमने कहा कि अल्लाह ने हमें अपने नबी करीम सल्ल० की सोहबत में रहने और आपकी मदद करने की दौलत से नवाज़ा, यहां तक कि इस्लाम फैल गया और इस्लाम वाले ज़्यादा हो गए और हमने आपको, अपने ख़ानदान, घर-बार, माल व औलाद सबसे आगे रखा और अब लड़ाइयों का सिलसिला भी बन्द हो गया। अब हम अपने घरवालों में वापस जाते हैं और उनमें रहा करेंगे। (और हम अल्लाह के रास्ते में बाहर कुछ दिनों तक नहीं जाएंगे।) चुनांचे हमारे बारे में यह आयत उतरी—

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ

इसलिए घर-बार और कारोबार, माल व औलाद में ठहर जाने और जिहाद छोड़ देने में हिलाकत थी।[1]

जिहाद छोड़कर खेती-बाड़ी में लग जानेवालों को धमकी और डरावा

हज़रत यज़ीद बिन अबी हबीब रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को यह ख़बर मिली कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुर अनुसी रज़ि० ने शामदेश में खेती का काम शुरू कर दिया है, तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे वह ज़मीन ले ली और दूसरों को दे दी और फ़रमाया जो ज़िल्लत और ख़्वारी इन बड़े लोगों की गरदन में पड़ी हुई

1. इब्ने कसीर, भाग 1, पृ० 229

थी, तुमने जाकर वह अपनी गरदन में डाल ली।[1]

हज़रत यह्या बिन अम्र शैबानी रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० के पास से यमन के कुछ आदमी गुज़रे और उन्होंने उससे पूछा कि आप इस आदमी के बारे में क्या फ़रमाते हैं कि जो मुसलमान हुआ और उसका इस्लाम बहुत अच्छा साबित हुआ, फिर उसने हिजरत की और उसकी हिजरत भी बड़ी उम्दा हुई, फिर उसने बेहतरीन तरीक़े से जिहाद किया, फिर यमन अपने मां-बाप के पास आकर उनकी ख़िदमत में और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने में लग गया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ने फ़रमाया, तुम उसके बारे में क्या कहते हो?

उन्होंने कहा, हमारा ख़्याल यह है कि यह उलटे-पांव फिर गया है।

हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया, नहीं, बल्कि यह तो जन्नत में जाएगा। मैं तुम्हें बताता हूं कि उलटे पांव फिरने वाला कौन है? यह वह आदमी है कि जो मुसलमान हुआ और उसका इस्लाम बहुत अच्छा साबित हुआ और उसने हिजरत की और उसकी हिजरत बड़ी अच्छी हुई, फिर उसने बेहतरीन तरीक़े से जिहाद किया, फिर उसने नबती काफ़िर से ज़मीन लेने का इरादा किया और वह नबती काफ़िर ज़मीन का जितना टैक्स दिया करता था, और इस्लामी फ़ौज के लिए जितना माहाना ख़र्चा दिया करता था, उसने वह ज़मीन भी ले ली और यह टैक्स और ख़र्चा भी अपने ज़िम्मे ले लिया और फिर इस ज़मीन को आबाद करने में लग गया और अल्लाह के रास्ते का जिहाद छोड़ दिया। यह आदमी उलटे-पांव फिरने वाला है।[2]

फ़ित्ना ख़त्म करने के लिए अल्लाह के रास्ते में ख़ूब तेज़ी से चलना

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार हम

1. इसाबा, भाग 3, पृ० 88
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 291

लोग फ़ौज में एक ग़ज़वा में गए हुए थे, एक मुहाजिरी ने एक अंसारी को पीठ पर मुक्का मार दिया।

अंसारी ने कहा, ऐ अंसार! मेरी मदद के लिए आओ और मुहाजिरी ने भी कहा, ऐ मुहाजिरीन! मेरी मदद के लिए आओ।

हुज़ूर सल्ल० ने ये आवाज़ें सुन लीं और फ़रमाया, यह जाहिलियत के ज़माने वाली बातें क्यों हो रही हैं?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! एक मुहाजिरी ने एक अंसारी की पीठ पर मुक्का मार दिया।

आपने फ़रमाया, इन बातों को छोड़ो, ये तो बदबूदार बातें हैं।

अब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक़) ने ये बातें सुनकर कहा, क्या इन मुहाजिरों ने हमारे आदमी को दबाकर अपने आदमी को ऊपर किया है? ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम! अगर हम मदीना वापस चले गए तो इज़्ज़त वाला वहां से ज़िल्लत वाले को निकाल बाहर करेगा। हुज़ूर सल्ल० को यह बात पहुंच गई तो हज़रत उमर रज़ि० ने खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप मुझे इजाज़त दें, तो मैं उस मुनाफ़िक़ की गरदन उड़ा देता हूं।

आपने फ़रमाया, उसे रहने दो। (उसे क़त्ल करने से) कहीं लोगों में यह मशहूर न हो जाए कि मुहम्मद (सल्ल०) अपने साथियों को क़त्ल कर देते हैं। जब मुहाजिरीन शुरू में मदीना आए थे, उस वक़्त अंसार की तायदाद मुहाजिरीन से ज़्यादा थी। बाद में मुहाजिरों की तायदाद ज़्यादा हो गई।[1]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर और हज़रत अम्र बिन साबित अंसारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० मुरीसीअ की लड़ाई में तशरीफ़ ले गए। यह वही लड़ाई है जिसमें आपने मनात बुत को गिराया था। यह बुत क़फ़ा मुशल्लल नामी जगह और समुद्र के बीच में था। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को भेजा था और उन्होंने जाकर मनात बुत तोड़ा था।

1. इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 370

इस लड़ाई में दो मुसलमान आपस में लड़ पड़े। एक मुहाजिरीन में से थे और दूसरे क़बीला बहज़ के थे। यह क़बीला अंसार का मित्र था। मुहाजिरी उस बहज़ी को गिराकर उस पर चढ़ बैठे।

उस बहज़ी आदमी ने कहा, ऐ अंसार के लोगो! इस पर कुछ अंसारी लोग उसकी मदद को आ गए।

और उस मुहाजिरी ने कहा, ऐ मुहाजिरीन की जमाअत! इस पर कुछ मुहाजिरीन उसकी मदद को आए।

इस तरह उन मुहाजिरीन और अंसार के बीच में कुछ लड़ाई-सी हो गई। फिर लोगों ने बीच-बचाव करा दिया। फिर सारे मुनाफ़िक़ और दिलों में खोट रखने वाले लोग अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल मुनाफ़िक़ के पास जाकर कहने लगे, पहले तो तुमसे बड़ी उम्मीदें थीं, और तुम हमारी ओर से बोला करते थे, अब तुम ऐसे हो गए हो कि किसी को न नुक़्सान पहुंचा सकते हो और न नफ़ा। इन जलाबीब यानी ऐरे-ग़ैरे लोगों ने हमारे ख़िलाफ़ एक दूसरे की ख़ूब मदद की। मुनाफ़िक़ीन हर नए हिजरत करके आनेवाले को जलाबीब यानी ऐरा-ग़ैरा कहा करते थे।

अल्लाह के दुश्मन अब्दुल्लाह बिन उबई ने कहा, अल्लाह की क़सम! अगर हम मदीना चले गए तो इज़्ज़त वाला वहां से ज़िल्लत वाले को निकाल देगा।

मुनाफ़िक़ों में से मालिक बिन दुख़शुन ने कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि जो लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जमा हैं, उन पर ख़र्च न करो, ताकि ये सब इधर-उधर बिखर जाएं।

ये सब बातें सुनकर हज़रत उमर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! यह आदमी लोगों को फ़ित्ना में डाल रहा है, मुझे इजाज़त दें, मैं इसकी गरदन उड़ा दूं। यह बात हज़रत उमर अब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में कह रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० से फ़रमाया, अगर मैं तुम्हें

उसको क़त्ल करने का हुक्म दूं, तो क्या तुम उसे क़त्ल कर दोगे ?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, जी हां। अल्लाह की क़सम ! अगर आप मुझे उसके क़त्ल का हुक्म दें, तो मैं ज़रूर उसकी गरदन उड़ा दूंगा।

आपने फ़रमाया, बैठ जाओ। फिर अंसार के क़बीले बनू अब्दुल अशहल के एक अंसारी हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह आदमी लोगों को फ़िल्ने में डाल रहा है, आप मुझे इजाज़त दें, मैं इसकी गरदन उड़ा दूं।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, अगर मैं तुम्हें उसे क़त्ल करने का हुक्म दूं तो क्या तुम उसे क़त्ल कर दोगे ?

उन्होंने कहा, जी हां। अल्लाह की क़सम ! अगर आप मुझे उसे क़त्ल करने का हुक्म दें तो मैं उसके कानों के बुन्दों के नीचे गरदन पर करारी चोट ज़रूर लगाऊंगा।

आपने फ़रमाया, बैठ जाओ। फिर आपने फ़रमाया कि लोगों में एलान कर दो कि अब यहां से चलें। चुनांचे आप दोपहर के वक़्त लोगों को लेकर चल पड़े और सारा दिन और सारी रात चलते रहे और अगले दिन भी दिन चढ़े तक चलते रहे। फिर एक जगह आराम फ़रमाने के लिए ठहरे, फिर दोपहर के वक़्त लोगों को लेकर चल पड़े। जब क़फ़ा मुशल्लल से चले हुए तीसरा दिन हो गया, तब उस दिन सुबह के वक़्त आपने पड़ाव डाला।

जब आप मदीना पहुंच गए, तो आपने आदमी भेजकर हज़रत उमर रज़ि० को बुलाया और (उनके आने पर उनसे) फ़रमाया, ऐ उमर ! अगर मैं तुम्हें उसे क़त्ल कर देने का हुक्म दे देता, तो क्या तुम उसे क़त्ल कर देते ?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! अगर तुम उसे उस दिन क़त्ल कर देते, तो (चूंकि वाक़िया ताज़ा पेश आया था, इस वजह से) उस वक़्त (अंसार के) बहुत से लोग इसमें अपनी ज़िल्लत महसूस

करते और अब (चूंकि लगातार सफ़र करने की वजह से जज़्बात ठंडे पड़ गए हैं, इसलिए) अगर आज मैं उन्हीं लोगों को उसे क़त्ल करने का हुक्म दूं, तो उसे वे ज़रूर क़त्ल कर देंगे (और अगर मैं उसे वहां क़त्ल करा देता) तो लोग यह कहते कि मैं अपने साथियों पर टूट पड़ा हूं और (उन्हें घरों से निकालकर अल्लाह के रास्ते में ले जाता हूं और वहां) उन्हें बांधकर क़त्ल कर देता हूं। इस पर अल्लाह ने ये आयतें उतारीं—

يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ،

——— يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَا إِلَى الْمَدِيْنَةِ

'वही हैं जो कहते हैं, मत ख़र्च करो उन पर जो पास रहते हैं रसूलुल्लाह के, यहां तक कि अलग-अलग हो जाएं . . से लेकर . . कहते हैं, अलबत्ता अगर हम फिर गए मदीना को।'[1]

इब्ने इस्हाक़ ने इस क़िस्से को तफ़्सील से बयान किया है। इसमें यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० लोगों को लेकर सारा दिन चलते रहे, यहां तक कि शाम हो गई और सारी रात चलते रहे। यहां तक कि सुबह हो गई और अगले दिन भी चलते रहे, यहां तक कि जब लोगों को धूप की वजह से तक्लीफ़ होने लगी, तो आपने एक जगह पड़ाव डाला। वहां उतरते ही (ज़्यादा थकन की वजह से) सब एकदम सो गए और आपने ऐसा इसलिए किया कि एक दिन पहले अब्दुल्लाह बिन उबई ने जो (फ़ित्नों भरी) बात कही थी, लोगों को उसके बारे में बात करने का मौक़ा न मिले।[2]

अल्लाह के रास्ते में चिल्ला पूरा न करने वालों पर नकीर

हज़रत यज़ीद बिन अबी हबीब कहते हैं कि एक आदमी हज़रत उमर बिन ख़त्ताब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत उमर रज़ि० ने उससे पूछा, तुम कहां थे?

1. इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 372, फ़त्हुल बारी 8, पृ० 458
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 288

उसने कहा, मैं सरहद की हिफ़ाज़त करने गया था।

आपने पूछा, तुमने वहां कितने दिन लगाए?

उसने कहा, तीस दिन।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुमने चालीस दिन क्यों नहीं पूरे कर लिए?[1]

अल्लाह के रास्ते में तीन चिल्ले के लिए जाना

हज़रत इब्ने जुरैज फ़रमाते हैं कि यह बात मुझे ऐसे आदमी ने बताई जिसे मैं सच्चा समझता हूं कि हज़रत उमर रज़ि० (एक रात मदीना की गलियों में) गश्त कर रहे थे कि आपने एक औरत को यह शेर (पद) पढ़ते हुए सुना—

تَطَاوَلَ هٰذَا اللَّيْلُ وَاسْوَدَّ جَانِبُهٗ   وَاَرَّقَنِيْ اَنْ لَّا حَبِيْبَ اُلَاعِبُهٗ

'यह रात लम्बी हो गई है और इसके किनारे काले पड़ गए हैं और मुझे इस वजह से नींद नहीं आ रही है कि मेरा कोई महबूब (प्रिय) नहीं, जिससे मैं खेलूं।'

فَلَوْلَا حِذَارُ اللّٰهِ لَا شَيْءَ مِثْلُهٗ   لَزُعْزِعَ مِنْ هٰذَا السَّرِيْرِ جَوَانِبُهٗ

'अगर उस अल्लाह का डर न होता, जिसकी मिस्ल कोई चीज़ नहीं है, तो उस तख़्त के तमाम किनारे हरकत कर रहे होते।'

हज़रत उमर रज़ि० ने उससे पूछा, तुझे क्या हुआ है?

उसने कहा कि कुछ महीनों से मेरा शौहर सफ़र में गया हुआ है और मैं उसकी बहुत ज़्यादा मुश्ताक़ (व्यग्र) हो चुकी हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, कहीं तेरा बुराई का इरादा तो नहीं?

उस औरत ने कहा, अल्लाह की पनाह!

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अपने आपको क़ाबू में रखो, मैं अभी उसके पास डाक का आदमी भेज देता हूं। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने उसे बुलाने के लिए आदमी भेज दिया और ख़ुद (अपनी बेटी) हज़रत

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 157

हफ़सा रज़ि० के पास आए और उनसे कहा, मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूं जिसने मुझे परेशान कर दिया है। तुम मेरी वह परेशानी दूर कर दो और वह यह है कि कितनी मुद्दत में औरत अपने शौहर की मुश्ताक़ हो जाती है?

हज़रत हफ़सा रज़ि० ने अपना सर झुका लिया और उनको शर्म आ गई।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हक़ बात को बयान करने से अल्लाह नहीं शर्माते हैं। हज़रत हफ़सा रज़ि० ने अपने हाथ से इशारा किया कि तीन महीने वरना चार महीने।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने (तमाम इलाक़ों में) यह ख़त भेजा कि फ़ौजियों को (घर से बाहर) चार महीने से ज़्यादा न रोका जाए (अगर इजाज़त लें) ले।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर एक बार रात के वक़्त बाहर निकले। उन्होंने एक औरत को यह शेर (पद) पढ़ते हुए सुना—

تَطَاوَلَ هٰذَا اللَّيْلُ وَاسْوَدَّ جَانِبُهٗ   وَاَرَّقَنِيْ اَنْ لَّا حَبِيْبَ اُلَاعِبُهٗ

'यह रात लंबी हो गई है और इसके किनारे काले पड़ गए हैं और मुझे इस वजह से नींद नहीं आ रही है कि मेरा कोई महबूब नहीं है, जिससे मैं खेलूं।'

हज़रत उमर रज़ि० ने (अपनी बेटी) हज़रत हफ़सा बिन्ते उमर रज़ि० से पूछा कि औरत ज़्यादा से ज़्यादा कितने दिनों तक अपने शौहर से सब्र कर सकती है?

हज़रत हफ़सा ने कहा, छः महीने तक या चार महीने तक।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैं आगे किसी फ़ौज को उससे ज़्यादा (घर से बाहर) नहीं रोकूंगा।[2]

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 308
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 29

सहाबा रज़ि० का अल्लाह के रास्ते की धूल बरदाश्त करने का शौक़

हज़रत रबीअ बिन ज़ैद रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० रास्ते में औसत दर्जे वाली चाल से तशरीफ़ ले जा रहे थे कि इतने में आपने एक कुरैशी नवजवान को देखा, जो रास्ते से हटकर चल रहा था। आपने फ़रमाया, क्या यह फ़्लां आदमी नहीं है?

सहाबा रज़ि० ने कहा, जी हां, वही है।

आपने फ़रमाया, उसे बुलाओ। चुनांचे वह आए। हुज़ूर सल्ल० ने उससे पूछा, तुम्हें क्या हो गया कि तुम रास्ते से हटकर चल रहे हो?

उस नवजवान ने कहा, मुझे यह धूल-गर्द अच्छा नहीं लगता।

आपने फ़रमाया, अरे, इस धूल से ख़ुद को न बचाओ, क्योंकि उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, यह धूल तो जन्नत की (ख़ास क़िस्म की) ख़ुशबू है।[1]

हज़रत अबुल मुसब्बह मक़रई कहते हैं कि एक बार हम लोग रूम के इलाक़े में एक जमाअत के साथ चले जा रहे थे, जिसके अमीर हज़रत मालिक बिन अब्दुल्लाह ख़सअमी रज़ि० थे कि इतने में हज़रत मालिक, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह के पास से गुज़रे जो कि अपने ख़च्चर को आगे से पकड़े हुए चले जा रहे थे।

उनसे हज़रत मालिक ने कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! आप सवार हो जाएं। अल्लाह ने आपको सवारी दी है।

हज़रत जाबिर रज़ि० ने कहा, मैंने अपनी सवारी को ठीक हालत में रखा हुआ है और मुझे अपनी क़ौम से सवारी लेने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि जिस आदमी के दोनों क़दम अल्लाह के रास्ते में धूल से सन जाएंगे, अल्लाह उस पर दोज़ख़ की आग हराम कर देंगे।

हज़रत मालिक वहां से आगे चल दिए। जब इतनी दूर पहुंच गए,

---

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 287

जहां से हज़रत जाबिर को आवाज़ सुनाई दे तो हज़रत मालिक ने ऊंची आवाज़ से कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह ! आप सवार हो जाएं, क्योंकि अल्लाह ने आपको सवारी दी है।

हज़रत जाबिर हज़रत मालिक का मक़्सद समझ गए (कि हज़रत मालिक चाहते हैं कि हज़रत जाबिर ऊंची आवाज़ से जवाब दें, ताकि जमाअत के तमाम लोग सुन लें।)

इस पर हज़रत जाबिर रज़ि० ने ऊंची आवाज़ से जवाब दिया कि मैंने अपनी सवारी को ठीक हालत में रखा हुआ है और मुझे अपनी क़ौम से सवारी लेने की ज़रूरत नहीं, लेकिन मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि जिस आदमी के दोनों क़दम अल्लाह के रास्ते में धूल में सन जाएंगे, अल्लाह उसे दोज़ख़ की आग पर हराम कर देंगे। यह सुनते ही तमाम लोग अपनी सवारियों से कूद कर नीचे उतर आए। मैंने कभी उस दिन से ज़्यादा लोगों को पैदल चलते हुए नहीं देखा।[1]

अबू याला की रिवायत में यह है कि हज़रत जाबिर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना कि जिस बन्दे के दोनों क़दम अल्लाह के रास्ते में धूल में सन जाएंगे, अल्लाह उन दोनों क़दमों पर आग को हराम फ़रमा देंगे। यह सुनते ही हज़रत मालिक भी और तमाम लोग भी अपनी सवारियों से नीचे उतरकर पैदल चलने लग गए और किसी दिन भी लोगों को उस दिन से ज़्यादा तायदाद में पैदल चलते हुए नहीं देखा गया।[2]

अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़िदमत करना

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० के साथ एक सफ़र में थे। हम लोगों में से कुछ लोगों ने रोज़ा रखा हुआ था और कुछ बग़ैर रोज़े के थे। हम लोगों ने एक जगह पड़ाव डाला।

1. इब्ने हब्बान
2. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 396, हैसमी, भाग 5, पृ० 286, इसाबा, भाग 3, पृ० 126, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 162

उस दिन गर्मी बहुत ज़्यादा थी। हममें सबसे ज़्यादा साए वाला वह था जिसने चादर से साया किया हुआ था। कुछ लोग अपने हाथ के ज़रिए धूप से बचाव कर रहे थे। पड़ाव डालते ही रोज़ेदार तो गिर गए और जिनका रोज़ा नहीं था, उन्होंने खड़े होकर ख़ेमे लगाए और सवारियों को पानी पिलाया। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिन्होंने रोज़ा नहीं रखा था, वे आज सारा सवाब ले गए।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर अक़्दस के साथ थे। हम में से सबसे ज़्यादा साए वाला वह था, जो अपनी चादर से साया कर रहा था। जिन्होंने रोज़ा रखा हुआ था, वे तो कुछ न कर सके और जिन्होंने रोज़ा नहीं रखा था, उन्होंने सवारियों को (पानी पीने और चरने के लिए) भेजा और ख़िदमत वाले काम किए और मशक़्क़त वाले भारी-भरकम काम किए। यह देखकर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिन लोगों ने रोज़ा नहीं रखा, वे आज सारा सवाब ले गए।[2]

हज़रत अबू क़िलाबा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के कुछ सहाबा एक सफ़र से वापस आकर अपने एक साथी की बड़ी तारीफ़ करने लगे। चुनांचे उन्होंने कहा कि हमने फ़्लाने जैसा कोई आदमी कभी नहीं देखा। जब तक यह चलते रहते, क़ुरआन पढ़ते रहते और जब हम पड़ाव डालते, तो यह उतरते ही नमाज़ शुरू कर देते।

आपने पूछा, उसके काम-काज कौन करता था? बहुत-सी बातें और पूछीं और यह भी पूछा कि उसके ऊंट या सवारी को चारा कौन डालता था?

उन सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, हम ये सारे काम करते थे।

आपने फ़रमाया, तुम सब उससे बेहतर हो। (उसकी ख़िदमत करके तुमने उसके तमाम नेक अमल का सवाब ले लिया है।)[3]

हज़रत सईद बिन जुमहान कहते हैं, मैंने हज़रत सफ़ीना रज़ि० से

1. मुस्लिम, भाग 1, पृ० 356
2. बुख़ारी,
3. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 172

उनके नाम के बारे में पूछा, कि यह नाम किसने रखा है?

उन्होंने कहा, मैं तुम्हें अपने नाम के बारे में बताता हूं। हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने मेरा नाम सफ़ीना रखा।

मैंने पूछा, हुज़ूर सल्ल० ने आपका नाम सफ़ीना क्यों रखा?

उन्होंने फ़रमाया हुज़ूर सल्ल० एक बार सफ़र में तशरीफ़ ले गए और आपके साथ आपके सहाबा रज़ि० भी थे। सहाबा को अपना सामान भारी लग रहा था। हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, अपनी चादर बिछाओ। मैंने बिछा दी। हुज़ूर सल्ल० ने उस चादर में सहाबा का सामान बांधकर उसे मेरे ऊपर रख दिया और फ़रमाया, अरे, इसे उठा लो, तुम तो बस सफ़ीना यानी कश्ती ही हो।

हज़रत सफ़ीना रज़ि० फ़रमाते हैं कि अगर उस दिन मेरे ऊपर एक या दो तो क्या पांच या छः ऊंटों का भी बोझ लाद दिया जाता, तो वह मुझे भारी न लगता।[1]

हज़रत उम्मे सलमा के आज़ाद किए हुए गुलाम हज़रत अहमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग एक लड़ाई में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। एक नाले पर से हम लोगों का गुज़र हुआ, तो मैं लोगों को वह नाला पार कराने लगा। उसे देखकर हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, तुम तो आज सफ़ीना (नाव) बन गए हो।[2]

हज़रत मुजाहिद कहते हैं कि मैं एक सफ़र में हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के साथ था। जब मैं सवारी पर सवार होने लगता तो वह मेरे पास आकर मेरी बाग पकड़ लेते और जब मैं सवार हो जाता तो वह मेरे कपड़े ठीक कर देते।

चुनांचे वह एक बार मेरे पास (इसी काम के लिए) आए तो मैंने कुछ नागवारी ज़ाहिर की, तो उन्होंने फ़रमाया, ऐ मुजाहिद! तुम बड़े तंग अख़्लाक़ हो।[3]

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 172
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 194
3. हुलीया, भाग 3, पृ० 285

अल्लाह के रास्ते में निकलकर रोज़ा रखना

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक सफ़र में हम लोग हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। उस दिन सख़्त गर्मी थी और सख़्त गर्मी की वजह से कुछ लोग अपने सर पर अपना हाथ रखे हुए थे और उस दिन सिर्फ़ हुज़ूर सल्ल० ने और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा ने रोज़ा रखा हुआ था।[1]

दूसरी रिवायत में हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० यह फ़रमाते हैं कि एक बार हम लोग रमज़ान के महीने में बड़ी गर्मी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ (अल्लाह के रास्ते में) निकले और आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग रमज़ान के महीने में हुज़ूर सल्ल० के साथ ग़ज़वा में जाया करते थे, तो हमारे कुछ साथी रोज़ा रख लेते और कुछ साथी न रखते, तो रोज़ेदार रोज़ा न रखने वालों पर नाराज़ होते और न रोज़ा न रखने वाले रोज़ेदारों पर नाराज़ होते। सब यह समझते थे कि जो अपने में ताक़त और हिम्मत रखता है उसने रोज़ा रख लिया, उसके लिए ऐसा करना ही ठीक है और जो अपने में कमज़ोरी महसूस करता है और उसने रोज़ा नहीं रखा, उसने भी ठीक किया।[3]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं यमामा की लड़ाई के दिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़्रमा रज़ि० के पास आया, वह ज़ख़्मों से निढाल होकर ज़मीन पर पड़े हुए थे। मैं उनके पास जाकर खड़ा हो गया तो उन्होंने कहा, ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर! क्या रोज़ा खोलने का वक़्त हो गया?

मैंने कहा, जी हां।

1. मुस्लिम, भाग 1, पृ० 357
2. उम्मे दर्दा से रिवायत की गई एक दूसरी हदीस, वही,
3. मुस्लिम भाग 1, पृ० 356

उन्होंने कहा, लकड़ी की इस ढाल में पानी ले आओ, ताकि मैं उससे रोज़ा खोल लूं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं (पानी लेने) हौज़ पर गया। हौज़ पानी से भरा हुआ था। मेरे पास चमड़े की एक ढाल थी। मैंने उसे निकाला और उसके ज़रिए हौज़ में से पानी लेकर (हज़रत इब्ने मख़्रमा) की लकड़ी वाली ढाल में डाला, फिर वह पानी लेकर मैं हज़रत इब्ने मख़्रमा के पास आया। आकर देखा तो उनका इंतिक़ाल हो चुका था। (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन)[1]

हज़रत मुदरिक बिन औफ़ अह्मिसी रह० फ़रमाते हैं कि एक बार मैं हज़रत उमर रज़ि० के पास बैठा हुआ था कि इतने में हज़रत नोमान बिन मुक़र्रिन रज़ि० का क़ासिद उनके पास आया। उससे हज़रत उमर ने लोगों के बारे में पूछा, तो उसने शहीद होने वाले मुसलमानों का तज़्किरा किया और यों कहा कि फ़्लां और फ़्लां शहीद हो गए और बहुत से ऐसे लोग भी शहीद हो गए जिनको हम नहीं जानते।

इस पर हज़रत उमर ने फ़रमाया, लेकिन अल्लाह तो उनको जानता है।

लोगों ने कहा, एक आदमी ने यानी हज़रत औफ़ बिन अबी हय्या अस्लमी अबू शबील रज़ि० ने तो अपने आपको ख़रीद ही लिया।

हज़रत मुदरिक बिन औफ़ ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! लोग मेरे इस मामूं के बारे में यह गुमान करते हैं कि उन्होंने अपने हाथों अपने आपको हलाकत में डाल दिया।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ये लोग ग़लत कहते हैं। उस आदमी ने तो दुनिया देकर आख़िरत के ऊंचे दर्जों को ख़रीदा है। हज़रत औफ़ उस दिन रोज़ा से थे और उसी हालत में घायल हुए। अभी कुछ जान बाक़ी थी कि उन्हें लड़ाई के मैदान से उठाकर लाया गया। पानी पीने से उन्होंने इंकार कर दिया और यों ही (रोज़ा की हालत में) जान दे दी।[2]

---

1. इस्तीआब, भाग 2, पृ० 316, इसाबा, भाग 2, पृ० 366
2. इसाबा, भाग 3, पृ० 122

पीछे सख़्त प्यास बरदाश्त करने के बाब में हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़ीया की हदीस गुज़र चुकी है कि हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़ीया कहते हैं कि हज़रत अबू अम्र अंसारी बद्र की लड़ाई में और दूसरी अक़बा की बैअत में और उहुद की लड़ाई में शरीक हुए थे। मैंने उनको (लड़ाई के एक मैदान में) देखा कि उन्होंने रोज़ा रखा हुआ है और प्यास से बेचैन हो रहे हैं और वह अपने ग़ुलाम से कह रहे हैं कि तेरा भला हो, मुझे ढाल दे दो।

ग़ुलाम ने उनको ढाल दे दी। फिर उन्होंने तीर फेंका (जिसे कमज़ोरी की वजह से) ज़ोर से न फेंक सके। आगे पूरी हदीस बयान की जिसमें यह है, चुनांचे वह सूरज डूबने से पहले ही शहीद हो गए।

अल्लाह के रास्ते में निकलकर नमाज़ पढ़ना

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई के दिन हज़रत मिक़्दाद रज़ि० के अलावा हम में और कोई भी सवारी पर सवार नहीं था और मैंने अपने आपको इस हालत में देखा कि हम में से हर आदमी सोया हुआ था, बस हुज़ूर अक्रम सल्ल० जाग रहे थे। आप एक पेड़ के नीचे नमाज़ पढ़ते रहे और रोते रहे, यहां तक कि सुबह हो गई।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग उस्फ़ान नामी जगह पर हुज़ूर सल्ल० के साथ थे और मुश्रिकों की फ़ौज हमारे सामने आई और उनके सेनापति हज़रत ख़ालिद बिन वलीद थे। मुश्रिकों की यह फ़ौज हमारे और क़िब्ले के बीच थी। हुज़ूर सल्ल० ने हमें ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई। मुश्रिकों ने आपस में बात की कि मुसलमान तो अभी ऐसी ग़फ़लत और बेख़बरी की हालत में थे कि हम उन पर हमला कर सकते थे, तो इस मौक़े से हम फ़ायदा उठा लेते तो अच्छा था, फिर कहने लगे कि अब उनकी ऐसी नमाज़ का वक़्त आने वाला है जो उन्हें अपनी औलाद और अपनी जान से ज़्यादा महबूब है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि (काफ़िर अस्र की नमाज़

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 316

में मुसलमानों पर हमला करने का मंसूबा बना ही रहे थे कि) ज़ुहर और अस्र के बीच हज़रत जिब्रील अलै० ये आयतें लेकर नाज़िल हो गए जिनमें डर की नमाज़ का ज़िक्र है—

وَإِذَا كُنتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ

'जब तू उनमें मौजूद हो, फिर नमाज़ में खड़ा करे।'[1]

और इमाम मुस्लिम ने हज़रत जाबिर रज़ि० से यह रिवायत इस तरह नक़ल की है कि मुश्रिकों ने आपस में कहा कि बहुत जल्द ऐसी नमाज़ आने वाली है, जो मुसलमानों को अपनी औलाद से भी ज़्यादा प्रिय है।[2]

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ नख़्ल नामी जगह की ओर ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ के लिए निकले। एक मुसलमान ने किसी मुश्रिक की बीवी को क़त्ल कर दिया (या उसे क़ैद कर लिया)। जब हुज़ूर सल्ल० वहां से वापस आ रहे थे, उस औरत का शौहर आया जो कि कहीं गया हुआ था।

जब उसे बीवी के क़त्ल होने की ख़बर मिली तो उसने क़सम खाई कि जब तक वह मुहम्मद (सल्ल०) के सहाबा का ख़ून नहीं बहाएगा, उस वक़्त तक वह चैन से नहीं बैठेगा। चुनांचे वह हुज़ूर सल्ल० के पीछे-पीछे चल पड़ा।

आपने रास्ते में एक जगह पड़ाव डाला। आपने फ़रमाया, आज रात हमारा पहरा कौन देगा? एक मुहाजिरी और एक अंसारी ने अपने आपको पहरे के लिए पेश किया और उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम (पहरा देंगे)।

आपने फ़रमाया कि तुम दोनों इस घाटी के सिरे पर चले जाओ। ये दोनों हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० और हज़रत अब्बाद बिन बिश्र रज़ि० थे। चुनांचे ये दोनों घाटी के सिरे पर पहुंचे, तो अंसारी ने मुहाजिरी से कहा, हम दोनों बारी-बारी पहरा देते हैं। एक पहरा दे और

1. इमाम अहमद,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 81

दूसरा सो जाए। अब तुम बताओ कि मैं पहरा कब दूं? शुरू रात में या आखिर रात में?

मुहाजिरी ने कहा, नहीं। तुम शुरू रात में पहरा दो। चुनांचे मुहाजिरी लेट कर सो गए और अंसारी खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे। चुनांचे वह आदमी आया (जिसकी बीवी क़त्ल हुई थी) जब उसने दूर से एक आदमी खड़ा हुआ देखा तो वह यह समझा यह (मुसलमानों की) फ़ौज का जासूस है।

चुनांचे उसने एक तीर मारा, जो उन अंसारी को आकर लगा। अंसारी ने वह तीर निकालकर फेंक दिया और नमाज़ में खड़े रहे। उसने दूसरा तीर मारा, वह भी आकर उनको लगा। उन्होंने उसे भी निकाल फेंका और नमाज़ में खड़े रहे। उस आदमी ने तीसरा तीर मारा, वह भी आकर उनको लगा, उन्होंने उसे भी निकालकर फेंक दिया और फिर रुकूअ और सज्दा करके (नमाज़ पूरी की और) अपने साथी को जगाया और उससे कहा, उठ बैठो, मैं तो घायल हो गया हूं।

वह मुहाजिरी जल्दी से उठे। उस आदमी ने जब (एक की जगह) दो को देखा तो समझ गया कि इन दोनों को इसका पता चल गया है। चुनांचे वह तो भाग गया। जब मुहाजिरी ने अंसारी के जिस्म में से कई जगह ख़ून बहते हुए देखा, तो उन्होंने कहा, सुब्हानल्लाह! जब उसने आपको पहला तीर मारा तो आपने मुझे उस वक़्त क्यों नहीं उठाया?

अंसारी ने कहा कि मैं एक सूरः पढ़ रहा था, तो मेरा दिल न चाहा कि उसे ख़त्म करने से पहले छोड़ दूं, लेकिन जब उसने लगातार मुझे तीर मारे, तो मैंने नमाज़ ख़त्म करके आपको बता दिया और अल्लाह की क़सम! जिस जगह के पहरे का हुज़ूर सल्ल० ने मुझे हुक्म दिया था, अगर उस जगह के पहरे के रह जाने का खतरा न होता, तो मैं जान दे देता और सूरः को बीच में न छोड़ता।[1]

इमाम बैहक़ी ने दलाइलुन्नुबूवः में इस रिवायत में यह ज़िक्र किया है कि हज़रत अम्मार बिन यासिर सो गए और हज़रत अब्बाद बिन बिश्र

---

1. अबू दाऊद, भाग 1, पृ० 29, बिदाया, भाग 4, पृ० 85, नस्बुर्राया भाग 1, पृ० 43

खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे और हज़रत अब्बाद ने कहा कि मैं सूर: कह्फ़ नमाज़ में पढ़ रहा था। मेरा दिल न चाहा कि उसे ख़त्म करने से पहले रुकूअ कर लूं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझे बुलाया, और फ़रमाया कि मुझे ख़बर मिली है कि ख़ालिद बिन सुफ़ियान बिन नुबैह हुज़ली मुझ पर चढ़ाई करने के लिए लोगों को जमा कर रहा है, उस वक़्त वह उरना नामी जगह पर है, तुम जाकर उसे क़त्ल कर दो।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! आप मुझे उसका हुलिया बता दें, ताकि मैं उसे पहचान लूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम उसे देखोगे, तो तुम्हें अपने जिस्म में कपकपी महसूस होगी। चुनांचे मैं गले में अपनी तलवार लटका कर चल पड़ा। जब मैं उसके पास पहुंचा तो वह अपनी बीवियों के साथ उरना नामी जगह पर था और अपनी बीवियों के लिए ठहरने की जगह खोज रहा था और अस्र का वक़्त हो चुका था।

जब मैंने उसे देखा तो जैसे हुज़ूर सल्ल० ने बताया था, वाक़ई मुझे अपने जिस्म में कपकपी महसूस हुई। मैं उसकी ओर चल पड़ा और मुझे यह डर लगा कि कहीं ऐसा न हो कि उसे क़त्ल करने की कोशिश में कुछ देर लग जाए और अस्र की नमाज़ जाती रहे। चुनांचे मैंने नमाज़ शुरू कर दी। मैं उसकी ओर चलता भी जा रहा था और इशारे से रुकूअ-सज्दा भी करता जा रहा था। मैं जब उसके पास पहुंचा, तो उसने कहा, यह आदमी कौन है?

मैंने कहा, मैं अरब का एक आदमी हूं, जिसने यह सुना है कि तुम लोगों को इस आदमी पर (यानी हुज़ूर सल्ल० पर) चढ़ाई करने के लिए जमा कर रहे थे, इस वजह से तुम्हारे पास आया हूं।

उसने कहा, हां, मैं उसी में लगा हुआ हूं। चुनांचे मैं थोड़ी देर उसके साथ चला। जब मुझे उस पर पूरी तरह क़ाबू हासिल हो गया, तो मैंने तलवार से वार करके उसे क़त्ल कर दिया, फिर मैं वहां से चल पड़ा

और उसकी हौदानशीन औरतें इस पर झुकी हुई थीं। जब मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने मुझे देखकर फ़रमाया, यह चेहरा कामियाब हो गया।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं उसे क़त्ल कर आया हूं।

आपने फ़रमाया, तुम ठीक कहते हो। फिर हुज़ूर सल्ल० मेरे साथ खड़े हुए, मुझे अपने घर ले गए और मुझे एक लाठी देकर फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह बिन उनैस ! इसे अपने पास संभालकर रखना।

मैं लाठी लेकर लोगों के पास बाहर आया। लोगों ने पूछा, यह लाठी क्या है?

मैंने कहा, यह लाठी हुज़ूर सल्ल० ने मुझे दी है और मुझे हुक्म दिया है कि मैं इसे संभाल कर रखूं। लोगों ने कहा, कि तुम वापस जाकर क्यों नहीं हुज़ूर सल्ल० से इसके बारे में पूछ लेते?

चुनांचे मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया और मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने मुझे यह लाठी क्यों दी है?

आपने फ़रमाया, यह क़ियामत के दिन मेरे और तुम्हारे बीच निशानी होगी, क्योंकि उस दिन लाठी वाले लोग बहुत कम होंगे। (या नेक अमल का सहारा लेने वाले बहुत कम होंगे) चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह ने उस लाठी को अपनी तलवार के साथ बांध लिया और वह लाठी ज़िंदगी भर उनके साथ रही। जब उनके इंतिक़ाल का वक़्त आया तो उनकी वसीयत के मुताबिक़ वह लाठी उनके कफ़न में रख दी गई और उसे भी उनके साथ दफ़न किया गया।[1]

हज़रत उर्वः फ़रमाते हैं कि जब यर्मूक की लड़ाई के दिन दोनों फ़ौज एक दूसरे के क़रीब हुई तो (रूमी सेनापति) क़ुबुक़लार ने एक अरबी आदमी को (जासूसी के लिए) भेजा। इस हदीस के आख़िर में यह है कि क़ुबुक़लार ने उस (जासूस) से पूछा, वहां क्या देखकर आए हो?

---

1 बिदाया, भाग 4, पृ० 140

उसने कहा, वे मुसलमान रात में इबादत गुज़ार हैं और दिन में घुड़सवार हैं।[1]

हज़रत अबू इस्हाक़ ने एक लम्बी हदीस रिवायत की है जिसमें यह है कि हिरक़्ल ने (अपने लोगों को) कहा, फिर तुम्हें क्या हो गया है कि हमेशा हारते हो?

तो उनके बड़े सरदारों में से एक बूढ़े ने कहा कि हम इस वजह से हार जाते हैं कि वे (मुसलमान) रात को इबादत करते हैं और दिन को रोज़ा रखते हैं।[2]

और ये हदीसें ग़ैब के मामले में ताईद की वजहों के बाब में आगे आएंगी। पीछे औरतों की बैअत के बारे में इब्ने मन्दा की बयान की हुई हज़रत हिन्द बिन्त उत्बा की हदीस गुज़र चुकी है कि हज़रत हिन्द ने (अपने शौहर हज़रत अबू सुफ़ियान से) कहा कि मैं मुहम्मद (सल्ल०) से बैअत होना चाहती हूं।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा कि मैंने तो अब तक यह देखा है कि तुम हमेशा से (मुहम्मद की बात का) इंकार करती रही हो।

उन्होंने कहा, हां अल्लाह की क़सम! (तुम्हारी यह बात ठीक है) लेकिन अल्लाह की क़सम! आज रात से पहले मैंने इस मस्जिद में अल्लाह की इतनी इबादत होते हुए नहीं देखी। अल्लाह की क़सम! मुसलमानों ने सारी रात नमाज़ पढ़ते हुए क़ियाम और रुकूअ और सज्दे में गुज़ारी।

अल्लाह के रास्ते में निकलकर ज़िक्र करना

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब फ़रमाते हैं कि जब मुसलमान मक्का में (विजयी) दाख़िल हो गए, तो सुबह तक विजय की यह रात मुसलमानों ने तक्बीर (अल्लाहु अक्बर कहना) व तह्लील (ला इला-ह इल्लल्लाहु कहना) और बैतुल्लाह के तवाफ़ में गुज़ारी, तो हज़रत अबू सुफ़ियान

1. तबरी, भाग 2, पृ० 610
2. इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 143

रज़ि० ने हज़रत हिन्द रज़ि० से कहा, क्या तुम देख रही हो यह सब अल्लाह की तरफ़ से है ?

तो हिन्द ने जवाब में कहा, हां। यह सब अल्लाह की तरफ़ से है।

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। उस ज़ात की क़सम, जिसकी अबू सुफ़ियान क़सम खाया करता है मेरी यह बात हिन्द के अलावा और किसी ने नहीं सुनी थी।[1]

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० ने ख़ैबर की लड़ाई का पूरा इरादा फ़रमा लिया और ख़ैबर के लिए चलने लगे, तो रास्ते में लोग एक घाटी में पहुंचकर ज़ोर-ज़ोर से अल्लाहु अक्बर और ला इला-ह इल्लल्लाहु पढ़ने लगे, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (ऐ मुसलमानो !) अपनी जानों पर नर्मी करो (इन्हें ख़ामख़ाही मशक़्क़त में न डालो) तुम किसी बहरे या ग़ाइब और ग़ैर-मौजूद ख़ुदा को नहीं पुकार रहे हो, बल्कि तुम ऐसी ज़ात को पुकार रहे हो, जो सुनने वाली और तुमसे बहुत क़रीब है और वह (हर वक़्त) तुम्हारे साथ है।

मैं हुज़ूर सल्ल० की सवारी के पीछे बैठा हुआ ला हौ-ल वला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाह पढ़ रहा था। हुज़ूर सल्ल० ने जब मुझे यह पढ़ते हुए सुना तो मुझसे फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह बिन क़ैस !

मैंने कहा लब्बैक या रसूलल्लाह !

आपने फ़रमाया, मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ाने का कलिमा न बता दूं ?

मैंने कहा, ज़रूर बताएं, ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों।

आपने फ़रमाया, वह कलिमा 'ला हौ-ल वला क़ू-व-त इल्लाह बिल्लाह' है।[2]

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हम ऊपर को चढ़ते थे, तो

---

1. बैहक़ी, बिदाया, भाग 4, पृ० 304, कंज़ भाग 5, पृ० 297
2. बिदाया भाग 4, पृ० 313

अल्लाहु अक्बर कहते थे और जब हम नीचे को उतरते थे, तो सुब्हानल्लाह कहते थे।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि लड़ाई में जाने वाले लोग दो तरह के होते हैं। एक तो वे जो अल्लाह के रास्ते में निकलकर अल्लाह का ज़िक्र बहुत करते हैं और अल्लाह का ध्यान ख़ूब रखते हैं और चलने में फ़साद नहीं मचाते हैं और अपने साथियों की माली मदद और हमदर्दी करते हैं और अपना मर्ग़ूब और उम्दा माल ख़र्च करते हैं। और उनको जितनी दुनिया मिलती है, उससे ज़्यादा वे इस माल पर ख़ुश होते हैं, जिसे वे ख़र्च करते हैं और ये लोग जब लड़ाई के मैदान में होते हैं तो अल्लाह से इस पर शर्माते हैं कि अल्लाह को पता चले कि इन लोगों के दिलों में शक है या इन्होंने मुसलमानों की मदद छोड़ दी और जब उन्हें ग़नीमत के माल में ख़ियानत का मौक़ा मिलता है तो अपने दिलों को, अपने अमल को ख़ियानत से पाक रखते हैं, तो न तो शैतान उन्हें फ़िल्ने में डाल सका और न उनके दिल में फ़िल्ने का वस्वसा ही डाल सका।

ऐसे लोगों की वजह से अल्लाह अपने दीन को इज़्ज़त अता फ़रमाते हैं और अपने दुश्मन को ज़लील करते हैं।

और दूसरे लोग वे हैं जो लड़ाई में तो निकले लेकिन न अल्लाह का ज़िक्र करते हैं और न उन्हें अल्लाह का कुछ ध्यान है और न वे फ़साद मचाने से बचते हैं और माल ख़र्च करना पड़ जाए तो बड़ी नागवारी से ख़र्च करते हैं और जो माल ख़र्च करते भी हैं, उसे अपने ऊपर जुर्माना समझते हैं और ऐसी बातें उनसे शैतान कहता है।

और ये लोग जब लड़ाई के मैदान में होते है, तो सबसे पीछे खड़े होते हैं और मदद न करने वालों के साथ होते हैं और पहाड़ों की चोटियों पर चढ़कर पनाह लेते हैं और वहां से देखते हैं कि लोग क्या कर रहे हैं। जब अल्लाह मुसलमानों को फ़त्ह दे देते हैं, तो ये सबसे ज़्यादा झूठ बोलते हैं (और अपने फ़र्ज़ी कारनामे बयान करने लग जाते हैं) और उन्हें जब ग़नीमत के माल में ख़ियानत करने का मौक़ा मिलता

1. ऐनी, भाग 1, पृ० 36

है तो बड़ी जुर्रत से अल्लाह के माले ग़नीमत में ख़ियानत करते हैं और शैतान उनसे यह कहता है कि यह तो ग़नीमत का माल है।

जब पेट भरे होते हैं तो इतराने लगते हैं और जब उन्हें कोई रुकावट पेश आती है तो शैतान उन्हें (मख़्लूक़ के सामने अपनी ज़रूरतें) रखने के फ़ित्ने में डाल देता है। इन लोगों को मुसलमानों के सवाब में से कुछ नहीं मिलेगा। हां उनके जिस्म मुसलमानों के जिस्मों के साथ हैं और उन्हीं के साथ चल रहे हैं, लेकिन उनकी नीयतें और उनके अमल मुसलमानों से अलग हैं। क़ियामत के दिन अल्लाह उनको इकट्ठा फ़रमाएंगे और फिर इन दो तरह के लोगों को अलग-अलग कर देंगे।[1]

अल्लाह के रास्ते में निकलकर दुआओं का एहतमाम करना

हज़रत मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं कि मुझे यह हदीस पहुंची है कि जब हुज़ूर सल्ल० मदीना के इरादे से अल्लाह की तरफ़ हिजरत करते हुए मक्का से चल पड़े तो आपने यह दुआ मांगी कि तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं कि जिसने मुझे पैदा फ़रमाया, हालांकि मैं कुछ भी नहीं था। ऐ अल्लाह! दुनिया की घबराहट और ज़माने की ख़राबियां और दिन-रात आने वाली मुसीबतों पर मेरी मदद फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस सफ़र में तू मेरा साथी हो जा और मेरे घर में तू मेरा ख़लीफ़ा बन जा और जो तूने मुझे दिया है, उसमें बरकत नसीब फ़रमा। मुझे अपने सामने तवाज़ो करने वाला बना दे और अच्छे और नेक अख़्लाक़ पर तू मुझे जमा दे और मुझे अपना महबूब बना ले और मुझे आम लोगों के सुपुर्द न फ़रमा।

ऐ कमज़ोरों के रब! तू मेरा भी रब है, मैं तेरे इस करीम चेहरे के तुफ़ैल, जिससे सारे आसमान और ज़मीन रोशन हो गए और जिससे अंधेरे छट गए और जिससे पहलों के काम दुरुस्त हो गए हैं, इस बात से मैं पनाह मांगता हूं कि तू मुझ पर ग़ुस्सा हो या तू मुझसे नाराज़ हो और

1. कंज़, भाग 2, पृ० 290

मेरी नेमत के बर्बाद होने और तेरी नागहानी सज़ा से और तेरी दी हुई आफ़ियत के चले जाने और तेरे हर क़िस्म के गुस्से से तेरी पनाह चाहता हूं और मैं जितने अमल कर सकता हूं, उनमें से मेरे नज़दीक सबसे बेहतर तुझे राज़ी करना और मनाना है। गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकियों के करने की ताक़त तुझसे ही मिलती है।[1]

बस्ती में दाख़िल होने के वक़्त दुआ करना

हज़रत अबू मरवान अस्लमी के दादा फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० के साथ ख़ैबर की तरफ़ रवाना हुए। जब हम ख़ैबर के क़रीब पहुंच गए और ख़ैबर हमें नज़र आने लगा तो हुज़ूर सल्ल० ने लोगों से फ़रमाया, ठहर जाओ। चुनांचे सब लोग ठहर गए, फिर हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई—

ऐ अल्लाह! जो रब है सातों आसमानों का और उन तमाम चीज़ों का, जिन पर सातों आसमान साया किए हुए हैं और जो रब है सातों ज़मीनों का और उन तमाम चीज़ों का जिनको सातों ज़मीनों ने उठाया हुआ है और जो रब है तमाम शैतानों का और उन लोगों का जिनको शैतानों ने गुमराह किया है और जो रब है हवाओं का और उन तमाम चीज़ों का जिनको हवाओं ने उड़ाया है, हम तुझसे इस बस्ती की और इस बस्ती वालों की और इस बस्ती में जो कुछ है, उसकी ख़ैर मांगते हैं और तुझसे इस बस्ती के और उस बस्ती वालों के और उस बस्ती में जो कुछ है, उसके शर से पनाह मांगते हैं (और फिर फ़रमाया) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर आगे बढ़ो।[2]

तबरानी की रिवायत में यह है कि आप हर बस्ती में दाख़िले के वक़्त यह दुआ पढ़ा करते थे।

लड़ाई शुरू करते वक़्त दुआ करना

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब बद्र की लड़ाई के लिए हुज़ूर

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 178
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 183, हैसमी, भाग 10, पृ० 135

सल्ल० ने अपने सहाबा रज़ि० की ओर देखा, तो वे तीन सौ से कुछ ज़्यादा थे और जब मुश्रिकों की ओर देखा तो वे हज़ार से ज़्यादा थे, तो आप क़िब्ला की ओर मुंह करके खड़े हो गए। आपने एक चादर ओढ़ी हुई थी और एक लुंगी बांधी हुई थी।

फिर आपने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! आपने मुझसे जो वायदा फ़रमाया है, उसे पूरा फ़रमा। ऐ अल्लाह! अगर इस्लाम वालों की यह जमाअत हलाक हो गई, तो फिर इनके बाद धरती पर तेरी इबादत कभी नहीं हो सकेगी। हुज़ूर सल्ल० बराबर अपने रब से मदद मांगते रहे और दुआ फ़रमाते रहे, यहां तक कि आपकी चादर (ज़मीन पर) गिर गई।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने चादर उठाकर आपके ऊपर डाल दी। फिर वह पीछे से हुज़ूर सल्ल० को चिमट गए और फिर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपने जो अपने रब से ज़ोर-शोर से मांगा है, आपका उतना मांगना काफ़ी है, क्योंकि अल्लाह ने आपसे जो वायदा फ़रमाया है, वह उसे ज़रूर पूरा फ़रमाएंगे, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ۝

'जब तुम लगे फ़रियाद करने अपने रब से, तो वह पहुंचा तुम्हारी फ़रियाद को कि मैं मदद को भेजूंगा तुम्हारी हज़ार फ़रिश्ते लगातार आने वाले।'[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई के मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० तीन सौ पन्द्रह आदमियों को लेकर निकले। जब आप बद्र पहुंचे, तो आपने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! ये लोग बग़ैर जूतियों के नंगे पांव और पैदल चल रहे हैं, इनको सवारी अता फ़रमा और ऐ अल्लाह! ये नंगे बदन हैं, तू इनको कपड़े अता फ़रमा और ऐ अल्लाह! ये लोग भूखे हैं, तू इनको पेट भरकर खाना अता फ़रमा।

चुनांचे अल्लाह ने इन्हें बद्र की लड़ाई के दिन जीत दी और जब ये लोग बद्र की लड़ाई से वापस हुए तो हर एक के पास एक या दो ऊंट थे और उन्होंने कपड़े भी पहन रखे थे और पेट भरकर खाना भी खा रखा था।[2]

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 275, कंज़, भाग 5, पृ० 266
2. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 38, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 7, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 13

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने बद्र के दिन हुज़ूर सल्ल० को जितनी ज़ोरदार दुआ करते हुए देखा है, उतनी ज़ोरदार दुआ करते हुए मैंने कभी किसी को नहीं देखा। आप फ़रमा रहे थे, ऐ अल्लाह! मैं तुझे तेरे वायदे और तेरे अह्द का वास्ता देता हूं। ऐ अल्लाह! अगर यह जमाअत हलाक हो गई तो फिर तेरी इबादत कभी न हो सकेगी।

फिर आप (हमारी ओर) मुतवज्जह हुए और आपका पूरा चेहरा (ख़ुशी के मारे) चांद की तरह चमक रहा था और आपने फ़रमाया, गोया कि मैं अब देख रहा हूं कि शाम को यह कहां-कहां गिरे हुए पड़े होंगे।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० उहुद की लड़ाई के दिन फ़रमा रहे थे, ऐ अल्लाह! (हमारी मदद फ़रमा) अगर तू हमारी मदद न करना चाहे तो फिर धरती पर कोई तेरी इबादत करने वाला न रहेगा।[2]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि ख़ंदक़ की लड़ाई के दिन हम लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या इस मौक़े पर पढ़ने के लिए कोई दुआ है, जिसे हम पढ़ें, क्योंकि कलेजे मुंह को आ चुके हैं। आपने फ़रमाया, हां।

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَاٰمِنْ رَوْعَاتِنَا

(अल्लाहुम-मस्तुर औरातिना व आमिन रौआतिना)

'ऐ अल्लाह! तू हमारे तमाम ऐबों पर परदा डाल और हमारे डर को अम्न व अमान से बदल दे।'

हज़रत अबू सईद फ़रमाते हैं (कि हमने यह दुआ पढ़नी शुरू कर दी, जिसकी बरकत से) अल्लाह ने सख़्त हवा भेजकर अपने दुश्मनों के चेहरों को फेर दिया।[3]

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० मस्जिदे अहज़ाब तशरीफ़ ले गए और अपनी चादर रखकर खड़े हो गए और

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 276, हैसमी, भाग 6, पृ० 85
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 28
3. इमाम अहमद, इब्ने अबी हातिम

हाथ उठाकर उन (काफ़िरों) के ख़िलाफ़ बद-दुआ करने लगे और (इस मौक़े पर) आपने कोई (नफ़्ल) नमाज़ न पढ़ी। आप फिर दोबारा वहां तशरीफ़ लाए और उनके लिए बद-दुआ की और नमाज़ पढ़ी।[1]

सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने अह्ज़ाब के लिए इन लफ़्ज़ों में बद-दुआ फ़रमाई—'ऐ किताब को उतारने वाले और जल्दी हिसाब लेनेवाले अल्लाह! इन अह्ज़ाब (गिरोहों) को हरा दे। ऐ अल्लाह! इनको हटा दे और इनके क़दमों को उखाड़ दे।'

और एक रिवायत में ये शब्द हैं, ऐ अल्लाह! इन्हें हरा दे और इनके ख़िलाफ़ हमारी मदद फ़रमा।

बुख़ारी में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० यह दुआ फ़रमा रहे थे, अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है। उसने अपनी फ़ौज को इज़्ज़त दी और अपने बन्दे की मदद की और अकेला है, तमाम गिरोहों पर ग़ालिब आ गया, उसके बाद कोई चीज़ नहीं।[2]

लड़ाई के वक़्त दुआ करना

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई के दिन थोड़ी देर लड़ने के बाद जल्दी से हुज़ूर सल्ल० को देखने गया कि आप इस वक़्त क्या कर रहे हैं। जब मैं आपके पास पहुंचा, तो मैंने देखा कि आप सज्दे में सर रखे हुए फ़रमा रहे हैं—

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ

'या हय्यु या क़य्यूम, या हय्यु या क़य्यूम'

इन कलिमों के अलावा आप कुछ और नहीं फ़रमा रहे हैं। मैं वापस जाकर फिर लड़ने लग गया। फिर दोबारा मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया, तो आप उसी तरह सज्दे में सर रखे हुए वही लफ़्ज़

1. इमाम अहमद,
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 111

फ़रमा रहे थे। मैं फिर लड़ने चला गया। इसके बाद मैं फिर तीसरी बार हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप सज्दे में सर रखे हुए इन्हीं कलिमों को दोहरा रहे थे, यहां तक कि अल्लाह ने आपके हाथों जीत दिला दी।[1]

(लड़ाई की) रात में दुआ करना

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० बद्र की लड़ाई की उस रात में नमाज़ पढ़ते रहे और यह दुआ फ़रमाते रहे, ऐ अल्लाह ! अगर यह जमाअत हलाक हो गई, तो फिर तेरी इबादत न हो सकेगी और उस रात मुसलमानों पर वर्षा भी हुई थी (जिससे काफ़िरों की सख़्त ज़मीन में कीचड़ हो गया और मुसमलानों की रेतीली ज़मीन जम गई और उस पर चलना आसान हो गया।)[2]

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस दिन सुबह को बद्र की लड़ाई हुई, उस दिन की सारी रात आपने इबादत में गुज़ारी, हालांकि आप सफ़र करके आए थे और आप मुसाफ़िर थे।[3]

(लड़ाई से) फ़ारिग़ हो जाने के बाद दुआ करना

हज़रत रिफ़ाआ ज़ुरक़ी रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब उहुद की लड़ाई के दिन मुश्रिक वापस चले गए, तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सब सीधे खड़े हो जाओ ताकि मैं अपने पालनहार की हम्द व सना बयान करूं, चुनांचे सहाबा किराम रज़ि० आपके पीछे सफ़ें बनाकर खड़े हो गए तो आपने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! तमाम तारीफ़ें तेरे लिए हैं, जिसे तू फैलाव दे, उस पर कोई तंगी करने वाला नहीं और जिस पर तू तंगी फ़रमाए, उसे कोई फैलाव देनेवाला नहीं और जिसे तू गुमराह कर दे, उसे कोई हिदायत देनेवाला नहीं और जिसे तू हिदायत दे दे, उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं और जो चीज़

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 275, कंज़ुल उम्माल, भाग, पृ० 267
2. इब्ने मर्दूया,
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 267

तू रोक ले (और न दे) उसे कोई देनेवाला नहीं और जो चीज़ तू दे दे, उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिस चीज़ को तू दूर कर दे, उसे कोई क़रीब करने वाला नहीं और जिसे तू क़रीब कर दे, उसे कोई दूर करने वाला नहीं और ऐ अल्लाह ! तू हम पर अपनी बरकतें और अपनी रहमत और अच्छी मेहरबानी और अपनी रोज़ी बढ़ा दे और ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे वह हमेशा की नेमत मांगता हूं जो न कभी बदले और न उस पर कभी गिरावट आए और ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे भुखमरी के दिन नेमत और डर के दिन अम्न व अमान मांगता हूं और ऐ अल्लाह ! जो तूने हमको दिया है उसके शर से भी और जिसे तूने हमसे रोका है (और हमें नहीं दिया है) उसके शर से भी तेरी पनाह चाहता हूं। ऐ अल्लाह ! तू ईमान को हमारा महबूब बना दे और उसको हमारे दिलों की ज़ीनत बना दे और कुफ़्र और फ़िस्क़ व फ़ुजूर और नाफ़रमानी से हमारे दिलों में नफ़रत डाल दे और हमें हिदायत पाये लोगों में शामिल फ़रमा दे।

ऐ अल्लाह ! हमें दुनिया से इस्लाम पर उठाना और हमें इस्लाम पर ज़िंदा रखना और हमें नेक बन्दों के साथ मिला देना, न हम रुसवा हों और न हम फ़ित्नों में गिरफ़्तार हों। ऐ अल्लाह ! तू इन काफ़िरों को हलाक कर दे, जो तेरे रसूलों को झुठलाते हैं और तेरे रास्ते से रोकते हैं और तू उन पर अपना क़हर व अज़ाब उतार। ऐ अल्लाह ! उन काफ़िरों को हलाक फ़रमा जिनको किताब दी गई ऐ सच्चे माबूद ![1]

फिर तायफ़ वालों पर दावत पेश करने से फ़ारिग़ होने के बाद हुज़ूर सल्ल० की अल्लाह की ओर बुलाने की वजह से तक्लीफ़ें बरदाश्त करने के बाब में यह हदीस गुज़र चुकी है।

अल्लाह के रास्ते में निकलकर तालीम का एहतिमाम करना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने फ़रमाया है—

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 38, कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 276, हैसमी, भाग 6, पृ० 122

خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِانْفِرُوْا جَمِيْعًا ..

'ले लो अपने हथियार और फिर निकलो जुदा-जुदा फ़ौज होकर या सब इकट्ठे।'

और अल्लाह ने फ़रमाया है—

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا

'निकलो हलके और बोझल',

और अल्लाह ने फ़रमाया है—

اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۵

'अगर तुम न निकलोगे तो देगा तुमको दर्दनाक अज़ाब।' (इन आयतों में हर मुसलमान पर अल्लाह ने हर हाल में अल्लाह की राह में निकलना ज़रूरी क़रार दिया) फिर अल्लाह ने इन आयतों को मंसूख़ कर दिया और इसके लिए यह आयत उतारी—

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ

'और ऐसे तो नहीं कि मुसलमान कूच करें सारे।' (इस आयत में) अल्लाह फ़रमा रहे हैं कि (कभी) एक जमाअत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ लड़ाई में जाए और एक जमाअत घरों में ठहरी रहे। (और कभी एक जमाअत हुज़ूर सल्ल० के साथ घरों में ठहरे और एक जमाअत आपके बग़ैर अल्लाह के रास्ते में लड़ाई के लिए चली जाए) चुनांचे जो हुज़ूर सल्ल० के साथ ठहर जाएंगे, वे (हुज़ूर सल्ल० से) दीन का इल्म और दीन की समझ हासिल करते रहेंगे और जब उनकी क़ौम के लोग लड़ाई से उनके पास वापस आएंगे तो यह उनको डराएंगे ताकि अल्लाह ने जो किताब और फ़राइज़ और हुदूद उतारे हैं, ये उनके बारे में चौकन्ने रहें।[1]

हज़रत अह्वस बिन हकीम बिन उमैर अन्सी रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़ौजों के अमीरों को यह ख़त लिखा कि दीन में समझ हासिल करते रहो (क्योंकि अब इस्लाम फैल गया है और सिखाने

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 47

वाले अब बहुत हैं, इसलिए अब जिहालत कोई उज़्र नहीं रहा, इसलिए) अब अगर कोई बातिल को हक़ समझकर अख़्तियार कर लेगा या हक़ को बातिल समझकर छोड़ देगा, तो वह माज़ूर नहीं समझा जाएगा (बल्कि उसे न सीखने की वजह से सज़ा दी जाएगी।)[1]

हज़रत हित्तान बिन अब्दुल्लाह रक़ाशी फ़रमाते हैं कि हम लोग हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० के साथ एक फ़ौज में दजला नदी के किनारे पड़ाव डाले हुए थे, इतने में नमाज़ (ज़ुहर) का वक़्त हो गया तो मुअज़्ज़िन ने ज़ुहर की नमाज़ के लिए अज़ान दी और लोग वुज़ू के लिए खड़े हो गए। हज़रत अबू मूसा ने भी वुज़ू करके फ़ौज को नमाज़ पढ़ाई और फिर सब हलक़े लगाकर बैठ गए।

फिर जब अस्र का वक़्त आया तो मुअज़्ज़िन ने अस्र की अज़ान दी। सब लोग फिर वुज़ू करने के लिए खड़े हो गए। इस पर हज़रत अबू मूसा ने अपने मुअज़्ज़िन से कहा कि यह एलान कर दो। (ऐ लोगो!) ग़ौर से सुनो! सिर्फ़ वही आदमी वुज़ू करे, जिसका वुज़ू टूट गया हो और फ़रमाया कि ऐसा मालूम होता है कि बहुत जल्द इल्म चला जाएगा और जिहालत ग़ालिब आ जाएगी, यहां तक कि आदमी जिहालत की वजह से अपनी मां को तलवार मार देगा।[2]

अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़र्च करना

हज़रत अबू मसऊद अंसारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक आदमी नकेल पड़ी हुई ऊंटनी लेकर आया और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि (ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०!) यह ऊंटनी अल्लाह के रास्ते में (देता हूं)।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें क़ियामत के दिन इसके बदले में ऐसी सात सौ ऊंटनियां मिलेंगी कि इन सबकी नकेल पड़ी हुई होगी।[3]

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 228
2. कंज़, भाग 5, पृ० 114, मआनिल आसार भाग 1, पृ० 27
3. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 137, जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 3

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सामित रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अबूज़र रज़ि० के साथ था, उनको सालाना वज़ीफ़ा मिला। उनके साथ एक बांदी थी। वह उनकी ज़रूरतें पूरी करने लग गई और उनमें वह माल ख़र्च करने लग गई। उसके पास सात दिरहम बच गए।

हज़रत अबूज़र ने उसे हुक्म दिया कि इनके पैसे बनवा लो।

मैंने उनसे अर्ज किया, अगर आप इन सात दिरहमों को आगे पेश आने वाली ज़रूरतों के लिए या अपने किसी आने वाले मेहमान के लिए रख लेते (तो ज़्यादा अच्छा था)।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा कि मेरे ख़लील यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे यह वसीयत फ़रमाई है कि जो सोना या चांदी किसी थैले वग़ैरह में बांधकर रख लिया जाएगा तो वह अपने मालिक के लिए अंगारा होगा, जब तक कि उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न कर दे।

इमाम अहमद और तबरानी की रिवायत में यह है कि जो सोने-चांदी से बांधकर रखे और उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न करे तो क़ियामत के दिन यह सोना-चांदी आग का अंगारा बन जाएगा, जिससे उसे दाग़ा जाएगा। ये शब्द तबरानी के हैं।[1]

हज़रत क़ैस बिन सलअ अंसारी रज़ि० के भाइयों ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर उनकी शिकायत की और यह कहा कि ये अपना माल फ़िज़ूल ख़र्च करते हैं और इनका हाथ बहुत खुला है।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं खजूरों में से अपना हिस्सा ले लेता हूं, और उसको अल्लाह के रास्ते में और अपने साथियों पर ख़र्च करता हूं। हुज़ूर सल्ल० ने उनके सीने पर हाथ मारा और तीन बार फ़रमाया, तुम ख़र्च करो, अल्लाह तुम पर ख़र्च करेंगे। इसके बाद जब मैं अल्लाह के रास्ते में निकला तो मेरे पास सवारी का ऊंट भी था और आज तो मैं अपने ख़ानदान में सबसे ज़्यादा मालदार हूं (यानी अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने की बरकत से अल्लाह ने मुझे इन

1. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 178

भाइयों से भी ज़्यादा माल दे रखा है।)[1]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने फ़रमाया, उस आदमी के लिए ख़ुशख़बरी हो जो अल्लाह के रास्ते में अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा करे, क्योंकि उसे हर कलिमे के बदले सत्तर हज़ार नेकियां मिलेंगी और उनमें से हर नेकी दस गुना होगी और इसके अलावा और भी अल्लाह के यहां उसे मिलेगा।

हुज़ूर सल्ल० से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! और ख़र्चे का क्या सवाब होगा?

आपने फ़रमाया, ख़र्च का सवाब भी उतना ही होगा।

हज़रत अब्दुर्रहमान कहते हैं कि मैंने हज़रत मुआज़ रज़ि० से कहा, ख़र्च का सवाब तो सात सौ गुना है।

हज़रत मुआज़ ने फ़रमाया, तेरी समझ तो थोड़ी है। यह सवाब तो उस वक़्त मिलता है जब आदमी ख़ुद अपने घर ठहरा हुआ हो और लड़ाई में न गया हो और (दूसरों पर) ख़र्च किया हो। जब आदमी ख़ुद लड़ाई में जाकर ख़र्च करता है तो अल्लाह ने उसके लिए अपनी रहमत के वे ख़ज़ाने छिपा रखे हैं, जिन तक बन्दों का इल्म पहुंच नहीं सकता और न बन्दे उनकी ख़ूबी बयान कर सकते हैं। यही लोग अल्लाह की जमाअत हैं और अल्लाह की जमाअत ही ग़ालिब आकर रहती है।[2]

हज़रत अली, हज़रत अबूदर्दा, हज़रत अबू हु ह, हज़रत अबू उमामा, हज़रत इब्ने अम्र बिन आस, हज़रत जाबिर और हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने फ़रमाया कि जो आदमी अल्लाह के रास्ते में ख़र्च भेज दे और ख़ुद अपने घर ठहरा रहे तो उसे हर दिरहम के बदले सात सौ दिरहम का सवाब मिलेगा, और जो ख़ुद अल्लाह के रास्ते में लड़ाई के लिए जाए और अल्लाह की रिज़ा के लिए ख़र्च करे तो उसको हर दिरहम के बदले सात लाख दिरहम का सवाब

1. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 173, इसाबा, भाग 3, पृ० 250
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 282

मिलेगा, फिर हुज़ूर सल्ल० ने यह आयत पढ़ी—

وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ

'और अल्लाह बढ़ाता है जिसके वास्ते चाहे।'[1]

और पीछे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिहाद में जान लगाने और माल ख़र्च करने के लिए तर्ग़ीब देने के बाब में गुज़र चुका है कि हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत तलहा, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत अब्बास, हज़रत साद बिन उबादा, हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा और हज़रत आसिम बिन अदी ने कितना-कितना ख़र्च किया और सहाबा किराम रज़ि० के ख़र्च करने के बाब में ये क़िस्से और तफ़्सील से आएंगे।

अल्लाह के रास्ते में ख़ुलूसे नीयत के साथ निकलना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने (हुज़ूर सल्ल० से) पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! एक आदमी जिहाद में इस नीयत से जाता है कि उसे दुनिया का कुछ सामान मिल जाएगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसे कुछ अज्र न मिलेगा। लोगों ने इस बात को बहुत बड़ा समझा और उस आदमी से कहा, तुम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर दोबारा हुज़ूर सल्ल० से पूछो। शायद तुम अपनी बात हुज़ूर सल्ल० को समझा नहीं सके हो।

उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! एक आदमी जिहाद में इस नीयत से जाता है कि वह दुनिया का कुछ सामान हासिल करना चाहता है।

आपने फ़रमाया, उसे कोई अज्र नहीं मिलेगा। लोगों को इस बात को बहुत बड़ा समझा और उस आदमी से कहा, जाओ फिर हुज़ूर सल्ल० से पूछो। चुनांचे उसने तीसरी बार हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर अर्ज़ किया कि एक आदमी अल्लाह के रास्ते जिहाद में इस नीयत से जाना चाहता है कि उसे दुनिया का कुछ सामान मिल जाए।

1. फ़वाइद, भाग 2, पृ० 3

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसे कोई अज्र नहीं मिलेगा।[1]

हज़रत अबू उमामा रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आप ज़रा यह बताइए कि एक आदमी लड़ाई में शरीक होकर सवाब भी हासिल करना चाहता है और लोगों में शोहरत भी, तो उसे क्या मिलेगा?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसे कुछ नहीं मिलेगा।

उस आदमी ने अपना सवाल तीन बार दोहराया। हुज़ूर सल्ल० हर बार उसे यही जवाब देते रहे कि उसे कुछ नहीं मिलेगा। फिर आपने फ़रमाया कि अल्लाह सिर्फ़ वही अमल क़ुबूल करते हैं, जो ख़ालिस हो और अल्लाह की रिज़ा के लिए किया गया हो।[2]

हज़रत आसिम बिन उमर बिन क़तादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोगों में एक परदेसी आदमी रहता था, उसे कोई जानता नहीं था कि वह कौन है? लोग उसे क़ुज़मान कहते थे। जब भी उसका ज़िक्र होता तो हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते कि यह तो दोज़ख़ वालों में से है।

उहुद की लड़ाई के दिन उसने ख़ूब ज़ोर-शोर से लड़ाई की और उसने अकेले ही सात-आठ मुश्रिकों को क़त्ल कर डाला और वह था भी बड़ा योद्धा और बहादुर। आख़िर वह ज़ख़्मों से निढाल हो गया, तो उसे बनू ज़फ़र के मुहल्ले में उठाकर लाया गया तो बहुत से मुसलमान उसे कहने लगे, ऐ क़ुज़मान! आज तो तुम बड़ी बहादुरी से लड़े हो, तुम्हें ख़ुशख़बरी हो।

उसने कहा, मुझे किस चीज़ की ख़ुशख़बरी हो? अल्लाह की क़सम! मैंने तो सिर्फ़ अपनी क़ौम के नाम के लिए यह लड़ाई लड़ी है। अगर मेरा मक़्सद यह न होता तो मैं हरगिज़ न लड़ता। चुनांचे जब उसके घावों की पीड़ा बढ़ गई तो उसने अपनी तरकश में से एक तीर निकाला और उससे आत्महत्या कर ली।[3]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 419
2. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 421
3. बिदाया, भाग 4, पृ० 36

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाया करते थे कि मुझे ऐसा आदमी बताओ जो जन्नत में तो जाएगा, लेकिन उसने कोई नमाज़ नहीं पढ़ी? जब लोग उसके बारे में न जानने की बात करते, तो उनसे पूछते कि वह कौन है?

तो वह फ़रमाते कि बनू अब्दुल अशहल के उसैरिम हैं जिनका नाम अम्र बिन साबित बिन वक़्श है।

हज़रत हुसैन फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत महमूद बिन लबीद से पूछा कि हज़रत उसैरिम का क्या क़िस्सा है?

तो उन्होंने बताया कि उनकी क़ौम उनको इस्लाम की दावत दिया करती थी, लेकिन यह हमेशा इंकार कर देते। उहुद की लड़ाई के दिन एकदम उनके दिल में इस्लाम लाने का विचार पैदा हुआ और वह मुसलमान हो गए और अपनी तलवार लेकर चल पड़े और एक किनारे से मज्मे में जाकर लड़ाई शुरू कर दी, यहां तक कि घावों से निढाल होकर गिर पड़े।

(लड़ाई के बाद) क़बीला बनू अब्दुल अशहल के लोग लड़ाई के मैदान में शहीद होने वाले अपने साथियों को खोजने लगे तो उनकी निगाह हज़रत उसैरिम पर पड़ी तो वह कहने लगे, अल्लाह की क़सम! यह तो उसैरिम हैं। यह यहां कैसे आ गए? हम तो इनको (मदीना में) छोड़कर आए थे और यह तो हमेशा (इस्लाम की) इस बात का इंकार किया करते थे तो उन लोगों ने हज़रत उसैरिम से पूछा, ऐ अम्र! आप यहां कैसे आए? अपनी क़ौम की हमदर्दी में या इस्लाम के शौक़ में?

उन्होंने कहा, नहीं, इस्लाम के शौक़ में। मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आया और मुसलमान हो गया। फिर मैं अपनी तलवार पकड़कर हुज़ूर सल्ल० के साथ चल पड़ा और मैंने लड़ना शुरू कर दिया, यहां तक कि मैं इतना घायल हो गया।

इतना कहने के थोड़ी देर बाद ही उनके हाथों में हज़रत उसैरिम का इंतिक़ाल हो गया। उन लोगों ने जाकर हुज़ूर सल्ल० से उनका सारा वाक़िया ज़िक्र किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह जन्नत वालों में हैं

(भले ही उन्हें इस्लाम लाने के बाद एक नमाज़ भी पढ़ने का मौक़ा न मिला हो)[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अम्र बिन उक़ैश रज़ि० ने जाहिलियत के ज़माने में सूद पर क़र्ज़ दिया हुआ था। वह इस्लाम लाने के लिए तैयार तो हो गए थे, लेकिन सूद का माल वसूल करने से पहले मुसलमान होना नहीं चाहते थे। उहुद की लड़ाई के दिन वह आए और उन्होंने पूछा कि मेरे चचेरे भाई कहां हैं?

लोगों ने बताया कि वह तो (इस वक़्त) उहुद में हैं।

उन्होने कहा, उहुद में। वह ज़िरह (कवच) पहनकर अपने घोड़े पर सवार हुए और फिर अपने चचेरे भाइयों की ओर चल पड़े। जब मुसलमानों ने उनको (आते हुए) देखा तो (उनसे) कहा, ऐ अम्र! हमसे परे रहो।

उन्होंने कहा, मैं तो ईमान ला चुका हूं। इसके बाद उन्होंने (काफ़िरों से) ख़ूब ज़ोर-शोर से लड़ाई की, यहां तक कि घायल हो गए। फिर उनको घायल हालत में उठाकर उनके घरवालों के पास पहुंचाया गया। वहां उनके पास हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० आए और उन्होंने उनकी बहन से कहा कि इनसे पूछो कि (यह उहुद की लड़ाई में) अपनी क़ौम की हिमायत में (शरीक हुए थे) या अल्लाह और उसके रसूल की वजह से गुस्से में आकर।

उन्होंने कहा, 'नहीं', अल्लाह और उसके रसूल की वजह से गुस्से में आकर (उहुद की लड़ाई में शरीक हुआ था) इसके बाद उनका इंतिक़ाल हो गया और ये जन्नत में दाख़िल हो गए, हालांकि उनको अल्लाह के लिए एक भी नमाज़ पढ़ने का मौक़ा न मिला।[2]

हज़रत शद्दाद बिन हाद फ़रमाते हैं कि एक देहाती आदमी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया और आप पर ईमान लाया और आपकी

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 37, इसाबा, भाग 2, पृ० 586, कंज़, भाग 7, पृ० 8, मज्मा भाग 9, पृ० 362
2. इसाबा, भाग 2, पृ० 526, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 167

पूरी तरह पैरवी की। चुनांचे उसने कहा कि मैं भी हिजरत करके आपके साथ रहूंगा।

जब ख़ैबर की लड़ाई में हुज़ूर सल्ल० को ग़नीमत का माल मिला तो आपने उसे सहाबा में बांट दिया। आपने उस ग़नीमत के माल में से उसका हिस्सा उसके साथियों को दे दिया। वह उस वक़्त अपने साथियों के जानवर चराने गया हुआ था। जब वह वापस आया, तो साथियों ने उसका हिस्सा दिया, तो उसने कहा, यह क्या है?

साथियों ने कहा, यह तुम्हारा हिस्सा है जो हुज़ूर सल्ल० ने तुम्हारे लिए दिया है।

उसने (हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर) अर्ज़ किया, मैंने इस (माल लेने) के लिए तो आपकी पैरवी नहीं की थी। मैंने आपकी पैरवी इसलिए की थी, ताकि मुझे (गले की ओर इशारा करते हुए) वहां तीर लगे और मैं मर जाऊं और मैं जन्नत में चला जाऊं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम्हारी नीयत सच्ची है तो उसे ज़रूर पूरा फ़रमा देंगे। फिर सहाबा रज़ि० दुश्मन से लड़ने के लिए उठ खड़े हुए। (यह देहाती भी लड़ाई में शरीक हुए और घायल हो गए) और उनको उठाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लाया गया। पहले जहां उन्होंने इशारा करके बताया था, वहीं ही उन्हें तीर लगा था।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह वही हैं?

सहाबा रज़ि० ने कहा, 'जी हां'।

आपने फ़रमाया, उनकी नीयत सच्ची थी, इसलिए अल्लाह ने पूरी कर दी। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें अपने जुब्बे में से कफ़न दिया और उनका जनाज़ा आगे रखकर आपने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और नमाज़े जनाज़ा में उनके लिए दुआ करते हुए आपके लफ़्ज़ ज़रा ऊंची आवाज़ से सुने गए। ऐ अल्लाह! यह तेरा बन्दा है। तेरे रास्ते में हिजरत करके निकला था और अब यह शहीद हो गया है और मैं इसका गवाह हूं।[1]

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 191, हाकिम, भाग 3, पृ० 595

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं काले रंग का आदमी हूं। मेरा चेहरा बदसूरत है और मेरे पास माल भी कुछ नहीं है। अगर मैं इन कुफ़्फ़ार से लड़ते हुए मर जाऊं, तो क्या मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊंगा?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां। (यह सुनकर) वह आगे बढ़ा और काफ़िरों से लड़ाई शुरू कर दी, यहां तक कि शहीद हो गया। हुज़ूर सल्ल० उसके पास तशरीफ़ ले गए, वह शहीद हो चुके थे, तो आपने फ़रमाया, अब तो अल्लाह ने तुम्हारा चेहरा ख़ूबसूरत बना दिया है और तुझे ख़ुशबूदार बना दिया है और तुम्हारा माल ज़्यादा कर दिया है और फ़रमाया कि मैंने बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरों में से उसकी दो बीवियां देखी हैं, जो उसके जिस्म और उसके जुब्बे के बीच दाख़िल होने के लिए झगड़ रही हैं।[1]

हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे पास यह पैग़ाम भेजा कि कपड़े पहनकर और हथियार लगाकर मेरे पास आ जाओ। चुनांचे मैं (तैयार होकर) आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ।

आपने फ़रमाया, मैं तुम्हें एक फ़ौज का अमीर बनाकर भेजना चाहता हूं। अल्लाह तुम्हें सलामत भी रखेगा और तुम्हें ग़नीमत का माल भी देगा और मैं भी उस माल में से तुम्हें अच्छा माल दूंगा।

इस पर मैंने कहा, मैं तो माल की वजह से इस्लाम नहीं लाया, बल्कि मुसलमान बनने के शौक़ में मैंने इस्लाम को क़ुबूल किया।

आपने फ़रमाया, ऐ अम्र! भले आदमी के लिए अच्छा माल बेहतरीन चीज़ है।[2]

तबरानी ने औसत और कबीर में इस हदीस का ज़िक्र किया है और इसमें से ये लफ़्ज़ हैं कि मैं तो दो वजह से इस्लाम लाया हूं। एक तो

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 191, तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 447
2. इसाबा, भाग 3, पृ० 3

मुझे मुसलमान बनने का शौक़ था और दूसरे मैं आपके साथ रहना चाहता था।

आपने फ़रमाया, ठीक है, लेकिन अच्छा माल भले आदमी के लिए बेहतरीन चीज़ है।[1]

हज़रत अबुल बख़्तरी ताई फ़रमाते हैं कि कुछ लोग मुख़्तार बिन अबी उबैद के बाप हज़रत अबुल मुख़्तार के पास कूफ़ा में जस्र बिन अबी उबैद पर जमा थे (जहां हज़रत अबू उबैद सक़फ़ी रह० 13 हि० में शहीद हुए थे और हज़रत अबू उबैद की फ़ौज के) तमाम आदमी शहीद कर दिए गए थे, सिर्फ़ दो या तीन आदमी बचे थे।

उन्होंने अपनी तलवारें लेकर इस ज़ोर से दुश्मन पर हमला किया कि उनकी सफ़ें चीरकर बाहर निकल आए और यों बच गए। फिर ये तीनों लोग मदीना आए।

एक बार ये तीनों लोग इन शहीद होने वालों का तज़्किरा कर रहे थे कि इतने में हज़रत उमर रज़ि० बाहर निकले और उन्होंने कहा कि मुझे बताओ, तुम लोग उनके बारे में क्या कह रहे थे?

उन्होंने कहा, हम उनके बारे में इस्तग़फ़ार कर रहे थे और उनके लिए दुआ कर रहे थे।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, या तो तुमने उनके बारे में जो कहा था, वह मुझे बता दो, वरना मैं तुम्हें सख़्त सज़ा दूंगा।

उन्होंने कहा, हमने उनके बारे में कहा था कि ये लोग शहीद हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके अलावा कोई माबूद नहीं, और उस ज़ात की क़सम, जिसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हक़ देकर भेजा और जिसके हुक्म के बग़ैर क़ियामत क़ायम नहीं होगी। अल्लाह के नबी के अलावा और किसी भी मरने वाले को अल्लाह के यहां क्या मिला है, उसे कोई भी ज़िंदा इंसान नहीं जानता है। अलबत्ता अल्लाह के नबी के बारे में

1. मज्मा, भाग 9, पृ० 255

यक़ीनन मालूम है कि अल्लाह ने उनके अगले-पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिए हैं। उस ज़ात की क़सम! जिसके अलावा कोई माबूद नहीं उस ज़ात की क़सम, जिसने हक़ और हिदायत देकर मुहम्मद (सल्ल०) को भेजा, जिसके हुक्म के बग़ैर क़ियामत क़ायम न होगी। कोई आदमी दिखावे और शोहरत की वजह से लड़ता है, कोई आदमी क़ौमी ग़ैरत की वजह से लड़ता है और कोई दुनिया हासिल करने के लिए लड़ता है और कोई माल लेने के लिए और उन तमाम लड़ने वालों को अल्लाह के यहां वही मिलेगा जो उनके दिलों में है।[1]

हज़रत मालिक बिन औस बिन हदसान रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार हम लोगों ने एक फ़ौज का तज़्किरा किया, जो हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में अल्लाह के रास्ते में शहीद हो गई थी। चुनांचे हम में से किसी ने तो यह कहा कि यह सब अल्लाह के लिए काम करने वाले थे और अल्लाह के रास्ते में निकले हुए थे। अल्लाह उनको ज़रूर अज्र व सवाब देंगे और किसी ने यह कहा कि अल्लाह उनको क़ियामत के दिन इसी नीयत पर उठाएंगे, जिस पर अल्लाह ने उनको मौत दी है।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां, उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अल्लाह उनको उसी नीयत पर उठाएंगे जिस पर अल्लाह ने उनको मौत दी है, क्योंकि कोई आदमी तो दिखावे और शोहरत के लिए लड़ता है और कोई दुनिया लेने के लिए लड़ता है और किसी किसी को लड़ाई से बचने का कोई रास्ता नहीं मिलता है, इसलिए वह मजबूर होकर लड़ता है और कोई अल्लाह से सवाब लेने के लिए लड़ता है और हर तरह की तक्लीफ़ों पर सब्र करता है। यह (सवाब के लिए लड़ने वाले) ही शहीद हैं। लेकिन मुझे भी मालूम नहीं है कि मेरे साथ क्या होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा। हां, इतनी बात मुझे ज़रूर मालूम है कि इस क़ब्र वाले यानी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो चुके हैं।[2]

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 292
2. अख़-र-जहू तमाम

हज़रत मस्‌रूक़ रह० फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ि० की मज्लिस में शहीदों का तज़्किरा आया तो हज़रत उमर ने लोगों से पूछा, तुम शहीद किसे समझते हो?

लोगों ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! इन लड़ाइयों में जो मुसलमान क़त्ल हो रहे थे, वे सब शहीद हैं।

इस पर आपने फ़रमाया, फिर तो तुम्हारे शहीद बहुत हो जाएंगे। मैं तुम्हें इस बारे में बताता हूं। बहादुरी और बुज़दिली लोगों की फ़ितरी चीज़ें हैं। अल्लाह जिसकी तबियत जैसी चाहे, बना दे। बहादुर आदमी तो जज़्बे से लड़ता है और अपने घरवालों के पास वापस जाने की परवाह भी नहीं करता और बुज़दिल आदमी अपनी बीवी की वजह से (लड़ाई के मैदान से) भाग जाता है और शहीद वह है जो अल्लाह से अज्र व सवाब लेने की नीयत से अपनी जान पेश करे और (कामिल) मुहाजिर वह है जो उन तमाम चीज़ों को छोड़ दे जिससे अल्लाह ने रोका है और (कामिल) मुसलमान वह है जिसकी ज़ुबान और हाथ से सारे मुसलमान बचे रहें।[1]

हज़रत ज़िमाम रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० ने अपनी मां (हज़रत अस्मा रज़ि०) के पास पैग़ाम भेजा कि तमाम लोग मुझे छोड़कर चले गए हैं और ये (मेरे मुख़ालिफ़) लोग मुझे सुलह की दावत दे रहे हैं, तो उन्होंने जवाब में फ़रमाया कि अगर तुम अल्लाह की किताब को और अल्लाह के नबी करीम सल्ल० की सुन्नत को ज़िंदा करने के लिए निकले थे, तो फिर तुम्हें इसी हक़ बात पर जान दे देनी चाहिए और अगर तुम दुनिया लेने के लिए निकले थे, तो फिर न तुम्हारे ज़िंदा रहने में ख़ैर है और न मर जाने में।[2]

जिहाद के लिए अल्लाह के रास्ते में निकलकर अमीर का हुक्म मानना

हज़रत अबू मालिक अशअरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 292
2. कंज़, भाग 7, पृ० 57

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें एक फ़ौज में भेजा और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को हमारा अमीर बनाया। चुनांचे हम लोग रवाना हो गए और एक मंज़िल पर पड़ाव डाला।

एक आदमी ने खड़े होकर अपनी सवारी की ज़ीन कसी। मैंने उससे कहा, तुम कहां जाना चाहते हो?

उसने कहा, मैं चारा लाना चाहता हूं।

मैंने उससे कहा, जब तक हम अपने अमीर से पूछ न लें, तुम ऐसा न करो। चुनांचे हम हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० के पास आए। (शायद हज़रत अबू मूसा फ़ौज के किसी एक हिस्से के अमीर होंगे) हमने उनसे ज़िक्र किया, तो उन्होंने कहा, शायद तुम अपने घरवालों के पास जाना चाहते हो।

उस आदमी ने कहा, नहीं।

हज़रत अबू मूसा ने कहा, देखो तुम क्या कह रहे हो?

उसने कहा, 'नहीं'।

तो हज़रत मूसा ने कहा, अच्छा, तुम जाओ और हिदायत वाले रास्ते पर चलो।

चुनांचे वह आदमी चला गया और काफ़ी रात गुज़ारकर वापस आया। तो हज़रत अबू मूसा ने उससे कहा, शायद तुम अपने घरवालों के पास गए थे?

उसने कहा, नहीं।

हज़रत अबू मूसा ने कहा, देख लो, तुम क्या कह रहे हो?

उसने कहा, हां (मैं गया था)

हज़रत अबू मूसा ने फ़रमाया, तू आग में चलकर अपने घर गया और (वहां जितनी देर बैठा रहा) तू आग में बैठा रहा और आग में चलकर वापस आया, इसलिए अब तू नए सिरे से अमल कर, (ताकि तेरे इस गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाए।)[1]

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 169

अल्लाह के रास्ते में निकलकर इकट्ठे मिलकर रहना

हज़रत अबू सालबा ख़ुशनी रज़ि० फ़रमाते हैं कि लोग जब किसी मंज़िल पर पड़ाव डाला करते थे, तो बिखर जाया करते थे और घाटियों और वादियों में फैल जाते थे, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारा यह घाटियों और वादियों में बिखर जाना शैतान की ओर से है।

इस फ़रमान के बाद मुसलमान जहां भी ठहरते, इकट्ठे होकर मिल-जुलकर रहते।[1]

बैहक़ी की रिवायत में यह भी है (कि इसके बाद सहाबा इतने क़रीब-क़रीब रहने लगे कि) यों कहा जाने लगा कि अगर इन मुसलमानों पर एक चादर डाली जाए, तो वह इन सब पर ही आ जाए।[2]

हज़रत मुआज़ जुहनी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० के साथ फ़्लां लड़ाई में गया। (एक जगह हम लोगों ने पड़ाव डाला। लोग बिखर गए, जिससे) लोगों के लिए ठहरने की जगह तंग पड़ गई और रास्ते बन्द हो गए। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने एक मुनादी को भेजा, जो लोगों में यह एलान कर दे कि जिसने ठहरने की जगह तंग की या रास्ता बन्द किया, उसका कोई जिहाद नहीं, यानी उसे जिहाद का सवाब नहीं मिलेगा।[3]

अल्लाह के रास्ते में निकलकर पहरा देना

हज़रत सह्ल बिन हंज़लीया रज़ि० फ़रमाते हैं कि लोग हुनैन की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्ल० के साथ चले और ख़ूब ज़्यादा चले, यहां तक कि दोपहर हो गई। चुनांचे मैंने हुज़ूर सल्ल० के साथ ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी तो एक सवार ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं आप लोगों के आगे चला, यहां तक कि फ़्लां पहाड़ पर चढ़ गया, तो मैंने देखा कि क़बीला हवाज़िन अपने बाप के पानी

---

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 40
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 152, कंज़, भाग 3, पृ० 341
3. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 152, मिश्कात पृ० 332

लाने वाले ऊंट और अपनी औरतें और जानवर और बकरियां लेकर सारे के सारे हुनैन में इकट्ठे हो चुके हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने मुस्कराकर फ़रमाया, यह सब कुछ कल मुसलमानों का माले ग़नीमत बन जाएगा। फिर आपने फ़रमाया, आज रात हमारा पहरा कौन देगा?

हज़रत अनस बिन अबी मरसद ग़नवी रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं (पहरा दूंगा)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा सवार हो जाओ। चुनांचे वह अपने घोड़े पर सवार होकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए। आपने उनसे फ़रमाया, सामने उस घाटी की ओर चले जाओ और उस घाटी की सबसे ऊंची जगह पहुंच जाओ। (वहां पहरा देना और ख़ूब होशियार होकर रहना) कहीं दुश्मन आज रात तुम्हें धोखा देकर तुम्हारी ओर से न आ जाए।

जब सुबह हुई तो हुज़ूर सल्ल० अपनी नमाज़ की जगह पर तशरीफ़ ले गए और दो रक्अत नमाज़ पढ़ी। फिर आपने फ़रमाया, क्या तुम्हें अपने सवार का कुछ पता चला?

सहाबा रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हमें तो उसका कुछ पता नहीं, फिर नमाज़ की इक़ामत हुई और नमाज़ के दौरान हुज़ूर सल्ल० की तवज्जोह घाटी की ओर रही। जब हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ पूरी फ़रमाई, तो फ़रमाया, तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, तुम्हारा सवार आ गया है। हम लोगों ने घाटी के पेड़ों के दर्मियान देखना शुरू किया, तो वह सवार आ रहा था।

चुनांचे उसने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम किया और कहा कि मैं (कल यहां से) चला और चलते-चलते उस घाटी की सबसे ऊंची जगह पहुंच गया, जहां जाने का मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हुक्म दिया था। (मैं रातभर वहां पहरा देता रहा) सुबह को मैंने दोनों घाटियों पर झांक कर ग़ौर से देखा, मुझे कोई नज़र न आया।

हुज़ूर सल्ल० ने उस सवार से पूछा, क्या तुम रात को किसी वक़्त

अपनी सवारी से नीचे उतरे हो?

उसने कहा, नहीं, सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने और ज़रूरत पूरी करने के लिए उतरा था?

आपने उससे फ़रमाया, तुमने (आज रात पहरा देकर अल्लाह की मेहरबानी से अपने लिए जन्नत) वाजिब कर ली है। (पहरे के) इस अमल के बाद अगर तुम कोई भी (नफ़्ली) अमल न करो, तो तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं है। (इस पहरे से तुम्हें बहुत सवाब मिला है)[1]

हज़रत अबू अतीया रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० एक बार तशरीफ़ रखते थे। आपको बताया गया कि एक आदमी का इंतिक़ाल हो गया है। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या तुममें से किसी ने उसको ख़ैर (भलाई) का कोई अमल करते हुए देखा है?

एक आदमी ने कहा, जी हां। एक रात मैंने उसके साथ अल्लाह के रास्ते में पहरा दिया है। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने और आपके साथियों ने खड़े होकर उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। जब उसे क़ब्र में रख दिया गया तो हुज़ूर सल्ल० ने अपने हाथ से उस पर मिट्टी डाली। फिर फ़रमाया, तुम्हारे साथी तो यह समझ रहे हैं कि तुम दोज़ख़ वालों में से हो और मैं गवाही देता हूं कि तुम जन्नत वालों में से हो।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से फ़रमाया, तुम लोगों के (बुरे) अमल के बारे में न पूछो, बल्कि तुम फ़ितरत (वाले इस्लामी अमलों) के बारे में पूछा करो।[2]

हज़रत अबू अतीया रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में एक आदमी का इंतिक़ाल हो गया, तो कुछ सहाबा रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप उसकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ें।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या तुम में से किसी ने उसे (कोई नेक अमल करते हुए) देखा है? फिर आगे पूरी हदीस बयान की।[3]

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 149, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 143
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 288
3. कंज़, भाग 2, पृ० 291

हज़रत इब्ने आइज़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० एक आदमी की जनाज़े के लिए बाहर तशरीफ़ लाए। जब वह जनाज़ा रखा गया, तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप उसकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ें, क्योंकि यह बदकार आदमी है।

हुज़ूर सल्ल० ने लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर मालूम किया, क्या तुम में से किसी ने उसको (कोई नेक अमल करते हुए) देखा है? आगे पिछली हदीस की तरह मज़्मून बयान किया।[1]

पीछे कड़ी सर्दी सहन करने के बाब में हज़रत अबू रीहाना रज़ि० की हदीस गुज़र चुकी है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आज रात हमारा पहरा कौन देगा? मैं उसके लिए ऐसी दुआ करूंगा जो उसके हक़ में ज़रूर क़ुबूल होगी।

एक अंसारी ने खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं (पहरा दूंगा)

आपने फ़रमाया, तुम कौन हो?

उसने कहा, फ़्लां।

आपने फ़रमाया, क़रीब आ जाओ। चुनांचे वह अंसारी क़रीब आए। हुज़ूर सल्ल० ने उनके कपड़े का एक किनारा पकड़कर दुआ करनी शुरू की। जब मैंने (वह दुआ) सुनी तो मैंने कहा, मैं भी तैयार हूं।

आपने फ़रमाया, तुम कौन हो?

मैंने कहा अबू रीहाना। आपने मेरे लिए भी दुआ फ़रमाई, लेकिन मेरे साथी से कम। फिर आपने फ़रमाया जो आंख अल्लाह के रास्ते में पहरा दे, उस आंख पर आग हराम कर दी गई है।[2] और अल्लाह के रास्ते में निकलकर नमाज़ पढ़ने के बाब में हज़रत जाबिर रज़ि० की हदीस गुज़र चुकी है। उसमें यह है कि आपने फ़रमाया, आज रात हमारा

1. मिश्कात, पृ० 288
2. इमाम अहमद, नसई, तबरानी, बैहक़ी

पहरा कौन देगा ?

एक मुहाजिरी और एक अंसारी ने अपने आपको पहरे के लिए पेश किया और उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम (पहरा देंगे)।

आपने फ़रमाया कि तुम दोनों उस घाटी के सिरे पर चले जाओ। ये दोनों हज़रत अम्मार बिन यासिर और हज़रत अब्बाद बिन बिश्र थे। इसके बाद आगे की हदीस ज़िक्र की है।[1]

जिहाद के लिए अल्लाह के रास्ते में निकलकर बीमारियां बरदाश्त करना

हज़रत अबू सईद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब भी मुसलमान के जिस्म को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है, तो उसके बदले में अल्लाह गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं।

(यह फ़ज़ीलत सुनकर) हज़रत उबई बिन काब रज़ि० ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे यह सवाल करता हूं कि तू उबई बिन काब के जिस्म पर ऐसा बुख़ार चढ़ा दे, जो तेरी मुलाक़ात के वक़्त तक यानी मौत तक चढ़ा रहे। (यानी सारी ज़िंदगी बुख़ार चढ़ा रहे) लेकिन बुख़ार इतना कम हो कि उनको नमाज़, रोज़े, हज, उमरा और तेरे रास्ते में जिहाद से न रोके।

चुनांचे उनको उसी वक़्त बुख़ार चढ़ गया जो मरते दम तक चढ़ा रहा, उतरा नहीं, और वह उस बुख़ार की हालत में ही जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ा करते थे, रोज़े रखा करते थे और हज और उमरे किया करते थे और लड़ाई के सफ़र में जाया करते थे।[2]

हज़रत अबू सईद रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप यह बताएं कि ये बीमारियां जो हमारे ऊपर आती हैं, हमें उनके बदले में क्या मिलेगा ?

आपने फ़रमाया, ये बीमारियां गुनाहों को मिटाने वाली हैं।

1. इब्ने इस्हाक़ वग़ैरह।
2. इब्ने असाकिर

इस पर हज़रत उबई ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, अगरचे वह बीमारी बहुत थोड़ी हो?

आपने फ़रमाया, हां, अगरचे वह कांटा (लगना) ही हो या इससे भी कम दर्जे की तक्लीफ़ हो। चुनांचे हज़रत उबई ने अपने लिए यह दुआ मांगी कि उनको ऐसा बुख़ार चढ़े जो उनको मौत तक न छोड़े। (हमेशा चढ़ा ही रहे) लेकिन उनको हज, उमरा और अल्लाह के रास्ते के जिहाद से भी न रोके। (उनकी यह दुआ क़ुबूल हुई और) मौत तक उनकी यह हालत रही कि जो इंसान भी उन्हें हाथ लगाता, वह बुख़ार की हरारत महसूस करता।[1]

अल्लाह के रास्ते में नेज़े या किसी और चीज़ से घायल होना

हज़रत जुन्दुब बिन सुफ़ियान रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदल जा रहे थे कि अचानक एक पत्थर से आपको ठोकर लगी, जिससे आपकी उंगली मुबारक ख़ून से भर गई। आपने यह शेर (पद) पढ़ा—

هَلْ اَنْتِ اِلَّا اِصْبَعٌ دَمِيْتِ   وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَا لَقِيْتِ

'तू एक उंगली ही तो है जो ख़ून से भर गई है और तुझे जो तक्लीफ़ आई है, यह अल्लाह के रास्ते से ही आई है।'[2]

और पीछे हुज़ूर सल्ल० के सख़्तियों और तक्लीफ़ों के बरदाश्त करने के बाब में हज़रत अनस रज़ि० की हदीस गुज़र चुकी है कि उहुद की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्ल० का मुबारक रुबाई दांत शहीद हो गया था और आपका मुबारक सर घायल हो गया था। आगे और हदीस भी ज़िक्र की हैं।[3]

1. कंज़, भाग 2, पृ० 153, इसाबा, भाग 1, पृ० 20, कंज़ भाग 7, पृ० 2, हुलीया भाग 1, पृ० 255
2. बुख़ारी, पृ० 908
3. बुख़ारी, मुस्लिम

और पीछे हज़रत आइशा रज़ि० की हदीस गुज़र चुकी है कि वह फ़रमाती हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० उहुद की लड़ाई का ज़िक्र फ़रमाते, तो यह इर्शाद फ़रमाते कि यह दिन सारे का सारा हज़रत तलहा के हिसाब में है। फिर तफ़्सील से बयान करते।

आगे और हदीस भी है, जिसमें यह मज़्मून भी है कि हम दोनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे, तो हमने देखा कि मुबारक रुबाई दांत शहीद हो चुका है और आपका मुबारक चेहरा घायल है और ख़ूद की दो कड़ियां आपके मुबारक गाल में घुस गई हैं। आपने फ़रमाया, अपने साथी तलहा की ख़बर लो जो ज़्यादा ख़ून निकलने की वजह से कमज़ोर हो चुके थे।

आगे और हदीस भी है जिसमें यह है कि हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत से फ़ारिग़ होकर हज़रत तलहा के पास आए। वह एक गढ़े में पड़े हुए थे और उनके जिस्म पर नेज़े और तलवार और तीर के सत्तर से ज़्यादा घाव थे और उनकी उंगली भी कट गई थी। हमने उनकी देखभाल की।

हज़रत इब्राहीम बिन साद कहते हैं कि मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को उहुद की लड़ाई के दिन इक्कीस घाव आए थे और उनका एक पांव भी घायल हुआ था, जिसकी वजह से वह लंगड़ाकर चला करते थे।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे चचा हज़रत अनस बिन नज़्र बद्र की लड़ाई में शरीक नहीं हो सके थे। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने मुश्रिकों से जो सबसे पहली लड़ाई लड़ी, मैं उसमें शरीक नहीं हो सका। अब आगे अगर अल्लाह ने मुझे मुश्रिकों से लड़ाई में शरीक होने का मौक़ा दिया तो अल्लाह देख लेंगे कि मैं क्या करता हूं।

चुनांचे उहुद की लड़ाई के दिन जब मुसलमानों को हार होने लगी तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह ! सहाबा ने जो कुछ किया, मैं तुझसे उसकी

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 77

माज़रत चाहता हूं और मुश्रिकों ने जो कुछ किया है, मैं उससे अलग होना ज़ाहिर करता हूं।

यह कहकर वह आगे बढ़े तो सामने से हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० उनको आते हुए मिले, तो उन्होंने कहा, ऐ साद बिन मुआज़! (मेरे बाप) नज़्र के रब की क़सम! उहुद पहाड़ के पीछे से मुझे जन्नत की ख़ुशबू आ रही है।

हज़रत साद ने (बाद में यह क़िस्सा बयान करते हुए) हुज़ूर सल्ल० से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हज़रत अनस रज़ि० ने जो कर दिखाया (और जिस बहादुरी से वे लड़े) वह मैं न कर सका।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमने उनके जिस्म पर तलवार और नेज़े और तीर के अस्सी से ज़्यादा घाव पाए। हमने देखा कि वह शहीद हो चुके हैं और मुश्रिकों ने उनके कान-नाक वग़ैरह भी काट रखे हैं, जिसकी वजह से कोई उनको न पहचान सका, सिर्फ़ उनकी बहन ने उनको उनके हाथ के पोरों से पहचाना।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमारा ख़्याल है कि यह आयत हज़रत अनस और इन जैसे लोगों के बारे में उतरी है—

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ

'ईमान वालों में कितने मर्द हैं कि सच कर दिखाया जिस बात का अह्द किया था अल्लाह से।'[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे चचा (हज़रत अनस बिन नज़्र) जिनके नाम पर मेरा नाम अनस रखा गया, वह बद्र की लड़ाई में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ शरीक नहीं हुए थे और यह शरीक न होना उन पर बड़ा बोझ था, इसलिए उन्होंने कहा कि हुज़ूर सल्ल० की यह पहली लड़ाई हुई है और मैं इसमें शरीक न हो सका। अगर आगे अल्लाह ने मुझे हुज़ूर सल्ल० के साथ किसी लड़ाई में शरीक होने का मौक़ा दिया तो अल्लाह देख लेंगे कि मैं क्या करता हूं। इसके अलावा कुछ और कहने की उनकी हिम्मत न हुई।

1. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 436

चुनांचे वह हुज़ूर सल्ल० के साथ उहुद की लड़ाई में शरीक हुए। (लड़ाई के दौरान) उनको हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० सामने से आते हुए मिले, तो हज़रत अनस रज़ि० ने उनसे कहा, ऐ अबू अम्र ! तुम कहां हो ? वाह ! वाह ! जन्नत की ख़ुशबूदार हवा क्या ही उम्दा है जो मुझे उहुद के पीछे से आ रही है। फिर उन्होंने काफ़िरों से लड़ाई शुरू कर दी, यहां तक कि शहीद हो गए और उनके जिस्म में तलवार और नेज़े और तीर के अस्सी से ज़्यादा घाव पाए गए।

उनकी बहन मेरी फूफी रबीअ बिन्त नज़्र फ़रमाती हैं कि मैं अपने भाई को सिर्फ़ उनके पोरों ही से पहचान सकी। इस पर यह आयत उतरी—

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ۝

'ईमान वालों में कितने मर्द हैं कि सच कर दिखाया जिस बात का अह्द किया था, अल्लाह से, फिर कोई तो उनमें पूरा कर चुका अपना ज़िम्मा और कोई है उनमें राह देख रहा और बदला नहीं ज़र्रा।'

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि सहाबा रज़ि० का ख़्याल यह था कि यह आयत हज़रत अनस बिन नज़्र और उनके साथियों के बारे में उतरी है।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़ज़्वा मूता में हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को अमीर बनाकर भेजा और आपने फ़रमाया, अगर ज़ैद शहीद हो जाएं, तो जाफ़र अमीर होंगे और अगर जाफ़र शहीद हो जाएं तो अब्दुल्लाह बिन रुवाहा अमीर होंगे।

हज़रत अब्दुल्लाह (इब्ने उमर) फ़रमाते हैं, मैं भी इस ग़ज़्वा में मुसलमानों के साथ गया था। (लड़ाई के बाद) हमने जाफ़र बिन अबू तालिब को खोजना शुरू किया, तो हमने उनको शहीदों में पाया और हमने उनके जिस्म में तलवार और तीर के नब्बे से ज़्यादा घाव पाए और उनकी एक रिवायत में यह है कि उनमें से एक भी घाव उनकी पीठ पर

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 33, कंज़, भाग 7, पृ० 15, हुलीया, भाग 1, पृ० 121, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 44

नहीं था, (बल्कि सारे घाव उनके अगले हिस्से में थे।)[1]

हज़रत अम्र बिन शुरहबील रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब ख़ंदक़ की लड़ाई के दिन हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० को तीर लगा, तो उनका ख़ून हुज़ूर सल्ल० पर गिरने लगा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० आकर कहने लगे, हाय, कमर टूट गई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ामोश रहो। फिर हज़रत उमर रज़ि० आए और उन्होंने (हज़रत साद की हालत देखकर) कहा, इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०[2]

हज़रत सईद बिन उबैद सक़फ़ी रज़ि० फ़रमाते हैं कि तायफ़ की लड़ाई के दिन मैंने हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब रज़ि० को अबूयाली के बाग़ में देखा कि बैठे हुए कुछ खा रहे हैं। मैंने उनको तीर मारा जो उनकी आंख में लगा। चुनांचे वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह मेरी आंख है जो अल्लाह के रास्ते में ज़ाया हो गई है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम चाहो तो मैं अल्लाह से दुआ कर दूं जिससे तुम्हारी आंख तुम्हें वापस मिल जाए और अगर तुम चाहो तो (तुम सब्र कर लो और) तुम्हें जन्नत मिल जाए।

हज़रत सुफ़ियान ने अर्ज़ किया, मुझे तो जन्नत चाहिए (आंख नहीं चाहिए।)[3]

हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई के दिन उनकी आंख घायल हो गई और आंख की पुतली उनके गाल पर लटक गई। लोगों ने उसे काटना चाहा। आगे पूरी हदीस बयान की जो कि सहाबा की ताईदे ग़ैबी के बाब में आएगी। इनशाअल्लाह ![4]

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 245, इसाबा, भाग 1, पृ० 238, हुलीया, पृ० 1, पृ० 117, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 26
2. कंज़, भाग 8, पृ० 122
3. कंज़, भाग 5, पृ० 307, भाग 2, पृ० 178
4. बग़वी व अबू याला।

हज़रत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई के मौक़े पर लोग उमैया बिन ख़लफ़ के पास जमा हो गए, हम भी उसके पास गए। मैंने देखा कि उसकी ज़िरह का एक टुकड़ा उसकी बग़ल के नीचे से टूटा हुआ है। मैंने उस पर तलवार ज़ोर से मारी। बद्र की लड़ाई के दिन मुझे एक तीर लगा, जिससे मेरी आंख फूट गई। हुज़ूर सल्ल० ने उस पर मुबारक थूक लगाया और मेरी आंख के लिए ठीक होने की दुआ फ़रमाई। इसके बाद मुझे कोई तक्लीफ़ न रही।[1]

पीछे यह्या बिन अब्दुल हमीद की हदीस गुज़र चुकी है कि उनकी दादी बयान करती हैं कि हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ि० को छाती में एक तीर लगा और हज़रत अबुस्साइब रज़ि० की हदीस दावत इलल्लाहि की वजह से ज़ख़्मों और बीमारियों के बरदाश्त करने के बाब में गुज़र चुकी है कि बनू अब्दुल अशहल के एक आदमी ने कहा कि मैं और मेरा भाई उहुद की लड़ाई में शरीक हुए, हम दोनों (वहां से) घायल होकर वापस हुए। फिर आगे हदीस बयान की, जिसमें यह है कि अल्लाह की क़सम ! हमारे पास सवार होने के लिए कोई सवारी नहीं थी और हम दोनों भाई बहुत घायल और बीमार थे।

बरहाल हम दोनों हुज़ूर सल्ल० के साथ चल दिए। मैं अपने भाई से कम घायल था। जब चलते-चलते मेरा भाई हिम्मत हार जाता था, तो मैं कुछ देर के लिए उसे उठा लेता, फिर कुछ देर वह पैदल चलता। (हम दोनों इस तरह चलते रहे और मैं भाई को बार-बार उठाता रहा) यहां तक कि हम भी वहां पहुंच गए, जहां बाक़ी मुसलमान पहुंचे थे।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत बरा रज़ि० ने मुसैलमा (कज़्ज़ाब) से लड़ाई के दिन अपने आपको बाग़ वालों पर फेंक दिया। (मुसैलमा के साथी एक बाग़ में दाख़िल हो गए थे और भीतर से उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर लिया था। बाग़ के चारों ओर दीवार थी, हज़रत बरा उस दीवार को फलांग कर अन्दर दाख़िल हुए थे)

चुनांचे अन्दर जाकर उन्होंने अकेले ही लड़ना शुरू किया (और

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 88

इतने ज़ोर से हमला किया कि दरवाज़े तक पहुंचने में कामियाब हो गए) और उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया उन्हें तीर और तलवार के अस्सी से ज़्यादा घाव आ चुके थे, फिर उनको उठाकर इलाज के लिए उनकी क़ियामगाह पहुंचाया गया और हज़रत ख़ालिद रज़ि० (उनकी तीमारदारी और इलाज के लिए) एक महीना उनके पास ठहरे रहे।[1]

हज़रत इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० और उनके भाई इराक़ देश में हरीक़ जगह पर दुश्मन के एक क़िला के पास थे। दुश्मन के आदमी गर्म ज़ंजीरों में आंकड़े बांधकर फेंक रहे थे। (मुसलमानों में से) जो आदमी इस आंकड़े में फंस जाता, उसे वे अपनी ओर खींच लेते।

चुनांचे उन्होंने हज़रत अनस के साथ भी ऐसे ही किया (इन्हें आंकड़े में फंसा लिया) तो हज़रत बरा रज़ि० आगे बढ़े और दीवार की ओर देखते रहे (जैसे ही उन्हें मौक़ा मिला) उन्होंने हाथ से उस ज़ंजीर को पकड़ लिया और जब तक इस आंकड़े की (पीछे वाली) रस्सी न काट ली, उस वक़्त तक इस गर्म ज़ंजीर को हाथ से पकड़े रखा। इसके बाद जब उन्होंने अपने हाथों को देखा तो हाथों की हड्डियां नज़र आ रही थीं और गोश्त जलकर ख़त्म हो चुका था। इस तरह अल्लाह ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० को बचा लिया।[2]

इस रिवायत में इस तरह है कि आंकड़ा हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० पर आ गिरा (जिसमें वे फंस गए) दुश्मन ने हज़रत अनस रज़ि० को खींचना शुरू किया, यहां तक कि उनको ज़मीन से उठा लिया। (उनके भाई) हज़रत बरा रज़ि० दुश्मन से लड़ रहे थे तो उनको लोगों ने आकर कहा कि अपने भाई को बचा लो।

चुनांचे वे दौड़ते हुए आए और दीवार पर कूद कर चढ़ गए, फिर अपने हाथ से इस गर्म ज़ंजीर को पकड़ लिया, वह ज़ंजीर घूम रही थी। ज़ंजीर को पकड़कर उसे खींचते रहे और (गर्म ज़ंजीर की वजह से उनके

1. इसाबा, भाग 1, पृ० 143
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 143

हाथों की खाल और गोश्त जलने लगा और फिर) उनके हाथों से धुवां निकलता रहा, यहां तक कि उन्होंने (ज़ंजीर की) रस्सी काट डाली। फिर उन्होंने अपने हाथों की ओर देखा। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है।[1]

शहादत की तमन्ना और उसके लिए दुआ करना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर कुछ मोमिन ऐसे न होते, जिनको मेरे से पीछे रह जाना बिल्कुल पसन्द नहीं है और मेरे पास इतनी सवारियां भी नहीं हैं जिन पर मैं उनको सवार कराकर हर सफ़र में साथ ले जाऊं, तो मैं अल्लाह के रास्ते में लड़ाई के लिए किसी जमाअत से पीछे न रहता और उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मेरी यह दिली आरज़ू है कि मुझे अल्लाह के रास्ते में शहीद किया जाए, फिर मुझे ज़िंदा किया जाए, फिर शहीद किया जाए, फिर मुझे ज़िंदा किया जाए, फिर शहीद किया जाए, फिर मुझे ज़िंदा किया जाए, फिर मुझे शहीद किया जाए।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि जो आदमी अल्लाह के रास्ते में निकले, अल्लाह उसकी ज़मानत लेते हैं। चुनांचे फ़रमाते हैं कि उसका यह निकलना सिर्फ़ मेरे रास्ते में जिहाद करने और मुझ पर ईमान रखने और मेरे रसूलों की तस्दीक़ की वजह से हो तो यह मेरे ज़िम्मे है कि या तो मैं उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा या उसे अज्र व सवाब और माले ग़नीमत देकर उसके इस घर को वापस करूंगा, जिसमें अब निकलकर आया है। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद सल्ल० की जान है, जो ज़ख़्म भी मुसलमान को अल्लाह के रास्ते में लगता है, क़ियामत के दिन वह घाव उस हालत में होगा, जो हालत घायल होने के वक़्त थी। उसका रंग तो ख़ून वाला होगा और उसकी ख़ुशबू मुश्क वाली होगी।

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 325
2. बुख़ारी,

उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद (सल्ल०) की जान है (सवारी न होने की वजह से पीछे रह जाने वाले) मुसलमानों पर मेरा (इन्हें मदीना छोड़कर) लड़ाई में जाना बोझ न होता तो मैं अल्लाह के रास्ते में जाने वाली किसी जमाअत से पीछे न रहता, लेकिन (क्या करूं) न तो मेरे पास उनको सवारी देने की गुंजाइश है और न इसकी इनके पास गुंजाइश है और मेरे से पीछे रह जाने पर उन्हें बहुत ज़्यादा बोझ होता है।

उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद सल्ल० की जान है, यह मेरी दिली आरज़ू है कि मैं अल्लाह के रास्ते में जाऊं और मुझे क़त्ल कर दिया जाए, फिर मैं अल्लाह के रास्ते में जाऊं और मुझे क़त्ल कर दिया जाए, फिर मैं अल्लाह के रास्ते में जाऊं और मुझे क़त्ल कर दिया जाए।[1]

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत उमर रज़ि० ने लोगों में बयान फ़रमाया और बयान में यह बात कही कि जन्नाते अद्न में एक महल है जिसके पांच सौ दरवाज़े हैं और हर दरवाज़े पर पांच हज़ार मृगनयनी हूरें हैं, उसमें (सिर्फ़ तीन क़िस्म के आदमी दाख़िल होंगे, एक तो) नबी दाख़िल होगा, फिर हुज़ूर सल्ल० की क़ब्र की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ क़ब्र वाले! आपको मुबारक हो।

फिर फ़रमाया, या सद्दीक़ दाख़िल होगा। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० की क़ब्र की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ अबूबक्र! तुम्हें मुबारक हो।

फिर फ़रमाया, या शहीद दाख़िल होगा, फिर अपनी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ उमर! तुम्हें शहादत का दर्जा कहां मिल सकता है? फिर फ़रमाया, जिस अल्लाह ने मुझे मक्का से निकालकर मदीना की हिजरत की सआदत नसीब फ़रमाई, वह इस बात की क़ुदरत रखता है कि शहादत को खींचकर मेरे पास ले आए।[2]

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 133, कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 255
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 275

और एक और रिवायत में यह है कि इसके बाद हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि चुनांचे अल्लाह ने उस सबसे बुरे इंसान के हाथों आपको शहादत नसीब फ़रमाई, जो कि हज़रत मुग़ीरह रज़ि० का ग़ुलाम था।[1]

हज़रत अस्लम फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० यह दुआ फ़रमाया करते थे कि ऐ अल्लाह! मुझे अपने रास्ते की शहादत और अपने रसूल सल्ल० के शहर की मौत नसीब फ़रमा।[2]

हज़रत हफ़सा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ि० को यह दुआ मांगते हुए सुना, ऐ अल्लाह! मुझे अपने रास्ते की शहादत और अपने नबी सल्ल० के शहर की मौत नसीब फ़रमा। मैंने कहा, यह (इन दोनों बातों का जमा होना) कैसे हो सकता है?

तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह चाहेगा तो ऐसे कर देगा।[3]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ि० ने उनसे उहुद की लड़ाई के दिन कहा, क्या तुम अल्लाह से दुआ नहीं मांगते हो? इस पर वे दोनों एक कोने में गए और पहले हज़रत साद ने यह दुआ मांगी, ऐ मेरे रब! कल को जब मैं दुश्मन से लड़ने जाऊं, तो मेरे मुक़ाबले में ऐसे बहादुर को मुक़र्रर फ़रमा जो सख़्त हमले वाला और बहुत ग़ुस्से वाला हो। मैं उस पर ज़ोरदार हमला करूं और वह मुझ पर सख़्त हमला करे। फिर मुझे उस पर जीत दे, यहां तक कि मैं उसे क़त्ल करके उनका माले ग़नीमत ले लूं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श ने आमीन कहा, फिर उन्होंने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! कल को लड़ाई के मैदान में एक बहादुर से मेरा मुक़ाबला करा, जो बहुत ग़ुस्से वाला और सख़्त हमले वाला हो। मैं उस पर ज़ोरदार हमला करूं और वह मुझ पर ज़ोरदार हमले करे, फिर वह

---

1. मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 9, पृ० 55
2. बुख़ारी,
3. फ़त्हुलबारी, भाग 4, पृ० 71

मुझे पकड़कर मेरे नाक और नाक काट दे। फिर कल जब तेरे हुज़ूर में पेशी हो, तो तू कहे कि तेरे नाक और कान क्यों काटे गए?

तो मैं कहूं तेरी और तेरे रसूल की वजह से।

फिर तू कहे कि हां, तुमने ठीक कहा।

हज़रत साद फ़रमाते हैं, ऐ मेरे बेटे! हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश की दुआ मेरी दुआ से बेहतर थी। चुनांचे मैंने दिन के आख़िरी हिस्से यानी शाम को देखा कि उनके नाक और कान एक धागे में पिरोए हुए हैं।[1]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि० ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! मैं तुझे क़सम देता हूं कि कल जब मैं दुश्मन से मिलूं तो वह मुझे क़त्ल करके मेरे पेट को फाड़ दे और मेरे नाक और कान काट दे, फिर तू मुझसे पूछे, यह सब क्यों हुआ?

तो मैं कहूं (यह सब कुछ) तेरे लिए हुआ।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ि० फ़रमाते हैं कि जैसे अल्लाह ने उनकी क़सम का शुरू वाला हिस्सा पूरा कर दिया, तो ऐसे ही क़सम का आख़िरी हिस्सा भी ज़रूर पूरा करेंगे।[2]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, बहुत से दो पुरानी चादरों वाले ऐसे हैं कि उनकी ओर कोई तवज्जोह ही नहीं करता (लेकिन) अगर वे अल्लाह पर क़सम खा लें, तो अल्लाह उनकी क़सम को ज़रूर पूरा कर दे और उन लोगों में से एक हज़रत बरा बिन मालिक रज़ि० भी हैं।

चुनांचे जब तुस्तर की लड़ाई के दिन मुसलमानों को हार होने लगी, तो लोगों ने कहा, ऐ बरा! अल्लाह को क़सम देकर (जीत की) दुआ

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 302, इसाबा, भाग 2, पृ० 287, इस्तीआब, भाग 2, पृ० 284, बैहक़ी, भाग 6, पृ० 207, हुलीया, भाग 1, पृ० 109
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 200, इसाबा, भाग 2, पृ० 287, हुलीया, भाग 1, पृ० 109, इब्ने साद, भाग, पृ० 63

करो। चुनांचे जब हज़रत बरा ने कहा, ऐ मेरे रब! मैं तुझे क़सम देकर कहता हूं कि तू दुश्मन के कंधे हमारे हाथों में दे दे और मुझे अपने नबी सल्ल० से मिला दे। (यानी मुझे शहादत की मौत नसीब फ़रमा और मुसलमानों को जीत दिला।)

हज़रत अनस फ़रमाते हैं कि हज़रत बरा उसी दिन शहीद हो गए।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि बहुत से लोग ऐसे हैं जो ख़ुद भी कमज़ोर होते हैं और दूसरे लोग भी उनको कमज़ोर समझते हैं। उनके पास ओढ़ने के लिए सिर्फ़ दो पुरानी चादरें होती हैं, लेकिन अगर वे अल्लाह पर क़सम खा लें, तो अल्लाह उनकी क़सम को ज़रूर पूरा कर दे और उन लोगों में से हज़रत बरा बिन मालिक रज़ि० भी हैं।

चुनांचे हज़रत बरा का मुश्रिकों की एक जमाअत के साथ मुक़ाबला हुआ और उस दिन मुश्रिकों ने मुसलमानों को सख़्त जानी नुक़्सान पहुंचाया था, तो मुसलमानों ने कहा, ऐ बरा! अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया है कि अगर आप अल्लह पर क़सम खाएं तो अल्लाह आपकी क़सम को ज़रूर पूरा कर देंगे, इसलिए (आज मुसलमान) को हार से बचाने और जीत दिलवाने के लिए) आप अपने रब पर क़सम खाएं।

तो हज़रत बरा ने कहा, ऐ मेरे रब! मैं तुझे क़सम देता हूं कि तू दुश्मन के कंधे हमारे हाथों में दे दे। (चुनांचे उस दिन मुसलमानों की जीत हो गई) उसके बाद फिर सूस शहर के पुल पर मुसलमानों का मुश्रिकों से मुक़ाबला हुआ। मुश्रिकों ने उस दिन भी मुसलमानों को सख़्त जानी नुक़्सान पहुंचाया।

इस पर मुसलमानों ने हज़रत बरा से कहा, ऐ बरा! आप अपने रब पर क़सम खाएं। चुनांचे उन्होंने कहा, ऐ मेरे रब! मैं तुझे इस बात की क़सम देता हूं कि तू दुश्मन के कंधे हमारे हाथों में दे दे और मुझे अपने नबी करीम सल्ल० के साथ मिला दे।

1. कंज़, भाग 7, पृ० 11, इसाबा, भाग 1, पृ० 144

चुनांचे मुसलमानों को मुश्रिकों पर जीत हुई और हज़रत बरा ख़ुद शहीद हो गए।[1]

हज़रत हुमैद बिन अब्दुर्रहमान हमयरी कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के सहाबा में से एक सहाबी का नाम हुममा था। वह हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में असफ़हान के जिहाद में शरीक हुए, तो उन्होंने दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! हुममा यह दावा करता है कि वह तेरी मुलाक़ात को यानी मरने को बहुत ज़्यादा पसन्द करता है। ऐ अल्लाह ! अगर यह (अपने इस दावे में) सच्चा है तो तू इसकी सच्चाई की वजह से उसे इसकी हिम्मत और ताक़त अता फ़रमा (कि वह ख़ुशी-ख़ुशी तेरे रास्ते में शहादत को गले लगा ले) और अगर वह (अपने इस दावे में) झूठा है तो चाहे वह उसे पसन्द न करे, लेकिन तू इसे अपने रास्ते की मौत दे।

आगे हदीस और भी है और उसमें यह भी है कि वह उस दिन शहीद हो गए और हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने फ़रमाया कि बेशक यह शहीद हैं।[2]

इमाम अहमद की इसी रिवायत में यह मज़्मून भी है कि हज़रत हुममा की दुआ में यह भी था कि अगर यह हुममा तेरी मुलाक़ात यानी तेरे रास्ते की मौत को नागवार समझता है, तो चाहे वह नागवार समझे, तो इसे अपने रास्ते की मौत दे दे। ऐ अल्लाह ! हुममा अपने सफ़र से अपने घर वापस न जा सके। चुनांचे इन्हें इसी सफ़र में अल्लाह के रास्ते में मौत आ गई।

हज़रत अफ़्फ़ान रिवायत करने वाले कभी यह बयान करते थे कि उनको पेट की बीमारी हो गई थी, जिसमें वह अस्फ़हान में फ़ौत हो गए थे। (उनके इंतिक़ाल के बाद) हज़रत अबू मूसा ने खड़े होकर फ़रमाया, ऐ लोगो ! जो कुछ हमने तुम्हारे नबी करीम सल्ल० से सुना है और जहां तक हमारा इल्म है, उसके मुताबिक़ हज़रत हुममा शहीद ही हैं।[3]

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 297, हाकिम, भाग 3, पृ० 292, हुलीया, भाग 1, पृ० 7
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 355
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 400, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 170

हज़रत माक़ल बिन यसार कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि०ने हुरमज़ान (ईरानी फ़ौज का सेनापति, जो मुसलमानों से हारकर हज़रत उमर के हाथ पर मुसलमान हो गया था) से मश्विरा फ़रमाया कि मैं जिहाद कहां से शुरू करूं? फ़ारस से या आज़र बाईजान से या अस्फ़हान से?

तो हुरमुज़ ने कहा कि फ़ारस और आज़र बाइजान तो दो पर हैं और अस्फ़हान सर है। अगर तुम एक पर काट दोगे तो दूसरा काम देता रहेगा और अगर तुम सर काट दोगे तो दोनों पर बेकार हो जाएंगे। इसलिए आप सर से यानी अस्फ़हान से शुरू करें। चुनांचे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में तशरीफ़ ले गए, वहां हज़रत नामान बिन मुक़र्रिन रज़ि० नमाज़ पढ़ रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० उनके पास जाकर बैठ गए।

जब उन्होंने अपनी नमाज़ पूरी कर ली, तो उनसे हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं तुमको अपना गवर्नर बनाना चाहता हूं।

तो हज़रत नामान रज़ि० ने फ़रमाया कि माल जमा करने वाला गवर्नर तो मैं बनना नहीं चाहता हूं, अलबत्ता जान देने वाला आमिल (गवर्नर) बनने को तैयार हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जान देनेवाला आमिल बनाना चाहता हूं। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने उनको अस्फ़हान (फ़ौज का अमीर बनाकर) भेजा। आगे और हदीस ज़िक्र की।

फिर यह मज़्मून है कि हज़रत मुग़ीरह ने हज़रत नामान से कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए। लोगों पर (दुश्मन की तरफ़ से) तेज़ी से (तीर) आ रहे हैं। इसलिए आप (दुश्मन पर जवाबी) हमला कर दें।

हज़रत नामान ने कहा, अल्लाह की क़सम! आप तो बहुत से फ़ज़ाइल व मनाक़िब वाले हैं। मैं कई लड़ाइयों में हुज़ूर सल्ल० के साथ शरीक हुआ हूं। (तो आपकी मुबारक आदत यह थी) कि जब दिन के शुरू में लड़ाई शुरू न फ़रमाते, तो फिर लड़ाई को और टाल देते, यहां तक कि सूरज ढल जाता, हवाएं चल पड़तीं और मदद उतरने लगती।

फिर हज़रत नामान ने फ़रमाया, मैं अपने झंडे को तीन बार हिलाऊंगा। जब पहली बार हिलाऊं तो हर आदमी ज़रूरत वग़ैरह से फ़ारिग़ होकर वुज़ू कर ले और जब दूसरी बार हिलाऊं, तो हर आदमी अपने हथियार और तस्मे वग़ैरह को देखकर ठीक कर ले। फिर जब तीसरी बार हिलाऊं तो तुम सब हमला कर देना और कोई भी किसी की तरफ़ मुतवज्जह न हो, यहां तक कि अगर नामान भी क़त्ल हो जाए तो कोई उसकी ओर मुतवज्जह न हो और अब मैं अल्लाह से दुआ करूंगा, तुममें से हर आदमी उस पर ज़रूर आमीन कहे। इसकी मेरी तरफ़ से पूरी ताकीद है। फिर यह दुआ मांगी। ऐ अल्लाह! आज नामान को शहादत की मौत नसीब फ़रमा और मुसलमानों की मदद फ़रमा और उन्हें जीत दे दे।

फिर अपना झंडा पहली बार हिलाया, थोड़ी देर के बाद दूसरी बार हिलाया, इसके थोड़ी देर बाद तीसरी बार हिलाया, फिर अपनी ज़िरह पहनी, फिर उन्होंने हमला कर दिया और सबसे पहले ज़ख़्मी होकर ज़मीन पर गिरे।

हज़रत माक़िल फ़रमाते हैं कि मैं उनके पास गया, लेकिन मुझे उनकी ताकीद याद आ गई, इसलिए मैं उनकी ओर मुतवज्जह नहीं हुआ, अलबत्ता उनके पास एक निशानी रखकर चला गया और जब हम (दुश्मन के) किसी आदमी को क़त्ल करते तो उसके साथी हमसे लड़ना छोड़कर उसे उठा ले जाने में लग जाते और दुश्मन का सरदार ज़ुल हाजिबैन अपने ख़च्चर से बुरी तरह गिरा और उसका पेट फट गया और अल्लाह ने उनको हरा दिया, फिर मैं हज़रत नामान के पास आया। अभी कुछ जान उनमें बाक़ी थी और मेरे पास एक बरतन में पानी था, जिससे मैंने उनके चेहरे से मिट्टी को धोया, तो उन्होंने पूछा, तुम कौन हो?

मैंने कहा, माक़िल बिन यसार।

फिर उन्होंने पूछा, मुसलमानों का क्या हुआ?

मैंने कहा, अल्लाह ने उनको जीत दिला दी।

उन्होंने कहा, अल्हम्दुलिल्लाह (अल्लाह का शुक्र है) यह बात हज़रत उमर रज़ि० को लिखकर भेज दो और फिर उनकी रूह परवाज़ कर गई।[1]

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० निहादन्द की लड़ाई का वाक़िया तफ़्सील से बयान करते हैं। उसमें यह भी है कि हज़रत नामान ने फ़रमाया कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० जिहाद के सफ़र में तशरीफ़ ले जाते और शुरू दिन में लड़ाई न शुरू फ़रमाते, तो फिर जल्दी न फ़रमाते, (बल्कि इन्तिज़ार फ़रमाते) यहां तक कि नमाज़ का वक़्त हो जाता और हवाएं चलने लग पड़तीं और लड़ाई अच्छी शक्ल अपना लेती (तो फिर आप लड़ाई शुरू फ़रमाते) अब हुज़ूर सल्ल० की इस आदत की वजह से लड़ाई शुरू नहीं कर रहा हूं।

फिर यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस बात का सवाल करता हूं कि मेरी आंखों को आज ऐसी जीत से ठंडा फ़रमा, जिसमें इस्लाम की इज़्ज़त हो और काफ़िरों की ज़िल्लत हो। फिर इसके बाद मुझे शहादत देकर अपने पास बुला ले। (लोगों से मुख़ातब होकर कहा) तुम सब आमीन कहो, अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए। चुनांचे हम सबने आमीन कही और हम सब रो पड़े।[2]

सहाबा किराम रज़ि० का अल्लाह के रास्ते में मरने और जान देने का शौक़

हज़रत सुलैमान बिन बिलाल रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० बद्र के लिए तशरीफ़ ले जाने लगे तो हज़रत साद बिन ख़ैसमा रज़ि० और उनके बाप हज़रत ख़ैसमा रज़ि० दोनों ने हुज़ूर सल्ल० के साथ जाने का इरादा किया।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० के सामने उसका तज़्किरा किया तो आपने फ़रमाया, दोनों में से एक जाए (चूंकि रुकने पर कोई राज़ी नहीं है, इसलिए) दोनों क़ुरआ डाल लो।

1. तबरी, भाग 4, पृ० 249
2. तबरी, भाग 4, पृ० 235, हैसमी भाग 6, पृ० 217, हाकिम, भाग 3, पृ० 293

हज़रत ख़ैसमा बिन हारिस ने अपने बेटे साद से कहा, अब हम दोनों में से एक का यहां रहना तो ज़रूरी हो गया है, इसलिए तुम अपनी औरतों के पास ठहर जाओ।

हज़रत साद ने कहा कि अगर जन्नत के अलावा कोई और चीज़ होती, तो मैं (हुज़ूर सल्ल० के साथ जाने में) आपको अपने से आगे रखता। मैं अपने इस सफ़र में शहादत की उम्मीद लगाए हुए हूं। चुनांचे दोनों ने क़ुरआ डाला, जिसमें हज़रत साद का नाम निकल आया। चुनांचे हज़रत साद हुज़ूर सल्ल० के साथ बद्र गए और अम्र बिन अब्देवद ने उनको शहीद किया।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन रह० फ़रमाते हैं कि जब बद्र की लड़ाई के दिन उत्बा ने अपने मुक़ाबले के लिए (मुसलमानों को) ललकारा तो हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि०, वलीद बिन उत्बा के मुक़ाबले के लिए खड़े हुए। ये दोनों नवजवान बराबर के जोड़ वाले थे।

रिवायत करने वाले ने हाथ से इशारा करते हुए हथेली को ज़मीन की ओर उलटा कर बताया कि इस तरह हज़रत अली ने वलीद को क़त्ल करके ज़मीन पर गिरा दिया, फिर काफ़िरों में से शैबा बिन रबीआ बाहर निकला। उसके मुक़ाबले के लिए हज़रत हमज़ा रज़ि० खड़े हुए थे। ये दोनों बराबर के जोड़ वाले थे और इस बार पहले से भी ऊंचा इशारा करके बताया कि हज़रत हमज़ा ने शैबा को क़त्ल करके ज़मीन पर गिरा दिया। फिर काफ़िरों की ओर से उत्बा बिन रबीआ खड़ा हुआ। उसके मुक़ाबले के लिए हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ि० उठे। वे दोनों उन दो स्तूनों की तरह थे। दोनों ने एक दूसरे पर तलवार के वार किए।

चुनांचे हज़रत उबैदा ने उत्बा को इस ज़ोर से तलवार मारी कि उसका बायां कंधा लटक गया। फिर उत्बा ने क़रीब आकर हज़रत उबैदा की टांग पर तलवार का वार किया, जिससे उसकी पिंडुली कट गई। यह देखकर हज़रत हमज़ा और हज़रत अली दोनों उत्बा की ओर लपके और उसका काम तमाम कर दिया और वे दोनों हज़रत उबैदा को

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 189, इसाबा, भाग 2, पृ० 25

उठाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में छप्पर में ले आए।

हुज़ूर सल्ल० ने उनको लिटाया और उनका सर अपनी टांग पर रखा और उनके चेहरे से धूल साफ़ करने लगे।

हज़रत उबैदा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह की क़सम ! अगर अबू तालिब मुझे इस हाल में देख लेते तो वह यक़ीन कर लेते कि मैं उनके इस शेर (पद) का उनसे ज़्यादा हक़दार हूं, (जो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की हिमायत में कहा था)—

وَنُسْلِمُهُ حَتّٰى نُصَرَّعَ حَوْلَهُ ۝ وَنَذْهَلَ عَنْ اَبْنَآئِنَا وَالْحَلَآئِلِ

'हम अपने बीवी-बच्चों से ग़ाफ़िल होकर उनकी हिफ़ाज़त में आख़िर दम तक लगे रहेंगे, यहां तक कि हम घायल होकर उनके चारों ओर ज़मीन पर पड़े हुए होंगे' (और साथ ही यह अर्ज़ किया) क्या मैं शहीद नहीं हूं ?

आपने फ़रमाया, बेशक तुम शहीद हो और मैं इस बात में तुम्हारा गवाह हूं।

फिर हज़रत अबू उबैदा का इंतिक़ाल हो गया। हुज़ूर सल्ल० ने उनको वादी सफ़रा में दफ़न फ़रमाया और आप उनकी क़ब्र में उतरे और (इससे पहले) आप किसी और की क़ब्र में नहीं उतरे थे।[1]

हज़रत ज़ोहरी कहते हैं कि उत्बा और हज़रत उबैदा ने एक दूसरे पर तलवार के वार किए और हर एक ने अपने मुक़ाबले के आदमी को सख़्त ज़ख़्मी किया। यह देखकर हज़रत हमज़ा और हज़रत अली दोनों उत्बा पर झपटे और उसको क़त्ल किया और दोनों ने अपने साथी हज़रत उबैदा को उठाया और उनको हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले आए, उनकी टांग कट चुकी थी। उसमें से गूदा बह रहा था।

जब वह हज़रत उबैदा को हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले आए, तो हज़रत उबैदा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या मैं शहीद नहीं हूं ?

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 272

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्यों नहीं? तुम यक़ीनन शहीद हो।

हज़रत उबैदा ने कहा कि अगर अबू तालिब आज ज़िंदा होते तो वह यह यक़ीन कर लेते कि मैं उनके इस शेर (पद) का उनसे ज़्यादा हक़दार हूं।[1]

وَنُسْلِمُهُ حَتَّى نُصَرَّعَ حَوْلَهُ   وَنَذْهَلُ عَنْ أَبْنَائِنَا وَالْحَلَائِلِ

उहुद की लड़ाई का दिन

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने उहुद की लड़ाई के दिन अपने भाई से कहा, ऐ मेरे भाई! तुम मेरी ज़िरह ले लो। उनके भाई ने कहा, (मैं नहीं लेना चाहता हूं) जैसे आप शहीद होना चाहते हैं, ऐसी ही मैं भी शहीद होना चाहता हूं। चुनांचे दोनों ने वह ज़िरह छोड़ दी।[2]

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब उहुद की लड़ाई के दिन लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास से चले गए और उनको हार हो गई तो मैंने हुज़ूर सल्ल० को क़त्ल किए गए लोगों में देखा, लेकिन आप मुझे उनमें नज़र न आए तो मैंने (अपने दिल में) कहा कि हुज़ूर सल्ल० भागने वाले तो हैं नहीं और आप मुझे क़त्ल किए गए लोगों में भी नज़र नहीं आ रहे हैं, इसलिए मेरा ख़्याल यह है कि अल्लाह ने हमारे काम से नाराज़ होकर अपने नबी को उठा लिया है।

इसलिए अब मेरे लिए सबसे बेहतर शक्ल यह है कि मैं दुश्मन से लड़ने लग जाऊं, यहां तक कि जान दे दूं। चुनांचे मैंने अपनी तलवार की म्यान तोड़ दी और फिर काफ़िरों पर ज़ोर से हमला किया तो काफ़िर मेरे सामने से हट गए तो क्या देखता हूं कि हुज़ूर सल्ल० उनके बीच घिरे हुए हैं।[3]

क़बीला बनू अदी बिन नज्जार के हजरत क़ासिम बिन अब्दुर्रहमान

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 188
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 298, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 275, हुलीया भाग 1, पृ० 367
3. कंज़ुल उम्माल, भाग, पृ० 274, हैसमी, भाग 6, पृ० 115

बिन राफ़ेअ रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० के चचा हज़रत अनस बिन नज़्र, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० के पास पहुंचे तो ये दोनों दूसरे मुहाजिर और अंसारी लोगों के साथ (लड़ाई से) हाथ रोक कर (परेशान) बैठे हुए थे, तो हज़रत अनस बिन नज़्र ने कहा कि आप लोग क्यों बैठे हुए हैं?

उन्होंने कहा कि हुज़ूर सल्ल० शहीद हो गए हैं।

उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० के बाद तुम ज़िंदा रहकर क्या करोगे? उठो और जिस चीज़ पर हुज़ूर सल्ल० ने जान दे दी है, तुम भी उसी पर जान दे दो।

चुनांचे हज़रत अनस बिन नज़्र काफ़िरों की तरफ बढ़े और लड़ना शुरू कर दिया, आख़िरकार शहीद हो गए।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्मार ख़तमी रज़ि० फ़रमाते हैं कि उहुद की लड़ाई के दिन हज़रत साबित बिन दहदाहा रज़ि० सामने से आए और मुसलमान अलग-अलग टोलियों में हैरान व परेशान बैठे हुए थे, तो ये ऊंची आवाज़ से कहने लगे, ऐ अंसार की जमाअत! मेरे पास आओ, मेरे पास आओ। मैं साबित बिन दहदाहा हूं। अगर हज़रत मुहम्मद सल्ल० शहीद हो गए हैं (तो क्या बात है?) अल्लाह तो ज़िंदा हैं, उन्हें मौत नहीं आती है, इसलिए तुम अपने दीन को बचाने के लिए लड़ो, अल्लाह तुम्हें ग़ालिब फ़रमाएंगे और तुम्हारी मदद करेंगे।

कुछ अंसार खड़े होकर उनके पास आ गए। जो मुसलमान उनके साथ हो गए थे, उनको लेकर उन्होंने काफ़िरों पर हमला कर दिया। हथियारों से सजा हुआ और मज़बूत दस्ता उनके सामने खड़ा हो गया। इस दस्ते में काफ़िरों के सरदार ख़ालिद बिन वलीद, अम्र बिन आस, इक्रिमा बिन अबू जह्ल और ज़िरार बिन ख़त्ताब थे।

चुनांचे आपस की ख़ूब ज़ोर की लड़ाई हुई। ख़ालिद बिन वलीद ने नेज़ा लेकर हज़रत साबित बिन दहदाहा पर हमला किया और उनको

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 34

इस ज़ोर का नेज़ा मारा कि आर-पार हो गया। चुनांचे वह शहीद होकर गिर पड़े और उनके साथ जितने अंसार थे वे सब भी शहीद हो गए और कहा जाता है कि उस दिन यही लोग सबसे आख़िर में शहीद हुए।[1]

हज़रत अबू नजीह रज़ि० फ़रमाते हैं कि उहुद की लड़ाई के दिन एक मुहाजिर सहाबी एक अंसारी के पास से गुज़रे। वह अंसारी ख़ून में लत-पत थे। उस मुहाजिरी ने उनसे कहा, क्या तुम्हें मालूम है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शहीद कर दिए गए हैं?

तो अंसारी ने कहा कि अगर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शहीद कर दिए गए हैं, तो वह अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा चुके है (जिस काम के लिए अल्लाह ने उनको भेजा था, वह काम उन्होंने पूरा कर दिया है) इसलिए तुम अपने दीन को बचाने के लिए (काफ़िरों से) लड़ो। इस पर यह आयत उतरी—

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۚ

'और मुहम्मद (सल्ल०) एक रसूल हैं।'[2]

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने उहुद की लड़ाई के दिन मुझे हज़रत साद बिन रबीअ रज़ि० को खोजने के लिए भेजा और आपने मुझसे फ़रमाया कि तुम उनको देख लो तो उनको मेरा सलाम कहना और उनसे कहना कि अल्लाह के रसूल सल्ल० तुमसे पूछ रहे हैं कि तुम अपने आपको कैसा पा रहे हो?

हज़रत ज़ैद फ़रमाते हैं कि मैं (उन्हें खोजने के लिए) क़त्ल किए गए लोगों में चक्कर लगाने लगा। जब मैं उनके पास पहुंचा तो उनकी आख़िरी सांस चल रही थी और उनके जिस्म पर नेज़े और तलवार और तीर के सत्तर घाव थे।

मैंने उनसे कहा, ऐ साद! अल्लाह के रसूल तुम्हें सलाम कहते हैं और तुमसे पूछते हैं कि तुम अपने आपको कैसा पा रहे हो?

---

1. इस्तीआब, भाग 1, पृ० 195
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 31

उन्होंने कहा, अल्लाह के रसूल को और आपको सलाम हो। तुम हुज़ूर सल्ल० से कह देना कि अल्लाह के रसूल! मेरा हाल यह है कि मैं जन्नत की ख़ुशबू पा रहा हूं और मेरी क़ौम अंसार से कह देना कि तुममें एक भी झपकने वाली आंख मौजूद हो, यानी तुममें से एक आदमी भी ज़िंदा हो और काफ़िर अल्लाह के रसूल सल्ल० तक पहुंच जाएं तो अल्लाह के यहां तुम्हारा कोई उज़्र क़ुबूल नहीं होगा।

इतना कहने के बाद उनकी रूह परवाज़ कर गई। अल्लाह उन पर रहम फ़रमाए।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी सासआ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि कौन देखकर मुझे बताएगा कि हज़रत साद रबीअ का क्या हुआ? (रज़ियल्लाहु अन्हु) आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया और फिर यह मज़्मून है कि हज़रत साद ने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० को बता दो कि मैं लड़ाई में शहीद हो जाने वालों में पड़ा हूं और हुज़ूर सल्ल० को मेरा सलाम कहना और उनसे अर्ज़ करना कि साद कह रहा था कि अल्लाह आपको हमारी और सारी उम्मत की ओर से बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाए।[2]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब मुश्रिकों ने उहुद की लड़ाई के दिन नबी करीम सल्ल० को चारों ओर से घेर लिया और उस वक़्त आपके साथ सात अंसारी और एक क़ुरैशी सहाबी थे, तो आपने फ़रमाया, जो उनको हमसे पीछे हटाएगा, वह जन्नत में मेरा साथी होगा।

चुनांचे एक अंसारी सहाबी ने आकर उन काफ़िरों से लड़ाई शुरू की, यहां तक कि वह शहीद हो गए। जब मुश्रिकों ने हुज़ूर सल्ल० को फिर घेर लिया, तो आपने फिर फ़रमाया जो इनको हमसे पीछे हटाएगा, वह जन्नत में मेरा साथी होगा। (इस तरह एक-एक करके) सातों अंसारी शहीद हो गए।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हमने अपने (अंसारी) साथियों से

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 201
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 39, मुअत्ता पृ० 175, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 523

इंसाफ़ नहीं किया (या हमारे साथियों ने हमसे इंसाफ़ नहीं किया हमें छोड़कर चले गए।)[1]

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि उहुद की लड़ाई के दिन जब मुसलमान हारे तो वे हुज़ूर सल्ल० को छोड़कर चले गए और आपके साथ ग्यारह अंसारी और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० रह गए। हुज़ूर सल्ल० पहाड़ पर चढ़ने लगे कि पीछे से मुश्रिक उन तक पहुंच गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या इन (के रोकने) के लिए कोई नहीं है?

हज़रत तलहा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ तलहा ! तुम जैसे हो, वैसे ही रहो।

एक अंसारी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं हूं। चुनांचे उन्होंने काफ़िरों से लड़ाई शुरू कर दी। हुज़ूर सल्ल० बाक़ी सहाबी रज़ि० को लेकर पहाड़ के और ऊपर चढ़ गए। फिर वह अंसारी शहीद हो गए और काफ़िर हुज़ूर सल्ल० तक पहुंच गए।

आपने फ़रमाया, क्या उन (को रोकने) के लिए कोई मर्द नहीं है?

हज़रत तलहा रज़ि० ने अपनी पहली बात दोहराई। हुज़ूर सल्ल० ने उनको वही जवाब दिया, तो एक अंसारी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं हूं और उन्होंने उन काफ़िरों से लड़ाई शुरू कर दी। हुज़ूर सल्ल० और बाक़ी सहाबा रज़ि० पहाड़ पर और ऊपर चढ़ने लगे। इतने में वह अंसारी सहाबी शहीद हो गए और काफ़िर फिर हुज़ूर सल्ल० तक पहुंच गए।

हुज़ूर सल्ल० हर बार अपना वही फ़रमान इर्शाद फ़रमाते। हज़रत तलहा हर बार अर्ज़ करते, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं हूं। हुज़ूर सल्ल० उन्हें रोक देते। फिर कोई अंसारी उन काफ़िरों से लड़ने की इजाज़त मांगता। हुज़ूर सल्ल० उसे इजाज़त दे देते और वह अपने से पहले वाले की तरह ख़ूब ज़ोर से लड़ता और शहीद हो जाता, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० के साथ सिर्फ़ हज़रत तलहा बाक़ी रह गए, तो मुश्रिकों ने उन

1. इमाम अहमद, मुस्लिम,

दोनों को घेर लिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इनसे मुक़ाबले के लिए कौन तैयार है?

हज़रत तलहा रज़ि० ने कहा, मैं। (हुज़ूर सल्ल० ने इस बार उनको इजाज़त दे दी।) चुनांचे उनसे पहले वालों ने मिलकर जितनी लड़ाई की, उन्होंने अकेले उन सबके बराबर लड़ाई की। (लड़ते-लड़ते) उनके हाथों के पोरे बहुत ज़ख्मी हो गए, तो उन्होंने कहा, हाय!

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम बिस्मिल्लाह कहते तो फ़रिश्ते तुम्हें ऊपर उठा लेते और तुम्हें लेकर आसमान में दाख़िल हो जाते और तुम्हें देख रहे होते। फिर हुज़ूर सल्ल० पहाड़ी पर चढ़कर अपने सहाबा के पास पहुंच गए जो वहां जमा थे।[1]

हज़रत महमूद बिन लबीद फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० उहुद तशरीफ़ ले गए तो हज़रत हुज़ैफ़ा के बाप हज़रत यमान बिन जाबिर और साबित बिन वक़्श बिन अऊरा रज़ि० औरतों और बच्चों के साथ क़िले पर चढ़ गए। ये दोनों बूढ़े थे। उनमें से एक ने दूसरे से कहा, तेरा बाप न रहे, हम किस चीज़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं। अल्लाह की क़सम! हममें से हर एक की इतनी उम्र बाक़ी रह गई है, जितनी एक गधे की प्यास। (तमाम जानवरों में गधा सबसे कम प्यास बरदाश्त कर सकता है) यानी बहुत थोड़ी उम्र बाक़ी रह गई है। हम आज या कल मर जाएंगे। क्यों न हम अपनी तलवारें लेकर हुज़ूर सल्ल० के साथ (लड़ाई में) शरीक हो जाएं।

चुनांचे ये दोनों मुसलमानों की फ़ौज में शरीक हो गए और मुसलमान उनको पहचानते नहीं थे। हज़रत साबित बिन वक़्श को तो मुश्रिकों ने क़त्ल कर दिया और हज़रत अबू हुज़ैफ़ा पर मुसलमानों की तलवारें चलीं और मुसलमानों ने उनको क़त्ल कर दिया, क्योंकि मुसलमान उनको पहचानते न थे।

चुनांचे हज़रत हुज़ैफ़ा ने पुकारा, यह मेरे बाप हैं, यह मेरे बाप हैं, इन्हें न मारो।

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 26

(मारने वाले) मुसलमानों ने कहा, अल्लाह की क़सम ! हम इनको पहचानते न थे और ये लोग अपनी इस बात में सच्चे थे।

इस पर हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहा, अल्लाह आप लोगों को माफ़ फ़रमाए और वह सबसे ज़्यादा रहम फ़रमाने वाले हैं। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० को उनके बाप का ख़ून बहा देना चाहा, लेकिन उन्होंने मुसलमानों को ख़ून बहा माफ़ कर दिया। इससे हुज़ूर सल्ल० के नज़दीक हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० का दर्जा और बढ़ गया।[1]

और अबू नुऐम की रिवायत में यह मज़्मून भी है कि (इन दोनों, यानी हज़रत अबू हुज़ैफ़ा और हज़रत साबित ने यह भी कहा कि) हम दोनों जाकर हुज़ूर सल्ल० से मिल जाते हैं। हो सकता है कि अल्लाह हमें हुज़ूर सल्ल० के साथ शहादत नसीब फ़रमा दे। चुनांचे वे दोनों अपनी तलवारें लेकर मुसलमानों की फ़ौज में शामिल हो गए और किसी को उनके आने का पता न चला और उसके आख़िर में यह भी है कि (इस माफ़ कर देने से) हुज़ूर सल्ल० के नज़दीक हज़रत हुज़ैफ़ा का दर्जा और बढ़ गया।[2]

ग़ज़वा रजीअ का दिन

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने एक जमाअत को हालात मालूम करने के लिए भेजा और हज़रत आसिम बिन साबित रज़ि० को इस जमाअत का अमीर बनाया। यह (साबित) हज़रत आसिम बिन उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के नाना हैं। चुनांचे ये लोग रवाना हुए।

जब ये उस्फ़ान और मक्का के दर्मियान (बदआ जगह पर) पहुंच गए तो हुज़ैल के क़बीला बनू लिह्यान से इस जमाअत का लोगों ने तज़्किरा किया, तो बनू लिह्यान लगभग सौ तीरंदाज़ों को लेकर उनका पीछा करने के लिए चले और उनके क़दमों के निशानों पर चलते-चलते

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 202
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 167

उस जगह पहुंचे, जहां उस जमाअत ने पड़ाव किया था। ये लोग मदीना से जो खजूरों का नाश्ता-पानी लेकर चले थे, उनकी गुठलियां बनू लिह्यान को उस जगह मिलीं (जिसे देखकर) बनू लिह्यान ने कहा, ये तो यसरिब (मदीना) की खजूरें हैं। चुनांचे बनू लिह्यान उनके पीछे चलते-चलते उन तक पहुंच गए।

जब हज़रत आसिम और उनके साथियों को इसका पता चला तो वे एक पहाड़ी पर चढ़ गए और बनू लिह्यान ने आकर उनको चारों ओर से घेर लिया और उनसे कहा कि हम तुमसे पक्का वायदा करते हैं कि अगर तुम हमारे पास नीचे उतर आओगे, तो हम तुममें से एक आदमी को भी क़त्ल नहीं करेंगे।

हज़रत आसिम ने कहा कि मैं किसी काफ़िर की पनाह में नहीं आना चाहता हूं और यह दुआ की कि ऐ अल्लाह! हमारी ओर से अपने नबी को ख़बर पहुंचा दे।

इस पर बनू लिह्यान ने उस जमाअत से लड़ाई शुरू कर दी और हज़रत आसिम को उनके सात साथियों समेत तीरों से शहीद कर दिया और हज़रत ख़ुबैब और हज़रत ज़ैद और एक सहाबी ज़िंदा रह गए।

बनू लिह्यान ने उनको क़ौल व क़रार दिया, जिस पर ये तीनों नीचे उतर आए। जब बनू लिह्यान ने इन तीनों पर क़ाबू पा लिया तो उन लोगों ने इनकी कमानों की तांत उतारकर इनको तांत से बांध दिया।

इस पर इन तीसरे सहाबी ने कहा यह पहली वायदाख़िलाफ़ी है और इनके साथ जाने से इंकार कर दिया। काफ़िरों ने इन्हें साथ ले जाने के लिए बहुत खींचा और ज़ोर लगाया, लेकिन यह न माने, आख़िर उन्होंने इनको शहीद कर दिया और हज़रत ख़ुबैब और हज़रत ज़ैद को ले जाकर मक्का में बेच दिया।

हारिस बिन आमिर बिन नौफ़ुल की औलाद ने हज़रत ख़ुबैब को ख़रीद लिया, हज़रत ख़ुबैब ने ही हारिस बिन आमिर को बद्र की लड़ाई के दिन क़त्ल किया था। यह कुछ दिनों तक उनके पास क़ैद में रहे, यहां तक कि जब उन लोगों ने हज़रत ख़ुबैब को क़त्ल करने का फ़ैसला कर

लिया, तो हज़रत ख़ुबैब ने हारिस की एक बेटी से नाफ़ के नीचे के बाल साफ़ करने के लिए उस्तरा मांगा। उसने उनको उस्तरा दे दिया।

वह कहती हैं कि मेरी बे-ख़्याली में मेरा एक बेटा चलता हुआ उनके पास पहुंच गया। उन्होंने उसे अपनी रान पर बिठा लिया। मैंने जब उसे यों बैठा हुआ देखा तो मैं बहुत घबरा गई कि उनके हाथ में उस्तरा है, (कहीं यह मेरे बेटे को क़त्ल न कर दें।) वह मेरी घबराहट को भांप गए, तो उन्होंने कहा कि क्या तुम्हें यह डर है कि मैं इसे क़त्ल कर दूंगा? इनशाअल्लाह मैं यह काम बिल्कुल नहीं करूंगा।

वह कहा करती थीं कि मैंने हज़रत ख़ुबैब से बेहतर कोई क़ैदी नहीं देखा। मैंने उनको देखा कि वह अंगूर के एक ख़ोशे में से खा रहे थे, हालांकि उस दिन मक्का में कोई फल नहीं था और वह ख़ुद लोहे की ज़ंजीर में बंधे हुए थे। (जिसकी वजह से वह कहीं से जाकर ला भी नहीं सकते थे) वह तो अल्लाह ने ही उनको (अपने ग़ैब से) रोज़ी दी थी, चुनांचे उनको क़त्ल करने के लिए वे लोग उनको हरम से बाहर ले चले।

उन्होंने कहा, ज़रा मुझे छोड़ो, मैं दो रक्अत नमाज़ पढ़ लूं। चुनांचे नमाज़ से फ़ारिग़ होकर उनके पास वापस आए और उनसे कहा कि अगर मुझे यह ख़्याल न होता कि तुम लोग यह समझोगे कि मैं मौत से घबरा गया हूं, तो मैं और नमाज़ पढ़ता। क़त्ल के वक़्त दो रक्अत पढ़ने की सुन्नत की शुरूआत सबसे पहले हज़रत ख़ुबैब ने की।

फिर उन्होंने यह बद-दुआ की, ऐ अल्लाह! इनमें से एक को भी बाक़ी न छोड़ना। फिर उन्होंने ये शेर (पद) पढ़े—

وَمَا إِنْ أُبَالِي حِيْنَ أُقْتَلُ مُسْلِمًا عَلٰى أَيِّ شِقٍّ كَانَ لِلّٰهِ مَصْرَعِيْ

'जब मुझे मुसलमान होने की हालत में क़त्ल किया जा रहा है, तो अब मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है कि मैं अल्लाह के लिए क़त्ल होकर किस करवट गिरूंगा।'

وَذٰلِكَ فِيْ ذَاتِ الْإِلٰهِ وَإِنْ يَّشَأْ يُبَارِكْ عَلٰى أَوْصَالِ شِلْوٍ مُّمَزَّعِ

'और मेरा यह क़त्ल होना अल्लाह की ज़ात की वजह से है और

अगर अल्लाह चाहे तो वह मेरे जिस्म के कटे हुए हिस्सों में बरकत डाल सकता है।'

फिर उक़्बा बिन हारिस ने खड़े होकर उनको क़त्ल कर दिया। हज़रत आसिम ने बद्र की लड़ाई के दिन क़ुरैश के एक बड़े सरदार को क़त्ल किया था। इसलिए क़ुरैश ने कुछ आदमियों को भेजा कि वह उनके जिस्म का कुछ हिस्सा काट कर ले आएं, जिससे वह उनको पहचान सकें, तो अल्लाह ने शहद की मक्खियों का एक ग़ोल उनके जिस्म पर भेज दिया, जिन्होंने उन लोगों को क़रीब न आने दिया। चुनांचे वह उनके जिस्म में से कुछ न ले जा सके।[1]

हज़रत आसिम बिन उमर बिन क़तादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि उहुद की लड़ाई के बाद क़बीला अज़ल और क़बीला क़ारा की एक जमाअत हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आई, और उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! हम लोगों में इस्लाम आ चुका है। आप हमारे साथ अपने कुछ सहाबा भेज दें, जो हमें दीन की बातें समझाएं और हमें क़ुरआन पढ़ाएं और इस्लाम के हुक्म हमें सिखाएं।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनके साथ अपने साथियों में से छः आदमी भेज दिए, और रिवायत करने वाले ने हमसे छः आदमियों का तज़्किरा भी किया। चुनांचे ये लोग उस जमाअत के साथ चल पड़े। जब ये रजीअ नामी जगह पर पहुंचे, यह क़बीला हुज़ैल का एक चश्मा है, जो हिजाज़ के एक किनारे पर हदा नामी जगह के शुरू में है, तो उस जमाअत ने उन सहाबा से ग़द्दारी की और उन्होंने क़बीला हुज़ैल को उनके ख़िलाफ़ मदद के लिए बुलाया।

ये सहाबी (इत्मीनान से) अपनी क़ियामगाह में ठहरे हुए थे कि अचानक उनको हाथों में तलवारें लिए हुए बहुत से आदमियों ने घेर लिया, तो ये लोग घबरा गए।

सहाबा ने उनसे लड़ने के लिए अपनी तलवारें हाथों में पकड़ लीं, तो काफ़िरों ने उनसे कहा, अल्लाह की क़सम ! हम तुम्हें क़त्ल करना

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 145, इस्तीआब, भाग 3, पृ० 132, हुलीया, भाग 1, पृ० 112

नहीं चाहते हैं, बल्कि हम तो तुम्हारे बदले में मक्का वालों से कुछ माल लेना चाहते हैं। हम तुम्हें अल्लाह का अह्द व पैमान देते हैं कि हम तुम्हें क़त्ल नहीं करेंगे।

हज़रत मरसद और हज़रत ख़ालिद बिन बुकैर और हज़रत आसिम बिन साबित रज़ि० ने फ़रमाया, हम किसी मुश्रिक का अह्द व पैमान कभी क़ुबूल नहीं करेंगे और हज़रत आसिम बिन साबित ने नीचे लिखे शेर (पद) पढ़े—

مَا عِلَّتِيْ وَاَنَا جَلْدٌ نَّابِلٌ   وَالْقَوْسُ فِيْهَا وَتَرٌ عُنَابِلٌ

'मैं बीमार नहीं हूं, बल्कि मैं तो ताक़तवर तीरंदाज़ हूं और (मेरी) कमान में मज़बूत तांत लगा हुआ है।'

تَزِلُّ عَنْ صَفْحَتِهَا الْمَعَابِلُ   اَلْمَوْتُ حَقٌّ وَّالْحَيَاةُ بَاطِلٌ

'लम्बे और चौड़े फल वाले तीर इस कमान के ऊपर से फिसल जाते हैं। मौत हक़ है और ज़िंदगी बातिल यानी फ़ानी है।'

وَكُلُّ مَا حَمَّ الْاِلٰهُ نَازِلٌ   بِالْمَرْءِ وَالْمَرْءُ اِلَيْهِ آئِلٌ
اِنْ لَّمْ اُقَاتِلْكُمْ فَاُمِّيْ هَابِلٌ

'जो कुछ अल्लाह ने मुक़द्दर कर रखा है वह आदमी के साथ होकर रहेगा और आदमी उसी की ओर लौटकर जाएगा। अगर मैं तुम लोगों से लड़ाई न लड़ूं, तो मेरी मां मुझे गुम कर दे (यानी मैं मर जाऊं।)'

और हज़रत आसिम ने ये शेर (पद) पढ़े—

اَبُوْ سُلَيْمَانَ وَرِيْشُ الْمُقْعَدِ   وَضَالَةٌ مِّثْلُ الْجَحِيْمِ الْمُوْقَدِ

'मैं अबू सुलैमान हूं और मेरे पास तीर बनाने वाले मुक़अद के बनाए हुए तीर हैं और मेरे पास दहकती हुई आग की तरह कमान है।'

اِذَا النَّوَاجِيْ افْتُرِشَتْ لَمْ اُرْعَدِ   وَمُجْنَاٌ مِّنْ جِلْدِ ثَوْرٍ اَجْرَدِ
وَمُؤْمِنٌ بِمَا عَلٰى مُحَمَّدِ

'तेज़ रफ़्तार ऊंटों पर सवार होकर जब बहादुर आदमी आएं, तो मैं कपकपी कभी नहीं महसूस करता हूं, (क्योंकि बहादुर हूं, बुज़दिल नहीं हूं) और मेरे पास ऐसी ढाल है जो कम बाल वाले बैल की खाल से

बनी हुई है और हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर जो कुछ आसमान से उतरा है, मैं उस पर ईमान लाने वाला हूं।'

और यह शेर भी पढ़ा—

اَبُوْ سُلَيْمَانَ وَمِثْلِي رَامِىْ   وَكَانَ قَوْمِىْ مَعْشَرًا كِرَامًا

'मैं अबू सुलैमान हूं और मेरे जैसा बहादुर ही तीर चलाता है और मेरी क़ौम एक इज़्ज़तदार क़ौम है।'

फिर हज़रत आसिम ने इन काफ़िरों से लड़ाई शुरू कर दी, यहां तक कि शहीद हो गए और उसके दोनों साथी भी शहीद हो गए। जब हज़रत आसिम शहीद हो गए, तो क़बीला हुज़ैल ने उनका सर काटना चाहा, ताकि यह सर सुलाफ़ा बिन्त साद बिन शुहैद के हाथ बेच दें, क्योंकि जब हज़रत आसिम ने सुलाफ़ा के बेटे को उहुद की लड़ाई के दिन क़त्ल किया था, तो सुलाफ़ा ने यह मन्नत मानी थी कि अगर उसे हज़रत आसिम का सर मिल गया, तो वह उनकी खोपड़ी में शराब पिएगी। (जब क़बीला हुज़ैल के लोग उनका सर काटने के लिए गए तो अल्लाह ने शहद की मक्खियों का ग़ोल भेज दिया, जिसने हज़रत आसिम के जिस्म को हर ओर से घेर लिया) और उन मक्खियों ने क़बीला हुज़ैल के लोगों को उनके क़रीब न आने दिया।

जब ये मक्खियां उनके और हज़रत आसिम के दर्मियान रोक बन गईं, तो उन लोगों ने कहा उनको ऐसे ही रहने दो। जब शाम को मक्खियां चली जाएंगी तो फिर आकर हम इनका सर काट लेंगे, लेकिन अल्लाह ने बारिश के पानी से ऐसी धारा भेजी जो उनकी लाश को बहा कर ले गई।

हज़रत आसिम ने अल्लाह से यह अह्द किया हुआ था कि वह कभी किसी मुश्रिक को नापाक होने की वजह से हाथ नहीं लगाएंगे और न कोई मुश्रिक उनको हाथ लगा सके।

चुनांचे जब हज़रत उमर रज़ि० को यह ख़बर पहुंची कि शहद की मक्खियों ने इन काफ़िरों को क़रीब न आने दिया, तो वह फ़रमाया करते थे कि अल्लाह मोमिन बन्दे की ऐसे ही हिफ़ाज़त फ़रमाया करते हैं।

हज़रत आसिम ने अपनी ज़िंदगी के लिए यह नज़ मानी थी कि उन्हें कोई मुश्रिक हाथ न लगा सके और न वह किसी मुश्रिक को हाथ लगाएंगे, लेकिन जैसे वह ज़िंदगी में मुश्रिकों से बचे रहे, ऐसे ही उनकी वफ़ात के बाद भी अल्लाह ने उनकी मुश्रिकों से हिफ़ाज़त फ़रमाई।

और हज़रत ख़ुबैब, हज़रत ज़ैद बिन दसिना और हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि० नर्म पड़ गए और ज़िंदा रहने को तर्जीह दी और ख़ुद को उन काफ़िरों के हाथों में दे दिया, यानी उनके हवाले कर दिया। इन लोगों ने इन तीनों को क़ैदी बना लिया, फिर वे इन्हें मक्का जाकर बेचने के लिए लेकर चले गए।

यहां तक कि जब ये लोग ज़हरान नामी जगह पर पहुंचे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ ने अपना हाथ किसी तरह रस्सी से निकाल लिया और फिर उन्होंने अपनी तलवार पकड़ ली और वे काफ़िर उनसे पीछे हट गए और उनको पत्थर मारने लगे। यहां तक कि उनको (पत्थर मार-मारकर) शहीद कर दिया। चुनांचे उनकी क़ब्र ज़हरान में है।

और वे काफ़िर हज़रत ख़ुबैब और हज़रत ज़ैद को लेकर मक्का आए और क़बीला हुज़ैल के दो आदमी मक्का में क़ैद थे। इन काफ़िरों ने इन दोनों को अपने दो क़ैदियों के बदले में क़ुरैश के हाथ बेच दिया। हज़रत ख़ुबैब को हुजैर बिन अबी इहाब तमीमी ने ख़रीदा और हज़रत ज़ैद बिन दसिना को सफ़वान बिन उमैया ने इसलिए ख़रीदा ताकि उन्हें अपने बाप के बदले में क़त्ल कर सके।

चुनांचे सफ़वान ने नस्तास नामी अपने ग़ुलाम के साथ उनको तनईम भेजा और क़त्ल करने के लिए उनको हरमे मक्का से बाहर निकाला। क़ुरैश का एक मज्मा जमा हो गया, जिनमें अबू सुफ़ियान बिन हर्ब भी थे।

जब हज़रत ज़ैद को क़त्ल करने के लिए आगे किया गया तो उनसे अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ ज़ैद! मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं, क्या तुमको यह पसन्द है कि मुहम्मद (सल्ल०) इस वक़्त हमारे पास हों और हम तुम्हारी जगह उनकी गरदन मार दें और तुम अपने घरवालों के साथ रहो?

तो हज़रत ज़ैद ने जवाब में कहा कि अल्लाह की क़सम ! मुझे तो यह भी पसन्द नहीं है कि मुहम्मद सल्ल० इस वक़्त जहां हैं, वहां ही उनको एक कांटा चुभे और उस तक्लीफ़ के बदले में, मैं अपने घरवालों में बैठा हुआ हूं।

अबू सुफ़ियान ने कहा कि मैंने किसी को किसी से इतनी मुहब्बत करते हुए नहीं देखा जितनी मुहम्मद सल्ल० के सहाबा को मुहम्मद सल्ल० से है, फिर हज़रत ज़ैद को नस्तास ने क़त्ल कर दिया।

रिवायत करने वाले कहते हैं हज़रत ख़ुबैब बिन अदी के बारे में मुझे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी नजीह ने यह बताया कि उन्हें यह बताया गया कि हुज़ैर बिन अबी इहाब की बांदी मारिया, जो कि बाद में मुसलमान हो गई थी, ने बयान किया कि हज़रत ख़ुबैब को मेरे पास मेरे घर में क़ैद किया गया था। एक दिन मैंने उनको झांक कर देखा, तो उनके हाथ में आदमी के सर के बराबर अंगूर का एक गुच्छा था, जिससे वह खा रहे थे और जहां तक मेरी जानकारी है, उस वक़्त धरती पर खाने के क़ाबिल अंगूर कहीं नहीं था।

इब्ने इस्हाक़ बयान करते हैं कि हज़रत आसिम उमर बिन क़तादा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी नजीह ने कहा कि हज़रत मारिया ने यह बयान किया कि जब हज़रत ख़ुबैब के क़त्ल होने का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे एक उस्तरा दे दो, ताकि मैं सफ़ाई करके क़त्ल के लिए तैयार हो जाऊं। मैंने क़बीला के एक लड़के को उस्तरा दिया और उससे कहा कि इस मकान में जाकर यह उस्तरा उस आदमी को दे आओ।

हज़रत मारिया कहती हैं कि ज्योंही वह लड़का उस्तरा लेकर उनकी ओर चला, तो मैंने कहा, मैंने यह क्या किया? अल्लाह की क़सम ! उस आदमी ने तो अपने ख़ून का बदला पा लिया, यह उस लड़के को क़त्ल कर देगा और इस तरह अपने ख़ून का बदला ले लेगा और यों आदमी के बदले आदमी क़त्ल होगा।

जब लड़के ने उनको वह उस्तरा दिया तो उन्होंने उसके हाथ से

उस्तरा लिया और फिर उस लड़के से कहा कि तेरी उम्र की क़सम ! जब तेरी मां ने तुझे यह उस्तरा देकर मेरे पास भेज दिया, तो उसे यह ख़तरा न गुज़रा कि मैं तुम्हें धोखे से क़त्ल कर दूंगा। फिर उस लड़के को जाने दिया।

इब्ने हिशाम कहते हैं कि यह कहा जाता है कि यह लड़का हज़रत मारिया का अपना बेटा था।

हज़रत आसिम रह० फ़रमाते हैं, फिर वह काफ़िर हज़रत ख़ुबैब रज़ि० को लेकर (हरम से) बाहर आए और उनको लेकर सूली देने के लिए तनअीम नामी जगह पर पहुंचे। तो हज़रत ख़ुबैब ने इन काफ़िरों से कहा, अगर तुम मुनासिब समझो तो मुझे दो रक्अत नमाज़ पढ़ने की मोहलत दे दो।

उन्होंने कहा, लो, नमाज़ पढ़ लो।

चुनांचे उन्होंने बड़े अच्छे तरीक़े से दो रक्अत नमाज़ मुकम्मल तौर से अदा की, फिर उन काफ़िरों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ग़ौर से सुनो ! अल्लाह की क़सम ! अगर मुझे यह ख़्याल न होता कि तुम लोग समझोगे कि मैं मौत की डर की वजह से नमाज़ लम्बी कर रहा हूं तो मैं और नमाज़ पढ़ता और क़त्ल के वक़्त दो रक्अत नमाज़ पढ़ने की सुन्नत को हज़रत ख़ुबैब ने मुसलमानों के लिए सबसे पहले शुरू किया, फिर काफ़िरों ने उनको सूली के तख़्ते पर लटका दिया।

जब उन्होंने उनको अच्छी तरह बांध दिया, तो उन्होंने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! हमने तेरे रसूल का पैग़ाम पहुंचा दिया है और हमारे साथ जो कुछ किया जा रहा है, उसकी सारी ख़बर कल अपने रसूल को कर देना। फिर उन्होंने यह बद-दुआ की, ऐ अल्लाह ! इनमें से किसी को बाक़ी न छोड़ना और उनको एक-एक करके मार देना और इनमें से एक को भी बाक़ी न छोड़ना। फिर इन काफ़िरों ने उनको क़त्ल कर दिया।

हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान रज़ि० फ़रमाया करते थे कि मैं भी उस दिन अपने वालिद अबू सुफ़ियान के साथ दूसरे काफ़िरों के साथ वहां मौजूद था। मैंने अपने वालिद को देखा कि वह हज़रत ख़ुबैब

की बद-दुआ के डर से मुझे ज़मीन पर लिटा रहे थे, क्योंकि उस ज़माने में लोग कहा करते थे कि जिसके ख़िलाफ़ बद-दुआ हो रही हो, वह अपने पहलू पर लेट जाए, तो वह बद-दुआ उसे नहीं लगती, बल्कि उससे फिसल जाती है।

मग़ाज़ी मूसा बिन उक़्बा में यह मज़्मून है कि हज़रत ख़ुबैब और हज़रत ज़ैद बिन दसिना रज़ि० दोनों एक दिन शहीद किए गए और जिस दिन ये लोग क़त्ल किए गए, उस दिन सुना गया कि हुज़ूर सल्ल० फ़रमा रहे थे, 'व अलैकुमस्सलाम, या व अलैकस्सलाम, ख़ुबैब को कुरैश ने क़त्ल कर दिया और आपने यह बताया कि जब काफ़िरों ने हज़रत ख़ुबैब को सूली पर चढ़ा दिया तो उनको उनके दीन से हटाने के लिए काफ़िरों ने उनको तीर मारे, लेकिन इससे उनका ईमान और यक़ीन और बढ़ा।

हज़रत उर्वः और हज़रत मूसा बिन उक़्बा रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब काफ़िर हज़रत ख़ुबैब को सूली पर चढ़ाने लगे, तो उन्होंने ऊंची आवाज़ से उनको क़सम देकर पूछा क्या तुम यह पसन्द करते हो कि (हज़रत) मुहम्मद (सल्ल०) तुम्हारी जगह हों (और उनको सूली दे दी जाए)?

हज़रत ख़ुबैब रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, बुलन्द व बरतर अल्लाह की क़सम! मुझे तो यह भी पसन्द नहीं है कि मेरे बदले में उनके पांवों में एक कांटा भी चुभे। इस पर वे लोग हंसने लगे।

इब्ने इस्हाक़ ने इस बात को हज़रत ज़ैद बिन दसिना के क़िस्से में लिखा है। (ख़ुदा बेहतर जाने)[1]

तबरानी ने हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० की लम्बी हदीस ज़िक्र की है जिसमें यह भी है कि जो मुश्रिक बद्र की लड़ाई के दिन क़त्ल किए गए थे, उनकी औलाद ने हज़रत ख़ुबैब रज़ि० को क़त्ल किया। जब मुश्रिकों ने उनको सूली पर चढ़ाकर (मारने के लिए) उन पर हथियार तान लिए तो ऊंची आवाज़ से हज़रत ख़ुबैब से क़सम देकर पूछने लगे, क्या तुम यह पसन्द करते हो कि (हज़रत) मुहम्मद (सल्ल०) तुम्हारी जगह हों?

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 63

उन्होंने फ़रमाया, नहीं, बुज़ुर्ग व बरतर अल्लाह की क़सम ! मुझे तो यह भी पसन्द नहीं है कि मेरे बदले में उनके पांव में एक कांटा चुभे। इस पर वे काफ़िर हंस पड़े।

जब मुश्रिक हज़रत ख़ुबैब को सूली पर चढ़ाने लगे, तो उन्होंने ये शेर (पद) पढ़े—

لَقَدْ جَمَّعَ الْاَحْزَابُ حَوْلِيْ وَاَلَّبُوْا   قَبَائِلَهُمْ وَاسْتَجْمَعُوْا كُلَّ مَجْمَعِ

'मेरे चारों तरफ़ काफ़िरों की भीड़ जमा है और उन्होंने अपने क़बीलों को भी जमा किया हुआ है और इधर-उधर के सब लोग पूरी तरह जमा हैं।'

وَقَدْ جَمَّعُوْا اَبْنَاءَهُمْ وَنِسَاءَهُمْ   وَقُرِّبْتُ مِنْ جِذْعٍ طَوِيْلٍ مُّمَنَّعِ

'और उन्होंने अपने बीवी-बच्चों को भी जमा किया हुआ है और मुझे (सूली पर लटकाने के लिए) एक लम्बे और मज़बूत खजूर के तने के क़रीब कर दिया है।'

اِلَى اللّٰهِ اَشْكُوْ غُرْبَتِيْ ثُمَّ كُرْبَتِيْ   وَمَا اَرْصَدَ الْاَحْزَابُ لِيْ عِنْدَ مَصْرَعِيْ

'मैं वतन से दूरी की और अपने रंज व ग़म की और उन चीज़ों की अल्लाह ही से शिकायत करता हूं, जो इन गिरोहों ने मेरे क़त्ल होने की जगह पर मेरे लिए तैयार कर रखी हैं।'

فَذَا الْعَرْشِ صَبِّرْنِيْ عَلٰى مَا يُرَادُ بِيْ   فَقَدْ بَضَّعُوْا لَحْمِيْ وَقَدْ يَاْسَ مَطْمَعِيْ

'ऐ अर्श वाले ! ये काफ़िर मुझे क़त्ल करना चाहते हैं, इस पर मुझे सब्र अता फ़रमा। इन लोगों ने मेरा गोश्त काट डाला है और मेरी उम्मीद ख़त्म हो गई है।'

وَذٰلِكَ فِيْ ذَاتِ الْاِلٰهِ وَاِنْ يَّشَاْ   يُبَارِكْ عَلٰى اَوْصَالِ شِلْوٍ مُّمَزَّعِ

'और यह सब कुछ अल्लाह की ज़ात की वजह से (मेरे साथ) हो रहा है और (अगर) अल्लाह चाहे तो वह मेरे जिस्म के कटे हुए हिस्सों में बरकत डाल सकता है।'

لَعَمْرِيْ مَا اَحْفِلُ اِذَا مِتُّ مُسْلِمًا   عَلٰى اَيِّ حَالٍ كَانَ لِلّٰهِ مَضْجَعِيْ

'मेरी उम्र की क़सम ! जब मैं मुसलमान होने की हालत में मर रहा

हूं तो मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है कि किस हालत में मैं अल्लाह के लिए जान दे रहा हूं।'[1]

और इब्ने इस्हाक़ ने इन शेरों का ज़िक्र किया है और पहले शेर के बाद यह शेर भी ज़िक्र किया है—

وَكُلُّهُمْ مُبْدِي الْعَدَاوَةِ جَاهِدٌ عَلَيَّ لِأَنِّي فِي وَثَاقٍ بِمَضْيَعِ

'और ये सब दुश्मनी ज़ाहिर कर रहे हैं और मेरे ख़िलाफ़ पूरी कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि मैं बेड़ियों में हलाकत की जगह में हूं।'

और पांचवें शेर के बाद इब्ने इस्हाक़ ने ये शेर भी ज़िक्र किए हैं—

وَقَدْ خَيَّرُونِي الْكُفْرَ وَالْمَوْتُ دُونَهُ وَقَدْ هَمَلَتْ عَيْنَايَ مِنْ غَيْرِ مَجْزَعِ

'इन लोगों ने मुझे मौत और कुफ़्र के दर्मियान अख़्तियार दिया, हालांकि मौत इससे बेहतर है। मेरी दोनों आंखों से आंसू बह रहे हैं, लेकिन ये किसी घबराहट की वजह से नहीं बह रहे हैं।'

وَمَا بِي حِذَارُ الْمَوْتِ إِنِّي لَمَيِّتٌ وَلَكِنْ حِذَارِي جَحْمُ نَارٍ مُلَفَّعِ

'मुझे मौत का कोई डर नहीं है, क्योंकि मुझे मरना तो ज़रूर है। मुझे तो लपट मारने वालों की आग की लपट का डर है।'

فَوَاللّٰهِ مَا أَرْجُو إِذَا مِتُّ مُسْلِمًا عَلَى أَيِّ جَنْبٍ كَانَ فِي اللّٰهِ مَضْجَعِي

'अल्लाह की क़सम ! जब मैं मुसलमान होने की हालत में मर रहा हूं, तो इस बात का मुझे कोई डर नहीं है कि मुझे अल्लाह के लिए किस पहलू पर लेटना होगा।'

فَلَسْتُ بِمُبْدٍ لِلْعَدُوِّ تَخَشُّعًا وَلَا جَزَعًا إِنِّي إِلَى اللّٰهِ مَرْجِعِي

'मैं दुश्मन के सामने आजिज़ी और घबराहट ज़ाहिर करने वाला नहीं हूं, क्योंकि मुझे तो अल्लाह के यहां लौटकर जाना है।'[2]

बेरे मऊना का दिन

हज़रत मुग़ीरह बिन अब्दुर्रहमान और हज़रत अब्दुल्लाह बिन

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 200
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 67

अबूबक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़्म वग़ैरह दूसरे विद्वान फ़रमाते हैं कि नेज़ेबाज़ी का माहिर अबू बरा आमिर बिन मालिक बिन जाफ़र मदीना हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया। हुज़ूर सल्ल० ने उसके सामने इस्लाम पेश फ़रमाया और उसे इस्लाम की दावत दी। तो न तो वह इस्लाम लाया और न इस्लाम से दूरी ज़ाहिर की।

और उसने कहा, ऐ मुहम्मद! अगर आप अपने कुछ सहाबा रज़ि० को नज्द वालों के पास भेज दें और वे उनको आपके दीन की दावत दें तो मुझे उम्मीद है कि वे आपकी बात मान लेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मुझे अपने सहाबा रज़ि० के बारे में नज्द वालों की तरफ़ से ख़तरा है।

अबू बरा ने कहा, मैं उन लोगों को पनाह देता हूं आप उन्हें भेज दें ताकि वे लोगों को आपके दीन की दावत दें। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने बनू साइदा के मुंज़िर बिन अम्र को जिनका लक़ब अल-मोनिक़ लिमौत था। (इसका तर्जुमा है मौत की तरफ़ जल्दी से लपकने वाला) अपने सहाबा रज़ि० में से सत्तर बेहतरीन मुसलमानों के साथ भेजा, जिनमें हज़रत हारिस बिन सिम्मा, बनू अदी बिन नज्जार ने हज़रत हराम बिन मिलहान, हज़रत उर्वः बिन अस्मा बिन सल्त सुलमी, हज़रत नाफ़ेअ बिन बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाओ, हज़रत अबूबक्र के ग़ुलाम हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ि० और दूसरे बहुत से बेहतरीन मुसलमान थे।

ये लोग मदीना से चलकर बेरे मऊना पहुंचे। यह कुंवां बनू आमिर की ज़मीन और बनू सुलैम के पथरीले मैदान के दर्मियान है। इन लोगों ने जब यहां पड़ाव डाल लिया तो हज़रत हराम बिन मिलहान को हुज़ूर सल्ल० का ख़त देकर आमिर बिन तुफ़ैल के पास भेजा। हज़रत हराम आमिर के पास पहुंचे तो उसने ख़त की तरफ़ देखा ही नहीं, बल्कि हज़रत हराम पर हमला करके उन्हें शहीद कर दिया।

फिर उसने सहाबा किराम रज़ि० के ख़िलाफ़ बनू आमिर क़बीले से मदद मांगी, लेकिन उसकी बात मानने से बनू आमिर ने इंकार कर दिया और यह कह दिया कि अबू बरा मुसलमानों को पनाह दे चुका है। हम

उसके समझौते को तोड़ना नहीं चाहते हैं।

फिर आमिर ने बनू सुलैम के क़बीलों उसैया और रिअल और ज़क्वान से इन लोगों के ख़िलाफ़ मदद मांगी। उन्होंने उसकी बात मान ली। चुनांचे ये तमाम क़बीले इकट्ठे होकर आए और जहां मुसलमानों ने पड़ाव डाला हुआ था, वहां आकर सब तरफ़ से मुसलमानों को घेर लिया।

जब मुसलमानों ने इन क़बीलों को देखा, तो उन्होंने अपनी तलवारें निकालीं और उन काफ़िरों से लड़ना शुरू किया, यहां तक कि सबके सब ही शहीद हो गए। अल्लाह उन लोगों पर रहम फ़रमाए। बस बनू दीनार बिन नज्जार के हज़रत काब बिन ज़ैद ही ज़िंदा बचे। अभी उनमें जान बाक़ी थी कि काफ़िर उन्हें छोड़कर चले गए। उन्हें क़त्ल किए गए लोगों के बीच में से उठाकर लाया गया। इसके बाद वह ज़िंदा रहे और ख़ंदक़ की लड़ाई में वह शहीद हुए।

हज़रत अम्र बिन उमैया ज़मिरी और क़बीला बनू अम्र बिन औफ़ के एक अंसारी सहाबी ये दो लोग मुसलमानों के जानवर लेकर चराने गए हुए थे। उन्हें मुसलमानों के शहीद होने का पता इस तरह चला कि उन्होंने देखा कि जहां मुसलमानों ने पड़ाव डाला था, वहां मुरदार ख़ोर परिंदे उड़ रहे हैं और आसमान में चक्कर लगा रहे हैं।

इन लोगों ने कहा, अल्लाह की क़सम! इन परिन्दों के यों आसमान में चक्कर लगाने में ज़रूर कोई बात है। वे दोनों देखने के लिए आए। आकर देखा तो सारे मुसलमान ख़ून में लत-पत थे और जिन घुड़सवारों ने इन मुसलमानों को क़त्ल किया था, वे वहां खड़े थे।

यह हालत देखकर अंसारी सहाबी ने हज़रत अम्र बिन उमैया से कहा, तुम्हारा क्या ख़्याल है?

हज़रत अम्र ने कहा, मेरा ख़्याल यह है कि हम जाकर हुज़ूर सल्ल० को इस वाक़िए की ख़बर करें।

अंसारी ने कहा कि मैं तो जान बचाने के लिए इस जगह को छोड़कर नहीं जाना चाहता हूं, जहां हज़रत मुंज़िर बिन अम्र जैसे आदमी

को शहीद कर दिया और मैं यह नहीं चाहता कि मैं ज़िंदा रहूं और लोगों को उनकी शहादत की ख़बर सुनाता रहूं। चुनांचे उन्होंने उन काफ़िरों से लड़ाई शुरू कर दी और आख़िर शहीद हो गए।

इन काफ़िरों ने हज़रत अम्र बिन उमैया को क़ैदी बना लिया। जब उन्होंने काफ़िरों को बताया कि वे क़बीला मुज़र के हैं तो आमिर बिन तुफ़ैल ने उनको छोड़ दिया और उनकी पेशानी के बाल काट दिए और आमिर की मां के ज़िम्मे एक ग़ुलाम आज़ाद करना था, तो उसने अपनी मां की तरफ़ से उनको आज़ाद कर दिया।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उम्मे सुलैम के भाई हज़रत हराम को सत्तर सवारों की जमाअत के साथ भेजा। (उस इलाक़े के) मुश्रिकों के सरदार आमिर बिन तुफ़ैल ने हुज़ूर सल्ल० को तीन बातों में से एक बात अख़्तियार करने का मौक़ा दिया था और उसने कहा, या तो देहात वाले आपके हो जाएं और शहरों वाले मेरे या फिर आपके बाद मुझे आपका ख़लीफ़ा बनाया जाए या फिर मैं ग़तफ़ान के हज़ारों आदमी लेकर आपसे लड़ाई लड़ूंगा।

आमिर उम्मे फ़्लां एक औरत के घर में था, वह वहां प्लेग में बीमार हो गया। उसने कहा, मुझे प्लेग का ऐसी फोड़ा निकला है जैसे ऊंट के निकलता है। आप फ्लां की औरत के घर में (सफ़र की हालत में) एक मामूली औरत के घर में बेकसी व बेबसी की मौत को अपनी शान के ख़िलाफ़ समझते हुए कहा) मेरा घोड़ा लाओ। उस पर सवार होकर चला और घोड़े की पीठ पर ही उसकी मौत हो गई।

हज़रत उम्मे सुलैम के भाई हज़रत हराम और एक और लंगड़े सहाबी और बनू फ़्लां के एक आदमी ये तीनों चले। हज़रत हराम ने दोनों साथियों से कहा कि मैं उन लोगों के पास जाता हूं, तुम दोनों ज़रा क़रीब रहना। अगर इन लोगों ने मुझे अम्न दे दिया तो तुम क़रीब ही होगे और उन्होंने मुझे क़त्ल कर दिया तो अपने साथियों के पास चले जाना।

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 73, हैसमी, भाग 6, पृ० 129

चुनांचे वहां जाकर हज़रत हराम ने उन लोगों से कहा, कि क्या तुम लोग मुझे अम्न देते हो, ताकि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० का पैग़ाम पहुंचा सकूं। यह उन लोगों से बात कर रहे थे कि उन्होंने एक आदमी को इशारा किया जिसने पीछे से आकर उनको नेज़ा मारा।

हम्माम रिवायत करने वाले कहते हैं कि मेरा गुमान यह है कि आगे ये लफ़्ज़ थे कि ऐसा नेज़ा मारा जो कि पार हो गया। इस पर हज़रत हराम ने फ़रमाया कि काबा के रब की क़सम! मैं तो कामियाब हो गया।

यह देखकर हज़रत हराम के दोनों साथी मुसलमानों से जा मिले और लंगड़े सहाबी के अलावा बाक़ी तमाम साथी शहीद कर दिए गए और वह लंगड़े सहाबी एक पहाड़ की चोटी पर चढ़े हुए थे। इन शहीद होने वालों के बारे में हमारे सामने यह आयत उतरी, जो बाद में मंसूख़ कर दी गई—

إِنَّا قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا

'बेशक हम अपने रब से जा मिले, वह हमसे राज़ी हुआ और उसने हमें राज़ी किया।'

चुनांचे नबी करीम सल्ल० ने तीस दिन रिअल और ज़क्वान और बनू लिह्यान, और उसैमा क़बीलों के ख़िलाफ़ बद-दुआ फ़रमाई। ये क़बीले वे हैं, जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की नाफ़रमानी की।[1]

बुख़ारी में है कि हज़रत अनस फ़रमाते हैं कि जब उनके मामूं हज़रत हराम बिन मिलहान रज़ि० को बेरे मऊना के दिन नेज़ा मारा गया तो वह अपना ख़ून लेकर अपने मुंह और सर पर डालने लगे, फिर फ़रमाया रब्बे काबा की क़सम! मैं कामियाब हो गया।

और वाक़दी ने बयान किया है कि जिस आदमी ने हज़रत हराम रज़ि० को नेज़ा मारा था, वह जब्बार बिन सुलमी किलाबी है। जब जब्बार ने पूछा कि (हज़रत हराम तो क़त्ल हो रहे हैं और कह रहे हैं कि)

1. बुख़ारी

मैं कामियाब हो गया, इस जुम्ले का मतलब क्या है?

लोगों ने बताया कि यह जन्नत मिलने की कामियाबी है।

फिर जब्बार ने कहा, अल्लाह की क़सम! हज़रत हराम ने सच फ़रमाया और यह जब्बार इसी वजह से इसके बाद मुसलमान हो गए।[1]

ग़ज़वा मूता का दिन

हज़रत उर्व: बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने हिजरत के आठवें साल जुमादल ऊला में एक फ़ौज मूता भेजी और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को उनका अमीर बनाया और फ़रमाया, अगर हज़रत ज़ैद शहीद हो जाएं तो हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब अमीर होंगे और अगर वह भी शहीद हो जाएं, तो फिर लोगों के अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० होंगे।

लोग सफ़र के सामान लेकर निकलने के लिए तैयार हो गए। इस फ़ौज की तायदाद तीन हज़ार थी। जब ये लोग (मदीने से) रवाना होने लगे तो (मदीना के) लोगों ने हुज़ूर सल्ल० के मुक़र्रर किए हुए अमीरों को विदा किया और उन्हें विदाई सलाम किया।

इस विदाई मुलाक़ात पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रो पड़े, तो लोगों ने कहा, आप क्यों रो रहे हैं, ऐ इब्ने रुवाहा?

उन्होंने कहा, ग़ौर से सुनो! अल्लाह की क़सम! न तो मेरे दिल में दुनिया की मुहब्बत है और न तुम लोगों से ताल्लुक़ और लगाव, बल्कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को क़ुरआन की इस आयत को पढ़ते हुए सुना, जिसमें दोज़ख़ की आग का तज़्किरा है—

وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝

'और कोई नहीं तुममें जो न पहुंचेगा उस पर। हो चुका यह वायदा तेरे रब पर, लाज़िम मुक़र्रर।'

अब मुझे मालूम नहीं कि उस आग पर पहुंचने के बाद वापसी किस तरह होगी। इस पर मुसलमानों ने कहा, अल्लाह तुम्हारे साथ रहे

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 71

और तुमसे तक्लीफ़ों और परेशानियों को दूर रखे और तुम्हें सही सालिम हमारे पास वापस लाए, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा ने ये शेर पढ़े—

لٰكِنَّنِيْ أَسْأَلُ الرَّحْمٰنَ مَغْفِرَةً   وَضَرْبَةً ذَاتَ فَرْغٍ تَقْذِفُ الزَّبَدَا

'लेकिन मैं तो रहमान (यानी अल्लाह) से गुनाहों की मग़फ़िरत चाहता हूं और तलवार का ऐसा चौड़ा वार चाहता हूं जिससे खूब झागदार ख़ून निकले।'

أَوْ طَعْنَةً بِيَدَيْ حَرَّانَ مُجْهِزَةً   بِحَرْبَةٍ تُنْفِذُ الْأَحْشَاءَ وَالْكَبِدَا

'या किसी प्यासे दुश्मन के हाथों बरछे का ऐसा वार हो जो मेरा काम तमाम कर दे, और जो आंतों और जिगर में पार हो जाए।'

حَتّٰى يُقَالَ إِذَا مَرُّوْا عَلٰى جَدَثِيْ   أَرْشَدَهُ اللّٰهُ مِنْ غَازٍ وَّقَدْ رَشَدَا

'ताकि जब लोग मेरी क़ब्र पर गुज़रें, तो यह कहें कि अल्लाह इस ग़ाज़ी को हिदायत दे और यह तो हिदायत वाला था।'

फिर जब लोग निकलने के लिए तैयार हो गए, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हुज़ूर सल्ल० को विदाई दी, फिर ये शेर पढ़े—

ثَبَّتَ اللّٰهُ مَا آتَاكَ مِنْ حَسَنٍ   تَثْبِيْتَ مُوْسٰى وَنَصْرًا كَالَّذِيْ نُصِرُوْا

'अल्लाह ने जितनी भलाइयां आपको दे रखी हैं उन सबको अल्लाह ऐसे बाक़ी रखे, जैसे अल्लाह ने हज़रत मूसा अलै० को साबित क़दम रखा था और आपकी ऐसी मदद करे जैसी अल्लाह ने उनकी की थी—

إِنِّيْ تَفَرَّسْتُ فِيْكَ الْخَيْرَ نَافِلَةً   اَللّٰهُ يَعْلَمُ أَنِّيْ ثَابِتُ الْبَصَرِ

'मुझे आपमें ख़ैर बढ़ती हुई नज़र आती है और अल्लाह जानता है कि मेरी नज़र बिल्कुल ठीक है।'

أَنْتَ الرَّسُوْلُ فَمَنْ يُحْرَمْ نَوَافِلَهُ   وَالْوَجْهَ مِنْهُ فَقَدْ أَزْرٰى بِهِ الْقَدَرُ

'आप रसूल हैं जो आपके अताया और ख़ास तवज्जोह से महरूम रह गया, तो वाक़ई उसकी तक़्दीर खोटी है।'

फिर सारी फ़ौज रवाना हो गई और हुज़ूर सल्ल० भी उनको विदा

करने के लिए (मदीना से) बाहर तशरीफ़ लाए। चुनांचे जब फ़ौज को विदा करके वापस लौटे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा ने यह शेर पढ़ा—

خَلَفَ السَّلَامُ عَلٰى امْرِئٍ وَدَّعْتُهٗ فِي النَّخْلِ خَيْرَ مُشَيِّعٍ وَخَلِيْلِ

'सलाम रहे उस ज़ाते अक़्दस पर, जिनको मैंने खजूरों के बाग़ में विदा किया है। वह बेहतरीन विदा करने वाले और बेहतरीन दोस्त हैं।'

फिर यह फ़ौज रवाना हो गई और शामदेश के शहर मआन पहुंचकर पड़ाव डाला और मुसलमानों को यह ख़बर मिली कि हिरक़्ल एक लाख रूमी सेना लेकर शामदेश के इलाक़ा बलक़ा के शहर मआब में ठहरा हुआ है और ख़ुम और जुज़ाम और क़ैन और बहरा और बली क़बीलों के एक लाख आदमी जमा होकर हिरक़्ल के पास पहुंच चुके हैं और उनका सरदार क़बीला बली का एक आदमी है जो उसके क़बीले इराशा से ताल्लुक़ रखता है और उसे मालिक बिन ज़ाफ़िला कहा जाता है।

जब मुसलमानों को यह ख़बर मिली तो वह मआन में दो रात ठहरकर अपने इस मामले में ग़ौर करते रहे और फिर यह कहा कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० को ख़त लिखकर अपने दुश्मन की तायदाद बताते हैं, फिर या तो आप हमारी मदद के लिए और आदमी भेज देंगे या किसी और मुनासिब बात का हमें हुक्म फ़रमाएंगे जिसे हम पूरा करेंगे।

इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा ने लोगों की हिम्मत बढ़ाई और उन्हें हौसला दिलाया और कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की क़सम! जिस शहादत को तुम नापसन्द समझ रहे हो, (हक़ीक़त में) तुम उसी की खोज में निकले हो। हम लोगों से लड़ाई, तायदाद, ताक़त और ज़्यादा होने की बुनियाद पर नहीं लड़ते, बल्कि हम लोगों से लड़ाई उस दीन की बुनियाद पर करते हैं, जिसके ज़रिए अल्लाह ने हमें इज़्ज़त अता फ़रमाई है, इसलिए चलो, दो कामियाबियों में से एक कामियाबी तो ज़रूर मिलेगी, या तो दुश्मन पर ग़लबा या अल्लाह के रास्ते की शहादत।

इस पर लोगों ने कहा, अल्लाह की क़सम, इब्ने रुवाहा ने बिल्कुल ठीक कहा है।

चुनांचे लोग वहां से आगे बढ़े, तो जब बलक़ा इलाक़े की सरहद पहुंचे तो हिरक़्ल की रूमी और अरबी फ़ौज बलक़ा की मशारिफ़ नामी बस्ती में मुसलमानों को मिले। फिर दुश्मन क़रीब आ गया और मुसलमान मूता नामी बस्ती में इकट्ठे हो गए और वहां लड़ाई हुई। मुसलमानों ने दुश्मन से लड़ने के लिए अपनी फ़ौज तर्तीब दी और फ़ौज के दाएं बाज़ू पर बनू उज़रा के क़ुतबा बिन क़तादा रज़ि० को और बाएं बाज़ू पर अबाया बिन मालिक रज़ि० अंसारी सहाबी को अमीर मुक़र्रर किया।

फिर दोनों फ़ौजों का मुक़ाबला हुआ और बड़े ज़ोर की लड़ाई हुई। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० वाले झंडे को लेकर बहादुरी से लड़ते रहे। आख़िर दुश्मन के नेज़ों से घायल होकर शहीद हो गए।

फिर हज़रत जाफ़र ने उस झंडे को ले लिया और दुश्मन से लड़ते रहे, यहां तक कि शहीद हो गए और मुसलमानों में सबसे पहले आदमी हज़रत जाफ़र हैं, जिन्होंने अपने घोड़े के पांव काट डाले।[1]

तबरानी में उस जैसी हदीस हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० से रिवायत की गई है और उसमें यह है कि फिर हज़रत जाफ़र रज़ि० ने झंडे को ले लिया और जब घमासान की लड़ाई हुई तो वह अपने लाल घोड़े से नीचे उतरे और उसके पांव काट दिए और दुश्मन से लड़ते रहे, यहां तक कि शहीद हो गए और हज़रत जाफ़र पहले मुसलमान हैं जिन्होंने लड़ाई में घोड़े के पांव काटे।[2]

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे बाप का इंतिक़ाल हो चुका था और मैं यतीम था और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० की परवरिश में था। वह सवारी पर अपने पीछे बिठाकर अपने उस सफ़र में मुझे भी साथ ले गए थे। अल्लाह की क़सम ! एक रात वह चल रहे थे कि मैंने उनको ये शेर पढ़ते हुए सुना—

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 241
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 157, हुलीया, भाग 1, पृ० 118

إِذَا أَدْنَيْتِنِي وَحَمَلْتِ رَحْلِي ... مَسِيرَةَ أَرْبَعٍ بَعْدَ الْحِسَاءِ

'(ऐ मेरी ऊंटनी !) जब तू मुझे क़रीब कर देगी और हसा नामी जगह के बाद चार दिन की दूरी तक तो मेरे कजावे को उठाकर ले जाएगी।)

فَشَأْنَكِ أَنْعُمٌ وَخَلَاكِ ذَمٌّ ... وَلَا أَرْجِعْ إِلَى أَهْلِي وَرَائِي

'तो फिर तू नेमतों में आराम से रहना और तेरी निन्दा न हुआ करेगी। (क्योंकि मैं तो वहां जाकर दुश्मनों से लड़ाई में शहीद हो जाऊंगा, इसलिए सफ़र में तुझे ले जाने की मुझे ज़रूरत न रहेगी) और खुदा करे कि मैं पीछे अपने घरवालों के पास न जाऊं।'

وَجَاءَ الْمُسْلِمُونَ وَغَادَرُونِي ... بِأَرْضِ الشَّامِ مُسْتَنْهَى الثَّوَاءِ

'और वहां से मुसलमान वापस आ जाएंगे और मुझे शाम की धरती पर वहां छोड़ आएंगे, जहां मेरा आखिरी क़ियाम होगा।'

وَرَدَّكِ كُلُّ ذِي نَسَبٍ قَرِيبٍ ... إِلَى الرَّحْمٰنِ مُنْقَطِعِ الْإِخَاءِ

'और (मेरे शहीद हो जाने के बाद) तुझे मेरे वे रिश्तेदार वापस ले जाएंगे, तो रहमान के तो क़रीब होंगे, लेकिन मुझसे उनका भाईचारा (मेरे मरने की वजह से) ख़त्म हो चुका होगा।'

هُنَالِكَ لَا أُبَالِي طَلْعَ بَعْلٍ ... وَلَا نَخْلٍ أَسَافِلُهَا رِوَاءُ

'और उस वक़्त मुझे न तो अपने आप उगने वाले पेड़ों के फल की, परवाह रहेगी और न पानी से सींची जानेवाली खजूरों के फल की परवाह रहेगी।'

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म फ़रमाते हैं कि मैंने जब उनसे ये शेर (पद) सुने (जिनमें शहादत पाने की तमन्ना ज़ाहिर की गई थी) तो मैं रो पड़ा। इस पर उन्होंने मुझे कोड़ा मारा और कहने लगे, ओ कमीने ! अल्लाह अगर मुझे शहादत नसीब फ़रमा दे, तो इसमें तुम्हारा क्या नुक़्सान है ? (मैं शहीद हो जाऊंगा) तुम मेरे कजावे पर बैठकर (मदीना) वापस चले जाना।'[1]

हज़रत अब्बाद बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 243, हुलीया, भाग 1, पृ० 119, मज्मा, भाग 6, पृ० 158

(दूध शरीक बाप, जो कि क़बीला बनू अम्र बिन औफ़ के थे, उन्होंने मुझसे बयान फ़रमाया कि जब हज़रत जाफ़र रज़ि० शहीद हो गए, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा ने झंडा ले लिया और फिर झंडा लेकर अपने घोड़े पर आगे बढ़े। वह (दुश्मन से लड़ने के लिए) घोड़े से नीचे उतरना चाहते थे, लेकिन तबियत में इस बारे में कुछ तरद्दुद महसूस किया तो ये शेर (पद) पढ़कर अपनी तबियत को आमादा किया—

أَقْسَمْتُ يَا نَفْسِ لَتَنْزِلَنَّهْ   لَتَنْزِلِنَّ أَوْ لَتُكْرَهِنَّهْ

'ऐ मेरे नफ़्स! तुझे क़सम देकर कह रहा हूं कि तुझे नीचे उतरना होगा, ख़ुशी से उतर या नागवारी से।'

إِنْ أَجْلَبَ النَّاسُ وَشَدُّوا الرَّنَّهْ   مَالِيْ أَرَاكِ تَكْرَهِيْنَ الْجَنَّهْ

'अगर काफ़िर लोग जमा हो गए हैं और वे लड़ने के ज़ोर मे ऊंची आवाज़ें निकाल रहे हैं, तो तू बुज़दिल मत बन, क्या हुआ, मैं देख रहा हूं कि तू जन्नत में जाने को पसन्द नहीं कर रहा है।'

قَدْ طَالَ مَا كُنْتِ مُطْمَئِنَّهْ   هَلْ أَنْتِ إِلَّا نُطْفَةٌ فِيْ شَنَّهْ

'और तुझे इत्मीनान की ज़िंदगी गुज़ारते हुए बड़ा लम्बा ज़माना हो गया है, और तू मश्कीज़े के थोड़े से पानी की तरह है (कि नामालूम कब ख़त्म हो जाए) और ये शेर भी पढ़े—

يَا نَفْسِ إِنْ لَا تُقْتَلِيْ تَمُوْتِيْ   هٰذَا حِمَامُ الْمَوْتِ قَدْ صَلِيْتِ

'ऐ मेरे नफ़्स! अगर तू क़त्ल नहीं होगा तो (एक न एक दिन) मरना तो पड़ेगा और यह मौत का तक़दीर में लिखा हुआ फ़ैसला है, जिसमें तुझे दाख़िल कर दिया गया है।'

وَمَا تَمَنَّيْتِ فَقَدْ أُعْطِيْتِ   إِنْ تَفْعَلِيْ فِعْلَهُمَا هُدِيْتِ

'तूने जिस चीज़ की तमन्ना की थी, वह तुम्हें दे दी गई है। अगर तू इन दोनों (हज़रत ज़ैद और हज़रत जाफ़र) जैसा काम करेगा तो तू हिदायत पाएगा।'

फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० घोड़े से उतर गए और फिर उन्हें उनके एक चचेरे भाई ने हड्डी वाला गोश्त लाकर दिया और उनसे कहा कि इसके ज़रिए अपनी कमर को मज़बूत कर लो, क्योंकि

तुम्हें इन दिनों बहुत तक्लीफ़ और भूख बरदाश्त करनी पड़ी है।

उन्होंने उसके हाथ से गोश्त लेकर एक बार दांतों से तोड़कर खाया कि इतने में उन्होंने फ़ौज के एक कोने से लोगों के इकट्ठे होकर हल्ला बोलने की आवाज़ सुनी तो (अपने आपको मुख़ातब करके) उन्होंने कहा कि (ये लोग तो जान की बाज़ी लगा रहे हैं) और तू दुनिया में लगा हुआ है। फिर अपने हाथ से गोश्त का टुकड़ा फेंक दिया और अपनी तलवार लेकर आगे बढ़े और काफ़िरों से लड़ाई शुरू कर दी। आख़िर शहीद हो गए।[1]

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे दूध शरीक बाप ने, जो कि बनू मुर्रा बिन औफ़ के थे और वह इस ग़ज़वा मूता में शरीक हुए थे, मुझसे यह बयान फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम ! मैं इस वक़्त हज़रत जाफ़र रज़ि० की ओर देख रहा हूं, जबकि वह अपने लाल घोड़े से उतरे और फिर उसकी टांगें काट डालीं और फिर काफ़िरों से लड़ाई शुरू कर दी, यहां तक कि वह शहीद हो गए। और वह ये शेर पढ़ रहे थे—

يَا حَبَّذَا الْجَنَّةُ وَاقْتِرَابُهَا طَيِّبَةٌ وَّبَارِدٌ شَرَابُهَا

'ऐ लोगो ! क्या ही अच्छी चीज़ है जन्नत और क्या ही अच्छा है उसका क़रीब होना। जन्नत बहुत ही उम्दा चीज़ है और उसका पानी ख़ूब ठंडा है।

وَالرُّوْمُ رُوْمٌ قَدْ دَنَا عَذَابُهَا كَافِرَةٌ بَعِيْدَةٌ اَنْسَابُهَا
عَلَيَّ اِذَا لَاقَيْتُهَا ضِرَابُهَا

'रूमियों के अज़ाब का वक़्त क़रीब आ गया। ये लोग काफ़िर हैं और इनका आपस में कोई जोड़ नहीं है। जब लड़ाई के मैदान में इनका सामना हो गया है, तो अब उनकी तलवार से मारना मुझ पर ज़रूरी हो गया है।[2]

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 245, हुलीया, भाग 1, पृ० 120, हैसमी, भाग 6, पृ० 160
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 244, इसाबा, भाग 1, पृ० 238, हुलीया, भाग 1, पृ० 118

यमामा की लड़ाई का दिन

हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ि० के बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब यमामा की लड़ाई के लिए मुसलमानों का झंडा उठाए हुए थे। मुसलमान को (शुरू में) हार हो गई और (मुसैलमा कज़्ज़ाब का क़बीला) हनीफ़ा मुसलमानों की पैदल फ़ौज पर ग़ालिब आ गया। हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ि० मुसलमानों से कहने लगे, अपने ठहरने की जगहों को वापस न जाओ, क्योंकि पैदल फ़ौज हार गई है, फिर ऊंची आवाज़ से ज़ोर-शोर से कहने लगे, ऐ अल्लाह! मैं आपके सामने अपने साथियों के भागने की माज़रत पेश करता हूं और मुसैलमा और मुहक्कम बिन तुफ़ैल ने जो फ़िला उठा रखा है, मैं उससे बिल्कुल बरी हूं, फिर झंडे को मज़बूती से थामकर आगे बढ़े और दुश्मन में घुसकर तलवार चलानी शुरू कर दी, यहां तक कि शहीद हो गए। (अल्लाह की रहमतें हों उन पर)

झंडा गिरने लगा तो उसे हज़रत अबू हुज़ैफ़ा के ग़ुलाम हज़रत सालिम ने उठा लिया। मुसलमानों ने कहा कि हमें ख़तरा है कि हम पर तुम्हारी तरफ़ से काफ़िर हमला करेंगे।

तो उन्होंने कहा कि अगर मेरी तरफ़ से काफ़िर तुम पर हमला करने में कामियाब हो गए तो मैं बहुत बुरा हामिले क़ुरआन हूं। (यानी मैं काफ़िरों के तमाम हमले रोकूंगा और इधर से उन्हें आगे नहीं आने दूंगा।) और हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब सन् 12 हि० में शहीद हुए।[1]

हज़रत बिन्त साबित बिन क़ैस बिन शम्मास रज़ि० एक हदीस बयान फ़रमाती हैं, जिसमें यह मज़्मून है कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुसलमानों से यमामा और मुसैलमा कज़्ज़ाब के मुरतद लोगों से लड़ने के लिए निकलने की मांग की तो (इस मांग पर तैयार होने वाले) मुसलमानों को लेकर हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि० चले।

जब मुसलमानों का मुसैलमा और बनू हनीफ़ा क़बीले वालों से

1. हाकिम, भाग 2, पृ० 227, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 274

मुक़ाबला हुआ तो मुसलमानों को तीन बार हार का मुंह देखना पड़ा। इस पर हज़रत साबित और हज़रत अबू हुज़ैफ़ा के ग़ुलाम, हज़रत सालिम रज़ि० ने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ जाकर तो हम इस तरह नहीं लड़ाई लड़ा करते थे और फिर उन्होंने अपने लिए एक गढ़ा खोदा और उन दोनों ने उसमें दाख़िल होकर काफ़िरों से लड़ना शुरू कर दिया। और शहीद होने तक लड़ते रहे। (गढ़े में इसलिए दाख़िल हुए ताकि लड़ाई के मैदान से भाग न सकें।)[1]

हज़रत मुहम्मद बिन साबित बिन क़ैस बिन शम्मास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब यमामा की लड़ाई के दिन मुसलमानों को हार का मुंह देखना पड़ा, तो हज़रत अबू हुज़ैफ़ा के ग़ुलाम हज़रत सालिम रज़ि० ने कहा कि हम लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ जाकर तो ऐसे नहीं किया करते थे।

चुनांचे वह अपने लिए एक गढ़ा खोदकर उसमें खड़े हो गए और उस दिन मुहाजिरों का झंडा उनके पास था। फिर उन्होंने लड़ना शुरू कर दिया, यहां तक कि शहीद हो गए। अल्लाह उन पर रहमत फ़रमाए। उनकी शहादत यमामा की लड़ाई के दिन सन् 12 हि० में हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त के ज़माने में हुई।[2]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्बाद बिन बिश्र रज़ि० को यह फ़रमाते हुए सुना कि ऐ अबू सईद! आज रात मैंने ख़्वाब में देखा कि आसमान मेरे लिए खोला गया। मैं उसके अन्दर दाख़िल हो गया, फिर वह आसमान बन्द कर दिया गया। इसकी ताबीर (स्वप्न फल) यह है कि इनशाअल्लाह, मुझे शहादत नसीब होगी।

मैंने उनसे कहा, अल्लाह की क़सम! तुमने बहुत अच्छा ख़्वाब देखा है। चुनांचे मैंने यमामा की लड़ाई के दिन देखा कि हज़रत अब्बाद बिन बिश्र ऊंची आवाज़ से अंसार से कह रहे थे कि अपनी तलवारों की म्यानें तोड़ दो। (क्योंकि अब इतनी ज़ोरदार लड़ाई करनी है, जिससे

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 355, इस्तीआब, भाग 1, पृ० 194, इसाबा, भाग 1, पृ० 196
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 88

तलवारें टूट जाएंगी।) और दूसरे लोगों से अलग हो जाओ। तुम हम अंसार को औरों से अलग कर दो। (ताकि दूसरे लोग भी हमारी नुमायां बहादुरी और जान देने के जज़्बे को देखकर हिम्मत करें)

चुनांचे अंसार के चार सौ आदमी एक तरफ़ अलग होकर जमा हो गए और उनमें और कोई भी नहीं था। हज़रत अब्बाद बिन बिश्र, हज़रत अबू दुजाना और हज़रत बरा बिन मालिक रज़ि० उन चार सौ के आगे-आगे चल रहे थे। चुनांचे चलते-चलते यह उस बाग़ के दरवाज़े तक पहुंच गए (जिसके अन्दर मुसैलमा कज़्ज़ाब अपनी फ़ौज लेकर ठहरा हुआ था)

वहां पहुंचकर इन लोगों ने ज़बरदस्त लड़ाई की और हज़रत अब्बाद बिन बिश्र रज़ि० शहीद हो गए। चुनांचे मैं उनके चेहरे से उनको न पहचान सका कि चेहरे पर घाव बहुत ज़्यादा थे। अलबत्ता उनके जिस्म में एक और निशानी थी, जिससे मैंने उनको पहचाना।[1]

हज़रत जाफ़र बिन अब्दुल्लाह बिन अस्लम हमदानी रज़ि० फ़रमाते हैं कि यमामा की लड़ाई के दिन मुसलमानों में सबसे पहले हज़रत अबू अक़ील उनैफ़ी रज़ि० घायल हुए, उनको तीर कंधों और दिल के बीच में लगा था, जो लगकर टेढ़ा हो गया और जिससे शहीद न हुए, फिर वह तीर निकाला गया। उनके बाईं ओर इस तीर के लगने की वजह से कमज़ोरी हो गई थी। यह शुरू दिन की बात है।

फिर उन्हें उठाकर उनके ख़ेमे में लाया गया। जब लड़ाई घमासान की होने लगी और मुसलमानों को हार का मुंह देखना पड़ा और वे पीछे हटते-हटते अपनी क़ियामगाहों से भी गुज़र गए और अबू अक़ील अपने घाव की वजह से कमज़ोर पड़े हुए थे, उन्होंने हज़रत मान बिन अदी रज़ि० की आवाज़ सुनी, वह अंसार को बुलन्द आवाज़ से लड़ने के लिए उभार रहे थे कि अल्लाह पर भरोसा करो, अल्लाह पर भरोसा करो और अपने दुश्मन पर दोबारा हमला करो और हज़रत मान लोगों के आगे-आगे तेज़ी से चल रहे थे।

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 441

यह उस वक़्त की बात है जबकि अंसार कह रहे थे कि हम अंसार को दूसरों से अलग कर दो। हम अंसार को दूसरों से अलग कर दो। चुनांचे एक-एक करके अंसार एक तरफ़ जमा हो गए (और मक़्सद यह था कि लोग जमकर लड़ेंगे और बहादुरी से आगे बढ़ेंगे और दुश्मन पर जाकर हमला करेंगे, इससे तमाम मुसलमानों के क़दम जम जाएंगे और हौसले बढ़ जाएंगे)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि फिर हज़रत अबू अक़ील अंसार के पास जाने के लिए खड़े हुए।

मैंने कहा, ऐ अबू अक़ील ! आप क्या चाहते हैं? आप में लड़ने की ताक़त तो है नहीं?

उन्होंने कहा, इस मुनादी ने मेरा नाम लेकर आवाज़ लगाई है।

मैंने कहा, वह तो कह रहा है, ऐ अंसार! लड़ने के लिए वापस आओ। वह घायलों को वापस बुलाना नहीं चाहता है। (वह तो उन लोगों को बुला रहा है, जो लड़ने के क़ाबिल हों)

हज़रत अबू अक़ील ने कहा (कि उन्होंने अंसार को बुलाया है और मैं भले ही घायल हूं, लेकिन) मैं भी अंसार में से हूं, इसलिए मैं उनकी पुकार पर ज़रूर जाऊंगा, चाहे मुझे घुटनों के बल जाना पड़े।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू अक़ील ने अपनी कमर बांधी और अपने दाएं हाथ में नंगी तलवार ली और फिर यह एलान करने लगे कि ऐ अंसार ! हुनैन की लड़ाई की तरह दुश्मन पर दोबारा हमला करो।

चुनांचे अंसार सहाबा जमा हो गए, अल्लाह उन पर रहम फ़रमाए और फिर मुसलमानों से आगे-आगे बड़ी बहादुरी के साथ दुश्मन की ओर बढ़े, यहां तक कि दुश्मन को लड़ाई का मैदान छोड़कर बाग़ में घुस जाने पर मजबूर कर दिया। मुसलमान और दुश्मन एक दूसरे में घुस गए और हमारे और उनके बीच तलवारें चलने लगीं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अबू अक़ील को देखा कि उनका ज़ख़्मी हाथ कंधे से कटकर ज़मीन पर गिरा हुआ था

और उनके जिस्म में चौदह घाव थे, जिनमें से हर घाव जानलेवा था और अल्लाह का दुश्मन मुसैलमा क़त्ल हो गया।

हज़रत अबू अक़ील ज़मीन पर घायल पड़े हुए थे और उनकी आख़िरी सांस थी। मैंने झुककर उनसे कहा, ऐ अबू अक़ील !

उन्होंने कहा, लब्बैक ! हाज़िर हूं और लड़खड़ाती हुई ज़ुबान से पूछा कि जीत किसकी हुई है ?

मैंने कहा, आपको ख़ुशख़बरी हो (कि मुसलमानों को जीत हुई है) और मैंने ऊंची आवाज़ से कहा, अल्लाह का दुश्मन क़त्ल हो चुका है।

इस पर उन्होंने अल्लाह की हम्द बयान करने के लिए आसमान की ओर उंगली उठाई और इंतिक़ाल फ़रमा गए। अल्लाह उन पर रहम फ़रमाए।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मदीना वापस आने के बाद मैंने हज़रत उमर रज़ि० को उनकी सारी कारगुज़ारी सुनाई। तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अलाह उन पर रहम फ़रमाए। वह हमेशा शहादत मांगा करते थे और जहां तक मुझे मालूम है वह हमारे नबी करीम सल्ल० के बेहतरीन सहाबा रज़ि० में से थे, और शुरू में इस्लाम लाए थे।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब यमामा की लड़ाई के दिन मुसलमानों को हार का मुंह देखना पड़ा, तो मैंने देखा कि हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि० ख़ुशबू लगाकर लड़ाई के मैदान में जाने के लिए तैयार हो रहे थे।

मैंने उनसे कहा, ऐ चचा जान ! क्या आप नहीं देख रहे हैं ? (कि मुसलमान हारकर भाग रहे हैं।)

उन्होंने कहा, हम हुज़ूर सल्ल० के साथ जाकर इस तरह नहीं लड़ा करते थे। तुम लोगों ने (हार का मुंह देख-देखकर) अपने मुक़ाबले के दुश्मन की बहुत बुरी आदत डाल दी है। ऐ अल्लाह ! इन (मुर्तद लोगों)

1. इसाबा, भाग 1, पृ० 195, हैसमी, भाग 9, पृ० 323, हाकिम, भाग 3, पृ० 235

ने जो फ़िला खड़ा किया है, मैं उससे बरी हूं और इन (मुसलमानों) ने जो किया है (कि हार खाकर भाग रहे हैं) मैं इससे भी बरी हूं। फिर काफ़िरों से लड़ाई शुरू कर दी, यहां तक कि शहीद हो गए। आगे और हदीस भी ज़िक्र की है।[1]

फ़त्हुल बारी में यह लिखा हुआ है कि जब यमामा की लड़ाई के दिन मुसलमानों को हार हो गई, तो हज़रत साबित रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं इन मुर्तद लोगों से बेज़ार हूं और ये जिन चीज़ों की इबादत करते हैं, उनसे भी बेज़ार हूं और मुसलमानों से भी बेज़ार हूं और मुसलमान जो कुछ कर रहे हैं (कि हार खाकर भाग रहे हैं) मैं उससे भी बेज़ार हूं।

और एक आदमी बाग़ की दीवार में एक शगाफ़ (सूराख़, दराड़) वाली जगह पर खड़ा हुआ था, उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया और फिर ख़ुद भी शहीद हो गए।[2]

यर्मूक की लड़ाई का दिन

हज़रत साबित बनानी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत इक्रिमा बिन अबू जह्ल रज़ि० लड़ाई (यानी यर्मूक की लड़ाई) के दिन (शहादत के शौक़ में सवारी से उतरकर) पैदल चलने लगे तो उनसे ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ इक्रिमा! ऐसे न करो, क्योंकि तुम्हारा क़त्ल हो जाना मुसलमानों पर बड़ा बोझ होगा।

हज़रत इक्रिमा रज़ि० ने कहा, ऐ ख़ालिद! मुझे छोड़ दो, इसलिए कि तुम्हें तो हुज़ूर सल्ल० के साथ इस्लाम के फैलाने के लिए बहुत कुछ करने का मौक़ा मिला है और मैं और मेरा बाप हम दोनों तो हुज़ूर सल्ल० के तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा मुख़ालिफ़ थे और सबसे ज़्यादा तक्लीफ़ें पहुंचाया करते थे और यह कहकर हज़रत इक्रिमा पैदल आगे बढ़े और शहीद हो गए।[3]

1. इसाबा, भाग 1, पृ० 195, हैसमी, भाग 9, पृ० 323, हाकिम, भाग 3, पृ० 235
2. फ़त्हुल बारी, भाग 6, पृ० 405, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 44
3. कंज़, भाग 7, पृ० 75, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 44

हज़रत अबू उस्मान ग़स्सानी रह० के बाप फ़रमाते हैं कि यर्मूक की लड़ाई के दिन हज़रत इक्रिमा बिन अबू जह्ल रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने कई मैदानों में अल्लाह के रसूल सल्ल० से लड़ाई लड़ी है, तो क्या मैं आज तुम लोगों से (हार खाकर) भाग जाऊंगा? (ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता) फिर ऊंची आवाज़ से कहा कि मरने पर कौन बैअत होता है?

चुनांचे उनके चचा हज़रत हारिस बिन हिशाम और हज़त ज़रार बिन अज़्वर रज़ि० ने चार सौ मुसलमान सरदारों और घुड़सवारों समेत बैअत की और उन्होंने हज़रत ख़ालिद रज़ि० के ख़ेमे के सामने ख़ूब ज़ोरदार लड़ाई की और सारे ही ज़ख़्मों से चूर हो गए, लेकिन वे सारे अपनी जगह जमे रहे। कोई अपनी जगह से हिला नहीं और उनमें से एक बड़ी मख़्लूक़ शहीद हो गई, जिनमें हज़रत ज़रार बिन अज़्वर भी थे।[1]

हज़रत सैफ़ की रिवायत भी इस जैसी ही है, लेकिन इसमें यह भी है कि वे चार सौ मुसलमान थे, अक्सर शहीद हो गए, कुछ उनमें से बच गए जिनमें हज़रत ज़रार बिन अज़्वर भी थे। सुबह को हज़रत इक्रिमा बिन अबू जह्ल और उनके बेटे हज़रत अम्र दोनों हज़रत ख़ालिद रज़ि० के पास लाए गए। ये दोनों ख़ूब ज़ख़्मी थे।

हज़रत ख़ालिद ने हज़रत इक्रिमा का सर अपनी रान पर हज़रत अम्र का सर अपनी पिंडुली पर रखा और वे इन दोनों के चेहरे को साफ़ कर रहे थे और उनकी हलक़ में थोड़ा-थोड़ा पानी डाल रहे थे और वह फ़रमा रहे थे कि इब्ने हनतुमा (यानी हज़रत उमर रज़ि०) ने कहा था कि हम लोग शहीद नहीं होंगे, (लेकिन अल्लाह ने हमें शहादत अता फ़रमा दी।)[2]

सहाबा किराम रज़ि० के अल्लाह के रास्ते में शहादत के शौक़ के क़िस्से

हज़रत अबुल बख़्तरी और हज़रत मैसरा फ़रमाते हैं कि सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के दिन हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० लड़ रहे थे, लेकिन

---

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 11
2. तबरी, भाग 4, पृ० 36

शहीद नहीं हो रहे थे। वह हज़रत अली रज़ि० की ख़िदमत में जाकर कहते, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! यह फ़्लां दिन है (यानी हुज़ूर सल्ल० ने मुझे जिस दिन शहीद होने की ख़ुशख़बरी दी थी, वह दिन यही है)

हज़रत अली रज़ि० जवाब में फ़रमाते, अरे, अपने इस ख़्याल को जाने दो। इस तरह तीन बार हुआ। फिर उनके पास दूध लाया गया, जिसे उन्होंने पी लिया और फिर फ़रमाया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया था कि दूध ही वह चीज़ है जिसे मैं दुनिया से जाते वक़्त सबसे आख़िर में पियूंगा, फिर खड़े होकर लड़ाई की, यहां तक कि शहीद हो गए।[1]

अल्लाह के रसूल सल्ल० के सहाबी हज़रत अबू सिनान दुवली रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० को देखा कि उन्होंने अपने ग़ुलाम से पीने की कोई चीज़ मंगवाई, वह उनके पास दूध का एक प्याला ले आया। चुनांचे उन्होंने वह दूध पिया और फिर फ़रमाया, अल्लाह और उसके रसूल ने सच फ़रमाया, आज मैं अपने महबूब इंसानों, हज़रत मुहम्मद सल्ल० और उनकी जमाअत से (शहीद होकर) मिलूंगा। आगे और हदीस ज़िक्र की।[2]

हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० को सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के दिन, जिस दिन वह शहीद हुए, ऊंची आवाज़ से यह कहते हुए सुना, मैं जब्बार यानी अल्लाह से मिलूंगा और बड़ी आंखों वाली हूर से शादी करूंगा। आज हम अपने महबूब इंसानों, हज़रत मुहम्मद सल्ल० और उनकी जमाअत से मिलेंगे। हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया था कि दुनिया में तुम्हारा आख़िरी तोशा दूध की लस्सी होगी (और वह मैं पी चुका हूं और मैं अब दुनिया से जाने वाला हूं।)[3]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत बरा बिन मालिक

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 297
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 298
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 296

रज़ि० के पास आया, वह कुछ गुनगुना रहे थे। मैंने उनसे कहा, अल्लाह ने उन्हें इन शेरों के बदले इनसे बेहतर चीज़ यानी क़ुरआन अता फ़रमाया हुआ है। (तुम क़ुरआन पढ़ो)

उन्होंने कहा, क्या तुम्हें इस बात का डर है कि मैं अपने बिस्तर पर मर जाऊंगा? नहीं, अल्लाह की क़सम! अल्लाह मुझे (शहादत की इस नेमत) से महरूम नहीं फ़रमाएंगे। मैं अकेला सौ काफ़िरों को क़त्ल कर चुका हूं और जिनको मैंने दूसरों के साथ मिलकर क़त्ल किया है, वे इनके अलावा हैं।[1]

हाकिम ने हज़रत अनस रज़ि० की वह रिवायत नक़ल की है कि जब अक़बा की लड़ाई के दिन फ़ारस में मुसलमान हारकर एक कोने में सिमट आए थे, तो हज़रत बरा बिन मालिक खड़े होकर अपने घोड़े पर सवार हुए और एक आदमी उसे पीछे से हांक रहा था। फिर उन्होंने अपने साथियों से फ़रमाया, तुमने अपने मुक़ाबले वालों की बुरी आदत डाल दी है (कि हर बार उनसे हार खा लेते हो) यह कहकर उन्होंने दुश्मन पर ऐसा हमला किया कि उससे अल्लाह ने मुसलमानों को जीत दिला दी और वह ख़ुद उस दिन शहीद हो गए।

हज़रत उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा कहते हैं कि उन्हें यह ख़बर पहुंची है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने फ़रमाया कि जब हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि० का फ़ितरी मौत से इंतिक़ाल हुआ और उन्हें शहादत की मौत न मिली तो उनका दर्जा मेरी निगाह में बहुत कम हो गया और मैंने कहा कि इस आदमी को देखो कि यह दुनिया से बहुत ज़्यादा किनारा किए हुए था और यों मर गया है और उसे शहादत नसीब नहीं हुई है, तो उनका दर्जा मेरी निगाह में यों ही कम रहा, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० का भी विसाल हो गया और उन्हें शहादत न मिली, तो मैंने कहा कि तेरा नास हो। हमारे बेहतरीन लोग यों ही (शहादत के बग़ैर) वफ़ात पा रहे हैं।

1. इसाबा, भाग 1, पृ० 143, हैसमी, भाग 9, पृ० 324, हाकिम, भाग 3, पृ० 291, हुलीया, भाग 1, पृ० 350

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० का भी यों ही इंतिक़ाल हुआ, तो मैंने कहा कि तेरा नास हो, हमारे बेहतरीन लोग यों ही वफ़ात पा रहे हैं। चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० का मेरी निगाह में वही दर्जा हो गया, जो उनका पहले था।[1]

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 240

सहाबा किराम रज़ि० की बहादुरी

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की बहादुरी

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ लोगो! मुझे बताओ, लोगों में सबसे ज़्यादा बहादुर कौन है?

लोगों ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप हैं।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं जिस दुश्मन के मुक़ाबले के लिए निकला हूं, उससे मैंने अपना हक़ पूरा वसूल किया है (यानी हमेशा अपने दुश्मन को हराया है, मैं पूरा बहादुर नहीं हूं। लेकिन तुम मुझे बताओ कि लोगों में सबसे ज़्यादा बहादुर कौन है?

लोगों ने कहा, फिर हम तो नहीं जानते। आप ही बताएं कि कौन हैं?

उन्होंने कहा, वह हज़रत अबूबक्र रज़ि० हैं। चुनांचे बद्र की लड़ाई के मौक़े पर जब हमने अल्लाह के रसूल सल्ल० के लिए छप्पर बनाया, तो हमने कहा, कौन हुज़ूर सल्ल० के साथ रहेगा, ताकि कोई मुश्रिक आपकी तरफ़ न आ सके? अल्लाह की क़सम! उस वक़्त कोई भी हुज़ूर सल्ल० के साथ रहने की हिम्मत न कर सका। (दुश्मन का डर बहुत ज़्यादा था) बस एक हज़रत अबूबक्र ही ऐसे थे जो तलवार सोंत कर हुज़ूर सल्ल० के सिरहाने खड़े हुए थे। जब कोई भी हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ आने का इरादा करता, हज़रत अबूबक्र रज़ि० फ़ौरन लपक कर उसकी ओर जाते। यह (हज़रत अबूबक्र) ही तमाम लोगों में से सबसे ज़्यादा बहादुर हैं। आगे और हदीस भी ज़िक्र की है।[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की बहादुरी

हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि० ने एक बार फ़रमाया कि मेरे इल्म के मुताबिक़ हर एक ने छिपकर हिजरत की, सिर्फ़ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ऐसे हैं जिन्होंने एलान करके हिजरत की।

1. मज्मा, भाग 9, पृ० 46

चुनांचे जब उन्होंने हिजरत का इरादा फ़रमाया तो अपनी तलवार गले में लटकाई और अपनी कमान कंधे पर डाली और कुछ तीर (तिरकश से) निकालकर अपने हाथ में पकड़ लिए और बैतुल्लाह के पास आए। वहां सेहन में क़ुरैश के कुछ सरदार बैठे हुए थे। हज़रत उमर रज़ि० ने बैतुल्लाह के सात चक्कर लगाए, फिर मक़ामे इब्राहीम के पास जाकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, फिर मुश्रिकों की एक-एक टोली के पास आए और फ़रमाया, ये तमाम चेहरे बद-शक्ल हो जाएं। जो आदमी यह चाहता है कि उसकी मां उससे हाथ धो बैठे और उसकी औलाद यतीम हो जाए और उसकी बीवी बेवा हो जाए, वह मुझसे इस घाटी के परली जानिब मिले। (फिर आप वहां से चल पड़े) एक भी आपके पीछे न जा सका।[1]

हज़रत अली रज़ि० की बहादुरी

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ि० उहुद की लड़ाई के दिन हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के पास आए और ये शेर पढ़े—

أَفَاطِمُ هَاكِ السَّيْفَ غَيْرَ ذَمِيمٍ   فَلَسْتُ بِرِعْدِيدٍ وَّلَا بِلَئِيمٍ

'ऐ फ़ातिमा ! यह तलवार ले लो, जिसमें कोई ऐब नहीं है और न तो (डर की वजह से) मुझ पर कभी कपकपी तारी होती है और न मैं कमीना हूं।'

لَعَمْرِي لَقَدْ أَبْلَيْتُ فِي نَصْرِ أَحْمَدٍ   وَمَرْضَاةِ رَبٍّ بِالْعِبَادِ عَلِيمٍ

'मेरी उम्र की क़सम ! हज़रत अहमद सल्ल० की मदद और उस रब की ख़ुशनूदी की ख़ातिर मैंने पूरी कोशिश की है जो बन्दों को अच्छी तरह जानता है।'

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर तुमने अच्छे तरीक़े से लड़ाई लड़ी है, तो हज़रत सह्ल बिन हुनैफ़ और हज़रत इब्नुस्सिम्मा ने भी ख़ूब अच्छे तरीक़े से लड़ाई लड़ी है और हुज़ूर सल्ल० ने एक और सहाबी का भी नाम लिया, जिसे मुअल्ला रिवायत करने वाले भूल गए।

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 387

इस पर हज़रत जिब्रील अलै० ने आकर अर्ज़ किया, ऐ मुहम्मद ! आपके वालिद (पिता) की क़सम ! यह ग़मख़ारी का मौक़ा है।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ जिब्रील ! यह अली तो मुझसे हैं।

हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया, मैं आप दोनों का हूं।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि उहुद की लड़ाई के दिन हज़रत अली रज़ि० हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के पास गए और उनसे कहा, यह तलवार ले लो। इसमें कोई ऐब नहीं है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुमने अच्छी तरह से लड़ाई की है, तो हज़रत सह्ल बिन हुनैफ़ रज़ि० और हज़रत अबू सिमाक बिन ख़रशा रज़ि० ने भी ख़ूब अच्छी तरह लड़ाई की है।[2]

हज़रत उबैदुल्लाह बिन काब बिन मालिक अंसारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि ग़ज़वा ख़ंदक़ के दिन अम्र बिन अब्दे वद् बहादुरों की निशानी लगाकर लड़ाई में अपने मौजूद होने का पता देने के लिए निकला। जब वह और उसके घुड़सवार साथी खड़े हो गए, तो हज़रत अली रज़ि० ने उससे कहा, ऐ अम्र ! तुमने क़ुरैश के लिए अल्लाह से अह्द किया था कि जब भी तुम्हें कोई आदमी दो बातों की दावत देगा, तुम इन दो बातों में से एक को ज़रूर अख़्तियार कर लोगे।

उसने कहा, हां, (मैंने यह अह्द किया था)।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मैं तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल की और इस्लाम की दावत देता हूं।

अम्र ने कहा, मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं है।

इस पर हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं मुक़ाबले के लिए मैदान में उतरने की तुमको दावत देता हूं।

अम्र ने कहा, ऐ मेरे भतीजे ! (मुझे) क्यों (मैदान में मुक़ाबले के लिए

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 122
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 123

उतरने की दावत दे रहे हो, क्योंकि) अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें क़त्ल करना नहीं चाहता हूं।

हज़रत अली ने फ़रमाया, लेकिन मैं तो तुम्हें क़त्ल करना चाहता हूं।

यह सुनकर अम्र आग बगोला हो गया और हज़रत अली की तरफ़ बढ़ा। दोनों अपनी सवारियों से उतरे और दोनों ने मैदान का कुछ चक्कर लगाया। (फिर लड़ाई शुरू हो गई) आख़िर हज़रत अली रज़ि० ने अम्र को क़त्ल कर दिया।[1]

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि अम्र बिन अब्दे वद्द हथियारों से पूरी तरह लैस होकर बाहर निकला और ऊंची आवाज़ से पुकारा, मुक़ाबले के लिए कौन आता है?

हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि० ने खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के नबी! मैं इसके मुक़ाबले के लिए जाता हूं।

आपने फ़रमाया, यह अम्र है। बैठ जाओ।

फिर अम्र ने ज़ोर से पुकारा, क्या है कोई मर्द, जो मेरे मुक़ाबले के लिए मैदान में आए? और मुसलमानों को मलामत करते हुए कहने लगा, कहां गई तुम्हारी वह जन्नत, जिसके बारे में तुम लोग यह कहते हो कि तुम में से जो मारा जाता है, वह उस जन्नत में दाख़िल हो जाता है। तुम लोग मेरे मुक़ाबले के लिए एक आदमी भी नहीं भेज सकते?

हज़रत अली रज़ि० ने फिर खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं जाता हूं।

आपने फ़रमाया, तुम बैठ जाओ।

अम्र ने तीसरी बार फिर ऊंची आवाज़ से मुक़ाबले के लिए आने की दावत दी और रिवायत करने वाले ने उसके शेरों का भी तज़्किरा किया।

फिर हज़रत अली रज़ि० ने खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं जाता हूं।

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 281

आपने फ़रमाया, यह अम्र है।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, चाहे अम्र हो। (मैं जाने को तैयार हूं) चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनको इजाज़त दे दी। वह ये शेर (पद) पढ़ते हुए उसकी ओर चले—

لَا تَعْجَلَنَّ فَقَدْ اَتَاكَ مُجِيْبُ صَوْتِكَ غَيْرَ عَاجِزٍ

'हरगिज़ जल्दी न कर, क्योंकि तेरी आवाज़ का जवाब देनेवाला आ गया है, जो आजिज़ नहीं है।'

فِيْ نِيَّةٍ وَّ بَصِيْرَةٍ وَالصِّدْقُ مُنْجِيْ كُلِّ فَائِزٍ

'यह आने वाला सोच-समझकर और पक्के इरादे के साथ आया है (यह बात मैं तुमसे सच्ची कह रहा हूं, क्योंकि) सच ही हर कामियाब होने वाले के लिए निजात का ज़रिया है।'

اِنِّيْ لَاَرْجُوْ اَنْ اُقِيْمَ عَلَيْكَ نَائِحَةَ الْجَنَائِزْ

'मुझे पूरी उम्मीद है कि मर्दों पर नौहा करने वालियों को मैं तेरे ऊपर (नौहा करने के लिए) खड़ा कर दूंगा।'

مِنْ ضَرْبَةٍ نَّجْلَاءَ يَبْقٰى ذِكْرُهَا عِنْدَ الْهَزَاهِزْ

'मैं तुझे (तलवार की) ऐसी लम्बी-चौड़ी चोट लगाऊंगा, जिसका तज़्किरा बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में भी बाक़ी रहेगा।'

अम्र ने हज़रत अली रज़ि० से पूछा, तुम कौन हो?

उन्होंने कहा, मैं अली हूं।

अम्र ने कहा कि क्या तुम अब्दे मनाफ़ (यह अबू तालिब का नाम है) के बेटे हो?

उन्होंने कहा, (हां) मैं अली बिन अबी तालिब हूं।

अम्र ने कहा, ऐ मेरे भतीजे! (मैं यह चाहता हूं कि मेरे मुक़ाबले के लिए) तुम्हारी जगह तुम्हारे चचाओं में से कोई चचा आए, जो उम्र में तुमसे बड़ा हो, क्योंकि मुझे तुम्हारा ख़ून बहाना पसन्द नहीं है।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे ख़ून बहाने को बुरा नहीं समझता हूं।

वह ग़ज़बनाक होकर अपने घोड़े से नीचे उतरा और अपनी तलवार सौंत ली। वह तलवार आग के शोले की तरह चमकदार थी। फिर वह ग़ुस्से में भरा हुआ हज़रत अली रज़ि० की ओर बढ़ा। हज़रत अली रज़ि० खाल वाली ढाल लेकर उसके सामने आए। अम्र ने हज़रत अली की ढाल पर तलवार का ऐसा ज़ोरदार वार किया कि तलवार ढाल को काटकर उनके सर तक जा पहुंची, जिससे सर ज़ख्मी हो गया।

हज़रत अली रज़ि०ने उसके कंधे पर इस ज़ोर से तलवार मारी जिससे वह ज़मीन पर गिर गया और (उसके गिरने से बहुत-सी) धूल उड़ी और हुज़ूर अक़्दस सल्ल० ने ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहने की आवाज़ सुनी जिससे हम लोग समझ गए कि हज़रत अली रज़ि०ने अम्र को क़त्ल कर दिया है। उस वक़्त हज़रत अली रज़ि० ये शेर (पद) पढ़ रहे थे—

اَعَلَيَّ تَقْتَحِمُ الْفَوَارِسُ هٰكَذَا عَنِّیْ   وَعَنْهُمْ اَخِّرُوْا اَصْحَابِیْ

'क्या घुड़सवार अचानक मुझ पर हमला कर देंगे? ऐ मेरे साथियो! तुम सबको मुझसे और मुझ पर अचानक हमला करने वालों से पीछे हटा दो, (मैं अकेला ही उनसे निमट लूंगा।)'

اَلْيَوْمَ يَمْنَعُنِی الْفِرَارَ حَفِيْظَتِیْ   وَمُصَمَّمٌ فِی الرَّأْسِ لَيْسَ بِنَابِیْ

'लड़ाई के मैदान में मुझे जो ग़ुस्सा आया है, उसने आज मुझे भागने से रोका हुआ है और इस तलवार ने रोका है, जिसका वार सर काटकर आता है और ख़ता नहीं होता है।' फिर ये शेर पढ़े—

عَبَدَ الْحِجَارَةَ مِنْ سَفَاهَةِ رَأْيِهٖ   وَعَبَدْتُ رَبَّ مُحَمَّدٍ بِصَوَابِیْ

'उसने अपनी बेवक़ूफ़ी भरी राय से पत्थरों की इबादत की और मैंने अपनी राय से मुहम्मद सल्ल० के रब की इबादत की।'

فَصَدَدْتُ حِيْنَ تَرَكْتُهٗ مُتَجَدِّلًا   كَالْجِذْعِ بَيْنَ دَكَادِكٍ وَّرَوَابِیْ

'जब मैं उसका काम तमाम करके वापस आया तो वह ज़मीन पर ऐसे पड़ा हुआ था, जैसे खजूर का तना कड़ी ज़मीन और टीलों के बीच पड़ा हुआ हो।'

وَعَفَفْتُ عَنْ اَثْوَابِهٖ وَلَوْ اَنَّنِیْ   كُنْتُ الْمُقَطَّرَ بَزَّنِیْ اَثْوَابِیْ

'मैंने उसके कपड़े नहीं लिए और यों मैं पाकदामन रहा और अगर मैं गिर जाता तो वह मेरे कपड़े छीन लेता।'

لَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ خَاذِلَ دِيْنِهٖ وَنَبِيِّهٖ يَا مَعْشَرَ الْأَحْزَابِ

'ऐ (काफ़िरों की) जमाअतो ! यह ख्याल हरगिज़ न करना कि अल्लाह अपने दीन की और अपने नबी सल्ल० की मदद छोड़ देंगे।'

फिर हज़रत अली रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ओर चल पड़े और उनका चेहरा खुशी से चमक रहा था। हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० ने उनसे कहा कि तुमने इस (अम्र बिन अब्दे वद्द) की ज़िरह क्यों नहीं ले ली, क्योंकि अरबों के पास इस ज़िरह से बेहतर ज़िरह नहीं है।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा कि मैंने उस पर तलवार का वार किया। उसने अपनी शर्मगाह के ज़रिए मुझसे बचाव किया यानी उसकी शर्मगाह खुल गई, इस वजह से मुझे शर्म आई कि मैं अपने चचेरे भाई की इस हाल में ज़िरह उतार लूं।[1]

हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० एक लम्बी हदीस बयान करते हैं जिसमें वह ग़ज़वा बनू फ़ज़ारा से वापसी का तज़्किरा करते हैं और फ़रमाते हैं कि वापस आकर अभी हम लोग तीन दिन ठहरे ही थे कि हम लोग ख़ैबर की ओर निकल पड़े और हज़रत आमिर रज़ि० भी इस ग़ज़वे में गए थे और वह यह शेर पढ़ते जाते थे।

وَاللّٰهِ لَوْلَا أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا

'अल्लाह की क़सम ! अगर आप न होते (यानी आपकी मेहरबानी न होती) तो हम हिदायत न पाते और न सदक़ा करते और न नमाज़ पढ़ते'

وَنَحْنُ مِنْ فَضْلِكَ مَا اسْتَغْنَيْنَا فَأَنْزِلْ سَكِيْنَةً عَلَيْنَا
وَثَبِّتِ الْأَقْدَامَ إِنْ لَاقَيْنَا

'हम तेरी मेहरबानी से बेनियाज़ नहीं हैं, तू हम पर सुकून और इत्मीनान को ज़रूर उतार और जब हम दुश्मन से मुक़ाबला करें, तो तू हमारे क़दम जमा।'

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 106

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने पूछा कि इन शेरों का पढ़ने वाला कौन है ?

लोगों ने अर्ज़ किया कि हज़रत आमिर।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (ऐ आमिर !) तेरा रब तुझे माफ़ करे। रिवायत करने वाले कहते हैं कि जब भी हुज़ूर सल्ल० ने किसी को यह दुआ दी है, वह ज़रूर शहीद हुआ है। हज़रत उमर रज़ि० ऊंट पर सवार थे। (यह दुआ सुनकर) उन्होंने कहा, आपने हमें हज़रत आमिर से और फ़ायदा उठाने दिया होता। (यानी आप यह दुआ हज़रत आमिर को न देते तो वह और ज़िंदा रहते। अब तो वह शहीद हो जाएंगे।) फिर हम लोग ख़ैबर पहुंचे, तो (यहूदियों का पहलवान) मरहब आनी तलवार फ़ख़्र से लहराता हुआ और यह शेर पढ़ता हुआ बाहर निकला—

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ اَنِّيْ مَرْحَبُ   شَاكِي السِّلَاحِ بَطَلٌ مُّجَرَّبُ

اِذَا الْحُرُوْبُ اَقْبَلَتْ تَلَهَّبُ

'सारे ख़ैबर को अच्छी तरह मालूम है कि मैं मरहब हूं और हथियारों से लैस हूं और तजुर्बेकार बहादुर हूं। (मेरी बहादुरी उस वक़्त ज़ाहिर होती है) जबकि शोले बरसाने वाली लड़ाइयां सामने आती हैं।'

हज़रत आमिर मरहब के मुक़ाबले के लिए ये शेर पढ़ते हुए मैदान में निकले—

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ اَنِّيْ عَامِرٌ   شَاكِي السِّلَاحِ بَطَلٌ مُّغَامِرٌ

'सारे ख़ैबर को अच्छी तरह मालूम है कि मैं आमिर हूं और हथियारों से लैस हूं और हलाक करने वाली जगहों में घुसने वाला बहादुर हूं।'

इन दोनों के आपस में तलवार से दो-दो हाथ हुए। मरहब की तलवार हज़रत आमिर की ढाल में घुस गई। हज़रत आमिर ने मरहब के निचले हिस्से पर हमला किया। हज़रत आमिर की तलवार लौट कर ख़ुद उनको ही लग गई जिससे शहरग कट गई और उसी से यह शहीद हो गए।

हज़रत सलमा फ़रमाते हैं कि मैं बाहर निकला तो हुज़ूर सल्ल० के कुछ साथियों को मैंने यह कहते हुए सुना कि हज़रत आमिर का पूरा

काम अकारत गया, क्योंकि उन्होंने आत्महत्या की है। मैं रोता हुआ हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ।

हुज़ूर सल्ल० ने मुझे फ़रमाया, तुम्हें क्या हुआ?

मैंने कहा, लोग कह रहे हैं कि आमिर का सारा अमल बेकार गया।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, यह बात किसने कही?

मैंने कहा, आपके कुछ साथियों ने।

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, उन लोगों ने ग़लत कहा। आमिर को तो दोगुना अज्र मिलेगा। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली को बुलाने के लिए आदमी भेजा और उनकी आंख दुख रही थी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आज मैं झंडा ऐसे आदमी को दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत करता है। मैं हज़रत अली का हाथ पकड़े हुए लेकर आया। आपने उनकी आंख पर मुबारक लुआब लगाया, वह तुरन्त ठीक हो गई। हुज़ूर सल्ल० ने उनको झंडा दिया।

मरहब फिर वही अपने शेर पढ़ते हुए बाहर निकला—

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ اَنِّیْ مَرْحَبٌ   شَاكِی السِّلَاحِ بَطَلٌ مُّجَرَّبٌ

اِذَا الْحُرُوْبُ اَقْبَلَتْ تَلَهَّبُ

उसके मुक़ाबले के लिए हज़रत अली यह शेर (पद) पढ़ते हुए निकले—

اَنَا الَّذِیْ سَمَّتْنِیْ اُمِّیْ حَيْدَرَهْ   كَلَيْثِ غَابَاتٍ كَرِيْهِ الْمَنْظَرَهْ

اُوْفِيْهِمْ بِالصَّاعِ كَيْلَ السَّنْدَرَهْ

'मैं वह आदमी हूं कि जिसकी मां ने उसका नाम हैदर यानी शेर रखा। मैं जंगल के हौलनाक मंज़र वाले शेर की तरह हूं, मैं दुश्मनों को पूरा-पूरा नाप कर दूंगा, जैसे कि खुले पैमाने में पूरा-पूरा दिया जाता है। (यानी मैं दुश्मन में बड़े पैमाने पर ख़ूरेज़ी करूंगा)'

चुनांचे हज़रत अली ने तलवार का ऐसा वार किया कि मरहब का सर फाड़ कर उसे क़त्ल कर दिया और इस तरह ख़ैबर जीत लिया गया। इस रिवायत में इसी तरह आया है कि मलऊन मरहब यहूदी को

हज़रत अली ने ही क़त्ल किया है और ऐसे ही इमाम अहमद ने हज़रत अली रज़ि० से रिवायत नक़ल की है कि जब मैंने मरहब को क़त्ल किया तो मैं उसका सिर लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ लेकिन मूसा बिन उक़्बा ने इमाम ज़ोहरी से यह रिवायत नक़ल की है कि मरहब को क़त्ल करने वाले हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० हैं और इसी तरह मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने और वाक़दी ने हज़रत जाबिर रज़ि० वग़ैरह लोगों से नक़ल किया है।[1]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग हज़रत अली रज़ि० के साथ ख़ैबर के लिए रवाना हुए। हुज़ूर सल्ल० ने उनको अपना झंडा देकर भेजा था। जब हज़रत अली रज़ि० क़िला के क़रीब पहुंचे, तो क़िले वाले लड़ने के लिए क़िले से निकलकर बाहर आ गए।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने उनसे लड़ाई शुरू कर दी। इन यहूदियों में से एक आदमी ने हज़रत अली पर तलवार का ज़ोरदार हमला किया, जिससे हज़रत अली रज़ि० के हाथ से ढाल नीचे गिर गई। हज़रत अली रज़ि० ने तुरन्त क़िले का दरवाज़ा उखाड़ कर उसे अपनी ढाल बना लिया। और दरवाज़े को हाथ में पकड़कर हज़रत अली लड़ते रहे, यहां तक कि अल्लाह ने उनको जीत दिला दी, फिर उन्होंने इस दरवाज़े को ज़मीन पर डाल दिया। फिर मैंने सात और आदमियों को लेकर कोशिश की कि इस दरवाज़े को पलट दें, लेकिन हम आठ आदमी उसे पलट न सके।

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ि० ने ग़ज़वा ख़ैबर के दिन (क़िले का) दरवाज़ा उठा लिया। मुसलमान उसके ऊपर चढ़कर क़िले के अन्दर चले गए और इस तरह उसको जीत लिया। बाद में लोगों ने तजुर्बा किया तो चालीस आदमी उसे उठा न सके।[2]

हज़रत जाबिर रज़ि० की एक रिवायत में यह है कि सत्तर आदमियों

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 187
2. बैहक़ी, हाकिम

ने अपना पूरा ज़ोर लगाया, तब दरवाज़े को वापस उसकी जगह लगा सके।[1]

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ि० ने ग़ज़वा ख़ैबर के दिन (क़िले का) दरवाज़ा उठा लिया था। उसी पर चढ़कर मुसलमानों ने ख़ैबर क़िले को जीत लिया था। बाद में तजुर्बा किया गया तो चालीस आदमी ही उसे उठा सके।[2]

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० की बहादुरी

हज़रत तलहा रज़ि० फ़रमाते हैं कि उहुद की लड़ाई के दिन मैं ये बहादुरी पर उभारने वाले शेर (पद) पढ़ रहा था—

نَحْنُ حُمَاةُ غَالِبٍ وَّ مَالِكِ   نَذُبُّ عَنْ رَسُوْلِنَا الْمُبَارَكِ

'हम क़बीला ग़ालिब और क़बीला मालिक की हिफ़ाज़त करने वाले हैं और हम अपने मुबारक रसूल की तरफ़ से हिफ़ाज़त करते रहे हैं।'

نَضْرِبُ عَنْهُ الْقَوْمَ فِي الْمَعَارِكِ   ضَرْبَ صِفَاحِ الْكُوْمِ فِي الْمَبَارِكِ

'और लड़ाई के मैदान में हम दुश्मनों को तलवारें मार-मारकर हुज़ूर सल्ल० से पीछे हटा रहे हैं और हम ऐसे मार रहे हैं जैसे ऊंचे कोहान वाली मोटी ऊंटनियों को बैठने की जगह में किनारों पर मारा जाता है। (यानी जब उन्हें ज़िब्ह करके गोश्त बनाया जाता है।)

हुज़ूर सल्ल० ने उहुद की लड़ाई से वापस होते ही हज़रत हस्सान से फ़रमाया कि तुम तलहा की तारीफ़ में कुछ शेर (पद) कहो। चुनांचे हज़रत हस्सान ने ये शेर (पद) कहे—

وَطَلْحَةُ يَوْمَ الشِّعْبِ اٰسٰى مُحَمَّدًا   عَلٰى سَاعَةٍ ضَاقَتْ عَلَيْهِ وَشَقَّتِ

'और घाटी के दिन तलहा ने तंगी और मुश्किल की घड़ी में हज़रत मुहम्मद सल्ल० की पूरी तरह ग़मख़्वारी की और उन पर जां-निसारी की।'

يَقِيْهِ بِكَفَّيْهِ الرِّمَاحَ وَاَسْلَمَتْ   اَشَاجِعُهُ تَحْتَ السُّيُوْفِ فَشَلَّتِ

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 189
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 44

'अपने दोनों हाथों के ज़रिए वह हुज़ूर सल्ल० को नेज़ों से बचाते रहे और (हुज़ूर सल्ल० को बचाने के लिए) उन्होंने अपने हाथों के पूरे तलवों को नीचे कर दिए, जिससे वह पूरे शल हो गए।'

وَكَانَ اَمَامَ النَّاسِ اِلَّا مُحَمَّدًا   اَقَامَ رَحَى الْاِسْلَامِ حَتّٰى اسْتَقَلَّتِ

'हज़रत मुहम्मद सल्ल० के अलावा बाक़ी तमाम लोगों से आगे थे और उन्होंने इस्लाम की चक्की को ऐसे खड़ा किया कि वह मुस्तक़िल चलने लगी।'

और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने (हज़रत तलहा की तारीफ़ में) ये शेर (पद) कहे—

حَمٰى نَبِيَّ الْهُدٰى وَالْخَيْلُ تَتْبَعُهٗ   حَتّٰى اِذَا مَا لَقُوْا حَامٰى عَنِ الدِّيْنِ

'तलहा ने हिदायत वाले नबी की हिफ़ाज़त की, हालांकि सवार आपका पीछा कर रहे थे, यहां तक कि जब वे सवार क़रीब आ जाते, तो ये दीन की ख़ूब हिफ़ाज़त करते।'

صَبْرًا عَلَى الطَّعْنِ اِذْ وَلَّتْ حُمَاتُهُمْ   وَالنَّاسُ مِنْ بَيْنِ مَهْدِيٍّ وَّمَفْتُوْنِ

'जब लोगों की हिफ़ाज़त करने वाले पीठ फेरकर भाग रहे थे, उस वक़्त उन्होंने नेज़ों पर सब्र किया और उस दिन लोग दो तरह के थे, हिदायत पाए हुए मुसलमान और फ़िले में पड़े काफ़िर।'

يَا طَلْحَةَ بْنَ عُبَيْدِ اللهِ قَدْ وَجَبَتْ   لَكَ الْجِنَانُ وَزُوِّجْتَ الْمَهَا الْعِيْنَ

ऐ तलहा बिन उबैदुल्लाह! तुम्हारे लिए जन्नत वाजिब हो गई और ख़ूबसूरत और हिरन जैसी आंखें रखने वाली हूरों से तुम्हारी शादी हो गई, और (उनकी तारीफ़ में) हज़रत उमर ने ये शेर कहा—

حَمٰى نَبِيَّ الْهُدٰى بِالسَّيْفِ مُنْصَلِتًا   لَمَّا تَوَلّٰى جَمِيْعُ النَّاسِ وَانْكَشَفُوْا

'जब तमाम लोगों ने पीठ फेर ली और हार मान गए, उस वक़्त नंगी तलवार से हिदायत वाले नबी की हिफ़ाज़त की।'

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उमर! तुमने सच कहा।[1] हज़रत तलहा के लड़ाई लड़ने की घटनाएं पीछे भी आ चुकी हैं।

1. कंज़, भाग 5, पृ० 68, लिसान भाग 3, पृ० 77

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० की बहादुरी

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह की ख़ातिर सबसे पहले तलवार सौंतने वाले हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० हैं। एक दिन वह दोपहर को आराम कर रहे थे कि अचानक उन्होंने यह आवाज़ सुनी कि अल्लाह के रसूल सल्ल० को क़त्ल कर दिया गया है। (यह सुनते ही तुरन्त) सुती हुई नंगी तलवार लेकर बाहर निकले। यह और हुज़ूर सल्ल० दोनों एक दूसरे को बिल्कुल आमने-सामने आकर मिले।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, ऐ ज़ुबैर ! तुम्हें क्या हो गया ?

उन्होंने अर्ज़ किया, मैंने सुना कि आप शहीद कर दिए गए हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, फिर क्या करने का इरादा था ?

उन्होंने अर्ज़ किया, मेरा यह इरादा था कि मैं (आंख बन्द करके) मक्का वालों पर टूट पड़ूं। हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए दुआ-ए-ख़ैर फ़रमाई। उन्हीं के बारे में असदी शायर ने ये शेर (पद) कहे हैं—

هٰذَاكَ اَوَّلُ سَيْفٍ سُلَّ فِىْ غَضَبٍ　　لِلّٰهِ سَيْفُ الزُّبَيْرِ الْمُرْتَضٰى اَنَفًا

'हज़रत ज़ुबैर मुर्तज़ा सरदार की तलवार ही वह तलवार है जो अल्लाह की ख़ातिर गुस्सा करने में सबसे पहले सौंती गई है।'

حَمِيَّةٌ سَبَقَتْ مِنْ فَضْلِ نَجْدَتِهٖ　　قَدْ يَحْبِسُ النَّجَدَاتِ الْمَحْبِسُ الْاَرَقَا

'यह दीनी ग़ैरत है जो उनके ज़्यादा बहादुर होने की वजह से ज़ाहिर हुई है और कभी ज़्यादा सुनने वाला कई क़िस्म की बहादुरियों को जमा कर लिया करता है।'[1]

हज़रत उर्वः रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० ने मुसलमान होने के बाद यह शैतानी आवाज़ सुनी कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। उस वक़्त हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की उम्र बारह साल थी।

---

1. इब्ने असाकिर

यह सुनते ही उन्होंने अपनी तलवार सौंत ली और (हुज़ूर सल्ल० की खोज में) गलियों में भागने लगे। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त मक्का के ऊपरी हिस्से में थे। यह वहां हाथ में तलवार लिए हुए हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वहां पहुंच गए।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, तुम्हें क्या हुआ ?

उन्होंने कहा, मैंने यह बता सुनी कि आपको गिरफ़्तार कर लिया गया है।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, तुम क्या करने लगे थे ?

उन्होंने कहा कि आपको गिरफ़्तार करने वालों को अपनी इस तलवार से मारने लगा था। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने आपके लिए और आपकी तलवार के लिए दुआ फ़रमाई और उनसे फ़रमाया कि वापस लौट जाओ। यह सबसे पहली तलवार है जो अल्लाह के रास्ते में सौंती गई थी।[1]

इब्ने इस्हाक़ से रिवायत है कि उहुद की लड़ाई के दिन तलहा बिन अबी तलहा अब्दरी मुश्रिकों का झंडा उठाए हुए था। उसने मुसलमानों को अपने मुक़ाबले पर मैदान में निकलने की दावत दी। चुनांचे लोग एक बार तो इसके डर की वजह से रुक गए। (उसके मुक़ाबले के लिए जाने पर किसी ने हिम्मत न की।)

फिर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० उसके मुक़ाबले के लिए निकले और छलांग लगाकर उसके ऊंट पर उसके साथ जा बैठे (और ऊंट पर ही लड़ाई शुरू हो गई) हज़रत ज़ुबैर ने तलहा को ऊपर से नीचे ज़मीन पर फेंककर उसे अपनी तलवार से ज़िब्ह कर दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने उनकी तारीफ़ फ़रमाई और फ़रमाया कि हर नबी का कोई (जांनिसार) हवारी हुआ करता है, मेरे हवारी ज़ुबैर हैं और फ़रमाया, मैंने देखा था कि लोग उसके मुक़ाबले में जाने से रुक गए थे, इस वजह से अगर यह ज़ुबैर उसके मुक़ाबले में न जाते, तो मैं ख़ुद जाता।[2]

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 89, कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 69, इसाबा, भाग 1, पृ० 545, दलाइल, पृ० 26
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 20

इब्ने इस्हाक़ रिवायत करते हैं कि नौफ़ल बिन अब्दुल्लाह बिन मुग़ीरह मख़्ज़ूमी ने ग़ज़्वा ख़ंदक़ के दिन दुश्मन की सफ़ से बाहर निकलकर मुसलमानों को अपने मुक़ाबले के लिए निकलने की दावत दी। चुनांचे उसके मुक़ाबले के लिए हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० निकले और उस पर तलवार का ऐसा वार किया कि उसके दो टुकड़े कर दिए। इसकी वजह से उनकी तलवार में दनदाने पड़ गए और वह वापस आते हुए ये शेर पढ़ रहे थे—

إِنِّي امْرُؤٌ أَحْمِي وَأَحْتَمِي عَنِ النَّبِيِّ الْمُصْطَفَى الْأُمِّيِّ

'मैं ऐसा आदमी हूं कि (दुश्मन से) अपनी भी हिफ़ाज़त करता हूं और नबी सल्ल० की भी हिफ़ाज़त करता हूं।'[1]

हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक मुश्रिक हथियार लगाए हुए आया और एक ऊंची जगह चढ़कर कहने लगा कि मेरे मुक़ाबले के लिए कौन आएगा?

हुज़ूर सल्ल० ने लोगों में से एक आदमी से कहा, क्या तुम इसके मुक़ाबले के लिए जाओगे?

उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! अगर आपकी मंशा हो, तो मैं जाने के लिए तैयार हूं। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० (हुज़ूर सल्ल० के चेहरे की तरफ़) झांक कर देखने लगे।

हुज़ूर सल्ल० ने उनकी ओर देखा और उनसे फ़रमाया, (मेरी फूफी) सफ़िया के बेटे! तुम (मुक़ाबले के लिए) खड़े हो जाओ। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० उसकी ओर चल पड़े और जाकर उसके बराबर खड़े हो गए। फिर दोनों एक दूसरे पर तलवार के वार करने लगे, फिर दोनों आपस में गुत्थम गुत्था हो गए, फिर दोनों नीचे को लुढ़कने लगे। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो भी गढ़े में पहले गिरेगा, वही मारा जाएगा।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने और मुसलमानों ने (हज़रत ज़ुबैर के लिए) दुआ की। चुनांचे वह काफ़िर (गढ़े में) पहले गिरा। फिर हज़रत ज़ुबैर

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 107

उसके सीने पर जा गिरे और उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि ग़ज़वा ख़ंदक़ के दिन मुझे औरतों और बच्चों के साथ क़िला में रखा गया और मेरे साथ उमर बिन अबी सलमा भी थे (ये दोनों बच्चे थे) वे मेरे सामने झुककर खड़े हो जाते और मैं उनकी कमर पर चढ़कर (क़िले से बाहर लड़ाई का मंज़र) देखने लग जाता।

चुनांचे मैंने अपने बाप को देखा कि वे कभी यहां हमला करते और कभी वहां। जो चीज़ भी उनके सामने आती, वे लपककर उसकी तरफ़ जाते। शाम को जब वह हमारे पास क़िले में आए, तो मैंने कहा, ऐ अब्बा जान! आज आप जो कुछ करते रहे हैं, मैं उसे देखता रहा।

उन्होंने कहा, ऐ मेरे बेटे! क्या तुमने मुझे देखा?

मैंने कहा, जी हां।

उन्होंने कहा, मेरे मां-बाप तुम पर क़ुरबान हों।[2]

हज़रत उर्वः रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के सहाबा ने ग़ज़वा यरमूक के दिन हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से कहा, क्या तुम (काफ़िरों पर) हमला नहीं करते हो, ताकि हम भी तुम्हारे साथ हमला करें।

हज़रत ज़ुबैर ने कहा, अगर मैंने हमला किया तो तुम अपनी बात पूरी नहीं कर सकोगे और मेरा साथ नहीं दे सकोगे।

उन्होंने कहा, हम ऐसा नहीं करेंगे (बल्कि आपका साथ देंगे) चुनांचे हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने काफ़िरों पर इस ज़ोर से हमला किया कि उनकी सफ़ों को चीरते हुए दूसरी ओर निकल गए और सहाबा में से कोई भी उनके साथ नहीं था। फिर वह इसी तरह दुश्मन की सफ़ों को चीरते हुए वापस आए तो काफ़िरों ने उनके घोड़े की लगाम पकड़कर उनके कंधे पर तलवार से दो वार ऐसे किए जो उनको बद्र की लड़ाई वाले घाव के दाएं-बाएं लगे।

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 107
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 107

हज़रत उर्वः रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं छोटा था और उन घावों के निशानों में उंगलियां देकर खेला करता था और (यर्मूक लड़ाई के) उस दिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० भी उनके साथ थे और उनकी उम्र उस वक़्त दस साल थी और हज़रत ज़ुबैर ने उनको एक घोड़े पर सवार करके एक आदमी के सुपुर्द कर दिया था।[1]

बिदाया में इस जैसी रिवायत है, जिसमें यह है कि सहाबा किराम रज़ि० दोबारा वही दरख़्वास्त लेकर हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के पास आए तो उन्होंने वही कारनामा कर दिखाया जो पहले कर दिखाया था।[2]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० की बहादुरी

हज़रत ज़ोहरी फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने हिजाज़ के इलाक़ा राबिग़ की ओर एक जमाअत को भेजा, जिसमें हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० थे। मुश्रिक मुसलमानों पर टूट पड़े।

उस दिन हज़रत साद रज़ि० सबसे पहले मुसलमान हैं, जिन्होंने अल्लाह के रास्ते में तीर चलाया और यह इस्लाम की सबसे पहली लड़ाई थी और हज़रत साद ने अपने तीर चलाने के बारे में ये शेर (पद) कहे—

أَلَا هَلْ أَتَى رَسُوْلَ اللّٰهِ أَنِّيْ حَمَيْتُ صَحَابَتِيْ بِصُدُوْرِ نَبْلِيْ

'ज़रा ग़ौर से सुनो! क्या हुज़ूर सल्ल० को यह बात पहुंच गई है कि मैंने अपने तीरों की नोंक से अपने साथियों की हिफ़ाज़त की है?'

أَذُوْدُ بِهَا عَدُوَّهُمْ ذِيَادًا بِكُلِّ حُزُوْنَةٍ وَّبِكُلِّ سَهْلٍ

'हर कड़ी और हर नर्म ज़मीन में मैंने मुसलमानों के दुश्मन को तीरों के ज़रिए ख़ूब अच्छी तरह भगाया है।'

فَمَا يُعْتَدُّ رَامٍ فِيْ عَدُوٍّ بِسَهْمٍ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَبْلِيْ

'ऐ अल्लाह के रसूल! कोई भी मुसलमान मुझसे पहले दुश्मन पर

---

1. बुख़ारी,
2. बिदाया, भाग, पृ० 11

तीर चलाने वाला नहीं माना जा सकता', (क्योंकि मैंने सबसे पहले तीर चलाया है।)[1]

हज़रत इब्ने शहाब रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत साद रज़ि० ने उहुद की लड़ाई के दिन एक तीर से तीन काफ़िरों को क़त्ल किया और उसकी शक्ल यह हुई कि दुश्मन ने उनकी ओर तीर फेंका। उन्होंने वह तीर काफ़िरों पर चलाया और एक को क़त्ल कर दिया। काफ़िरों ने वह तीर फिर उन पर चलाया, उन्होंने उस तीर को लेकर काफ़िरों पर दोबारा चला दिया और एक और काफ़िर को क़त्ल कर दिया। काफ़िरों ने वह तीर उन पर तीसरी बार चलाया, उन्होंने फिर वह तीर लेकर उन काफ़िरों पर चलाया और तीसरे काफ़िर को क़त्ल कर दिया।

हज़रत साद रज़ि० के इस कारनामे से मुसलमान बहुत ख़ुश हुए और बड़े हैरान हुए। हज़रत साद ने बताया कि यह तीर मुझे हुज़ूर सल्ल० ने दिया था। (काफ़िरों की तरफ़ से आया हुआ यह तीर हुज़ूर सल्ल० ने उनको पकड़ाया होगा)।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि (उस दिन) हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत साद से फ़रमाया था कि मेरे मां-बाप तुम पर क़ुरबान हों।[2]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई के दिन हज़रत साद रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के साथ कभी सवार होकर लड़ते और कभी पैदल चलकर या यह मतलब है कि वह थे तो पैदल, लेकिन दौड़ते सवार की तरह थे।[3]

हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० की बहादुरी

हज़रत हारिस तीमी रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई के दिन हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० ने शुतुरमुर्ग़ के पर की निशानी लगा रखी थी। एक मुश्रिक ने पूछा कि यह शुतुरमुर्ग़ के पर

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 78
2. कंज़, भाग 5, पृ० 75
3. हैसमी, भाग 6, पृ० 82

की निशानी वाला आदमी कौन है ?

लोगों ने उसे बताया कि यह हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब हैं, तो उस मुश्रिक ने कहा, यही तो वह आदमी है, जिन्होंने हमारे ख़िलाफ़ बड़े-बड़े कारनामे किए हैं ।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि उमैया बिन ख़ल्फ़ ने मुझसे कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे ! बद्र की लड़ाई के दिन जिस आदमी ने अपने सीने पर शुतुरमुर्ग़ के पर का निशान लगा रखा था, वह कौन था ?

मैंने कहा, वह अल्लाह के रसूल सल्ल० के चचा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० थे ।

उमैया ने कहा, उन्होंने ही तो हमारे ख़िलाफ़ बड़े-बड़े कारनामे कर रखे हैं ।[2]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब उहुद की लड़ाई के दिन लोग लड़ाई से वापस आ गए तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत हमज़ा रज़ि० को उन लोगों में न पाया, तो एक आदमी ने कहा कि मैंने उनको इस पेड़ के पास देखा था । वह यों कह रहे थे कि मैं अल्लाह का शेर हूं और उसके रसूल का शेर हूं । ऐ अल्लाह ! यह अबू सुफ़ियान और उसके साथी जो कुछ फ़िल्ने लेकर आए हैं, मैं तेरे सामने उन सबसे बरी होने का इज़्हार करता हूं और मुसलमानों ने जो हार खाई है, मैं उससे भी बरी होना ज़ाहिर करता हूं ।

हुज़ूर सल्ल० उस ओर तशरीफ़ ले गए । जब (शहादत की हालत में) हुज़ूर सल्ल० ने उनका माथा देखा, तो आप रो पड़े । जब आपने देखा कि उनके कान-नाक वग़ैरह काट दिए गए हैं, तो आप सिसकियां लेकर रोने लगे । फिर आपने फ़रमाया, क्या कोई कफ़न है ?

एक अंसारी ने खड़े होकर एक कपड़ा उन पर डाल दिया । हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि

1. हैसमी, भाग, पृ० 81
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 81

क़ियामत के दिन अल्लाह के नज़दीक तमाम शहीदों के सरदार हज़रत हमज़ा रज़ि० होंगे।[1]

हज़रत जाफ़र बिन अम्र बिन उमैया ज़मरी रह० फ़रमाते हैं कि मैं और हज़रत उबैदुल्लाह बिन अदी बिन ख़यार हज़रत मुआविया रज़ि० की ख़िलाफ़त के ज़माने में बाहर निकले, फिर आगे बाक़ी हदीस ज़िक्र की।

उसमें यह भी है कि हम लोग हज़रत वह्शी रज़ि० के पास जा बैठे और हमने उनसे कहा कि हम आपके पास इसलिए आए हैं ताकि आप हमें बताएं कि आपने हज़रत हमज़ा रज़ि० को कैसे शहीद किया था?

हज़रत वह्शी ने फ़रमाया, मैं तुम्हें यह क़िस्सा उसी तरह सुना दूंगा, जैसा कि मैंने हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर हुज़ूर सल्ल० को सुनाया था।

मैं हज़रत जुबैर बिन मुतइम का ग़ुलाम था। उसका चचा तुऐमा बिन अदी बद्र की लड़ाई में मारा गया था। जब क़ुरैश उहुद की लड़ाई के लिए चले तो जुबैर ने मुझसे कहा, अगर तुम मेरे चचा के बदले में मुहम्मद सल्ल० के चचा हज़रत हमज़ा (रज़ि०) को क़त्ल कर दोगे, तो तुम आज़ाद हो।

मैं एक हब्शी आदमी था और हब्शियों की तरह नेज़ा फेंका करता था और मेरा निशाना बहुत कम ख़ता खाता था।

मैं भी काफ़िरों के साथ उस सफ़र में गया। जब दोनों फ़ौजों में मुठभेड़ हुई तो मैं हज़रत हमज़ा को देखने के लिए निकला और मैं बड़े ध्यान से उन्हें देखता रहा, यानी खोजता रहा। आख़िरकार मैंने उनको फ़ौज के किनारे पर देख लिया। (उनके जिस्म पर गर्द व ग़ुबार ख़ूब पड़ा हुआ था, जिसकी वजह से) वह ख़ाकी रंग के ऊंट की तरह नज़र आ रहे थे और वह लोगों को अपनी तलवार से इस ज़ोर से हलाक कर रहे थे कि उनके सामने कोई चीज़ नहीं ठहर सकती थी। अल्लाह की क़सम! मैं उनके लिए तैयार हो रहा था, उन्हें क़त्ल करना चाहता था और किसी पेड़ या बड़े पत्थर के पीछे छिपता फिर रहा था, ताकि वे मेरे क़रीब आ

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 199

जाएं कि इतने में सिबाअ बिन अब्दुल उज़्ज़ा मुझसे आगे होकर उनकी ओर बढ़ा।

जब हज़रत हमज़ा ने उसको देखा तो उससे कहा, ओ औरतों का ख़त्ना करने वाली औरत के बेटे! और यह कहकर उस पर तलवार का ऐसा वार किया कि एकदम सर तन से जुदा कर दिया, ऐसे नज़र आया कि बे-इरादा ही सर काट दिया। फिर मैंने अपने नेज़े को हिलाया और जब मुझे इत्मीनान हो गया (कि नेज़ा निशाने पर जाकर लगेगा) तो मैंने उनकी ओर नेज़ा फेंका जो उनकी नाफ़ के नीचे जाकर इस ज़ोर से लगा कि दोनों टांगों के दर्मियान में से पीछे निकल आया।

वह मेरी ओर उठने लगे, लेकिन उन पर बेहोशी छा गई। फिर मैंने उनको और नेज़े को उसी हाल पर छोड़ दिया, यहां तक कि उनका इंतिक़ाल हो गया। फिर मैं उनके क़रीब आया और अपना नेज़ा ले लिया और फिर अपनी फ़ौज में वापस आ गया और जाकर बैठ गया।

हज़रत हमज़ा को क़त्ल करने के अलावा मुझे और कोई काम नहीं था और मैंने उनको इसलिए क़त्ल किया था ताकि मैं आज़ाद हो जाऊं। चुनांचे जब मैं मक्का आया तो आज़ाद हो गया। फिर मैं वहीं ठहरा रहा, यहां तक कि जब हुज़ूर सल्ल० ने मक्का जीत लिया, तो मैं भाग कर तायफ़ चला गया और वहां जाकर ठहर गया।

फिर जब तायफ़ का वफ़्द मुसलमान होने के लिए हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया तो सारे रास्ते मुझ पर बन्द हो गए और मैंने कहा कि शाम चला जाऊं या यमन या किसी और जगह।

मैं अभी इसी सोच में था कि एक आदमी ने मुझसे कहा, तेरा भला हो। अल्लाह की क़सम! जो भी कलिमा शहादत पढ़कर हज़रत मुहम्मद सल्ल० के दीन में दाख़िल हो जाता है, हज़रत मुहम्मद सल्ल० उसे क़त्ल नहीं करते हैं।

जब उस आदमी ने मुझे यह बात बताई तो मैं (ताइफ़ से) चल पड़ा, यहां तक कि मैं मदीना हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच गया। (हुज़ूर सल्ल० को मेरे आने का पता न चला, बल्कि) जब मैं आपके सिरहाने

खड़ा होकर कलिमा शहादत पढ़ने लगा, तो आप एकदम चौंके।

जब आपने मुझे देखा, तो फ़रमाया, क्या तुम वहशी हो?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जी हां।

आपने फ़रमाया, बैठ जाओ और मुझे तफ़्सील से बताओ कि तुमने हज़रत हमज़ा रज़ि० को कैसे क़त्ल किया था? चुनांचे मैंने सारा वाक़िआ हुज़ूर सल्ल० को इसी तरह सुनाया, जिस तरह मैंने तुम दोनों से बयान किया।

जब मैं सारा वाक़िआ बयान कर चुका, तो आपने मुझसे फ़रमाया, तेरा भला हो, तुम अपना चेहरा मुझसे छिपा लो, मैं तुम्हें आगे कभी न देखूं। (यानी तुम सामने मत आया करो, इससे मेरे चचा के क़त्ल का ग़म ताज़ा हो जाता है।)

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० जहां हुआ करते थे, मैं वहां से हट जाया करता था, ताकि हुज़ूर सल्ल० की नज़र मुझ पर न पड़े और हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात तक मैं ऐसा ही करता रहा।

जब मुसलमान यमामा वाले मुसैलमा कज़्ज़ाब के मुक़ाबले के लिए चले, तो मैं भी उनके साथ गया और मैंने अपने जिस नेज़े से हज़रत हमज़ा रज़ि० को शहीद किया था, उस नेज़े को भी साथ ले लिया।

जब दोनों फ़ौजों में लड़ाई शुरू हुई तो मैंने देखा कि मुसैलमा खड़ा हुआ है और उसके हाथ में तलवार है और मैं उसको पहचानता नहीं था। मैं उसे मारने की तैयारी करने लगा और दूसरी तरफ़ से एक अंसारी आदमी भी उसे मारने की तैयारी करने लगा। हम दोनों उसी को क़त्ल करना चाहते थे।

चुनांचे मैंने अपने नेज़े को हरकत दी और जब मुझे पूरा इत्मीनान हो गया कि नेज़ा निशाने पर लगेगा, तो वह नेज़ा मैंने उसकी तरफ़ फेंका जो उसे जाकर लगा और अंसारी ने भी उस पर हमला किया और उस पर तलवार का भरपूर वार किया।

तुम्हारा रब ही ज़्यादा जानता है कि हम दोनों में से किसने उसे क़त्ल किया है? अगर मैंने उसे क़त्ल किया है, तो फिर मैंने एक तो वह

आदमी क़त्ल किया है, जो हुज़ूर सल्ल० के बाद तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा बेहतरीन था और एक वह आदमी क़त्ल किया है जो तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा बुरा है।[1]

इसी जैसी हदीस इमाम बुख़ारी ने हज़रत जाफ़र बिन अम्र से रिवायत की है और इसमें यह मज़्मून भी है कि जब दोनों फ़ौजें लड़ाई के लिए सफ़ बनाकर खड़ी हो गईं तो सिबाअ फ़ौज से बाहर निकला और ऊंची आवाज़ से कहा कि कोई मेरे मुक़ाबले पर आने के लिए तैयार है?

चुनांचे उसके मुक़ाबले के लिए हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० मुसलमानों की फ़ौज से बाहर निकले और उससे कहा कि ऐ सिबाअ! ऐ औरतों का ख़त्ना करने वाली औरत उम्मे अनमार के बेटे! क्या तुम अल्लाह और उसके रसूल से लड़ रहे हो? फिर हज़रत हमज़ा ने सिबाअ पर एक ज़ोरदार हमला करके उसे ऐसे मिटा दिया, जैसे गुज़रा हुआ दिन होता है।

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० की बहादुरी

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत हंज़ला बिन रबीअ रज़ि० को ग़ज़वा तायफ़ के दिन तायफ़ वालों के पास भेजा। चुनांचे हज़रत हंज़ला ने उन तायफ़ वालों से बात की। तायफ़ वाले उन्हें पकड़कर अपने क़िले में ले जाने लगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कौन है जो इन आदमियों से हज़रत हंज़ला को छुड़ाकर लाए? जो छुड़ाकर लाएगा, उसे हमारे इस ग़ज़वे जैसा पूरा अज्र मिलेगा।

इस पर सिर्फ़ हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० खड़े हुए और तायफ़ वाले हज़रत हंज़ला को लेकर क़िले में दाख़िल होने वाले ही थे कि हज़रत अब्बास उन तक पहुंच गए।

हज़रत अब्बास बड़े ताक़तवर आदमी थे। उन लोगों से छीनकर उन्होंने हज़रत हंज़ला को गोद में उठा लिया। उन लोगों ने क़िले से

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 18

हज़रत अब्बास पर पत्थरों की बारिश शुरू कर दी।

हुज़ूर सल्ल० हज़रत अब्बास के लिए (ख़ैरियत से वापस पहुंच आने की) दुआ करने लगे। आख़िर हज़रत अब्बास हज़रत हंज़ला को लेकर हुज़ूर सल्ल० तक पहुंच गए।[1]

हज़रत मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह और हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा रज़ि० की बहादुरी

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई के दिन मैं (लड़ने वालों की) सफ़ में खड़ा था। मैंने देखा कि मेरे दाएं और बाएं जानिब अंसार के दो कमउम्र लड़के खड़े हैं। मुझे ख़्याल हुआ कि मैं मज़बूत और ताक़तवर लोगों के दर्मियान होता तो अच्छा था (कि ज़रूरत के वक़्त एक दूसरे की मदद कर सकते, मेरे दोनों तरफ़ बच्चे हैं, ये मेरी क्या मदद कर सकेंगे?)

इतने में इन दोनों लड़कों में से एक ने मेरा हाथ पकड़कर कहा, चचा जान! तुम अबू जह्ल को भी जानते हो?

मैंने कहा, हां, पहचानता हूं। तुम्हारी क्या ग़रज़ है?

उसने कहा कि मुझे यह मालूम हुआ कि वह अल्लाह के रसूल सल्ल० की शान में गालियां बकता है। उस पाक ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर मैं उसे देख लूं, तो उस वक़्त तक उससे अलग न हूंगा जब तक कि वह न मर जाए या मैं न मर जाऊं।

मुझे उसके सवाल व जवाब पर बड़ा ताज्जुब हुआ। इतने में दूसरे ने भी हाथ पकड़कर यही सवाल किया और जो पहले ने कहा था, वही उसने भी कहा। इतने में मैदान में अबू जह्ल दौड़ता हुआ नज़र आया।

मैंने उन दोनों से कहा कि तुम्हारा मतलूब, जिसके बारे में तुम सवाल कर रहे थे, वह जा रहा है। दोनों यह सुनकर तलवारें हाथ में लिए हुए एकदम भागे चले गए और जाकर उस पर तलवार चलानी शुरू कर दी, यहां तक कि उसे क़त्ल कर दिया।

1. कंज़, भाग 5, पृ० 307

फिर वे दोनों हुज़ूर सल्ल० के पास वापस आए और हुज़ूर सल्ल० को क़िस्सा सुनाया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम दोनों में से उसे किसने क़त्ल किया है?

दोनों में से हर एक ने कहा, हमने उसे क़त्ल किया है।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या तुम दोनों ने अपनी तलवारें पोंछ ली हैं?

उन्होंने कहा, नहीं।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने उन दोनो की तलवारें देखीं और फ़रमाया कि तुम दोनों ने उसे क़त्ल किया है और अबू जह्ल के सामान का हज़रत मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह रज़ि० को देने का फ़ैसला फ़रमाया और दूसरे नवजवान हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा रज़ि० थे।[1]

बुख़ारी में है कि हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं बद्र की लड़ाई में सफ़ में खड़ा हुआ था, जब मैंने देखा कि मेरे दाएं और बाएं दो नवउम्र लड़के खड़े हुए हैं, तो मैं उनके यहां होने से मुतमइन न हुआ।

इतने में उन दोनों में से एक ने अपने साथी से छिपकर मुझसे कहा, ऐ चचा जान! मुझे अबू जह्ल दिखा दें (कि वह कहां है?)

मैंने कहा, ऐ मेरे भतीजे! तुम इसका क्या करोगे?

उसने कहा, मैंने अल्लाह से अह्द किया हुआ है कि अगर मैं उसको देख लूं तो मैं उसे क़त्ल कर दूंगा या ख़ुद क़त्ल हो जाऊंगा। दूसरे ने भी अपने साथी से छिपकर मुझसे वही बात कही।

मैं उन दोनों की बहादुरी वाली बातों से बड़ा मुतास्सिर हुआ और मेरी यह तमन्ना न रही कि मैं इन दोनों के बजाए दो और मज़बूत आदमियों के दर्मियान होता, फिर मैंने उन दोनों को इशारा करके बताया। फिर उन दोनों ने शिकरे की तरह अबू जह्ल पर हमला किया और उस पर तलवार के वार किए।

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 425, बैहक़ी, भाग 6, पृ० 205

ये दोनों अफ़रा के बेटे (मुआज़ और मुअव्वज़) थे। (ज़ाहिर में तो इन दोनों के साथ हज़रत मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह भी अबू जहल के क़त्ल में शरीक हुए हैं।)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि बनू सलिमा के हज़रत मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह रज़ि० ने फ़रमाया कि अबू जहल (बद्र की लड़ाई के दिन) पेड़ों के झुंड जैसी फ़ौज में था (उसके चारों तरफ़ काफ़िर ही काफ़िर थे। वह बिल्कुल महफ़ूज़ था) मैंने लोगों को सुना कि वे कह रहे थे कि अबुल हकम (यानी अबू जहल) तक कोई आदमी नहीं पहुंच सकता है?

जब मैंने यह बात सुनी तो उस तक पहुंचकर उसे क़त्ल करने को मैंने अपना मक़सद बना लिया और मैं अबू जहल के इरादे से चल पड़ा। जब वह मेरे निशाने पर आ गया तो मैंने उस पर हमला किया और उसे ऐसी तलवार मारी कि उसका पांव आधी पिंडुली से उड़ गया। अल्लाह की क़सम! वह पांव ऐसे उड़कर गया जैसे कूटते हुए पत्थर के नीचे से गुठली उड़ कर जाती है।

अबू जहल के बेटे इक्रिमा ने मेरे कंधे पर तलवार मारकर उसे काट दिया, लेकिन बाज़ू खाल में लटका हुआ रह गया। लड़ाई के ज़ोर से मुझे हाथ की यह तक्लीफ़ महसूस न हुई और सारा दिन मैं हाथ पीछे लटकाए हुए लड़ता रहा, लेकिन जब उसके लटके रहने से तक्लीफ़ होने लगी, तो मैंने उसको पांव के नीचे दबाकर ज़ोर से खींचा, जिससे वह खाल टूट गई, जिससे वह अटक रहा था और मैंने उसको फेंक दिया।[1]

हज़रत अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा अंसारी रज़ि० की बहादुरी

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने उहुद की लड़ाई के दिन एक तलवार लेकर फ़मराया कि यह तलवार कौन लेगा? कुछ लोग तलवार लेकर उसे देखने लगे।

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 287

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (देखने के लिए नहीं देना चाहता हूं, बल्कि) तलवार लेकर कौन उसका हक़ अदा करेगा? यह सुनकर लोग पीछे हट गए।

हज़रत अबू दुजाना सिमाक रज़ि० ने कहा कि मैं इसे लेकर इसका हक़ अदा करूंगा, चुनांचे (उन्होंने वह तलवार ली) और उससे मुश्रिकों का सर फाड़ने लगे।[1]

हज़रत जुबैर बिन अव्वाम रज़ि० फ़रमाते हैं कि उहुद की लड़ाई के दिन हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने लोगों के सामने एक तलवार पेश की और फ़रमाया, इस तलवार को लेकर कौन इसका हक़ अदा करेगा?

हज़रत अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा रज़ि० ने खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं इसे लेकर इसका हक़ अदा करूंगा। इसका हक़ क्या है?

हुज़ूर सल्ल० ने उनको वह तलवार दे दी। वह (तलवार लेकर) निकले तो मैं भी उनके पीछे हो लिया। चुनांचे वह जिस चीज़ के पास से गुज़रते, उसे फाड़ देते और उसे हलाक कर देते, यहां तक कि वह पहाड़ के दामन में कुछ (काफ़िर) औरतों के पास पहुंचे, उन औरतों के साथ हिन्द भी थी जो अपने मर्दों को लड़ाई पर उभारने के लिए ये शेर (पद) पढ़ रही थी—

نَحْنُ بَنَاتُ طَارِقٍ   نَمْشِي عَلَى النَّمَارِقِ

'हम तारिक़ की बेटियां हैं। हम गद्दों पर चलती हैं।'

وَالْمِسْكُ فِي الْمَفَارِقِ   إِنْ تُقْبِلُوا نُعَانِقِ

'और (हमारे सिरों की) मांगों में मुश्क की ख़ुशबू लगी हुई है। अगर तुम (लड़ाई के मैदान में) आगे बढ़ोगे तो हम तुम्हें गले लगाएंगी।'

أَوْ تُدْبِرُوا نُفَارِقِ   فِرَاقَ غَيْرِ وَامِقِ

'और अगर तुम (लड़ाई के मैदान से) पीठ फेरोगे, तो फिर हम तुम्हे ऐसे छोड़ जाएंगी जैसे मुहब्बत न करने वाला छोड़ जाता है कि फिर

1. बिदाया, भाग 4, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 10

वापस नहीं आता।'

हज़रत अबू दुजाना फ़रमाते हैं कि मैंने हिन्द पर हमला करना चाहा, तो उसने (अपनी मदद के लिए) मैदान की ओर ज़ोर से आवाज़ लगाई तो किसी ने उसका जवाब न दिया, तो मैं उसे छोड़कर पीछे हट गया।

हज़रत ज़ुबैर कहते हैं कि मैंने हज़रत अबू दुजाना से कहा, मैं आपके सारे काम देखता रहा हूं और मुझे आपके सारे काम पसन्द आए हैं, लेकिन मुझे यह पसन्द नहीं आया कि आपने उस औरत को क़त्ल नहीं किया।

हज़रत अबू दुजाना ने कहा, उस औरत ने (अपनी मदद के लिए) आवाज़ लगाई थी, लेकिन कोई उसकी मदद के लिए नहीं आया, तो मुझे यह अच्छा न लगा कि मैं हुज़ूर सल्ल० की तलवार से ऐसी औरत को क़त्ल करूं जिसका कोई मदद करने वाला न हो।'[1]

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने उहुद की लड़ाई के लिए एक तलवार पेश की और फ़रमाया कि इस तलवार को लेकर कौन इसका हक़ अदा करेगा?

मैंने खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं।

आपने मुझसे मुंह मोड़ लिया और फिर फ़रमाया, इस तलवार को लेकर कौन इसका हक़ अदा करेगा?

मैंने फिर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं।

आपने फिर मुझसे मुंह मोड़ लिया और फिर फ़रमाया, इस तलवार को लेकर कौन इसका हक़ अदा करेगा?

इस पर हज़रत अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा रज़ि० ने खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इसे लेकर इसका हक़ अदा करूंगा, लेकिन इसका हक़ क्या है?

आपने फ़रमाया, इसका हक़ यह है कि तुम इससे किसी मुसलमान को क़त्ल न करो और तुम इसे लेकर किसी काफ़िर से (पीठ फेरकर) न

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 109

भागो। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने वह तलवार उनको दे दी और हज़रत अबू दुजाना जब लड़ाई का इरादा कर लेते, तो (लालपट्टी निशानी के तौर पर बांध लेते।

हज़रत ज़ुबैर फ़रमाते हैं कि मैंने यह कहा कि मैं आज अबू दुजाना को ज़रूर देखूंगा कि वह क्या करते हैं।

चुनांचे (मैंने देखा कि) जो चीज़ भी उनके सामने आती, वह उसे फाड़ देते और रुसवा कर देते। आगे मज़्मून पिछली हदीस जैसा है।[1]

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब मैंने हुज़ूर सल्ल० से तलवार मांगी और आपने मुझे न दी और हज़रत अबू दुजाना को दे दी, तो मुझे इस पर बड़ा ग़ुस्सा आया और मैंने अपने दिल में कहा कि हुज़ूर सल्ल० की फूफी हज़रत सफ़िया रज़ि० का बेटा हूं और (हुज़ूर सल्ल० के क़बीला) क़ुरैश में से हूं और मैंने अबू दुजाना से पहले खड़े होकर तलवार मांगी थी, फिर आपने अबू दुजाना को वह तलवार दे दी और मुझे ऐसे ही छोड़ दिया है, अल्लाह की क़सम! मैं भी ज़रूर देखूंगा कि अबू दुजाना (तलवार) लेकर क्या करते हैं? चुनांचे मैं उनके पीछे हो लिया। उन्होंने अपनी लाल पट्टी निकालकर अपने सर पर बांध ली।

इस पर अंसार ने कहा कि अबू दुजाना ने मौत की पट्टी निकाली है और हज़रत अबू दुजाना जब भी लाल पट्टी बांधा करते, तो अंसार यों ही कहा करते थे। चुनांचे वह ये शेर (पद) पढ़ते हुए मैदान में निकले—

اَنَا الَّذِیْ عَاهَدَنِیْ خَلِیْلِیْ   وَنَحْنُ بِالسَّفْحِ لَدَی النَّخِیْلِ

'जब हम पहाड़ के दामन में खजूर के पेड़ों के पास थे, तो मुझ ही से मेरे ख़लील ने यह अह्द लिया था।'

اَنْ لَّا اَقُوْمَ الدَّهْرَ فِی الْکَیُّوْلِ   اَضْرِبْ بِسَیْفِ اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ

'कि मैं ज़िंदगी में कभी भी लड़ाई के मैदान की आख़िरी सफ़ में खड़ा नहीं हूंगा और अब मैं अल्लाह और रसूल की तलवार से (काफ़िरों

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 230

को) ख़ूब मारूंगा।'

जो काफ़िर उनको मिलता, वह तलवार से उसे क़त्ल कर देते। मुश्रिकों में एक आदमी था जिसका काम ही यह था कि वह (खोज करके) हमारे हर ज़ख़्मी को मार देता था। हज़रत अबू दुजाना और यह मुश्रिक एक दूसरे के क़रीब आने लगे। मैंने अल्लाह से दुआ की कि अल्लाह! दोनों की आपस में मुठभेड़ करा दे। चुनांचे दोनों का आमना-सामना हो गया और दोनों ने एक दूसरे पर तलवार के वार किए।

इस मुश्रिक ने हज़रत अबू दुजाना पर तलवार का वार किया, जिसे उन्होंने अपनी ढाल पर रोका और अपना बचाव कर लिया और उसकी तलवार ढाल में गड़ गई और निकल न सकी। फिर हज़रत दुजाना ने तलवार का वार करके उसे क़त्ल कर दिया।

फिर मैंने देखा कि हज़रत अबू दुजाना ने हिन्द बिन्त उत्बा के सर के ऊपर तलवार उठा रखी है, लेकिन फिर तलवार उससे हटा ली (और उसे क़त्ल न किया।)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि (मैंने हज़रत अबू दुजाना की बहादुरी के ये कारनामे देखे तो) मैंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ज़्यादा जानते हैं (कि कौन इस तलवार का ज़्यादा हक़दार था)[1]

मूसा बिन उक़्बा की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने जब उस तलवार को लोगों के सामने पेश किया, तो हज़रत उमर रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से वह तलवार मांगी। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे मुंह मोड़ लिया, फिर हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने वह तलवार मांगी। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे भी मुंह फेर लिया, तो इन दोनों ने उसे महसूस किया। हुज़ूर सल्ल० ने तीसरी बार उसी तलवार को पेश किया, तो हज़रत अबू दुजाना ने हुज़ूर सल्ल० से वह तलवार मांगी। हुज़ूर सल्ल० ने उनको वह तलवार दे दी। उन्होंने तलवार लेकर वाक़ई उसका हक़ अदा कर दिया।

हज़रत काब बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं भी मुसलमानों

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 16

के साथ इस लड़ाई में गया था। जब मैंने देखा कि मुश्रिकों ने मुसलमानों को क़त्ल करके उनके नाक-कान काट डाले हैं, तो मैं खड़ा हो गया और कुछ देर के बाद आगे बढ़ा तो मैंने एक मुश्रिक को हथियार लगाए हुए देखा कि वह मुसलमानों के पास से गुज़रते हुए कह रहा है, ऐ मुसलमानो! जैसे बकरियां (ज़िब्ह होने के लिए) इकट्ठी हो जाती है, तुम भी (क़त्ल होने के लिए) इकट्ठे हो जाओ।

इधर एक मुसलमान हथियार लगाए हुए इस काफ़िर का इन्तिज़ार कर रहा था। फिर मैं वहां से चला और इस मुसलमान के पीछे खड़ा हो गया और देखकर इस काफ़िर और इस मुसलमान का अन्दाज़ा लगाने लगा, तो यही नज़र आया कि काफ़िर के हथियार और उसकी लड़ाई के लिए तैयारी ज़्यादा है।

मैं दोनों को देखता रहा, यहां तक कि दोनों का आमना-सामना हो गया और मुसलमान ने इस काफ़िर के कंधे पर इस ज़ोर से तलवार मारी जो उसे चीरती हुई उसकी सरीन तब चली गई और वह काफ़िर दो टुकड़े हो गया। फिर मुसलमान ने अपने चेहरे से (नक़ाब) हटाकर कहा, ऐ काब! तुमने क्या देखा? मैं अबू दुजाना हूं।[1]

हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ि० की बहादुरी

हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० को हदिए में एक कमान मिली। आपने वह कमान उहुद के दिन मुझे दे दी। मैं उस कमान को लेकर हुज़ूर सल्ल० के सामने खड़े होकर ख़ूब तीर चलाता रहा, यहां तक कि उसका सिरा टूट गया। मैं बराबर हुज़ूर सल्ल० के चेहरे के सामने खड़ा रहा और मैं अपने चेहरे पर तीरों को लेता रहा। जब भी कोई तीर आपके चेहरे की तरफ़ मुड़ जाता, तो मैं अपना सर घुमाकर तीर के सामने ले आता और हुज़ूर सल्ल० के चेहरे को बचा लेता। (चूंकि मेरी कमान टूट चुकी थी, इसलिए) मैं तीर तो चला नहीं सकता था।

1. बिदाया, भाग ..., ... 17

फिर आखिर में मुझे एक तीर ऐसा लगा, जिससे मेरी आंख का डेला हाथ पर आ गिरा। मैं उसे हथेली पर रखे हुए आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। जब आपने आंख का डेला मेरी हथेली में देखा तो आपकी आंखों में आंसू आ गए और आपने यह दुआ दी, ऐ अल्लाह! क़तादा ने अपने चेहरे के ज़रिए आपके नबी के चेहरे को बचाया है, इसलिए तू उसकी इस आंख को ज़्यादा ख़ूबसूरत और ज़्यादा तेज़ बना दे। चुनांचे उनकी वह आंख दूसरी से ज़्यादा ख़ूबसूरत और ज़्यादा तेज़ नज़र वाली हो गई।[1]

दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत क़तादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं उहुद की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्ल० के सामने खड़े होकर अपने चेहरे से हुज़ूर सल्ल० के चेहरे की हिफ़ाज़त करता रहा और हज़रत अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा रज़ि० अपनी पीठ से हुज़ूर सल्ल० की मुबारक पीठ की हिफ़ाज़त करते रहे, यहां तक कि उनकी पीठ तीरों से भर गई और यह भी उहुद की लड़ाई के दिन हुआ था।[2]

हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० की बहादुरी

हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम हुदैबिया के समझौते के ज़माने में हुज़ूर सल्ल० के साथ मदीना आए। फिर मैं और हुज़ूर सल्ल० के ग़ुलाम हज़रत रिबाह रज़ि० दोनों हुज़ूर सल्ल० के ऊंटों को लेकर बाहर निकले और मैं हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० का घोड़ा लेकर निकला, ताकि उसको भी उन ऊंटों के साथ चरा लाऊं और पानी पिला लाऊं।

अभी सुबह हो चुकी थी, लेकिन कुछ अंधेरा बाक़ी था कि अब्दुर्रहमान बिन उऐना ने हुज़ूर सल्ल० के ऊंटों को (काफ़िरों के मज्मे के साथ) लूट लिया और ऊंटों के चरवाहे को क़त्ल कर दिया और अपने घुड़सवार साथियों समेत उन ऊंटों को हांक कर ले गया।

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 113
2. हैसमी वही।

मैंने कहा, ऐ रिबाह ! तुम इस घोड़े पर बैठ जाओ और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह को यह घोड़ा जाकर दे दो और हुज़ूर सल्ल० को बता दो कि उनके ऊंटों को लूट कर ले गए हैं।

मैंने एक पहाड़ी पर चढ़कर मदीने की ओर मुंह किया और तीन बार ज़ोर से यह आवाज़ लगाई, या सबाहाह (ऐ लोगो ! दुश्मन ने लूट लिया है, मदद के लिए आओ) फिर मैं अपनी तलवार और तीर लेकर इन काफ़िरों का पीछा करने लगा और तीर चलाकर उनके सवारी के जानवरों को मारने लगा और मुझे उन पर तीर चलाने का मौक़ा उस वक़्त मिलता जब घने पेड़ आ जाते। जब कोई सवार मेरी ओर वापस होता तो मैं किसी पेड़ की आड़ में बैठ जाता और तीर चलाता।

चुनांचे जो सवार भी मेरी ओर वापस आया, मैंने उसके जानवर को ज़रूर घायल किया। मैं उनको तीर मारता जाता था और यह शेर पढ़ता जाता था—

اَنَا ابْنُ الْاَكْوَعِ وَالْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّعِ

'मैं अकवअ का बेटा (सलमा) हूं। आज का दिन कमीनों (की हलाकत) का दिन है।'

फिर मैं उनमें से किसी एक के क़रीब हो जाता और वह सवारी पर होता, तो मैं उसे तीर मारता। वह तीर उस आदमी को लग जाता और मैं उसके कंधे को तीर से छेद देता और मैं उससे कहता—

خُذْهَا وَاَنَا ابْنُ الْاَكْوَعِ وَالْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّعِ

'इस तीर को ले। मैं अकवअ का बेटा हूं। आज का दिन कमीनों और कंजूसों (की हलाकत) का दिन है।'

फिर जब पेड़ों की ओट में होता, तो मैं तीरों से उनको भून डालता। जब कहीं तंग घाटियां आतीं, तो मैं पहाड़ पर चढ़कर उन पर पत्थर बरसाता। मेरा उनके साथ यही रवैया रहा। मैं उनका पीछा करता रहा और बहादुरी के शेर पढ़ता रहा, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० के तमाम ऊंट मैंने उनसे छुड़ा लिए और वे ऊंट मेरे पीछे रह गए, फिर मैं उन पर तीर चलाता रहा, यहां तक कि वह तीस से ज़्यादा बरछे और तीस से

ज़्यादा चादरें छोड़ गए।

इस तरह से अपना बोझ हलका करना चाहते थे, मुझे उनमें से जो चीज़ मिलती, तो मैं निशानी के तौर पर उस पर कोई न कोई पत्थर रख लेता और हुज़ूर सल्ल० के रास्ते पर उनको जमा करता जाता, यहां तक कि जब धूप फैल गई या चाश्त का वक़्त हो गया तो काफ़िर उस वक़्त तंग घाटी में थे कि उऐना बिन बद्र फ़ज़ारी उन काफ़िरों की मदद के लिए आदमी लेकर आया। फिर मैं एक पहाड़ पर चढ़ गया और उनसे ऊंचा हो गया तो उऐना ने कहा, यह आदमी कौन दिखाई दे रहा है।

उन्होंने, कहा, हमें सारी तक्लीफ़ इस (नवउम्र बच्चे) के हाथों उठानी पड़ी है। उसने सुबह से अब तक हमारा पीछा नहीं छोड़ा है और उसने हमारी हर चीज़ ले ली है और सारी चीज़ें अपने पीछे रख आया है।

उऐना ने कहा कि अगर उसका ख़्याल यह न होता कि उसके पीछे कुमक (आ रही) है तो तुम्हारा पीछा छोड़ जाता तो तुममें से कुछ आदमी खड़े होकर उसके पास चले जाएं। चुनांचे चार आदमी खड़े हुए और पहाड़ पर चढ़ने लगे।

जब वे इतने क़रीब आ गए कि मेरी आवाज़ उन तक पहुंच सकती थी, तो मैंने उनसे कहा, क्या तुम मुझे जानते हो?

उन्होंने कहा, तुम कौन हो?

मैंने कहा, मैं इब्ने अकवअ हूं और उस ज़ात की क़सम, जिसने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को इज़्ज़त फ़रमाई, तुममें से कोई भी मुझे भाग कर नहीं पकड़ सकता और मैं भागूं तो तुममें से कोई भी बच नहीं सकता है।

इनमें से एक आदमी ने कहा कि मेरा यही गुमान है। मैं अपनी जगह ऐसे ही बैठा रहा, यहां तक कि मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० के सवार पेड़ों के बीच में से चले आ रहे हैं और उनमें सबसे आगे हज़रत अख़रम असदी रज़ि० थे, उनके पीछे हुज़ूर सल्ल० के घुड़सवार हज़रत अबू क़तादा रज़ि० और उनके पीछे हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद किन्दी रज़ि० थे।

वे (चारों) मुश्रिक पीठे फेरकर भाग गए और मैंने पहाड़ से नीचे

उतरकर हज़रत अख़रम के घोड़े की लगाम पकड़ ली और मैंने उनसे कहा, इन लोगों से बचकर रहो। मुझे ख़तरा है कि ये तुम्हारे टुकड़े कर देंगे, इसलिए ज़रा इन्तिज़ार कर लो, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा आ जाएं।

हज़रत अख़रम ने कहा, ऐ सलमा! अगर तुम अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो और तुम्हें यक़ीन है कि जन्नत हक़ है और दोज़ख़ की आग हक़ है, तो मेरे और शहादत के दर्मियान रुकावट न बनो।

मैंने उनके घोड़े की लगाम छोड़ दी और वे अब्दुर्रहमान बिन उऐना पर हमलावर हुए। अब्दुर्रहमान ने मुड़कर हमला किया। दोनों ने एक दूसरे को नेज़े मारे, हज़रत अख़रम ने अब्दुर्रहमान के घोड़े की टांगें काट डालीं, तो अब्दुर्रहमान ने (घोड़े से गिरते हुए) हज़रत अख़रम को नेज़ा मारकर शहीद कर दिया और हज़रत अख़रम के घोड़े पर जा बैठा।

इतने में हज़रत अबू क़तादा अब्दुर्रहमान के पास पहुंच गए। दोनों ने एक दूसरे के साथ नेज़े के दो-दो हाथ किए।

अब्दुर्रहमान ने हज़रत अबू क़तादा के पांव काट डाले। हज़रत अबू क़तादा ने अब्दुर्रहमान को क़त्ल कर दिया और हज़रत अख़रम का घोड़ा उससे लेकर ख़ुद उस पर बैठ गए।

फिर मैं इन मुश्रिकों के पीछे दौड़ने लगा (और दौड़ते-दौड़ते इतना आगे निकल गया) कि हुज़ूर सल्ल० के साथियों रज़ि० के चलने से उड़ने वाली धूल मुझे नज़र नहीं आ रही थी और वे लोग सूरज डूबने से पहले एक घाटी में दाख़िल हुए जिसमें पानी था। इस पानी को ज़ूक़िरद कहा जाता था।

उन मुश्रिकों ने उस पानी में से पीना चाहा कि इतने में उन्होंने मुझे अपने पीछे दौड़ते हुए देख लिया और इसलिए वह उस पानी को छोड़कर ज़ीबेर की घाटी पर चढ़ गए और सूरज डूब गया।

मैं एक आदमी के क़रीब पहुंच गया और उसको मैंने तीर मारा और साथ ही यह वीर रस का शेर (पद) पढ़ा—

خُذْهَا وَأَنَا ابْنُ الْأَكْوَعِ وَالْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّعِ

'उस आदमी ने कहा, हाय, अकवअ की मां का सुबह सवेरे अपने बच्चे को गुम करना।'

मैंने कहा, हां और अपनी जान के दुश्मन! यह वही आदमी था, जिसे सुबह मैंने तीर मारा था और अब उसे ही दूसरा मारा था और दोनों तीर उसमें गड़ गए थे।

इसी बीच उन मुश्रिकों ने दो घोड़े पीछे छोड़ दिए। मैं उन दोनों को हांकता हुआ हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले आया। आप उस वक़्त ज़ीक़िरद पानी पर तशरीफ़ रखते थे, जहां से मैंने उन मुश्रिकों को भगाया था।

हुज़ूर सल्ल० के साथ पांच सौ सहाबा थे और जो ऊंट मैं छोड़ गया था, हज़रत बिलाल रज़ि० उनमें से एक को ज़िब्ह करके उनकी कलेजी और कोहान हुज़ूर सल्ल० के लिए भून रहे थे।

मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप मुझे इजाज़त दें तो मैं आपके सहाबा रज़ि० में से सौ आदमी चुनकर ले जाऊं और जाकर रात के अंधेरे में इन काफ़िरों पर हमला कर दूं। इस तरह वे सब ख़त्म हो जाएंगे। और उनकी ख़बर देने वाला भी बाक़ी न रहेगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ सलमा! क्या तुम ऐसा कर गुज़रोगे?

मैंने कहा, जी हां। उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको इज़्ज़त अता फ़रमाई है।

इस पर आप इतने ज़ोर से हंसे कि आग की रोशनी में आपके दांत मुझे नज़र आने लगे, फिर आपने फ़रमाया, इस वक़्त तो इन काफ़िरों की क़बीला बनू ग़तफ़ान के इलाक़े में मेहमानी तैयार की जा रही है। चुनांचे ग़तफ़ान के आदमी ने आकर बताया कि उनका फ़्लां ग़तफ़ानी आदमी पर गुज़र हुआ। उसने उनके लिए ऊंट ज़िब्ह किया, लेकिन जब वे लोग उसकी खाल उतार रहे थे, तो उन्होंने धूल उड़ती देखी। वे उस ऊंट को उसी हालत में छोड़कर वहां से भाग गए।

अगले दिन सुबह को हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हमारे सवारों में सबसे बेहतरीन सवार हज़रत अबू क़तादा हैं और हमारे प्यादों में सबसे बेहतरीन हज़रत सलमा हैं। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने मुझे (माले ग़नीमत में से) सवार का हिस्सा भी दिया और पैदल चलने वाले का भी, और मदीना वापस जाते हुए हुज़ूर सल्ल० ने मुझे अज़बा ऊंटनी पर अपने पीछे बिठा लिया।

जब हमारे और मदीना के दर्मियान इतनी दूरी रह गई जो सूरज निकलने से लेकर चाश्त तक के वक़्त में तै हो सके, तो अंसार के एक तेज़ दौड़ने वाले साथी, जिनसे कोई आगे नहीं निकल सकता था, उन्होंने दौड़ने के मुक़ाबले की दावत दी और ऊंची आवाज़ से कहा, है कोई दौड़ में मुक़ाबला करने वाला? है कोई आदमी जो मदीना तक मेरे साथ दौड़ लगाए? और यह एलान उन्होंने कई बार किया।

मैं हुज़ूर सल्ल० के पीछे बैठा हुआ था। मैंने उस आदमी से कहा, क्या तुम किसी करीम आदमी का एहतराम नहीं करते हो? क्या तुम शरीफ़ आदमी से डरते नहीं हो?

उस आदमी ने कहा, अल्लाह के रसूल सल्ल० के अलावा न मैं किसी का एहतराम करता हूं और न मैं किसी से डरता हूं?

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, आप मुझे इजाज़त दें, मैं उस आदमी से दौड़ में मुक़ाबला करता हूं।

आपने फ़रमाया, अगर तुम चाहते हो, तो ठीक है।

मैंने उस आदमी से कहा, मैं तुम्हारे मुक़ाबले के लिए आ रहा हूं। वह आदमी कूद कर अपनी सवारी से नीचे आ गया। मैंने भी पांव मोड़कर ऊंटनी से नीचे छलांग लगा दी। (और हम दोनों ने दौड़ना शुरू कर दिया)

शुरू में एक दो दौड़ों तक मैंने अपने आपको रोके रखा, यानी ज़्यादा तेज़ नहीं दौड़ा (जिससे वह मुझसे आगे निकलता जा रहा था) फिर मैं तेज़ी से दौड़ा और उस तक जा पहुंचा और उसके दोनों कंधों के

दर्मियान मैंने अपने दोनों हाथ मारे और मैंने उससे कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं तुमसे आगे निकल गया हूं।

रिवायत करने वाले को शक है कि यही लफ़्ज़ उसने कहे थे, या इन जैसे लफ़्ज़ कह थे। इस पर वह हंस पड़ा और कहने लगा, अब मेरा यही ख़्याल है। फिर हम दोनों दौड़ते रहे, यहां तक कि मदीना पहुंच गये।

इमाम मुस्लिम की रिवायत में यह मज़्मून भी है कि मैं इससे पहले मदीना पहुंचा। इसके बाद हम लोग तीन दिन ही ठहरे थे कि ख़ैबर की लड़ाई के लिए रवाना हो गए।[1]

हज़रत अबू हदरद या हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद की बहादुरी

हज़रत इब्ने अबी हदरद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने अपनी क़ौम की औरत से निकाह किया और उसका मह्र दो सौ दिरहम मुक़र्रर किया, फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में मह्र में इमदाद लेने के लिए हाज़िर हुआ।

आपने फ़रमाया, तुमने कितना मह्र मुक़र्रर किया है ?

मैंने कहा, दो सौ दिरहम।

आपने (इस मिक़्दार को मेरी हैसियत से ज़्यादा समझते हुए) फ़रमाया, सुब्हानल्लाह अगर तुम घाटी की किसी औरत से निकाह करते, तो तुम्हें इतना ज़्यादा मह्र न देना पड़ता, (तुमने अपनी क़ौम में शादी की है, इसलिए इतना ज़्यादा मह्र देना पड़ रहा है, जो तुम्हारी हैसियत से ज़्यादा है) अल्लाह की क़सम ! तुम्हारी मदद करने के लिए इस वक़्त मेरे पास कुछ नहीं है।

मैं कुछ दिन (इन्तिज़ार में) ठहरा रहा, फिर क़बीला जुस्म बिन मुआविया का एक आदमी आया, जिसका नाम रिफ़ाआ बिन क़ैस या क़ैस बिन रिफ़ाआ था। वह क़बीला जुस्म बिन मुआविया के बड़े ख़ानादान को साथ लेकर आया और (मदीना के क़रीब) ग़ाबा नामी

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 152

जगह में अपनी क़ौम और साथियों को लेकर ठहर गया। वह क़बीला क़ैस को हुज़ूर सल्ल० से लड़ने के लिए जमा करना चाहता था और क़बीला जुस्म में उसका बड़ा नाम और ऊंचा मर्तबा था।

हुज़ूर सल्ल० ने मुझे और दो और मुसलमानों को बुलाया और फ़रमाया, तुम लोग जाओ और उस आदमी के बारे में पूरे हालात मालूम करके आओ। हुज़ूर सल्ल० ने हमें एक दुबली और बूढ़ी ऊंटनी अता फ़रमाई। हमारा एक आदमी उस पर सवार हुआ, तो अल्लाह की क़सम ! वह कमज़ोरी की वजह से उसे लेकर खड़ी न हो सकी। तो कुछ आदमियों ने उसे पीछे से सहारा दिया, तब वह खड़ी हुई, वरना ख़ुद से तो खड़ी न हो सकती थी। और आपने फ़रमाया, इसी पर बैठकर तुम वहां पहुंच जाओ।

(चुनांचे हुज़ूर सल्ल० के इस इर्शाद की बरकत से इन लोगों ने उस ऊंटनी पर सफ़र पूरा किया, अल्लाह ने उस कमज़ोर ऊंटनी को इतनी ताक़त फ़रमा दी।) चुनांचे हम चल पड़े और हमने अपने हथियार, तीर और तलवार वग़ैरह साथ ले लिए और ठीक सूरज डूबने के वक़्त उन लोगों की क़ियामगाह के क़रीब पहुंचे।

मैं एक कोने में छिप गया और मैंने अपने उन दोनों साथियों से कहा, तो वे भी उनकी क़ियामगाह के दूसरे कोने में छिप गए और मैंने उनसे कहा, जब तुम दोनों सुनो कि मैंने ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहकर उस फ़ौज पर हमला कर दिया है, तो तुम दोनों भी ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहकर हमला कर देना।

अल्लाह की क़सम ! हम इसी तरह छिपे हुए इन्तिज़ार कर रहे थे कि कब उन्हें ग़ाफ़िल पाकर उन पर हमला कर दें या कोई और मौक़ा मिल जाए। रात हो चुकी थी और उसका अंधेरा बढ़ चुका था। उस क़बीले का एक चरवाहा सुबह से जानवर लेकर गया हुआ था और अभी तक वापस नहीं आया था, तो उन्हें इसके बारे में ख़तरा पैदा हुआ। उनका सरदार रिफ़ाआ बिन क़ैस खड़ा हुआ और तलवार लेकर अपने गले में डाल ली और कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं अपने चरवाहे के बारे में

पक्की बात मालूम करके आता हूं, उसे ज़रूर कोई हादसा (दुर्घटना) पेश आया है।

उसके कुछ साथियों ने कहा, आप न जाएं। अल्लाह की क़सम! आपकी जगह हम जाएंगे।

उसने कहा, नहीं, मेरे अलावा और कोई नहीं जाएगा।

साथियों ने कहा, हम आपके साथ जाएंगे।

उसने कहा, अल्लाह की क़सम! तुममें से कोई भी मेरे साथ नहीं जाएगा और वह चल पड़ा, यहां तक कि मेरे पास से गुज़रा।

जब मैंने देखा कि वह ठीक मेरे निशाने पर आ गया है, तो मैंने उसे तीर मारा, जो उसके दिल को जाकर लगा और अल्लाह की क़सम! उसकी ज़ुबान से कोई बात न निकली, मैंने छलांग मारकर उसका सर काट लिया और मैंने फ़ौज के इस कोने पर अल्लाहु अक्बर ज़ोर से कहकर हमला कर दिया और मेरे दोनों साथियों ने भी ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहकर फ़ौज पर हमला कर दिया।

इस अचानक हमले से वे लोग घबरा गए और सब यही कहने लगे कि अपने आपको बचाओ, अपने आपको बचाओ और औरतें और बच्चे और हलका-फुलका सामान जो ले जा सकते थे, वह लेकर वे लोग भाग गए और बहुत सारे ऊंट और बकरियां हमारे हाथ आईं, जिन्हें लेकर हम लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मैंने उसका सर भी अपने साथ लाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश कर दिया।

आपने मुझे मह्र अदा करने के लिए उस माले ग़नीमत में से तेरह ऊंट अता फ़रमाए। इस तरह मैं मह्र अदा करके अपनी बीवी को अपने घर ले आया।[1]

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० की बहादुरी

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० फ़रमाते हैं कि ग़ज़वा मूता के दिन मेरे हाथ में नौ तलवारें टूटी थीं और मेरे हाथ में सिर्फ़ एक तलवार

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 223, इसाबा, भाग 2, पृ० 295

रह गई थी, जो यमन की बनी हुई और चौड़ी थी।[1]

हज़रत औस बिन हारिसा बिन लाम रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुरमुज़ से ज़्यादा (मुसलमान) अरबों का कोई दुश्मन नहीं था। जब हम मुसैलमा और उनके साथियों (के ख़त्म करने) से फ़ारिग़ हुए, तो हम बसरा की ओर रवाना हुए, काज़िमा नामी जगह पर हमें हुरमुज़ मिला, जो बहुत बड़ी फ़ौज लेकर आया हुआ था।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० मुक़ाबले के लिए मैदान में निकले और उसे अपने मुक़ाबले की दावत दी, चुनांचे वह मुक़ाबले के लिए मैदान में आ गया। हज़रत ख़ालिद ने उसे क़त्ल कर दिया। यह ख़ुशख़बरी हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को लिखी।

जवाब में हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने लिखा कि हुरमुज़ का तमाम सामान हथियार, कपड़े, घोड़ा वग़ैरह हज़रत ख़ालिद रज़ि० को दे दिया जाए। चुनांचे हुरमुज़ के एक ताज की क़ीमत एक लाख दिरहम थी, क्योंकि फ़ारस वाले जिसे अपना सरदार बनाते, उसे एक लाख दिरहम का ताज पहनाते थे।[2]

हज़रत अबुज़्ज़िनाद रह० फ़रमाते हैं कि जब हज़रत ख़ालिद रज़ि० के इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब आया, तो वह रोने लगे और फ़रमाया कि मैं इतनी-इतनी (यानी बहुत ज़्यादा लड़ाइयों में शरीक हुआ हूं और मेरे जिस्म में बालिश्त भर भी जगह ऐसी न होगी जिसमें तलवार या नेज़े या तीर का घाव न हो और देखो, अब मैं अपने बिस्तर पर ऐसे मर रहा हूं जैसे कि ऊंट मरा करता है यानी मुझे शहादत की मौत नसीब न हुई। अल्लाह करे, बुज़दिलों की आंखों में कभी नींद न आए।[3]

हज़रत बरा बिन मालिक रज़ि० की बहादुरी

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद

---

1. इस्तीआब, भाग 1, पृ० 408, हाकिम, भाग 3, पृ० 43, इब्ने साद भाग 4, पृ० 2
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 299
3. बिदाया, भाग 7, पृ० 114

रज़ि० ने यमामा की लड़ाई के दिन हज़रत बरा से कहा, ऐ बरा ! खड़े हो जाओ। यह अपने घोड़े पर सवार हो गए। फिर अल्लाह की हम्द व सना बयान की, इसके बाद फ़रमाया, ऐ मदीना वालो ! आज तुम्हारा मदीने से कोई ताल्लुक़ न रहे, (यानी मदीना वापसी का ख़्याल दिल से निकाल दो और बेज़िगरी से मर जाने के इरादे से आज लड़ाई करो) आज तो एक अल्लाह की ज़ियारत करनी है और जन्नत में जाना है।

फिर उन्होंने दुश्मन पर ज़ोर से हमला किया और उनके साथ इस्लामी फ़ौज ने भी हमला किया। फिर यमामा वाले हार गए। हज़रत बरा को (मुसैलमा की फ़ौज का अमीर) मुहक्कम अल-यमामा मिला। हज़रत बरा ने उस पर तलवार का हमला करके उसे ज़मीन पर गिरा दिया, और उसकी तलवार लेकर उसे चलाना शुरू किया, यहां तक कि वह तलवार टूट गई।[1]

हज़रत बरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस दिन मुसैलमा से लड़ाई हुई, उस दिन मुझे एक आदमी मिला, जिसे यमामा का गधा कहा जाता था, वह बहुत मोटा था और उसके हाथ में सफ़ेद तलवार थी। मैंने उसकी टांगों पर तलवार से वार किया और ऐसा मालूम हुआ कि ग़लती से लग गई। उसके पांव उखड़ गए और वह गुद्दी के बल गिर गया। मैंने उसकी तलवार ले ली और अपनी तलवार म्यान में रख ली और मैंने उस तलवार से एक ही वार किया, जिससे वह तलवार टूट गई।[2]

हज़रत इब्ने इस्हाक़ बयान करते हैं कि यमामा की लड़ाई के दिन मुसलमान धीरे-धीरे मुश्रिकों की ओर बढ़ते रहे, यहां तक कि उनको एक बाग़ में पनाह लेने पर मजबूर कर दिया और उसी बाग़ में अल्लाह का दुश्मन मुसैलमा भी था, यह देखकर कि हज़रत बरा ने कहा, ऐ मुसलमानो ! मुझे उठाकर उन दुश्मनों पर फेंक दो, चुनांचे उनको उठाया गया।

जब वे दीवार पर चढ़ गए तो उन्होंने अपने आपको अन्दर गिरा दिया

1. सिराज की तारीख़
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 143

और बाग़ में उनसे लड़ने लगे, यहां तक कि हज़रत बरा ने मुसलमानों के लिए इस बाग़ का दरवाज़ा खोल दिया और मुसलमान इस बाग़ में दाख़िल हो गए और अल्लाह ने मुसैलमा को भी क़त्ल करा दिया ।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन बयान करते हैं कि जब मुसलमान उस बाग़ तक पहुंचे तो देखा कि उसका दरवाज़ा अन्दर से बन्द किया जा चुका है और अन्दर मुश्रिकों की फ़ौज थी । तो हज़रत बरा रज़ि० एक ढाल पर बैठ गए और फ़रमाया, तुम लोग अपने नेज़ों से ऊपर उठाकर मुझे इन मुश्रिकों पर फेंक दो । चुनांचे उन्होंने हज़रत बरा को अपने नेज़ों पर उठाकर बाग़ के पीछे की तरफ़ से बाग़ में फेंक दिया । (बाग़ का दरवाज़ा खुल जाने के बाद) मुसलमानों ने देखा कि हज़रत बरा मुश्रिकों में से दस आदमी क़त्ल कर चुके हैं ।[2]

हज़रत इब्ने सीरीन बयान करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने ख़त लिखा कि हज़ररत बरा बिन मालिक रज़ि० को मुसलमानों की किसी फ़ौज का हरगिज़ न अमीर बनाना, क्योंकि यह हलाकत ही हलाकत हैं, अपनी जान की बिल्कुल परवाह नहीं करते हैं । अमीर बनकर यह मुसलमानों को भी उन जगहों में ले जाएंगे जहां हलाकत का ख़तरा ज़्यादा होगा ।[3]

हज़रत अबू मेहजन सक़फ़ी रज़ि० की बहादुरी

हज़रत इब्ने सीरीन बयान करते हैं कि हज़रत अबू मेहजन सक़फ़ी को शराब पीने की वजह से कोड़े लगा करते थे । जब बहुत ज़्यादा पीने लगे तो मुसलमानों ने उन्हें बांधकर क़ैद कर दिया ।

जब क़ादसिया की लड़ाई के दिन ये मुसलमानों को दुश्मन से लड़ते हुए देख रहे थे, तो उन्हें यह महसूस हुआ कि मुश्रिकों ने मुसलमानों को भारी नुक़्सान पहुंचाया है, तो उन्होंने (मुसलमानों के अमीर) हज़रत साद रज़ि० की उम्मे वलद या उनकी बीवी के पास

1. इस्तीआब, भाग 1, पृ० 138
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 44
3. कंज़, भाग 5, पृ० 144

पैग़ाम भेजा कि अबू मेहजन यह कह रहा है कि उसे जेलख़ाने में से रिहा कर दो और उसे यह घोड़ा और यह हथियार दे दो, वह जाकर दुश्मन से लड़ाई करेगा और फिर वह तमाम मुसलमानों से पहले तुम्हारे पास वापस आ जाएगा, तुम उसे फिर जेलख़ाने में बांध देना। हां, अगर अबू मेहजन वहां शहीद हो गया तो फिर और बात है और ये शेर पढ़ने लगे—

كَفٰى حُزْنًا اَنْ تَلْتَقِى الْخَيْلُ بِالْقَنَا   وَاُتْرَكَ مَشْدُوْدًا عَلَىَّ وَثَاقِيَا

'रंग व ग़म इतना बाक़ी है कि सवार तो नेज़े लेकर लड़ रहे हैं और मुझे बेड़ियों में बांधकर जेलख़ाने में छोड़ दिया गया है।'

اِذَا قُمْتُ عَنَّانِى الْحَدِيْدُ وَغُلِّقَتْ   مَصَارِعُ دُوْنِىْ قَدْ تُصِمُّ الْعَنَادِيَا

'जब मैं खड़ा होता हूं तो लोहे की बेड़ियां मेरे क़दम रोक लेती हैं और मेरे शहीद होने के तमाम दरवाज़े बन्द कर दिए गए हैं और मेरी ओर से पुकारने वाले को बहरा कर दिया गया है।'

उस लौंडी ने हज़रत साद की बीवी को सारी बात बताई। चुनांचे हज़रत साद की बीवी ने उनकी बेड़ियां खोल दीं और घर में एक घोड़ा था, वह उनको दे दिया और हथियार भी दे दिए तो घोड़े को एड़ लगाते हुए निकले और मुसलमानों से जा मिले। वह जिस आदमी पर भी हमला करते, उसे क़त्ल कर देते और उसकी कमर तोड़ देते।

जब हज़रत साद ने उनको देखा तो उनको बड़ी हैरानी हुई और वह पूछने लगे, यह सवार कौन है?

बस थोड़ी ही देर में अल्लाह ने मुश्रिकों को हरा दिया और हज़रत अबू मेहजन ने वापस आकर हथियार वापस कर दिए और अपने पैरों में पहले की तरह बेड़ियां डाल लीं।

जब हज़रत साद अपनी क़ियामगाह पर वापस आए तो उनकी बीवी/या उनकी उम्मे वलद ने कहा, आपकी लड़ाई कैसी रही?

हज़रत साद लड़ाई की तफ़्सील बताने लगे और कहने लगे, हमें ऐसे-ऐसे हार होने लगी थी कि अल्लाह ने एक उजले-काले घोड़े पर एक आदमी को भेज दिया। अगर मैं अबू मेहजन को बेड़ियों में बंधा हुआ

छोड़कर न आया होता तो मैं यक़ीन कर लेता कि यह अबू मेहजन का कारनामा है, तो उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! यह अबू मेहजन ही थे और फिर उनका सारा वाक़िया सुनाया।

हज़रत साद ने अबू मेहजन को बुलाकर उनकी बेड़ियां खोल दीं और उनसे फ़रमाया कि (तुमने आज मुसलमानों की हार को जीत में बदल दिया है, इसलिए अब) आगे तुम्हें शराब पीने की वजह से कभी कोड़े नहीं मारेंगे।

इस पर हज़रत अबू मेहजन ने कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं भी अब आगे कभी शराब न पियूंगा। चूंकि आप मुझे कोड़े मार लेते थे, इसलिए मैं शराब छोड़ना पसन्द नहीं करता था। चुनांचे इसके बाद हज़रत अबू मेहजन ने कभी शराब न पी।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन साद की रिवायत में यह है कि हज़रत अबू मेहजन वहां से गए और मुसलमानों के पास पहुंच गए। वह जिस ओर भी हमला करते अल्लाह उस ओर वालों को हरा देते। लोग उनके ज़ोरदार हमलों को देखकर कहने लगे कि यह तो कोई फ़रिश्ता है और हज़रत साद रज़ि० भी यह सारा मंज़र देख रहे थे, वह कहने लगे कि इस घोड़े की छलांग तो (मेरे घोड़े) बलक़ा जैसी है और इस आदमी के हमला करने का अंदाज़ तो अबू मेहजन जैसा है, लेकिन अबू मेहजन तो बेड़ियों में क़ैद पड़ा हुआ है।

जब दुश्मन को हार हो गई तो हज़रत अबू मेहजन ने वापस जाकर बेड़ियों में पांव डालकर बांध लिए, फिर हज़रत बिन्त ख़सफ़ा ने हज़रत साद को हज़रत अबू मेहजन की सारी बात बताई।

इस पर हज़रत साद ने फ़रमाया कि जिस आदमी की वजह से अल्लाह ने मुसलमानों को इज़्ज़त फ़रमाई, मैं आगे उसे कभी शरई हद नहीं लगाऊंगा और यह कहकर उन्हें छोड़ दिया।

इस पर हज़रत अबू मेहजन रज़ि० ने फ़रमाया कि चूंकि मुझ पर हद क़ायम की जाती थी और मुझे गुनाह से पाक कर दिया जाता था, इस

1. इस्तीआब, भाग 4, पृ० 184, इसाबा, भाग 4, पृ० 174

वजह से मैं शराब पी लेता था, अब जबकि मुझे सज़ा न देने का फ़ैसला हो गया है, तो अल्लाह की क़सम ! अब मैं कभी शराब नहीं पियूंगा।[1]

और इसी वाक़िए को हज़रत सैफ़ ने फ़ुतूह में ज़िक्र किया है और काफ़ी लम्बा करके बयान किया है और शेर भी ज़िक्र किए हैं और यह भी बयान किया है कि हज़रत अबू मेहजन ने ख़ूब ज़ोरदार लड़ाई लड़ी, वह ज़ोर से अल्लाहु अक्बर कहकर हमला करते, तो उनके सामने कोई न ठहर सकता था और वह अपने ज़ोरदार हमलों से दुश्मन के आदमियों को ख़ूब मारते चले जा रहे थे। मुसलमान उन्हें देखकर बहुत हैरान हो रहे थे, लेकिन कोई भी उन्हें पहचान न सका।[2]

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० की बहादुरी

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने यमामा की लड़ाई के दिन हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० को एक चट्टान पर देखा, जिस पर खड़े होकर वह ज़ोर-ज़ोर से मुसलमानों को आवाज़ दे रहे थे, ऐ मुसलमानो ! क्या तुम जन्नत से भाग रहे हो ? मैं अम्मार बिन यासिर हूं, मेरी ओर आओ और मैं उनके कान को देख रहा था कि वह कटा हुआ था और हिल रहा था और वह पूरे ज़ोर से लड़ाई लड़ रहे थे। (उन्हें कान की तक्लीफ़ का एहसास भी नहीं था)[3]

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान सुलमी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम हज़रत अली रज़ि० के साथ सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में शरीक हुए और हमने हज़रत अली रज़ि० की हिफ़ाज़त के लिए दो आदमी मुक़र्रर किए थे। जब साथियों में सुस्ती और ग़फ़लत आ जाती तो हज़रत अली मुख़ालिफ़ों पर हमला कर देते और तलवार को ख़ून में अच्छी तरह रंग कर ही वापस आते और फ़रमाते, ऐ मुसलमानो ! मुझे माज़ूर समझो, क्योंकि मैं उसी वक़्त वापस आता हूं जब मेरी तलवार कुंद हो जाती है (और ज़्यादा काटना छोड़ देती है।)

---

1. इस्तीआब, भाग 4, पृ० 187
2. इसाबा,
3. हाकिम, भाग 3, पृ० 385

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अम्मार और हज़रत हाशिम बिन उत्बा रज़ि० को देखा, जबकि हज़रत अली रज़ि० दोनों सफ़ों के दर्मियान दौड़ रहे थे। (यह देखकर) हज़रत अम्मार रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ हाशिम ! अल्लाह की क़सम, इनके हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी की जाएगी और इनकी फ़ौज की मदद छोड़ दी जाएगी।

फिर कहा, ऐ हाशिम ! जन्नत उन चमकदार तलवारों के नीचे है। आज मैं अपने महबूब दोस्तों हज़रत मुहम्मद सल्ल० और उनकी जमाअत से (शहीद होकर) मुलाक़ात करूंगा। ऐ हाशिम ! तू काना है और काने आदमी में ख़ैर नहीं हुआ करती है, वह लड़ाई के मैदान पर छा नहीं सकता। (हज़रत अम्मार की तर्ग़ीब (प्रलोभन) पर हज़रत हाशिम जोश में आ गए) और उन्होंने झंडा हिलाया और ये शेर पढ़े—

أَعْوَرُ يَبْغِي أَهْلَهُ مَحَلًّا   قَدْ عَالَجَ الْحَيَاةَ حَتَّى مَلَّا

لَا بُدَّ أَنْ يَفُلَّ أَوْ يُفَلَّا

'यह काना अपने घरवालों के लिए रहने की जगह खोजता रहा। इस खोज में सारी ज़िंदगी गुज़ार डाली और अब वह इससे उकता गया है, अब यह काना या तो दुश्मन को हरा देगा या फिर हार जाएगा यानी फ़ैसला कर देने वाली लड़ाई लड़ेगा। फिर सिफ़्फ़ीन की एक घाटी में चले गए।'

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान सुलमी रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद सल्ल० के सहाबा रज़ि० को देखा कि वे सब हज़रत अम्मार रज़ि० के पीछे-पीछे चलते थे, गोया कि हज़रत अम्मार उनके लिए झंडा थे।[1]

दूसरी रिवायत में हज़रत अबू अब्दुर्रहमान सलमी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि हज़रत अम्मार रज़ि० सिफ़्फ़ीन की जिस घाटी में जाते और वहां जितने हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० होते, वे सब उनके पीछे चल पड़ते और मैंने यह भी देखा कि वह हज़रत हाशिम बिन उत्बा रज़ि० के पास आए। हज़रत हाशिम ने हज़रत अली रज़ि० का झंडा उठा रखा था।

हज़रत अम्मार रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ हाशिम ! आगे बढ़ो। जन्नत

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 394

तलवारों के साए के नीचे है और मौत नेज़ों के किनारे में है। जन्नत के दरवाज़े खोले जा चुके हैं और मोटी आंखों वाली हूरें सज चुकी हैं। आज मैं अपने महबूब दोस्तों हज़रत मुहम्मद सल्ल० और उनकी जमाअत से मिलूंगा।

फिर हज़रत अम्मार और हज़रत हाशिम रज़ि० दोनों ने ज़ोरदार हमला किया और दोनों शहीद हो गए। अल्लाह ने दोनों पर रहमत उतारी और उस दिन हज़रत अली रज़ि० और उनके साथियों ने एक आदमी की तरह इकट्ठे हमला किया और हज़रत अम्मार और हज़रत हाशिम उन तमाम फ़ौज वालों के लिए गोया झंडे की तरह थे।[1]

हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब ज़ुबैदी रज़ि० की बहादुरी

हज़रत मालिक बिन अब्दुल्लाह ख़सअमी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने उस आदमी से ज़्यादा शराफ़त वाला कोई आदमी नहीं देखा जो यर्मूक की लड़ाई के दिन (मुसलमानों की ओर से) मुक़ाबले के लिए मैदान में निकला। एक बड़ा मज़बूत अजमी काफ़िर उनके मुक़ाबले के लिए आया। उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया। फिर कुफ़्फ़ार हार कर भाग उठे। उन्होंने उस काफ़िर का पीछा किया और फिर अपने एक बड़े ऊंचे ख़ेमे में वापस आए और उसमें दाख़िल होकर (खाने के) बड़े-बड़े प्याले मंगवाए और आस-पास के तमाम लोगों को (खाने के लिए) बुला लिया। यानी वह बहादुर भी बहुत थे और सख़ी भी बहुत।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने पूछा कि यह कौन थे?

हज़रत मालिक ने फ़रमाया, यह हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब रज़ि० थे।[2]

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं क़ादसिया की लड़ाई में शरीक हुआ। मुसलमानों की फ़ौज के अमीर हज़रत साद रज़ि० थे।

---

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 270, हैसमी, भाग 7, पृ० 241
2. मग़ाज़ी (इब्ने माजा)

हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब रज़ि० सफ़ों के सामने से गुज़रते जाते थे और फ़रमाते जाते थे, ऐ मुहाजिर लोगो ! ज़ोरावर शेर बन जाओ। (और हमला ऐसा करो कि मुक़ाबले पर सवार अपना नेज़ा फेंक दे) क्योंकि सवार आदमी जब नेज़ा फेंक देता है तो नाउम्मीद हो जाता है।

इतने में फ़ारस वालों के एक सरदार ने उन्हें तीर मारा जो उनकी कमान के किनारे पर आ लगा। हज़रत अम्र रज़ि० ने उस पर नेज़े का ऐसा वार किया कि जिससे उसकी कमर तोड़ दी और नीचे उतरकर उसका सामान ले लिया।[1]

इब्ने असाकिर ने इसी वाक़िए को इससे ज़्यादा लम्बा बयान किया है और उसके आख़िर में यह है कि अचानक एक तीर हज़रत अम्र की ज़ीन के अगले हिस्से को आ लगा। उन्होंने तीर फेंकने वाले पर हमला किया और उसे ऐसे पकड़ लिया जैसे किसी लड़की को पकड़ा जाता है और उसे (मुसलमानों और काफ़िरों की) दो सफ़ों के बीच में रखकर उसका सर काट डाला और अपने साथियों को फ़रमाया कि ऐसे किया करो।

वाक़दी ने रिवायत की है कि हज़रत ईसा ख़य्यात रह० फ़रमाते हैं कि क़ादसिया की लड़ाई के दिन हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब रज़ि० ने अकेले ही दुश्मन पर हमला कर दिया और उन पर ख़ूब तलवार चलाई। फिर बाद में मुसलमान भी उन तक पहुंच गए, तो देखा, दुश्मनों ने हज़रत अम्र को चारों ओर से घेर रखा है और वह अकेले उन काफ़िरों पर तलवार चला रहे हैं। फिर मुसलमानों ने उन काफ़िरों को हज़रत अम्र से हटाया।

तबरानी ने रिवायत की है कि हज़रत मुहम्मद बिन सलाम जुमही रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत साद रज़ि० को यह लिखा कि मैं तुम्हारी मदद के लिए दो हज़ार आदमी भेज रहा हूं। एक हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब रज़ि० और दूसरे हज़रत तलहा बिन ख़ुवैलद रज़ि०। (इन दोनों में से हर एक एक-एक हज़ार के बराबर है)

---

1. तबरानी वग़ैरह

हज़रत अबू सालेह बिन वजीह रज़ि० फ़रमाते हैं कि सन् इक्कीस हिजरी में निहावन्द की लड़ाई में हज़रत नोमान बिन मुक़र्रिन रज़ि० शहीद हुए थे। फिर मुसलमानों को हार हो गई थी। फिर हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब रज़ि० ऐसे ज़ोर से लड़े कि हार जीत में बदल गई और ख़ुद ज़ख़्मों से चूर हो गए। आख़िर रूज़ा नामी बस्ती में उनका इंतिक़ाल हो गया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० की बहादुरी

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हज़रत मुआविया का इंतिक़ाल हो गया तो अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० ने यज़ीद बिन मुआविया की इताअत से इंकार कर दिया और यज़ीद के एलानिया बुरा-भला कहने लगे।

यह बात यज़ीद को पहुंची तो उसने क़सम खाई कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० को मेरे पास गले में तौक़ डालकर लाया जाए, वरना मैं उनकी ओर फ़ौज भेजूंगा। हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से अर्ज़ किया गया (कि आप यज़ीद की क़सम पूरी कर दें और आपके रुत्बे के मुताबिक़ उसकी शक्ल यह है) कि हम आपके लिए चाँदी का तौक़ बना लेते हैं, उनको आप गले में डाल देंगे और उनके ऊपर आप कपड़े पहन लें। इस तरह आप उसकी क़सम पूरी कर लेंगे और आपकी उससे सुलह हो जाएगी और उससे सुलह कर लेना ही आपकी शान के ज़्यादा मुनासिब है।

हज़रत अब्दुल्लाह ने उसके जवाब में फ़रमाया, अल्लाह उसकी क़सम कभी पूरी न करे और यह शेर पढ़ा—

وَلَا أَلِينُ لِغَيْرِ الْحَقِّ أَسْأَلُهُ   حَتَّى يَلِينَ لِضِرْسِ الْمَاضِغِ الْحَجَرُ

'और जिस नाहक़ बात की मुझसे मांग की जा रही है, मैं उसके लिए उस वक़्त तक नर्म नहीं हो सकता हूं, जब तक चबाने वाले की दाढ़ के लिए पत्थर नर्म न हो जाएं यानी मेरा नर्म पड़ जाना नामुम्किन है।'

---

1. इसाबा, भाग 3, पृ० 19-20

फिर फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम ! इज़्ज़त के साथ तलवार की मार मुझे ज़िल्लत के साथ कोड़े की मार से ज़्यादा पसन्द है। फिर उन्होंने मुसलमानों को अपनी ख़िलाफ़त पर बैअत करने की दावत दी और यज़ीद बिन मुआविया की मुख़ालफ़त ज़ाहिर की।

इस पर यज़ीद बिन मुआविया ने शाम वालों की फ़ौज देकर मुस्लिम बिन उक़्बा मुर्री को भेजा और उसे मदीना वालों से लड़ाई लड़ने का हुक्म दिया और यह भी कहा कि मुस्लिम जब मदीना वालों से लड़ने से फ़ारिग़ हो जाए, तो मक्का की ओर रवाना हो जाए।

चुनांचे मुस्लिम बिन उक़्बा फ़ौज लेकर मदीना में दाख़िल हुआ और हुज़ूर सल्ल० के जितने सहाबा रज़ि० वहां बाक़ी थे, वे सब मदीना से चले गए। मुस्लिम ने मदीना वालों की तौहीन की और उन्हें ख़ूब क़त्ल किया। वहां से मक्का की ओर रवाना हुआ। अभी रास्ते ही में था कि मुस्लिम मर गया। मुस्लिम ने हुसैन बिन नुमैर किन्दी को मरने से पहले अपना नायब मुक़र्रर किया और कहा, ऐ गधे की पालान वाले ! क़ुरैश की मक्कारियों से बचकर रहना और पहले उनसे लड़ना और फिर उन्हें चुन-चुनकर क़त्ल करना।

चुनांचे वहां से हुसैन चला और मक्का पहुंच गया और कई दिन तक हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से मक्का में लड़ता रहा। आगे और हदीस भी है, जिसमें यह मज़्मून भी है कि हुसैन बिन नुमैर को यज़ीद बिन मुआविया के मरने की ख़बर मिली तो हुसैन बिन नुमैर भाग गया।

जब यज़ीद बिन मुआविया का इंतिक़ाल हो गया तो मरवान बिन हकम ख़लीफ़ा बन गया और उसने लोगों को अपनी ख़िलाफ़त की और अपने से बैअत होने की दावत दी। आगे हदीस और है जिसमें यह मज़्मून भी है कि फिर मरवान भी मर गया और अब्दुल मलिक ख़लीफ़ा बन गया और उसने अपने से बैअत होने की दावत दी।

उसकी दावत को शाम वालों ने क़ुबूल कर लिया और उसने मिंबर पर खड़े होकर ख़ुत्बा दिया और उसने कहा कि तुममें से कौन इब्ने ज़ुबैर रज़ि० को ख़त्म करने के लिए तैयार हैं ?

हज्जाज ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं। अब्दुल मलिक ने उसे खामोश कर दिया। फिर हज्जाज खड़ा हुआ तो उसे अब्दुल मलिक ने फिर खामोश कर दिया। फिर तीसरी बार हज्जाज ने खड़े होकर कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं तैयार हूं क्योंकि मैंने ख़्वाब में देखा है कि मैंने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० से जुब्बा छीनकर पहन लिया है।

इस पर अब्दुल मलिक ने हज्जाज को सेनापति बनाया और उसे फ़ौज देकर मक्का भेजा। उसने मक्का पहुंचकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० से लड़ाई शुरू कर दी। हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने मक्का वालों को हिदायत की और उनसे फ़रमाया कि इन दो पहाड़ों को अपनी हिफ़ाज़त में रखो, क्योंकि जब तक वे इन दो पहाड़ों पर चढ़ नहीं जाते, उस वक़्त जक तुम खैरियत के साथ ग़ालिब रहोगे।

थोड़े ही दिनों के बाद हज्जाज और उसके साथी अबू क़ुबेस पहाड़ पर चढ़ गए और उन्होंने तोप गाड़ दी और उससे हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० और उनके साथियों पर मस्जिदे हराम में पत्थर फेंकने लगे।

जिस दिन हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० शहीद हुए, उस दिन सुबह को वह अपनी मां हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० के पास गए। उस वक़्त हज़रत अस्मा की उम्र सौ साल थी, लेकिन न उनका कोई दांत गिरा था और न उनकी निगाह कमज़ोर हुई थी। उन्होंने अपने बेटे हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० को यह नसीहत फ़रमाई कि ऐ अब्दुल्लाह ! तुम्हारी लड़ाई का क्या बना है?

उन्होंने बताया कि वे फ़्लां-फ़्लां जगह पहुंच चुके हैं और वह हंसकर कहने लगे कि मौत से राहत मिलती है।

हज़रत अस्मा रज़ि० ने कहा, ऐ बेटे ! हो सकता है कि तुम मेरे लिए मौत की तमन्ना कर रहे हो? लेकिन मैं चाहती हूं कि मरने से पहले तुम्हारी मेहनत का नतीजा देख लूं कि या तो तुम बादशाह बन जाओ और इससे मेरी आंखें ठंडी हों या तुम्हें क़त्ल कर दिया जाए और मैं उस पर सब्र करके अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखूं।

फिर इब्ने ज़ुबैर रज़ि० अपनी मां से विदा होने लगे तो उनको मां ने

यह नसीहत की कि क़त्ल के डर से किसी दीनी मामले को हाथ से जाने न देना।

फिर हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० मस्जिदे हराम तशरीफ़ ले गए और तोप से बचने के लिए उन्होंने हजरे अस्वद पर दो किवाड़ लगा लिए। वह हजरे अस्वद के पास बैठे हुए थे कि किसी ने आकर उनसे कहा, क्या आपके लिए काबे का दरवाज़ा न खोल दें, ताकि आप (सीढ़ी के ज़रिए) चढ़कर उसके अन्दर दाख़िल हो जाएं? (और या तोप के पत्थरों से बच जाएं)।

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने उस पर एक निगाह डालकर फ़रमाया, तुम अपने भाई को मौत के अलावा हर चीज़ से बचा सकते हो, अगर (उसकी मौत का वक़्त आ गया है तो काबा के अन्दर भी आ जाएगी) और क्या काबा की हुर्मत इस जगह से ज़्यादा है? (यानी जब वे इस जगह का एहतराम नहीं कर रहे हैं तो काबे के अन्दर का एहतराम भी नहीं करेंगे) अल्लाह की क़सम! अगर वे तुमको काबे के परदों से चिमटा हुआ भी पाएंगे, तो भी तुम्हें ज़रूर क़त्ल कर देंगे।

फिर उनसे अर्ज़ किया गया, क्या आप उनसे समझौते के बारे में बातचीत नहीं करना चाहते?

उन्होंने फ़रमाया, क्या यह समझौते की बात करने का वक़्त है? अगर तुम उनको काबा के अन्दर भी मिल गए, तो वे तुम सबको ज़िब्ह कर देंगे और फिर ये शेर पढ़े—

وَلَسْتُ بِمُبْتَاعِ الْحَيٰوةِ بِسُبَّةٍ وَلَا مُرْتَقٍ مِّنْ خَشْيَةِ الْمَوْتِ سُلَّمًا

'और मैं कोई शर्म वाली चीज़ अख़्तियार करके उसके बदले में ज़िंदगी को ख़रीदने वाला नहीं हूं और न मौत के डर से किसी सीढ़ी पर चढ़ने वाला हूं।'

أُنَافِسُ سَهْمًا إِنَّهُ غَيْرُ بَارِحٍ مُلَاقِي الْمَنَايَا أَيَّ حَرْفٍ تَيَمَّمَا

'मुझे ऐसे तीर का शौक़ है जो अपनी जगह से निकल न सके और क्या मौत से मुलाक़ात को चाहने वाला किसी और तरफ़ का इरादा कर सकता है?'

और फिर आले ज़ुबैर की तरफ़ मुतवज्जह होकर उनको नसीहत फ़रमाने लगे और कहने लगे कि हर आदमी अपनी तलवार की ऐसी हिफ़ाज़त करे जैसे अपने चेहरे की हिफ़ाज़त करता है कि कहीं वह टूट न जाए, वरना औरत की तरह हाथ से अपना बचाव करेगा।

मैंने हमेशा अपनी फ़ौज के अगले हिस्से में शामिल होकर दुश्मन से मुक़ाबला किया है और मुझे घाव लगने से कभी दर्द नहीं हुआ। अगर हुआ है तो घाव पर दवा लगाने से हुआ है।

ये लोग आपस में इस तरह बातें कर रहे थे कि अचानक कुछ लोग बनी जुम्हगेट से अन्दर दाख़िल हुए, जिनमें काले रंग का एक आदमी था।

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने पूछा, ये कौन लोग हैं?

किसी ने कहा, ये हम्स वाले हैं। इस पर हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने दो तलवारें लेकर उन पर हमला कर दिया। मुक़ाबले में सबसे पहले वह काला आदमी ही आया। उन्होंने तलवार मारकर उसकी टांग उड़ा दी। उसने ज़्यादा तक्लीफ़ होने की वजह से कहा, हाय, ऐ बदकार औरत के बेटे! نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ ذٰلِكَ (अल्लाह के पनाह!)

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने फ़रमाया, दफ़ा हो। ऐ हाम के बेटे! (काले लोग हज़रत आदम के बेटे हाम की नस्ल के समझे जाते हैं) क्या हज़रत अस्मा रज़ि० बदकार हो सकती हैं? फिन इन सबको मस्जिद से निकालकर वापस आए।

इतने में कुछ लोग बनी सह्म दरवाज़े से दाख़िल हुए। उन्होंने पूछा, ये कौन लोग हैं?

किसी ने कहा, ये जार्डन वाले हैं, तो यह शेर पढ़ते हुए उन पर हमला किया—

لَاعَهْدَلِى بِغَارَةٍ مِثْلَ السَّيْلِ   لَايَنْجَلِى غُبَارُهَا حَتَّى اللَّيْلِ

'मैंने बाढ़ जैसी तबाही नहीं देखी कि जिसका उफान रात तक साफ़ न हो' और उनको मस्जिद से निकाल दिया।

इतने में कुछ लोग बनी मख़्ज़ूम दरवाज़े से दाख़िल हुए, तो उन पर

यह शेर पढ़ते हुए हमला किया—

لَوْ كَانَ قِرْنِي وَاحِدًا لَكَفَيْتُهُ

'अगर मेरे मुक़ाबले में कोई एक होता, तो मैं उससे निमटने के लिए काफ़ी था।'

मस्जिदे हराम की छत पर उनके मददगार खड़े थे जो (दाख़िल होने वाले) उनके दुश्मन पर ऊपर से ईटें वग़ैरह फेंक रहे थे। जब हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने इन दाख़िल होने वालों पर हमला किया, तो उनके सर के बीच में एक ईंट आकर लगी, जिससे उनका सर फट गया, तो खड़े होकर यह शेर पढ़ा—

وَلَسْنَا عَلَى الْأَعْقَابِ تَدْمَى كُلُومُنَا   وَلٰكِنْ عَلَى أَقْدَامِنَا تَقْطُرُ الدِّمَا

'हमारे घावों का ख़ून हमारी एड़ियों पर नहीं गिरा करता है, यानी हम बहादुर हैं। हमें जिस्म के अगले हिस्से पर ज़ख़्म आता है, पिछले हिस्से पर नहीं आता है।'

इसके बाद वह गिर गए, तो उनके दो ग़ुलाम उन पर यह कहते हुए झुके कि ग़ुलाम अपने मालिक की हिफ़ाज़त करता है और अपनी भी हिफ़ाज़त करता है। फिर दुश्मन के लोग चलकर उनके क़रीब आ गए और उन्होंने उनका सर काट लिया।[1]

हज़रत इस्हाक़ बिन अबी इस्हाक़ रह० फ़रमाते हैं कि जिस दिन हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० मस्जिदे हराम में शहीद किए गए, मैं वहां मौजूद था। (मैंने देखा कि) फ़ौजें मस्जिदे हराम के दरवाज़े से दाख़िल होने लगीं। जब भी किसी दरवाज़े से कुछ लोग दाख़िल होते, तो उन पर हज़रत इब्ने ज़ुबैर अकेले हमला करके उनको मस्जिदे हराम से निकाल देते।

वह इसी तरह बहादुरी से लड़ रहे थे कि इतने में मस्जिद के किंगरों में से एक किंगरा उनके सर पर आकर गिरा, जिससे निढाल होकर वह ज़मीन पर गिर पड़े और वह ये शेर पढ़ रहे थे—

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 255, इस्तीआब, भाग 2, पृ० 302, हुलीया, भाग 1, पृ० 331, मुस्तदरक, भाग 3, पृ० 550

أَسْمَاءُ إِنْ قُتِلْتُ لَا تَبْكِيْنِيْ لَمْ يَبْقَ إِلَّا حَسَبِيْ وَدِيْنِيْ
وَصَارِمٌ لَانَتْ بِهِ يَمِيْنِيْ

'ऐ मेरी अम्मा जान हज़रत अस्मा ! अगर मुझे क़त्ल कर दिया जाए तो आप मुझे बिल्कुल न रोएं, क्योंकि मेरी ख़ानदानी शराफ़त और मेरा दीन महफ़ूज़ और बाक़ी है और वह काटने वाली तलवार बाक़ी रह गई है जिसको पकड़ने से मेरा दायां हाथ कमज़ोर और नर्म पड़ता जा रहा है।'[1]

अल्लाह के रास्ते से भाग जाने वाले पर नकीर

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने हज़रत सलमा बिन हिशाम बिन मुग़ीरह की बीवी से कहा, क्या हुआ हज़रत सलमा हुज़ूर सल्ल० और आम मुसलमानों के साथ नमाज़ (जमाअत के साथ) में शरीक होते हुए मुझे नज़र नहीं आते?

उनकी बीवी ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! वह (घर से) बाहर निकल नहीं सकते, क्योंकि जब भी वह बाहर निकलते हैं, लोग शोर मचा देते हैं, ऐ भगोड़े ! क्या तुम अल्लाह के रास्ते से भागे थे? इस वजह से वह अपने घर ही में बैठ गए और बाहर नहीं निकलते और यह ग़ज़वा मूता में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के साथ शरीक हुए थे।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे और मेरे चचेरे भाई के दर्मियान बात बढ़ गई। उसने कहा, क्या तुम मूता की लड़ाई में भागे नहीं थे? मुझे कुछ समझ में न आया कि उसे क्या जवाब दूं?[3]

अल्लाह के रास्ते से भागने पर शर्म और घबराहट

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने लड़ने के लिए एक जमाअत भेजी। मैं भी उसमें था। कुछ लोग लड़ाई

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 256
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 42, बिदाया, भाग 4, पृ० 249
3. हाकिम, भाग 3, पृ० 42

के मैदान से पीछे हटे। मैं भी उन हटने वालों में था। (वापसी पर) हमने कहा कि हमें क्या करना चाहिए? हम तो दुश्मन के मुक़ाबले से भागे हैं और अल्लाह की नाराज़ी को लेकर वापस लौट रहे हैं। फिर हमने कहा कि हम लोग मदीना जाकर रात गुज़ार लेंगे, (फिर उसके बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होंगे।)

फिर हमने कहा, (नहीं) हम सीधे जाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अपने आपको पेश कर देंगे। अगर हमारी तौबा क़ुबूल हो गई तो ठीक है, वरना हम (मदीना छोड़कर कहीं और) चले जाएंगे। हम फ़ज्र की नमाज़ से पहले आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए (हमारी ख़बर मिलने पर) आप बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ये कौन लोग हैं?

हमने कहा, हम तो लड़ाई के मैदान के भगोड़े हैं।

आपने फ़रमाया, नहीं, बल्कि तुम तो पीछे हटकर दोबारा हमला करने वालों में से हो। मैं तुम्हारा और मुसलमानों का मर्कज़ हूं। (तुम मेरे पास आ गए हो, इसलिए भगोड़े नहीं हो) फिर हमने आगे बढ़कर मुबारक हाथ को चूम लिया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने हमें एक सरीया में भेजा। जब हमारा दुश्मन से मुक़ाबला हुआ तो हमें पहले ही हमले में हार का मुंह देखना पड़ा, तो हम कुछ साथी रात के वक़्त मदीना आकर छिप गए।

फिर हमने कहा, बेहतर यह है कि हम लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर अपना उज़्र पेश करें। चुनांचे हम लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए, जब हमारी आपसे मुलाक़ात हुई तो हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम तो लड़ाई के मैदान के भगोड़े हैं।

आपने फ़रमाया, नहीं, तुम तो पीछे हटकर दोबारा हमला करने वाले हो और मैं तुम्हारा मर्कज़ हूं। अस्वद रिवायत करने वाले ने ये लफ़्ज़ नक़ल किए हैं 'और मैं हर मुसलमान का मर्कज़ हूं।'[2]

---

1. इमाम अहमद,
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 27, इब्ने कसीर भाग 2, पृ० 294, इब्ने साद, भाग 5, पृ० 107

बैहक़ी में हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से इसी जैसी हदीस रिवायत की गई है और इसमें यह मज़्मून भी है कि हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम तो लड़ाई के मैदान के भगोड़े हैं।

आपने फ़रमाया, नहीं, तो तुम पीछे हटकर दोबारा हमला करने वाले हो।

हमने कहा, ऐ अल्लाह के नबी ! हमने तो यह इरादा कर लिया था कि हम मदीना न आएं, बल्कि समुद्र का सफ़र करें, कहीं और चले जाएं। (हम तो अपने भागने पर बड़े शर्मिन्दा थे।)

आपने फ़रमाया, ऐसा न करो, क्योंकि मैं हर मुसलमान का मर्कज़ हूं।[1]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि० जब वापस आए तो मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को ज़ोर से यह फ़रमाते हुए सुना, ऐ अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ! क्या ख़बर है?

उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० मस्जिद के अन्दर थे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद मेरे हुजरे के दरवाज़े के पास से गुज़र रहे थे।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ! तुम्हारे पास क्या ख़बर है?

उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं ख़बर लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो रहा हूं। जब वह हज़रत उमर रज़ि० के पास पहुंच गए, तो उन्होंने मुसलमानों को सारे हालात सुनाए। मैंने किसी वाक़िए की उनसे ज़्यादा अच्छी और ज़्यादा तफ़्सीली कारगुज़ारी सुनाने वाला नहीं सुना।

जब हारे हुए मुसलमान आए और हज़रत उमर रज़ि० ने देखा कि लड़ाई के मैदान से भाग आने की वजह से मुहाजिरीन और अंसार मुसलमान घबराए हुए हैं तो फ़रमाया, ऐ मुसलमानों की जमाअत ! तुम न घबराओ। मैं तुम्हारा मर्कज़ हूं, तुम मेरे पास भागकर आए हो। (यह

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 248

लड़ाई के मैदान से भागना नहीं है, बल्कि यह तो तैयारी करके दोबारा लड़ाई के मैदान में जाने के लिए है।)[1]

हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन हुसैन वग़ैरह बयान करते हैं कि क़बीला बनू नज्जार के हज़रत मुआज़ क़ारी रज़ि० उन लोगों में से हैं जो जसरे अबी उबैद की लड़ाई में शरीक हुए थे। जब वह यह आयत पढ़ा करते, तो रो पड़ते—

وَمَنْ يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَى فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

'और जो कोई उनसे फेरे पीठ उस दिन, मगर यह कि हुनर करता हो, लड़ाई का या जा मिलता हो फ़ौज में, सो वह फिरा अल्लाह का ग़ज़ब लेकर और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और वह क्या बुरा ठिकाना है।'

हज़रत उमर रज़ि० उनसे फ़रमाते, ऐ मुआज़! न रोओ, मैं तुम्हारा मर्कज़ हूं। तुम भागकर मेरे पास आए हो।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत साद बिन उबैद रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के सहाबा में से थे और जिस दिन हज़रत अबू उबैद रज़ि० शहीद हुए थे, उस दिन यह लड़ाई के मैदान से भाग गए थे और उनको क़ारी कहा जाता था और हुज़ूर सल्ल० के सहाबा में से किसी और को क़ारी नहीं कहा जाता था।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत साद बिन उबैद रज़ि० से फ़रमाया, क्या आप शाम जाना चाहते हैं? क्योंकि वहां मुसलमान कमज़ोर हो गए हैं और दुश्मन उन पर निडर हो गए हैं। हो सकता है कि शाम जाकर अपने भागने का गुनाह धो लें।

हज़रत साद ने कहा, नहीं। मैं तो उसी इलाक़े में जाऊंगा, जहां से भागकर आया था और उसी दुश्मन के मुक़ाबले में जाऊंगा जिसने मेरे साथ ऐसा मामला किया। (जिससे मैं भागने पर मजबूर हो गया)

1. इब्ने जरीर, भाग 4, पृ० 70
2. इब्ने जरीर, भाग 4, पृ० 70

चुनांचे हज़रत साद क़ादसिया चले गए और वहां जाकर शहीद हो गए।[1]

अल्लाह के रास्ते में जाने वाले को तैयार करना और उसकी मदद करना

हज़रत जबला बिन हारिसा रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० ख़ुद लड़ाई में शरीक न होते तो अपने हथियार हज़रत अली रज़ि० या हज़रत उसामा रज़ि० को दे देते।[2]

हज़रत अनस बिन मलिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़बीला अस्लम के एक नवजवान ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं जिहाद में जाना चाहता हूं, लेकिन तैयारी के लिए मेरे पास माल नहीं है।

आपने फ़रमाया, फ़्लां अंसारी के पास जाओ। उसने जिहाद की तैयारी की हुई थी, अब वह बीमार हो गए हैं। उनसे कहना कि अल्लाह के रसूल सल्ल० तुम्हें सलाम कह रहे हैं और उसको यह भी कहना कि तुमने जिहाद के लिए जो सामान तैयार किया था, वह मुझे दे दो।

चुनांचे वह नवजवान उन अंसारी के पास गया और सारी बात उनसे कह दी, तो उन अंसारी ने अपनी बीवी से कहा, ऐ फ़्लानी ! तुमने जो सामान मेरे लिए तैयार किया था, वह उनको दे दो और उस सामान में से कोई चीज़ न रखना, क्योंकि अल्लाह की क़सम ! तुम इसमें से जो चीज़ भी रखोगी, उसमें अल्लाह बरकत नहीं फ़रमाएंगे।[3]

हज़रत अबू मसऊद अंसारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मेरी सवारी हलाक हो गई है। आप मुझे सवारी दे दें।

आपने फ़रमाया, इस वक़्त तो मेरे पास कोई सवारी नहीं है।

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 300
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 283
3. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 13, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 28

इस पर एक आदमी ने कहा कि मैं इन्हें एक ऐसा आदमी बताता हूं जो उनको सवारी दे देगा।

आपने फ़रमाया, जो आदमी किसी को ख़ैर का रास्ता बताए, तो बताने वाले को करने वाले के बराबर अज्र मिलेगा।[1]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने एक बार लड़ाई में जाने का इरादा फ़रमाया, तो आपने फ़रमाया, ऐ मुहाजिरीन और अंसार की जमाअत! तुम्हारे कुछ भाई ऐसे हैं जिनके पास न माल है और न उनका कोई ख़ानदान है (जो उनको माल दे दे) इसलिए तुममें से हर एक अपने साथ ऐसे दो या तीन आदमियों को मिला ले। (चुनांचे हर सवारी वाले ने अपने साथ ऐसे ग़रीब दो-तीन साथी ले लिए) और हम सवारियों वाले भी उन्हीं की तरह सिर्फ़ अपनी बारी में सवार होते (यानी सवारी के मालिक और दूसरों के सवार होने की बारी बराबर होती थी)

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने भी अपने साथ दो या तीन ग़रीब साथ ले लिए और उनमें से हर एक के सवार होने की जितनी बारी होती थी, मेरी भी उतनी ही होती थी।[2]

हज़रत वासिला बिन असक़अ रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने तबूक की लड़ाई की तैयारी का एलान फ़रमाया, मैं अपने घरवालों के पास गया और वहां से वापस आया तो हुज़ूर सल्ल० की पहली जमाअत जा चुकी थी, तो मैं मदीने में यह एलान करने लगा कि कोई जो एक आदमी को सवारी दे और सवारी वाले को उस आदमी के माले ग़नीमत का हिस्सा सारा मिल जाएगा।

तो एक अंसारी बड़े मियां ने कहा कि हम उसके माले ग़नीमत का हिस्सा इस शर्त पर लेंगे (कि उनको मुस्तक़िल सवारी नहीं देंगे, बल्कि) बारी पर हम उसको सवार करेंगे और वह खाना भी हमारे साथ खाएगा।

---

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 147, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 28
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 178, हाकिम, भाग 2, पृ० 90

मैंने कहा, ठीक है।

उसने कहा, फिर अल्लाह का नाम लेकर चलो।

मैं उस अच्छे साथी के साथ चल पड़ा। जब अल्लाह ने हमें माले ग़नीमत दिया, तो मेरे हिस्से में कुछ जवान ऊंट आए। मैं वह ऊंट हांक कर अपने उस साथी के पास ले गया। वह बाहर आया और एक ऊंट के पीछे के थैले पर बैठ गया और कहने लगा, इन ऊंटों को पीछे ले आओ। (मैं पीछे ले गया) फिर उसने कहा, इनको आगे ले जाओ। (मैं उनको आगे ले गया)

फिर उसने कहा, मुझे तो तुम्हारे ये जवान ऊंट बड़े अच्छे नज़र आ रहे हैं।

मैंने कहा, यही तो वह माले ग़नीमत है जिसके देने का मैंने एलान किया था।

उस बड़े मियां ने कहा, तुम अपने ये जवान ऊंट ले जाओ। ऐ मेरे भतीजे! हमारा इरादा तो तुम्हारे माले ग़नीमत के अलावा कुछ और लेने का था। इमाम बैहक़ी कहते हैं कि इसका मतलब यह है कि हमने तुम्हारे साथ जो कुछ किया है, उसके बदले में हम दुनिया में मज़दूरी लेना नहीं चाहते, बल्कि हमारा इरादा तो अज्र व सवाब में शरीक होने का था।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं अल्लाह के रास्ते में किसी को कोड़ा दूं, यह मुझे एक हज के बाद दूसरा हज करने से ज़्यादा महबूब है।[2]

मुआवज़ा लेकर जिहाद में जाना

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूर सल्ल० ने एक सरीए में भेजा। एक आदमी ने कहा, मैं आपके साथ इस शर्त पर जाता हूं कि आप मेरे लिए माले ग़नीमत में से एक मिक़्दार मुक़र्रर कर

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 28
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 284

दें, फिर वह कहने लगा अल्लाह की क़सम ! मुझे पता नहीं, तुम्हें माले ग़नीमत मिलेगा या नहीं। इसलिए आप मेरे लिए हिस्से की मिक़्दार मुक़र्रर कर दें।

मैंने उसके लिए तीन दीनार मुक़र्रर कर दिए। हम लड़ाई में गए और हमें ख़ूब माले ग़नीम्त मिला। मैंने उस आदमी को देने के बारे में नबी करीम सल्ल० से पूछा, हुज़ूर सल्ल० ने इसके बारे में फ़रमाया, मुझे तो उसे दुनिया और आख़िरत में बस यही तीन दीनार मिलते हुए नज़र आ रहे हैं जो उसने ले लिए हैं (और उसे सवाब नहीं मिलेगा।)[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन वैलमी रह० से रिवायत है कि हज़रत याली बिन मुनैह रज़ि० ने फ़रमाया कि एक बार हुज़ूर सल्ल० ने लड़ाई में जाने के लिए एलान फ़रमाया। मैं बहुत बूढ़ा था और मेरे पास कोई नौकर भी नहीं था। मैं मज़दूरी पर लड़ाई में जाने वाला आदमी खोजने लगा कि मैं उसे माले ग़नीमत में से उसका पूरा हिस्सा दूंगा, तो मुझे एक आदमी मिल गया।

जब लड़ाई में जाने का वक़्त क़रीब आया, तो वह मेरे पास आकर कहने लगा, कि पता नहीं माले ग़नीमत के कितने हिस्से बनेंगे और मेरा कितना हिस्सा होगा, इसलिए कुछ मिक़्दार मुक़र्रर कर दो, पता नहीं माले ग़नीमत मिलेगा या नहीं ? चुनांचे मैंने उनके लिए तीन दीनार मुक़र्रर कर दिया।

जब माले ग़नीमत आया तो मैंने उसे उसका पूरा हिस्सा देना चाहा, लेकिन मुझे वे (तीन) दीनार याद आ गए। चुनांचे मैं नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उस आदमी की सारी बात मैंने आपको बताई।

आपने फ़रमाया, मेरे ख़्याल में तो उसे उस लड़ाई के बदले में दुनिया और आख़िरत में सिर्फ़ वे तीन दीनार ही मिलेंगे जो उसने मुक़र्रर किए थे। (न सवाब मिलेगा, न माले ग़नीमत का हिस्सा)[2]

---

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 323
2. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 331

दूसरे के माल पर लड़ाई में जाने वाला

हज़रत मैमूना बिन्त साद रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमें उस आदमी के बारे में बताएं जो ख़ुद लड़ाई में न जाए और अपना माल दूसरे को दे दे, ताकि वह इस माल को लेकर लड़ाई में चला जाए। तो उससे देनेवाले को सवाब मिलेगा या लड़ाई में जानेवाले को मिलेगा ?

आपने फ़रमाया, देनेवाले को उसके माल का सवाब मिलेगा और जानेवाला जैसी नीयत करेगा, उसे वैसा मिलेगा। (अगर सवाब की नीयत करेगा तो सवाब मिलेगा, वरना सिर्फ़ माल मिलेगा, सवाब नहीं मिलेगा)[1]

अपने बदले में दूसरे को भेजना

हज़रत अली बिन रबीआ असदी रह० फ़रमाते हैं कि एक आदमी हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० के पास अपने बेटे को लड़ाई में अपनी जगह भेजने के लिए लाया, तो हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि बूढ़े की राय मुझे जवान के लड़ाई में जाने से ज़्यादा पसन्द है।[2]

अल्लाह के रास्ते में निकलने के लिए मांगने पर नकीर

हज़रत नाफ़ेअ रह० फ़रमाते हैं कि एक ताक़तवर नवजवान मस्जिद में आया, उसके हाथ में लम्बे-लम्बे तीर थे और वह कह रहा था कि अल्लाह के रास्ते में जाने के लिए कौन मेरी मदद करेगा ?

हज़रत उमर रज़ि० ने उसे बुलाया। लोग उसे लेकर हज़रत उमर रज़ि० के पास आए। आपने फ़रमाया कि अपने खेत में काम कराने के लिए कौन इसे मुझसे मज़दूरी पर लेता है ?

एक अंसारी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं लेता हूं।

आपने फ़रमाया, हर महीने इसे कितनी तनख़्वाह दोगे ?

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 164
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 323

उस अंसारी ने कहा, इतनी दूंगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इसे ले जाओ। चुनांचे उस नवजवान ने उस अंसारी के खेत में कई महीने काम किया। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उस अंसारी से पूछा कि हमारे मज़दूर का क्या हुआ?

उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! वह बहुत नेक आदमी है।

आपने फ़रमाया कि उसे मेरे पास ले आओ और इसकी जितनी तनख़्वाह जमा हो गई है, वह भी मेरे पास ले आओ। चुनांचे वह उस नवजवान को भी साथ लाए और उसके साथ दिरहमों की एक थैली भी लाए।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, लो यह थैली। अब अगर तुम चाहो तो (इन दिरहमों को लेकर) लड़ाई में चले जाओ और अगर चाहो तो (घर) बैठ जाओ।[1]

अल्लाह के रास्ते में जाने के लिए क़र्ज़ लेना

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने आकर कहा, क्या आपने अल्लाह के रसूल सल्ल० को घोड़ों के बारे में कुछ फ़रमाते हुए सुना है?

मैंने कहा, हां। मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना कि घोड़ों की पेशानियों में क़ियामत तक ख़ैर रख दी गई है। अल्लाह के भरोसे पर ख़रीदो और अल्लाह के भरोसे पर क़र्ज़ लो।

किसी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम अल्लाह के भरोसे पर कैसे ख़रीदें और अल्लाह के भरोसे पर कैसे उधार लें?

आपने फ़रमाया, तुम क़र्ज़ देनेवाले से यह कहो कि हमें क़र्ज़ अभी दे दो। जब माले ग़नीमत में से हमारा हिस्सा हमें मिलेगा, तो हम उस वक़्त अदा कर देंगे और बेचने वाले से यह कहो कि चीज़ हमें अभी बेच दो। जब अल्लाह जीत और माले ग़नीमत हमें दे देगा, हम उस

1. कंज़, भाग 2, पृ० 217

वक़्त क़ीमत अदा कर देंगे और जब तक तुम्हारा जिहाद हरा-भरा रहेगा, तुम ख़ैर पर रहोगे और आख़िर ज़माने में लोग जिहाद में शक करने लग जाएंगे, तो उनके ज़माने में तुम जिहाद भी करना और फिर लड़ाई में अपनी जान भी पेश कर देना, क्योंकि लड़ाई में जाना उस दिन भी हरा-भरा होगा (उस पर आज की तरह अल्लाह की मदद भी आएगी और माले ग़नीमत भी मिलेगा)[1]

अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले को विदा करने के लिए साथ जाना और उसे अलविदा कहना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा को (काब बिन अशरफ़ को क़त्ल करने के लिए) भेजा तो (उनको विदा करने के लिए) हुज़ूर सल्ल० उनके साथ चलकर बक़ीअ ग़रक़द तक गए, फिर आपने फ़रमाया, अल्लाह का नाम लेकर जाओ (और यह दुआ दी) ऐ अल्लाह ! इनकी मदद फ़रमा ।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन काब क़ुरज़ी रज़ि० कहते हैं कि एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद रज़ि० को खाने के लिए बुलाया गया। जब वह आए तो उन्होंने कहा, कि हुज़ूर सल्ल० जब किसी फ़ौज को रवाना फ़रमाते, तो यह फ़रमाते—

أَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكُمْ وَاَمَانَتَكُمْ وَخَوَاتِيْمَ اَعْمَالِكُمْ.

'मैं तुम्हारे दीन को तुम्हारी अमानतों और तुम्हारे अमल के ख़ात्मे को अल्लाह के सुपुर्द करता हूं।'[3]

हज़रत हसन बसरी रह० हज़रत उसामा रज़ि० की फ़ौज को रवाना करने की हदीस को बयान करते हैं, जिसमें यह मज़्मून भी है कि फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० बाहर तशरीफ़ ले आए और उस फ़ौज के पास गए

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 280
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 98
3. हाकिम, भाग 3, पृ० 97

और उनको रवाना फ़रमाया और उनको इस तरह विदा किया कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० खुद पैदल चल रहे थे और हज़रत उसामा रज़ि० सवार थे और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० हज़रत अबूबक्र रज़ि० की सवारी की लगाम पकड़कर चल रहे थे, तो हज़रत उसामा ने उनसे अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा ! या तो आप भी सवार हो जाएं, वरना मैं सवारी के नीचे उतरता हूं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! न तुम उतरोगे और अल्लाह की क़सम ! न मैं सवार हूंगा। इसमें मेरा क्या हरज है कि मैं थोड़ी देर अपने पांव अल्लाह के रास्ते में धूल से भर लूं, क्योंकि ग़ाज़ी जो क़दम भी उठाता है, उसके लिए हर क़दम पर सात सौ नेकियां लिखी जाती हैं और उसके सात सौ दर्जे बुलन्द किए जाते हैं और उसके सात सौ गुनाह मिटाए जाते हैं।

जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० उनको विदा करके वापस आने लगे, तो उन्होंने हजरत उसामा रज़ि० से कहा, अगर तुम मुनासिब समझो तो हज़रत उमर रज़ि० को मेरी मदद के लिए यहां छोड़ जाओ।

चुनांचे हज़रत उसामा रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० को मदीना हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास रह जाने की इजाज़त दे दी।[1]

हज़रत यह्या बिन सईद रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने शामदेश को (चार) फ़ौजें भेजीं। उनमें से एक फ़ौज के हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान अमीर थे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान को विदा करने के लिए उनके साथ पैदल चलने लगे। हज़रत यज़ीद ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कहा, या तो आप भी सवार हो जाएं या फिर मैं भी सवारी से नीचे उतरता हूं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हें नीचे उतरने की इजाज़त नहीं और मैं खुद सवार नहीं हूंगा, क्योंकि मेरे जो क़दम अल्लाह के रास्ते में पड़ रहे हैं, मुझे उन पर अल्लाह से सवाब की उम्मीद है। आगे

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 314

हदीस और भी हैं।[1]

हज़रत जाबिर हुऐनी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० एक फ़ौज को विदा करने के लिए उसके साथ पैदल गए और फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसके रास्ते में हमारे पांव धूल में सनें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० से किसी ने पूछा, हमारे पांव अल्लाह के रास्ते में कैसे धूल में सनेंगे? हम तो उनको विदा करने आए हैं। (अल्लाह के रास्ते में नहीं निकले।)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, हमने उनको तैयार किया और उनको (यहां तक) विदा करने आए और उनके लिए दुआ की (इसलिए हमारे ये क़दम भी अल्लाह के रास्ते में हैं।)[2]

हज़रत मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक लड़ाई में गया तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० हमें विदा करने के लिए हमारे साथ गए। जब हमें विदा करके वापस जाने लगे, तो फ़रमाया, आप दोनों को देने के लिए इस वक़्त मेरे पास कुछ है नहीं, लेकिन मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जब किसी चीज़ को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया जाए तो अल्लाह उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं। इसलिए मैं आप लोगों के दीन को और अमानत को और आप लोगों के अमल के ख़ात्मे को अल्लाह के सुपुर्द करता हूं।[3]

जिहाद से वापस आने वाले ग़ाज़ियों का स्वागत करना

हजरत साइब बिन यज़ीद रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० तबूक की लड़ाई से वापस मदीना तशरीफ़ लाए तो लोगों ने आपका स्वागत किया और मैंने भी बच्चों के साथ सनीयतुल वदाअ जाकर हुज़ूर सल्ल० का स्वागत किया।[4]

1. कंज़, भाग 2, पृ० 295
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 173, कंज़, भाग 2, पृ० 288
3. बैहक़ी भाग 9, पृ० 173
4. अबू दाऊद

हज़रत साइब रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० तबूक की लड़ाई से वापस तशरीफ़ लाए तो आपका स्वागत करने के लिए सनीयतुल वदाअ तक आए। मैं नवउम्र बच्चा था, मैं भी लोगों के साथ आ गया और हमने आपका स्वागत किया।[1]

रमज़ान में अल्लाह के रास्ते में निकलना

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमने हुज़ूर सल्ल० के साथ बद्र की लड़ाई और मक्का की जीत का सफ़र रमज़ान शरीफ़ में किया।[2]

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने दो लड़ाइयों का सफ़र हुज़ूर सल्ल० के साथ रमज़ान शरीफ़ में किया। एक बद्र की लड़ाई का और दूसरे मक्का की जीत का, और हमने दोनों में रोज़ा नहीं रखा था।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई में शरीक होने वाले सहाबा तीन सौ तेरह थे, जिनमें मुहाजिर छिहत्तर थे और कुफ़्फ़ार को बद्र में सत्तरह रमज़ान को जुमा के दिन हार का मुंह देखना पड़ा था।[4]

इमाम बज़्ज़ार ने भी यही रिवायत ज़िक्र की है, लेकिन उसमें यह है कि बद्र वाले तीन सौ दस से कुछ ज़्यादा थे और उनमें अंसार दो सौ छत्तीस थे और उस दिन मुहाजिरीन का झंडा हज़रत अली रज़ि० के पास था।[5]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० अपने सफ़र में तशरीफ़ ले गए और हज़रत अबू रुह्म कुलसूम बिन हुसैन बिन उत्बा बिन ख़लफ़ ग़िफ़ारी रज़ि० को मदीना में अपना ख़लीफ़ा बनाकर गए और दस रमज़ान को यह सफ़र हुज़ूर सल्ल० ने शुरू फ़रमाया।

आपने भी रोज़ा रखा हुआ था और आपके साथ तमाम लोगों ने

---

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 175
2. फ़त्ह, भाग 4, पृ० 131
3. कंज़, भाग 4, पृ० 329
4. बिदाया, भाग 3, पृ० 269
5. हैसमी, भाग 6, पृ० 93

भी रोज़ा रखे छोड़ा था। जब आप उस्फ़ान और उमज नामी जगह के बीच कदीद चश्मे पर पहुंचे तो आपने रोज़ा इफ़्तार फ़रमा दिया। फिर वहां से चलकर आप मर्रज़्ज़हरान जाकर ठहरे। आपके साथ दस हज़ार सहाबा थे।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० मक्का के जात के साल रमज़ान में तशरीफ़ ले गए और आपने रोज़ा रखा हुआ था और रास्ते में ठीक दोपहर के वक़्त कदीद नामी जगह पर आपका गुज़र हुआ। लोगों को प्यास लग गई और लोग (पानी की खोज में) गरदनें लम्बी करने लगे और वे पानी पीने के लिए बेताब हो गए।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने पानी का एक प्याला मंगवाया और अपने हाथ में पकड़ लिया यहां तक कि सब लोगों ने वह प्याला देख लिया। फिर आपने पानी पिया और बाक़ी सब लोगों ने भी पानी पिया।[2]

अल्लाह के रास्ते में निकलने वाले का नाम लिखना

बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना कि कोई मर्द (ना महरम) औरत के साथ तंहाई में हरगिज़ न मिले और न ही कोई औरत महरम के बग़ैर सफ़र करे तो एक आदमी ने खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़्लां ग़ज़वा में मेरा नाम लिखा गया है और इधर मेरी बीवी हज करने जा रही है।[3] (अब मैं क्या करूं जिहाद में जाऊं या बीवी के साथ हज करने जाऊं?)

अपने फ़रमाया, अपनी बीवी के साथ हज करने जाओ।

जिहाद से वापसी पर नमाज़ पढ़ना और खाना पकाना

बुख़ारी की रिवायत में है कि हज़रत काब रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० किसी सफ़र से चाश्त के वक़्त वापस तशरीफ़ लाते

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 285, हैसमी, भाग 6, पृ० 167
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 330, जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 159
3. अब्दुर्रज़्ज़ाक़, इब्ने अबी शैबा

तो मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और बैठने से पहले दो रक्अत नमाज़ पढ़ते। बुख़ारी में दूसरी रिवायत हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह की है कि वह फ़रमाते हैं कि मैं एक सफ़र में हुज़ूर सल्ल० के साथ था। जब हम मदीना वापस आए तो आपने मुझसे फ़रमाया, मस्जिद में जाकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ लो।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से बुख़ारी शरीफ़ में एक और हदीस है कि हुज़ूर सल्ल० जब मदीना तशरीफ़ लाते तो आप ऊंट या गाय ज़िब्ह फ़रमाते।

मुआज़ की रिवायत में यह भी है कि हज़रत मुहारिब कहते हैं कि उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से सुना कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे एक ऊंट दो औक़िया और एक दिरहम या दो दिरहम के बदले में ख़रीदा। जब आप सिरार कुंएं पर पहुंचे तो आपके फ़रमाने पर एक गाय ज़िब्ह की गई और लोगों ने उसका गोश्त खाया। जब आप मदीना पहुंच गए तो मुझे हुक्म दिया कि मस्जिद में जाकर दो रक्अत पढ़ूं और आपने ऊंट की क़ीमत तौल कर दी।

औरतों का अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए निकलना

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० सफ़र में जाने का इरादा फ़रमाते तो अपनी मुबारक बीवियों के दर्मियान क़ुरआ डालते, जिसका नाम क़ुरआ में निकल आता, उसको हुज़ूर सल्ल० अपने साथ ले जाते।

जब बनू मुस्तलक़ की लड़ाई हुई तो अपनी आदत के मुताबिक़ अपनी बीवियों के नाम पर क़ुरआ डाला, जिसमें हुज़ूर सल्ल० के साथ जाने के लिए मेरा नाम निकल आया। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० मुझे साथ लेकर इस सफ़र में तशरीफ़ ले गए। उस ज़माने में गुज़ारे के बक़द्र बहुत कम खाया करती थी, जिसकी वजह से गोश्त कम होता था और जिस्म भारी नहीं हुआ करता था। जब लोग मेरे ऊंट पर कजावा बांधने लगते तो मैं अपने हौदज में बैठ जाती। फिर वह लोग आते जो मेरे ऊंट पर कजावा बांधते और हौदज को नीचे से पकड़कर मुझे उठाते और ऊंट की पीठ पर

रखकर उसे रस्सी से बांध देते, फिर ऊंट की रस्सी को आगे से पकड़कर ले चलते।

जब वह सफ़र पूरा हो गया तो आपने वापसी में मदीना के क़रीब एक जगह पड़ाव डाला और रात का कुछ हिस्सा वहां गुज़ारा। फिर मुनादी ने लोगों में कूच करने का एलान किया। चुनांचे लोग वहां से चल पड़े।

मैं उस वक़्त ज़रूरत पूरी करने के लिए बाहर गई हुई थी। मेरे गले में एक हार था जो यमन के (क़बीला हिमयर के शहर) ज़फ़ार की कूड़ियों का बना हुआ था। जब मैं अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ होकर उठी तो वह मेरे गले से गिर गया और मुझे पता न चला। जब मैं कजावे के पास पहुंची तो मैंने इस हार को अपनी गरदन में खोजा तो वह मुझे न मिला और लोगों ने वहां से चलना शुरू कर दिया।

मैं जिस जगह गई थी, वहां जाकर मैंने उसे खोजा, मुझे वहां मिल गया। जो लोग मेरे ऊंट का कजावा बांधा करते थे, वे कजावा बांध चुके थे। वे मेरे बाद आए और यह समझे कि मैं अपनी आदत के मुताबिक़ हौदज में हूं, इसलिए उन्होंने हौदज उठाकर ऊंट पर बांध दिया। (इन्हें हौदज के हलका होने का एहसास भी न हुआ, क्योंकि मेरा जिस्म बहुत हलका था) और उन्हें उसमें मेरे होने का शक भी न गुज़रा। फिर वे ऊंट की नकेल पकड़कर चले गए।

मैं जब फ़ौज की जगह वापस आई, तो वहां कोई नहीं था, सब लोग जा चुके थे। मैं अपनी चादर में लिपट गई और उसी जगह लेट गई और मुझे यक़ीन था कि मैं जब नहीं मिलूंगी, तो लोग मुझे खोजने यहां वापस आएंगे।

अल्लाह की क़सम ! मैं वहां लेटी हुई थी कि हज़रत सफ़वान बिन मुअत्तल सुलमी रज़ि० मेरे पास से गुज़रे। वह अपनी किसी ज़रूरत से फ़ौज के पीछे रह गए थे, इसलिए उन्होंने यह रात लोगों के साथ न गुज़ारी। उन्होंने जब मेरा वजूद देखा तो आकर मेरे पास खड़े हो गए और परदे का हुक्म आने से पहले वह मुझे देखा करते थे, इसलिए

उन्होंने जब मुझे देखा, तो (मुझे पहचान लिया और) कहा 'इन्नालिल्लाहि व इन्ना अलैहि राजिऊन०' यह तो अल्लाह के रसूल सल्ल० की क़ाबिले एहतराम बीवी हैं। हालांकि मैं कपड़ों में लिपटी हुई थी।

हज़रत सफ़वान ने कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए, आप कैसे पीछे रह गई हैं?

फ़रमाती हैं, मैंने उनको कोई जवाब न दिया।

फिर उन्होंने ऊंट मेरे क़रीब लाकर कहा, इस पर सवार हो जाओ और ख़ुद मेरे से दूर चले गए। चुनांचे मैं सवार हो गई और उन्होंने ऊंट की नकेल पकड़कर लोगों की तलाश में तेज़-तेज़ चलना शुरू कर दिया। सुबह तक हम लोगों तक न पहुंच सके, और न ही लोगों को मेरे न होने का पता चल सका। उन लोगों ने एक जगह पड़ाव डाला।

जब वे लोग वहां ठहर गए तो इतने में यह (हज़रत सफ़वान) मुझे ऊंट पर बिठाए ऊंट की नकेल पकड़े हुए वहां पहुंच गए। इस पर इफ़्क वालों ने (तोहमत बांधने वालों ने) जो बात बनाई थी, वह बनाकर कहनी शुरू कर दी और सारी फ़ौज में बेचैनी की एक लहर दौड़ गई। अल्लाह की क़सम! मुझे किसी बात की ख़बर नहीं थी।

फिर हम मदीना आ गए। वहां पहुंचते ही मैं बहुत ज़्यादा बीमार हो गई और लोगों में जो बातें हो रही थीं, उनमें से कोई बात भी मुझ तक न पहुंच सकी। अलबत्ता हुज़ूर सल्ल० और मेरी मां-बाप तक सारी बात पहुंच चुकी थी। लेकिन किसी ने मुझसे किसी क़िस्म का ज़िक्र न किया। हां, इतनी बात ज़रूर थी कि मैंने हुज़ूर सल्ल० की वह पहली वाली मेहरबानी न देखी।

मैं जब बीमार हो जाती थी, तो आप मुझ पर बड़ी मेहरबानी फ़रमाते थे। आपने मेरी इस बीमारी में वह कुछ भी न किया। मुझे आपकी इस बात से कुछ खटक महसूस हुई। आप जब घर में दाख़िल होते और मेरे पास आते और मेरे पास मेरी मां को देखभाल करते देखते तो बस इतना फ़रमाते कि अब इसका क्या हाल है? इससे ज़्यादा कुछ न फ़रमाते।

आपकी इस बेरुख़ी को देखकर मुझे बड़ी परेशानी हुई और इस बेरुख़ी को देखकर मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! अगर आप मुझे इजाज़त दें तो मैं अपनी मां के पास चली जाती हूं, वह मेरी देखभाल भी करती रहेंगी।

आपने फ़रमाया, कोई हरज नहीं है। तुम जा सकती हो। चुनांचे मैं अपनी मां के पास चली गई और जो कुछ मदीना में हो रहा था, मुझे इसकी कुछ ख़बर नहीं थी। बीस दिन से ज़्यादा गुज़रने के बाद मेरी सेहत ठीक हुई, लेकिन अभी कमज़ोरी बाक़ी थी, उस वक़्त हम लोग अपने घरों में बैतुलख़ला नहीं बनाया करते थे, जैसे अजमी लोग बनाते थे, बल्कि घरों में बैतुलख़ला को बुरा समझते थे, ज़रूरत पूरी करने के लिए हम लोग मदीना के जंगलों में जाया करते थे और औरतें ज़रूरतें पूरी करने के लिए रात को जाया करती थीं।

एक रात मैं ज़रूरत पूरी करने के लिए बाहर निकली और मेरे साथ हज़रत उम्मे मिस्तह बिन्त अबी रुह्म बिन मुत्तलिब भी थीं। अल्लाह की क़सम ! वह मेरे साथ जा रही थीं कि उनका पांव चादर में अटका और वह गिर गईं, तो उन्होंने कहा, मिस्तह बर्बाद हो।

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम ! तुमने बुरा किया। एक मुहाजिरी, जो कि ग़ज़वा बद्र में शरीक हुआ, उसे तुमने क्या कह दिया।

हज़रत उम्मे मिस्तह ने कहा, ऐ अबूबक्र की बेटी ! क्या अभी तक तुम्हें ख़बर नहीं पहुंची ?

मैंने कहा, कैसी ख़बर ?

इस पर उन्होंने मुझे इफ़्क वालों की सारी बात बताई।

मैंने कहा, ऐसी बात वह कह चुके हैं ?

उन्होंने कहा, हां ! अल्लाह की क़सम ! यह बात उन्होंने कही है।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह की क़सम ! (यह बात सुनकर मेरी हालत तो ऐसी हो गई है कि) मैं ज़रूरत पूरी नहीं कर सकी और मैं वापस आ गई। अल्लाह की क़सम ! फिर तो मैं रोती रही और मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि ज़्यादा रोने की वजह से मेरा जिगर

फट जाएगा और मैंने अपनी मां से कहा, अल्लाह आपकी मग़्फ़िरत फ़रमाए। लोगों ने तो इतनी बातें बना लीं और आपने मुझे कुछ भी नहीं बताया।

उन्होंने कहा, ऐ मेरी बेटी! तुम ज़्यादा परेशान न हो अल्लाह की क़सम! जब किसी आदमी की कोई ख़ूबसूरत बीवी हो और वह उससे मुहब्बत भी करता हो, और उस औरत की और सौतें भी हों तो ये सौतें और दूसरे लोग उसके ऐब के बारे में ज़्यादा बातें ज़रूर करेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने खड़े होकर लोगों में बयान फ़रमाया और मुझे इस बात का कोई इल्म न था। आपने हम्द व सना के बाद फ़रमाया, ऐ लोगो! इन लोगों को क्या हो गया है कि मुझे मेरे घरवालों के बारे में तक्लीफ़ पहुंचाते हैं और उन पर नाहक़ इलज़ाम लगाते हैं? अल्लाह की क़सम! मुझे तो अपने घरवालों के बारे में हमेशा भलाई ही नज़र आई है और अल्लाह की क़सम! जिस मर्द पर इलज़ाम लगा रहे हैं, इसमें हमेशा भलाई ही नज़र आई है। जब भी वह मेरे किसी घर में दाखिल हुआ है, वह मेरे साथ ही दाख़िल हुआ है।

इस बोहतान के उठाने और बढ़ाने में सबसे ज़्यादा हिस्सा अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मुनाफ़िक़ ने लिया था और क़बीला ख़ज़रज के कई आदमियों और हज़रत मिस्तह रज़ि० और हज़रत हमना बिन्त जह्श रज़ि० ने भी उसका साथ दिया था।

हज़रत हमना की दिलचस्पी लेने की वजह यह थी कि उनकी बहन हज़रत ज़ैनब बिन्त जह्श रज़ि० हुज़ूर की ज़ौजा मोहतरमा थीं और हुज़ूर सल्ल० की मुबारक बीवियों में से हज़रत ज़ैनब रज़ि० ही हुज़ूर सल्ल० के यहां क़द्र व मंज़िलत में मेरी बराबरी करती थीं।

अल्लाह ने तो उनको उनकी दीनदारी की बरकत से महफ़ूज़ रखा, इसलिए उन्होंने मेरे बारे में भलाई की बात ही कही, लेकिन हज़रत हमना ने अपनी बहन की वजह से मेरी ज़िद की वजह से मेरी ज़िद में आकर इस बात को बहुत उछाला और फैलाया। इसलिए वह गुनाह लेकर बद-बख़्त बनीं।

जब हुज़ूर सल्ल० ने यह बात फ़रमाई तो हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर वे इलज़ाम लगाने वाले (हमारे क़बीला) औस में से हैं, तो आपको कुछ करने की ज़रूरत नही है, हम उनसे निमट लेंगे, और अगर वे हमारे ख़ज़रजी भाइयों में से हैं, तो आप उनके बारे में जो इर्शाद फ़रमाएं, हम वैसे ही करेंगे। अल्लाह की क़सम ! उनकी तो गरदन उड़ा देनी चाहिए।

इस पर हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० खड़े हो गए और उन्हें इससे पहले नेक और भला आदमी समझा जाता था, उन्होंने कहा ! तुमने ग़लत कहा, इन लोगों की गरदन नहीं उड़ाई जा सकती अल्लाह की क़सम ! तुमने यह सिर्फ़ इस वजह से कही है कि तुम्हें पता है कि वे लोग ख़ज़रज में से हैं। अगर वे तुम्हारे क़ौम में से होते तो तुम यह बात हरगिज़ न कहते।

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर ने कहा, अल्लाह की क़सम ! तुम ग़लत कह रहे हो, तुम ख़ुद मुनाफ़िक़ हो और मुनाफ़िक़ों की तरफ़ से लड़ रहे हो। इस पर लोग एक दूसरे के मुक़ाबले में खड़े हो गए और औस व ख़ज़रज के दोनों क़बीलों में लड़ाई होने ही वाली थी। (लेकिन लोगों ने बीच-बचाव करा दिया)

हुज़ूर सल्ल० मिंबर से उतरकर मेरे पास तशरीफ़ लाए और वह्य आ नहीं रही थी। इसलिए आपने हज़रत अली रज़ि० और हज़रत उसामा रज़ि० को बुलाकर उनसे अपने घरवालों को (यानी हज़रत आइशा रज़ि० को) छोड़ने के बारे में मश्विरा किया। हज़रत उसामा रज़ि० ने तो हुज़ूर सल्ल० के घरवालों की तारीफ़ ही की और ख़ैर की बात ही कही। फिर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप अपने घरवालों को रखें, क्योंकि हमने उनसे हमेशा ख़ैर और भला ही देखा है और यह बोहतान सब झूठ और ग़लत है।

और हज़रत अली रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! औरतें बहुत हैं। आप उनकी जगह किसी और को लाने की क़ुदरत रखते हैं और आप बांदी से पूछ लें वह आपको सारी सच्ची बात बता देगी। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत बरीरा रज़ि० को पूछने के लिए बुलाया।

हज़रत अली रज़ि० ने खड़े होकर हज़रत बरीरा रज़ि० की ख़ूब पिटाई की और कहा, अल्लाह के रसूल सल्ल० से सच्ची बात कहना, तो हज़रत बरीरा रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम ! मुझे उनके बारे में नेकी और भलाई के अलावा और कुछ मालूम नहीं है और मुझे उनमें और कोई ऐब नज़र नहीं आता है, सिर्फ़ यह ऐब नज़र आता है कि मैं उन्हें आटा गूंध कर देती हूं और उनसे कहती हूं कि इस आटा को संभालकर रखना। यह बे-ख़्याली में सो जाती हैं। बकरी आकर आटा खा जाती है।

इसके बाद एक बार फिर हुज़ूर सल्ल० मेरे पास तशरीफ़ लाए। मेरे मां-बाप भी मेरे पास बैठे हुए थे और एक अंसारी औरत भी बैठी हुई थी। मैं भी रो रही थी और वह औरत भी रो रही थी। हुज़ूर सल्ल० बैठ गए और अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! लोग जो कह रहे हैं वह बात तुम तक पहुंच चुकी है, इसलिए तुम अल्लाह से डरो और लोग जो कह रहे हैं, अगर वाक़ई तुमसे कोई बुरा काम हुआ है, तो तुम अल्लाह से तौबा कर लो, क्योंकि अल्लाह अपने बन्दों की तौबा को क़ुबूल फ़रमाते हैं।

अल्लाह की क़सम ! आपके यह फ़रमाते ही मेरे आंसू एकदम रुक गए। इसके बाद एक क़तरा भी न निकला। मैंने कुछ देर इन्तिज़ार किया कि मेरे मां-बाप मेरी ओर से हुज़ूर सल्ल० को जवाब दें, लेकिन वे दोनों कुछ न बोले।

अल्लाह की क़सम ! मैं अपना दर्जा इतना बड़ा नहीं समझती थी कि मेरे बारे में अल्लाह मुस्तक़िल आयतें उतारेंगे। जिनकी तिलावत की जाती रहेगी और जिनको नमाज़ में पढ़ा जाता रहेगा, लेकिन मुझे इसकी उम्मीद थी कि हुज़ूर सल्ल० कोई ऐसा सपना देखेंगे जिससे अल्लाह मुझे इस इलज़ाम से बरी कर देंगे, क्योंकि अल्लाह को तो मालूम है कि मैं इस इलज़ाम से बिल्कुल पाक व साफ़ और बरी हूं। मेरे बारे में क़ुरआन की आयतें आ जाएं, मैं अपना दर्जा इससे कम समझती थी।

जब मैंने देखा कि मेरे मां-बाप जवाब देने के लिए बोल नहीं रहे हैं,

तो मैंने उनसे कहा कि आप दोनों हुज़ूर सल्ल० को जवाब क्यों नहीं देते हैं?

दोनों ने कहा, अल्लाह की क़सम! हमें पता नहीं है कि हम हुज़ूर सल्ल० को क्या जवाब दें।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, मुझे कोई ऐसे घरवाले मालूम नहीं हैं कि जिनको इतनी परेशानी आई हो, जितनी इन दिनों हज़रत अबूबक्र रज़ि० के ख़ानदान वालों को आई थी।

जब मेरे मां-बाप ने मेरे बारे में कुछ नहीं कहा, तो मेरे आंसू निकल आए और मैं रो पड़ी। फिर मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! आपने जो फ़रमाया है मैं उससे कभी तौबा नहीं करूंगी (क्योंकि यह काम मैंने किया ही नहीं है) अल्लाह की क़सम! क्योंकि मैं अच्छी तरह जानती हूं कि लोग कह रहे हैं, अगर मैं उसका इक़रार कर लूं, हालांकि अल्लाह जानते हैं कि मैं इससे बरी हूं, तो मैं ऐसी बात का इक़रार करूंगी जो हुई नहीं है और जो लोग कह रहे हैं, अगर मैं उसका इंकार करूं तो आप लोग मुझे सच्चा नहीं मानेंगे। फिर मैंने हज़्रत याकूब अलै० का नाम लेना चाहा, लेकिन उस वक़्त मुझे याद न आया, तो मैंने कहा कि अब मैं भी वही कहती हूं जो हज़रत यूसुफ़ अलैहि० के वालिद ने कहा था, यानी—

فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝

'अब सब्र ही बेहतर है और अल्लाह ही से मदद मांगता हूं इस बात पर जो तुम ज़ाहिर करते हो।'

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्ल० अपनी मज्लिस से अभी उठे नहीं थे कि अल्लाह की तरफ़ से वह्य उतरने लगी और पहले की तरह आप पर ग़शी छा गई। आपको आपके कपड़े से ढांप दिया गया और चमड़े का एक तकिया आपके सर के नीचे रख दिया गया।

मैंने जब (वह्य उतरने का) यह मंज़र देखा तो न मैं घबराई और न मैंने उसकी परवाह की, क्योंकि मुझे यक़ीन था कि मैं बेक़ुसूर हूं। और

अल्लाह मुझ पर ज़ुल्म नहीं फ़रमाएंगे, और उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में आइशा की जान है, मेरे मां-बाप पर उस वक़्त सख़्त परेशानी की हालत थी और अभी हुज़ूर सल्ल० की यह हालत दूर नहीं हुई थी कि मुझे यक़ीन हो गया कि इस डर से मेरे मां-बाप की जान निकल जाएगी कि कहीं अल्लाह की ओर से लोगों की बात की तस्दीक़ न आ जाए।

फिर जब आपकी हालत ठीक हो गई तो आप बैठ गए। हालांकि सर्दी का मौसम था, लेकिन आपके मुबारक चेहरे से मोतियों की तरह पसीना झलक रहा था। आप अपने चेहरे से पसीना पोंछते हुए फ़रमाने लगे, ऐ आइशा ! तुम्हें ख़ुशख़बरी हो। अल्लाह ने तुम्हारी बराआत (मुक्ति) नाज़िल फ़रमा दी है।

मैंने कहा, अल-हम्दु लिल्लाह !

फिर आप लोगों के पास बाहर तशरीफ़ लाए और उनमें बयान फ़रमाया और इस बारे में जो कुछ नाज़िल हुआ था, वह लोगों को पढ़कर सुनाया। फिर हज़रत मिस्तह बिन असासा रज़ि० और हस्सान बिन साबित और हमना बिन्त जहश रज़ि० के बारे में हुक्म फ़रमाया, जिस पर उन्हें हद लगाई गई। इन लोगों ने इस बेहयाई की बात फैलाने में हिस्सा लिया था।[1]

इमाम अहमद ने यही हदीस बहुत लम्बी बयान की है और उसमें यह भी है कि (जब हुज़ूर सल्ल० ने मेरी बराआत की आयत सुनाई तो) मेरी मां ने मुझसे कहा कि खड़ी होकर हुज़ूर सल्ल० के पास जाओ (और हुज़ूर सल्ल० का शुक्रिया अदा करो)

मैंने कहा कि अल्लाह की क़सम ! मैं खड़ी होकर हुज़ूर सल्ल० के पास नहीं जाऊंगी और मैं तो सिर्फ़ अल्लाह ही की तारीफ़ करूंगी, जिसने मेरी बरात की और अल्लाह ने—

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنكُمْ

से दस आयतें उतारीं, जिसका तर्जुमा इस तरह है—

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 160

'जो लोग लाए हैं यह तूफ़ान, तुम्हीं में एक जमाअत हैं।'

हज़रत अबूक्र रज़ि० हज़रत मिस्तह पर रिश्तेदार होने या ग़रीब होने की वजह से ख़र्च किया करते थे। जब अल्लाह ने मेरी बरात के बारे में ये आयतें उतारीं तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! जब इस मिस्तह ने आइशा के बारे में इतनी बड़ी बात कह दी है, तो अब इसके बाद मैं इस पर कभी ख़र्च नहीं करूंगा। इस पर अल्लाह ने ये आयतें उतारीं—

وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنكُمْ وَالسَّعَةِ أَن يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

'और क़सम न खाएं बड़े दर्जे वाले तुममें से और वुसअत वाले इस पर कि दें क़राबतदारों को और मुहताजों को और वतन छोड़ने वालों को अल्लाह की राह में और चाहिए कि माफ़ करें और दरगुज़र करें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुमको माफ़ करे और अल्लाह बख़्शने वाला है मेहरबान।'

(इस आयत को सुनकर) हज़रत अबूबक्र ने कहा, हां, अल्लाह की क़सम ! मैं चाहता हूं कि अल्लाह मुझे माफ़ फ़रमाए। फिर हज़रत मिस्तह को जो ख़र्चा दिया करते थे, वह देना शुरू कर दिया और फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! मैं इनका ख़र्च कभी नहीं रोकूंगा।[1]

क़बीला बनू ग़िफ़ार की एक औरत फ़रमाती हैं कि मैं बनू ग़िफ़ार की औरतों के साथ हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुई। आप ग़ज़वा ख़ैबर में तशरीफ़ ले जा रहे थे। हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम भी आपके साथ इस सफ़र में जाना चाहती हैं। हम घायलों की मरहम पट्टी करेंगी और जितना हो सका हम मुसलमानों की मदद करेंगी।

आपने फ़रमाया, अल्लाह बरकत दे। चलो। हम भी आपके साथ हो गईं। मैं नवउम्र लड़की थी। हुज़ूर सल्ल० ने अपने कजावे के पीछे के थैले पर मुझे अपने पीछे बिठा लिया।

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 270, मज्मा भाग 9, पृ० 232

अल्लाह की क़सम ! हुज़ूर सल्ल० सुबह के क़रीब नीचे उतरे और ऊंटनी बिठा दी, तो मैं भी कजावे के थैले से उतर गई तो मैंने देखा कि थैले को मेरा ख़ून लगा हुआ है और यह मुझे पहला हैज़ आया था। मुझे शर्म आ गई और मैं सिमटकर ऊंटनी की ओर चली गई।

जब हुज़ूर सल्ल० ने मुझे इस हाल में देखा तो आपने फ़रमाया, तुम्हें क्या हुआ ? शायद तुम्हें हैज़ आ गया है ?

मैंने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, अपनी हालत ठीक कर लो। फिर एक बरतन में पानी लेकर उसमें नमक डाल लो, फिर कजावे के थैले को जहां ख़ून लगा हुआ है, वह धो लो। फिर अपनी जगह जाकर बैठ जाओ। फिर अल्लाह ने ख़ैबर को जिता दिया तो हुज़ूर सल्ल० ने हमें भी माले ग़नीमत में से कुछ हिस्सा दिया और यह हार जो तुम मेरे गले में देख रही हो, यह हुज़ूर सल्ल० ने मुझे दिया था और अपने हाथ से मेरे गले में डाला था। अल्लाह की क़सम ! यह हार कभी भी मेरे जिस्म से अलग न होगा। चुनांचे इंतिक़ाल तक वह हार उनके गले में रहा।

फिर उन्होंने (मरते वक़्त) वसीयत की कि यह हार उनके साथ क़ब्र में दफ़्न कर दिया जाए और वह जब भी हैज़ से पाक होतीं तो वह ग़ुस्ल के पानी में नमक ज़रूर डालतीं और मरते वक़्त यह वसीयत भी की कि उनके ग़ुस्ल के पानी में नमक ज़रूर डाला जाए।[1]

हज़रत हुमैद बिन हिलाल रह० फ़रमाते हैं कि क़बीला तुफ़ावा के एक आदमी जिनकी गुज़रगाह हमारी तरफ़ थी, (वह आते जाते हुए) हमारे क़बीले से मिलते और उनको हदीसें सुनाया करते थे।

उन्होंने एक बार कहा कि मैं एक बार अपने तिजारती क़ाफ़िले के साथ मदीना गया, वहां हमने अपना सामान बेचा। फिर मैंने अपने जी में कहा कि मैं उस आदमी यानी हुज़ूर सल्ल० के साथ जाता हूं और उनके हालात लेकर अपने पीछे रह जाने वालों को जाकर बताऊंगा।

जब मैं हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंचा, तो आपने मुझे एक घर

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 204

दिखाकर फ़रमाया, इस घर में एक औरत थी। वह मुसलमानों के साथ एक सरीए में गई और वह घर में बारह बकरियां और अपना एक कपड़ा बुनने का ब्रुश जिससे वह कपड़ा बुना करती थी, छोड़कर गई तो उसकी एक बकरी और ब्रुश गुम हो गया। वह औरत कहने लगी, ऐ रब ! जो आदमी तेरे रास्ते में निकले, उसकी हर तरह की हिफ़ाज़त का तूने ज़िम्मा लिया हुआ है (और मैं तेरे वास्ते में गई थी, पीछे) मेरी बकरियों में से एक बकरी और कपड़ा बुनने वाला ब्रुश गुम हो गया है। मैं तुझे अपनी बकरी और ब्रुश के बारे में क़सम देती हूं (कि मुझे वापस फ़रमा दे।)

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० उस तुफ़ावी आदमी को बताने लगे कि उस औरत ने किस तरह अपने रब से जोश व खरोश से दुआ की।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसकी वह बकरी और उस जैसी एक और बकरी और उसका वह ब्रुश और उस जैसा एक और ब्रुश उसको (अल्लाह के ग़ैबी ख़ज़ाने से) मिल गया। यह है वह औरत अगर तुम चाहो तो उससे जाकर पूछ लो।

उस तुफ़ावी आदमी ने कहा कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, नहीं (मुझे उसे औरत से पूछने की ज़रूरत नहीं है) बल्कि मैं आपसे सुनकर उसकी तस्दीक़ करता हूं (मुझे आपकी बात पर पूरा यक़ीन है)।[1]

बुख़ारी में यह रिवायत है कि हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० हज़रत (उम्मे हराम) बिन्त मिलहान रज़ि० के घर तशरीफ़ ले गए और उनके यहां जाकर टेक लगाकर सो गए और मुस्कराते हुए उठे। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप क्यों मुस्करा रहे हैं ?

आपने फ़रमाया, (मैंने ख़्वाब देखा है) कि मेरी उम्मत के कुछ लोग अल्लाह के रास्ते में समुद्र का सफ़र करेंगे और वे ऐसे होंगे जैसे बादशाह तख़्त पर (बैठे) होते हैं।

हज़रत बिन्त मिलहान ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 277

अल्लाह से दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह मुझे उन लोगों में शामिल फ़रमा दे।

हुज़ूर सल्ल० ने दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! इसे उन लोगों में शामिल फ़रमा दे। आपने दोबारा आराम फ़रमाया और मुस्कराते हुए उठे।

हज़रत बिन्ते मिलहान ने आपसे फिर वही कहा। आपने फिर वही जवाब दिया (कि इस बार ख़्वाब में उम्मत की दूसरी जमाअत देखी है)

हज़रत बिन्ते मिलहान ने फिर अर्ज़ किया कि अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह मुझे उन लोगों में भी शामिल फ़रमा दे। आपने फ़रमाया, तुम पहली जमाअत में से होगी, दूसरी जमाअत में नहीं होगी।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत बिन्ते मिलहान ने हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० से शादी की (और उनके साथ जमाअत में गई) और (हज़रत मुआविआ रज़ि० की बीवी) हज़रत बिन्ते क़ुरज़ा के समुद्र का सफ़र किया। वापसी में अपने जानवर पर सवार होने लगीं। वह जानवर बिदका। यह उससे गिर गईं। और वहीं (क़बरस जज़ीरे में) उनका इंतिक़ाल हो गया।

अल्लाह के रास्ते में निकलकर औरतों का ख़िदमत करना

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० फ़रमाती हैं कि अंसार की औरतें हुज़ूर सल्ल० के साथ ग़ज़वे में जाया करती थीं। बीमारों को पानी पिलाया करती थीं और घायलों की मरहम पट्टी किया करती थीं।[1]

इमाम मुस्लिम और तिर्मिज़ी ने रिवायत की है कि हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० हज़रत उम्मे सुलैम को और उनके साथ अंसार की कुछ औरतों को लड़ाई में साथ ले जाते थे। ये औरतें पानी पिलाया करती थीं और घायलों की मरहम-पट्टी किया करती थीं। इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को सही क़रार दिया है।

बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत रुबैअ बिन्त मुअव्वज़ रज़ि०

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 324

फ़रमाती हैं कि जो औरतें हुज़ूर सल्ल० के साथ लड़ाइयों में जाया करती थीं, पानी पिलाया करतीं और घायलों की मरहम-पट्टी किया करतीं और शहीद होने वालों को वापस लातीं।

बुख़ारी में इन्हीं से दूसरी रिवायत में यह है कि हम औरतें हुज़ूर सल्ल० के साथ लड़ाइयों में जाकर लोगों को पानी पिलातीं और उनकी ख़िदमत करतीं और शहीद होने वालों को और घायलों को मदीना वापस लातीं। (जबकि लड़ाई मदीना के क़रीब होती)।[1]

मुस्नद अहमद, मुस्लिम और इब्ने माजा में हज़रत उम्मे अतीया अंसारिया रज़ि० से रिवायत है कि वह फ़रमाती हैं कि मैं सात लड़ाइयों में हुज़ूर सल्ल० के साथ गई। (ये लोग तो लड़ाई के मैदान में चले जाते) मैं पीछे उनकी क़ियामगाहों में रहती और उनके लिए खाना तैयार करती और घायलों की दवा-दारू करती और मुस्तक़िल बीमारों की ख़िदमत करती।[2]

हज़रत लैला ग़िफ़ारिया रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० के साथ लड़ाई में जाकर घायलों की मरहम-पट्टी किया करती।[3]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि उहुद की लड़ाई के दिन मुसलमान हार गए और वे हुज़ूर सल्ल० के साथ न रह सके। मैंने हज़रत आइशा बिन्त अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० को देखा कि दोनों ने चादरें ऊपर चढ़ाई हुई हैं और मुझे उनकी पिंडुलियों के पाज़ेब नज़र आ रहे थे। वे मश्कें लिए हुई तेज़ी से दौड़ती हुई आतीं।

दूसरे रिवायत करने वाले ने यह मज़्मून नक़ल किया है कि ये दोनों अपनी कमर पर मश्कें उठाकर लातीं और घायल लोगों के मुंह में पानी डालतीं, फिर वापस चली जातीं। फिर मश्कें भरकर लातीं और घायल लोगों के मुंह में पानी डालतीं।[4]

---

1. मुन्तख़ब
2. मुन्तख़ब
3. हैसमी, भाग 5, पृ० 324
4. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 30

हज़रत सालबा बिन अबी मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने एक बार मदीना की औरतों में ऊनी चादरें बांटीं, तो एक चादर बच गई तो एक आदमी जो आपके पास बैठा हुआ था, उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! हुज़ूर सल्ल० की नवासी जो आपके निकाह में हैं यह चादर उसे दे दें यानी हज़रत अली रज़ि० की साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम को।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि हज़रत उम्मे सुलैत रज़ि० इस चादर की ज़्यादा हक़दार हैं और हज़रत उम्मे सुलैत रज़ि० अंसार की उन औरतों में से थीं जिन्होंने हुज़ूर सल्ल० से बैअत की थी। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि हज़रत उम्मे सुलैत उहुद की लड़ाई में हमारे लिए मश्कें भरकर लाती थीं या सिला करती थीं।[1]

अबू दाऊद में यह रिवायत है कि हज़रत हशरज बिन ज़ियाद की दादी रज़ि० फ़रमाती हैं कि औरतें भी हुज़ूर सल्ल० के साथ ग़ज़वा ख़ैबर में गई थीं। इस हदीस में यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने औरतों से इस ग़ज़वे में जाने के बारे में पूछा कि वे क्यों साथ जा रही हैं? तो उन औरतों ने कहा, हम इसलिए साथ निकली हैं कि हम बालों की रस्सियां बटेंगी जिससे अल्लाह के रास्ते में निकलने में मदद करेंगी और हम घायलों का इलाज करेंगी और तीर पकड़ाएंगी और सत्तू घोलकर पिलाएंगी।

हज़रत ज़ोहरी रह० फ़रमाते हैं कि औरतें भी हुज़ूर सल्ल० के साथ लड़ाइयों में जाया करती थीं, लड़ने वालों को पानी पिलाया करती थीं और घायलों की मरहम-पट्टी किया करती थीं।[2]

औरतों का अल्लाह के रास्ते में निकलकर लड़ाई करना

हज़रत सईद बिन अबी ज़ैद अंसारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उम्मे साद बिन्त रुबैअ रज़ि० फ़रमाया करती थीं कि मैं हज़रत उम्मे

1. कंज़, भाग 7, पृ० 97
2. फ़त्हुल बारी, भाग 6, पृ० 51

उम्मारा रज़ि० के पास गई और मैंने उनसे कहा, ऐ ख़ाला जान! मुझे अपनी बात बताएं।

उन्होंने कहा कि मैं दिन के शुरू में सुबह-सुबह निकलकर देखने लगी कि मुसलमान क्या कर रहे हैं। मेरे पास पानी का एक मश्केज़ा था। मैं चलते-चलते हुज़ूर सल्ल० तक पहुंच गई, आप अपने सहाबा के बीच में थे। उस वक़्त मुसलमान ग़ालिब आ रहे थे और उनके क़दम जमे हुए थे। फिर जब मुसलमानों को हार होने लगी तो मैं सिमटकर हुज़ूर सल्ल० के पास आ गई और (आपके सामने) खड़े होकर लड़ने लगी और तलवार के ज़रिए काफ़िरों को हुज़ूर सल्ल० से दूर हटाने लगी और कमान से तीर भी चलाने लगी, मुझे भी बहुत से घाव लगे।

हज़रत उम्मे साद रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैंने उनके कंधे पर एक घाव देखा जो अंदर से बहुत गहरा था। मैंने हज़रत उम्मे उम्मारा रज़ि० से पूछा कि यह ज़ख़्म आपको किसने लगाया था?

उन्होंने कहा इब्ने क़मिआ काफ़िर ने। अल्लाह उसे ज़लील करे। इसकी शक्ल यह हुई कि जब मुसलमान हुज़ूर सल्ल० को छोड़कर भागने लगने तो इब्ने क़मिआ यह कहता हुआ आगे बढ़ा कि मुझे बताओ कि मुहम्मद (सल्ल०) कहां हैं? अगर वह बच गए तो फिर मैं नहीं बच सकता हूं। (यानी या वह नहीं, या मैं नहीं)

फिर मैं और हज़रत मुसअब बिन उमैर और कुछ और सहाबा जो आपके साथ जमे हुए थे, उसके सामने आ गए। उस वक़्त उसने मुझ पर तलवार का वार किया था, जिससे मुझे यह घाव आ गया था। मैंने भी उस पर तलवार के कई वार किए थे, लेकिन अल्लाह के दुश्मन ने दो ज़िरहें पहने हुई थीं।[1]

हज़रत उम्मारा बिन्त ग़ज़ीया रज़ि० से रिवायत है कि उनकी मां हज़रत उम्मे उम्मारा रज़ि० ने उहुद की लड़ाई के दिन एक घुड़सवार मुश्रिक को क़त्ल किया था और दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना कि

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 34, इसाबा, भाग 4, पृ० 479

उहुद की लड़ाई के दिन दाएं-बाएं जिस ओर भी मुंह करता, मुझे उम्मे उम्मारा बचाने के लिए उस तरफ़ लड़ती हुई नज़र आती।[1]

हज़रत हमज़ा बिन सईद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के पास कुछ ऊनी चादरें लाई गईं। उनमें एक बहुत अच्छी और बड़ी चादर थी। किसी ने कहा कि इसकी क़ीमत तो इतनी होगी कि यानी बहुत ज़्यादा क़ीमत बताई। आप इसे अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की बीवी हज़रत सफ़िया बिन्त अबी उबैद रज़ि० के पास भेज दें। उन दिनों हज़रत सफ़िया निकाह के बाद हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के घर नई-नई आई थीं (यानी अभी रुख़्सती हुई थी, वह दुल्हन थीं)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं यह चादर ऐसी औरत के पास भेजूंगा जो इब्ने उमर रज़ि० की बीवी से ज़्यादा इसकी हक़दार है और वह हैं उम्मे उम्मारा नुसैबा बिन्त काब रज़ि०। मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना कि (उहुद की लड़ाई के दिन) मैं दाएं-बाएं जिस तरफ़ भी मुंह करता, मुझे उम्मे उम्मारा रज़ि० बचाने के लिए उस ओर लड़ती हुई नज़र आती।[2]

हज़रत हिशाम अपने बाप से नक़ल करते हैं कि उहुद की लड़ाई के दिन जब मुसलमानों को हार का मुंह देखना पड़ा तो हज़रत सफ़िया आईं। उनके हाथ में नेज़ा था, जिसे वह मुसलमानों के चेहरे पर मारकर वापस कर रही थीं। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने (हज़रत सफ़िया के साहबज़ादे हज़रत ज़ुबैर से कहा, ऐ ज़ुबैर! इस औरत की हिफ़ाज़त करो। (यह तुम्हारी मां हैं)[3]

हज़रत अब्बाद रह० फ़रमाते हैं कि (ख़ंदक़ की लड़ाई के मौक़े पर) हज़रत सफ़िया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० के फ़ारिग़ नामी क़िले में थीं। वह बयान करती हैं कि हज़रत

1. इसाबा, भाग 5, पृ० 479
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 98
3. इसाबा, भाग 4, पृ० 439

हस्सान भी उस क़िले में हम औरतों और बच्चों के साथ थे।

एक यहूदी मर्द हमारे पास से गुज़रा और वह क़िले का चक्कर लगाने लगा। बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों ने भी (हुज़ूर सल्ल० से) लड़ाई छेड़ रखी थी और हुज़ूर सल्ल० से ताल्लुक़ात तोड़ रखे थे। हमारे और यहूदियों के दर्मियान कोई मुसलमान मर्द नहीं था जो हमारा बचाव करता। हुज़ूर सल्ल० और मुसलमान दुश्मन के सामने पड़े हुए थे। उन्हें छोड़कर हमारे पास नहीं आ सकते थे।

इतने में एक यहूदी हमारी ओर आया। मैंने कहा, ऐ हस्सान! जैसे तुम देख रहे हो। यह यहूदी क़िले का चक्कर लगा रहा है और अल्लाह की क़सम! मुझे इसका ख़तरा है कि कहीं यह हमारे अन्दर के हालात मालूम करके उन दूसरे यहूदियों को न बता दे जो हमारे पीछे हैं, जबकि हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा रज़ि. (कुफ़्फ़ार से लड़ने में) लगे हुए हैं। आप नीचे उतरकर जाओ और उसे क़त्ल कर दो।

हज़रत हस्सान ने कहा, ऐ बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब! अल्लाह आपकी मग़्फ़िरत फ़रमाए। अल्लाह की क़सम! आप जानती हैं कि मैं यह काम नहीं कर सकता हूं।

जब हज़रत हस्सान ने मुझे यह जवाब दिया और मुझे उनमें कुछ हिम्मत नज़र न आई तो मैंने अपनी कमर कसी, फिर मैंने ख़ेमे का एक बांस लिया। फिर मैं क़िले से उतरकर उस यहूदी की ओर गई और वह बांस मार-मारकर उसे क़त्ल कर दिया। जब मैं इससे फ़ारिग़ हो गई तो मैं क़िले में वापस आ गई।

फिर मैंने कहा, ऐ हस्सान! नीचे जाओ और उसका सामान और कपड़े उतार लाओ। चूंकि यह नामहरम मर्द था, इसलिए मैंने उसके कपड़े नहीं उतारे, तो हज़रत हस्सान ने कहा, ऐ बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब! मुझे इसके कपड़े वग़ैरह उतारने की कोई ज़रूरत नहीं है।[1]

हिशाम बिन उर्वः की रिवायत में यह है, हज़रत सफ़िया वह सबसे

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 108, बैहक़ी, भाग 6, पृ० 308, इसाबा, भाग 4, पृ० 349, कंज़, भाग 7, पृ० 99, मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 6, पृ० 133

पहली मुसलमान औरत हैं, जिन्होंने किसी मुश्रिक मर्द को क़त्ल किया है।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू तलहा रज़ि० हुनैन की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्ल० को हंसाने के लिए आए और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आपने उम्मे सुलैम को नहीं देखा? उनके पास एक खंजर है।

हुज़ूर सल्ल० ने उम्मे सुलैम रज़ि० से कहा, ऐ उम्मे सुलैम ! तुम खंजर से क्या करना चाहती हो?

उन्होंने कहा, अगर इन काफ़िरों में से कोई मेरे क़रीब आया, तो मैं उसे यह खंजर मार दूंगी।[1]

मुस्लिम की रिवायत में हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने एक ख़ंजर तैयार किया जो उनके पास था। हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने उन्हें देखा तो अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह उम्मे सुलैम के पास खंजर है।

हुज़ूर सल्ल० ने उम्मे सुलैम से पूछा, यह खंजर क्या है?

उन्होंने कहा, मैंने इसलिए लिया है कि अगर कोई मुश्रिक मेरे क़रीब आया तो मैं यह ख़ंजर उसके पेट में घोंप दूंगी। यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० हंसने लगे।

हज़रत मुहाजिर बयान करते हैं कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० की चचेरी बहन हज़रत अस्मा बिन्त यज़ीद बिन सकन रज़ि० ने ख़ेमे के बांस से यर्मूक की लड़ाई के दिन नौ रूमी काफ़िर क़त्ल किए थे।[2]

औरतों के जिहाद में जाने पर नकीर

क़बीला बनू कुज़ाआ के ख़ानदान उज़रा की हज़रत उम्मे कबशा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे इजाज़त देते हैं कि मैं फ़्लां फ़ौज में चली जाऊं?

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 308, इसाबा, भाग 4, पृ० 461
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 260

आपने फ़रमाया, नहीं।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे लड़ने का इरादा नहीं है। मैं तो चाहती हूं कि घायलों की मरहम-पट्टी करूं और बीमारों का इलाज करूं या उनको पानी पिला दूं।

आपने फ़रमाया, अगर मुझे इस बात का ख़तरा न होता कि औरतों का लड़ाई में जाना मुस्तक़िल सुन्नत बन जाएगा और कहा जाएगा कि फ़्लां औरत भी तो गई थी (इसलिए हम भी लड़ाई में जाएंगी, हालांकि हर औरत का जिहाद में जाना मुनासिब नहीं है), तो मैं तुम्हें ज़रूर इजाज़त दे देता। इसलिए तुम घर बैठी रहो।[1]

बज़्ज़ार में रिवायत है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक औरत ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा कि मैं औरतों की तरफ़ से आपकी ख़िदमत में नुमाइंदा बनकर आई हूं। यह जिहाद तो अल्लाह ने मर्दों पर फ़र्ज़ किया है। अगर जिहाद करके आएं तो उनहें अज्र मिलता है और अगर ये शहीद हो जाएं तो ये ज़िंदा होते हैं और इन्हें इनके रब के पास ख़ूब रोज़ी दी जाती है और हम औरतें इन मर्दों की सारी ख़िदमतें करती हैं तो हमें इससे क्या मिलेगा?

आपने फ़रमाया कि जो औरत तुम्हें मिले, उसे यह बात पहुंचा देना कि ख़ाविंद की फ़रमांबरदारी और उसके हक़ों को पहचानना, उसको जिहाद के बराबर सवाब दिलाता है, लेकिन तुममें से बहुत थोड़ी औरतें ऐसी हैं जो इस तरह करती हों।

तबरानी ने एक हदीस नक़ल की है जिसके आख़िर में यह है कि एक औरत ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, मैं औरतों की ओर से आपकी ख़िदमत में क़ासिद बनकर आई हूं। जिस औरत को मेरे यहां आने की ख़बर है या नहीं हर एक औरत यह चाहती है कि मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूं।

अल्लाह मर्दों औरतों के रब हैं और इन सबके माबूद हैं और आप मर्दों और औरतों सबके लिए अल्लाह के रसूल हूं। अल्लाह ने मर्दों पर

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 323

जिहाद फ़र्ज़ किया। अगर वह जिहाद करके आएं तो माले ग़नीमत लेकर आते हैं और अगर वे शहीद हो जाएं तो वे अपने रब के नज़दीक ज़िंदा होते हैं और उन्हें वहां ख़ूब रोज़ी दी जाती है, तो औरतों का कौन सा अमल मर्दों के इन आमाल का सवाब दिला सकता है?

आपने फ़रमाया, ख़ाविंदों की फ़रमांबरदारी और उनके हक़ों को पहचानना, लेकिन तुममें बहुत थोड़ी-सी औरतें हैं जो इस तरह करती हों।[1]

बच्चों का अल्लाह के रास्ते में निकलकर लड़ना

हज़रत शाबी रह० फ़रमाते हैं कि एक औरत ने उहुद की लड़ाई के दिन अपने बेटे को एक तलवार दी, जिसे वह उठा नहीं सकता था तो उस औरत ने चमड़े के फ़ीते से वह तलवार उसके बाज़ू के साथ मज़बूत बांध दी, फिर उसे लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरा यह बेटा आपकी तरफ़ से लड़ाई करेगा।

फिर आपने उस बच्चे से कहा, ऐ मेरे बेटे ! यहां हमला करो। ऐ मेरे बेटे ! यहां हमला करो, यहां तक कि वह घायल होकर गिर गया, फिर उसे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लाया गया। आपने फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे ! शायद तुम घबरा गए।

उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! नहीं।[2]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमैर बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को छोटा समझकर बद्र की लड़ाई में जाने से रोक दिया तो हज़रत उमैर रोने लगे। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उनको इजाज़त दे दी।

हज़रत साद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने उनकी तलवार के फ़ीते में गिरहें लगाईं और मैं ख़ुद भी बद्र की लड़ाई में शरीक हुआ और उस

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 336
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 277

वक़्त मेरे चेहरे पर सिर्फ़ एक बाल था, जिसे मैं हाथ में पकड़ लिया करता था।[1]

हज़रत साद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने अपने भाई हज़रत उमैर बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० के सामने पेश होने से पहले देखा कि वह छिपते फिर रहे थे। मैंने कहा, ऐ मेरे भाई ! तुम्हें क्या हुआ ?

कहने लगे कि मुझे डर है कि हुज़ूर सल्ल० मुझे देख लेंगे और मुझे छोटा समझकर वापस फ़रमा देंगे और मैं अल्लाह के रास्ते में निकलना चाहता हूं। शायद अल्लाह मुझे शहादत नसीब फ़रमा दे।

चुनांचे उनको जब हुज़ूर सल्ल० के सामने पेश किया गया तो हुज़ूर सल्ल० ने उनको वापस फ़रमा दिया जिस पर वह रोने लगे। तो हुज़ूर सल्ल० ने उनको इजाज़त दे दी।

हज़रत साद रज़ि० फ़रमाया करते थे कि हज़रत उमैर रज़ि० छोटे थे, इसलिए मैंने उनकी तलवार के फ़ीते में गिरहें बांधी थीं और वह सोलह साल की उम्र में शहीद हो गए।[2]

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 270, हाकिम, भाग 3, पृ० 88
2. इसाबा, भाग 3, पृ० 135, मज्मा, भाग 6, पृ० 69

ISBN 81-7101-481-X

ISBN 81-7101-212-4

ISBN 81-7101-213-2

ISBN 81-7101-385-6

ISBN 81-7101-479-8

ISBN 81-7101-368-6

ISBN 81-7101-555-7

ISBN 81-7101-474-7

ISBN 81-7101-506-9